हिन्दी मुहावरा-कोष

लेखक
प्रो० आर० जे० सरहिन्दी
Doctor of Hindi Literature

प्रकाशक
रामनारायण लाल
पब्लिशर और बुकसेलर
इलाहाबाद

[मूल्य २)

प्रस्तावना

श्री गणेश करना आर्यों का धार्मिक कृत्य है। कार्य के ~~आरम्भ~~ करते समय हिन्दू लोग श्रीगणेश का पूजन-स्तवन करते हैं। इसी प्रकार मुसलमानों मे कार्य आरम्भ के समय बिस्मिल्लाह कहते हैं। बस ये ही वाक्याश कार्यारम्भ का बोध कराने लग गये हैं। अति संक्षेप मे मुहावरों का यही उद्गम है।

मुहावरा शब्द अरबी भाषा का शब्द था। हिन्दी में इसके मुहाव्वरा, मुहावरा रूप हुए। इसी अर्थ मे हिन्दी व्याकरणकारों तथा विद्वानों ने वाग्धारा, वाग्रीति तथा भाषा-संप्रदाय शब्दों का भी प्रयोग किया है। उर्दू में इसी अर्थ में रोज़मर्रा तथा इस्तलाह शब्दों का प्रयोग होता है। रोज़मर्रा शब्द को भी हिन्दी व्याकरणों मे इसी अर्थ मे लिखा गया है।

हिन्दी मे इसका 'मुहावरा' रूप मुझे उपयुक्त प्रतीत हुआ। मै इसका अर्थ भी बहुत सीधा-सादा 'अभ्यास' मानता हूँ। मुझे यह मुहावरा पड़ गया है अथवा आपको इस काम का मुहावरा है; इन दोनों वाक्यों मे मुहावरे का अर्थ अभ्यास ही है। यद्यपि अनेक विद्वानों ने मुहावरे के पृथक् पृथक् संकुचित और विस्तृत अर्थ माने हैं; परन्तु इसके अरबी अर्थ के अनुकूल हिन्दी शब्द 'अभ्यास' ही मेरी समझ मे उपयुक्त प्रतीत हुआ।

मुहावरे प्रत्येक भाषा की वह निधि हैं जिस पर भाषा जीवित रहती है। भाषा के मर जाने का अर्थ यह भी है कि उसके मुहावरों का कुंठित हो जाना और जन साधारण की बोलचाल से उठ जाना। मुहावरे जन साधारण की संपत्ति होते हैं। मुहावरे व्याकरण के प्रतिकूल भी होते हैं अथवा मुहावरे व्याकरण के अनुकूल नहीं भी होते। परन्तु मुहावरे भाषा की सजीवता का चिन्ह है। इसीलिये विद्वान लोग विशेष कर साहित्यिक रसिक विद्वान इन्हें अपनाते हैं।

भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिये मुहावरों पर अधिकार प्राप्त करना अति आवश्यक है। ग्रंथ को अधिक से अधिक दिनों तक जीवित रखने के लिये चाहे उपयुक्त शब्दों का संचय और उन पर अधिकार आवश्यक भले ही हो पर ग्रंथ का अधिक से अधिक प्रचार मुहावरों के बल पर ही हो सकता है।

अँग्रेज़ी के साधारण जानकार जानते हैं कि मुहावरेदार (Idiomatic) अँग्रेज़ी का महत्व कितना है और बेमुहावरा जबान कितनी नीरस मानी जाती है। उर्दू मे भी मुहावरों का राज्य है। कुछ समय पहिले तो वह कविता पर ऐसे छा गये थे कि कविता का सर्वोत्तम गुण ही मुहावरामय पद्य हो गया था। आज 'दाग़' अमर है तो अपनी सरलता के लिये है और उसकी सरलता है केवल मुहावरा ही। हिन्दी मे प्रेमचन्द का अधिकार था सिर्फ इसीलिये की उनकी भाषा मे मुहावरे भरे पड़े हैं।

आज उर्दू और हिन्दी का झगडा काफी ज़ोरों पर है। लोग कितने ही प्रकार के तर्क देकर एक दूसरे को अपने अपने पक्ष में कर लेना चाहते हैं परन्तु सब यत्न बेकार रहते हैं। हिन्दी लोगों के लिये कठिन है, इस बात की शिकायत भी सुनने मे आती है। उधर साहित्यिक विद्वान कहते हैं कि बिना कठिन शब्दों के काम नहीं चलता। इन सब बातों के सुलझाने का सरल उपाय केवल 'मुहावरा' है।

मुहावरे के मैदान मे आकर उर्दू और हिन्दी का इतना भी भेद नहीं जितना मेरे पड़ोसी की घरू बोली और मेरी घरू बोली मे है बल्कि दोनों एक ही घर की बोली हो जाती हैं। दो बोली ही नही, एक ही बोली हो जाती है। उर्दू के साहित्यिक और हिन्दी के साहित्यिकों का रोग केवल मुहावरे की कुछ ख़ुराक़ों से ख़त्म किया जा सकता है।

मुहावरे हर घर की स्त्री की भाषा का प्रधान तत्व है और अपढ़ लोगों मे भी इनका पूरा पूरा प्रचार है। हम मुहावरों के द्वारा किसी भी देश की बोली पर भी अधिकार पा सकते हैं और भाषा पर भी।

किसी भी भाषा के साहित्यिक इतिहास को मन में बैठालने पर हमे यह ज्ञात होता है कि हर एक बोली धीरे-धीरे भाषा बनती है और हर

एक सजीव भाषा धीरे धीरे मृत भाषा बन जाती है। परन्तु जो भाषाएँ अधिक से अधिक जीवित रहती हैं वे 'बामुहाविरा' होने के बल पर ही। हिन्दी बेचारी पिछड़ी हुई भाषा कही जाती है, परन्तु हिन्दी मुहावरों का अध्ययन करने के पश्चात मेरा यह भ्रम बिलकुल दूर हो गया। क्योंकि हिन्दी मे लगभग दस हज़ार से ऊपर मुहावरे मेरे देखने में आये हैं। प्रस्तुत पुस्तक में ९ हज़ार से ऊपर मुहावरे दिए गये हैं।

मुहावरों के अर्थ देने के अतिरिक्त उनके प्रयोग भी लिखे गये हैं। अंत में कुछ मुहावरों के अर्थ दे दिये गए हैं; परन्तु प्रयोग देने मे कंजूसी बर्ती गई है। उसका कारण यही है कि थोड़े से मुहावरे पढ लेने के पश्चात मुहावरों को प्रयोग मे लाना प्रत्येक पाठक को स्वयं आ जाता है और दूसरी बात है कि 'प्रयोग रहित' मुहावरों के ही अर्थ वाले अन्य मुहावरे पुस्तक में अन्य स्थानों पर भी आ गये हैं।

मैं लिखित भाषा मे विराम चिन्हों को भाषा से भी अधिक महत्व पूर्ण स्थान देता हूँ इसीलिये सारी पुस्तक में विराम का प्रयोग विद्वानों को कई प्रकार से किया हुआ मिलेगा। सभवतः प्रचलित विराम नियमो के प्रतिकूल विराम चिन्ह मिलेंगे इसके लिये मै स्वयं ही दोषी हूँ।

मुहावरा-कोष से हिन्दी भाषा जन समाज का अटूट सम्बन्ध तो है ही साथ ही अहिन्दी भाषी लोग जो हिन्दी का वास्तविक अध्ययन करना चाहते हों उनके लिये तो यह हिन्दी के खज़ाने पर अधिकार पा लेने की कुंजी ही है। क्योंकि 'किसी भी भाषा पर उसके मुहावरों से ही अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।'

'त्रुटियें रह जाना मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है और किसी की त्रुटियों से सूचित करना उसी का नहीं समाज भर का उपकार करना और अपनी योग्यता का वास्तविक सदुपयोग है।' अतः विद्वान लोगों से प्रार्थना करूँगा कि वे मुझे प्रकाशक की मारफत मेरी त्रुटियों और अपनी सम्मतियों से सूचित करने का कष्ट उठाकर अनुगृहीत करें।

पुस्तक के स्वरूपानुकूल इसकी भूमिका मे पर्याप्त खोज पूर्ण और

महत्वपूर्ण लेख होना अनिवार्य था परन्तु कई कारणों से मैं असमर्थ हूँ। मुहावरों का महत्व जानने वाले विद्वान संभवतः इतने से ही सन्तुष्ट होकर मुझे क्षमा करेंगे।

अंत मे मैं प्रकाशक महोदय को धन्यवाद दूँगा क्योंकि उनके धैर्य और उन्हीं की निसंकोचता से आज यह पुस्तक पाठकों की सेवा में पहुँच रही है। मेरी सफलता पाठकों को अधिक से अधिक प्राप्त लाभ मे निहित है।

होलिकोत्सव }
१९९३

विनीत—
आर० जे० सरहिन्दी

सहायक पुस्तकों की सूची

१—हिन्दी शब्द सागर ... ...
२—हिन्दी मुहाविरा कोष ... ...
३—जेवी हिन्दी मुहाविरा कोष ... ... ”
४—मुहावरा अर्थ प्रकाश ... ... ”
५—हिन्दी मुहावरे ... ... ”
६—फीरो ज़ुल्लुग़ात ... ... उर्दू
७—सैयदी डिक्शनरी ... ... ”
८—मुहावरात और इस्तलाहात ... ... ”
९—उर्दू ईडियम्स ... ... ”
१०—मुल्की ज़बान के मुहाविरे .. ... ”
११—उर्दू मुहावरे .. ... ”
१२—मुहाविराते निस्वाँ ... ... ”
१३—लोकोक्तियाँ और मुहाविरे ... ... हिन्दी
१४—हिन्दी लोकोक्ति कोष . ... ”
१५—English Idioms and How To Use Them
१६—English Idioms Published by Thomas Nelson and Sons.
१७—Hindi Idioms and their usage

तुलसी रामायण, सूरसागर तथा अन्य वर्तमान कवियों की पद्य पुस्तकों से भी सहायता मिली है। मैं उन सबका अति कृतज्ञ हूँ।

लेखक

हिन्दी मुहावरा कोश

श्रीगणेश करना—प्रारम्भ करना। आज ता० २८ अप्रेल सन् १९३५ को इस पुस्तक का श्रीगणेश किया गया है।

श्रीगणेश होना—काम शुरू होना। भाई, श्रीगणेश तो हो फिर तो मैं सँभाल लूँगा।

अंक देना—(१) आलिंगन करना। बहुत दिन के बाद मिले हो, यही जी चाहता है कि अंक ही दिये रहूँ। (२) नम्बर देना, मुझे तो परीक्षक ने कुल चालीस अंक दिये हैं।

अंक भरना—लिपटाना, लिपटना। विदाई के समय जब वह रोने लगा तो मैंने उसे अंक भर लिया। मैं आने लगा तो उसने मेरी अंक भर ली (मुझ से लिपट गया) और रोने लगा।

अंक लगाना—(१) गले लगाना। बावरी जो पै कलंक लग्यौ तो निशंक ह्वै क्यों नहिं अंक लगावै। (२) नम्बर डालना। सफों पर अंक लगा दो, बिना छिले हैं कहीं उलट पुलट न हो जायँ। अंक डालना भी प्रचलित है।

अँकवार भरना—(१) भेटना, गले मिलना। (२) गोद भरना। बहू, तुम्हारी अँकवार भरी रहे।

अंकित होना—जमजाना। गीत कान में आते ही उसके स्मरणपट पर अंकित हो जाते थे।

अंकुश देना—(१) ज़बरदस्ती। तुम इस कार्य को अंकुश देकर कराना चाहते हो, परन्तु याद रहे मैं इसे हर्गिज़ नहीं करूँगा। (२) दबाव डालना। मैं उस पर अंकुश नहीं देना चाहता। (३) वश में रखना। भाई, अभी बीमार हो इंद्रियों पर कुछ तो अंकुश दो, बदपरहेज़ी बहुत हानिप्रद है।

अंकुश मानना—दबाव मानना। तुम समझते हो मैं पिता जी का अंकुश मानता हूँ, हर्गिज़ नहीं। इस बात में तो ईश्वर का भी लिहाज़ न करूँगा।

अंग उभरना—यौवन के लक्षण होना। अब कुछ, कुछ उसके अग उभरने लगे हैं।

अंग अंग ढीला होना—थकित होना। शिथिलता आना। सारे दिन के परिश्रम से अंग अंग ढीले हो जाते हैं। बुढ़ापे मे अग अग ढीले हो जाते (पड़ जाते) है।

अंग अंग फूले न समाना—खूब ख़ुशी होना। वह तो अग अग फूला नहीं समाता, ब्याह क्या हुआ स्वर्ग का राज्य मिल गया।

अंग अंग मुसकराना—(१) प्रसन्नता से रोम रोम खिलना। शिशु की वीरोक्तियाँ सुन कर दुष्यत का अग अग मुसकराने लगा। (२। सौन्दर्य की पूर्णता झलकना। वह क्या मुसकराती थी उसका अग अग मुसकराता था।

अंग करना—स्वीकार करना। जाको मन मोहन अग करे (सूर)। मै अंगीकार करता हूँ।

अंग छूना—कसम खाना। सूर हृदय से टरत न गोकुल अग छुअत हौं तेरो।

अंग टूटना—अंगड़ाई आना। शिथिलता होना। ज्वर आने से पहिले अग टूटने लगते हैं।

अंग धरना—धारण करना। सर्दी मे भी कपडे अग नहीं धरते हो, यह हानिप्रद है।

अंग देना—थोड़ा आराम करना। खाना खाकर जरा अंग देना चाहिये।

अंग में अंग चुराना—संकुचित होना। भाभी जी! इन्हें देखकर क्यों अग मे अग चुराती हो। ये तो हमसे भी छोटे हैं।

अंग मोड़ना—(१) सिकुड़ना, ससुर के सामने तो अग मोड़ कर बैठा करो। (२) पीछे हटना। रे पतग नि शक जड; जलत न मोड़े अग। पहिले तो दीपक जले पीछे जले पतग।

अंग लगना—(१) हजम होना। खाया पिया उसके अग ही नहीं लगता। (२) काम मे आना। अच्छा हुआ साधू के ही अग लग गया, यहाँ कौन खाता।

अंग लगाना—(१) लिपटाना। (२) संग लगा देना। इस कन्या को किसी के अग लगा दो। (३) स्वीकार करना। (४) पहनना। मैने तो कभी इस कपड़े को अग भी नहीं लगाया।

अंग लाना—हृदय से लगाना। परनारी पैनी छुरी कोउ न लावो अग।

अंगार उगलना—जली कटी बातें कहना। क्रोधित होकर दुर्वचन कहना। मुझे क्या पता था कि तुम इतने नाराज़ हो, छेड़ते ही अगार

उगलने लग गये। ज़रा ज़रा सी बातों पर अगारे उगलने लगते हो, ऐसा भी क्या क्रोध, बिचारा बच्चा है तुमसे क्या काम नही बिगड़ते?

अंगार बनना या होना—(१) सुर्ख़ होना। क्रोध के समय तो चेहरा अगार हो जाता है। (२) शरीर मे लाली आना। देखो, दो महीने की कसरत से ही लड़का अगारा हो गया है।

अगार बरसना—(१) कड़ी धूप पडना। आज कल तो बाहर अगारे बरसते हैं, दुपहरी में घर से निकलना दुश्वार है। (२) दैवी आपत्ति आना। भाई, क्या करे काम शुरू करते ही अगारे बरसने लगते हैं। यह अर्थ शायद व्रज के 'गिटई पड़ना' मुहावरे से लिया गया है।

अगार सिर पर धरना—बहुत कष्ट सहना। हमारी क्या पूछते हो, हमने तो जीवन मे सैकडों बार अगार सिर पर धरे हैं।

अगारो पर पैर रखना—जानते हुए नुक़सान के काम करना। भाई, सोच कर काम करो। इस काम को करना अगारों पर पैर रखना है। जोखों का काम करना ही अगारों पर चलना है।

अंगारो पर लोटना—(१) ईर्ष्या से जलना। (२) क्रोध से आग बबूला होना। मेरे सुख को देख कर वह अगारों पर लोटता है। (३) कष्ट सहना। दम पै बने जो उसको सहूँ मै, लोटता अगारों पर रहूँ मै।

अगारो पर लोटाना—दुख देना। बातो बातों मे लोटाया मुझे अगारों पर।

अगुली काटना—पछताना। पहले तो बिना सोचे समझे काम कर डालते हो, फिर पीछे अगुली काटते हो।

अँगूठा चूमना—(१) खुशामद करना। चाहे कुछ हो, मैं जेल ही क्यों न चला जाऊँ परन्तु दुश्मनों के अँगूठे चूमने न जाऊँगा। २) आधीन होना। वह तो रिश्तेदारों के अँगूठे चूम कर दिन बिता रहा है।

अगूठा दिखाना—(१) विश्वास देकर मौके पर निराश कर देना। पहिले से तो इन्कार नही किया, अब आप ऐन वक्त पर अगूठा दिखा रहे हैं, क्या यही आपकी सभ्यता है? (२) निराश नर को काम बिगड़ने पर सहायता न देकर उल्टा चिढाना। हाँ भाई, बुरे दिन जो ठहरे, यही कारण है कि तुम जैसा दोस्त अँगूठा दिखाकर हँसी उड़ा रहा है।

अँगूठा नचाना—चिढ़ाना। काम

बिगड़ने पर दोस्त भी अँगूठा नचाते हैं।

अँगूठे पर मारना—परवाह न करना। मैं अँगूठे पर मारता हूँ, सौ क्या पाँच सौ भी न लूँगा।

अँगूठा का नगीना—जोड़ा मिलना। सिया सोने की अँगूठी राम साँवरो नगीना है।

अंगूर तड़कना—भरते घाव के पतले चमड़े का तड़कना। यदि अधिक चलो फिरोगे तो घाव का अंगूर तड़क जायगा।

अंचल पसारना—(१) नम्रता से माँगना। मै अंचल पसार कर प्राणों की भिक्षा माँगती हूँ। (२) माँगना। मै क्यों अँचल पसारूँ, मुझे क्या गर्ज़ है?

अंजर मारना—जादू करना। उस मदारी ने अंजर मार कर झट लड़के को बेहोश कर दिया।

अंजर पंजर ढीला होना—(१) मशीन बिगड़ना। बाइसिकिल के सारे अंजर पंजर ढीले हो गये। (२) अंग अंग ढीला होना। (३) अभिमान नष्ट कर देना। अब किसी से अकड़ कर न बोलेगा, क्योंकि आज मैंने इतना पीटा है कि सर्वदा के लिये अंजर पजर ढीले हो गये हैं।

अंटाचित होना—(१) सुन्न हो जाना। मै तो साँप देखते ही अंटाचित हो गया। (२) अचेत होना। वह तो एक ही प्याले में अंटाचित हो गया। (३) कारबार बिगड़ना। बिचारे का सारा व्यापार अंटाचित हो गया है।

अंटी करना—चीज़ उड़ाना। चाहे कैसी भी चीज़ हो तुम हर एक को उठाकर अंटी कर लेते हो।

अंटी बाज़—(१) दगाबाज़। तुम बड़े अंटीबाज़ हो तुम्हारा विश्वास नहीं। (२) रुपये खा जानेवाला। उसके हाथों कुछ न देना वह बड़ा अंटीबाज़ है। आधा भी पहुँच जाय तो ग़नीमत समझो।

अंटी मारना—(१) जूये में कौड़ी उँगलियों में छिपा लेना। (२) अंटी में से चीज़ उड़ा लेना। वह बड़ी सफाई से अंटी मारता है।

अंटी रखना—छिपा रखना। उसे देखते ही मैंने पुड़िया अंटी रखली।

अंड बंड बकना—असम्बद्ध बातें करना। चोर के पैर कितने, मैंने ज्यों ही नौकर से डपट कर पूछा तो वह अंड बंड बकने लगा।

अंडा ढीला होना—दुबला पतला होना। यह इतने कठिन काम को कैसे करेगा वैसे ही इसका तो अंडा ढीला हो रहा है।

अंडा सेना—(१) चिड़ियों का अडों पर बैठ कर गर्माना। (२) बच्चे गोदी मे लेकर सोना। तुम तो हर वक्त अडे सेती रहती हो, अरे बच्चा सो गया बस अपने काम मे लग जाना चाहिये।

अडे बच्चे—छोटे छोटे कई बच्चे। कहो, अडे बच्चे कहाँ छोड़े, क्या सो गये ?

अत करना—(१) हद कर देना। तुमने भी अत कर दिया, ऐसी भी क्या हँसी बिचारे को दुखी कर दिया। (२) नष्ट करना। (३) समाप्त करना। कहीं ऐसा न हो कि मारते मारते उसका अत कर दो।

अत पाना—भेद पाना। रहस्य जान लेना। इनकी नीति का अंत पाना असम्भव है।

अत बनना—आख़ीर अच्छा होना। इस आकस्मिक सहायता से बिचारे का अंत बन गया।

अत बिगड़ना—(१) परिणाम बुरा होना। उसके जीवन क अत बिगड़ गया, भगवान किसी को कुपुत्र न दे। (२) परलोक बिगड़ना। भाई, अधर्म से अंत बिगड़ता है। (बिगाड़ना का भी प्रयोग होता है)।

अंत होना—नाश होना। मृत्यु होना। आज मेरे हाथों कस का अंत होगा।

अँतड़ियाँ कुल बुलाना या लगना—(१) खूब भूख लगना। भाई, दो बज गये हैं, मेरी अँतड़ियाँ कुल बुला रही हैं, चलो खाना खावे। (२) भूख से सूखना। बिचारा बुड्ढा तीन दिन का भूखा था, मैने देखा सारी अँतड़ियाँ लग गई थी। (अँतड़ी जलना भी प्रचलित है)।

अतड़ियाँ गले पड़ना—विपत्ति मे फँसना। महाशय ! इस समय अतड़ियाँ मेरे गले पड़ी हुई हैं, सहायता करके बचाइये।

अतड़ियाँ जलना—भूख लगना। बारह बजे दफ़्तर से लौटते समय मेरी अतड़ियाँ जलने लगती हैं।

अँतड़ियाँ टटोलना—पेट दबा कर उसका खाली या भरा होना देखना। जोरू टटोले गंठरी, मा टटोले अँतड़ी, (कहावत)।

अंतड़ियों का कुल ओह अल्लाह पढ़ना—भूख से मरा जाना। तुम्हें तो गाना सूझ रहा है और हमारी अतड़ियाँ कुल ओह अल्लाह पढ रही हैं।

अँतड़ियो के बल खोलना—उपवास के बाद भर पेट होना। महिनों के बाद आज दोनों वक्त अँतड़ियों के बल खोले हैं।

अंतड़ियों में आग लगना—भूख के कारण पेट में लहर उठना।

जब अंतड़ियों मे आग लगती है तो खाना खाना ही पड़ता है।

अँतड़ियो में बल पड़ना—पेट दुखना या पेट मे दर्द होना। इतना अच्छा मज़ाक उड़ा कि हँसते हँसते अँतड़ियों मे बल पड़ गये।

अंतर पड़ना—द्वेष होना, भेद पडना। अब तो दोनों के दिलों में अतर पड़ गया है।

अंतर्हित होना—अंतर्द्धान होना, लुप्त होना। देखते देखते अतरिह्त हो गया।

अंदाज उड़ाना—चालढाल से कूतना। हम तो सूरत देख कर ही अंदाज़ उड़ा लेते हैं।

अंदेशा करना—आशंका करना। पास मे है ही क्या जो आप चोरी का अदेशा करते हैं।

अंधा धुंध मचाना—अन्याय या अधेर मचाना, अधाधुंध मचा रखी है इधर का सामान उधर उधर का इधर फेक दिया।

अंधा धुंध लुटाना—अति व्यय करना। मा बाप की कमाई को क्यों अंधाधुध लुटा रहा है।

अंधा बनना—लापरवाह होना। अंधा बन कर काम करता है, बिगड़े नही तो क्या सुधरे?

अंधा होना—परवाह ही न होना। ब्याह के समय तो खर्चा करने में अंधा हुआ था, अब देना पड़ा तो रोता क्यों है?

अंधा बनाना—आँख मे धूल डालना, धोखा देना। देखते देखते मुझे क्यों अधा बना रहे हो। यह चीज़ मेरी ही है।

अंधी सरकार—अन्यायी या मूर्ख राज्य। रजवाड़ों की सरकार तो बिलकुल अंधी है, बिचारे किसानों पर आँख मीचकर अन्याय होता है।

अंधे की लाठी या लकड़ी—एक मात्र अवलंब। अब तो यह लड़की ही मुझ अधे की लकड़ी है।

अंधेर खाता—(१) ठीक ठीक हिसाब न होना। ऐसी भी क्या अधेर खाता कोई कुछ ले जावे लिखा पढी ही नहीं। (२) अन्याय। वहाँ बड़ा अंधेर खाता है, कोई सुनता ही नही।

अंधेर छाना—गड़बड़ होना। दयालु महाराज के मरने से राज्य में अधेर छा गया।

अंधेरगुप—बहुत अंधेरा। यहाँ तो बिल्कुल अंधेरगुप है कहाँ ले आये।

अंधेर नगरी—अन्याय का स्थान। इस कोतवाल के आते ही यह शहर अधेर नगरी बन गया है।

अंधेर मचना—गड़बड होना। आजकल इस महकमे मे बड़ा अधेर मचा हुआ है।

बिगड़ते काम को सुधार लिया, अक्ल का पुतला है।

अक्ल का पूरा—मूर्ख (व्यंग्य) तुम तो बड़े अक्ल के पूरे हो न जो इस मशीन को चला लोगे।

अक्ल के पीछे लाठी लिये फिरना—काम बिगाड़ना। अक्ल के ख़िलाफ़ काम करना। बिना सोचे समझे काम करते हो, अक्ल के पीछे लाठी लिए फिरते हो।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना—बहुत सी कल्पना करना। केवल अक्ल के घोड़े दौड़ाने से काम नहीं हो जाता, जब करते हैं तो पता चलता है। अक्ल के घोड़े तो बहुत दौड़ाये परन्तु उसका पता नहीं चलता।

अक्ल ख़र्च करना—समझ से काम करना। जरा अक्ल ख़र्च करो, झट समझ मे आ जायगा।

अक्ल चकराना या चक्कर में आना—मिल की मशीनों को देख कर तो अक्ल चकराती है। वकील के सवाल पर सवाल पूछने से मेरी अक्ल तो चक्कर मे आगई।

अक्ल चरने जाना—समझ का जाता रहना। तुम्हारी अक्ल क्या चरने गई थी, पूछा था तो जवाब देते वह कोई हौआ तो था ही नहीं।

अक्ल दंग रह जाना—स्तम्भित होना। विज्ञान के नवीन आविष्कारों को देख कर तो अक्ल दंग रह जाती है।

अक्ल दंग होना—अक्ल चकराना, सुध-बुध भूलना। एक दम डाकुओं से घिरा देख कर तो उसकी अक्ल दंग रह गई।

अक्ल देना—समझाना। तुम मुझे क्या अक्ल देते हो मै स्वयं सब कुछ जानता हूँ।

अक्ल दौड़ाना या लड़ाना—सोचना विचारना, अक्ल ख़र्च करना। तुम्हारे अक्ल दौड़ाने से ही हमारा काम हो गया नहीं तो सब किया कराया फिजूल जाता।

अक्ल पर पत्थर पड़ना—मौके पर बेवकूफी हो जाना। अक्ल पर पानी फिरना। जो बात पूछते हैं चुप हो जाते हो, क्या अक्ल पर पत्थर पड़ गये हैं।

अक्ल मारी जाना—विवेक शून्य होना। क्या तुम्हारी अक्ल मारी गई, है, जिस काम को भेजते हैं उसी को बिगाड़ लाते हो।

अक्ल सठियाना—बुद्धि भ्रष्ट होना। साठ बरस के बाद अक्ल भी सठिया जाती है।

अक्ल से सरोकार न होना—मूर्ख होना, कुछ न समझना। जिस काम मे अक्ल से सरोकार नहीं है, उसमें हाथ ही क्यों लगाते हो।

अक्लमंद की दुम बनना—अपने

को बुद्धिमान समझना। तुम जानते तो कुछ नहीं और अक्लमद की दुम बने फिरते हो।

अक्षर घोटना—किताब के एक एक अक्षर को याद करना। अक्षर घोटने से लाभ नहीं समझ कर पढ़ो।

अक्षर घसीटना—जल्दी में लिखना। मैंने योंही स्टेशन पर ही चार अक्षर घसीट दिये थे।

अक्षर से भेंट न होना—(१) अपढ़ होना। जिनकी कभी अक्षर से भेंट भी नही हुई, वे भला क्या पडित हैं (२) अनभिज्ञ होना। जिस बिषय के एक अक्षर से भी मेरी भेंट नहीं हुई उस पर भला क्या व्याख्यान दूँ।

अखरने लगना—बुरा लगना। मालूम होता है तुम्हें मेरा यहाँ रहना अखरने लगा।

अगर मगर करना—(१) व्यर्थ तर्क करना। मीन मेख निकालना। बात बात पर अगर मगर करना ठीक नहीं। जो बात ठीक हो वह मान लेना चाहिये। (२) व्यर्थ तकरार करना, टाल मटोल करना। जब भी रुपये का तकाज़ा करता हूँ अगर मगर करने लगता है।

अगले ज़माने का आदमी—सीधा सादा, ईमानदार। अगले ज़माने के आदमी छल कपट नहीं जानते थे।

अगाड़ी पिछाड़ी लगाना—बंधन में पड़ना। ख़ूब घूम लो शादी होते ही अगाड़ी पिछाड़ी लग जावेगी।

अगाड़ी मारना—शत्रु सेना को परास्त करना। राजा ने अगाडा मारकर झट किले में जाकर जीत का झंडा अपने हाथ मे ले लिया।

अगिया बेताल—बड़ा साहसी। वे दोनों भाई अगिया बेताल हैं।

अचार बनाना—(१) ख़ूब पीटना। जो रोज़ ही इस तरह देर से आया करोगे तो किसी दिन ऐसा अचार बनाऊँगा कि याद रक्खोगे (२) व्यर्थ होना। मुझे तो थोड़ी सी दे दो सारी का क्या अचार बनाना है। अचार डालना भी प्रचलित है।

अच्छा आना—ठीक अवसर पर आना। भाई अच्छे आये क्योंकि मै अभी जा रहा था फिर न मिलता।

अच्छा करना—(१) आराम कर देना। मैं इसे चार दिन मे अच्छा कर दूँगा। (२) काम बिगाड़ना। आपने अच्छा किया और सत्यानाश कर दिया।

अच्छा कहना—(१) प्रशंसा करना। (२) सुन्दर लेक्चर देना। (३) चुभती हुई या मौके

की बात कहना। जनाब इस समय बात रख दी, क्या ही अच्छा कहा मै तो दग रह गया।

अच्छा बिच्छा—भला चंगा। कल ही मैने उसे देखा था वह तो (भला चगा) अच्छा बिच्छा फिर रहा था।

अच्छा भोजन—ठीक खाना। इसे तो अच्छा भोजन दिये जाओ काम के नाम तो मैय्या मर जाती है।

अच्छे दिन आना—भाग्य खुलना। अब तो भाई अच्छे दिन आ गये हैं, अब की बार कुछ स्थायी काम करना।

अच्छे मिलना—(१) खूब प्राप्त होना। जब लेखक को पैसे अच्छे मिलेगे तो पुस्तक क्यों न अच्छी होगी। (२) आवश्यकता के वक्त मिलना। भाई! तुम (ख़ूब, अच्छे मिले मै तो तुम्हारे घर ही जा रहा था। (३) बात ढाल कर कहना ! (व्यंग्य) अच्छी मिली जोड़ी, एक अधा एक कोढी।

अच्छे रहना—(१) बीमार न रहना। (२) काम बना लेना। भाई! तुम बहुत अच्छे रहे पहिले से पहिले ही सब रुपये ले लिये।

अच्छे अच्छे—(१) बडे बड़े। इस धनुष पर अच्छे अच्छे जोर लगा गये तुम क्या तोड़ोगे। आज कल अच्छे अच्छे मारे मारे फिरते हैं बे पढों का तो कहना ही क्या ! (२) सुन्दर सुन्दर। अच्छे अच्छे कपड़े पहन कर मेले में जाना।

अछूता—(१) कोरा। यह कुरता तो अछूता रखा है किसी ने नहीं पहना। (२) निर्लेप। वह सब ऐबों से अछूता है।

अछूती कोख—वह स्त्री जिसका कोई बच्चा न मरा हो। बहन! तेरी तो अछूती कोख है।

अटकल पच्चू—(१) मन गढन्त। ये अटकल पच्चू बाते रहने दीजिये। (२) अंदाजा। मशीन पाती तो नही लेकिन अटकल पच्चू मे ही पा गई।

अटक—रोक या सम्बन्ध। जाके मन में अटक है वही अटक रहा। तुम्हें क्या अटक है जो खुद नही कह देते। अरे भाई! जैसे तैसे अटक रहे हैं जो दिन गुज़र जाये अच्छे हैं। क्यों अटक अटक कर पढता है।

अटकना—उलझना। किसी तगडे से अटकना वह मजा चखायेगा।

अटकाना—उलझाना, फँसाना, रोकना। जरा कुत्ते को अटका देना। जितने में मै पहुँचू उसे अटकाये रखना। हिसाब को इतने दिन अटकाये रखना ठीक नहीं।

अटकल बाज़—अनुमान लगाने वाला। वह बड़ा अटकल-बाज़

है, फौरन समझ जायेगा कहाँ गये थे।

अटकाव—सहारा। यदि ज़रा भी अटकाव हुआ तो मैं ऊपर चढ जाऊँगा।

अटना—गर्द जम जाना। मैं तो गर्द से अट गया।

अटपट बोलना—(१) अडबड कहना। लटपट पग धरती धरे, अटपट बोलत बैन। अटपट बोलकर सब बना बनाया काम बिगाड़ दिया।

अटवाटी खटवाटी लेकर पडना—काम धन्धा छोड़ चुपचाप पड़ा रहना। शिकार से लौटते ही कुमार उस सुदरी के विरह मे अट-वाटी खटवाटी लेकर पड़ गया।

अटसट लगाना—ताल मेल लगाना। उसने तो अपनी अटसट लगा ली है, कुछ न कुछ मिल ही जाता है।

अठखेलियाँ करना—क्रीडा करना। करत हैं कुजन में अठखेली। क्यों सखियों में अठखेलियाँ करती फिरती हो घर का काम यों ही पड़ा रहे।

अठखेलियाँ सूझना—(१) मौज़ सूझना। मैं सर दर्द से मरा जाता हूँ, तुम्हें अठखेलियाँ सूझती हैं। (२) छेडछाड़ करना। तुम्हें अठ-खेलियाँ सूझे यहा बेज़ार बैठे हैं।

अड़के बैठना—हठ करना। दरवाज़े मे क्यों अड़कर बैठ गये हो। गर अडके बैठ गया तो लेकर ही उठूँगा।

अड के खड़ा होना—राह रोकना। निकलने की बहुत कोशिश की पर वह अड़ के खड़ा हुआ था।

अडगी लगाना—रुकावट देना। तुम हर काम मे अडगी लगा देते हो, कोई काम होने नहीं पाता।

अड़चन डालना—रुकावट डालना। उसका स्वभाव ही है लोकोपकारी कार्यों में अडचन डालना।

अड़ियल टट्टू—रुक कर काम करनेवाला। अरे, वह अडियल टट्टू है, क्यों इस काम मे उसे लगा दिया।

अड़े पर काम आना—विपत्ति में काम आना। मित्र वही है जो अड़े पर काम आवे।

अड्डा जमाना—रोज़ ही रहने लगना। तुमने खूब अड्डा जमाया इतने दिन हो गये जाने का नाम ही नहीं लेते।

अढ़ाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना—अपनी सम्मति अलग रखना। तुम कभी किसी की मानते भी हो या योंही अपनी अढ़ाई चावल की खिचड़ी हमेशा अलग पकाते रहते हो।

अढ़ाई दिन की हुकूमत—(१)

केवल थोड़े दिनों का अधिकार। सक्के ने भी अढ़ाई दिन की हुकूमत में चमड़े का सिक्का चला दिया था। (२) चार दिन की चाँदनी। क्यो अत्याचार कर रहे हो अढ़ाई दिन की हुकूमत है फिर तुम भी मेरे जैसे हो जाओगे।

अति रंजित करना—खूब बढा चढा कर कहना। उसकी सारी बाते अति रंजित होती हैं।

अथ से इति तक—शुरू से आखीर तक। अथ से इति तक पुस्तक को पढ़ना चाहिये।

अथाह मे पडना—कठिनाई मे पडना। अथाह मे पड़ा हूँ कुछ नहीं सूझता। नैय्या अथाह मे पडी है।

अदब करना—आदर करना। बालकों को सदैव अपने से बड़ों का अदब करना चाहिये।

अधर चबाना—क्रोध के कारण दाँतों से ओठ दबाना। बनवारी की बाते सुनते ही वह अधर चबाने लगा और उसकी आँखे लाल हो गईं।

अधीर होना—बेचैन होना। जब माँगने पर उसे रुपये न मिले तो वह अधीर हो गया।

अधूरा कर देना—कमज़ोर कर देना। बुढ़ापा सब को अधूरा कर देता है। अब आकर बुढ़ापे ने किये ऐसे अधूरे, पर गिर गये, दुम झड़ गई, फिरते हैं लडूरे।

अधूरा जाना—असमय गर्भपात होना। जनाब, निःसन्तान नहीं उसके १७ वर्ष मे ६ बच्चे अधूरे गये हैं।

अधूरा होना—(१) नासमझ होना। क्या तुम अभी तक अधूरे ही हो, सोच समझ कर बोलो। (२) आधी ताकत होना। मै तुम्हारे बिना अधूरा हूँ। यदि तुम साथी बन जाओ तो काम चल जाय।

अधौड़ी तनना—खूब पेट भर जाना। आज न्यौते मे खूब अधौड़ी तनी होगी।

अनछर पढकर मारना—मन्त्र फूकना। जैसे ही उसने अनछर पढ कर मारा कि झट भूत भाग गया।

अनबन रहना—लड़ाई रहना। सौतों मे हमेशा अन-बन रहती है।

अनबिंधा मोती—क्वारी लड़की। भाई, अभी तो वह अनबिंधा मोती है चिन्ता ही रहती है।

अनबोल रानी—शान्त प्रकृति। बहू क्या आई है, अनबोल रानी है।

अनसुनी करना—ध्यान न देना। अनसुनी करने से काम न चलेगा, यह काम तो करना ही पड़ेगा।

अनजान बनना—जानते हुए भी न जानना। सब कुछ पता होते हुए भी अनजान बन रहे हो।

अन्न अंग न लगना—मोटा या तन्दुरुस्त न होना। तुम कितना ही खालो तुम्हारे तो अन्न अग लगता ही नहीं।

अन्न जल उठना—जीविका का न रहना। अब मेरा यहाँ से अन्न जल उठ गया है, मै यहाँ रहकर क्या करूँ।

अन्न जल करना—जलपान करना। मेरे लिये तो तुम्हारे यहाँ अन्न जल करना पाप है।

अन्न पहचानना—खाना समझना। पशु भी अपना अन्न पहचानते हैं।

अन्न मिट्टी होना—अन्न नष्ट होना, अच्छी तरह न पकना। ऐसी फूहर है कि उसके हाथों सब अन्न मिट्टी हो जाता है।

अन्न लगना—रोटी लगना। अन्न लग गया है ऐठ से बोलता है।

अपना उल्लू सीधा करना—मतलब निकालना। कोई हारे या जीते वकीलों को तो अपना उल्लू सीधा करना रहता है।

अपना किया पाना—कर्म का फल पाना। चोर को जेल हुई अपना किया पाया।

अपना गान—डींग मारना। इन्हें तो सिवाय अपना गान अलापने के और कोई काम ही नहीं है।

अपना लेना या कर लेना—(१) अपना बनाना। दूसरों को अपना कर लेना टेढी खीर है, (२) अपने अनुकूल कर लेना। वह सेवाभाव से सबको अपना कर लेता है। (३) मोह लेना। उसकी आँखों ने मुझे अपना ही कर लिया।

अपना घर समझना—(१) निस्सकोच रहना। अपना घर समझ कर आराम से रहिये। (२) गृहस्थी सभालना। यह न मालूम कब अपना घर समझेगा।

अपना टका सीधा करना—हर तरह रुपया कमाना या जीतना। बेईमानी हो चाहे ईमानदारी मुझे तो अपना टका सीधा करना है। अपना तो टका सीधा करने से काम, बुड्ढा मरे या जवान।

अपना ठिकाना करना—अपने लिये रहने का इन्तजाम करना। अब बहुत दिन हो गये अपना ठिकाना करो। मेरा यहाँ गुज़र नहीं मुझे तो अपना ठिकाना करना ही होगा।

अपना पराया—मित्र शत्रु, मेरा तेरा। इसे अपना पराया बहुत आता है। अपने पराये की परख करना बुद्धिमानों का काम है। घर मे अपना पराया करने से लड़ाई पैदा होती है।

अपना सा करना—भर सक प्रयत्न

करना। अपना सा बहुतेरा किया परन्तु वह टस से मस न हुआ मै क्या करूँ।

अपना सा मुँह लेकर रह जाना—कुछ न बन पडना, लज्जित होना। जब उसकी एक न सुनी गई तो वह अपना सा मुँह लेकर रह गया। जब उनके हाथ शिकार न लगा तो अपना सा मुँह लेकर लौट आये।

अपना ही राग गाना—अपने मतलब की कहना, अपने फायदे से काम रखना। अपना ही राग गाये जाते हो या किसी दूसरे की भी सुनते हो, (राग अलापना भी प्रचलित है)

अपना अपनी पड़ना—अपना अपना ख्याल होना, अपनी अपनी चिन्ता पड़ना। वहाँ कौन किसी की सुनता था सब को अपनी अपनी पड़ रही थी। जीवन तू कासो कहे, अपनी कथा बखान, जाहि लखों ताहि परी अपनी अपनी आन।

अपनी अपनी गाना—परस्पर विरुद्ध बाते कहना, सब का भिन्न भिन्न विचार प्रकट करना। अपनी अपनी गाने से कोई फायदा नही, किसी एक बात का निश्चय करो। वे लोग तो किसी की एक नही सुनते सब अपनी अपनी गाते है।

अपनी खाल में मस्त रहना—अपनी हालत मे खुश रहना। कोई खाल मे मस्त तो कोई माल मे मस्त।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना—अपनी बात अलग रखना। एक राय रहने से काम चलता है अपनी अपनी खिचड़ी अलग पकाने स काम नही बनता।

अपनी छाती पर हाथ धर के कहना—अपना सा हाल दूसरे का भी समझना। ज़रा तुम ही अपनी छाती पर हाथ धर के कहो कि गरीब पर कैसी बीतती है।

अपनी तरफ़ ख्याल करना—ज़रा अपनी तरफ ख्याल करो क्या कर रहे हो? उपदेश देने से पहले अपनी तरफ भी ख्याल करना चाहिये।

अपनी नींद सोना—इच्छानुसार सोना, चिन्ता और झंझट से अलग रहना। हमे तो कोई परवाह नही मज़े से अपनी नीद सोते हैं। सिपाही का अपनी नीद सोना भी नही मिलता।

अपनी बात का एक—पक्का वायदा करने वाला। वह अपनी बात का एक आदमी है।

अपनी बात पर आना—हठ पकड़ना, ज़िद पकड़ना। मै अगर अपनी बात पर आ गया तो इसे पूरा करके छोड़ूँगा।

अपनी बीती—अपना अनुभव किया हुआ, अपने पर गुज़री हुई। आप बीती कहूँ या जग बीती। अपने पर जो बीती हैं वह मै ही जानता हूँ।

अपने ख्याल में रहना—किसी की परवाह न करना। हमने उसे कई बार ऐसा करने के लिये मना किया है पर वह तो अपने ख्याल में मस्त है।

अपने ढग का—अनोखा। यह मुकदमा अपने ढग का है।

अपने पांव में आप कुल्हाड़ी मारना—बुराई मोल लेना, जान बूझ कर विपत्ति में पड़ना। जयचन्द ने मुसलमानों को बुला कर अपने पैर मे आप कुल्हाड़ी मारी थी।

अपने पैरों पर खड़ा होना—निर्वाह योग्य बनना। मुझे सहायता की ज़रूरत नहीं मै अब अपने पैरों पर खड़ा हो गया हूँ।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना—अपनी प्रशसा आप करना। क्यों अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते हो हम जानते हैं तुम कितने वीर हो।

अपने सिर लेना—अपने ज़िम्मे लेना। तुम व्यर्थ दूसरों की लडाई अपने सिर लेते हो।

अपने हक में कांटे बोना या विष बोना—अपने लिये आप बुराई करना। मैने ही उस आदमी को अपने यहाँ ठहरा कर अपने हक मे काँटे बोये थे।

अपने हाल में न रहना—होश हवाश में न रहना। जब कभी उसे दौरा पड़ता है वह अपने हाल मे नहीं रहता। अपने हाल मे रहो क्यों बे समझी कर रहे हो, (खाल मे रहना भी प्रचलित है) खाल मे रहो ऐठों मत।

अपने तक रखना—किसी से न कहना। अगर यह भेद अपने ही तक रखो तो कहूँ।

अपने पर आना—जब अपने पर आई तो लगे बगले झाकने। जब अपने पर आती है तब पता चलता है। आखिर अपने पर आ ही गये, फिर क्या था उड़ा दिया सर।

अपने तईं खिचना—अपना भला चाहना। अपने तईं तो हर कोई खिचता है।

अपने को लाट समझना—अपने को बड़ा समझना। वह अपने को बड़ा लाट साहब समझता है।

अपने गिरह का क्या जाता है—अपना कुछ खर्च न होना। हमारे कहने से इस बेचारे का काम बन जाय तो अपने गिरह का क्या जायेगा।

अपने गिरेवान में मुंह डालो—अपनी हैसियत गुण आदि का ख्याल करना। ज़रा अपने गिरेवान मे तो मुँह डालो कि तुम कैसे हो।

अपने हाथों कबर या कुआं खोदना—अपना नाश स्वय करना। जो अपने हाथों कुआ खोदता है वह उसमे खुद गिरता है। औरगजेब ने हिन्दुओं पर जज़िया लगा कर अपनी कबर आप खोदी थी।

अफर कर चलना—ऐंठ कर चलना। थोड़ा सा रुपया पास में हो गया है इसी से अब अफर कर चलते हैं।

अफर जाना—भर पेट खाना। इन्हें खाना मत परोसिये अब तो खूब अफर गये हैं।

अफवाह उड़ाना—झूठी खबर उडाना, गप्प उड़ाना। आज शहर में महात्मा गाधी के गिरफ़ार होने की अफवाह उड़ रही है।

अब तब करना—हीला हवाला करना, देर करना, बहाना करना, आज कल करना। उससे जब मांगो तब ही अब तब करने लगता है।

अब तब होना—(१) मृत्यु समय निकट आना। हाँ, मै उसे देख आया हूँ वह तो अब तब हो रहा है, घड़ी दो घड़ी का मेहमान है। (२) टल जाना। जब मिलता हूँ अब तब हो जाती है दो महीने हो गये।

अबे तबे करना—अनादर पूर्वक बाते करना। बस, ज़बान सुधार कर बोलो, अबे तबे की तो मुँह नाली में रगड़ दूँगा। हर एक से अबे तबे से पेश आना ठीक नहीं।

अभय दान देना—भय से बचाने का वचन देना। जनमेजय के नागयज्ञ से घबरा कर तक्षक ने भगवान से अभय दान देने की प्रार्थना की।

अभिनय करना—(१) स्वांग भरना। तुम अभिनय करने में बड़े चतुर हो। (२) हाव भाव दिखाना। आप गरीबों का तो ख़ूब ही अभिनय करते हैं, हू ब हू नकशा खींच देते हैं।

अमचूर हो जाना—सूख जाना, दुबला पतला हो जाना। तुम तो दो दिन के बुख़ार में ही अमचूर हो गये।

अमल पानी करना—भंग या अफीम पीना, नशा खाना, नशा जमाना। पहले अमल पानी करले पीछे खाना खायेंगे।

अरमान निकालना—हौसले पूरा करना। तुम अपने अरमान निकाल लो दिल में क्यों रखते हो। वसल की रात रहे अरमान निकाले न गये। आह होती न मेरे लब

पर यह नाला होता, एक भी तूने जो अरमान निकाला होता। यार तनहा जो इधर भूल के आ निकला है, कैसे अरमान मचलते हैं निकलने के लिये। अगर आज मेरे पास रुपया होता तो सब अरमान निकाल लेता। आओ तुम भी आज अपने सब अरमान निकाल लो बहुत इधर की उधर कहते फिरते थे।

अरमान रहना या रह जाना—इच्छा पूरी न होना। मन की बात मन ही मे रहना, निराश होना। उनके अचानक मरने से मेरे सब अरमान दिल मे ही रह गये। रहा दिल ही के अन्दर दिल ही का अरमान, निकली जाती है क्या करूँ मेरी जान। तलवार खूँ में रग लो अरमान रह न जाये, बिस्मिल के सर पर कोई एहसान रह न जाये।

अरमान आना—(१) घमण्ड आना। अब उसे दौलत का अरमान आ गया है। (२) दुखित होना। पछताना। करेगा कत्ल पर पीछे तुझे अरमान आयेगा।

अरमान ठंडे पड़ना या सिराना—हविश रह जाना। सारे ही अरमान सिराने, मन प्रसून मुरझाने।

अरमान होना—उत्सुकता होना, आतुरता होना। बस फकत मेरे दिल में तेरे दीदार का अरमान है।

अर्धचन्द्र देना—गल हत्था देना। गर्दन पकड़ कर किसी को किसी जगह से निकालना। उसे अर्ध-चन्द्र देकर निकाल दो।

अलख जगाना—पुकार कर परमात्मा का नाम लेना। ईश्वर के नाम पर भिक्षा माँगना। तुझे घर घर अलख जगाने की कुछ आदत सी पड़ गई है। घर घर अलख जगाना, दो रोटी का चून लाना।

अलल बछेड़ा—अल्हड़ आदमी, अनुभव हीन पुरुष, बे सूड़ का हाथी। अलल बछेड़ा मत हो ज़माना बुरा है।

अवतार होना—शरीर धारण करना, पैदा होना। परमात्मा ने अब तक कितने ही अवतार लिये हैं। राम ने रावण का ध्वस करने को ही अवतार लिया था।

अवतारी—शरारती। बड़ा औतारी लड़का है।

अवसर चूकना—मौका हाथ से खो देना। किसी को अवसर पर नहीं चूकना चाहिये।

अवसर ताकना—मौका देखना, मौका ढूँढना। अवसर ताकते रहो कभी तो वह हाथ आयेगा ही।

अवसर मारा जाना—समय बीत

जाना। अवसर मारा जात है चेतु बिराने मीत।

अवस्था ढलना—बुढ़ापा आना, उम्र अधिक होना। अब क्या है अवस्था ढल गई है।

असामी बनाना—अपने मतलब पर चढ़ाना। कोई ऐसा असामी बनाओ जो लाख दो लाख दे दे।

अहंकार का पुतला—बहुत घमंडी। पूँजी पतियों में अधिकाश अहकार के पुतले होते हैं। (अहकार की मूर्ति भी प्रचलित है)।

आ

आँख—तुम्हारी आँख हमेशा पराये माल पर लगी रहती है। मेरे लिये दोनों आँखे बराबर हैं।

आँख अटकना—प्रेम होना. मेरी उनसे आँख अटक गई। गर आँख अटकती न किसी शोख से जाकर। तो दिल भी कहीं शौक़ गिरफ़्तार न होता।

आँख आना—आँख में दर्द होना। आज स्कूल न जा सकूंगा क्योंकि मेरी आँख आ गई है।

आँख उठाना—देखना, आँख सामने करना। आँख उठाओ तो देख पड़ेगा। (२) बुरी दृष्टि से देखना, हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। मेरे पास रहने से तुम्हारी तरफ़ कोई आँख नहीं उठा सकता।

आँख उठाकर न देखना—घमण्ड करना, ध्यान न देना। वह तो अब गरीबों की तरफ़ आँख उठाकर भी नही देखता।

आँख उलट जाना—पुतली का ऊपर चढ जाना। ज़ख्म के चीरते ही लड़के की आँख उलट गयी।

आँख ऊँची न होना—लज्जा से दृष्टि नीची रहना। अब उनकी आँख हमारे सामने ऊँची नहीं होती, क्योंकि उन्होंने हमारे रुपये अब तक नही दिये।

आँख ऊपर न उठना—लज्जा से नज़र ऊपर न होना। बेटी पर रुपया लेकर अब समाज मे उसकी आँख ऊपर नही उठती।

आँख ओझल }—अपने पीछे।
आँख ओट } आँख ओझल पहाड़ ओझल। आँख की ओट तो चाहे जो कुछ करे परन्तु सामने करेगा तो मेरी भी बदनामी है।

आँख कड़ुवाना—नीद की झपकी आना। अब मुझे सोने दो कल से आँख कड़वा रही हैं।

आँख कान खुला रखना—होशियार रहना। जब से उसके यहाँ डाका पड़ा है वह आँख कान खुले रखता है।

आँख कान से दुरुस्त होना—खूबसूरत और बिना ऐब के होना। लड़की आँख कान से दुरुस्त है

आप देख लें, परन्तु हमारे पास पैसा नहीं है।

आँख की पुतली समझना, होना—अत्यन्त प्रेम करना। मै तुझे आँखो की पुतली समझता हूँ।

आँख का हया—(१) मुँह देखे की शरम। जरा इसके पिता जी की आँख की हया है वरना मै तो इसे पुलिस के हवाले कर ही देता। (२) किसी की शरम। बहू में आँख की हया तो नाम को भी नहीं।

आँख खुलना—उठना, सचेत होना, होशियार होना। इतने सवेरे तो आँख खुलना बड़ी मुश्किल है। दवा (गले से उतरते ही बच्चे की आँख खुल गई। रात को खटका होते ही मेरी आँख खुल गई। क़त्ल का भण्डाफोड होने से अब उस की आँखे खुली हैं।

आँख खोलना—(१) आँख बनाना। न मालूम इस डाक्टर ने कितनों की आँखे खोल दी हैं। (२) ध्यान से। अब इस वक्त आँख खोलकर देख लो पीछे मै ज़िम्मेवार नही।

आँख गड़ना—नज़र जमाना, टक-टकी बाँधना। सूरज की तरफ आँख गड़ाकर देखने से दृष्टि तीव्र होती है। ख़ूब सूरती पर सब की आँख गड़ जाती हैं।

आँख गरम करना—दर्शन का सुख लेना, किसी की सुन्दरता देख कर आँखे जुड़ाना। क्या पनघट पर खड़े आँख गरम कर रहे हो ?

आँख घुलना—दृष्टि से दृष्टि मिलना। अब तो ख़ूब आँखों से आँखे घुलती हैं।

आँख चढ़ना—निद्रा के अभाव से आँखे लाल होना। क्या रात भर जगे थे, आज तुम्हारी आँखे चढी हुई हैं।

आँख चढ़ाना—क्रोध करना। मैने क्या बिगाड़ा है जो मुझपर इस तरह आँखे चढाते हो।

आँख चरने जाना—सामने की चीज़ दिखाई न देना। सामने तो रक्खा है, क्या आँखे चरने गई हैं ?

आँख चार होना—आँख से आँख मिलना सामने होना। (१) आश्चर्य है तुम्हारे जैसा चार आँखों वाला आदमी भी धोखा खा गया। (२) जब आँखे चार होती हैं मोहब्बत आ ही जाती है। (३) घर का खोकर अब मुझे भी चार आँखे हो गई हैं। (४) मैने पहले ही कहा था कि उसकी तुमसे चार आँखे होते ही साफ मुकर जायेगा।

आँख चीर कर देखना—ग़ौर से देखना। ऐसे दिखाई न देगा ज़रा आँख चीर कर देखो।

आँख चुराना—टाल जाना, छिप जाना, कतरा जाना। (१) अपना काम निकाल कर अब आँखे चुराते हो। (२) वह जब कभी इधर आता है तो आँख चुराकर निकल जाता है। (३) वह अब बड़े आदमी हो गये है दोस्तों से आँख चुराते हैं। पड़ गई अब तो नज़र आँख चुराते क्यों हो। (४) दगा देना। तुम तो काम पड़ते ही आँख चुरा गये। ज़ुल्फों का बल बताना, आँखे चुरा के चलना, क्या कज़ अदाइयाँ हैं क्या कर्म निगाहियाँ हैं।

आँख चुराकर देखना—छिपकर देखना। मै उनकी आँख चुराकर दीवार के सहारे खड़ा हुआ यह सब कुछ देख रहा था।

आँख चुरा जाना—आँख बचाकर निकल जाना। मुझे देखते ही आँख चुरा जाते हैं। अब तो आँख चुरा कर निकल जाता है बात भी नही करता। इक दिन वह था कि होते थे इशारे हमसे, अब तो कुछ आँख चुरा जाते हो प्यारे हमसे।

आँख चूकना—असावधान होना। आँख चूकते ही माल यारों का।

आँख छिपाना—कतरा कर जाना। अब तो वह अलग ही अलग आँख छिपाकर निकल जाता है।

आँख जमना—दृष्टि स्थिर रहना, नज़र ठहरना। सूरज के चकाचौंध के मारे आँख नही जमती। बिजली पर आँख नहीं जमती।

आँख जोड़ना—आँख मिलाना। तब तोते रन में दृग जोरे।

आँख झपकना—नींद आना। ज़रा ही आँख झपकी थी की चोर माल उठाकर ले गया।

आँख झुकना या झेंपना—आँख नीची होना। मुझे देखते ही उसकी आँखे झुक जाती हैं। कई दफा मुँह की खाने पर भी उनकी आँख नहीं झेंपती।

आँख टगना—टकटकी लगाना वा बाँधना। तुम्हारी राह देखते देखते आँखे टगी रह गई।

आँख ठंडा करना-होना—धैर्य होना, सन्तोष होना। मेरे बेटे! तुझे देख कर तो मेरी आँखे ठडी हो गई। अब जरा मेरी आँखे ठडी हुई हैं।

आँख डबडबाना—आँखों मे आँसू आना। उसकी मृत्यु सुनते ही मेरी आँखे डबडबा आई।

आँख डालना—मुलाहिजा करना, सरसरी तौर पर देखना। (१) दूसरों की वस्तु पर आँख डालना चोरों का काम है। (२) ज़रा इस पुस्तक पर आँख डाल लो तो फिर यह छपने जायगी।

आँख तरसना—किसी चीज़ को देखने को चित्त लालायित होना।

भगवान के दर्शनों के लिये किसकी आँखे नही तरसतीं। पुत्र को गये हुये कई वर्ष हो गये अब उसे देखने को मेरी आँख तरस रही हैं।

आँख तरेरना—क्रोध से देखना। क्यों आँखे तरेरते हो, काम तो तुम से भी बिगड़ते हैं।

आँख तले न लाना—तुच्छ समझना। मै तुझे ज़रा भी आँख तले नही लाता।

आँख दिखाना—कोप दिखाना। क्या मुझे आँख दिखाकर डराना चाहते हो।

आँख देखते—जान बूझकर। आँखों देखते मक्खी नहीं निगली जाती।

आँख देखा – स्वय देखा। यह सब कुछ मेरी आँख देखा किस्सा है।

आँख दौड़ाना—चारो ओर देखना। मैने बहुतेरी आँख दौड़ाई पर दिखाई न दिया।

आँख न उठना—लज्जा से आँख नीची रहना। मेरी तो उनके सामने आँख नहीं उठती।

आँख न खोलना—बेसुध रहना। आज चार दिन हो गये, बच्चे ने आँख नहीं खोली।

आँख न ठहरना-जमना—आँखे एक जगह न जमना। मोटर की रोशनी के आगे आँखे नहीं ठहरतीं।

आँख न डालना—न देखना। उन्होंने इस चीज़ पर आँख भी न डाली काम मे लाना तो रहा दर किनार। (इसी का उल्टा आँख डालना भी होता है अर्थात् सरसरी तौर पर देख लेना)।

आँख नाक से डरना—ईश्वर से डरना। जो आँख नाक से अधा कर देता है। मुझसे न डरे तो अपनी आँख नाक से तो डरे।

आँख निकालना—क्रोध से देखना। घुडकना, आँख फोड़ना। मैने तुम्हारा क्या बिगाडा है जो मेरी तरफ आँख निकालते हो। गुलाम कादिर ने शाहआलम की आँख निकाल ली थी।

आँख नीची होना—लज्जा उत्पन्न होना। मेरी तो शर्म से आँख नीची हो गई।

आँख नीली पीली करना—बहुत गुस्सा होना। वृथा क्यों आँख नीली पीली करते हो।

आँख पड़ना— ध्यान जाना। सयोग से रुपये पर हमारी आँख पड गई, नहीं तो वह उठा लेता। जिस पर तुम्हारी आँख पड़ जाती है उसे तुम कब छोड़ते हो।

आँख पथराना—आँख थक जाना। तुम्हारी राह देखते देखते आँखे भी पथरा गई।

आँख पर चढ़ना—(१) निगाह

पड़ना। मै ढूँढ ही रहा था कि जन्म पत्री मेरी आँख पर चढ़ गई और मैने उसे खोल डाला। (२) दिल में प्रेम विश्वास होना। आज कल सेठ जी की आँख पर मथुरा प्रसाद चढ़ा हुआ है उसी की मानते हैं।

आँख पर तिनका रखना—जान बूझ कर परवा न करना। पिता जी ने तो आँख पर तिनका रख लिया है, उन्ही का फर्ज है कि डॉट दे।

आँख पर रखना—आराम से रखना। उसने मुझे हमेशा अपनी आँखों पर रखा है।

आँख पलट जाना—तेवर बदल जाना, मुकर जाना। वह तो हिस्सा बँटाने के नाम झट आँख पलट गया।

आँख पसारना—दूर तक देखना। मै तो मेले मे बहुतेरी आँख पसार कर देखता रहा, पर वह दिखाई ही न दिया।

आँख पसीजना—आँखो मे आँसू आना। पुत्र की मृत्यु पर भी उसकी आँखें न पसीजीं। उसका दहाड़ मार कर रोना देख कर मेरी आँख पसीज गई। ग़रीबों की मुसीबते देख कर भी अमीरों की आँखे नहीं पसीजती।

आँख पहचानना—इशारा समझना। मै खूब उनकी आँखें पहचानता हूँ। आँखों को आँख पहचानती हैं। मैं तो मनुष्य की आँख पहचानता हूँ।

आँख पाना—(१) देखने की शक्ति लौट आना। मैने डाक्टर की बदौलत आँखे पा ली। (२) देखने की तमीज होना। आँख भी पाई है या योंही परख करते हो?

आँख फटना—आश्चर्य मे आना। सरकस के खेल देखते ही मेरी आँखे फट गई।

आँख फड़कना—शुभाशुभ सूचित करना। परमात्मा ख़ैर करे आज तो मेरी बाई आँख फड़क रही है।

आँख फाड़ कर देखना—प्रेम से देखना। वह उसकी तरफ आँख फाड़ फाड़ कर देख रहा था।

आँख फिरना या फिर जाना—बेहोश होना, प्रतिकूल होना। अपना मतलब निकालते ही उन्होंने आँखे फेर ली। कौन होता है बुरे वक्त की हालत का शरीक, मरते वक्त आँख को देखा हैं कि फिर जाती है। आँख फेरी तूने जिससे दम फना उसका हुआ, मुरदो के आसार ज़िन्दों मे नज़र आने लगे।

आँख फूटना—दिखाई न देना। क्या आँखे फूट गई हैं? देख कर

नहीं चलते । आँख फूटी पीर गई (कहावत)।

आँख फोड़ना—(१) किसी की राह देखने में दुख उठाना । रात भर उनका इन्तज़ार करते करते आँख फूट गई । (२) आँखों की ज्योति नष्ट करना । रात में सिलाई करके क्यों अपनी आँख फोडते हो। उसने मजदूर की आँख फोड़ दी।

आँख बचाना—ख्याल बँटाना । आँख बची माल दोस्तों का ।

आँख बन्द करके काम करना—ध्यान न रखना । सुधार कर करना तो जानते ही नहीं, जो काम करते हो आँख बन्द करके करते हो, आखिर वह बिगड़ जाता है ।

आँख बदल आना व लेना—बे मुरव्वत हो जाना । वह तो तोते की तरह आँख बदल जाता है ।

आँख बन्द करना या होना—(१) बेखबर हो जाना, भूल जाना । उसकी तरफ से तो आँखें बन्द कर ली हैं । (२) निधड़क । डरो नहीं आँख बन्द करके चले आओ ।

आँख बनवाना—आँख की चिकित्सा कराना । आँख बनवाओ फिर दिखाई देगा ।

आँख बराबर करना—आँख सामने करना । वह मेरे सामने आँख बराबर नहीं कर सकता ।

आँख बिछाना—प्रेम से स्वागत करना । मैंने आप के लिये आँखें बिछा रखी हैं । जाती जाती वह अपनी मुसकराहट छोड़ गई थी उसी पर मैंने अपनी आँखें बिछा दी । आँखे बिछाये हम तो उदू की भी राह में, पर क्या करें कि तू है हमारी निगाह में ।

आँख बैठ जाना—आँख के ढेले का अंदर को चला जाना । हैज़े में आँख बैठ जाती है ।

आँख भर आना—आँखों में आँसू आना । उसका तड़पना देख कर मेरी आँखे भर आई । चला किश्ती में जब आगे से वह महबूब आता है । कभी आँखे भर आतीं हैं, कभी दिल डूब जाता है । कह कह के दुख अपना मै किया मगज़ को खाली, इतना न हुआ सुन के तेरी आँख भर आवे ।

आँख भर कर देखना—नज़र जमाकर देखना । आँख भर कर कभी मैंने उसे नहीं देखा ।

आँख भर लाना—आँखों मे आँसु ले आना । आख़िर मिन्नतें करते करते वह आँख भर लाई और गिड़ गिड़ाकर कहने लगी, इस बार छोड़ दो ।

आँख भौं चढ़ाना या टेढ़ी करना—गुस्सा करना । उसने मुझे देखते ही आँख भौ चढ़ा लीं ।

आँख भौं टेढ़ी करके बातें न करो।

आँख भौं सिकोड़ना—ना पसन्द करना। चाँदी के ज़ेवरों को देखते ही उसने आँख भौं सिकोड़ ली।

आँख मटकाना—इतराना, नाज ओ नखरे करना। क्या आँख मटकाती है ये भी दिन टल जायँगे।

आँख मारना—इशारा करना। वह मुझे रुपया देने जा रहा था किन्तु उसने आँख मार दी।

आँख मिचकाना—इशारा करना। जरा आँख सिचका देना वह समझ जायेगा।

आँख मिलाना—आँख लड़ाना, टकटकी बाँध कर देखना। मेरे होते हुए तुम से कोई आँख नहीं मिला सकता। आइना क्या बतायेगा मुझसे मिलाओ आँख, मेरी नज़र कसौटी है हालो जमाल की।

आँख मूंदना—(१) ससार से बिदा होना। आँखे मुंद जाने पर कुछ भी होता रहे। (२) ध्यान न देना। मैंने तो उधर से आँख मूंद ली हैं।

आँख में पानी नहीं—शर्म नही। उसकी आँख में जरा भी पानी नहीं न किसी से पर्दा करती है न बोलते हुए शर्माती है।

आँख में मैल लाना—दिल खट्टा होना। जरा सी भूल पर आप आँखों में मैल ले आये, भला क्या मै माफी के लायक न थी?

आँख में मैल है उसमें मैल नहीं—बहुत खूबसूरत है, साफ सुथरी है। उसे देखो तो कहोगे कि कोई है, उसकी आँख में मैल है उसमे मैल नही।

आँख मैली करना, होना—आँख बिगाड़ना। केवल दो रुपये के लिये आँख मत मैली करो। बस, इतनी ही बात के लिए तुम्हारी आँख मैली हो गई।

आँख रखना—ध्यान रखना नज़र रखना। इस पर आँख रखना कहीं भाग न जाये। ज़रा मेरे सामान पर भी आँख रखते रहना।

आँख लगना—नींद आना। दर्द के मारे आज रात भर आँख नही लगी। न लगी आँख जब से आँख लगी सौदा को गो वालीं पे गया शोरे कयामत, खुद्दामे अदब बोले अभी आँख लगी हैं।

आँख लगाना—प्रेम करना। इधर यार से आँख लगाना उधर पतिव्रता का ढोंग रचना तुझे ही आता है। किसी से आँख मत लगाओ। नज़र उठाये जो आरसी से तो उनसे पूछू मै यह हँसी से, लगाई है आँख क्या किसी से कहो तो यह देख भाल क्या है।

आँख लगी—(१) प्रेमिका। आज

उस आँख लगी को कहाँ छोड़ आये। आँख लगी दिल बिधा।

आँख लजाना—शर्मिन्दा होना। मुख खाता आँख लजाती।

आँख लड़ना या लड़ जाना—नज़र मिलाना, देखा देखी होना, प्रेम होना। क्या तेरी किसी और से आँख लड गई है, जो तू इस से शादी करने में आना कानी कर रही है? आँख से आँख है लडती मुझे डर है दिल का, कहीं यह जाये न इस जर्गो जदल में मारा।

आँख लड़ाना - आखे मिलाना। पर स्त्री से आँख लड़ाना अधर्म है।

आँख ललचाना—देखने की इच्छा होना। उनके दर्शनो को मेरी आँख ललचा रही हैं।

आँख लाल करना व होना—क्रोध करना। मारे क्रोध से उसकी आँख लाल हो गई।

आँख वाला—चतुर। हे प्रभु! तेरी निराली शान है, आँख वालों को तेरी पहचान है।

आँख सीधी करना या होना—रुखाई न करना, मेल जोल होना। वह गये दिन जो हमेशा मुझ से सीधी आँख थी। आँख सीधी नहीं करता कि मुकाबिला हो जाए. आरसी नाज ने वह देखे हैं शरमाये हुये।

आँख सेंकना—दर्शनो का सुख लेना। कहो आज तो उनको देखकर खूब आँख सेकी।

आँख से सलाम लेना—घमंड के कारण आँख से ही किसी का आदाब, नमस्कार स्वीकार करना। उनकी मिज़ाज का क्या कहना वे तो आँख से सलाम लेते हैं।

आँख से (में) नमस्कार—आँखे झपका कर या नीची करके नमस्कार करना या लेना। जबान नही हिलाई जाती आँख से ही नमस्कार कर लेते हो।

आँख होना—ज्ञान होना। अब ठोकरे खाकर मेरे आँख हो गई हैं। दुनिया के दिन रात झगड़ों को देखकर मुझे भी आँख हो गई हैं।

आँखें आई हुई होना—आँखें दुखना। आज कल उसकी आँखे आई हुई हैं लिख पढ नहीं सकता।

आँखें उमड़ना—(१) देखने की इच्छा होना। मेरी आँखें उनके दर्शनों के लिये उमड रही थीं। (२) देखने आना। महात्मा गान्धी के लिए लाखों आँखें उमड़ रही थीं, शहर मे कोई बाकी न बचा था।

आँखें कहीं दिल कहीं—(१) दिल प्रेमी के पास पड़ा हुआ है आँखे यहा हैं। (२) आँखें दूसरी जगह दिल दूसरी जगह। देख भाल

कर काम किया करो, ये क्या कर रहे हो देखते भी हो या यों ही आँखे कहीं और दिल कही है।

आँखें खिलना, खिल उठना—प्रसन्न होना। प्रेमी को आते देख कर उसकी आँखे खिल उठती हैं।

आँखें खुलना, खुलजाना—(१) ज्ञान होना। महात्मा जी के उपदेश से सब की आँखे खुल गई। (२) होशियार हो जाना। पिछली बार घाटा आने से अब उसकी आँखे खुली है, अब फिजूल खर्ची नहीं करता।

आँखे खुली की खुली रह गईं—दम निकल गया। यहाँ से भला चगा गया था रास्ते में ठोकर लगी गिर पड़ा और आँखे खुली की खुली रह गई।

आँखें खोल कर देखना—गौर करना। आँखे खोलकर देखो इसमे दो हज़ार का नुकसान है।

आँखें गुद्दी में होना—(१) बेवकूफ होना। तुम्हारी आँखे गुद्दी मे है जब ही तो ठीक-ठीक काम नही करते। (२) देख कर काम न करना। सामने रखी चीज़ को ठोकर मार दी क्या आँखें गुद्दी में हैं जो सामने की वस्तु नहीं दीखती।

आँखें चढ़ाना—गुस्से मे आना। इनकी तो ज़रा सी बात पर आँखें चढ़ जाती हैं।

आँख चमकाना—आँखों से इशारे करना। यह लड़की आँखे चमकाने मे बहुत चतुर है।

आँखें चारो तरफ़ चक्कर मकर करना—आँखे चंचल होना। कितनी प्यारी आँखे हैं और फुर्तीली इतनी कि चारो तरफ चक्कर मकर करती रहती हैं।

आँखें चारों तरफ़ रहना या होना—हर एक बात का ध्यान रखना। तुम उनको क्या धोखा दे सकते हो! उनकी आँखे चारों तरफ रहती हैं यह न समझना कि वे तुम्हे देख नहीं रहे हैं।

आँख चुँधियाना—आँखों में चकाचौंध होना, आँखों के आगे चमक आने से देख न सकना। इस हडे की बड़ी रोशनी है आँखें चुधिया जाती हैं। सोने चाँदी का काम इतना चमकदार हो रहा है कि आँखे चुंधियाती हे।

आँखे ज़मी से लगना—आँखें नीची होना, शरम आना। उस दिन इस बुरी तरह से हराया कि जब भी वह मेरे सामने आता है आँखे ज़मीं से लगी रहती हैं।

आँखें ज़मीन से सिली होना—आँखे ज़मीं से लगना, लज्जा से हमेशा निगाह नीचे की ओर रखना।

वह इतनी सुशील है कि आँखे हमेशा जमीन से मिली हुई रहती हैं।

आँखें जलना—दुख होना। तेरे बुरे काम देखकर मेरी आँखे जलती हैं।

आँखें टेढ़ी टेढ़ी हैं—नाराज हैं। आज कल वह मेरी नहीं मानता अब तो उसकी आँखे कुछ टेढी टेढी हैं जब आँखे सीधी थीं तब तो मैं जो चाहता था करा लेता था।

आँखें ठंढी रहें—औलाद ज़िन्दा रहे। कभी रोना न पडे, सुख से रहें। वहू ! गरीबिनी की तो यही दुआ है कि तुम्हारी आँखे ठडी रहें।

आँखें ढूँढती हैं—देखने की बड़ी इच्छा है। मेरी आँखे तुम्हे ही ढूँढ रही थीं। जब भी जाता हूँ मेरी आँखे उन्हें ही ढूँढती हैं।

आँखें तरसना—दर्शन नहीं होते, मिलाप या भेंट नहीं होती। हमारी आँखे तो तुम्हारे लिये तरसती हैं और तुम आते ही नहीं।

आँखें तलवों मे लगना—स्वागत करना। मै जब जब भी गया बेचारे की आँखें मेरे तलवों से ही लगी रही, बड़ी खातिर से पेश आया।

आँखें दुखना—आँखे आई हुई होना। मेरी आँख दुख रही है इस लिये ठंडा चश्मा लगाये रहता हूँ।

आँखें देखना—हालत देखना। स्वभाव तथा रीति नीति जानना। उसने बड़े बड़ों की आँखे देखी हैं, वह तुम्हारे काबू में न आयगा। आजकल तो हमारे अफसरों की आँखे देखो कितनी बुरी हैं।

आँखें धोई धुलाई हैं—आँखे साफ हैं, दिल साफ है। उसकी आँखे मेरी तरफ से बिल्कुल धोई धुलाई हैं वह मुझसे इतनी बात पर आँख मैली नहीं कर सकता।

आँखें पाना—(१) दृष्टि शक्ति पाना। एक बार तो अधा ही हो गया था अब भगवान से आँखे पाई हैं। (२) इशारा पाना। आँखे पाते ही मै उसे पीट दूँगा।

आँखें प्यासी होना—दर्शनों की इच्छा होना। हरि हित आँखे प्यासी मोरी। आँखों की प्यास बुझा प्यारे।

आँखें पैदा करना—तमीज़ हासिल करना। आँखे पैदा करो यह आदमी शरीफ नहीं हो सकता तुम क्या जानो आदमी परखना।

आँखें फोड़ना—(१) गौर से देखना। आँखे फोडकर देखो छः हैं या सात। (२ आँखों के ढेले निकाल लेना या छेद कर देना, दृष्टि शक्ति नाश करना। तिजाब के धुएँ ने मेरी आँखे फोड़ दी।

आँखें बड़ी नियामत है—आँखे

अमूल्य वस्तु हैं। आँखों वालों, आँखे बड़ी नियामत हैं।

आँखें बन्द किये चले जाओ—निःशंक चले जाओ। कोई खतरा नहीं आँखे बन्द किये चले जाओ।

आँखें बन्द थीं—देखा नहीं था। लोटा तुम्हारे सामने ही तो रखा था क्या तुम्हारी आँखे बन्द थीं।

आँखें मिट जायें—फूट जावे। वे आँखे मिट जावे जो स्त्रियों को ताकती हैं।

आँखें माँगना—दृष्टिशक्ति की इच्छा करना। भगवान से आँखे माँगती हूँ और कुछ नही।

आँखें रो रोकर सुजाना—इतना रोना कि आँखे सूज जावें। बहुत रोना। क्यों रो रो कर आँखें सुजाती हो जो हो गया सो हो गया।

आँखें रोशन करना, होना—नूर आना, प्रसन्न करना, ज्ञान देना। आप को देखने से आँखें रोशन हो जाती हैं।

आँखें सफेद होना या हो जाना—बीनाई का जाते रहना। आँखों में जाला पड़ना। पहिले तो थोड़ी थीं अब तो दोनों आँखे सफेद हो गई हैं, बिल्कुल दिखाई ही नहीं देता।

आँखों का अन्धा—मूर्ख। क्या तुम्हे लूटने को मै ही आँखों का अन्धा गाँठ का पूरा मिला हूँ? हम तो ऐसे ही की ताक मे रहते हैं जो आँखों का अन्धा गाँठ का पूरा हो।

आँखों का काँटा होना—शत्रु होना। जब से मै इस घर में आई हूँ सौत की आँखों का काँटा हो रही हूँ।

आँखों का काजल चुराना—गहरी चोरी करना। क्या ख़ूब तुमने तो आँखों का काजल चुरा लिया।

आँखों का जाते रहना—(१) अंधा हो जाना। उस बेचारे की इस बुढापे मे आँखे भी जाती रही। (२) अंधे जैसा होना। ऐसी आँखे तो नही जाती रही जो कार्याकार्य नही देखते?

आँखों का तारा—बहुत प्यारा, मोहन मेरी आँखों का तारा है।

आँखों का तेल निकालना—बहुत बारीक काम करना। इस चित्र में रंग भरना आँखों का तेल निकालना है।

आँखों का नासूर हो जाना—आँखों से हर समय पानी जाना। उसे तो रंज क्या छाया है आँखों का नासूर हो गया है, हर समय आँसू बहता रहता है।

आँखों का (में) नूर होना—(१) रोशनी, दृष्टि शक्ति। मेरी आँखों

मे नूर है तब तक तो सब साथी हैं फिर कौन किसका है। (२) औलाद। हरेक बच्चा हमारी आँखों का नूर है। (३) बहुत प्यार करना। मैं तुम्हें अपनी आँखों का नूर समझता हूँ।

आँखो का परदा उठा देना—शर्म छोड़ देना, घूँघट न रखना। उसने अपनी आँखों का परदा ही उठा दिया उसे किसी का शर्म है।

आँखों का परदा हटना—ज्ञान चक्षु खुलना। आँखों का परदा हटते ही सब बाते समझ मे आ गई।

आँखो का पानी ढलना—निर्लज्ज होना। तेरी तो आँखों का पानी ढल गया है, न शर्म है न लिहाज़।

आँखों का रोना—देखने को आकुल होना। उनके बिना मेरी आँखे रोती हैं।

आँखों की कसम—स्त्रियाँ प्रायः यह कसम खाती हैं यह बहुत कीमती कसम समझी जाती है। मुझे अपनी आँखों की (कभी कभी अर्थ है बच्चों की) कसम जो मैने देखा भी हो।

आँखों की राह दिल में आना—आँख और दिल दोनों का प्यारा। मेरी आँखों की राह दिल मे आया है मै उसका अनिष्ट कभी नहीं देख सकती।

आँखों के आगे आना—करनी का फल उठाना। जैसा किया था वेसा उसकी आँखों के आगे आ गया।

आँखो के आगे अन्धेरा छाना
आँखों के आगे अन्धेरा होना
संसार सूना दिखाई देना। अभिमन्यु के मरते ही अर्जुन की आँखों के आगे अन्धेरा छा गया।

आँखो के आगे चान्दना—(१) आँखों के आगे सफाई होना। मेरी आँखों के आगे तो चान्दना है मुझे तो उसके किसी काम मे बुराई नहीं दिखाती। (२) आँखों का होना न होना, एकसा। तुम्हारी आँखों के आगे तो चान्दना है क्यों अन्धे मियाँ?

आँखों के आगे चिनगारी या लौ छूटना—चकाचौंध आना। सूर्य को देखने से आँखो के आगे चिनगारी छूटने लगती है।

आँखो के आगे तारे छूटना—कमजोरी या सदमे से तिरमिरे छूटना। मुझे इन दिनों कुछ नही दिखाइ देता मेरी आँखों के आगे तो तारे छूटते हैं। (आँखों में आँसू भरने पर भी ऐसा होता है)।

आँखो के आगे नाचना—
आँखो के आगे फिरना—
ध्यान पर चढ़ा रहना। उसकी सूरत मेरी आँखों के आगे फिर रही है।

आँखो के आगे रखना—पास से न जाने देना। मै इन बच्चों को अपनी आँखों के आगे रखती हूँ।

आँखों के तले लहू या खून उतरना—गुस्से मे लाल होना। नीच तुझे देखते ही मेरी आँखों के तले लोहू उतरता है।

आँखो के नाखून लेना—तमीज़ सीखना। अभी आप जानते ही क्या है पहिले आँखों के नाखून लीजिये फिर इसे देखना तब इसकी असलियत आप को जाहिर होगी।

आँखों के बल—शौक से। मै आँखों के बल जाने को ही नहीं हर एक काम बजा लाने को तैयार हूँ।

आँखों के बल चलना—आँखों पर बैठना, ध्यान से चलना। पहाड़ों पर आँखों के बल चलना पडता है।

आँखो को खो बैठना—अन्धा हो जाना। मै तो रो रो कर अपनी आँखो को भी खो बैठी।

आँखो देख के या देखते—प्रत्यक्ष मे। जान बूझ कर। आँखों देखते मक्खी नही निगली जाती।

आँखो देखा न कानो सुना—नया ही अनोखा। हमने तो ऐसा कभी न आँखों देखा न कानों सुना, समझ मे नहीं आता तुम्हें ऐसी बात पर कैसे विश्वास आगया।

आँखों पर ऐनक लगाओ—(१) आँख बनवाओ। किसी डाक्टर से आँखों पर ऐनक लगाओ तब आँखे ठीक होंगी। (२) देखने की तमीज़ हासिल करो। आँखों पर ऐनक लगाओ तब देखना यह कैसी सुन्दर चीज़ है।

आँखों देखी कहना या बात होना—सामने की घटना। मै तो आँखों देखी कह रहा हूँ कोई सुनी सुनाई नही।

आँखों पर ठीकरी रख लेना—निर्लज्ज होना, जान बूझ कर अन जान बनना। हमसे तो देखते हुए आँखों पर ठीकरी नही रखी जाती। उसने तो बिल्कुल आँखों पर ठीकरी रख ली है, लड़के को कुछ नहीं कहता।

आँखो पर परदा पड़ना—अज्ञान छाना, धोखा होना। क्या खरीदते वक्त आँखों पर परदा पड़ गया था ?

आँखो पर बैठाना—बहुत आदर करना। वे मेरे घर आये मै उन्हे अपनी आँखों पर बिठाऊँ।

आँखो पर हाथ रखना—जान बूझकर अन्धा बनना। ऐसा कुकर्म मुझसे तो नही देखा जाता, मैं तो अपनी आँखों पर हाथ रख लेता हूँ।

आँखों में आँख पड़ना या डालना—प्रेम होना। उससे मेरी स्वाभाविक ही आँखों में आँख पड़ गई। नेक सी काँकरी जाके परै, वह पीर के मारे सुधीर धरै ना। कैसे परे कल ऐरी भटू जब आँख में आँख परै निकरै ना।

आँखों में आँखें डालना—आँखों से मोहित करना। ले गया मेरा वह दिल आँखों में आँखें डालकर।

आँखों में कहना—इशारा करना। मैंने तुम्हें आँखों में हां कह दिया था। बच्चा वह है जो आँखों के कहने में चले।

आँखों में कूट कूट कर मोती भरना—आँखें बड़ी सुन्दर होना। उसकी आँखों में तो कूट कूट कर मोती भरे गये हैं देखते ही मोह लेती हैं।

आँखों में खटकना या खार होना—नजरों में बुरा लगना। वह तो दुश्मन की तरह मेरी आँखों में खटकता है।

आँखों में खा जाना—आँखों के इशारे से धमकाना और मना करना। मैं आखिर कैसे स्वीकार कर लेती सास तो मुझे आँखों में खाए ही जाती थी।

आँखों में खून उतरना—क्रोध से रक्त नेत्र होना। उसे देखते ही मेरी आँखों में खून उतरता है।

आँखों में गड़ना—बुरा लगना। वह सब की आँखों में गड़ रहा है।

आँखों में खाक की चुटकी डालना—कभी जरा सा भी काम न करना। मैं उस नीच की आँखों में खाक की चुटकी भी न डालूँ खाना खिलाने की बात कौन कहे।

आँखों में घर करना—हृदय में बैठना। पुतलियों की तरह आँखों में घर करते हैं आप।

आँखों में चरबी छाना—घमण्ड में चूर रहना। थोड़े ही धन से उसकी आँखों में चरबी छा गई है अब तो वह किसी को पहचानता भी नहीं।

आँखों में चुभना—दिल में जम जाना। यह चीज़ तो मेरी आँखों में चुभ गई है और अब मैं इसका इन्तजाम भी जरूर करूँगा।

आँखों में जगह करना—हृदय में स्थान पाना, सम्मान होना। उस ने अपनी सेवा से जनता की आँखों में जगह कर ली।

आँखों में ज़रा मैल नहीं—कसूर करने पर भी ढीठ होना। छः दफे जेल जा चुका है परन्तु उसकी आँखों में ज़रा भी मैल नहीं।

आँखों में जान आना—(१) ठढक पड़ना। धूप में चलते चलते दुखी हो गये अब जरा छाँह में आकर आँखों में जान आई है।

(२) निरोग होना । अब तो कुछ उसकी आँखों मे जान आगई है पहिले तो मरियल सा लगता था ।

आँखों में डर न होना—हया या भय न होना । उसकी आँखों मे किसी का डर नहीं चाहे जितनी बेइज़्ज़ती हो ।

आँखों में तरावट आना—तबियत ताज़ी होना । अब ज़रा पानी पीकर आँखों मे तरावट आई है । घी खाने से आँखों मे तरावट आती है ।

आँखो में धूल झोंकना—धोखा देना । बातों ही बातों मे वह आँखों मे धूल झोंक देता है । देखते ही देखते वह आँखों में धूल झोंक गया ।

आँखों में नौन देना झोंकना—(१) दगा देना । वह सब की आँखों में नोन (मिर्च) झोंकना चाहता है किसी का सगा नहीं है । (२) आँखे फोड़ना । मेरी ओर देखेगा तो आँखों मे नौन झोंक दूँगी । (३) बुरा करना । उसकी आँखों मे नौन तो मै झोंक दूँ, लेकिन भलाई तो कभी न करूँ, याद है उस दिन कैसी नीचता की थी ।

आँखों में पालना—अत्यन्त प्रेम से रक्षा करना । एक ही लड़का है इसे मै आँखों मे पालता हूँ ।

आँखों में फिरना—तस्वीर में रहना । हर वक्त याद रहना । उसकी एक एक हरकत मेरी आँखों में फिरती है । वह आज तक हर वक्त आँखों में फिरती है ।

आँखो में फीका लगना—आँखों मे न जँचना । मेरी आँखों मे तो यह सारा पंडाल ही फीका लगता है क्योंकि न तो बिजली का इंत-जाम है न बड़े बड़े फोटो ही हैं आखिर ऐसा भी क्या इन्तज़ाम ।

आँखों में वचन होना—आँखों मे वायदा करना । उनकी आँखों मे ही वचन हो जाते हैं, चिट्ठी तो वे एक दूसरे को लिखते ही नही पकड़ूँ कहाँ से ?

आँखों में बसना—हृदय में समाना । कृष्ण मेरी आँखों में बस गया है ।

आँखो में मुरव्वत—लिहाज या मुरव्वत, बड़ा तोते चश्म है उसका क्या विश्वास करना उसकी आँखों में मुरव्वत नही है ।

आँखो में मोहिनी है—देखते ही चित्त लुभा जाता है, दिल चाहने लगता है । उसकी आँखों मे तो मोहिनी है जो उधर गया वही मरीज़ बन गया ।

आँखो में रसीलापन होना—चित्त लुभाने की ताकत होना । उसकी आँखों मे रसीलापन है जी चाहता है उधर ही देखा करे ।

आँखों में रात कटना या काटना—रात भर जागते रहना। मित्र तुम्हारी बाट देखते देखते आँखों में रात काट दी। उनकी बीमारी के कारण रात आँखों मे कटती है।

आँखों में शील होना—लज्जा होना। उसकी आँखों में ज़रा भी शील नहीं बिल्कुल बेसर्म है।

आँखों में समाना—आँखों मे जँचना। आँखों में समा जाना इस दिल में रहा करना, बैकुण्ठ यही तो है इसही मे रहा करना। समाया है जब से तू आँखों में मेरी, जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।

आँखों में सरसों फूलना—प्रसन्नता होना। प्रेमी को देखते ही उसकी आँखों में फूल आना।

आँखों में सरूर होना—आँख लाल होना। नशे से आँखे चढ़ जाना। जरा सा भंग पिते ही उसकी आँखों में सरूर हो आना।

आँखों से—खुद। मैने आँखों से उसे वह काम करते हुए पाया या देखा। मै आँखों से (खुशी से) हाज़िर हूँ।

आँखों से उतरना—आँख से गिरना। यह ज़ेवर अब मेरी आँखों से उतर गया है।

आँखों से एक आँसू न निकलना—जरा भी रंज न होना। पिता के मर जाने पर भी उसकी आँखों से एक आँसू न निकला।

आँखों से कबूल—दिलोजान से मंजूर है। हमे आपकी हरेक बात आँखों से कबूल है। आपका हुक्म आँखों से कबूल है।

आँखों से करना—बहुत प्रेम से काम करना। कहना आँखों से करूँ सुन ले राजकुमार!

आँखों से खून बरसना वा चिनगारी छूटना—अत्यन्त क्रोध करना। उसे देखकर मेरी आँखों से खून बरसने लगता है वा चिनगारियाँ छूटने लगती हैं।

आँखों से गिरना वा उतरना—तुच्छ होना, बे कदर होना। वह रुपया गबन करने के कारण पबलिक की आँखों से गिर गया है। अब तुम मेरी आँखों से उतर गये हो।

आँखों से ज़माना देखा है—हम जानते हैं, ऐसा नहीं होता, हमारा अनुभव है। इन आँखों से जमाना देखा है, इन पर विश्वास मत करो सब झूठ बोलते हैं पीछे कोई नहीं रुपया वापिस किया करता।

आँखों से जान निकलना—राह देखते देखते दिक हो जाना।

तुम्हारी राह देखते देखते आँखों से जान तक निकल गई।

आँखों से देखा जो कभी न देखा था—आश्चर्य-कारी, अपूर्व, भयंकर। आज वह भी इन्हीं आँखों से देखा जो कभी न देखा था (बाजीगर ने कमाल ही किया था) हमें ऐसी नीचता की आशा भी न थी।

आँखों से न देखूँ—और तो और देखना भी पसंद न करूँ। मै तो ऐसे आदमी को आँखों से न देखूँ।

आँखों से भी कभी देखी है—कभी देखना भी मयस्सर हुआ है। तुम्हें तो देखने को भी न मिली होगी, यों ही मीन मेख निकालते हो ऐसी चीज़ कभी आँखों से भी देखी है?

आँखों से लगाना—चूम लेना। तेरे इस चित्र को मैं अपनी आँखों से लगाता हूँ।

आँखों से लोहू टपकना—बहुत कष्ट होना। उसकी बातें सुन कर मेरी आँखों से लोहू टपक पड़ा।

आँखो ही आँखो में—आँख के इशारों से ही। आँखों ही आँखों में उसने सारी बातचीत करली।

आँच आना—दुःख या हानि पहुँचना। इस मुकदमे में अगर तुम्हारे ऊपर कुछ आँच आने का अन्देशा हुआ तो मैं बचा लूँगा।

आँच का खेल—भयंकर काम। देश मे क्रान्ति मचाना आँच का खेल है पता नहीं किस समय जला देवे।

आँच खाना—गर्मी पाना। काँच का बरतन ज्यादा आँच खाने से टूट जाता है।

आँच दिखाना—(१) गर्म करना। ढाक के कोयले ज़रा आँच दिखाते ही जल जाते हैं। (२) नष्ट करना। मेरी ओर से चाहे इसमे आँच दिखा दो मुझे क्या नुकसान।

आँच न आने देना—कुछ हानि न होने देना। इस मामले में तुम्हारे ऊपर ज़रा भी आँच नहीं आ सकती। देखना! बच्चे को आँच न आने पाये।

आँच से खेलना—खतरनाक काम हाथ मे लेना। उस आदमी से कभी बात न करो वह धोखेबाज है, उससे मिलना आँच से खेलना है।

आँचल दबाना—दूध पीना। आज तो बच्चा आँचल भी नहीं दबाता।

आँचल देना—दूध पिलाना। बच्चे को सब के सामने आँचल नहीं देना चाहिये, नहीं तो नज़र लगने का भय रहता है।

आँचल पर बैठना—यथेष्ट स्वागत करना। कृष्ण! यदि मेरे घर आओ तो मैं तुम्हें आँचल पर बैठाऊँ।

आँचल पसारना—भीख माँगना। मेरे बच्चे को छोड़ दो मैं तुम्हारे आगे आँचल पसारती हूँ।

आँचल फाड़ना—(१) पर्दा नशीन का गैर शख़स से बातें करना। उसने तो ससुर के सामने भी आँचल फाड़ दिया है। (२) गुस्तख़ाना बातचीत। क्यों आँचल फाड़ती हो हद में रह कर बातें करो। (३) जादू टोना करना। उसने मेरे बच्चे को देखते ही आँचल फाड़ा था, घर आकर वह बीमार हो गया।

आँचल बिछाना—आँचल पर बैठाना, अत्यत आव भगत करना। उनके लिये आँचल बिछा रखा है।

आंचल मुँह पर लेना—घूँघट निकालना। आँचल मुँह पर लो भाई जी आ रहे हैं।

आँचल में बांधना—हर समय साथ रखना। मिठाई क्या मैंने अपनी आँचल में बाँध रक्खी है जो तुझे अभी दे दूँ, घर आना और ले जाना।

आँचल में बात बाँधना—खुद याद रखना। आज की बात आँचल में बाँध लेना।

आँचल लेना—आवभगत करना। अरी बहू, जल्दी उठ, अपनी सास का आँचल ले।

आँचल सँभालना—शरीर को खूब ढकना। बहू बेटी को आँचल सम्भाल कर चलना चाहिये।

आँट पड़ना—भेद पड़ना। साझा [illegible] में आँट पड़ते ही बट जाता है।

आँट पर चढ़ना—दाँव पर चढ़ना। याद रखना अगर आँट पर चढ गये तो मुँह की खाओगे (अंटे पर चढना भी प्रचलित है)।

आँट लगाना—रोक देना। उसने बने बनाये काम मे शिकायत करके आँट लगा दी।

आँटी गर्म करना—रिश्वत देना। पेशकार की आँटी गर्म कर देने से मुकदमा खारिज हो सकता है।

आँटी गर्म होना—अधिक धन होना। आज तो आँटी खूब गरम हो रही है।

आँतें कुल बुलाना—भूख से बुरी हालत होना। भूख से आँते कुल-बुला रही है।

आँतें गले में आना—परेशान होना। इस काम से तो आँते ही गले में आ गई।

आँते समेटना—भूख सहना। अच्छी बरात की, रात भर आँतें समेटे बैठे रहे।

आँतें सूखना—भूख से बुरी दशा होना। तुम तो कहते थे मुझे भूखा रहने का अभ्यास है अब तो दो दिन में ही आते सूख गई।

आँतों का बल खुलना—पेट भरना। आज तो लड्डू खाने से आँतों के बल खुल गये।

आँतों में बल पड़ना—पेट ऐंठना, दुखना। हँसते हँसते आँतों मे भी बल पड़ गये।

आँधी आना या चलना—हलचल मचना। ऐसी क्या आँधी आ गई जो इतनी जल्दी करते हो।

आँधी उठाना—धूम मचाना। क्यों आँधी उठा रखी है अपनी अपनी जगह पर बैठ जाओ। कुछ दिन गांधी की आँधी भी खूब उठी।

आँधी के आम—बहुत सस्ती चीज़। आज अमरूद आँधी के आम हो रहे हैं। आँधी के आम हैं फिर इस भाव न मिलेंगे?

आँधी रोग होना—परेशानी होना, रास्ता तै न होना। कहा था ५ मील है यहाँ आँधी रोग हो गया है, दो घंटे हुए तो भी पहुँचते ही नहीं।

आँधी होना—बहुत तेज़ चलना। डाकगाड़ी आज आँधी हो रही है। चलते वक्त तो तुम आँधी हो जाते हो किसी को साथ नहीं लगने देते।

आँवल नाल गड़ना—जन्म भूमि। मेरा कोई आँवल नाल तो गड़ा ही नहीं है जो वहाँ जाऊँ ही जरूर, इच्छा होगी चला जाऊँगा नहीं तो नहीं सही।

आँसुओं का तार बंधना
आँसुओं का तार न टूटना
आँसुओं की झड़ी बंधना
खूब आँसू बहाना, लगातार आँसू आना। पश्चाताप के मारे उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी बंध गई। सीता के वियोग मे राम की आँखों से आँसुओ का तार नही टूटता था।

आँसुओं से मुँह धोना—बहुत आँसू गिरना। शबे फ़ुरकत न तनहा मुझे रुलाती है, यह सुबहे वस्ल भी आँसुओ से मुँह धुलाती है।

आँसू डबडबा आना—रोने की दशा होना। यह बात सुनते ही उसकी आँखो मे आँसू डबडबा आये। उसकी मृत्यु की याद आते ही आँसू डबडबा आते है।

आँसू डालना, गिराना, टपकाना—रोना। ज़रा ज़रा सी बात पर आँसू टपकाना ठीक नहीं। स्वामी श्रद्धानद के बलिदान पर ऐसा कोई आदमी न था जिसने आँसू न गिराये हों।

आँसू थमना—रोना बन्द होना। जब से फेल होने का समाचार सुना है उसके आँसू नहीं थमते।

आँसू निकल पड़ना—एक दम रुलाई आ जाना। उसकी दीन दशा देकर मेरे तो आँसू निकल पड़े।

आँसू पीकर रह जाना—भीतर ही भीतर दुःखी होकर रह जाना। मैं तुम्हारे कुलक्षण देखकर आँसुओं का घूट पीकर रह जाती हूँ। करती थी जो भूख प्यास वस में आँसू पीती थी खाके कसमे।

आँसू पुछना—ढाढ़स बंधना, दिल जमई होना। अगर उसे भी कुछ हिस्सा मिल जाता तो उसके आँसू पुछ जाते।

आँसू पोंछना—ढाढ़स देना, दिल जमई करना। उसका तो कोई आँसू पोंछनेवाला भी न रहा। गरीबों के आँसू परमात्मा ही पोंछते हैं।

आँसू बहाना—रोना। उनके नाम पर आँसू बहाएँ क्यों कर हम, वे हँसते हुए देश पर कुरबान हुए।

आँसू भर लाना—रोने लगना। जैसे ही मैंने उससे यह बात पूछी वह आँसू भर लाया।

आइना होना—(१) समझ में आ जाना। उसकी यह बात तो मुझे आइना हो गई। (२) बच्चों की बुद्धि आइना होती है, उसमें जैसे विचार पड़ेंगे वैसे ही काम बच्चे करने लगेंगे। (३) साफ होना। बर्तन क्या हैं, आइना हो रहे हैं।

आइने में मुँह देखना—(१) अपनी असलियत को समझना लड़की तो हो जन्नत (स्वर्ग) की परी और अपनी शक्ल भी आपने आइने में देखी! (१) आपको दे देता! आपने अपनी शक्ल भी आइने में देखी या योंही माँगने लगे! (२) जाओ आइने (दर्पण) में मुँह देखो फिर माँगना।

आकाश के तारे तोड़ लाना—बहुत कठिन कार्य कर दिखाना। उस महा बेईमान से रुपये ले आये! ये तो साहब आकाश के तारे तोड़ लाये!

आकाश खुलना—(१) बादल साफ होना। आज कई दिनों के बाद आकाश खुला है? (२) सुविधा होना। वहाँ का आकाश मेरे लिये साफ है, मैं कुछ भी कर सकता हूँ।

आकाश चूमना या छूना—बहुत ऊँचा होना। महाराज के महल आकाश चूमते हैं।

आकाश पर दिया जलाना—इतराना, घमण्ड करना। अभी से आकाश पर दिया जलाने लगे, देखना, तुम्हारे जैसे ३६० फिरते हैं।

आकाश पाताल का अन्तर—

महदन्तर। ये विचारे उनकी क्या बराबरी करेंगे इनमें उनमें आकाश पाताल का भेद (अन्तर) है।

आकाश पाताल के कुलावे मिलाना या एक करना—(१) भारी उद्योग करना। खिलाफत की रक्षा के लिये मुसलमानों ने आकाश पाताल एक कर दिया था। (२) बहुत बातें करना। यों तो आकाश पाताल के कुलावे मिला देते हो और काम करने के नाम पर कुछ नहीं।

आकाश बाँधना—अनहोनी बात कहना। इरादा भी करते हो तो आकाश बाँधने का भला यह भी कभी हो सकता है?

आकाश से बातें करना—बहुत ऊँचा होना। हिमालय की कचनचगा चोटी आकाश से बातें करती हैं।

आग उठाना—झगड़ा फैलाना। मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि यह सारी आग तुम्हीं ने उठाई है।

आग करना—(१) आँच जलाना। तुम चूल्हे में आग करो, मैं आता हूँ। (२) बहुत गर्म करना। तुमने तो इस लोहे को तपाकर आग कर दिया।

आग का पुतला—क्रोधी। उसे मत छेड़ो वह तो आग का पुतला है।

आग के मोल—बहुत मंहगी। पहाड़ों पर सब चीज़ आग के मोल मिलती हैं।

आग खाना अंगार हगना—जैसा करना वैसा भरना। हमें क्या जो आग खायेगा अंगार हगेगा।

आग तलवे से लगना—अत्यंत क्रुद्ध होना। यह सुनते ही तलवे से आग लग गई।

आग देना—(१) बरबाद करना। मुझे क्या करना है? मेरी ओर से चाहे इन्हें आग दे दो। इनमें आग दे दो। (२) दाह देना—पारा १००° आग देने से शुद्ध हो जाता है।

आग निकलना—(१) किसी वस्तु का बहुत गर्म होना। गर्मी के मारे दिवारों से भी आग निकल रही है। (२) किसी वस्तु की चोट या रगड़ से आग पैदा होना। पत्थर को पत्थर पर मारने से आग निकलती है।

आग पड़ना—महगा होना। आज तो शाक भाजी पर भी आग पड़ रही है।

आग पर आग डालना—दुःख पर दुःख देना, जले को जलाना। वह पहिले ही जला भुना बैठा था, तुमने और आग पर आग डाल दी।

आग पर पानी डालना—शान्त

करना, क्रोध मिटाना। जरा तुमही समझाकर आग पर पानी डालदो।

आग पर लोटना—बेचैन होना, रंज करना, क्रोध करना। मै उसके विरह में आग पर लोट रहा हूँ।

आग पानी का वैर—स्वाभाविक शत्रुता। दोनों अपनी अपनी ताक में रहते हैं उनका तो आग पानी का वैर है, पहिले उसने पीट दिया था, अब कि उसने जेल मे ठूँस दिया।

आग पानी में लगाना—जहाँ लड़ाई न हो वहाँ लड़ाई कराना। लगाते हैं तो हम वे गिरियाँ हैं दिल जलों को तेरे, ये हैं वही जो लगाते हैं आग पानी में।

आग पेट की—भूख। कोरी बातों से पेट की आग नहीं बुझती।

आग फाँकना— नुकसान में प्रवेश। क्यों ख्वामख्वाह इस काम में पड़ कर आग फाँकते हो ?

आग फुँकना—क्रोध में और क्रोध आना। उसकी बातों से मेरे तन में आग फुँक गई।

आग फूँकना—आग लगाना। इस दवा ने तो और आग फूँक दी?

आग फूंस का वैर—स्वाभाविक शत्रुता। बिल्ली चूहे का आग फूस का वैर है।

आग बढ़ना—क्रुद्ध होना। ज़रा ठहर कर जाना, इसी समय जाओगे तो उनकी आग और बढ़ जायगी।

आग बन जाना—क्रोध के कारण मुख लाल होना। जिस समय पिता जी क्रोधित होते हैं उस समय आग बन जाते हैं।

आग बबूला होना या बनना—अत्यन्त क्रुद्ध होना। वह दुभाती की बात सुनते ही आग बबूला हो जाता है या बन जाता है। परशुराम शिव धनुष को टूटा देखकर आग बबूला हो गये।

आग बरसना—तेज धूप पड़ना। आज तो घर से निकला नहीं जाता आग बरस रही है।

आग बरसाना—(१) शत्रु पर गोलियों को चलाना। आजकल इटली की तोपे अबीसीनिया पर आग बरसा रही हैं। (२) क्रोधित होना। जब भी तुम आते हो आग ही बरसाते आते हो।

आग बुझना—(१) भूख मिटना इसे कुछ खाने को दे दो जिससे इसकी पेट की आग बुझ जावे। (२) लड़ाई झगड़ा मिटना। इतनी खुशामद पर भी तेरी आग नहीं बुझी।

आग बुझा देना या लेना—(१) बदला लेना। तुम्हें भी अपनी आग बुझा लेने का अच्छा अवसर है। (२) आग पर पानी डालना। चूल्हे की आग बुझा दो।

आग बोना—लड़ाई का बीज बोना। क्या देख रहे हो यह सब आग तुम्हारी ही बोई हुई है।

आग भड़कना या भड़काना—हलचल मचाना। (१) जरा सी बात ने हिन्दू मुसलमानों में आग भड़का दी। (२) बदला लेने का भाव उमड़ना। शत्रु को देखते ही उसकी आग भड़कने लगी।

आग भभूका बनना—गुस्से में लाल हो जाना। जरा सी बात पर आग भभूका बन जाते हो।

आग भी न लगाना—कुछ न समझना। मै तो तेरे हज़ार रुपयों में आग भी न लगाऊँ।

आगम बाँधना—भविष्य का निश्चय कर लेना। हम तो ऐसे भाग्य हीन हैं, जो कुछ आगम बाँधते हैं, पूरा ही नहीं होता।

आग मुँह में लगना—(१) चुप होना। तुम्हारे मुँह में आग नहीं लगती! (२) मरना। उसके मुँह में कब आग लगेगी।

आग में कूदना या पड़ना—दूसरे का दुःख या आफत अपने सिर लेना। तुम क्यों किसी की आग में कूदते हो! हमारी तरफ से लड़े या मरे।

आग में घी पड़ना—आग में घी डालना—क्रोध को बढ़ाना। उसकी कटी जली बातों से आग मे और घी पड़ जाता है। क्यों चिढाते हो और आग में घी डालते हो?

आग में झोंकना—खराब करना, आफत में फेंकना। लड़के को आजकल के लड़कों की सोहबत में बैठने देना आग मे झोंकना है।

आग में पानी डालना—झगड़ा मिटाना। बढ़ती हुई आग में पानी डालने से खून खच्चर तो न हो सकेगा।

आग में मूतना—अनीति करना। क्यों आग में मूतते हो गरीबों की आह भी मनुष्य को ख़ाक कर देती है।

आग में घी डालना—किसी के क्रोध को बढाना। लक्ष्मण परशुराम से वचन क्या कह रहे थे, आग में घी डाल रहे थे। आग का काम करना भी प्रचलित है। लक्ष्मण के वचनों ने आग में घी का काम किया।

आग लगना या लगाना—(१) बुरा लगना। क्रोध पैदा होना। उस बदमाश को लड़के के साथ देखते ही मेरे तन मे आग लग गई। (२) ईर्ष्या होना, जलन होना। इतना अकलदुश (स्वार्थी) है कि किसी को खाता पीता देखते ही इसके आग लग जाती है। (३) लाल फूलों का चारों ओर फूलना। टेसू के खिले फूलों को देखकर मालूम

होता है जैसे जंगल में आग लग गई। (४) मँहगी होना। बाज़ार में तो आज आग लग रही है, हर एक चीज़ बाबा के मोल बिक रही है। (५) दूर जाना। कभी तुम्हे यहाँ से आग भी लगेगी। (६) ईर्ष्या, प्रेम, क्रोध आदि किसी भाव का उमड़ना। उन्हे देखते ही दिल तड़प जाता है आग लग जाती है। (७) नष्ट होना। आग लगे तुम्हारे काम मे भला इतना भी क्या काम! (८) जलन पैदा करना। इस दवा ने तो बदन में आग लगा दी। (९) झगड़ा बढ़ना। अभी तो झगड़ा मिटा नहीं, यह और आग-लगाने को आ गया। (१०) चुगली करना। उसने न मालूम मेरे विरुद्ध अफसर से क्या आग लगा दी। (११) नष्ट करना, अगर ज्यादा बुरा भला कहोगे तो मैं इसमें आग लगा दूँगी। (१२) छोड़ देना। ससुराल में आग लगा मैके में जा बसी। (१३) बेचैन होना। सेज पड़ी है सूनी आग लगी है दूनी। (१४) उत्पात मचाना। क्यों आग लगा रहे हो निश्चल नहीं बैठते।

आग लगाना—(१) आग जलाना बिजलियाँ देखने वालों पै गिराते आये! तुम जिधर आये आग लगाते आये! (२) नाश होना। आग लगाओ ऐसी नौकरी में जिसमे खाने को वक्त न नहाने को चैन।

आग लगाकर तमाशा देखना—दूसरों को झगड़े में फँसा कर आप अलग हो जाना। अपने घर में आग लगाकर तमाशा देखो तब पता चले।

आग लगाकर पानी को दौड़ना—स्वयं पहिले भड़काना फिर ठंडा करना। पहिले शिकायत की अब जब वह उसे मारने लगे तो रोकती हो, अब क्यों आग लगाकर पानी को दौड़ती हो?

आग लगे पर कुआँ खोदना—आखिर मौके पर उपाय करना। दस महीने का बीमार है जब से भी कुछ किया? अब आग लगे पर कुआँ खोदने से क्या होगा?

आग लेने आना—आकर शीघ्र लौट जाना। यह महाशय तो तुम्हारे यहाँ तनिक भी न बैठे, क्या आग लेने आये थे?

आग से पानी होना या हो जाना—गुस्सा न रहना। जहाँ चिकनी-चुपड़ी दो चार बातें की कि वह आग से पानी हुआ।

आग होना—क्रुध होना। ब्राह्मण देवता अछूत की परछाईं पड़ते ही आग हो गये।

आगा तागा लेना—अच्छी तरह

देख भाल करना। यहाँ से सब साफ कर दो यहाँ अफसर आता है तो बड़ा आगा तागा लेता है।

आगा भारी होना—गर्भ रहना। अब तो बहू का कुछ आगा भारी हो रहा है।

आगा पीछा करना—(१) हिच-कना। इस नाले को कूदने में आगा पीछा क्यों करते हो? (२) टाल-मटोल करना। रुपये देने मे आगा-पीछा क्यों करते हो।

आगा पीछा सोचना—परिणाम सोचना। आगा पीछा सोचकर यदि काम किया होता तो आज ये दिन न देखने पड़ते।

आगा मारना—(१) बढ़ोतरी मे विघ्न डालना। मैंने पहिले ही उसका आगा मार दिया। (२) फौज़ का आगा मार दिया।

आगा मारा जाना—भावी तरक्की मे रुकावट आना। और तो कुछ नहीं इन्सपेक्टर की रिपोर्ट से मेरा आगा मारा गया।

आगा सँभालना—आघात रोकना। आगा तू सँभालना पीछा मैं देख लूँगा।

आगे आगे—क्रमशः। इबतदाये इश्क है रोता है क्या? आगे आगे देखिये होता है क्या? आगे आगे दूल्हा पीछे पीछे बरात शोभा देती है।

आगे आना—(१) भिड़ना। अगर कोई माई का लाल है तो आगे आवे। (२) बदला मिलना। जैसा जो करता है वैसा उसके आगे आता है। (३) आख़िर मे जाहिर होना। हम कहते थे वही आगे आया।

आगे करना—(१) अगुआ बनाना। अर्जुन शिखण्डी को आगे करके भीष्म पर बाण बरसाने लगे। (२) आफ़त मे झोंकना। उसने तो चोरी की और मुझे आगे किया।

आगे का उठा—जूठा। गाधी जी के उपदेशों से मेहतरों ने आगे का उठा खाना छोड़ दिया।

आगे का कदम पीछे पड़ना—(१) कायरता दिखना। वीरों का कभी आगे का कदम पीछे नहीं पड़ता। (२) अवनति होना। दिनों का फेर है जो काम उठाते हैं आगे का कदम पीछे पड़ता है। तुम लगे ग़ैरों से मिलने दिल हमारा फट गया, जो कदम उल्फत का था आगे सो पीछे हट गया।

आगे डालना—अनादर से देना। जो बचा खुचा होता है कुत्ते की तरह मेरे आगे डाल देती है।

आगे डोलना—बच्चों का होना। बहुतेरे आगे डोल रहे हैं एक उतर गया तो क्या हुआ। (**आगे फिरना**—खड़ी बोली)।

आगे धरना—आदर्श बनाना। माता पिता की शिक्षा को आगे धर कर चलना चाहिये। (**आगे रखना**—ख० बो०-पेश करना)।

आगे पीछे फिरना—खुशामद के रूप मे साथ रहना। वह हमेशा अफसर के आगे पीछे फिरता रहता है।

आगे पीछे रहना—किसी की निगरानी करना सी० आई० डी० का सिपाही मेरे हर वक्त आगे पीछे रहता है। "आगे पीछे फिरता है" भी इस भाव में आता है।

आगे पीछे न होना } —वंशज न **आगे पीछे होना** } होना। मेरे कौन आगे पीछे रक्खा है, जो दान पुण्य कर जाऊँगा वही आप का है। आगे नाथ न पीछे पगहा (गृहस्थी के झंझट न होना)।

आगे बढ़ना—सामने आना। (१) जरा आगे बढ कर दो दो हाथ मारो। (२) मारते के सामने कौन आगे बढता है। (३) उन्नति करना। आजकल जापान व्यापार मे बहुत आगे बढ रहा है। (४) मार्ग दिखाना। दीपक लेकर आगे बढो। (५) रोकना, बाधा पहुँचाना। आगे बढो नहीं तो दुश्मन क़िले पर चढ आते हैं। (६) सामना करना। डरते क्यों हो आगे बढो।

आगे रंग लाना—(१) गुल खिलना। (२) भविष्य में बुराई लाना। (३) यह तुम्हारा शबाब आगे रंग लायेगा। (४) यह जूए का शौक आगे रंग लायेगा।

आगे से लेना, आगे होकर लेना—स्वागत करना। बरात को आगे से लेकर जनवासे मे ठहरा देना। आगे से जिहि सुरपति लेई, अर्ध सिंहासन आसन देई।

आजकल करना या बताना—टाल-मटोल करना। आजकल करने से क्या फायदा, देना है तो दे दो अन्यथा इन्कार कर दो।

आजकल में—आज या कल तक, दो चार दिन में, शीघ्र ही। वह आजकल मे ही आने वाला है।

आजकल लगना—अब तब होना। आजकल लग रही है, डाक्टरों ने जवाब दे दिया।

आज को—इस समय। आज को तिलक जीवित होते तो स्वराज्य मिल जाता।

आज तक—अब तलक। आज तक तो एक पैसा दिया नहीं आगे की भगवान जाने।

आज दिन—वर्तमान समय में। आज दिन गांधी जी की टक्कर का दूसरा राजनीतिज्ञ नहीं।

आज बरस कर फिर बरसेगा—ऐसा ही फिर भी होगा। जैसे

आज हद दरजे के नाराज या प्रसन्न हुए थे वैसे फिर भी होंगे।

आज़िज आना—ऊब जाना। हम तो इस नौकरी से आज़िज आ गये, क्या करें।

आज़िज होना—लाचार होना। भाई मै तो इस समय रुपयों की वज़ह से आज़िज हूं नही तो कुछ कर दिखाता।

आटा गीला होना—मुश्किल का सामना। आजकल बड़ा आटा गीला हो रहा है करे तो बदनामी न करें तो बदनामी।

आटे दाल का भाव मालूम होना—व्यवहार का ज्ञान होना। मेरे मर जाने के बाद आटे दाल का भाव मालूम हो जायगा।

आटे दाल की फिकर—निर्वाह की चिन्ता। सयाने हो गये आटे दाल की फिक्र करो।

आटे के साथ घुन पिसना—अपराधी के साथ निरपराध की कम्बख्ती आना! चोरी की उसने, मै वैसे ही आटे के साथ घुन की तरह पिस गया।

आटे में नमक—थोड़ा। झूठ बोलो इतना जितना आटे में नमक।

आठ आठ आंसू रोना—फूट फूट कर रोना। पिता जी की याद आते ही आठ आठ आँसू रोने लगता है।

आठों गाँठ कुम्मैत—घुटा हुआ, पूर्ण चालाक। वह कब धोका खा सकता है आठों गाठ कुम्मैत है, कुछ रुपये ज्यादा लिखा लिये कुछ मुकर गया।

आठों (आठ) पहर चौंसठ घड़ो—दिन रात। वह तो आठों पहर चौसठ घड़ी प्रिय की चिंता में रहती है।

आडम्बर फैलाना—ढोंग रचना। तुम आडम्बर फैलाना तो अच्छा जानते हो। (२) दिखावट करना। शादी मे इतना आडम्बर रचने की क्या जरूरत थी?

आड़े आना—विघ्न डालना। तुम मेरे हर काम में आड़े आते हो।

आड़े तिरछे होना—बिगड़ना त्योरी बदलना। मैंने ऐसा क्या कह दिया जो आड़े तिरछे होते हो।

आड़े हाथों लेना—व्यंग्योक्ति से लज्जित करना, खरी खोटी सुनाना। मैने तो आज उसे ऐसे आड़े हाथों लिया कि वह याद करेगा।

आत्मा मसोसना—भूख दबाना। मै तो अपनी आत्मा मसोस कर बैठ रहूँगी मगर इन बच्चों के लिए क्या करूँगी।

आत्मा ठंडी होना—(१) सन्तोष होना। मेरी तो आत्मा तब ही ठडी होगी जब मेरे जैसा हाल

इसका होगा। (२) पेट भरना। पेट में पड़े तो आत्मा ठंडी हो।

आत्मा में पड़ना—पेट में पड़ना। आत्मा में पड़े तो परमात्मा सूझे।

आदमियत करना—दया के साथ बरतना। यदि तुम इन नौकरों से आदमियत करोगे तो तुम्हारा ही गुण गायेंगे।

आदमियत पकड़ना—शिष्टाचार सीखना। इतने दिन शहर में रहते हो गये, कुछ तो आदमियत पकड़ो।

आदमी बनना—(१) सभ्य बनना। जब देखो तब लड़कपन की बातें तुम कभी आदमी भी बनोगे। (२) इन्सानियत। तुम्हें आदमी बनना कब आयेगा।

आदमी के लिबास में आना—तहजीब सीखना। आदमी के लिबास में आओ जानवर मत बनो।

आदमी होना—पूरे जवान होना। पहचानता कैसे तब तुम बच्चे थे अब पूरे आदमी हो गये। (२) इन्सान बनना। बसकि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना, आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्साँ होना।

आधमकना—अकस्मात आ जाना। तुम यहाँ कैसे आ धमके? कोई चिट्ठी न पत्री एकदम ही।

आधा होना—दुर्बल होना। मै तो उसके रंज मे आधा हो गया।

आधार होना—पेट मे पड़ना। कुछ आधार भी कर लिये थे या भूखे ही चल दिये थे।

आधी बात—जरा सी भी बे इज्जती के शब्द। मैंने आज तक किसी की भी आधी बात तक नहीं सुनीं।

आधी बात कहना—थोड़ा कहना। (१) साफ साफ कहो आधी बात कहने से काम नहीं चलेगा। (२) कभी डाँट फटकार न करना मैंने तो उससे आजतक आधी बात भी न हीकही।

आधी बात न पूछना—तनिक ख्याल न करना। सत्कार तो क्या उसने तो आधी बात भी नहीं पूछी।

आन की आन में—(१) दम भर में, अति शीघ्र। आन की आन मे सब तैयार हो गये। (२) मर्यादा के मान मे। आन की आन मे आकर इतना बड़ा काम कर डाला।

आन तोड़ना—(१) प्रतिज्ञा तोड़ना। तुम कितने ही नाराज हो जाओ मैं अपनी आन नही तोड़ सकता। (२) जिद्द छोड़ना। क्यों पीछे पड़े हो तुम्हे आन तोडनी पड़ेगी। (३) मर्यादा भग करना। उसने विवाह कुल की आन तोड़ कर किया।

आनन्द के ढोल बजाना—खुशी मनाना। पिता के मर जाने पर जो अब वह आनन्द के ढोल बजाता है। (ताल बजाना भी प्रचलित है)।

आन पड़ी
आन बनी
आ पड़ी
—मुसीबत पड़ना। जिम्मेदारी होना। खुद पर बीतता। दूसरों को ही नसीहत देती थीं अब अपने पर आ बनी है तो आटे दाल का भाव मालूम हुआ है।

आन मानना—हार मनना। देख कर कुर्ती सजीली सब्ज धानी आप की, धान के भी खेत ने है आन मानी आप की।

आन में आना—लज्जा के कारण मर जाना। कुछ गुंडों ने एक सती स्त्री के सतीत्व को नष्ट कर दिया जिसके फल स्वरूप वह आन मे आगई।

आन रखना—हठ रखना। केवल आन (मान या हठ) रखने के लिये मैने बहुत खर्च कर डाला।

आन सँभालना—आबरू रखना। आन सँभाले जान थी जाती, जान सँभाले आन थी जाती।

आन होना—रोक या अप्रचलन। दिल्ली की हद में काले साँप की आन है।

आना कानी करना—टाल मटोल करना, न देना। तुम जाकर माँगना तो सही आना कानी करेगा तो मै देख लूँगा।

आप आप करना—खुशामद करना। हम तो आप आप करते हैं और तुम नख़रे कर रहे हो।

आप आप की पड़ना—अपना अपना ख्याल होना। कौन किसको पूछता है सबको आप आप की पड़ी है। अपनी अपनी पड़ना भी प्रचलित है।

आपको आसमान पर खींचना—अपने आपको बहुत ऊँचा समझना। वह आपको आसमान पर खींचता है, छोटे लोगों से बात भी नहीं करता।

आपको दूर जानना—दूरदर्शी समझना। वह अपने को बहुत दूर (की बात सोचने वाला) जानता है।

आप को भूलना—(आपा भूलना) बेहोश या मदहोश हो जाना। तुच्छ मनुष्य धनवान होने पर आप को भूल जाते हैं। (२) मै तो अपने आप को भूल गया था, आज मालूम हुआ कि मै इस योग्य हूँ।

आपस में गिरह पड़ना—दिलों में गाठ पड़ना। अब वे मित्र नही हैं, अब तो आपस में गिरह पड़ी हुई है।

आपस में रहना—व्यभिचार करना। मैने सुना है कि यह औरत और इसका पड़ोसी आपस में रहते हैं।

आपा खोना—(१) अहंकार त्यागना। ऐसी बानी बोलिये मन का आपा

[६२६]

खोय, औरन को शीतल करे आपहु शीतल होय। (२) अपने को नष्ट कर देना। चूना पान के साथ होकर आपा खो देता है। (३) मर मिटना। एक हिन्दू औरत की रक्षा में उसने आपा खो दिया। (४) अपनी विशेपता या अस्तित्व त्याग देना। हल्दी और चूना मिलकर आपा खोकर लाल हो जाते हैं।

आपा तजना—(१) आत्म-भाव का त्याग। आपा तजौ औ हरि को भजौ। (२) अहंकार छोड़ना। आपा तजै सो हरि का होय।

आपा धापी पड़ना या होना—(देखो आप आप की पड़ना)।

आपे में आना—(१) सचेत होना। इस समय वह आपे मे आ गया है बातें करनी हैं तो कर लो। (२) दम लेना। जरा आपे मे आलूँ तो बातें करूँ। (३) सँभलना। इतनी हानि उठा कर आपे में आये तो क्या आये।

आपे से बाहर होना—बेकाबू या बदहवास होना। (१) कितना भी क्रोध हो आपे से बाहर न होना चाहिये। (२) ऐसी वैसी छोकरी के लिये इतना आपे से बाहर हो गये। आपे से हो गया क्यों बाहर? आग लग जाय तेरी हस्ती पर। आपने तो किया आपे से बाहर हमको। क्रोध शोक या इश्क में लोग आपे से बाहर हो जाते हैं।

आफ़त का परकाला, आफ़त का टुकड़ा—(१) फुर्तीला, होशियार। लड़का क्या है आफत का परकाला है, आनन फानन में काम कर लाता है। (२) अटूट प्रयत्न करने वाला। इस काम मे वह आफत का परकाल बन गया था। (३) उपद्रवी, शरारत करने वाला। नाकों दम किये देता है ये तो आफत का टुकडा है।

आफ़त झेलना, उठाना—(१) तकलीफ सहना। स्वतन्त्रता के लिये प्रताप को बड़ी आफते झेलनी पड़ीं। २) ऊधम मचाना। डाकुओं ने तो चारों ओर आफत उठा (मचा) रखी है।

आफ़त मचाना—(१) बेचैन करना। दिल ने आफत मचा रखी है बहुत, इसको तस्कीन कभी दे जाना। (२) उतावली (जल्दी) मचाना। आफत क्यों मचाते हो, खाना तो खालूँ, अभी आता हूँ।

आफ़त में पड़ना, आफ़त मोल लेना, आफ़त सिर पर लेना—(१) व्यर्थ झगड़े में पड़ना। मैंने व्यर्थ में यह आफत सिर पर ली, (२) खर्च कर झंझट लेना। घोड़ा क्या लिया आफत मोल ले ली किसी को पास नहीं

फटकने देता। (३) नुक़सान देह जिम्मेदारी । वायदा क्या किया आफ़त सिर पर लेली।

आब आब होना—(१) पिघल जाना। मेरी ऐसी गिरी हुई हालत देख कर वह तो आब आब हो गया। (२) शर्मिन्दा होना। जब मैने इसे जुआ खेलता पकड़ लिया तो वह आब आब हो गया।

आब आब करना—अप्रचलित भाषा का व्यवहार करना। आब आब कर मर गया सिरहाने रखा पानी।

आब आना रौनक आना। अब तो चेहरे पर आब आ गई है।

आब चढ़ाना—पालिश करना, चिकनाना, चमकाना, तेज करना, साफ़ करना। ऐसा लोटा भला है कि उस पर आब चढ़ आया।

आबदाना उठना—(१) जीविका या संयोग समाप्त होना। दिल्ली से आबदाना उठा यहाँ आ गये। (२) मौत आना। बस अब दुनिया से हमारा आबदाना उठ गया है (आबदाना नहीं रहा है भी प्र०)

आब देना—चमकाना। बर्तनों पर घिस कर आब दो।

आबरू खाक में मिलाना, खोना—इज्जत बरबाद करना। उसने अपनी आबरू खाक मे मिला दी।

आबरू पर पानी फिरना—इज्जत मे बट्टा लगना। कुपुत्र से बाप की आबरू पर भी पानी फिर गया।

आबरू पैदा करना—कीर्ति प्राप्त करना, इजत बनाना। उसने खुद आबरू पैदा की है।

आबरू में बट्टा लगना या फ़रक़ आना—धब्बा लगना। पीछे चाहे छूट ही जाय अब तो आबरू में बट्टा लग गया।

आ बला गले पड़—व्यर्थ में अपने सिर मुश्किल काम लेना। पहिले तो खुद चाहा कि आ बला गले पड़ अब जब काम मिल गया तो पछताते हो। आ बैल मुझे मार—भी प्रसिद्ध है।

आब हवा बिगड़ना—ऋतु या जलवायु में विकार होना। बहुत से बीमारों के जाने से अब मंसूरी की भी आबहवा बिगड़ गई (खराब हो गई) है।

आये गये होना—समाप्त होना। कितने जीव प्रति दिन आये गये हो जाते हैं। स्त्री लि० आई गई होना।

आरा सिर पर चलाना—क्रूरता से बरतना। जब उसके माता पिता ने तुम्हें ही सौंप दिया है तो उसके सिर पर आरा क्यों चलाते हो?

आराम में आना—आनन्द मे

होना। लो अब तो आराम में आ गये।

आराम में होना—(१) सोना। नवाब साहब इस वक्त आराम में हैं सुबह तशरीफ़ लाइये। (२) सुखी होना। अब तो मैं बहुत आराम में हूँ, पहिले से आधा भी दर्द नहीं।

आराम से पाँव फैलाना—सुख की नींद में सोना, निश्चित होना। छः दिन के बाद आज आराम से पाँव फैलाये हैं नहीं तो दिन रात इतना व्यस्त था, कोई हद नहीं।

आराम होना—(१) सुविधा होना। मोटर से बड़े आराम हैं चाहे जब चल दो। (२) लाभ होना। मुझे इस दवा से आराम हुआ है। (३) निरोग होना। छः महीने में आराम हुआ।

आरी आना—ऊब जाना। भाई अब तो कष्ट सहते सहते इस जीवन से आरी आगया।

आ लेना—पकड़ना या आघात करना। हिरन पानी पी रहा था कि बाघ ने आ लिया।

आवाँ का आवाँ बिगड़ना—सब के सब बिगड़ना। किसी का तो एक दो बिगड़ता है इसका आवाँ का आवाँ बिगड़ गया। क्लास की सारी लड़कियें ही शैतान हैं यानी आवाँ का आवाँ ही बिगड़ा हुआ है।

आवाज़ उठाना, ऊँची करना—(१) आंदोलन करना। कांग्रेस ने आज़ादी के लिये आवाज़ उठाई। (२) विरुद्ध खड़ा होना। तलाक़ बिल के लिये बहुत से लोग (ख़िलाफ) आवाज उठा रहे हैं।

आवाज़ (ज़ें) कसना—(१) ताने मारना, उपालम्भ देना। मेरा क्या दोष ये जो आवाज कसते हैं। (२) व्यंग छोड़ना। चुभती कहना। क्यों बेचारे को आवाजे कस कर तंग करते हो। किसी की बहू बेटी पर आवाज़ मत कसो।

आवाज़ देना, मारना, लगाना—पुकारना। जरा आवाज़ तो दो कि आजाय। ऐसी आवाज मारो कि सुनले। रास्ते चलते आवाज़ लगाना असभ्यता है।

आवाज़ पड़ना, बैठना—बुलाहट, पुकार। मुझे आवाज़ पड़े तो कह देना बाज़ार गया है। (२) गला बैठना। रात भर गाने से आवाज़ पड़ (बैठ) गई है।

आवाज़ पर लगना—आवाज़ का इशारा समझना, और उस पर चलना। कुत्ता आवाज़ पर लगा हुआ है।

आवारा करना—चरित्र हीन करना। वास्तव में तो इन्हीं गुडों

ने अपने साथ रखकर उसे आवारा कर दिया।

आवारा होना—धूर्त होना, व्यर्थ इधर उधर घूमना। कुछ काम-धाम नहीं करता आवारा हो गया है।

आशिक होना—मोहित होना। राजकुमार उस सुंदरी पर ऐसा आशिक हुआ कि दिन रात उसी के ध्यान में रहने लगा।

आस तकना—(१) आसरा देखना। भाई की क्या आस तक रहे हो वह कुछ नहीं देगा। (२) दूसरे की आशा मे आप कुछ न करना। आस बिरानी जो तके जीयत ही मर जाय।

आस बँधना—(१) इतजार करना। खेतियाँ जिनकी खड़ी हैं सूखी आस वो बांधे बैठे हैं मेह की। (२) तसल्ली होना। रोगी की हालत सुधर रही है, इससे कुछ तो आस बँधती है।

आस(रा) होना—(१) उम्मीद। जब तक साँस तब तक आस। (२) सहारा होना। है केवल इक आस तुम्हारी। (३) गर्भ रहना। तुम्हारी बहू को कुछ आस है? (अंक २ के अर्थ में आसरा का प्रयोग होता है।

आसन उखड़ना—(१) जमने न पाना, अपने स्थान से हिल जाना। यहाँ से अच्छे अच्छों के आसन उखड़ (हिल) गये। घोड़ा इतने जोर से दौड़ा कि सवार का आसन उखड़ गया।

आसन उठना—स्थान छूटना। कल हमारा आसन यहाँ से उठ जायगा।

आसन करना—(१) योग के नियमानुसार शरीर को मोड़ना, तोड़ना मरोड़ना। तुम्हें शीर्षासन करना चाहिये। (२) ठहरना। इस कोठरी में महात्मा जी आसन किये हुये हैं।

आसन कसना—अंगों को तोड़ मरोड़ कर बैठना। कुश्ती में दाव पेच मे दाब कर बैठना। उसने पहलवान की गर्दन पर ऐसा आसन कसा कि बिचारा हिल भी न सका।

आसन जमाना—(१) निश्चल बैठना। उठो! यहाँ क्यों आसन जमाये हो, कुछ काम करो, जो होना था होगया। (२) एक स्थान पर रहना। बरसात में यहाँ आसन जमेगा। (३) आसरे रहना, हमने तो तेरी आस पर आसन जमा लिया (४) स्थायी (प्रभाव) होना। अब कुछ डर नहीं अब तो हमारा आसन वहाँ जम गया है।

आसन डोलना—(१) चित्त चलाय-मान होना। रुपये के लोभ

से तो महात्माओं का भी आसन डोल जाता है। (२) भय से हिल-जाना। काँप जाना। विश्वामित्र के तप से इन्द्र का आसन डोल गया। (३) दिल पर असर होना। दिल हिल जाना। भक्तों पर अत्याचार देख भगवान का आसन डोल उठता है। (४) दया आना। निरपराधों पर जुल्म देख कर भी भगवान का आसन नहीं डोलता ?

आसन तले आना—क़ाबू में आना, अधीन होना। मेरे आसन तले आगये तब तो मज़ा चखा दूँगा।

आसन देना—(१) आदर से बैठाना (२) श्रेष्ठ स्थान देना। सभा में सब को यथायोग्य आसन दो। अर्ध सिंहासन आसन देही।

आसन बाँधना—दोनों जाँघों के बीच दबा लेना। जाँघों से जकड़ना। देखता क्या है, आसन बाँध दे, उठ न सकेगा।

आसन पाटी लेकर पड़ना—दुःख या क्रोध प्रकट करने के लिये बिना खाये पीये, खूब आडम्बर के साथ (या साधारणतया) खाट पर पड़ना। कैकेयी रामचन्द्र जी के राज्यतिलक को सुनकर आसन पाटी लेकर पड़ रही।

आसन लगाना—(१) मतलब पूरा करने के लिये अड़ बैठना। (२) ठहरना। (३) बिछौना बिछाना। (४) आसन मारना। (५) जमकर बैठना। धूनी भी रमाली है आसन लगा लिया है।

आसमान के तारे तोड़ना—देखो आकाश के तारे तोड़ लाना।

आसमान जमीन के कुलाबे मिलाना—बढ बढ कर बातें करना तुमने उसकी प्रशंसा मे आसमान और जमीन के कुलाबे मिला दिये।

आसमान ज़मीन एक कर देना—आफत ढाना। अगर सुन लिया उन्होंने भी यूँ ही, एक कर देंगे आसमाँ और ज़मी। (२) बहुत यत्न करना। मैंने उस का पता लगाने मे आसमान जमीन एक कर दिया।

आसमान ज़मीन का अंतर—बहुत फर्क़। दोनों के स्वभाव में आसमान ज़मीन का अंतर है।

आसमान टूट पड़ना—(१) यकायक विपत्ति पड़ना। (२) भयकर घटना होना। खुदा के वास्ते इतना तो झूठ मत बोलो, कहीं न टूट पड़े आसमान कोठे पर। (२) तुम जो गुस्से से मुझे देखते हो। आसमाँ मुझपै टूट पड़ता है।

आसमान ताकना झाँकना—अभिमान से सिर ऊपर उठाना।

वह तो आसमान ताकता हुआ सड़क पर चलता है।

आसमान दिखाना—कुश्ती मे चित्त करना। पछाड़ना। दोनों पहलवानों मे से किसी ने किसी को आसमान नही दिखाया। (आसमान के तारे गिनवाना भी प्रचलित है)।

आसमान पर उड़ना—(१) इतराना। इतने अधिकार से ही आसमान पर (मे) उड़ने लगे। (२) शक्ति से बाहर काम का संकल्प करना। क्यों आसमान पर उड़ते हो तुम्हारा तो बाप भी यह नही कर सकता।

आसमान पर क़दम रखना—बड़ा समझना। मै न कहूँगा क्योंकि अब वह आसमान पर क़दम रखने लगे हैं।

आसमान पर चढना—बहुत घमंड करना। ऐसा कौन सा कार्य कर दिखाया है जो आसमान पर चढ़े जाते हो। उनका दिमाग़ तो आजकल आसमान पर चढ़ा हुआ है, वे क्यों बात करने लगे।

आसमान पर चढाना—(१) ख़ूब प्रशंसा करना, बढ़ावा देना। लोगों ने तो उन्हें एक दम आसमान पर ही चढ़ा दिया (२) झूठ मूठ प्रशंसा करके फुला देना। तारीफ के पुल बाँध देना। क्यों उसे आसमान पर चढ़ा कर बिगाड़ते हो?

आसमान पर थूकना—श्रेष्ठ मनुष्य की बदनामी करना स्वयं की बदनामी करना है। गाधी जी को जो बुरा कहते हैं वे आसमान पर थूकते हैं।

आसमान फट पड़ना—प्रलय होना। मै क्यों गाली देती, राम राम, आसमान फट पड़े जो मैने गाली दी हो तो।

आसमान में थेगली लगाना—अनहोनी काम। कही किसी ने आसमान मे थेगली लगाया है जो तू यह अनहोनी काम कर डालेगा।

आसमान में छेद करना—जो काम किसी से न हो सके उसे कर डालना। बड़े बड़े विद्वानों की ग़लती निकालना आसमान में छेद करना है।

आसमान में छेद हो जाना—बहुत वर्षा होना। वर्षा क्या हुई अब तो आसमान में छेद ही हो गये।

आसमान सिर पर उठाना—ख़ूब कोलाहल, आदोलन या उपद्रव करना। ज़रा ज़रा सी बातों के लिये लोग आसमान सिर पर उठा लेते हैं।

आसमान सिर पर टूट पड़ना—(१) विपत्ति पड़ना। प्रथम तो दुकान में आग लगी ही थी तब तक यह और आसमान सिर पर टूट पड़ा। (२) वज्रपात होना इतना झूठ मत बोलो कहीं आसमान ..।

आसमान से गिरना—(१) बिना परिश्रम के मिलना। कुछ काम धाम करते नहीं, रुपया क्या आसमान से आ गिरेगा। (२) टपक पड़ना। यह वस्तु जब तुमने नहीं रक्खी तो क्या आसमान से आ गिरी।

आसमान से बातें करना, टकराना, टक्कर लेना—(देखो आकाश से बातें करना)।

आसमानी पिलाना—ताड़ी पिलाना। तुम्हारे लड़का हुआ है, खुशी मे आज तो आसमानी पिला दो।

आसेब उतारना—मन्त्र से भूत भगाना। शायद इस गाँव में एक बुड्ढा है जो आसेब उतारता है।

आसरा तकना—उम्मीद करना। मैं तो तुम्हारा ही आसरा ताकता हूँ तुम्हीं मेरे सहायक मित्र हो।

आसामी बनना—(देखो आसामी बनाना)।

आस्तीन का साँप—बग़ल का बैरी, विभीषण, विश्वासघाती। चालबाज़ दोस्त। इसे दोस्त मत समझो आस्तीन का साँप है, यहाँ से सब भेद ले जाता है, किसी न किसी दिन नुकसान देगा।

आस्तीन चढ़ाना—लड़ने के लिये तैयार होना। जैसे ही मोहन ने गाली दी झट उसने भी अपनी आस्तीन चढ़ाली।

आस्तीन में साँप पालना—बैरी का पोषण करना। इसे मत रखो, क्यों आस्तीन में साँप पालते हो, जो अपने बाप का न हुआ तुम्हारा क्या होगा।

आह पड़ना—शाप पड़ना, बद दुआएँ पड़ना। तुम पर उस दुखिया की आह पड़ी है। (आह लेना भी इसी अर्थ में आता है) किसी की आह मत लो थोड़ी सी जिन्दगी है।

आह भर कर रह जाना—दिल मसोस कर रह जाना। चाह होने पर भी कुछ न कर सकना। मन मार कर रह जाना। मैं उसकी बेदर्दी देख कर आह भर कर रह गया, विवश था कुछ हाथ में तो था ही नहीं।

आह भरना, खींचना—ठंडी सास भरना। उसके आह खींचने से मेरा कलेजा काँप गया।

आह लेना—किसी को सता कर बुराई लेना। मै तुमसे फिर भी कहता हूँ कि ग़रीबों की आह लेना ठीक नहीं।

—:※:—

इ

इक्के दुक्के—अकेले दुकेले। इक्के दुक्के डाकू को तो मै ही मार गिराऊँगा।

इज़्ज़त अपने हाथ होना—मर्यादा और मान वश मे होना। अपनी इज़्ज़त अपने हाथ मे है, भला काम करोगे बनेगी नही करोगे थू थू होगी।

इज़्ज़त उतारना या लेना—आबरू खराब करना। भले मानसों की इज़्ज़त उतारने में उसे कुछ देर नहीं लगती।

इज़्ज़त करना—मान करना। बड़ों की इज़्ज़त करना छोटो का कर्तव्य है।

इज़्ज़त खोना—आबरू गँवाना। उसने एक ही नीच काम करके अपनी इज़्ज़त खो दी।

इज़्ज़त गँवाना—इज़्ज़त खोना। थोड़े से लोभ में तुमने अपनी इज्जत गँवा दी।

इज़्ज़त डुबोना—मर्यादा नष्ट करना, मान खोना। बुरे कामों मे फँस-कर तुमने पुरुषाओं की भी इज़्ज़त डुबो दी।

इज़्ज़त देना—(१) इज़्ज़त का नाश। इतने से रुपयों पर क्या मै अपनी इज़्ज़त दे दूँगा (बेच दूँगा)। (२) सम्मान करना। बरात में सम्मिलित होकर आपने मुझे बड़ी इज़्ज़त दी।

इज़्ज़त दो कौड़ी की करना—इज़्ज़त खराब करना। उसने अपनी इज़्ज़त दो कौड़ी की कर ली।

इज़्ज़त पर पानी फेरना—इज्जत खोना। क्यों अपनी इज़्ज़त पर पानी फेर रहे हो।

इज़्ज़त बनाना या मिलना—बड़ा ओहदा लेना। आजकल विना खर्च किये इज़्ज़त नहीं बनती। ऐसा काम करो जिसमे इज़्ज़त मिले।

इज़्ज़त बिगाड़ना—आबरू खराब करना। सरे बाज़ार तेरी इज़्ज़त न बिगाड़ी तो बात क्या।

इज़्ज़त मिट्टी करना या होना—आबरू नाश करना। उसकी सारी इज़्ज़त मिट्टी हो गई। उसने अपने आप इज्जत मिट्टी कर ली। इज़्ज़त मिट्टी में मिला दी या खाक कर दी।

इज़्ज़त में बट्टा लगना—इज़्ज़त हेठी होना। आज मैं न होता तो तुम्हारी इज़्ज़त में बट्टा लग जाता।

इजलास पर चढ़ाना—मुकदमा करना। कचहरी तक पहुँचाना औरतों का इजलास पर चढ़ाना अच्छा नहीं।

इधर (का) उधर करना—(१) तितर बितर करना। ज़रा सी चीज़ ढूंढ़ने मे घर का सब सामान इधर का उधर कर दिया। (२) हटना, अब तक क्या माल उसके घर मे रखा है सब इधर उधर कर दिया होगा। (३) टाल-मटोल करना, देने मे सब ही इधर उधर करते हैं। (४) उलट पुलट कर देना। मशीन के सारे पुरज़े इधर उधर कर दिये।

इधर उधर की बात—(१) उड़ती ख़बर, अफवाह। मुझे तुम्हारी इधर उधर की बात नहीं सुहाती। (२) व्यर्थ की बात। इधर उधर की बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिये। (३) पक्ष विपक्ष की बात। इधर उधर की बात कान में पड़ ही जाती है।

इधर उधर की लगाना—चुगली खाना, कान भरना। उसने इधर उधर की लगा कर उन्हें मुझसे नाराज़ कर दिया।

इधर उधर की हाँकना—गप्प मारना, झूठ मूठ बकना। उसका क्या विश्वास वह तो इधर उधर की हाँका ही करता है।

इधर उधर में रहना—आवारा फिरना। वह दिन भर इधर उधर में रहता है।

इधर उधर रहना—पास मे रहना, पीछे लगे रहना। हर वक्त सी० आई० डी० उसके इधर उधर रहती है।

इधर का उधर होना—उल्टा हो जाना। ज़रा सी बात के फेरने से सब मामला इधर का उधर हो गया।

इधर का होना (रहना) न उधर का—(१) किसी की तरफ का न रहना। न खुदा ही मिला न विसाले सनम न इधर के रहे न उधर के रहे। (२) किसी काम का न रहना। पढ़ लिखकर वह इधर के हुए न उधर के। (३) किसी ओर न होना। मै किसी का पक्ष नहीं लेता न मैं इधर का हूँ न उधर का।

इधर की उधर करना या लगाना—एक दूसरे का भेद देना, एक से दूसरे की बुराई करना। यह इधर की उधर और उधर की इधर लगाती रहती है। तुमने इधर की उधर लगाकर सब का मन पलट दिया।

इधर की दुनिया उधर होना—असम्भव का सम्भव होना, चाहे जो कुछ हो। यह मकान बनकर

ही रहेगा चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाये।

इने गिने—(१) कुछ, थोड़े से ही। इने गिने आदमी ही सत्यवादी होते हैं। (२) चुने चुनाये। एसेम्बली में इने गिने ही वक्ता हैं (३) गिने गिनाये। मेरे पास तो इने गिने मोती हैं।

इन तिलों तेल न होना—(१) बे रहम होना, या दूसरे के पटाव में न आना। बस रहने भी दो यह तो कंजूस और निर्दय है पूरा, भला इन तिलों में तेल कहाँ, अनाथों के लिये भी चन्दा नही देता। (२) काम न सधना। चलो नही झक मारते हो इन तिलों तेल नहीं।

इन्द्र का अखाड़ा होना—मकान ख़ूब सुसज्जित होना। उसका मकान तो इन्द्र का अखाड़ा हो रहा है।

इन्द्रायन का फल—देखने में अच्छा वास्तव मे बुरा। सूरत हराम। वह देखने मे तो इन्द्रायन का फल है।

इल्लत कटना—झगड़ा चुकाना या दूर होना। रुपये तो देने पड़े परन्तु इल्लत जल्दी ही कट गई।

इल्लत काटना—जल्दी ज्यों त्यों खतम करना। धीरे धीरे काम करो यों ही इल्लत मत काटो।

इल्लत लगना—व्यर्थ का या कठिन काम सर पर होना। मेरे पीछे तो बाल बच्चों की इल्लत लगी है कही आ जा भी तो नहीं सकता।

इस कान सुनना उस कान उड़ा देना—ध्यान देकर न सुनना। कहने के अनुसार काम न करना या टाल देना। (१) यहाँ तो कुछ मतलब ही नही इस कान सुनी उस कान उड़ा दी हमे क्या ज़रूरत कि ग़ौर से सुने। (२) तुमको कितना भी समझाया जाये लेकिन व्यर्थ, कहने के अनुसार काम नहीं करते इस कान सुनी उस कान उड़ा दी।

इस पर न भूलना—इस पर घमड या भरोसा न करना। इस पर न भूलना कि तुम धनवान हो, मै सरे बाज़ार पीटूँगा।

इस (बात) पर न जाओ—(१) यह मत सोचो। इस पर न जाओ कि भला है, अच्छे अच्छे छिप छिप कर वहीं जाते हैं। (२) इस पर घमड या विश्वास न करो। इस पर न जाना चाहिये लड़की के लिये देखो कि लड़का भी योग्य है? जाने से भी क्या फायदा इस बात पर जनाब, जो आज लखपती हैं कल दिवालिये वही।

इस (बात) पर खाक डालो या पत्थर मारो—इसको जाने दो। इसका जिक्र न करो। अजी क्यों बार बार कह कह कर दिल खराब करते हो, खाक डालो इस बात पर जो हुआ सो हुआ।

इस (बात) पर मरता है या जान देता है—इस पर आशिक है या न्यौछावर है। मै तो तुम्हारी इन्हीं मीठी बातों पर मरता हूँ। हम इस पै जान देते हैं वो देखते तो हैं।

इससे क्या पूरा पड़ेगा- इसमे काम पूरा न होगा। इतने से क्या पूरा पड़ेगा भी प्रचलित है। इससे क्या पूरा पड़ेगा आखिर इतना सा साग और दस आदमी।

—:※:—

ई

ईंट का घर मिट्टी करना- घर बरबाद करना। मनसूबे खराब करना। शराब के पीछे उसने ईंट का घर मिट्टी कर दिया। तुम्हारी बातों ने हमारा सारा ईंट का घर मिट्टी कर दिया।

ईंट चुनना—दीवार बनाने के लिये ईंट पर ईंट जमाना। यहाँ तो ईंट चुनने के लिये दो राज काफी हैं।

ईंट तक बिकवाना—सब कुछ ले लेना। उसने अपने ऋण की वसूली मे ईंट तक बिकवा दी।

ईंट से ईंट बजाना—फूट डालकर नाशकारी लड़ाई कराना। घबराते क्यों हो मै दोनों की ईंट से ईंट बजा दूँगा तब चैन लूँगा।

ईद का चाँद देखना— माशूका का मुँह देखना। हम तो रोज ईद का चाँद देखते हैं तब रोजा खुलता है।

ईद के पीछे टर—वक्त पर काम न हुआ तो फिर क्या लाभ। अभी कर करा दो नही फिर तो ईद के पीछे टर है।

ईमान काँपना—डरना। आत्मा से अस्वीकार होना। यों कुछ भी कहला दो, परन्तु गंगा जल उठाने मे तो मेरा ईमान काँपता है।

ईमान का सौदा—कम नफे पर सौदा बेचना। विश्वास का काम। भाई! मेरे यहाँ ईमान का सौदा है दो पैसा रुपया से ज्यादा तो लेता ही नहीं। यहाँ तो ईमान का सौदा है चाहे ले या न ले।

ईमान की बात कहना- सच कहना। भाई मैं तो अदालत मे ईमान की बात कहूँगा। ईमान की जो बात हो ईमान से कहो।

ईमान डिगना या डोलना—दिल मे बेईमानी आ जाना। उसका तो दस रुपल्ली पर ईमान डिग गया।

ईमान देना—सत्य छोड़ना। धर्म

विरुद्ध कार्य करना। गुरु गोविन्द के लड़कों ने जान दी, पर ईमान न दिया।

ईमान बगल में दबाना—बेईमानी करना। उनसे चाहे जितना झूठ बुलवालो ईमान बगल मे दबाये रहते हैं।

ईमान बह जाना—धर्म नष्ट होना। जाहिद शराब पीने से काफिर हुआ मै क्यों ! क्या डेढ़ चुल्लू पानी मे ईमान बह गया !

ईमान बेचना—असत्य व्यवहार करना। रुपये के पीछे सब कुछ नीचता करना। जान बेची है ईमान नहीं बेचा है।

ईमान में फर्क आना—धर्म घटना। वह तो देने से इन्कार कर गया, उसके ईमान में फर्क आ गया।

—:※:—

उ

उँगली उठना या उठाना—किसी की ओर संकेत करना। बुरा कहना। दोष देना तुमसे प्रेम करने पर तो मुझ पर लोगों की उँगली उठने लगी। कौन उँगली उठा सकता है मैं उसका मुँह तोड़ दूँ। मजाल है मेरे होते तुम पर कोई उँगली भी उठा सके।

उँगली काटना—
उँगली दाँत से काटना— } अचम्भे में पड़ना। ज़रा इसका स्वाद चखो दाँत से उँगली काटने लगोगे।

उँगली पर नाचना—अपने वश में करना। आजकल के बाबू अपनी औरतों की उँगलियों पर नाचते हैं।

उँगली पर नचाना—हैरान करना। क्या समझते हो उँगलियों पर नचा दूँगा, अभी तो एक ही मुकदमा लगा है सो पंजा के बल चलना पड़ रहा है।

उँगली रखना—दोष दिखाना। ऐसा काम करो जो कोई उँगली न रख सके।

उँगली लगाना—छूना। मारना। थोड़ा सा परिश्रम करना। मेरे होते हुये तुम्हे कोई उँगली नही लगा सकता। आप तो किसी काम में उँगली भी नही लगाते। तुम घर के किसी भी काम में उँगली लगाते हो ?

उँगली करना—परेशान करना। क्यों करते कराते उँगली किये जाते हो।

उँगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना—थोड़ा सा सहारा पाकर और ज्यादा की इच्छा करना या पा लेना। भाई ! उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ा जाता है अब जरा

कोठरी मिल गई है धीरे धीरे दालान भी हथिया लेंगे।

उखड़ी उखड़ी बातें करना—बे रुखी बात करना। मेरी सूरत देखते ही वह कुछ उखड़ी उखड़ी सी बातें करने लगा।

उगल उगल के खाना—बिना इच्छा और भूख के खाना। अगर भूख नहीं है तो छोड़ दो उगल उगल कर क्यों खाते हो?

उगलना (पड़ना)—माल वापिस देना। बहुत दिनों से रुपये बचाये बैठे थे नालिश करते ही सारा माल उगलना पड़ा।

उगलना (देना)—भेद खोल देना। पुलिस का डंडा पड़ते ही उसने सब कुछ उगल दिया।

उछल कूद करना—प्रसन्न होना। बढ़ बढ कर बातें करना। अजी होली के दिन बड़ी उछल कूद होती है। यह तो बड़ी उछल कूद करते थे अब क्यों चुप्पी साध गये।

उछल पड़ना—(१) अत्यन्त प्रसन्नता से उछल पड़ना। लाटरी आने की खबर सुनते ही वह एक दम उछल पड़ा। (२) गुस्से मे उछल पडना। जालिमों के जुल्म देखते ही वह उछल पडा और तलवार निकाल ली।

उजड़ा घर बसना—विवाह होना। निःसन्तान के लड़का होना। उसका विवाह हो गया यह अच्छा हुआ उस बेचारे का उजड़ा घर बस गया।

उजला मुँह करना या होना—बड़प्पन हासिल करना। सुपात्र लड़का अपने घर का उजला मुँह करता है। चोर का पता चल जाने से तो उस बेचारे का उजला मुँह हो गया।

उठखड़ा होना—चलने को तैय्यार होना। बीमार का अच्छा होना। इतनी सुनते ही वह उठ खड़ा हुआ। अब तो बहुत अच्छा हूँ दो महीने में उठ कर खड़ा हुआ हूँ।

उठ जाना—(१) मर जाना। ऐसे उत्पाती का इस पृथ्वी से उठ जाना ही अच्छा है। (२) खर्च हो जाना। जो कुछ पास पल्ले था वह सब इसकी बीमारी मे उठ गया। (३) खत्म हो जाना। अगर एक बार उसके अँगूठा, निशानी और दस्तखत ले लिये जाते तो यह सारा झगड़ा ही उठ जाता।

उठती कोंपल—युवा। खिलती कली। बूटा सा है कद उसका और चाल में छल बल है। हो क्यों न बहार उस पर उठती हुई कोंपल है।

उठती जवानी—नवयौवन। उठती जवानी पाप निशानी। उठती

जवानी में हमने भी यही किया था।

उठते बैठते—हर घड़ी। उठते बैठते उनकी याद नहीं भूलती। ज़रा उठते बैठते इसका काम भी कर दिया करो। उठते बैठते पहुँच ही जायेंगे। उठते बैठते रोका सब को सोते जागते टोका सबको।

उठना बैठना—आना जाना। अगर बुरी जगह उठना बैठना रखते हो तो एक दिन पछताओगे। मेरा अब वहाँ उठना बैठना नहीं है।

उठा रखना—बाकी रखना। मै अपनी तरफ से कुछ उठा न रखूँगा। सवा रुपया उस देवता का नाम का भी उठा रखना।

उड़ आना—बहुत जल्द आना। इतनी जल्दी वहाँ से उड़ आये मैं देखता ही रह गया।

उड़कर खाना—बुरा लगना। सुन्दर बच्चे की प्रायः लोगों की नज़र उड़कर खाती है।

उड़ चलना—(१) भाग जाना। यहाँ से उड़ चलो नहीं तो पकड़े जाओगे। (२) तेज़ दौड़ना। एड़ लगाते ही घोड़ा उड़ चला। (३) स्वादिष्ट होना। पोदीने की चटनी से रसोई उड़ चली। (४) शोभा पाना। सब्ज़ साड़ी पहनते ही वह उड़ चली। (५) घमण्ड करना। छोटे आदमी थोड़े ही से उड़ चलते हैं।

उड़ता होना—भाग जाना। वह तो रुपये लेकर उड़ता हुआ। उड़ता बना मै तो टापता ही रह गया।

उड़ती ख़बर—अनिश्चित बात। अफवाह। उड़ती ख़बर सुनी है कि महात्मा जी यहाँ आ रहे हैं।

उड़ती चिड़िया पहचानना—दिल की जानना। जनाब मुझे क्या चलाते हो मै उड़ती चिड़िया को पहचानता हूँ।

उड़न छू होना—भाग जाना। वह रुपया उठाते ही उड़न छू हो गया।

उड़ा रखना—मशहूर कर देना। लोगों ने बाज़ार लुटने की झूठी ख़बर उड़ा रखी है।

उड़ान भरना—बहुत दूर दूर तक आना जाना।

उड़ान मारना—उड़ान भरना। आज कल तो बड़ी दूर दूर की उड़ान मार रहे हो कभी दिल्ली कभी कलकत्ता। दो कौड़ी की चीज के लिये क्यों इतनी उड़ान मारते हो।

उड़ेच निकालना—दोष ढूंढ़ निकालना। मैं बहुतेरी होशियारी से काम करता हूँ किन्तु वे कुछ न कुछ उड़ेच निकाल ही देते हैं।

उतर कर—कुछ कम। इससे उतर कर वह चालाक है।

उतार चढ़ाव बताना—बहकाना। धोखा देना, ऊँच नीच समझाना। बहुतेरे जिन्दगी के उतार चढाव बताये मगर उसकी समझ मे नही बैठा। उसने बहुतेरे उतार चढ़ाव बताये पर मै सावधान ही रहा।

उतारू होना—तग करना, छेड़ना। वह तो लड़ने के लिये उतारू हो रहा है।

उत्तम मध्यम कहना—बुरा भला कहना। बहुत कुछ उत्तम मध्यम कहा पर उस पर असर नहीं हुआ।

उल्लु करना—उल्लू बनाना। पहले तो बातों मे लगाकर उससे रुपया ऐठ लिया अब उल्टा उसे उल्लु करते हो।

उल्लु होना—विवेक शून्य होना। आज क्या भाँग पीली है, जो उल्लु हो रहे हो।

उथल पुथल करना—उलट पलट देना। बच्चे से चीज़ मत मँगाओ यह सब उथल पुथल कर देगा।

उदय से अस्त लौं—सारी पृथ्वी पर। पहले सूर्य वशी राजाओं का उदय से अस्त लौ राज्य हो चुका हैं। अरब खरब लौ द्रव्य है। उदय अस्त लौं राज्य।

उधर का चाला नहीं—उधर जाने को दिन अच्छा नहीं। आज उधर का चाला नहीं है। यदि जाओगे तो नुकसान होगा, इसलिये कल जाना।

उधार खाये बैठना—किसी उम्मेद में दिन गुज़ारते रहना। हम तो आज के लिये ही उधार खाये बैठे थे।

उधेड़ बुन—सोच विचार। आज किस उधेड़ बुन मे लग रहे हो या पड़े हो।

उन्नीस बिस्वे—कुछ ही कम। यह बात उन्नीस बिस्वे ठीक है।

उन्नीस बीस का फर्क होना—बहुत थोड़ा फर्क होना। दोनो एक ही हैं उन्नीस बीस का फर्क भले ही हो।

उन्नीस बीस होना—बहुत थोड़ा कम होना। उन्नीस बीस भले ही हो जाय ज्यादा फर्क नहीं हो सकता।

उपरी उपरा—एक दूसरे से बढ़ जाने की इच्छा। इन दोनों दोस्तों में क्लास में प्रथम आने की उपरी उपरा चल रही है।

उफन जाना या पड़ना—(१) गुस्से मे आजाना। जरासी बात में उफन गये धैर्य तो रखते शायद वह वैसे ही मान जाता। (२) घमंड में आजाना। ओछे लोग दो पैसे पास होते ही उफन पड़ते हैं।

उबल पड़ना—दिल की भड़ास निकालना। सुभद्रा गुस्से से भरी बैठी थी, देखते ही उबल पड़ी।

उभर जाना—हालत अच्छी होना। अबतो उभर गये हैं पहिलो तो बेचारे बहुत ही ग़रीब थे।

उभर चलना—(१) जवानी पर आना अब तो वह कुछ उभर चली है। (२) घमड करना, जरा सा पढ कर इतने उभर चले कि बात भी नही सुनते।

उभार देना—(१) बहका देना। तुम्हे पिता के खिलाफ किसने उभार दिया। (२) उसका देना, भड़का देना। तुमने जो मेरे भाई को उभार दिया तुम्हारे क्या हाथ आया?

उभार लाना—चुरा लाना। उठा लाना। वैसे नहीं देगा तो यार उभार कर ही ले आवेगे।

उभार लेना—उछाल लेना। आदमी पानी मे तीन बार उभार लेने के बाद डूबता है।

उमड़ना घुमड़ना—चारों तरफ़ छाना। आज बादल ख़ूब उमड़ घुमड़ रहे हैं। उमड़ि घुमड़ि घन बरसन लागे।

उमर के दिन भरना—दुख से जीवन काटना। ग़रीबों का क्या है उमर के दिन भरना है।

उमर भर का पट्टा लिखाना—सर्वदा के लिये अधिकार प्राप्त करना। उमर भर का पट्टा नही लिखाया है अब तुम कमाने लायक हो अपना खर्च खुद चलाओ।

उमर भर की रोटियाँ सीधी कर लेना—उमर भर के खाने पीने को निकाल लेना। लोग एक बार रियासत में नौकर होने से उमर भर की रोटियाँ सीधी कर लेते हैं।

उम्मेद होना—गर्भ के लक्षण दिखाई देना। कुछ दिनों अस्पताल मे चिकित्सा कराई है जिससे अब तो कुछ उम्मेद है।

उर लाना—लाड़ प्यार करना। जब मै छुट्टियों में घर जाता हूँ तब मेरी माता मुझे उर लाती है।

उलझन में पड़ना—फेर में आना। उसकी इस बात से मै बड़ी उलझन मे पड़ गया।

उलट पड़ना—नाराज़ होना। मैंने तो भलाई की कही और वह उलटे मुझ पर ही उलट पड़े।

उलट पेच की बात करना—घुमा फिरा कर बात करना। इतनी उलट पेच की बातें क्यों करते हो साफ साफ कहो।

उलटा ज़माना—खोटा ज़माना। आजकल उलटा जमाना है कोई किसी को कुछ कह तो दे। आजकल उलटा जमाना है औरतों के भी चार चार विवाह होने लगे।

उलटा तवा—अत्यन्त काला। शकल तो देखो जैसे उलटा तवा मिज़ाज़ का कुछ ठिकाना ही नहीं।

उलटा लटकना—किसी वस्तु के लिये घोर प्रयत्न करना। मै कहे देता हूँ, कि उसके लिये यदि उलटा भी लटकोगे फिर भी न पा सकोगे।

उलटा सीधा—भला बुरा। उन्होने उलटा सीधा कहना शुरू किया जब मुझे भी बोलना पड़ा। जैसा मुझे उलटा सीधा सीना आता है सी दूँगी।

उलटी खोपड़ी—मूर्ख। यह भी उलटी खोपडी का आदमी है कहो कुछ समझे कुछ।

उलटी गंगा बहाना—जो कभी न हुआ हो उसे करना। शूद्रों को ब्राह्मण बनाना उलटी गंगा बहाना है। कही ऐसा हो सकता है? उनकी लड़की हमारे घर मे ब्याही जाय यह तो उल्टी गगा बहाना है।

उलटी छुरी से काटना—अत्यन्त दुख देना। तुम तो मेरे अगले जन्म के बैरी हो खूब उल्टी छुरी से काटे जाओ।

उलटी टाँगें या आँते गले में आ गई—अपनी करनी से आप फँसना। उसे चोरी की सलाह देकर उल्टी आँते गले मे पड़ गई।

उलटी पट्टी पढाना—बहकाना। न मालूम लड़के को किसने ऐसी उलटी पट्टी पढाई है कि वह मुझसे विरुद्ध रहता है।

उलटी माला फेरना—अहित चाहना। उसने मुझे बहुत सताया है मै तो उसकी उलटी माला फेरता हूँ।

उलटी सीधी सुनाना—खरी खोटी सुनाना, भला बुरा कहना मैंने भी वह उल्टी सीधी सुनाई कि याद करेगे?

उलटी साँस चलना—मरने के करीब। अब उसकी कोई उम्मेद नहीं उलटी साँस चल रही है।

उलटे मुँह गिरना—दूसरों को नीचा दिखाने के स्थान पर स्वयं नीचा देखना। मुझे तो निकलवाने की कोशिश कर रहे थे हज़रत खुद ही उलटे मुँह गिरे।

उलटे छुरे से मूँड़ना—बेवकूफ बनाना। लोगों को खूब उल्टे छूरे से मूडते हो ऐसा कोई नुसख़ा हमे भी बतला दो।

उलटे पाँव लौटना या वापिस जाना—फौरन लौटना। मै जरा भी नही ठहरा तुरन्त उलटे पाँव लौटा।

उलटे पाँव फिरना—फौरन लौट जाना। वह मेरी शकल देखते ही उलटे पाँव फिर गया।

उलहना देना—शिकायत करना। व्यर्थ क्यों मुझे उलहना देते हो।

उल्लू का पट्ठा—मूर्ख। बड़ा उल्लू

का पट्ठा है ज़रा से काम को कहो घंटों लगा देता है।

उल्लू के से दीदे—बड़ी बड़ी और डरावनी आँखें। चीज़ तो पास की भी नही दिखती और दीदे उल्लू के से हैं।

उल्लू फँसाना—किसी को अपने चंगुल में फँसाना। ख़ूब उल्लू फँसाया है चाहे जो करवाये जाओ।

उल्लू बनाना—मूर्ख बनाना। मुझे क्यों उल्लू बनाते हो मै ख़ूब समझता हूँ।

उल्लू बोलना—उजाड़ होना। आज जहाँ इतनी चहल पहल है वहाँ एक समय (सिर्फ़) उल्लू बोला करते थे।

उल्लू सीधा करना—काम बनाना। इतना चालाक है अपना उल्लू सीधा कर लेता है और दूसरे के ज़रा काम नहीं आता।

उसका तेल जल चुका—समाप्त हुए। इनका तो तेल जल चुका।

उसका भी मुँह झुलस दो—उसे भी कुछ दे दिलाकर टालो। बहुत देर से माँग रहा है उसका भी मुँह झुलस दूँ।

उसका हिसाब हो गया—बर्ख़ास्त हो गया। बस इनका हिसाब हो गया कल से नौकरी से अलग।

उस पर जान खोदी—उसकी चाह में मर मिटा। उस बेचारे ने उस पर जान खोदी पर प्रेम की नज़र भी न पा सका।

—:o:—

ऊ

ऊँच नीच समझना—(१) फायदा नुकसान सोचना। हर काम में ऊँच नीच खूब समझकर हाथ डालना चाहिये। (२) जिन्दगी के उतार चढाव हेर फेर जानना। पड़े अपने अपने जो सब ऐश बीच न समझे जमाने की कुछ ऊँच नीच। (३) उचित अनुचित सोचना। जो मुख पर आता है कह डालते हो कुछ ऊँच नीच भी समझा करो। (४) सब को एक समान समझना। मैं किसी को ऊँच नीच नही समझता, मेरी निगाह में सब एकसे हैं।

ऊँच नीच सुनना—बुरी भली सुनना। मुझे क्या ज़रूरत पड़ी है कि मै किसी की ऊँच नीच सुनूँ, (२) मै क्यों ऊँच नीच सुनूँ, नौकरी की भी है तो क्या गालियाँ सुनने के लिये।

ऊँच नीच सूझना—उचित का ध्यान होना। अब ऊँच नीच सूझी है तब से क्या सो रहे थे।

ऊँच नीच सोचना—पूर्णतया सोच विचार लेना। मैंने ऊँचनीच सोचा तब ज्ञात हुआ कि सचमुच मेरी भूल थी।

ऊँचा नीचा सुनाना—बुरा भला कहना। फटकारना। मैंने उसे बहुत ऊचा नीचा सुनाया, तब वह माना कि अपराध उसका ही था।

ऊँचा सुनना—कुछ बहरापन। जोर से कहने पर सुनना। जरा चिल्लाकर कहो मैं ऊँचा सुनता हूँ।

ऊँचा होना—(१) अधिकार, प्रतिष्ठा आदि मे बडा होना। जिस मनुष्य ने जितनी अपने देश की सेवा की है वह उतना ही ऊँचा हो गया है। (२) अधिक होना। बताइये तो सही वह किस बात में ऊँचा है।

ऊँचे चढ कर कहना—पुकार कर कहना। सब से कहना। ऊँचे चढ मीरा कहे कोई कह दे गिरधारी सो जाय।

ऊँचे चढना—(१) देखो ऊँचा होना (२) अभिमान करना। अजी! वह तो अब बहुत ही ऊँचा चढ़ गया है, पुराने मित्रों से तो बात भी नहीं करता।

ऊँचे नीचे पैर पड़ना—(१) बुरी आदतों मे फँसना। बुरी सगति से बहुतों के पैर ऊँचे नीचे पड़ने लगते हैं। (२) पैर लड़खडाना, शराब के नशे मे पैर ऊँचे नीचे पडने लगते हैं।

ऊँचे बोल का मुँह नीचा होना—घमंडी का गर्व भग होना। जब दौड़ में खरगोश कछुए से हार गया तो और जानवर कहने लगे कि ऊँचे बोल का मुँह हमेशा नीचा होता है।

ऊँट का सुई की नाक में जाना—असम्भव काम। अमीरों का स्वर्ग मे जाना ऊट का सुई की नाक मे जाना है।

ऊधम उठाना, मचाना, जोतना—शोरगुल करना। उपद्रव करना। मास्टर के जाते ही सारी क्लास ऊधम उठाने लगती है।

ऊपर आना—चिढ जाना। तुम तो सबसे मज़ाक कर लेते हो, जब तुम से कोई कहता है तो ऊपर आते हो।

ऊपर ऊपर जाना—(१) व्यर्थ होना। मेरा कोसा ऊपर ऊपर नही जायगा। (२) बीच या नीचे की चीज़ छोड़ना। क्यो साहब! यहाँ आते भी हो तो ऊपर ही ऊपर चले जाते हो। (३) न ठहरना। ऊपर ही ऊपर आते हैं और चले जाते हैं घर में तो घड़ी भर भी नहीं ठहरते।

ऊपर से ऊपर खा जाना—चुपके से खुद खा जाना। हाकिमो तक तो बहुत कम (रिश्वत का) रुपया पहुँचता है, बाकी तो पेशकार वगैरा ऊपर ही ऊपर खा जाते हैं।

ऊपर से ऊपर लेना या ले लेना—पहिले ही ले लेना। तुम्हारे

रुपये थे मै दे देता ये क्या बात कि तुम उससे वसूल करके लाये और उन्ही मे से ऊपर ही ऊपर अपने रुपये ले लिये ।

ऊपर ऊपर की—दिखावे की । मैं जानता हूँ ये केवल ऊपर ऊपर की बाते हैं । उनकी ऊपर ऊपर की दोस्ती है ।

ऊपर का दम भरना—(१) ऊँचा साँस लेना । (२) दिखावटी प्रेम या सहानुभूति प्रकट करना । सब ऊपर का दम भरने वाले हैं, ऐन वक्त पर कोई साथ नहीं देता ।

ऊपर की आमदनी—इधर-उधर की कमाई । २५) मिलते हैं, हाँ ऊपर की आमदनी १००) है ।

ऊपर की दोनों जाना—अधा हो जाना । ऊपर की दोनों गई हिय की गई हेराय, कह कबीर चारों गई तासो कहा बसाय ।

ऊपर डालना—(१) जिम्मेदार बनाना । यह काम मेरे ऊपर मत डालो मै नहीं कर सकूँगा । (२) बीच मे डालकर बहाने या पर्याय से कहना । मेरे ऊपर डालकर क्यों कहते हो, सीधे उसी को क्यों नहीं कह डालते ।

ऊपर तले के—एक के बाद दूसरा । ऊपर तले के बच्चे हैं बीच मे कोई नहीं मरा ।

ऊपर तले होना—एक के बाद शीघ्र दूसरा व्याह । ऊपर तले हैं एक में से आये दूसरे में चले गये ।

ऊपर वाला—(१) ईश्वर । ऊपर॰ वाला सब के पाप पुण्य देखता है । (२) मालिक या अधिकारी । मै आज्ञा नही दे सकता ऊपर वालों से पूछो । (३) बाहरी । मै जो कुछ भी कमाकर लाता हूँ सब ऊपरवाले ही खा जाते हैं । (४) नौकर चाकर । काम करने वाले । घरवालों से अधिक ऊपर वालों की चिन्ता रहती है, क्योंकि उन्हे तो समय पर तनख़ाह देनी पड़ती है, घर मे तो चाहे एक दिन भूखे भी सो रहे ।

ऊपर होना—(१) आगे बढ जाना । वह अब एक क्लास ऊपर हो गया है । (२) उत्तमतर होना । वह हमारे से किस बात मे ऊपर है । (३) मान्य होना । आजकल तो उन्हीं की बात ऊपर रहती है ।

ऊपर मढना—(१) डालना । मेरे ऊपर यह अपराध मत मढ़ो । (२) ऋण मढना । आप तो ऐशो आराम की जिन्दगी बिता गये लेकिन हमारे ऊपर तो हजारों रुपये मढ गये न ! (३) जुर्माना या देनदारी होना । सारा नुकसान मेरे ऊपर मढ़ा गया ।

—:०:—

ऋ

ऋण चढ़ना—कर्ज बढ़ना। ऋण इतना चढ़ गया कि वह दे नहीं सकता।

ऋण चढ़ाना—कर्ज बढाना। ऋण चढ़ाना अच्छा नहीं।

ऋण पटना, पटाना—कर्ज वसूल होना या वसूल कराना। देते जाओ तो एक साल में ऋण पट जाय।

ऋण मढ़ना—किसी पर कर्ज छोड़ जाना। बुरे पिता पुत्रों पर ऋण मढ जाते हैं।

—:o:—

ए

एक अंक या एक आंक—एक ही बात। दृढ़ निश्चय। मुख फेरि हँसैं सब राव रंक, तेहि धरै न पैहू एक अंक। एकै आँक मोर मन एहू सीयराम पद सहज सनेहू।

एक आँख न भाना—बिलकुल, थोड़ी देर के लिये भी अच्छा न लगना। मुझे तो बहू के ये लच्छन एक आँख भी (क्षण भर भी) नहीं भाते।

एक आँख से देखना—बराबर का वर्ताव, एक सा समझना। मेरे लिये वे और आप दोनों एक से हैं, मैं दोनो को एक आँख से देखता हूँ।

एक एक करके—बारी बारी से। एक एक करके आओ तो मै सब को पछाड़ दूँ।

एक एक के दो दो करना—(१) दूना लाभ लेना। उसकी दूकान से सौदा मत लिया करो वह तो एक एक के दो दो करता है। (२) एक काम के दो काम बना देना। तुम्हारी यह आदत है एक एक के दो दो कर देती हो नौकर विचारा कैसे जल्दी कर डाले, पहिले उसे एक कर लेने दो फिर दूसरे के लिये कहो। (३) व्यर्थ वक्त खोना, मनसूबे ही बांधना। तुम कुछ करते भी हो या योंही बैठे एक एक के दो दो किया करते हो।

एक एक कोना छान मारना—सारे से ढूंढ लेना। मैने तो घर का एक एक कोना छान मारा मुझे तो कहीं करछी मिली नहीं।

एक एक पग चलना दूभर होना—थकान या निर्बलता से चल न पाना। मेरी शक्ति नहीं है तुम्हीं जाओ, मुझे तो एक एक पग चलना अब दूभर हो रहा है।

एक और एक ग्यारह होना—मिलकर बहुत शक्ति बढ जाना। भाई! एक और एक ग्यारह होते हैं, अब वे दोनों मिल गये हे तो बहुत कुछ कर ही डालेंगे।

एक कहूँ न दस सुनूँ—किसी को

भला बुरा न कहो न उसका सुनना पड़े। ना भाई मै उनसे बात भी नहीं करूंगा, मैं न एक कहूँ न दस सुनूँ।

एक की दस सुनाना—एक ताने, उपालम्भ के बदले में दस गुने ताने या दुखकर कड़े शब्द कहना। तुम मुझे एक की दस सुना दो मैं कब बुरा मानता हूँ।

एक की दो कह लेना—दुगना बदला लेना (बातों मे)। भाई! क्यों नाराज हो उसने एक ही बात तो कही है, तुम मुझे एक की दो कह लो।

एक जान करना—(१) दूसरे की भी अपनी सी दशा करना। (२) मरना और मारना। इस बार तुमने जरा भी गाली दी तो अपनी और तुम्हारी एक जान कर दूँगा, मुक्कों से जवाब दूँगा।

एक टाँग खड़ा रहना—(१) काम पर तैयार रहना। नौकरी के वक्त मै हर समय एक टाँग पर खड़ा रहता हूँ। (२) भक्ति व सेवा करना। मेरे लिये तो बेचारा एक टाँग पर खड़ा रहता है, सब काम वही करता है।

एक डाल पर रहना—(१) बात न बदलना। शाखावलंबन करना। चुप तो तब हो सकता है जब कि वह एक डाल पर रहे, अभी कुछ कहता है जब उस बात मे तर्क करते हैं तब तक दूसरी बात बदल जाता है। (२) स्थायित्व, मुस्तकिल मिजाजी। उसने एक डाल पर रहना तो सीखा ही नहीं आज पान वाले के यहाँ है तो कल परचूनिये का नौकर है।

एक तरकस के तीर है—एक जान है—एक ही बात है—एक गुट्ट के हैं। ये दोनों एक तरकस के तीर हैं, एक ही जान हैं, जो एक कहेगा वही दूसरा भी। हम लोगों की एक ही बात है।

एक दो तीन बोलना या होना—(१) नीलाम करना। उसका घर तो कल एक दो तीन हो गया। (२) काम आरम्भ करने का अंतिम क्षण, एक दो और तीन कहते ही दौड़ना शुरू कर देना। (३) दूर होना। चलो यहाँ से एक दो तीन हो जाओ।

एक न चलना—कोई युक्ति सफल न होना। कोई बात न मानी जाना। मेरे सामने उसकी एक (बात भी) नहीं चल सकती।

एक पर एक होना—एक से दूसरा बढ़ा हुआ होना। ये क्या धनवान हैं दुनिया में एक पर (एक से ज्यादा) एक धनवान भरे पड़े हैं।

एक बाज़ार बन्द होना—काना होना। उनका तो एक बाज़ार बन्द है वह क्या देखेंगे।

एक बात; एक जबान—(१) निश्चित, पक्का वायदा। मर्दों की एक बात होती है जब कह दिया है तो अंत तक निबाहूँगा। (एक जबान भी प्रचलित है)। (२) बँधे हुए दाम। निश्चित मूल्य जिससे कम ज्यादा न हो सके। उसके यहाँ एक बात ही है चाहे बूढ़ा खरीदे चाहे बच्चा। (३) सच्ची बात। हेर फेर मत करो, एक बात कहो क्या हुआ था?

एक बात, जबान होना—एक बात पर रहनेवाला होना। एक बात पर हो, तो चलो।

एक माँ बाप का होना—(१) मिल कर रहना। वह सब ऐसे रहते हैं जैसे एक माँ बाप के हों। (२) जबान मे पक्के होना। अगर तुम एक माँ बाप के हो तो वायदा न टालना। (असली माँ बाप के होना इस अर्थ मे अधिक प्रचलित है।)

एक मुँह बोलना, होना—सबकी एक राय। वे सबके सब एक ही मुँह बोलते हैं।

एक मुँह मे कहना—एक की राय दूसरे से मिलना। जूरियों ने एक मुँह से उसे निर्दोष कहा।

एक लाठी से हाँकना—ऊँच नीच सबसे एक सा व्यवहार, सबको एक ही से दबाव में रखना। तुम योग्य, अयोग्य, बड़ा, छोटा कुछ नही देखते सबको एक लाठी हाँकते हो। गधे घोड़े एक लाठी हाँकते हो।

एक साँचे के ढले—शक्ल सूरत में एक। ये दोनों भाई एक ही साँचे के ढले हैं।

एक से एक—बढ बढकर। ये तो एक ते (से) एक महारणधीर हैं।

एक से इक्कीस होना, देना, करना—वृद्धि होना, फलना, फूलना। भगवान तुम्हे एक से इक्कीस करे। तुम मुझ भिखारी को एक देते हो ईश्वर तुम्हें इसके बदले मे इक्कीस दे।

एक से दिन न रहना—हमेशा एक सी दशा न होना। दिन एक से नही रहते जब सुख के न रहे तो ये दुख के ही क्यों रहेगे।

एक से दिन न जाना—दुख सुख का स्थायी न होना। सब दिन जात न एक समान।

एक ही भाव तोलना—सबको समान समझना या देना। मैं तो सबको एक भाव तौलता हूँ, जो उन्हे दिया वही तुम्हें दे रहा हूँ।

एड़ देना या लगाना—(१) घोड़े को एड़ी मार कर चलाना। एड़

लगाते ही घोड़ा हवा से बातें करने लग गया। (२) भले चंगे काम में बाधा पहुँचाना। तुम्हारे ही एड़ लगाने से मेरा काम बिगड़ गया। (३) लात मारना। ऐसे एड़ मत लगाओ बेचारी के कहीं जगह बेजगह ज्यादा न लग जाय।

एड़ी घिसना या रगड़ना—(१) दुख झेल कर मरना। चारपाई पर कौन पड़ कर मरे, कौन यों एड़ियाँ रगड़ कर मरे। (२) बहुत दौड़ धूप या यत्न करना। यहाँ से वहाँ भेजा अब फिर उसे वहाँ भेज रहे हो व्यर्थ में बेचारे की एड़ियाँ घिसाते हो, मैं कहती हूँ वह अब भी घर पर न मिलेगा।

—:*:—

ऐ

ऐंठ ऐंठ कर रह जाना—दिल मसोस कर बैठ रहना। बहुतेरा जी चाहता था कि उस समय तुम्हारी सहायता करते परन्तु बेबसी में ऐंठ ऐंठ कर रह जाना पड़ा।

ऐंठ जाना—(१) अकड़ कर मर जाना। इस साल इतनी जोर की सर्दी पड़ी है कि कितने ही भिखारी तो बेचारे रात में ही ऐंठ गये। (२) रूस जाना। जरा सी बात में ऐंठ जाते हो। हमें कुछ देकर भूल गये हो जो ऐंठे जा रहे हो।

ऐंठ लेना-रखना—हथिया लेना, दबा रखना। इतना शैतान है कि सेठ के लड़के के पास जो चीज़ देखता है डरा धमकाकर झट ऐंठ लेता है।

ऐन-मैन—बिलकुल वैसा ही। ये तो ऐन मैन महेश सा लड़का है।

ऐसा वैसा होना—नाश होना। तेरे घर के सब ऐसे वैसे हो जाये।

ऐसा वैसा न होना—विशेष होना। कोई ऐसा वैसा नहीं है पच्चीस लाख का आसामी है।

ऐसी तैसी करना—(१) इज्जत बिगाड़ना। तेरी तो ऐसी तैसी करके न छोड़ा तो नाम क्या, तू बहुत ऐंठता है। (१) अनादर करना। आह रे दिल तूने कैसी की, हत् तेरे दिल की ऐसी तैसी की।

ऐसी तैसी में जाना—(१) कुछ भी हो चाहे नष्ट हो या और कुछ। जब साला कहना ही नहीं मानता तो हमारी तरफ से ऐसी तैसी मे जाय। (२) बारह गाँव का चौधरी अस्सी गाँव का राय, अपने काम न आवे तो ऐसी तैसी मे जाय।

ऐसी कम तैसी—बच्चों को डराते समय कहते हैं। ठहर तो जा न मानेगा ले तेरी-ऐसी कम तैसी।

ऐसे ऐसे मेरी जेब में पड़े हैं—ऐसे लोगों की होशियारी और

चालाकी मुझ पर नहीं चल सकती। ऐसे ऐसे तो मेरी जेब में पड़े हैं ये बेचारे क्या मुझे चकमा देकर हरायेंगे।

ऐसे कीड़े पड़ेंगे—बहुत बुरा हाल होगा। गरीबों का खून न पियो उन्हें दुख न दो नही तो ऐसे कीड़े पड़ेंगे कि याद रखोगे।

ऐसे क्या कीड़े पड़े हैं—ऐसी क्या ग़रज है। ऐसे क्या कीड़े पड़े हैं जो मै बार बार उनकी खुशामद करूँ और उनकी खोज मे मारा मारा फिरूँ।

ऐसे भोले हो—बड़े चालाक हो। ऐसे ही भोले हो जो रुपये छोड़ दोगे, मै जानता हूँ पाई पाई वसूल करोगे।

ऐसे लड़के बहुत खिलाये हैं—कोई फुसला नहीं सकता। मुझे क्या बनाते हो मैने ऐसे ऐसे लड़के बहुत खिलाए हैं। मै तुम्हारी बातों में नहीं आ सकता।

ऐसे ही तीस मारखाँ हो—(१) हम जानते हैं तुम कुछ भी वीर नही हो। बड़े तीस मारखाँ बनते हैं, रात को जरा सा खटका सुनकर काँपने लगे। (२) ऐसे ही तीस मारखो हो जो सारी पुस्तक एक दिन में याद कर लोगे।

—:※:—

ओ

ओठ काँपना—बहुत सर्दी से ओंठ काँपना। कुछ ओढ लो ओंठ काँप रहे है। (कभी कभी सर्दी के ही अर्थ मे ओंठ फड़कना भी आता है)।

ओठ काटना—क्रोध से ओंठ को दाँतों तले दबाना। नीच पुलिस वाले को बेचारे ताँगे वाले पर डडे बरसाते देखकर वह ओंठ काटने लगा।

ओंठ चबाना—निरपराध पर अत्याचार देख जोश या क्रोध आ जाना। पहिले तो वह ओंठ ही चबाता रहा, जब रहा ही न गया तो बीच मे कूद पड़ा, उसी का परिणाम यह सिर फूटा है।

ओंठ चाटना—जीभ चटकारना, स्वाद की लालसा। मिठाई बहुत ही बढ़िया थी हम तो अब तक ओंठ चाटते हैं।

ओंठ चिपकना—खूब मीठा होना। मीठे और सर्द हैं कि जरा नाम लिया, ओंठ चिपकते हैं अलग दाँत हैं कर कर बजते।

ओंठ तक न हिलना—मुख से आवाज न निकलना। चुप ' ओंठ तक भी न हिले, नहीं तो गोली दाग दूँगा।

ओंठ फड़कना—गुस्से में ओंठों

का काँपना। मै उस समय कुछ बोल नही सकता था नही तो ओंठ तो मेरे भी फड़क रहे थे।

ओंठ मटकाना—कहने लायक बात को ओंठों तक लाना फिर उचित अनुचित समझ कर न कहना। व्यर्थ ओंठ क्यो मटकाते हो कहना है तो कह ही डालो।

ओंठ मलना—दुखकर वचन कहने वालो का मुँह मसलना, मुँह तोडना। नीचे डालकर जिन ओंठों मे वह बुड़बुड़ा रहा था वही ओंठ मल दिये।

ओंठ हिलाना—मुख से शब्द निकालना। टुक ओंठ हिलाऊँ तो कहता है 'न बक बे।' और पास जो बैठूँ तो कहता है 'सरक बे'।

ओंठो पर आना—थोड़ा सा भी कभी न कहना। तुम विश्वास रखो मेरे ओंठों पर भी वह बात कभी न आवेगी किसी से कहना तो दूर रहा।

ओंठों पर लाना—आपकी बुराई तो मै ओंठों पर भी नहीं ला सकता मुख से कहना तो दर किनारे रहा।

ओंठो में कहना—धीमे और अस्पष्ट स्वर में कहना। ओंठों ही ओंठों मे कह गये होंगे मैने तो सुना नहीं कि तुमने कुछ भी कहा था।

ओंठो से खाना—दाँत लगाने की आवश्यकता ही न होना। वह कह रहा था 'ओंठों से खालो बढ़िया गज़क।'

ओंठों से टूटना—मुलायम या खस्ता होना। कचौरिये तो ओंठों से टूटती हैं, इतनी बढ़िया हैं।

ओंठों में मुसकराना—ऐसी हँसी जो ओंठों तक ही रहे। ओंठों से हँसी का प्रकट होना। इस बात को सुनकर वे मुस्कराये जरूर परन्तु ओंठों ही मे, बे मालूम।

ओंठों पर नाचना—(१) बहुत याद होना। सारा व्याकरण उसके ओंठों पर नाचता है। (२) याद आना पर कह न पाना। देखो यह बात ओंठों पर नाच रही है लेकिन कह नही पाता ऐसा ही कुछ नाम है......कि . ।

ओखली में सर देना—जान बूझ कर झंझट मे फँसना। पूरा दुख सहने को तैयार होना। अब जब ओखली मे सर ही दे दिया तो मूसलों से क्या डर, जो होगा देखा जायगा।

ओछा आदमी है—छिछोरा मनुष्य है। कमीना है। गम्भीर नही है। उसकी बातो का यक़ीन क्या? वह ओछा आदमी है।

ओछा होना—कम होना। तुम जैसे लम्बे आदमी के लिये यह धोती ज़रा ओछी है।

ओस पड़ना—(१) उमंगों का मिटना। सब हँसी चुहल जाती रही, ओस सी पड़ गई। (२) मुरझा जाना। फूलों पर ओस पड़ गई। (३) लजाना। ये तो देवर हैं इसे देखकर क्यों ओस पड़ गई।

—:*:—

औं

औंधे मुँह गिरना—(१) बुरी तरह धोखे में आना। (२) जल्दी मे काम का बिगाड़ना। पहिले तो लड़किये बड़ी कर लेते हैं फिर एकदम व्याह की पड़ती है, सो औंधे मुँह गिरते हैं, जैसा लड़का मिला व्याह दी चाहे वह सारी उमर रोवे। (३) मान भंग होना। बहुत बढ़ बढ़कर बातें बनाते थे खूब औंधे मुँह गिरे, अब किसी से बात करने के भी न रहे।

औंधे होना—बे सुध होना। कहिये जनाब बस इतने ही थे, एक प्याले में ही औंधे हो गये।

औतारी—अनोखा। लड़का क्या है औतारी है सारे काम अनहोने करता है।

औने पौने करना—जो कुछ मिले उसी मे बेच डालना। अब दुकान उठानी है, इसी से औने पौने कर रहे हैं।

औने पौने बेचना—नुकसान से बेचना। दुकान उठाते समय सब चीज़ औने पौने बेचनी पड़ी।

और का और होना—(१) कुछ का कुछ होना। भूचाल ने क्वेटा मे क्षण भर मे ही और का और कर दिया। (२) बदल जाना। अब तो पहचानने में भी नहीं आता जब तो मरा सा था अब तो कुछ और का और ही हो गया है।

और तो और—दूसरी बात तो जाने दीजिये। और किसी से तो ऐसा हो भी सकता है। यह तो असंभव भी हो सकता था, परन्तु। और तो और वह बाप को भी गाली देता है। और तो और मूँछे नहीं उतरवाई सो भी खैर कुछ नहीं उसने तेरह ब्राह्मण भी नहीं जिमाये।

और ही कुछ होना—(१) अनोखी बात हो जाना। वहाँ कुछ और ही हो गया था, घरवाले सब बँधे पड़े थे। (२) अन्य ही होना। वह चितवन और कछू जिहि बस होत सुजान। (३) अनोखा होना। वह चाँद सा मुख नामे खुदा और ही कुछ है।

और ही रँग खिलना—विलक्षण कार्य होना। तुम्हारे कई बार कहने पर भी मुझे विश्वास न था, उस दिन होटल में गए तो ज्ञात हुआ

वहाँ कुछ और ही रंग खिल रहे हैं, बोतल सामने रक्खी है और... ।

औसान जाता रहना, भूलना—धैर्य न रहना । मौके पर काम न बन पड़ना । खाट पर साँप लहराता देखकर मेरे तो सारे औसान जाते रहे । मै क्या कर सकता था ऐसे वक्त पर अच्छे अच्छे औसान भूल जाते हैं ।

—:※:—

क

कक्कड़ पत्थर—कूड़ा कर्कट । व्यर्थ की वस्तुएँ । यों ही ककड़ पत्थर भर लाते हो देख कर लाया करो आख़िर मुफ़्त तो नही लाते ।

कंघी चोटी करना—शृङ्गार करना, बाल ठीक करना । कंघी चोटी किये बिना भला मै कैसे बाहर जा सकती हूँ ।

कंघी चोटी में रहना—बनाव ठनाव मे रहना, शृङ्गार में ही अधिक कर गँवाना । आजकल ऐसा फैशन छाया है कि दिन रात लड़कियाँ कंघी चोटी मे ही रहती हैं । रात भर वह कंघी चोटी मे रहे, सुबह तक सिर पर मेरे आरे चले ।

कंचन का कौर खिलाना—किसी के लिये खूब खर्चना । बहुत प्रेम करना और सुख पहुँचाना । मैंने अपनी प्यारी बिटिया कंचन का कौर खिलाकर पाली है, इसके लिये सोना बहाया गया है, फिर भला मै इसे कैसे दुखी देख सकती हूँ ।

कंचन बरसना—(१) सोना प्राप्त होना । तुलसी वहाँ न जाइये कंचन बरसत मेह । (२) पच्चीकारी आदि से शोभित होना । वहाँ तो प्रत्येक मन्दिर कंचन बरसता है ।

कंटक होना—विघ्न रूप होना । जो आदमी हमारे रास्ते का कटक है उसका कटक काट दो (समाप्त कर दो) ।

कंठ न खुलना—(१) मुँह से शब्द न निकलना । वहाँ तुम्हारा कंठ (गला) ही न खुला यहाँ इतना चढ़ बढ़ कर कह रहे थे, । (२) जुकाम या बहुत बोलने से आवाज़ न निकलना । मै व्याख्यान नहीं दे सकता मेरा कंठ खुला हुआ नहीं है ।

कंठ फूटना या फूट निकलना—(१) ठीक ठीक उच्चारण निकलना । कंठ फूटने पर बोली बदल जाती है । (२) शब्द निकलना । बोलता क्यों नहीं कंठ ही नहीं फूटता । (३) घाँटी फूटना । उसका कंठ नहीं फूटा है ।

कंठ बैठना—गला ठंडा होना । आवाज भरी हुई होना । बहुत बोलने से मेरा कंठ बैठ गया है ।

कंठ का हार होना या बनना—(१) प्रेमी होना । मोहित होना ।

वह मेरे कंठ का हार है। उसे मै कैसे दिल से दूर कर सकती हूँ। (२) पीछे पीछे ही रहना। पिंड न छोड़ना। वह तो मेरा कंठ का हार बना हुआ है जहाँ जाती हूँ वहीं पहुँचता है।

कंठी उठाना, छूना—गुरु की दी हुई पवित्र कंठी हाथ में लेकर कोई बात कहना, अर्थात् ईमान से शपथ खा कर कहना।

कंठी बाँधना—(१) शिष्य बनाना मेरे तो उन महात्मा जी ने कंठी बाँधी है। (२) विषय त्यागना वैरागी होना। मुझे अब संसार से क्या प्रयोजन जब मैंने कंठी ही बाँध ली। (३) मद्य मांस छोड़ना। उसने कंठी बाँध ली है, अब शराब नही पीता। (४) अन्ध भक्त बनना। उस साधु ने उसके कंठी बाँध दी है, उसकी सत्य असत्य सभी बातों को मानता है।

कंठी देना—शिष्य बनाना, स्वामी योगानन्द ने मुझे कंठी दी है।

कंठी लेना—चेला बनना। तुमने किससे कंठी ली है?

कंडा होना—सूख कर उपले जैसा होना। चिंता से वह तो कंडा हो गया है।

कंधा डालना व डाल देना—(१) बैल का अपने कंधे से जुआ उतार देना। घोड़ों का हुआ था हाल पतला, बैलों ने दिया था कंधा डाल। (२) साहस टूट जाना। हिम्मत छोड़ देना। बड़े नड़ों ने इस काम में कंधा डाल दी। (३) थक जाना। तुम तो हर काम मे शुरू में ही कंधा डाल देते हो।

कंधा देना—(१) सहारा लगाना, मदद करना। तुमने भले अवसर पर आकर कंधा दिया, वरना मै इस काम को अपने आप नहीं कर सकता था। (२) मुर्दनी मे अर्थी कंधे पर लेना। उसने तो अपने बाप को कंधा तक नहीं दिया।

कंधा पकड़ कर चलना—अन्य के सहारे काम करना। बुढापे मे तो कंधा पकड़ कर चलना पड़ता है परन्तु जवानी मे किसी के कंधे का सहारा नहीं तकते थे।

कंधा लगना—गाड़ी के जूए की रगड़ से बैल का कंधा छिल तथा सूज जाना। आज कल यह बैल बेकार है क्योंकि इसका कंधा लगा हुआ है।

कंधे से कंधा छिलना—धक्के लग लगकर भीड़ में चलना। जलूस मे कंधे से कंधा छिलता था।

कँधावर भेजना—नया व्याह होने पर बर के घर सौगात के साथ धोती चादर भेजना।

कंबल उढ़ाना—जेलखाना कराना। मत दे रुपया मेरा भी नाम नहीं जो तुझे (जेलखाने का) कंबल न उढाया।

कंबल उढ़ा कर लूटना—चकमा देकर या मूर्ख बनाकर रुपये ऐंठना। क्या कंबल उठाकर लूटा है, बहुत होशियारी से काम लेते हुये भी मैंने अपने आप उन्हें रुपये दे दिये।

ककड़ी के चोर को कटारी से मारना—छोटे अपराध पर बडा दण्ड देना। जरासी छींटें ही तो आपके कपड़ों पर पड़ी हैं सो विचारे ककड़ी के चोर को कटारी से मारने लगे।

ककड़ी खीरा करना या समझना—कुछ कदर न करना। शिवाजी मुगलों की फौज को ककड़ी खीरा समझते थे।

कचकच करना या मचाना—बहुत तर्क वितर्क करना। बहुत बात चात या तकरार करना। मुझसे यह कचकच नहीं सुनी जाती खाना तो कम से कम खा लेने दो।

कच बाँधना—बगल से हाथ ले जाकर गर्दन के ऊपर चढ़ा कर दबाना। कच बाँधते ही पहलवानी पर पानी फिर गया।

कचर कचर कर खाना—खूब पेट भर खाना। कचर कचर कर के सब खा गया।

कचर कूट करना—(१) बहुत मारना। तनक सी गलती पर तुमने बालक को कचर कूट कर दिया।

कचहरी के कुत्ते—कुत्ते की तरह कचहरी आने वालों का मुँह जोहने वाले। न छोडे तनके कपड़े भी मुए कुत्ते कचहरी के।

कचहरी चढना—अदालत तक मामला ले जाना। मैं कहता हूँ कचहरी चढकर भी देख लो फ़ायदा कुछ न होगा।

कचहरी लगाना—बहुत से आदमियों का बैठा रहना। उनके घर तो हरदम कचहरी सी लगी रहती है।

कचालू करना—खूब पीटना। मारते मारते कचालू कर दिया। कचालू बनाना भी प्रयुक्त होता है।

कचालू होना—लाल लाल होना। आँखें कचालू हो रही हैं फिर दही खा रहे हो रात को दुख देगी।

कचूमर निकालना—(१) खूब पीटना। उसने तो जरा कसूर में लड़के का कचूमर निकाल दिया। (२) खूब कूटना। धीरे धीरे कूटो कचूमर मत निकालो। (३) बिगाडना, सार खींचना। तुम्हारे हाथ जो चीज पड़ जाती है उसका कचूमर निकाल कर छोड़ते हो!

कचूर होना—हरा होना। (जायसी ने इसका अपनी कविता मे बार बार प्रयोग किया है।) नयन कचूर प्रेम मद भरे। नयन कचूर भरे जनु मोती।

कच्चा करना—(१) शर्मिन्दा करना। क्यों बिचारे को कच्चा करते हो सबसे भूल होती है। (२) झूठा ठहराना। उसने सारी बाते अपने सबूत से कच्ची करदी। (३) हिम्मत छुड़ाना। तुम बार बार कहते थे कि पास न होगा इसलिये अब यह कच्चा हो गया, परीक्षा न देगा। (४) कच्ची सिलाई करना दर्जी ने कुर्त्ता कच्चा तो कर लिया है।

कच्चा खा जाना या चबाना—गुस्से के वक्त मार डालने की धमकी। अब गाली मत देना नही तो कच्चा ही खा जाऊँगा।

कच्चा चिट्ठा खोलना या खुलना—रहस्य खोलना, छिपी हुई खासियें या कमजोरियें जाहिर करना। अब वह मुँह भी नहीं दिखा सकता क्योंकि उस का कच्चा चिट्ठा खोल दिया गया है।

कच्चा धागा—कमजोर। अस्थायी। कसम तो कच्चा धागा है मैं विश्वास नही करता चाहे जितनी कसम खाया करो।

कच्चा पक्का—मकान जिसमे पक्की ईंट गारे से जोड़ी हो। कच्चा पक्का मकान मत बनवाओ।

कच्चा पक्का करना—(१) अनिश्चित। अभी तो कच्चा पक्का सादी है कुछ निश्चित नही कब होगा। (२) अधूरा होना। काम को कच्चा पक्का क्यो छोड़ते हो हाथ लिया है तो निभाओ। (२) बिगाड़ देना। तुमने इसे कच्चा पक्का कर दिया अब हम कुछ नहीं कर सकते।

कच्चा पड़ना—(१) झूठा पड़ना। अब क्या होता है बना बनाया सबूत कच्चा पड़ गया। (२) खिर पिटाना। पहिले तो बड़ा बहक रहा था लेकिन काशी के आचार्य के आते ही कच्चा पड़ गया।

कच्चा बैठना—मरने के समय ऊपर नीचे के दाँतों का ऐसा मिल जाना कि खुल न सके। उनके दाँत तो कच्चे बैठ गये थे।

कच्चा होना—धैर्य छूटना। विपत्ति मे कच्चा न होना चाहिये।

कच्ची कली—अप्राप्त यौवना, छोटी उमर की। कच्ची कली है तुम क्या कह रहे हो ? (अनखिली कली भी प्रचलित है।)

कच्ची कली टूटना—(१) छोटी अवस्था में मरना। (२) मासूम लड़की का पुरुष से संयोग होना।

कच्ची खा जाना—हिम्मत टूट

जाना। वह मुझसे अधिक बलवान है तो भी लड़ने में कच्ची खागया। जोश में शुरू तो कर दिया लेकिन पूरा करने से पहले ही कच्ची खा गये।

कच्ची गोटी या गोली खेलना—अनाड़ी होना, तजुर्बेकार न होना। बोली कि न दूँगी यों ज़बाँ मे, खेली नही कच्ची गोलियाँ से।

कच्ची पक्की खिलाना—ठीक ठाक खाना न मिलना। बेचारे के घर से तो बीमार थी योंही बाज़ार से, कभी अपने ही हाथों कच्ची पक्की खिलाता रहा।

कच्चे घड़े चढ़ना—ताड़ी पीना। ख़ूब आज तो कच्चे घड़े चढ़े हुए हो हम जानते हैं आँखें ही कह रही हैं।

कच्चे घड़े की पीना—नशे के कारण मूर्खता के काम। होश से काम करो न, क्या कच्चे घड़े की पी रखी है।

कच्चे घड़े पानी भरना या भरवाना- कठिन कार्य कराना। मैं भी कच्चे घड़े पानी भरवाऊँगा मायके में तो तू मेरी हँसी उड़वाती है, इसका बदला भी लेकर छोड़ूँगा।

कच्चे बच्चे—छोटे-छोटे बाल बच्चे। ऐसे बच्चे जो अपने आप अपना काम न कर सकें। गंगा जी नहाना तो मै भी चाहती हूँ किन्तु इन कच्चे बच्चों को किस पर छोड़ जाऊँ।

कच्छ की उखेड़—कुश्ती मे नीचे वाले को लँगोट पकड़ कर उखाड़ देना। बहुत देर से चित्त ही नहीं होता था फिर जो मैने बगल से कन्धे पर हाथ ले जाकर कच्छ की उखेड़ दी तो एक दम चित्त हो गया।

कछनी काछना—रूमाली या तिकोनी पहिनना। घुटनों तक की धोती बाँधना। पीताम्बर की कछनी काछे मोर मुकुट सिर दीने।

कज निकालना—(१) टेढ़ापन दूर करना। छड़ी मे कज पड़ गई है निकाल दो। (२) दोष दूर करना। चाल चलन की कज निकाल कर शरीफों मे मिल सकते हैं। (३) दोष दिखाना। तुम हरेक बात में कज निकालते हो शाबाशी नहीं देते।

कट कट के मरना—(१) आपस में लड़कर मरना। कौरव पाडव जरा सी बात पर कट कट कर मर गये। (२) जान दे देना। कट कट के मर जाऊँगा लेकिन माँ की लाज बचाऊँगा। (३) झगड़ना। क्यों व्यर्थ मे ही हिन्दू मुस्लिम दोनों भाई कट कट कर मरते है?

कट कट जाना—(१) शर्मिन्दा होना। मुझे उसकी कारस्तानी

मालूम है इसलिये मुझे देखते ही कट कट जाती है। (२) जलन होना, खिसियाना। उस दिन से मुझे देखते ही कट जाता है कारण कि मेरी बात मान ली गई और लाख जोर लगाने पर भी वह टापता ही रह गया।

कटका भरना—चोंच से मारना। जटायु ने कितने ही कटके भरे किन्तु अन्त मे रावण ने उसे घायल कर ही दिया।

कट जाना—(१) कट कर मर जाना। महाभारत की लड़ाई मे लाखो आदमी कट गये। (२) खतम होना। बुरे दिन तो सब कट गये अब तो अच्छे आगये हैं। बातों बातों सारा रास्ता कट गया। (३) दूर होना। गंगा स्नान से सारे पाप कट गये। (४) जलन होना। मुझे इनाम मिला हुआ देख कर सारे लड़के कट गये। (५) मोहित होना। तिरछी नज़रों कट गये हम उनकी। (६) हार जाना। कल वह चौपड़ की बाज़ी में कई बार कट गया। (७) ग़लत साबित होना। मेरी बात से उनकी बात कट गई। (८) बिक जाना। पिछले साल सारा माल कट गया, बड़े पैसे बने। (९) फूटना, छेद होना। इतनी जोर का मेह पड़ा कि घर का कोठा कट गया और मेह बड़ी जोर से अन्दर आने लगा। (१०) दूसरी तरफ जाना। मुझे देखते ही वह कट जाते हैं। पानी मेरे बजाय उसके खेत मे कट गया, मेरा खेत सूखा रह गया।

कटती कहना—मर्म भेदी बात कहना, बुराई करना। तुम हरेक की कटती कहते हो भलाई तो करते ही नही।

कटना काटना—इधर से उधर, उधर से इधर भागना। मै पकड़ने को चला तो वह कटनी काटने लगा।

कटनी मारना—जोतने से पहिले खेत की घास खोदना। आज कटनी मार रहे है फिर जोतेंगे।

कटवॉ व्याज—वह व्याज जो कुल कर्ज मे से थोड़ा दे देने पर लगे। किश्ते देते रहने पर कटवॉ व्याज चलेगा सारे रुपये पर व्याज न देना पड़ेगा।

कटे पर नमक छिड़कना—(१) दुखी को और दुखी करना। एक तो वैसे ही मरा पड़ा हूँ दूसरे तुम मारे डालते हो क्यों कटे पर नमक छिड़कते हो। (२) नाराज को और चिढ़ा कर नाराज़ करना। अव्वल तो वह अभी घर से बिगड़ते हुये गये थे तुमने मेरी शिकायत करके और कटे पर नोन छिड़क दिया।

कटोरा चलाना—मंत्र बल से कटोरी चलाकर चोर का पहचानना। कटोरा चलाओ, चोर का पता लग जायगा।

कट्टे लगना—(१) दूसरे के कारण अपनी वस्तु नष्ट होना। इतने दिनों की रक्खी चीज़ आज तेरे कट्टे लगी। (२) दूसरे की नज़र में खटकने वाली चीज़ नष्ट हो जाना। मेरे पास एक मकान था जो तेरी आँखों में खार की तरह खटकता था आज वह भी तेरे कट्टे लगा।

कठ पुतली की तरह नाचना—कहे मुताबिक काम करना। आप किसी समय उसके इशारों पर कठ पुतली की तरह नाचते थे।

कठ पुतली होना—(१) हाथ का खिलौना होना। वश मे होना। प्रो० साहब तो अपनी औरत के हाथ की कठ पुतली बने हुए हैं। (२) चुप चाप रहना। नई बहू तो कठ पुतली है दिनभर कोने मे बैठी रहती है।

कड़ाका बीतना या गुज़रना—(१) दुख से उपवासों में दिन गुजरना। घर मे एक भी दाना तो नहीं तीन तीन दिन कड़ाका बीतता है।

कड़ाके का—जोरदार, बहुत तेज़। कड़ाके की भूख लगेगी क्योंकि कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा है।

कड़ाही चढ़ना—खाने की अच्छी अच्छी चीज़ें तैयार करना। आज क्या बात है जो उनके यहाँ कड़ाही चढ़ रही है।

कड़ाही में हाथ डालना—अग्नि परीक्षा करना, कड़ी परीक्षा करना। अगर सच्चे हो तो कड़ाही मे हाथ डालो।

कड़ी उठाना, झेलना—कठिनताओं को झेलना। बड़ी कड़ी झेलने के बाद मे इसे उनके पंजों से छुड़ा कर लाया हूँ।

कड़ी नज़र, आँख, रखना—हरवक्त देख भाल रखना। मुझपर बड़ी कड़ी आँख रखते हैं जहाँ ज़रा नज़र से दूर हुआ और उन्होंने आवाज़ दी।

कड़ी नज़र आँख, रखना, होना—(१) पूरा ध्यान रखना। देखना उस लड़के पर कड़ी आँख रहे कहीं जाने न पावे। (२) कोप भाव रखना। इन दिनों समाचार पत्रों पर सरकार की कड़ी आँख रहती है।

कड़ी (कड़ी) कहना, सुनाना—सख़्त सुस्त कहना, खरी खरी सुनाना। उन्होंने जाते ही मुझे कड़ी कडी सुनानी शुरू की, मैं समझ गया किसी ने मेरे विरुद्ध शिकायत की है।

कड़ी धरती—(१) वह प्रदेश जहाँ

के लोग हट्टे कट्टे हों। पंजाब की धरती ही कड़ी है इसीसे मुसलमानों की सिख परवा ही नही करते (२) भूत-प्रेत के रहने की जगह। रात को न जाना वहाँ कड़ी धरती है।

कड़ुआ करना—(१) रुपया लगाना। जहाँ इतना खर्च किया और दो रुपये कड़ुए करेंगे। (२) दाम खड़े करना। माल बहुत दिनों से पड़ा था ५) कड़ुए किए।

कड़ुए मुख—कटु भाखी मुख। खीरा को मुख काटि के भरिए नमक बनाय, रहिमन कड़ुए मुखन को चहिये यही सजाय।

कड़ुआ होना—(१) बुरे बनना। तुम क्यों सब से कड़ुए होते हो। (२) नाराज होना। इतनी सी बात मे वो तो कड़ुए हो गये और गाली देने लगे।

कढ़ जाना—किसी के साथ भाग जाना। यों चित चाहत एरी भटू मन मोहनै लैके कहूँ कढ़ि जाइये।

कढ़ी का सा उबाल—थोड़ी देर का जोश। कढी का सा उबाल है अब तो कुछ हो भी जायगा नहीं तो नहीं।

कतर ब्योंत में लगे रहना—नयी तजवीज़ या लाभ सोचते रहना। वह हमेशा कतर ब्योंत में लगा रहता है कभी कम्पनी खोली कभी मकानों का ठेका लिया अब प्रेस खोला है।

कतर ब्योंत से—हिसाब से। वे ऐसी कतर ब्योंत से चलते हैं कि थोड़ी आमदनी में अपनी इज्ज़त बनाली है।

कतर ब्योंत करना—(१) सोच विचार में लगे रहना। रात दिन मै इसी कतर ब्योंत में लगा रहता हूँ कि इस झगड़े को मिटा दूँ। (२) किफायत करना, कमी करके काम बनाना। कुछ कतर ब्योंत करके इतने रुपये मे ही काम निकालो। (३) काट छांट करना। कुछ कतर ब्योंत कर डालो, कोट तो निकल ही आवेगा।

कतरनी सी ज़बान चलना—बकवाद करना, बात काटना। सुनती भी हो या कतरनी.....।

कतरा कर निकलना—बचकर निकलना। कुत्ता चुपचाप कतरा कर निकल गया।

कता कलाम करना—बीच ही में बोल उठना। तुम से कितनी बार मना किया है किन्तु तुम कता कलाम किये बिना नहीं मानते।

कतार बाँधना—एक पंक्ति मे होना। इन दस लड़कों को छोड़ कर तुम सब कतार बाँध कर खड़े हो जाओ।

कथक्कड़ होना—बहुत बोलना। कथक्कड़ हो गया है बात ही नहीं खतम होती जी उकता जाता है।

कथा उठना—कथा बंद होना। पूर्णमासी को कथा उठेगी आना ज़रूर।

कथा चुकाना, मुकाना—(१) झगड़ा मिटाना। कथा मुकादो जी क्या दो रुपये के लिये नीच को मुँह लगाते हो। (२) मार डालना। यही हालत रही तो किसी दिन कथा चुक जायगी।

कथा बैठना—(१) प्रारंभ होना अभी तो कथा बैठी है। (२) होना। कथा बैठी हुई है समाप्त नहीं हुई।

कथा बैठाना—कथा के लिये पंडित नियुक्त करना। राजा ने कथा बैठाई है शुभ हो।

कदम उठाना—(१) शीघ्र चलना कदम उठाओ दूर जाना है। (२) उन्नति करना। अब तो उसका कदम उठ गया है चारों तरफ के आदमी नीचा देखने लगे हैं। (३) तेज़ चलना। कदम उठाकर चलें तो दस मिनट मे पहुँच जायेंगे।

कदम कदम जाना—(१) पैदल जाना। हम तो कदम २ ही गये थे दो घंटे में पहुँचे थे। (२) धीरे २ चलना। कदम कदम जाओगे तोभी दोपहर तक पहुँच ही जाओगे।

कदम को हाथ लगाना—(१) पैर छूना, विनय करना। मै तुम्हारे कदम को हाथ लगाता हूँ भाई! चले चलो। (२) कसम खाना। तुम्हारे कदमों के हाथ लगाकर कहता हूँ मैने उससे कभी भी नहीं कहा।

कदम गाड़ के बैठना—धरना देना, न हटना। आज मै कदम गाड कर बैठ गया हूँ रुपया मिल जायगा तब ही उठूँगा पहिले नही।

कदम चूमना—(१) अत्यंत आदर करना। कितना पर उपकार! आपके कदम चूमने को जी चाहता है (२) खुशामद करना। कदम चूमते फिरते हो दूसरों के, लेकिन न हम को पुकारते हो।

कदम न निकालना—(१) परदे में ही रहना, न निकलना। वह घर से कदम भी नहीं निकालता। (२) किसी की बात के बाहर न जाना। राय उनकी भी यह हुई उस दम, आप राय से निकालिये न कदम।

कदम पर कदम रखना—(१) पीछे चलना, किसी के पैरों के निशान पर पैर रखना। मै तो उन के कदम पर कदम रखता चला गया, रास्ता पूछने की ज़रूरत ही न पडी। (२) किसी के अनुसार काम करना। लड़का सपूत है अपने

पिता के कदमों पर ही कदम रखता है।

कदम बढ़ाना, आगे रखना—(१) तेज चलना। कदम बढ़ाओ इतनी धीरे धीरे कब तक पहुँचोगे। (२) उन्नति करना। जापान व्यापार में कितना कदम आगे बढ़ा रहा है, ससार का कोई देश मुकाबिला नही कर सकता (३) ज्यादती करना। अगर तुम कदम बढ़ाओगे तो मारे जाओगे।

कदम भरना—आगे बढ़ना। अब तो वह बदमाशी में कदम भरने लगा है।

कदम मारना—(१) दौडधूप करना मैंने बहुत कदम मारे लेकिन उन्हे न पा सका। (२) बहुत शीघ्र चलना। दस कदम मारोगे वहाँ पहुँच जाओगे। (३) बहुत व्यस्त होना। आजकल तो चैन ही नहीं बड़े कदम मार रहे हो। (यह महावरा पैर पीटना का अनुवाद है)

कदमों से लगे रहना—हरसमय साथ रहना। तुम जूती की तरह हर समय उनके कदमों से ही लगे रहते हो।

कदु करना—तकाजा करना। उस पर तो रोज़ाना कदु करोगे तभी तुम्हारा रुपया पटेगा।

कनकौआ काटना—(१) पतंग की डोर काटना। (२) किसी से संबन्ध तुड़ाना। वहाँ से तो उनका कनकौआ काट दिया।

कनकौआ लड़ाना—एक पतंग की डोरी दूसरे की पतंग की डोरी मे डालना। यहाँ बैठे कनकौआ लड़ाते हो, तुम्हें कुछ घर की भी ख़बर है?

कनकौआ बढ़ाना—पतंग को सै देना, डोरी बढ़ाना। मै कनकौआ बढ़ा कर लड़ाता हूँ।

कनखी मारना—(१) आँख का संकेत करना। राम ने लक्ष्मण को कनखी मारी झट उन्होने सूपनखा का नाक साफ कर दी। (२) आँख द्वारा रोकना। कनखी क्यों मारते हो करने दो न।

कनखियों लगना—छिप कर देखना सुनना। धुनि किंकिन होति जगैंगी सबै सुख सारिका चौंकि चितै परिहैं। कन खैयन लागि रही हैं परोसिनि सो सिसकी सुनि कै डरिहैं।

कनसुआ, कनसुई या कनसुइयाँ लेना—(१) छिपकर बात सुनना। कनसुआ लिया तो ज्ञात हुआ वे तुम्हारे विरुद्ध विचार रहे थे। (२) भेद लेना। आहट सुनना (३) सगुन विचारना।

कनी खाना या चाटना—हीरे की नोक खाकर या चाटकर प्राण देना। सलीमा ने तब तक कनी

चाटली थी बादशाह उसे खोकर जन्म भर पछताते रहे। अनी के वस कनी खाना।

कनेव छेदना—खाट के पायों में टेढ़े छेद होना जिससे चारपाई टेढ़ी हो जाय। बढई ने पावों को कनेव छेदा है।

कनौड़ा करना—नीचा दिखाना। अब तो मैंने भी प्रण कर लिया है कि इसे कनौडा करके ही छोडूँगा।

कनौती उठाना, खड़ा करना—चौकन्ना होना; कान खडे होना। घोड़ा शेर को देखते ही कनौतियाँ उठाने लगा मेरे भी प्राण सूख गये।

कनौती बदलना—कान खड़े होना। जब मालूम हुआ यही वह डाकू है तब तो कनौती बदल गई, मैं डरने लगा।

कन्नी काटना—बचकर निकलना।

कन्नी खाना—पतग का एक ओर झुकना। बढ़े कैसे कन्नी खाती है।

कन्नी दबना—(१) अधीन होना। मेरी क्या कन्नी दबती है। (२) दबाव। (३) लजाना। उसके सामने क्या कन्नी दबती है बोलती क्यों नहीं?

कन्नी बाँधना—पतंग मे डोर दो कोनों पर बाँधना। कन्नी इन से बँधवा लो, क्योंकि ये बाँधना अच्छा जानते हैं।

कन्ने ढीले होना पड़ना—(१) थक जाना। मेरे तो चलते-चलते कन्ने ढीले पड़ गये। (२) मान मर्दन होना। उसकी चालों से आखिर कन्ने ढीले पड गये।

कप कपी चढ़ना—सर्दी के कारण ठिठुर जाना। आज बड़ी ठडी हवा चल रही है, जिससे मुझे तो कपकपी चढी हुई है।

कपड़े उतारना—सब कुछ ले लेना। यह न समझना कुर्क करवा के छोड़ दूँगा, याद रखना कपडे उतार लूँगा तब पीछा छोडूँगा।

कपडे रंगना—वैरागी, सन्यासी होना। कपड़े रंग लिये हैं हमे दुनिया से क्या काम?

कपड़ों में न समाना—(१) बहुत आनंदित होना। उसकी खबर सुनते तुम तो कपड़ों मे भी नहीं समाते थे अब क्या हो गया। (२) बहुत जोश मे आना। तुम तो कपडों में भी नहीं समाते ऐसा भी क्या क्रोध। (३) बहुत मोटा होना। उसका तो अग कपडों में भी नही समाता।

कपड़ों से होना—मासिक धर्म की अवस्था में होना। वह कपड़े से होने के कारण रोटी नही बना सकती।

कपाल खुलना—(१) सिर फट

जाना। धड़ाम से गिरा, सारा कपाल खुल गया अब अस्पताल ले गये हैं। (२) भाग्य खुलना। अब तो कपाल खुल गया है नौकरी मिल गई है।

कपाल फूटना—सिर फूट जाना। ऐसा डंडा दूँगा कि कपाल फूट जायगा।

कपाल क्रिया करना—सिर फोड़ देना। पुत्र ही ने पिता की कपाल क्रिया की थी।

कपास ओटना—ससार मे फॅसना। आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।

क़फ़न को कौड़ी न होना या न रहना—बहुत कगाल होना। खाने की नात तो दूर कफन के लिये भी कौड़ी नहीं है।

क़फ़न फाड़ कर उठना—(१) एक दम जोर से चिल्ला उठना। अभी तो मुर्दे बने बैठे थे, उसका नाम सुनते ही क़फन फाड़कर उठे। (२) मरते-मरते बचना। उसका तो बड़ा बुरा हाल था डाक्टर जवाब दे चुके थे, बेचारा क़फन फाड़कर उठा है। (३) एक दम उठना। चुप चाप पड़े थे तुम्हारे आते ही मानों कफ़न फाड़ कर उठ बैठे है।

क़फ़न फाड़ कर चिल्लाना—सहसा जोर से चिल्लाना।

क़फ़न सिर से बाँधना—(१) मरने को तैयार हो जाना। इतने बलवान से लड़ने की तैयारी करते हो तो कफ़न सिर से बाँध कर लड़ो।

क़फ़स में जान फॅसना—मुश्किल में पडना। मेरी तो ऐसी क़फस में जान फॅसी है किसी भी काम के न रहे।

कब का, कब के, कब से—बहुत पहिले। हम यहाँ कब के बैठे हैं, पर तुम्हारा पता ही नही।

कबाब होना—बहुत गुस्से मे आना। वह तो इतना चिढ़ गया कि कबाब हो गया।

कबाला लिखाना—अधिकार में ले लेना। तुमने क्या कबाला लिखा लिया है जो इस घर मे जमे हुए हो।

क़ब्ज़ा उठना—अधिकार जाना। अब तो उसका क़ब्जा उठ गया है कुछ भी करो स्वतंत्र हो।

क़ब्जे पर हाथ रखना-(१) तलवार की मूँठ पर हाथ रखना। मै क़ब्जे पर हाथ रख कर कहता हूँ यदि वीर हूँ तो मार कर ही आऊगा। (२) दूसरे की मूँठ पर हाथ रख कर तलवार न निकालने देना। उसने क़ब्जे पर हाथ रख लिया नहीं तो तेरी गर्दन उड़ा देता।

क़ब्र का मुँह झाँक आना या झाँकना—मरते-मरते बचना। कई बार वह क़ब्र का मुँह झाँक या देख चुका है।

क़ब्र के मुर्दे उखाड़ना—गई बीती बातों को फिर सामने लाना। क़ब्र के मुर्दे उखाडने से क्या मेल होगा, जो गई उन्हे भूल जाओ।

क़ब्र खोद कर लाना—जहाँ कहीं भी हो वहाँ से लाना। मै उसे क़ब्र खोद कर भी निकाल कर ही लाऊँगा।

क़ब्र में पाँव लटकाये बैठना—मरने के बिल्कुल लायक होना। मै तो अब क़ब्र में पाँव लटकाये बैठा हूँ आज नहीं कल उठ जाऊँगा।

कभी कुछ कभी कुछ—एक ढग पर नहीं। उनका विश्वास नहीं वह कभी कुछ कभी कुछ कह डालते हैं।

कभी न कभी—किसी न किसी समय। कभी न कभी तो तुम भी माँगने आओगे तब हम भी यही जबाब देंगे।

कमर कस कर बांधना—काम करने का पक्का इरादा करना। कमर कस कर बाँध लेने पर कोई नहीं हरा सकता।

कमर कसना—तैयार होना। वह जाने के लिये कमर कस चुका है।

कमर खोलना:—(१) आराम करना। कमर खोल दो और यहीं सो लो। (२) इरादा छोड़ना। मैंने तो भाई कमर खोलदी है मैं इसे न करूँगा। (३) हिम्मत हारना। कमर खोलते हो जवान होकर।

कमर झुकना—बुड्ढा हो जाना। जिनकी कमर झुक गई है उनसे मशविरा लेना मना है, सलाह लो तो उनसे जिनकी छाती निकली हुई है।

कमर टूटना—(१) उत्साह न रहना। इस बार घाटा आने से मेरी कमर टूट गई है अब रोज़गार कैसे फैलाऊँ। (२) सहायता न रहना। बिना आदमियों के कमर टूटी हुई है, काम चले किसके बल पर। (३) किसी का मर जाना। कमर टूटी मेरी, जवान बेटा मरा मेरा।

कमर ठोकना—उत्साह दिलाना। लड़के की कमर तो ठोकते नहीं, और उसकी कमर तोड़ते हो।

कमर तोड़ना—किसी का सहारा छीन लेना। भगवान ने हमारा पुत्र लेकर हमारी कमर तोड़ दी।

कमर पकड़ना या थामना—मदद करना। हमारी कमर ठीक मौके पर पकड़ी उसने, यार मरते को बचाने वाले कितने।

कमर पकड़ कर उठना—बहुत

[११४२]

कमजोर होना। इतना है कि कमर पकड़ कर उठता बैठता है।

कमर पकड़ कर बैठ जाना—बहुत दिल टूटने पर, अत्यन्त आफतों मे, चोट लगने पर ऐसा होना। एक तरफ से हो तो भुगत भी ले किसी की डिगरी, किसी का दावा, बेचारे कमर पकड़ कर बैठ गये हैं।

कमर बाँधना—(१) हिम्मत देना। उन्होंने मेरी कमर बाँध दी थी कि मुकदमे की पैरवी मै कर दूँगा, बस फिर क्यों न करता। (२) काम के लिये तैयार करना। भाई कमर बाँधो क्या आलस्य में पड़े हो।

कमर लगना—(१) खाट पर पड़े पड़े पीठ दुखने लगना। चार महीने हो गये पड़े पड़े हमारी तो कमर लग गई है (२) घोड़े की पीठ में घाव होना, जीन बांध कर चढ़ो घोड़ी की पीठ लगी हुई है।

कमर सीधी करना—विश्राम करना, थोड़ा लेट लेना। कई मील चल कर आये हो जरा कमर सीधी करलो फिर जाना।

कमल उलटना—गर्भाशय का मुख उलट जाना। एक बच्चे के बाद कमल उलट गया फिर कोई बच्चा कैसे हो सकता था।

कमल खिलना—दिल खुश होना मुख प्रसन्न होना। आज तुम्हारा कमल खिल रहा है।

कमान चढ़ना—दौर दौरा होना, क्रोध मे होना। आज कल उनकी कमान चढ़ी हुई है सब उनकी ही मानते हैं।

कमान पर जाना—(१) नौकरी पर जाना। मै कमान पर जा रहा हूँ रोटियाँ वही ले आना। (२) लड़ाई पर जाना। कमान पर गये हैं पता नही लौटे या नही।

कमान बोलना—कमाड करना, आज्ञा देना।

कमाल करना—बहुत अनोखा या मुश्किल काम कर डालना। आपने भी कमाल कर दिखाया और किसी की ताक़त न थी कि ऐसा कर दिखाता।

कमाल को पहुँचाना—पूरा उतारना। उसने इस कला को कमाल को पहुँचा दिया है।

कमाल हासिल करना—प्रवीणता की परमावधि को पहुँच जाना। धनुर्विद्या में अर्जुन ने सब से अधिक कमाल हासिल किया था।

कमी न करना—खूब प्रयत्न करना। अपनी तरफ से हमने कोई कमी नही की यह तुम्हारा भाग्य कि काम न बना।

कयामत (कमाल) का—गज़ब

[११५।०]

का, हद दरजे का। कयामत का चालाक (या कमाल का चालाक) है।

कयामत बरपा करना—गज़ब ढा देना, अनोखा काम करना। तुमने तो कयामत बरपा कर दी तख्ता ही उलट दिया।

कर गहना—(१) विवाह करना। कर गहे की लाज है वरना माता जी तो इस स्त्री से बहुत ही दुखी हैं। (२) शरण देना या आश्रय देना। मेरो कर गह गुपाल पाँय परों तोरे।

करम टेढ़ा व तिरछा होना—तक़दीर खराब होना, काम बिगड़ते ही चले जाना। भाई तक़दीर ही टेढ़ी है तुमने वाक़ई मे बहुत मदद की लेकिन काम न हुआ।

करम ठोकना—(१) भाग्य को दोष देना। अपने ही करम ठोको भला मैने क्या कमी की जो काम न हुआ ! (२) करम ठोकते रह गये पहिले किया न काम।

करम फूटना—(१) अभाग्य होना। हमारे करम फूटे हुए हैं उनमे कीर्ति लिखी ही नहीं। (२) बुरे दिन आना। इन दिनों मेरे करम फूटे हुए हैं जिस काम मे हाथ डालता हूँ वही बिगड़ जाता है।

करवट न लेना—(१) किसी कर्तव्य का ध्यान न रह[ना ...] दिन हो गये छत्र माँग[...] थे सो आजतक करवट नहीं ली। (२) लौट कर आना। आप को गये हुये कितने दिन हो गये कभी इधर को करवट भी न ली गई।

करवट बदलना—(१) बगल से दूसरी बगल की तरफ सोना। (२) मौके पर दूसरी तरफ जा मिलना। तुम करवट बदलते हो इस समय तो हमारी सी कह रहे हो लेकिन विश्वास नही फिर करवट बदल लो। (२) पलटा खाना। मगर ने करवट ली और मै भागा।

करवट बैठना या लेना—पक्ष में होना। पता नहीं ऊँट किस करवट बैठे (कहावत)।

करवटें बदलना—याद मे व्याकुल होना, तड़पना। आपकी याद में रात भर करवटे बदलते गुज़री।

करवटों में काटना या बिताना—तमाम रात करवटों मे बिताई बड़ी मुश्किल से सूरज निकला।

करारा दम—(१) थका या शिथिल न होना। अभी तो करारा दम है दस मील चला जाऊँ। (२) तेज़। आवाज करारी है दम करारा है।

करोड़ की एक—चुनी हुई, बहुत कीमती। करोड़ की एक बात है कि तुम मत जाओ।

[११६६]

क़र्ज़ उठाना—क़र्ज़ लेना, क़र्ज़ा सिर लेना। ५०) रामू से क़र्ज़ उठा कर तुमको दिये थे मेरे पास नहीं थे।

क़र्ज़ उतारना—क़र्ज़ लौटाना। उधार बेबाक करना। उसके २५) थे सो २, २, ४, ४, करके क़र्ज़ उतार दिया।

क़र्ज़ खाए बैठना—उधार खाए बैठना, पहिला क़र्ज़ होना। ५) पहिले ही क़र्ज़ खाए बैठे हो अब १०) किस मुँह माँगते हो।

क़र्ज़ खाना कर्ज़ लेना। क्या हमने तुम्हारा क़र्ज़ खाया है जो आँख दिखाते हो।

कलंक चढ़ाना, लगाना—बद-नामी बुराई होना, दोष देना। मुझे कलंक मत लगाओ मैंने नहीं बिगाड़ा। कलंक चढ़ेगा तुम्हारे सिर क्योंकि तुम कर रहे हो।

क[illegible] खुलना—पोल खुलना असलियत जाहिर होना। उसकी सारी कलई खुल गई कि वह डाक्टर नहीं है।

[illegible]—युक्ति न चलना। तुम्हारी कलई न लगेगी चाहे कितनी ही कोशिश करो।

क[illegible] फेरना—किसी का चित्त एक ओर से फेरना। परवाह मत करो मैंने जरा सी कल ऐंठी फिर वह १०) तो क्या १ पैसा भी न देगा।

क़लक होना—रंज होना। मुझे तो इस स्त्री का बड़ा क़लक़ है, बेचारी जवानी में ही विधवा हो गई।

कल कल करना—(१) सुन्दर शब्द करना। इधर एक हरा भरा मैदान था और उधर नदी कल कल करती हुई बह रही थी। (२) आज कल करना। देने के नाम रोज कल-कल कर देते हो।

कल का—थोड़े दिनों का, सामने पैदा हुआ। कलका लड़का है बुड्ढों के मुँह लगता है।

कल का पुतला:—(१) दूसरे के हाथ में रहने वाला, अन्य की सम्मति या आज्ञा के अनुसार करने वाला। वह तो कलका पुतला है जैसा मुनीमों ने कहा मान गया। (२) अधिक परिश्रमी। वह तो कल का पुतला है चौबीस घंटे कोई काम करालो कभी आराम का नाम ही नहीं।

कलकी बात होना—(१) जैसे अभी बीती हो। यद्यपि दस बरस गुजर गये लेकिन ऐसी याद है जैसे कल की बात हो। (२) पिछले दिन की। अजी कल की बात है वह मुझे भी गाली देने लगा।

कल को न कहना—भविष्य मे न कहना। कल न कहना कि मै बुरा हूँ तुम्हें बात कह रहा हूँ।

कल न हो:—भविष्य मे ऐसा न हो। मै दे तो देता हूँ लेकिन कल को ऐसा न हो वह नाराज हो जावे।

कल पकड़ना—आने वाले दिन तक रहना। इसके प्राण गले में हैं यह कल नही पकड़ सकता।

कल पड़ना—शान्ति, चैन मिलना। दोनों तरफ दर्द है किसी करवट कल नहीं पडती।

कल पाना—(२) तरीका मालूम होना। मैंने अब उसकी कल पा ली है जरा सी भग पिलाई और फिर चाहे जितना काम करा लो।

क़लम करना—काटना। कलम रुकै तो कर कलम कराइये। जो आम के पेड कलम कर दोगे तो कलमी आम पैदा होंगे।

क़लम खींचना, फेरना, मारना—लिखे हुए को काटना। रद करना। लिख भी दिया है तो क्या कलम फेर दो फिर कौन पढ़ता है।

क़लम घिसना:—लिखते रहना। वह दिन भर कलम घिसता रहा।

क़लम चलना—(१) लिखाई होना। आज कल तो खूब दिन भर कलम चलती है कोई किताब लिख रहे हो क्या? (२) कलम का काग़ज़ पर अच्छी तरह चलना। यह कलम ठीक नही चलती दूसरी लाओ।

क़लम चलाना—(१) लिखना। और कुछ नहीं तो कलम ही चलाओ एक पुस्तक तो तैयार होगी। (२) तेज लिखना। कलम चलाओ! यों कैसे दो घटे मे सारा लिख पाओगे।

क़लम चूमना—तारीफ करना। जी चाहता है तुम्हारी कलम चूम लूँ।

क़लम जारी रहना—(१) लिखते रहना। दीवान सिंह की कलम वैसे ही जारी है हालाँ कि नवाब भूपाल ने दावा कर रखा है। (२) आज्ञा लिखने का अधिकार रहना। अभी तो मेरी कलम जारी है तुम्हे नौकर करा ही दूँगा।

क़लम तोड़ना:—(१) बेहद लिखना। साहब ने इतना अधिक लिखा है कि कलम तोड़ दी है। (२) अनूठी और अत्यन्त हृदय-स्पर्शी लिखना या कहना। थोड़ा ही लिखा है लेकिन क्या कमाल का, कलम तोड़ दी है। क्या मर्म भेदी कविता बनाकर सुनाई कि बस कलम ही तोड़ दी हो।

क़लमदान देना—लिखने की कोई नौकरी देना। मुंशी को कलम दान

दे दिया गया है कल से वही लिखा करेंगे।

क़लम न रुकना—लेख लिखते ही रहना। छः बार जेल जा चुका है लेकिन कलम अब भी नहीं रुकती सरकार की आलोचना करता ही रहता है।

क़लम बंद—पूरे पूरे। कलम बंद सौ जूते लगेंगे तब मिजाज ठिकाने होगी।

क़लम बंद करना—लिख लेना। यह जो कुछ कहता है कलम बद कर लो।

क़लम बद लगाना—दे० कलम बद।

क़लमबंद सुनाना—बहुत गालियाँ देना। उसने कलम बंद गालियें सुनाईं।

क़लम में ज़ोर होना—लेख मे प्रभाव होना। वहाँ के सम्पादकों की कलम में जोर है इसी लिये जनता उनकी है।

क़लमा पढ़ना—अति श्रद्धा रखना, दुआ मनाना। मै तो तुम्हारे नाम का ही कलमा पढता रहता हूँ।

कलमा पढ़ाना—मुसलमान बनाना। सुनते हैं मौलवी लोग बहुत से हरिजनों को कलमा पढ़ा रहे हैं।

कलाई पकड़ना—सतीत्व नष्ट करने पर उद्यत होना। दुर्गा बाई ने ललकार कर कहा "यदि कलाई पकड़ी तो खंजर भोंक दूँगी"

कलाबाज़ी खाना—सिर नीचे करके पलटा खाना। नटों का कला बाज़ी खाना अच्छा था।

कलाम होना—सदेह होना। तुम्हारी बाते कलाम की होती हैं।

कली खिलना—प्रसन्न होना। आनन्दित होना। आज मेरे दिल की कली खिल गई।

कलेजा उछलना—(१) हृदय धड़कना, घबराहट होना। मेरा कलेजा तो अभी से उछल रहा है मैं ऐसे भीषण कृत्य को न देख सकूँगा। (२) आनन्द विभोर होना। परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया यह सुन कर तो मेरा कलेजा बाँसों उछलने लगा।

कलेजा उड़ा जाना—दिल पर खुश्की होना, होश बिगड़ना। इस दवाई से तो जलन हो रही है और कलेजा उड़ा जा रहा है।

कलेजा उलटना—(१) क़ै बहुत होने से जी घबराना। बार बार क़ै होने से कलेजा उलटा जा रहा है। (२) होश न रहना। उसका तो कलेजा उलट गया है। आँखे बन्द हैं, बोलता भी नहीं।

कलेजा कटना—(१) हीरे की कनी या किसी विष से आँतों मे छेद होना। उसका तो कलेजा कट

रहा है कि मैं खून व मास के छिछड़े निकलते हैं। (२) दस्त में खून आना। बड़े दस्त हो रहे हैं कलेजा कट कट कर आ रहा है। (३) दिल पर चोट पहुँचना। उसकी दशा देख कर किसका कलेजा नहीं कटता। (४) बुरा लगना। एक पैसा भी खर्च करते हुए उसका कलेजा कटता है। (५) जलन होना। बेचारे के पास चार पैसे की आमदनी देख कर तुम्हारा कलेजा क्यों कटता है।

कलेजा काढ़ना या काढ़ लेना—(१) बहुत दुख देना। दिल निकालना। मेरा तो कलेजा ही काढ लिया गया अब मैं हवालात से डरने लगा हूं। (२) सब कुछ ले लेना। मेरे बच्चे को मेरे से छीन लिया मेरा कलेजा काढ (निकाल) लिया। (३) मोहित करना। उसकी अदा ने काढ लिया यों कलेजा मेरा। (४) सबसे बढ़िया वस्तु छांट लेना। तुमने भी साहब गज़ब किया सब वस्तुओं का (सार) कलेजा काढ लिया।

कलेजा काढ़ के देना—सबसे प्यारी या सार वस्तु देना। बड़ा कंजूस है वह तो एक पैसा किसी को नहीं दे सकता तुम्हें सौ रुपये दे दिये समझो कि कलेजा काढ कर दे दिया।

कलेजा खाना—(१) बहुत तंग करना। क्यों कलेजा खाये जाते हो मुझे शान्ति से बैठने दो। (२) बहुत तकाज़ा करना। कल से बराबर कलेजा खा रहा है आज उसके रुपये दे ही देंगे।

कलेजा खिलाना—बहुत प्यारी वस्तु देना, पालन करने में कमी न करना। यह दस बरस का था जब इसके पिता मर गये थे तब से मैंने इसे कलेजा खिला कर पाला और अब ये अलग रहना चाहता है।

कलेजा चीर कर दिखाना या रखना—(१) सब कुछ दे देना। अगर हम कलेजा चीर कर रख दें तो भी तुम्हें विश्वास न होगा। (२) पूरा विश्वास दिलाना। मैं कलेजा चीर कर दिखा सकता हूँ कि मेरे यही भाव हैं।

कलेजा छलनी होना—दुख पड़ते पड़ते दिल कमजोर हो जाना, चिन्ताओं का भार सहते सहते दिल दहल जाना। क्या करें हमारा कलेजा तो छलनी हो गया है सुख का नाम ही नहीं।

कलेजा छिदना या सालना—(१) कड़ी कड़ी बातों से जी दुखना। अब तो सुनते सुनते कलेजा छिद गया कहां तक सुनें।

कलेजा छेदना, बींधना—बहुत

कड़ी बातें कहना। क्यों कलेजा बींध रहे हो मै लाचार हूँ वरना कभी इतना नही सुन सकता था।

कलेजा जलाना—दुख देना। मेरा कलेजा क्यों जला रहे हो।

कलेजा टूक टूक होना—रंज से दिल फटना, दिल पर चोट पहुँचना। उनकी मृत्यु से मेरा कलेजा टूक टूक हो गया।

कलेजा टूटना—हिम्मत टूटना, उत्साह न रहना। इस बार के घाटे से मेरा कलेजा टूट गया है अब मै फिर इस काम को नहीं कर सकता।

कलेजा ठंडा करना—मुराद पूरी करना, संतुष्ट करना। एक काम तुमने ऐसा किया है जिसने मेरा कलेजा ठंडा किया है।

कलेजा ठंडा होना—शांति प्राप्त होना, संतोष होना। बेटे! ऐसा काम करो जिससे मेरा कलेजा ठंडा हो, मुझे जलाओ नहीं।

कलेजा तर होना—(१) धन जमा होने के कारण ला परवाह होना। उसे जरा भी चिन्ता नहीं उसका कलेजा तर है १००) २००) खर्च भी हो जायँगे तो क्या होगा। (२) दिल को खुशी पहुँचना। शर्बत से तो कलेजा तर हो गया।

कलेजा तोड़ तोड़ कर कमाना—बहुत मेहनत से कमाना। बेचारा कलेजा तोड़ तोड़ कर कमाता है, फिर भी पूरा नहीं पड़ता।

कलेजा थर थर करना—दिल कांपना। मेरा कलेजा थर थर करता है पता नही वह क्या पूछेगा।

कलेजा थामना (थाम लेना)—दुख सहने के लिये जी कड़ा करना। कलेजा थाम कर सह लेंगे ये दुख भी सारे।

कलेजा थाम कर बैठ जाना या रह जाना—(१) मन मसोस कर रह जाना। जिस समय मृत्यु समाचार सुना तो कलेजा थाम कर रह गये। (२) संतोष करना। यह सहा भी कलेजा थाम कर बैठ गये।

कलेजा थाम कर रोना—(१) मन मसोस कर रोना। (२) रह रह कर रोना। वहाँ चिल्लाने की तो इजाजत नहीं कलेजा थाम कर रोना पड़ता है।

कलेजा दहलना—(१) दिल मे हिचकिचाहट और घबराहट होना। दिल दहल जाता है यह जेल की गाथा सुन कर (२) दिल मे धड़कन होना। यह भयंकर दृश्य देख कर मेरा तो दिल दहल गया।

कलेजा धक धक करना—डर से व्याकुल होना। मेरा कलेजा धक धक करता है पता नहीं मजिस्ट्रेट क्या पूछ बैठे।

कलेजा धक से हो जाना—(१) डर से हृदय स्तब्ध हो जाना। हरिमोहन का कलेजा धक से हो गया और वह लड़खड़ाती ज़बान से बोला। (२) भौंचक्का रह जाना, आश्चर्य होना। ये कौन कह सकता था इतना शरीफ आदमी भी छिपे छिपे यह काम करता है, मैंने तो जब सुना कलेजा धक से हो गया।

कलेजा धड़कना—(१) कलेजा डर से काँपना।

कलेजा धड़काना—(१) खटके मे डाल देना। (२) डरा देना।

कलेजा धुकड़ पुकड़ होना—घबराहट होना।

कलेजा निकलना—(१) बहुत कष्ट होना। मैं देने को तो तैयार हूँ लेकिन इस चीज को देने मे मेरा कलेजा निकल रहा है (१) सार वस्तु चली जाना। चोरी में मेरा तो कलेजा निकल गया अब मेरे पास कुछ भी तो नही रहा।

कलेजा निकल जाना—(१) दम छूटना। दौड़ो खुदा के वास्ते देखो तो क्या हुआ, कहता है कोई हाय! कलेजा निकल गया। (२) बहुत व्याकुल होना।

कलेजा निकालना—देखो 'कलेजा काढ़ना।'

कलेजा निकाल कर रख देना—(१) हृदय की बात प्रकट करना। इस पुस्तक में वास्तव में लेखक ने कलेजा निकाल कर रख दिया है। (२) सब कुछ अर्पण कर देना। मैंने तो तुम्हारे सामने कलेजा तक निकाल कर रख दिया है अब मेरे पास कुछ नहीं है। (३) सत्य साबित करना। मै कलेजा निकाल कर रख सकता हूँ मैने ठीक ही कहा है।

कलेजा पक जाना—कष्ट से जी ऊब जाना। रोज के लड़ाई-झगड़े से कलेजा पक गया है।

कलेजा पकड़ना—देखो 'कलेजा थामना।'

कलेजा पकड़ लेना—(१) दुखों के लिये जी कड़ा कर लेना। मैंने भी कलेजा पकड़ लिया है कुछ भी हो पैर पीछे न पड़ेगे। (२) कलेजे पर भारी मालूम होना। बलराम ने कलेजा पकड़ लिया है।

कलेजा पत्थर का होना—(१) दुख सहने के लिये तैयार हृदय। मेरा कलेजा पत्थर का हो गया है कोई भी विपत्ति हो मैं सामना करूँगा। (२) दुख सहते सहते दिल सुन्न हो जाना।

कलेजा पत्थर करना—(१) चित्त दबाना। जो होना था हो चुका अब कलेजा पत्थर करके घर चलो। (१) चित्त कठोर करना। कलेजा

पत्थर करके उस निरपराध को मैंने मारा, हुक्म था।

कलेजा पानी होना—दया आना उसकी दुख भरी कहानी सुनकर किसका कलेजा पानी न हो जायगा? (कलेजा पसीजना भी प्रचलित है)।

कलेजा फटना—(१) दिल में कष्ट होना। दुखिया की आह कलेजे को फाड़ रही है। (२) ईर्ष्या होना। उसके पास चार पैसे हैं इससे तुम्हारा कलेजा क्यों फटता है!

कलेजा बढ़ जाना—हौसला हो जाना। इनाम मिलने से कलेजा बढ़ जाता है।

कलेजा बैठा जाना—हृदय का मंद और संज्ञा शून्य होता जाना। मेरा कलेजा बैठा जा रहा है चैन ही नहीं पड़ता कहीं ऐसा न हो मैं पकड़ा जाऊँ।

कलेजा मलना—दिल दुखाना, कष्ट पहुँचाना। कलेजा मल मल के किया मुझे ग़ाफ़िल।

कलेजा मसोस कर रहना—दे० कलेजा थामकर रह जाना।

कलेजा मुँह को या मुँह तक आना—(१) मन विकल होना। भूख के मारे कलेजा मुँह को आता है। (२) दुख होना। दुख भरी बातों से मेरा कलेजा मुँह तक आ गया।

कलेजा सन्न होना—कलेजा धक हो जाना। आवाज सुनते ही कलेजा सन्न हो गया।

कलेजा सुलगना—दिल जलना। मुझे मत सुनाओ मेरा कलेजा ख़ुद सुलग रहा है।

कलेजा हाथ भर का होना—(१) उत्साह होना। उनका कलेजा हाथ भर का है अनजाने व्यापार में हजारों रुपया योंही लगा देते हैं। (२) सहन शक्ति होना। उनका दिल हाथ भर का है नीच ऊँच सब सुन लेते हैं। (३) विशाल होना। हाथ भर का कलेजा है जो काम करते हैं हद को पहुँचा देते हैं।

कलेजा हिलना—देखो 'दिल दहलना'

कलेजे का टुकड़ा—(१) संतान। मेरे कलेजे के टुकड़े को मेरे सामने ही खेलने दो। (२) प्यारा व्यक्ति। वह मेरे कलेजे का टुकड़ा है (एक हिस्सा) उसकी बुराई मै नहीं सुन सकता।

कलेजे पर चोट आना—सदमा पहुँचना, असह्य होना। अगर आप बुरा काम करते हैं तो मेरे कलेजे पर चोट आती है।

कलेजे पर छुरी चल जाना, फेरना—दुख पहुँचना पहुँचाना। क्यों कलेजे पर छुरी फेरते हो मेरे, उनकी आँखें ही चला देती हैं छुरियाँ इस पर।

कलेजे पर पत्थर रखना—(१) धीरज धरना। कलेजे पर पत्थर रखे बैठे हैं आखिर कोई वश नहीं चल सकता है। (२) दिल पक्का कर लेना।

कलेजे पर साँप लोटना—किसी बात का ध्यान करके शोक व दुख या जलन होना। (क) जब वह मरे लड़के की कोई चीज़ देख लेता है तो उसके कलेजे पर साँप लोट जाता है। (ख) जब वह अपने पुराने मकान को दूसरों के काबू में देखता है तो उसके कलेजे पर साँप लोट जाता है। (ग) तुम्हारे कलेजे पर क्यों साँप लोटता है तुम कर सकते हो तो तुम भी वही कर डालो जो उसने किया है।

कलेजे पर हाथ धरना या रखना—सच्ची बात जो आत्मा स्वीकार करे। कलेजे पर हाथ रख कर बतलाओ क्या बचपन में तुमसे ज़रा भी गलती नहीं हुई?

कलेजे पर हाथ रख कर देखना—कलेजे पर हाथ रख कर देखो कसूर तुम्हारा है या मेरा!

कलेजे में आग लगना—(१) बहुत दुख होना। (२) द्वेष से जलन होना। (२, प्यास लगना।

कलेजे में डालना—पास रखना। जी चाहता है उसे कलेजे में डाल कर रखूँ।

कलेजे में घुसना या बैठना—हृदय में विश्वास जमाकर भेद ले लेना, मतलब निकाल लेना। वह ऐसा कलेजे में घुस जाता है सारा भेद ले लेता है। पहिले तो कलेजे में घुस गया और काम के बाद आँखें दिखा दीं।

कलेजे से लगा कर रखना—(१) प्यारी वस्तु को दूर न होने देना। मैं अपने बेटे को कलेजे से लगाकर रखूँगी। (२) बहुत प्रयत्न से रक्षा करना। मैंने सात बरस कलेजे से लगाकर रखा है, इसे खो मत देना।

कलेजे से लगाना—छाती से लगाना, भेंटना, प्यार करना।

कलेवर चढ़ाना—मूर्ति पर घी सिंदूर लेप करना।

कलेवर बदलना—(१) शरीर त्याग करना। महात्मा जी कल कलेवर बदल लेंगे। (२) दूसरा रूप करना। बार बार कलेवर बदलते रहते हो। (२) रोग के बाद नया शरीर होना। (४) पुराना कपड़ा उतार कर नया पहिनना।

[१२७१]

कलेवा करना—खा जाना। काल कलेवा कर गयो बड़े बड़े हू भूप।

कल्ला दबाना—(१) गला दबाना। मैंने उसका कल्ला दबा दिया जब दम घुटने लगा तब स्वीकार करली। (२) अपने सामने दूसरे को न बोलने देना। वह जिस समय बोलते हैं अच्छे अच्छे लेक्चरारों के कल्ले दबा देते हैं।

कल्ला मारना—डींग मारना। गाल बजाना।

कस कर रखना—दबा लेना, रोक लेना। कसकर राखो मित्र हूँ मुँह आई मुसकानि।

कसक मिटाना या निकलना—(१) पहिले बैर का बदला लेना। अगर अँधेरे मिल गये तो सारी कसक निकाल लूँगा (२) दुख दूर होना। मेरे दिल में यही कसक थी सो निकल गई।

कसम उतारना—तनिक कुछ करना। तुम तो कसम उतारना चाहते थे इसलिये दस मिनट के लिये जरा हो आये।

कसम खाने को—एक सी, जरा सा सी। मेरे कसम खाने को बेरा नहीं। मेरे पास कसम खाने को दम नहीं।

कसर करना—कम करना। मालिक से भुगत लेना, इन दलाली के पैसे में कसर क्यों करते हो।

कसर खाना—घाटा उठाना। भाई इसमें दो रुपये की तो कसर खा सकते हैं अधिक नहीं।

कसर निकालना:—(१) कमी पूरी कर लेना। इधर की कसर उधर निकाल लेंगे। (२) तुम भी कभी हत्थे चढ़ोगे तब सारी कसर निकाल लूँगा (बदला लेलूँगा)।

कसर पड़ना—घाटा होना। यदि अब कुछ घटाओगे तो हमें बहुत कसर पड़ेगी।

कसर रखना—द्वेष रखना। मै तो इसे बहुत दिनों से जानता हूँ कि यह मुझसे कसर रखता है।

कसा कसाया—चलने के लिये बिल्कुल तैयार। मै तो कसा कसाया खड़ा हूँ तुम्हीं देर करते हो। घोड़ा कसा कसाया है देर कुछ भी नहीं।

कसाई के खूंटे से बांधना—बेरहम के हाथों देना। गऊ सी बेटी तुमने कसाई के खूटे बाँध दी यह बुरा किया।

कसाला पड़ना—कष्ट होना। कहै ठाकुर कासौं कहा कहिये हमें प्रीति करे के कसाले पड़े।

कसौटी पर कसना—परीक्षा करना, अच्छी तरह जाँच लेना। कसौटी पर कस कर ही किसी से मैत्री करना।

कह कहा उड़ाना, लगाना या मारना—मज़ाक उड़ाना, हँसी करना। मेरी हर एक सम्मति का वे कह कहा उड़ाने लगते हैं, लेकिन पीछे याद आती है कि बात ठीक थी।

कह बैठना—(१) ताना देना, शिकायत करना। इस लिये वह ज़िवह करते हैं मुँह फेर कर, यह न कह बैठूँ कि आँखों की मुरव्वत क्या हुई। (२) सख्त जवाब देना। मै वहाँ नहीं जाऊँगा क्योंकि यदि वह कुछ कह बैठा तो खून खच्चर हो जायगा।

कहना बदना—(१) निश्चय ठहराना। यह बात पहिले से कही बदी थी। (२) प्रतिज्ञा कर। तुम कह बद कर निकल जाते हो। (३) ललकार कर, खुले खजाने। हम जो कुछ करते हैं कह बद कर करते हैं, छिप कर नहीं।

कहना सुनना-(१) गाली गलौज। मेरी उनसे जरा सी बात पर कहा सुनी हो गई है (२) बात चीत करना, दिखाने के लिये। यह बात तो केवल कहने सुनने के लिये है असलियत कुछ और है।

कहने पर जाना—किसी की बात पर विश्वास कर के काम करना। उसके कहने पर मत जाओ, वह महा झूठा आदमी है।

कहने में या कहने सुनने में आना—(१) बहकाये में। मै तो उसके कहने में आकर वहाँ चला गया अब पछता रहा हूँ। (२) बनावटी बातों पर विश्वास करना, धोखे में आना। चतुर लोग धूर्तों के कहने सुनने में नहीं आते।

क़हर करना—(१) अत्याचार करना। (२) आश्चर्यकारी कर्तव्य। (३) असभव को सभव करना।

क़हर टूटना—आफत आना। मेरे पर क़हर टूटा पडा बीमार मै यक दम।

कहाँ का—(१) असाधारण, बड़ा भारी। कहाँ के मूर्ख से पाला पडा। (२) जो नहीं है, कहीं का नहीं। कहाँ के हमारे दोस्त हैं? वे कहाँ के सत्यवादी हैं।

कहाँ का कहाँ—बहुत दूर। हम लोग चलते चलते कहाँ के कहाँ जा निकले।

कहाँ से—क्यों व्यर्थ मे। पता नहीं यह कहाँ से आ मरा हम तो शान्ति से समय बिता रहे थे अब यह झगड़ा भी सिर पड़ा। (२) नहीं। अब उनके दर्शन कहाँ से हो सकते हैं वे तो सदा के लिये विदा हुये।

कहाँ की बात—ये बात ठीक नहीं। अजी! कहाँ की बात वो सदा योंही कहा करते हैं।

कहीं आकर—बहुत दिनों मे। चौदह बरस ब्याह को हो गये अब कही आकर सतान हुई है।

कहीं और—दूसरी जगह। कहीं और माँगो यहाँ कुछ न मिलेगा।

कहीं कहीं—किसी किसी स्थान पर। उस प्रदेश म कही कही पहाड़ भी हैं। (२) बहुत कम। मोती समुद्र मे कहीं कही मिलता है सब जगह नहीं।

कहीं का—जो पहले न देखा हो बड़ा भारी। उल्लू कहीं का, चल यहाँ से।

कहीं का न रहना या होना—किसी भी योग्य न रहना। मैं तो अब कही का न रहा न नौकरी कर सकता हूँ और न रोजगार ही।

कहीं ... न—ऐसा न हो कि। कहीं तुम भी वही न रह जाना। कहीं वह न आजाय।

कहीं... ...तो नहीं—कहीं रास्ता तो नहीं भूल गया।

काँकरी चुनना—चिंता या वियोग के कारण मन न लगना। काँकरी चुनते हुए दिन गुजरते हैं क्या करे मन मार कर बैठ रहना पड़ा।

काँछ खोलना—(१) प्रसंग करना। कामी से कुत्ता भला ऋतु पर खोले काँच, राम नाम जाना नहीं भावी जाय न बाँच। (२) हिम्मत छोड़ना, धोती खोलना। बस इतने मे ही काँच खोल दी।

काँछ निकलना—कमजोरी या परिश्रम में असमर्थ होना। इस पत्थर को उठाओ तो काँच निकल आवे।

काँछ निकालना—(१) वेदम करना, बहुत चोट या कष्ट पहुँचाना। इतना माल ढोना पड़ता है कि काँच निकाल देता है (२. बहुत मेहनत कराना। देते हैं तीन आने और काँच निकाल कर छोड़ते हैं।

काँचा मन—कच्चा मन। जप माला छापा तिलक सरै न एकौ काम, मन काँचे नाचे वृथा साँचे राँचे राम।

काँचा मन होना—छोटा हृदय, पक्का दिल न होना। समय सुभाव नारिकर साँचा, मगंल महँ मन भयउ अति काँचा।

काँछी देना—टाल देना। अब की बार और काछी दो, बस फिर महीना पूरा होने मे देर नही।

काँटा खटकना—सदेह होना। दिल मे रहे काँटा न खटकता।

काँटा चुभाना—तग करना। क्यों काँटा चुभोते हो बिचारे गरीब को दो पैसे पैदा करने दो।

काँटा निकलना निकल जाना—संदेह, बाधा, जलन, या दुख

मिटना। आपकी बातों से मेरे हृदय का काँटा निकल गया।

काँटा निकालना—(१) खटका मिटाना। (२) बाधा वा कष्ट दूर करना। मेरे बेटे को नौकर रख कर मेरा काँटा निकाल दिया।

काँटा बोना—(१) बुराई पैदा करना अनिष्ट करना। जो तो को काँटा बुवै ताहि बोव तू फूल। (२) अड़चन डालना। अगर आप हमारे मार्ग मे काँटा बोते है तो याद रखिये हम भी बुरी तरह पेश आयेगे। (काँटा बिछाना भी प्र० है)।

काँटा सा खटकना—अच्छा न लगना। मेरी आँखों या दिल में तो कुपूत लड़का काँटों सा खटकता है।

काँटा सा होना—बहुत दुबला पतला होना या हो जाना। वह तो इस बीमारी मे सूख कर काँटा सा हो गया।

काँटी खाना—कैद काटना। जनाब, वह मामूली जुवारी नहीं है, कितनी ही काँटी खा चुका है।

काँटे की—सुसंगत, नपी तुली, न करने योग्य। वह बड़े काँटे की बात कहता है अच्छे अच्छे वकील तक दंग रह जाते हैं।

काँटों पर लोटना—(१) बेचैन होना, दुख से तड़पना। इस वक्त तो इतनी तकलीफ है कि काँटों पर लोट रहा है। (२) ईर्ष्या या जलन होना। सौत के लड़कों को देख कर तो काँटों पर लोटती है।

काँटो में उलझना—विपत्ति में उलझना। काँटों मे यदि हो न उलझना, थोड़ा सा लिखा बहुत समझना।

काँटो में खींचना या घसीटना—(१) किसी की बहुत बड़ाई करके उसे शर्मिन्दा करना। ये सब बातें कह कर मुझे काँटो मे न घसीटिये। (२) बहुत दुख देना। आप ने मुझे बहुत काँटों मे घसीटा है अब मै भी उसका बदला लूँगा।

काँटों में फँसना—मुश्किल में पड़ना। हम तो इस काम को हाथों मे लेकर काँटों में फँस गये।

काँधे मारना—धोखा देना, काम ना आना। सजग जो नहीं मार पल काँधा, बुध कहिये हस्ति कहाँ बाँधा।

काई छुड़ाना—(१) मैल दूर करना। रगड़ कर मल दो, काई छुट जाय। (२) दु:ख दरिद्रता दूर करना। उन्होंने हमारी बहुत ही मदद की हम पैसे पैसे को मोहताज थे हमारी काई छुड़ाई।

काई सा फट जाना—तितर बितर होना। हजारों आदमियों की भीड़

थी लेकिन जब तलवार लेकर निकला तब काई सी फट गई।

काग़ज़ करना—दस्तावेज़, टिकट के काग़ज़ पर रुपये या जायदाद का अधिकार लिखना। मैंने दो सौ रुपये का काग़ज़ कर दिया है, वे चार सौ रुपये का काग़ज़ कराना चाहते थे।

काग़ज़ काला करना—फिजूल कुछ लिखना। क्यों काग़ज़ काला कर रहे हो मैं जानता हूँ तुम्हें जैसा लिखना आता है।

काग़ज़ की नाव—न टिकने वाली चीज। यह सिर्फ काग़ज़ की नाव है ठहर नहीं सकती।

काग़ज़ के या कागज़ी घोड़े दौड़ाना—खूब लिखा पढ़ी करना। तुम कागजी घोड़े तो बहुत दौड़ाते हो लेकिन खुद जाकर मिलते तक नहीं।

काग़ज़ खोलना—भेद या दोष जाहिर करना। सुधारक ने कितने ही विधवा आश्रमों के काग़ज़ खोल डाले।

काग़ज़ पर चढ़ाना—लिख लेना, टीपना। मैंने काग़ज़ पर चढ़ा लिया है भूलूँगा नहीं।

कागा रौल मचाना—चख चख करना। महमानों ने ऐसी कागा रौल मचा रखी है कान पड़ी आवाज़ नहीं सुनाई देती।

काछ काछना—स्वांग भरना। जस काछ कछे तस नाच नचे।

काजल की कोठरी—दूषित या कलंकित स्थान। काजल की कोठरी में कैसहु सयाने जायँ एक लीक काजल की लागै पै लागैरी। यह मथुरा काजरा की ओबरी जे आवे ते कारे।

काजल घालना, सुलना या देना—आँखों में काजल लगाना। ऐसी पै तो ऐसी, काजल दीये पै कैसी।

काट खाना—नुकसान उठाना। आपकी वजह से मैंने २५) की काट खाई वरना उस जैसे पचास चालाक मुझे काट नहीं दे सकते।

काट खाने को दौड़ना—रूखे पन से जवाब देना, हर बात पर बिगड़ना। उस से बात करो तो काट खाने को दौड़ता है।

काट छाँट करना—(१) कमी करना। उसने डेढ़ सौ मे काट छाँट करके तीस आदमी चुने।

काट फाँस करना—(२) इधर की उधर लगाना। वह काट फाँस किया करता है इसी से मित्रों में गाँठ पड़ जाती है।

काटने दौड़ना—चिढ़ चिढ़ाना, नाराज होना। उससे रुपये माँगने जाते हैं तो वह काटने दौड़ता है।

काटे खाना—(१) चित्त व्यथित

होना। आज कपडे भी काटे खाते हैं। (२) सूना लगना। उनके बिना मकान काटे खाता है।

काटने न कटना—(१) बहुत कठिन होना। यह पेंसिल तो काटे नहीं कटती। (२) निताये न बीतना खतम ही न होना। आज कल तो रात काटे नहीं कटती।

काटो तो खून नहीं—दुखदाई, भयानक या रहस्य खोलने वाली बात को सुन कर सन्न रह जाना। शरीफ आदमी थे ज्योंही उसने भड़ा फोड़ा बस उनके तो होश उड़ गये काटो तो खून नहीं रहा।

काठ का उल्लू—वज्र मूर्ख घोर अज्ञानी। सेठ तो तुम्हारा काठ का उल्लू है उसे ज्ञान नहीं।

काठ का घोड़ा—लगड़े आदमी की लकड़ी। हमारा सहारा है काठ का घोड़ा।

काठ की हाँडी—(१) धोखे की चीज़। (२) टिकाउ न हो या जिसका धोखा एक ही बार चले। जैसे हाँडी काठ की चढै न दूजी वार।

काठ चबाना—रूखी सूखी रोटी खाना। सारी उम्र हमने तो काठ चबाते काटी।

काठ में पाँव देना—(१) अपराधी को पहिले पाँव में काठ की बेड़ी पहनाते थे। (२) स्वय बधन में पड़ना आफत में फँसना। फूले फूले फिरत हैं भयो हमारो ब्याह, तुलसी गाय बजाय के दियो काठ में पाँव।

काठ में पाँव पड़ना—कफस में जान, मुश्किल मे पड़ना। क्या बताव ऐसा काठ मे पाँव पड़ गया है, कुछ भी तो नहीं कर पाते।

काठ होना—(१)—चेतना रहित होना। वारट के सिपाही को यकायक देखते ही वह तो काठ हो गया। (२) सूख कर सख्त हो जाना। वह तुम्हारी याद में काठ हुए जा रहे हैं।

कान आ लगना—कानों में खुफिया बातें करना। औ... गया कि गैर तेरे कानों आ लगा।

कान उठाना—(१) सुनने के लिये तैयार होना। मैं तो कान उठाये हुए था, तुमने ही कुछ नहीं कहा। (२) चौकन्ना, सचेत होना। काम करते हुए भी वह हर तरफ कान उठाये रहता है।

कान उमेठना या ऐंठना—(१) चेतावनी देना, आज्ञा देना तुम ज़रा से कान उमेठ दोगे तो मुझे विश्वास है वह मुझे १००) के लिये मने नहीं करेगा। (२) न करने की प्रतिज्ञा करता हूँ। मैं कान ऐंठता हूँ ऐसा फिर कभी न होगा। (३) गलती मानना।

वास्तव में भूल हुई मैं कान ऐंठता हूँ। (४) दण्ड देना। मैंने जरा सी भूल पर भी उसके कान खूब ऐंठ दिये।

कान करना—ध्यान देना, सुनना। बालक वचन करहिं नहिं काना।

कान कतरना या काटना—(१) मात करना, बढ़ कर होना। अकबर केवल तेरह बरस का था लेकिन होशियरी और जवाँमर्दी म बड़े बड़े जवानो के कान काटता था। २ चकमा देना। मैंने बडे बडे चालाकों के कान कतरे है तुम बेचारे मेरे क्या कान कतरोगे।

कान का कच्चा—(१) शीघ्र विश्वासी, बहकाये से आजाने वाला। वह कान का कच्चा है तुम्हारे कहते ही वह उसे दोषी समझ कर निकाल देगा। (२) सुन कर कह देने वाला। औरतें कान की कच्ची होती हैं।

कान का पर्दा फटना—अधिक हल्ला गुल्ला न सह सकना। मेरे कान का परदा फटता है इन बाजे वालों को बद करो।

कान का मैल निकलवाना—सुनने के लायक होना (व्यंग्य)। कान का मैल निकलवाओ तब आकर सुनना।

कान खडे करना—(१) चौकन्ना करना, सचेत करना। फिर उडती पहुँची जो भनक कान मे अपने, सुनते ही खड़े कर दिये बस कान हमारे। (२) होशियार होना। बहुत कुछ खो चुके अब कान खड़े करो।

कान खड़े होना—चेत होना। इतनी हानि उठाई अब कान खडे हुए, ऐसा न करेंगे।

कान खाना या खा जाना—(१) बहुत शोर गुल मचाना बहुत बातें करना। क्यों कान खाए जाते हो बस चुप रहो। (२) बहुत बार कहना। मैंने तीस बार घर पर जाकर उनके कान खाये तब जाकर उन्होंने तुम्हे नौकर रखा है।

कान खा लिये—मारे बक बक के परेशान कर दिया। तुमने तो मेरे कान खा लिये आखिर ऐसी भी क्या बात।

कान खुलना या खुल जाना—सबक लेना, समझ जाना। अब इतने दिनों बाद मेरे कान खुले खैर अब होशियारी से रहूँगा।

कान खुजाने को फुरसत न होना—जरा वक्त खाली न होना। आज कल तो कामो में इतना व्यस्त हूँ कि कान खुजाने तक की फुरसत नही मिलती।

कान खोलना, खोल देना—चेताना, भूल बता देना। अब

महात्मा जी ने मेरे कान खोल दिये मै समझता था कि मै ही ठीक था।

कान गरम करना—दवाव डालना। तुम उसके कान गरम करो तो मानेगा।

कान दबाना—विरोध न करना सहमना। अगर दवाव किसी का तुम्हारे दिल पर नहीं, तो हम को देख कर तुम कान क्यों दवाते हो?

कान देना—ध्यान देना। हम ऐसी मूर्खता पूर्ण बातों पर कान नहीं देते।

कान धरना—(१) ध्यान से सुनना। मै पहिले से ही कान धरे हुए था इसलिये सारी बाते सुन ली। (२) सुना हुआ याद रखना। मेरे कहने पर कुछ कान धरो, मुँह इधर फेरो कुछ तो बात करो। (३) न करने की प्रतिज्ञा करना। अब कान धरता हूँ कभी ऐसा न करूँगा। (४) कान उमेठना। (५) मानना। वह किसी की शिक्षा उपदेश कान नहीं धरता।

कान न दिया जाना—(१) न सुना जाना। ठठेरों के बाजार मे कान नहीं दिया जाता। (२) करुण स्वर रहम के कारण न सुनना चाहना। बच्चे का माँ के लिये रोना सुन कान नहीं दिया जाता। (३) न सुना जाना। ऐसी बातों पर कान नहीं दिये जाते, ये लोग तो कहा ही करते हैं।

कान न हिलना—चूँ न करना, विना विरोध बात मान लेना। चिन्ता न करो मै जब उससे कहूँगा तो वह कान भी न हिलावेगा।

कान पकड़ना—(१) भूल स्वीकार करना। लेती थी ऐसी आन वान से तान कि पकड़ता था तानसेन भी कान २. गलती पकड़ने पर गुरु मानना। मै कान पकड़ता हूँ आप उस्ताद निकले। (३) न करने की प्रतिज्ञा करना। आज से कान पकड़ते हैं, ऐसा न करेंगे (४) पछतावे के साथ प्रतिज्ञा। भाई इस बार तो फस गये अब जमानत देने से कान पकड़ते हैं। (५) किनारा कसना। मुकदमा लड़ाने से वह हमेशा कान पकड़ते हैं। चाहे कितना ही नुकसान क्यों न हो जावे। (६) ज़बरदस्ती। उसे कान पकड़ कर करा लूँगा, वह मेरा मित्र है।

कान पकड़ी छोरी—आज्ञा कारिणी। वह तो मेरी कान पकड़ी छोरी (लौंडी) है, कहते ही फौरन करेगी।

कान पकड़ कर निकाल देना—बेइज्जती के साथ बाहर करना। तुम यों मकान न छोड़ोगे तो कान पकड़ कर निकाल दूँगा।

कान पड़ी आवाज़ न सुनना—बहुत शोर गुल होना। वहाँ कारखाने में तो कान पड़ी आवाज़ भी नहीं सुन सकते।

कान पर जूँ न रेंगना—(१) ज़रा भी परवाह न होना। हज़ार कहो उसके कान पर जूँ नहीं रेंगती। (२) बेखबर होना। इतना सब कुछ हो गया और तुम्हारे कान पर जूँ तक न रेंगी।

कान पर रखना—याद रखना। मैं जो कह रहा हूँ उसे अच्छी तरह कान पर रखना।

कान पर से गोली जाना—किसी विपत्ति से बाल बाल बच जाना। मैं तो बिल्कुल आ ही गया था चक्कर में बस यों समझो कान पर से गोली गई है।

कान पर हाथ धरना या रखना—(१) एक दम न सुनना, मानना। पूछते ही वह कान पर हाथ धरने लगा। (२) डरना। ऐसे दृश्य को देखते पुलिस ने कान पर हाथ रख लिये। (३) लाइल्मी या अज्ञानता जाहिर करना। वह कानों पर हाथ रखते हैं, उन्हें क्या खबर।

कान पूँछ फटकारना—सावधान होना। इतना सुनते ही वह कान पूँछ फटकार कर उठ खड़े हुए।

कान पूँछ दबा कर चला जाना—चुपचाप चले जाना, बिना विरोध किये टल जाना। ज़रा सा डर दिखाया और देखा उनने जब हमको, दबा कर कान पूँछ अपनी हुए रुख़्सत यहाँ से वो।

कान फटना या कान का परदा फटना—शब्द सुनने से बाज़ आना। तोपों की आवाज़ों से कान फटे जाते हैं।

कान फड़ फड़ाना—होशियार होना। (कुत्ते ऐसा करते हैं उसी से यह मुहावरा लिया है)। ज्यों ही उनसे कहा लगे कान फड़ फड़ाने।

कान फूँकना—(१) चेला बनाना। मैंने उनके कान फूँके हैं वह मेरा आज्ञाकारी है। (२) कान भरना। उसने मेरी ओर से उनके कान फूँक दिये हैं, इसलिये वे नाराज़ हैं।

कान भरना या कान भर देना—(१) किसी के विरुद्ध किसी के मन में बात बैठा देना। लोगों ने पहले से ही उनके कान भर दिये थे, इस लिये हमारा कहना सुनना सब व्यर्थ हुआ।

कान भर जाना—सुनते सुनते जी ऊब जाना। बस मैं नहीं सुनना चाहता मेरे तो कान भर गये ऐसी बातों से।

कान में डाल देना—सरसरी तौर

पर सुना देना। यह बात पहिले से ही जरा उनके कान में भी डाल देना।

कान में तेल या रूई डाल बैठना—(१) सुन कर भी ध्यान न देना। अजी! मैं तो कान में तेल डाल कर बैठ गया हूँ कोई बुराई करो या भलाई हमें क्या चिन्ता? (२) बेखबर सा या लापरवाह हो जाना। लोग रुपया माँगते हैं उसने कान में रूई ठूँस ली है।

कान में फूँकना—(१) कान भरना, भीतर ही भीतर किसी को बहका देना। उन्होंने मेरे विरुद्ध उनके कान में फूँक भरदी है, इसलिये मैं सिफारिश नहीं कर सकता। (२) कोई लगती हुई बात कहना। कान में फूँकी जब मैंने वह बात, आग तो सुनते ही वह दम सा रहा।

कान में रखना—याद रखना। मेरी वह बात कान में रखना नहीं तो निश्चय धोखा खाओगे। मैं हर एक बात कान में रखता हूँ, परन्तु भेद मौके पर खोलता हूँ।

कान रखना—निगाह में रखना, पता लगाना। हमारे हर एक भेद पर वे कान रखते हैं, जरा सी बात हुई और वहाँ पहुँची।

कान से लगना—(१) चुपके चुपके कहना। जब से बुरे लोग कान लगने लगे तभी से वह काइयाँ बने हैं पहिले यह बात न थी। (२) मानी जाना। तुम्हारी बात उनके कान जरूर लगती है कह कर तो देखो। (३) कान के पीछे घाव होना। बच्चे के कान लग गये हैं।

कान लगाना—ध्यान देना। मेरी हरेक बात पर वह कान लगाते हैं।

कान लगा कर सुनना—गौर से एक एक शब्द सुनना। तुम कहो मैं कान लगा कर सुन रहा हूँ।

कान से निकल जाना—सुनी बात भूल जाना। जरूर याद रखना, क्योंकि मैं जानता हूँ तुम्हारे कान से बात थोड़ी देर में निकल जाती है।

कान होना—चेत आना, ख्याल होना।। जब तक उन्होंने हानि न उठाई तब तक कान न हुए।

काना फूँसी करना, होना—चुपके चुपके बात होना। पहिले से तो ऐसे खम ठोक कर तैयार थे अब डरते और काना फूसी करते हो।

कानी के ब्याह को सौ जोखों—जहाँ कमी या खामी हो वहाँ सौ डर। भाई! कर तो डालूँ लेकिन तुम्हें मालूम है कि कानी के ब्याह को सौ जोखों होता है।

कानी कौड़ी का न होना—

[१२६३]

किसी कीमत का भी नहीं। मैं तो कानी कौड़ी भी न दूँ, यह कानी कौड़ी का भी नहीं है।

कानून छाँटना व बघारना—हुज्जत या कुतर्क करना, नुक्ता चीनी करना। खुद तो तैयार नहीं और दूसरा करता है तो कानून छाँटते हो।

कानों कान खबर न होना—जरा भी खबर न होना, कुछ भी सुनने में न आना। देखो! कानों कान भी खबर न होने पावे और उसका काम भी हो जावे।

कानों कान फैलना—एक से दूसरे उससे तीसरे आदि का सुनना। ख्याल रखो कोई जानने न पावे क्योंकि ऐसी बात कानों कान फैल जाती है।

कानों में उँगली देना—न सुनना। मैंने कानों में उँगली दे ली है अब कुछ भी कहा करो मैं न सुनूँगा।

कानों से काम लेना—पूछ ताछ करने या सुन कर भला बुरा समझना। भाई! उससे ब्याह तो कर रहे हो लेकिन जरा कानों से काम लो संसार उसकी बाबत क्या कह रहा है।

काबू में करना—वश में करना। मैंने उसे काबू में कर लिया है अब वह तुमसे कुछ नहीं कह सकता।

काबू पर चढ़ना या चढ़ाना—दाँव पर चढ़ना, अधिकार में आना। मेरे काबू पर चढ़ गया तो मैं १००) झपट ही लूँगा।

काबू पाना—अधिकार होना। मैंने उसकी जायदाद पर काबू पा लिया है।

काफिया तंग करना—बहुत हैरान या तंग करना। मैंने बार बार पूछ कर उसका काफिया तंग कर दिया।

काफिया तंग रहना; होना—नाकों दम रहना। इधर उधर आना जाना इतना अधिक है कि काफिया तंग रहता है।

काफिया मिलाना—(१) तुक बंदी करना। उसे कविता क्या आवे वह तो सिर्फ काफिया मिलाना जानता है। (२) साथी बनाना। हमने तो उनसे काफिया मिला लिया है।

काफूर होना—रफू चक्कर होना, चंपत होना। देखते देखते ही तो वह काफूर हो गया।

काम अटकना—हर्ज होना, कार्य रुकना। उनके बिना तुम्हारा कौन सा काम अटका है।

काम आना—(१) मारा जाना। उस लड़ाई में हज़ारों सिपाही काम आए। (२) प्रयोग में आना। तुम्हारी बंदूक फिर कब काम

आयगी ? (३) लाभ होना। आखिर तुम्हारी अक्ल भी कुछ काम आयगी।

काम करना—(१) असर करना, प्रभाव डालना। दवा इस समय तो काम कर गई। (२) कोशिश में कामयाब होना। यहाँ पर उसकी बुद्धि काम कर गई। (३) मतलब निकालना। वह अपना काम कर गया और तुम ताकते रह गये।

काम का—फायदे मद। ऐसे मौके पर यह बड़ा काम का आदमी है।

काम के सिर होना—काम मे लगना। महीनों से बेकार बैठे थे, काम के सिर हो गये, अच्छा ही है।

काम खुलना, खोलना—शुरू होना, करना। अभी काम खोला है बाजार मे धीरे धीरे जानने लग ही जायँगे।

काम चमकना—रोजगार खूब चल जाना, आशातीत फायदा होना। दो साल के अन्दर ही अदर वैद्य जी का काम चमक गया है, अब मोटर में सैर करते हैं।

काम चलना—(१) होता रहना। सिंचाई का काम चल रहा है ? (२) काम की गति धीमी हो जाना। अजी ! काम चल रहा है वरना आमदनी कुछ भी नही। (३) कार्य सिद्ध हो जाना। इतने में तुम्हारा काम चल जाय तो ले जाओ।

काम चलाना—(१) चलता रखना। इस समय वही है जो १००) मासिक मे काम चला रहा है वरना और कोई नहीं ऐसा कर सकता। (२) जैसे तैसे काम निकालना। भाई ! काम चला रहा हूँ वरना धोती तो बिल्कुल फट गई है।

काम तमाम या खातिर करना या होना—(१) काम पूरा होना। यह काम तो तमाम हो गया। अब और बतलाइये क्या करना है ? (२) मरना। लड़ाई मे सारे आदमियों का काम तमाम हो गया, एक भी तो बाकी न रहा।

काम देखना—(१) चलते हुए काम की जाँच करना। मै बाहर जा रहा हूँ जरा इनका काम देख लिया करना। (२) अपने कार्य से मतलब रखो। तुम्हें इन झगड़ों से क्या, तुम अपना काम देखो।

काम देना—व्यवहार मे आना। रख छोड़ो वक्त पर काम देगी। पड़ा रहे काम देही गा।

काम निकलना—(१) मतलब बनना, कार्य सिद्ध हो जाना। मुफ्त मे निकले काम तो क्यों खर्चो

दाम। (२) जरूरत पूरी होना। इससे काम निकले तो ले जाओ दूसरा तो मेरे पास नहीं है।

काम निकालना—(१) मतलब निकाल लेना। चालाक आदमी है, अपना काम निकाल लेता है। (२) गुज़ारा करना। अभी तो काम निकालो फिर दूसरा ले लेना।

काम पड़ना—(१) आवश्यकता होना। जब काम पड़ेगा तो देखा जायगा (२) वास्ता पड़ना। चदन पड़ा चमार घर, नित उठि कूटै चाम चदन बपुरा क्या करै पड़ा नीच से काम।

काम बँटाना—हाँथ बटाना, किसी कार्य में सहायता करना। भाई! कुछ तो काम बँटा लो मैं तुम्हारा कृतज्ञ होऊँगा।

काम बढ़ाना—(१) नियमित समय पर कोई काम बद करना। सात बजे काम बढा कर मै आ सकूँगा पहिले नहीं (२) फौरन काम बढा कर मै मुर्दनी में चला गया। (३) रोजगार फैलाना। उसने बड़ा काम बढा लिया है।

काम बनना—स्वार्थ सिद्ध होना, कार्य पूरा होना। मेरा काम तो बन गया, उसका चाहे कुछ भी हो।

काम बनाना—कार्य में सहायक होना। मौके पर खूब काम बनाया, नही तो बड़ी बदनामी थी।

काम बना रहना—समय अच्छा रहना। भगवान करे आपका काम बना रहे।

काम बिगड़ना—(१) बात बिगड़ना। उसका काम बिगड़ ही गया अब क्या होता है। (२) रोजगार नष्ट होना। इस बार के घाटे से उनका काम ही बिगड़ गया।

काम भुगतना—पूरा होना। काम भुगत गया अब निश्चित हुए।

काम भुगताना—पूरा करना। इनका काम भुगता दूँ तब तुम्हारा भी कर दूँगा।

काम में आना—बर्ता जाना। यह भला किस काम में आयगी फैंको दूर।

काम में लाना—उपयोग करना इस्तेमाल मे रखना। रखे रखे सड़ जायगा, जितना काम मे लाओगे उतना अच्छा रहेगा।

काम रखना—(१) होशियारी, कठिन कार्य। इस भीड़ मे से निकलना काम रखता है। (२) वास्ता या ताल्लुक। तुम सिर्फ खाने से काम रखते हो काम से कुछ काम नहीं।

काम लगना—(१) नौकर होना। छ महीने की बेकारी के बाद अब २५) महीने का काम लगा है। (२) काम जारी होना। महीनों से

[१४१२]

काम लगा है, पर मंदिर अब भी तैयार नहीं हुआ।

काम लगा रहना—(१) व्यस्त रहना। उन्हें हर वक्त काम लगा रहता है, बात करने को वक्त नहीं। (२) काम पड़ता रहना। कोई आता है कोई जाता है यही काम दिन रात लगा रहता है।

काम लेना—(१) कार्य कराना। जो मनुष्य नौकरों से काम लेना नहीं जानता वह बर्बाद होगा ही। (२) इस्तेमाल करना। आप दवात से काम ले रहे या मैं ले जाऊँ।

काम से काम रखना—केवल अपने ही कार्य का ध्यान रखना। उन्हे तो काम से काम वे दुनिया के झंझटों में हाथ नहीं डालते।

काम से अलग रहना—नौकरी आदि से दूर हो जाना। वह बेचारा इस काम से भी जाता रहा।

काम होना—(१) मरना। गिरते ही उनका तो काम हो गया। (२) बहुत कष्ट पहुँचना। तुम आज्ञा दे रहे थे, उठाने वालों से पूछो। उनका काम हुआ जा रहा था। (३) ज़रूरत पूरी होना। मेरा काम तो हो गया अब तुम्हारा भी कर देंगे।

कायथ की खोपड़ी—बहुत धूर्त चालाक और दगाबाज़ आदमी। उसके फंदे में न फँसना उसके सिर में कायथ की खोपड़ी है, धोखा खाओगे।

कायम उठाना—शतरंज की बाजी बिना हार जीत के उठाना। कोई भी नहीं जीता बाजी कायम ही उठा दी।

क़ायल करना—(१) शर्मिन्दा करना। क्यों बेचारे को ज़रा सी बात पर क़ायल करते हो भूल हो गई सो हो गई (२) समझा बुझा कर बात समझाना। जब दस आदमी क़ायल करेंगे तो करना ही पड़ेगा।

क़ायल होना—(१) दूसरे की बात को यथार्थ मान लेना। उसकी बात ठीक निकली तो मैं क़ायल हो गया। (२) स्वीकार करना। हम उसकी चालाकी के क़ायल हैं। (३) शर्मिन्दा होना।

काया पलट जाना—और से और हो जाना। तीस बरस में दिल्ली की काया पलट गई। काया पलट होना भी प्रचलित है।

काया पलट देना—रूप बदल देना। दवाई ने इतना गुण किया कि उसकी काया ही पलट दी दुबले-पतले को मोटा-ताज़ा बना दिया।

कारखाना लगा रहना—आदमियों का जमघट रहना। यहाँ दिन भर कारखाना लगा रहता है।

[१४४४]

कारूरा मिलना—बहुत हेल मेल होना। आज कल उन्होंने सेठ जी से कारूरा मिला रखा है।

काल काटना—(१) वक्त गुजरना। (२) मुश्किल से समय बिताना। जैसे तैसे काल काट रहा हूँ।

काल के गाल में जाना—मर जाना, खतम हो जाना। जाना है एक दिन काल के गाल में सब को।

काल क्षेप करना—देर करना। क्यों काल क्षेप करते हो जल्दी चलो।

काल पाकर—(१) कुछ समय बाद। काल पाकर उसका रंग बदल जायगा। (२) काल पाकर (मौका पाकर) मै आक्रमण करूँगा।

काला नाग—घातक, अत्यन्त कुटिल। वह आदमी काला नाग है सैकड़ो को डस चुका है।

काला पहाड़—डरावनी और न बीतने योग्य। दुःख की रातें काला पहाड़ हो जाती हैं।

काला बाल जानना, समझना—तुच्छ समझना। चोर कब का जोर माने है, काला बाल उस को अपना जाने है।

काला भुजंग—बहुत काला आदमी। हद भी होती है वह तो काला भुजंग है।

काला मुँह करना—(१) बुरा काम करना। क्यों काला मुँह कर रहे हो दुनिया क्या कहेगी। (२) अनुचित सहगमन करना। तुमने भी काला मुँह किया है, मै तुम्हें आदर्श जानता था। (३) बुरे आदमी का दूर होना। जाओ यहाँ से काला मुँह करो। (४) कलंक लगाना। ऐसे काम करके तुम अपना मुँह काला कर रहे हो। (५) बुरे को दूर हटाना। तुम्हे इन झगड़ों से क्या काम, जाने दो मुँह काला करो। (६) झंझट दूर करना। जो कुछ लेना देना है ले दे कर मुँह काला करो। (७) कलंक का कारण होना। तुम आपके आप गये हमारा भी मुँह काला किया।

काला मुँह होना—कलंकित होना। हमारा व्यर्थ में ही मुँह काला हुआ।

कालिख लगना—मुँह पर बदनामी या कलंक लगना। हमारे मुँह पर कालिख लगी है किस मुँह से वहाँ जाऊँ।

कालिख लगाना—(१) बदनामी का कारण होना। इसी एक बात ने तुम्हारे मुँह में कालिख लगाई। (२) कलंक लगाना, दोषी ठहराना।

[१४५७]

उसने इस विषय मे तुम्हारे ही मुँह में कालिख लगाई है।

काली माई खेलने लगना—डर से काँपना। मुझे देखते ही उसके सिर काली माई खेलने लगती है।

काली हाँडी सिर पर रखना या धरना—कलंक लेना। क्यों काली हाँडी अपने सिर पर रखते हो और सुधार वादी तो ऐसा नहीं करते वे तो सिर्फ कहते हैं।

काले कासों—बहुत दूर। ताते अब मरियत अपसोसन. मथुरा हूते गए सखीरी अब हरि काले कोसन।

काले कौवे खाना—बहुत उम्र तक जीवित रहना। उसने तो काले कौवे खाए हैं वह अभी कैसे मर सकता है।

काले तिल चबाना—(१) दुखी रहना। काले तिल चबाये हैं बेचारे छः महीने से खाट पर पड़ा है। (२) आधीनता या गुलामी में होना। ऐसे क्या मैंने तेरे काले तिल चबाये है जो मैं ही हर काम करता मरूँ।

कावा काटना—(१) चक्कर मे दौड़ाना। अभी कावा काट कर मैं आया जाता हूँ। (२) आँख बचा कर निकल जाना। अभी था और अभी कावा काट कर निकल गया।

किच किची बांधना—(१) क्रोध से दाँत काँपना। उन्हें इतना गुस्सा आया, किच किची बाँध रहे थे, या किच किची बँध गई। (२) दाँत पर दाँत रख कर खूब दबाना। किच किची बाँधे अभी दो टुकड़े हुआ।

किताब का कीड़ा—(१) मनुष्य जो हर समय किताब ही पढता रहे। वह तो परीक्षा के समय किताब का कीड़ा बन जाता है। (२) किताबी ज्ञान रखने वाला। हम तो किताब के कीड़े हैं बाहर की दुनिया में किसी चीज़ का क्या रूप है यह हमें ज्ञान नहीं, जो लिखा है वह जानते हैं।

किताबी चेहरा—बहुत सुंदर, काव्य वर्णित शक्ल। उनका चेहरा बिल्कुल किताबी चेहरा है, मैने ऐसी खूब सूरती कभी देखी नहीं।

किताबें चाटना—बहुत बड़ा विद्वान होना। ये दुनिया भर की किताबें चाटे बैठे हैं। जो पूछते हो यह तो मामूली बात है।

किधर आया किधर गया—(१) आने जाने की ख़बर होना। हम को क्या खबर मुनीम को पता होगा कि रुपया किधर आया किधर गया। (२) ख़बर न होना। हम तो चारपाई पर बेसुध पडे थे हमे क्या खबर किधर आया किधर गया।

किधर का चाँद निकला—अनहोनी बात होना, जिसकी

आशा न हो उसका मिलना। अच्छा आप आये हैं! आज किधर का चाँद निकला।

किधर जाऊँ क्या करूँ—कोई उपाय नहीं, क्या उपाय करूँ। छिपने को जगह नही देने को रुपये नही किधर जाऊँ क्या करूँ।

किनारा करना व कसना—दूर होना, छोड़ना। वह गवाही आदि कचहरी के कामों से हमेशा किनारा कसते हैं। यहाँ ठहरने का काम नहीं यहाँ से किनारा करो।

किनारे करना—दूर करना। इसे किनारे करो। यह काम नहीं कर सकता।

किनारे न जाना—दूर रहना। मै ऐसे काम के किनारे भी नहीं जाता।

किनारे न लगना—पास न फटकना। मौका आवेगा तो मै भी किनारे न लगूँगा।

किनारे बैठना—(१) अलग हो जाना। मै खुद ही कर लूँगा तुम किनारे बैठो। (२) मरने को तैयार होना। तुम अपने को बचाओ हम तो किनारे बैठे ही हैं।

किनारे लगना—समाप्त होना, मरना। वह तो [illegible] ही वार मे किनारे लगे अब तुम्हारी बारी है।

किनारे लगाना—खतम करना। जब हाथ मे लिया है तो किनारे पर लगाओ।

किनारे होना—छुट्टी पाना। हम तो इन कामों से किनारे हुए अब तुम्हारी तुम जानो।

किरकिरा हो जाना—काम बिगड़ जाना, आनन्द न आना। तुम्हारे बिना सारे नाटक का मज़ा किरकिरा हो जायगा।

किराया उतारना—भाड़ा दे देना। मैने छ महीने का किराया तो उतार दिया।

किलकारी मारना—खूब खुश होना। चले हनुमान मार किलकारी।

किला टूटना—मुश्किल आसान होना, असंभव संभव होना। तुमने अगर यह काम कर लिया तो समझो किला टूट गया (किला तोड़ देना भी चलता है)।

किल्ली ऐंठना वा घुमाना—युक्ति करना, तरकीब करना। मैं ऐसी किल्ली ऐठूँगा कि आप खुद ही मेरा काम करने को तैयार हो जायँगे।

किवाड़ तोड़ तोड़ कर खाना—दुख से दिन काटना। हुए गरीबी से इतने पाया, किवाड़ तोड़ कर खा रहे हैं।

किस खेत वा बाग का बथुआ वा मूली है—तुच्छ है, कुछ

कीमत नहीं, किसी गिनती में नहीं। मैं उसे क्या समझता हूँ वह किस खेत की मूली है।

किस दर्द या मर्ज की दवा है—क्या फायदा है, किस काम आ सकता है। अगर तुम काम ही न करोगे तो बताओ तुम किस मर्ज की दवा हो।

किस मुँह से—(१) कैसे, क्यों कर। हम जिन्दा क्यों रहें न वह हम से गर मिले, किस मुँह से हम कहें कि न वह उम्र भर मिले (२) किस शौक से, किस हौसले या अधिकार से। चाँद किस मुँह से तेरे मुँह के बराबर होगा।

किसी का हो रहना—(१) गुलाम बनना। क्यों हाथ पैर रहते किसी के हो रहे हो। (२) अनुसार चलना। किसी के हो रहे या किसी को कर रहे (कहावत)।

किसी की चमकना—वृद्धि होना, यश फैलना। आजकल तो तुम्हारी चमक रही है, हर एक के मुख पर तुम्हारा ही नाम है।

किसी की चलाना—किसी का ज़िकर करना। किसी की क्या चलाते हो अपनी तरफ तो देखो तुम में कितने गुण हैं?

किसी के देवता का कूँचकर जाना—होश हवास न रहना, बहुत डर से बोलने, करने लायक न होना। एक दम वारण्ट का नाम सुनते ही उनके देवता कूच कर गये।

किसी के बल पर कूदना—किसी की सहायता की आशा पर बढ बढ कर बातें करना। तुम जिस के बल पर कूदते हो वह मेरे खिलाफ कुछ नहीं कर सकता।

किसी के हक़ में काँटे बोना—किसी को हानि पहुँचाना। अगर तुम्हारा काम नहीं बनता था तो तुमने दूसरे के हक़ में काटे क्यों बोए, उसी का बनने देते।

किसी को उड़ाना—(१) स्त्री को फुसला कर ले भागना। मैं तो इसे मद्रास से उड़ाकर लाया हूँ। (२) धोखा देना। क्यों बेचारे को उड़ा रहे हो, गरीब है।

किसी चीज़ पर थूकना—चीज़ से घृणा करना, सरोकार न रखना। मुझे क्या जरूरत है मैं तो उस पर थूकूँ भी नहीं यह तो सिर्फ तुम्हारी वजह से ऐसा किया।

किसी जगह को सिर पर उठाना—बहुत शोर गुल करना। क्यों सारा मदरसा सिर पर उठा रखा है क्या कोई मास्टर नहीं है?

किसी पर छुरी तेज रहना या होना—(१) कमजोर को दण्ड देना। बस, उनसे तो वश नहीं चलता मुझ पर हर बात में छुरी

तेज रहती है, मुझे खाजाओ। (२) मारने को तैयार होना। कहिये किस के लिये छुरी तेज कर रहे हैं (कभी कभी दुरालोचक या मुकदमे बाज़ की कलम चलने पर भी कहते हैं)।

किसी पर जान, जाना, देना या मरना—(१) आशिक होना। हो गया मरना भी मुश्किल आप पर मर कर मुझे। (२) प्राणों से अधिक प्यार करना। जान देता हूँ नाम पर उसके।

किसी पर भूलना या भूल कर बैठना—सहायता पर घमड करना। वह वक्त पर आँख फेर लेता है, उस पर भूल कर बैठना मूर्खता है।

किसी बात वस्तु के लाले पड़ना—बहुत इच्छा होने पर भी न मिलना। यहाँ रोटियों के है लाले पड़े, जुबाँ पै हमारे हैं ताले पड़े।

किस्मत आजमाना—कोई काम शुरू करके यह देखना कि फली-भूत होते हैं या नहीं। मैं तो किस्मत आजमा रहा हूँ यों इस काम से क्या पूरा पड़ेगा।

किस्मत उलटना या बिगड़ना—भाग्य अच्छा न होना, कार्य में सफलता न मिलनी। किस्मत उलट गई तो हुआ क्या जनाब, कल थे तख़्त नशी आज माँगते फिरते।

किस्मत का लिखा पूरा होना—भाग्य में लिखा हुआ मिलना। ख़त लिखा मुझको तो उसमे नाम भी पूरा न था करूँ किस्मत का लिखा आज पूरा हो गया।

किस्मत जागना—भाग्य खुलना, समय अनुकूल होना। उनकी किस्मत जाग गई और व्यौपार मे लाभ ही लाभ होता गया।

किस्मत चमकना—भाग्य मे काय का बढते जाना। यश फैलना। किस्मत चमक गई वह राजा की पदवी पर जा पहुँचा।

किस्मत पलटना / किस्मत फिरना—प्रारब्ध का अच्छे से बुरा या बुरे से अच्छा होना। किस्मत फिरते देर नही लगती फिर देखो क्या होता है।

किस्मत फूटना—दिन बुरे आना, काम बिगड़ना। किस्मत फूट गई हैं करे क्या हर रोजगार मे घाटा दिखाई देता है।

किस्मत लड़ना—(१) भाग्य परीक्षा होना। बीस अर्जियें हैं किस्मत लड रही है देखे कौन जीते। (२) भाग्य खुलना। उनकी किस्मत लड़गई वे ऊँचे पदपर पहुँच गये।

किस्सा उठाना या खड़ा करना—झगड़ा शुरू करना। क्यों व्यर्थ

में किस्सा खड़ा करते हो जो हो गया बस हो गया, अब उसका क्या जिक्र करना।

किस्सा खतम करना, चुकाना, तमाम या पाक करना—(१) झगड़ा मिटाना। अजी! यह कहे उतने रुपये देकर किस्सा खतम करो। (२) किसी वस्तु या विषय को समूल नष्ट करना। जाने भी दो किस्सा तमाम करो अब और कोई बात कहो।

किस्सा खतम होना, चुकना, तमाम या पाक होना—(१) झगड़ा मिटना। (२) किसी बात या विषय का समूल नष्ट होना।

किस्सा मोल लेना—आफत या झगड़ा सिर पर लेना। क्यों व्यर्थ मे किस्सा मोल लेते हो यह जाने इसका काम जाने तुम्हें इससे क्या?

कीचड़ में फँसना—संकट या कठिनाई मे पड़ना। क्या करे हम तो उसके साथ दुकान खोलकर कीचड़ मे फँस गये। रुपया भी फँसा पड़ा है और दुकानदारी भी मिट्टी हो रही है।

कीड़े काटना—बेचैनी या जी उकताना। दमभर बैठे नहीं कि कीड़े काटने लगे।

कीड़े पड़ना—बुरा फल मिलना। यदि इन मूक पशुओं का हनन करेगा तो तेरे सारे शरीर मे कीड़े पड़ेंगे।

कीमत ठहराना, चुकाना—मूल्य निश्चित करना। कीमत ठहरालो रुपये मै दे दूँगा।

कील काँटे से दुरुस्त होना—तैयार होना। कील काँटे से दुरुस्त होकर वह जल्लाद आया।

कील जड़ना—भूत पिशाचों को मन्त्र से भगाना। कुछ दिन हुये इस मकान मे एक बुढिया आगई थी जो कील जड़ा करती थी।

कुआँ खोदना—(१) दूसरे की बुराई का सामान होना। जो दूसरों के लिये कुआँ खोदता है उसके लिए खाई तैयार रहती है। (२) जीविका के लिये कठिन परिश्रम करना। हम तो रोज कुआँ खोदते हैं और रोज पानी पीते है।

कुआँ चलाना—कुएँ के पानी से खेत सींचना। अब की बार वर्षा नहीं हुई है, इससे अब तो कुआँ चलाना पड़ेगा।

कुआँ या कुएँ झाँकना—कोशिश मे इधर उधर भाग दौड़ करना। जरा सा काम समझते हो, मुझे इसके लिये बहुत कुएँ झाँकने पड़े हैं।

कुआँ फुँकाना—कष्ट देना। उस गरीब मजदूर की मजदूरी चुका

क्यों नहीं देते, क्यों व्यर्थ के लिये कुआँ झँकाते हो।

कुआँ झाँकना—परेशान होना। जब हमसे ऐसा ही मुकदमा लगा था तो हम भी कुआँ झाँकते फिरे थे।

कुआँ टूटना—कुएँ में पानी कम रह जाना। पानी बहुत खींचा जाता है इस लिये कुआँ टूट गया है, बरसात मे फिर पानी आजायगा।

कुएँ की मिट्टी कुएँ में लगना—जहाँ कमाना वहीं गँवाना। क्या कहते हो, एक पैसा भी नहीं बचता कुएँ की मिट्टी कुएँ मे ही लग जाती है।

कुएँ पर से प्यासे आना—जहाँ किसी वस्तु की प्राप्ति का स्थान हो वहाँ से निराश होना। धनवान के यहाँ से बिना रुपये आना कुएँ पर से प्यासे आना है।

कुएँ में गिरना—आफत मे फँसना। जो जान बूझकर कुएँ मे गिरता है उसे भला कोई कब तक बचा सकता है।

कुएँ में फेंकना—(१) टाल देना। जाने देना। रुपये का इन्तजाम तो हो नहीं सकता जब तो यह बात कुएँ मे फेकनी पड़ेगी।

कुएँ में बाँस डालना—बहुत ढूँढ खोज करना। तुम्हारे लिये तो कुओं में बाँस डलवा दिये गये, आखिर आप थे कहाँ ?

कुएँ में भाँग पड़ना—समूह का समूह उन्मत्त होना, सब की बुद्धि मारी जाना। कुएँ ही मे यहाँ भाँग पड़ी है, क्यों नही सारा जमाना मूर्ख हो।

कुएँ में डालना—जन्म नष्ट करना। ऐसी जगह लड़की देकर तुमने उसे कुएँ में डाल दी।

कुएँ में से बोलना—बहुत धीरे से बोलना। तुम क्या कुएँ में से बोल रहे हो मै तो सुन भी नहीं पाता।

कुछ और गाना—प्रश्न कुछ और उत्तर कुछ और ही। हम कुछ पूछते हैं तुम कुछ और गाते हो।

कुछ एक—थोड़े से। कुछ एक आदमी विरुद्ध हैं बाकी सब पक्ष में हैं।

कुछ ऐसा—विलक्षण। कुछ ऐसा होगया है अब कोई किसी का विश्वास ही नही करता।

कुछ ऐसा वैसा—असाधारण। वह कुछ ऐसा वैसा आदमी नहीं है, घर का सेठ है।

कुछ का कुछ—उलटा, और का और। तुम कुछ का कुछ समझते हो मेरा मतलब यह नही था।

कुछ कहना—बुरा भला कहना, गाली देना। तुम से कुछ कहा भी है या योंही नाराज हो रहे हो।

[१५३८]

कुछ न चलना—अधिकार से बाहर की बात, वश न चलना। लाख किया पर कुछ न चला।

कुछ लगाना—खुद को श्रेष्ठ समझना। वह न कुछ अधिक विद्यावान है और न ऐसा धनवान ही इस पर भी अपने को कुछ लगाता है।

कुछ से कुछ हो जाना—बड़ा भारी उलट फेर या परिवर्तन होना। इस दवाई को खाकर छः महीने में ही शरीर कुछ से कुछ होगया।

कुछ हो रहना – किसी योग्य हो जाना। बचपन मे ही व्यापार मे डाल दिया तो अब कुछ हो ही रहा।

कुञरो धा नरो धा—अनिश्चित, दुविधा मे, संदेह होना। सो हौ सुमिरत नाम सुधारस पेखत परसि धरो, स्वारथ हू परमारथ हू को नहिं कुञरो नरो।

कुट करना—मित्रता न रखना। हम जानते हैं आपने उनसे कुट करली है।

कुठला होना—मोटा ताजा होना अरे! कुछ काम न करेगा कि हराम का खाकर कुठला होता जायगा।

कुठाँव मारना—(१) शरीर के मर्म स्थानों, नाजुक जगहों पर मारना। तुम लड़कों को बड़े कुठाँव मारते हो। (२) बुरे स्थान पर लेजाकर मारना। तुम्हे ऐसे कुठाँव लेजाकर मारे जहाँ पानी भी न मिले और आवाज कोई सुने नहीं।

कुठारी करना—पिघलाना। इस सोने को कुठारी कर लीजिये, तब असली और नकली का पता चलेगा।

कुण्डी खटखटाना—(१) दरवाजे की साँकल हिलाना। (२) बहुत बार किसी से मिलने जाना। जनाब सिफारिश के लिये कितनों ही की कुण्डी खट खटानी पड़ी, तब काम बना। (३) माँगते फिरना। कुण्डियें खटखटाता फिरता है अब कोई मित्र बोलता तक नहीं।

कुत्ता काटना—(१) पागल होना। (२) मूर्खता के काम करना। मालूम होता है तुम्हे कुत्ते ने काटा है, जो ऐसा करने चले हो। (३) बड़ी भारी आवश्यकता होना। ऐसा क्या कुत्ते ने काटा है जो तीन पैसे की चीज़ के तीन आने दूँ।

कुत्ते का दिमाग़ या भेजा होना—बहुत बकना, हर वक्त बोलते रहना। वह कभी चुप कैसे हो सकता है, उसका तो कुत्ते का दिमाग़ है।

कुत्ते की मौत मरना या मारना—बुरी तरह चिल्ला चिल्ला कर

मरना या दुखीकर मारना। मेरा शाप है तुम कुत्ते की मौत मरोगे।

कुत्ते की दुम—अपना टेढ़ा स्वभाव न छोड़ना। तुम कभी समझाने से नहीं मान सकते कुत्ते की दुम सात बरस नली में रही तब भी सीधी न हुई।

कुनबा जोड़ना—नाते रिश्ते के मित्र आदि को इकट्ठा करना। कहीं की ईंट कही का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा (कहावत)।

कुन्दन सा दमकना—स्वच्छ सोने की तरह चमकना। जनाब उसका रग कुंदन सा दमकता है।

कुन्दन हो जाना—निखर जाना। अब उसका चाल चलन कुन्दन हो गया है।

कुन्दन होना—निमल होना। आदमी बड़ा कुन्दन है उसमें राग द्वेष कुछ नहीं।

कुप्पा सा मुँह करना—मुँह फुलाना, रूठ कर बोल-चाल बद करना। तुमने कुप्पा सा मुँह क्यों कर लिया, तुम्हें तो मैने कुछ कहा नहीं।

कुप्पा होना या हो जाना—(१) रूठना। (२) नाराज होकर मुँह फुलाना। (३) बहुत आनन्दित होना। जिस समय वह सुनेगा फूलकर कुप्पा हो जायगा। (४) सूजना, फूल जाना। भिड़ के काटने से उसका मुँह कुप्पा हो गया। (५) मोटा होना। वह दो महीने मे ही पहाड़ पर कुप्पा हो गया।

कुम्हड़े की बतिया—अशक्त, निर्बल मनुष्य। इहाँ कुम्हड़ बतिया कोऊ नाहीं जो तर्जनि देखत मर जाहीं।

कुरबान करना—न्यौछावर करना। मैंने मन कर दिया कुरबान तुम्हारी शकल पै आज।

कुरबान जाना—बलि वलि जाना। अदा पर आप की कुरबान जाते हैं हम सौ वार।

कुरबान होना—(१) बलि बलि जाना। (२) मरना। चित्तौड़ पर हजारों कुरबान हो गये।

कुरान उठाना—क़सम खाना। यदि अदालत में गवाही दोगे तो कुरान उठानी पड़ेगी।

कुर्सी देना—इज्जत देना। बड़े बड़े हाकिम लोग उन्हें कुर्सी देते हैं।

कुल उछालना—वश को बदनाम करना। तुमने खूब अपना कुल उछाला, दुनिया तुम्हारे सारे कुटुम्ब का नाम बखानती है।

कुल बखानना—(१) सब का नाम लेकर गाली देना। बड़ी लड़ाकी है जरा देर मे कुल बखानने लगती है। (२) नाम बखानना। (३) वश विरदावलि वर्णन करना।

कुलांच मारना भरना या लेना—(१) बहुत दूर दूर तक पहुँचना। वह तो बड़े बड़े हाकिमों तक कुलाँच भरता है। (२) चौकड़ी भरना। लेत कुलाँच लखौ तुम अबही, धरत पाँव धरती पर जबही।

कुल्हियाँ में गुड़ फोड़ना या पकाना—(१) कोई काम इस तरह करना जिसकी किसी को खबर भी न हो। मैं इस जगह कुल्हिया में गुड़ फोड़ता हूँ, न यहाँ पुलिस है न कोई और झंझट (२) बडे काम को थोड़े से आदमियों से कराना। भला तुम कुल्हिया मे गुड़ फोडना चाहते हो पाँच आदमी पचास का काम किस तरह कर सकते हैं ?

कुश्ती खाना—कुश्ती में हार जाना। मैंने आज तक सब को हराया है। खुद कोई कुश्ती नहीं खाई।

कुश्ती मारना—कुश्ती मे जीतना। जितनी कुश्तिये बदी हैं सब कुश्तियें मारी हैं।

कुहराम डालना, पड़ना या मचना—वावैला या रोना पीटना। महाराज के मरते ही सारे देश में कुहराम मच गया।

कूँच करना—(१) चलने को तैयार होना। शेर को देखते ही मेरे प्राण तो कूँच कर गये। (२) चल देना, चले जना। तुम्हें देखते ही वह यहाँ से कूँच कर गये।

कूँची फेरना—चूने से पोतना। इसे पोत कर बाहर दरवाज़े पर कूँची फेर देना।

कूट कूट कर भरना—खूब अच्छी तरह, ठसा ठस भरना। उसे भोला मत समझो उसमे कूट कूट कर चालाकी भरी हुई है।

कूट पीस कर पेट पालना, पोसना—जैसे तैसे कठिन परिश्रम के कार्य कर के निर्वाह करना। बेटा! तुम्हे तुम्हारे पिता छः बरस का छोड़ कर मरे थे, मैंने कूट पीस कर पेट पाला है, अब तुम्हारी जरा आशा है।

कूड़ा करकट समझना—व्यर्थ समझना। मेरी वस्तुओं को तुम कूड़ा करकट समझते हो पता है इनमे पैसे लगे हैं।

कूम्हल देना—सेंध लगाना। कल रात को हमारे पड़ोस के मकान में ही चोरों ने कूम्हल दे दिया।

कूला मटकाना—नाज़ करना। रंडियाँ नाचते समय बड़ा कूला मटकाती हैं।

कैंची करना—कतरना। दिल्ली मे सारे नोट किसी ने जेब मे कैंची कर लिये।

कैंची काटना—(१) कह कर मुकर जाना। तुम वक्त पर कैंची काट

जाते हो लेकिन मैं जो वायदा करूँगा मरते दम पूरा करूँगा। (२) निगाह बचा कर निकल जाना। वो तो मैंने देख लिया वरना तुम कैंची काट कर निकल रहे थे।

कैंची लगाना—(१) काटना, छाँटना। (२) सिर के बाल काटना। (३) दो सीधी चीजों को कैंची की तरह टेढी तिरछी रखना।

कैद काटना, भरना—जेल मे दिन बिताना। डाकू ने ७ बरस की कैद काटी।

कैद लगाना—(१) सीमा बाँधना। तुमने अधिक न देने की जो कैद लगादी उससे मेरा कुछ बच गया। (२) शर्त लगाना। विवाह में उम्र की कैद लगादी है, यह अच्छा है।

कैफियत तलब करना—विवरण माँगना, कारण पूछना। बात बात मे आप कैफियत तलब करते हैं, मै इतना तो बेईमान नहीं।

कोई एक या कोई सा—जो चाहे सो एक। कोई एक तुम ले लो सारे नही।

कोई कहीं समझे कोई कहीं समझे—मुझे उन्होंने अपने घर ठहराया मेरे होटल के रुपये बचे, मैंने उनके बच्चों को दो रुपये दे दिये, कोई कहीं समझे कोई कहीं समझे।

कोई दम का मेहमान होगा—थोड़ी देर में मरजाने वाला। बुड्ढे मिया तो अब कोई दम के मेहमान हैं, फिर हमारा ही राज है।

कोई न कोई—एक नहीं तो दूसरा, यह न सही वह। हमारे जाल में तो कोई न कोई फँसेगा ही।

कोई बात भी हो, यह भी कोई बात है—कुछ बात नहीं है। कोई बात भी हो जो बताऊँ ?

कोख उजड़ना—(१) पुत्र मरजाना। एक था वह जाता रहा मेरी तो कोख उजड़ ही गई। (२) गर्भ गिर जाना। उनकी कोख सात बार उजड़ चुकी है।

कोख की आँच—(१) संतान की इच्छा (२) संतान का प्रेम। (३) सतान का वियोग। कोख की आँच बहुत बुरी (बहुत अधिक) होती है।

कोख खुलना—संतान होना। चौदह बरस व्याह को हुए अब कहीं आकर कोख खुली है।

कोख मारी जाना—बाँझ बनना। उस स्त्री की तो कोख मारी गई है, अभी तक एक भी बच्चा नहीं हुआ।

कोख लगना या सटना—भूख या और किसी कारण से पेट अदर धँसना। पति ने छः दिन से खाना

नही दिया है बेचारी की कोख लग गई है।

कोठा बिगड़ना—(१) अपच रोग होना। मुझे हज़म नही होता कोठा बिगड गया है। (२) गर्भाशय मे रोग होना। सतान कहाँ से हो बिचारी का कोठा बिगड़ गया है।

कोठा साफ होना—(१) हृदय मे कोई बुरा विचार न होना। उसका कोठा आप की तरफ से बिल्कुल साफ है। (२) साफ दस्त होने के बाद पेट हलका होना। आज दवाई खाई तो कोठा साफ हो गया।

कोठी उतारना, बैठाना, डालना या गलाना—कुँए या पुल के खंभे मे जमघट या गोले के ऊपर की जोड़ाई को नीचे उतारना। कुएँ में छः फुट कोठी उतार दी गई है बस ठीक है।

कोठी करना या खोलना—लेन देन का काम शुरू करना, आढत की दुकान खोलना। उनकी कपड़े की कोठी है उनके द्वारा कपड़ा मँगवाइये सस्ता और अच्छा मिलेगा।

कोठी बैठना—दिवालिया बनना। न मालूम क्या बात है, इस साल में तो बड़े बड़े सेठों की कोठी बैठी है।

कोठे पर बैठना—वेश्या बनना। जब बाल विधवाओं को समाज ठुकरा देता है, तब वे कोठे पर बैठ जाती हैं।

कोड़ा फटकारना—चाबुक मारना, या चाबुक से आवाज निकालना।

कोढ़ की खाज या कोढ़ में खाज—एक दुख में दूसरा दुख और आ जाना। एक तो नौकरी छूटी दूसरे घर भर बीमार पडा है इस कोढ़ की खाज का क्या इलाज।

कोथला भरना—खूब भोजन करना (व्यग्य) कोथला भरलो फिर जाने भोजन मिले या नही।

कोदो दलना—तुच्छ और बहुत परिश्रम का काम करना। तीन पैसे धड़ी और वह भी कोदो दलना, इस जीवन से मरना भला।

कोदो दलना—(छाती पर) किसी को दिखा कर उसे जलाने के काम करना। मै भी यह चहाता हूँ कि उसी के घर रहूँ और फिर उसी की छाती पर कोदों दलूँ। (आज कल छाती पर मूग दलना अधिक प्रचलित है)।

कोदों देकर पढ़ना या सीखना—वेढंगी शिक्षा पाना। हम तो कोदों देकर पढे हैं समझो हमे क्या पढ़ना आता है।

कोना झाँकना—बगले झाँकना, मौका आने पर किसी बात को प्रकट करने से मन चुराना या

छिपना चाहना। कहते थे मुझे मिल जाय तो मै उसे बड़ा लताड़ूँ अब जब वह आया तो साफ बात कहने मे भी कोना झाँकने लगे।

कोना दबाना—दबाव या वश मे होना। इन दिनों वह मेरी गवाही दे देगा क्योंकि उसका कोना दब रहा है, अगर न कहेगा तो मैं उसके रुपये न दूँगा।

कोयलों पर छाप या मोहर लगना, पड़ना—सिर्फ छोटे छोटे खर्चों में मीन मेख निकालना, या कंजूसी करना। अमीरों के बड़े खर्चे तो नही कम होते और कोयलों पर मुहर लगती है।

कोर दबाना—कुछ हिस्सा क़ाबू मे करना। मैंने कुछ रुपये अभी नहीं दिये हैं, क्योंकि कोर दबी रहेगी तो बाक़ी काम अच्छी तरह कर देगा वरना बेगार टालेगा।

कोरम कोर चपाल सौ—बिल्कुल बुद्धू। ये कहाँ के बुद्धिमान हैं यह भी कोरम कोर चपाल सौ ही हैं।

कोरा जवाब—नाहीं कर देना। मैने रुपये माँगे थे लेकिन उसने कोरा जवाब दे दिया।

कोरा बचना—सूखा बचना। भाई होली में हमारे तो सब कपड़े खराब हो गये तुम कैसे कोरे बच आये।

कोरा रखना, रहना—(१) बिल्कुल कुछ न सिखाना। दर्जी की दुकान पर छः महीने बैठाया लेकिन उसने बिल्कुल कोरा रखा, पजामा भी नहीं काट सकता था। (२) मूर्ख होना। इतने बरस उस जैसे चालाक के पास रह कर भी कोरे ही रहे। (३) कुछ लाभ न होना। लखपती के घर रह कर भी कोरे ही रहे।

कोरा लौटना—असफल या बिना लिये ही वापिस आना। हमको यह आशा न थी कि तुम कोरे ही लौटोगे, हम समझते थे तुम तो लेकर ही आओगे।

कोरी सुनना—गाली देना। उसने कहा जो मेरी बुराई करेगा, उसे मै भी कोरी सुनाये बिना न रहूँगी।

कोपल फूटना—अंकुर निकल आना। बसन्त मे सभी वृक्षों पर नई नई कोपल फूटती हैं।

कोरे उस्तरे से मूँड़ना—(१) फौरन धार रखाये हुए उस्तरे से मूँडना। (२) बिना पानी लगाए मूँडना। (३) खूब लूटना, खूब मूर्ख बना कर मतलब गाँठना। तुम तो लोगों को कोरे उस्तरे से मूँडते हो।

कोल्हू का बैल—(१) बहुत परिश्रमी। वह तो साहब कोल्हू का बैल है काम मे लग गया तो फिर

एक मिनट नहीं चैन से बैठना। (२) काला चश्मा या अँधौटा लगाना। क्यों कोल्हू के बैल बनते हो आँख दुखती है तो बाहर ही न निकलो।

कोल्हू में डालकर पेरना—अत्यंत दुख देना, बहुत दुख दे दे कर जान लेना। पहिले राज दण्ड मे जैसे कोल्हू में डालकर पेर देते थे, बस यही हाल हमारा मालिक करता है दम लेने को भी तो मौका नहीं देता।

कोसना पानी पी पीकर—बहुत देर तक ठहर ठहर कर और अधिक बुरा कहना। तुम तो पानी पी पीकर कोसती हो चलो गुस्से मे कह दिया सो कुछ नही, गाली देने देते पेट ही नहीं भरता।

कोसों या काले कोसों—बहुत दूर। बेचारी लड़की को काले कोसों फेंक दिया है कभी आ भी न सकेगी।

कोसों दूर रहना—(१) पास न होना, आना। वह मेरे से कोसों दूर रहता है, मिलना तो नाम किसका। (२) पास न जाना। बुरों से मै कोसों दूर रहता हूँ। (३) बचकर रहना, अलग होना, न करना। वह छल कपट की बातों से कोसों दूर रहता है।

कोहनी मारना—ढकेलना। अरे भाई कोहनी क्यों मारते हो हम तो वैसे ही यहाँ से चले जायेंगे।

कौड़ी का
कौड़ी या दो कौड़ी का
कौड़ी काम का नहीं
—(१) किसी भी दाम अच्छा न होना। ये रुपया दो कौडी का भी नहीं। क्या कहूँ ये बर्तन कौड़ी काम का नही। (२) निकृष्ट। यह आदमी कौड़ी का भी नही है।

कौड़ी का कर डालना—(१) खराब कर देना। पच्चीस रुपये के शाल को बुरी तरह बर्त कर कौड़ी का कर डाला। (२) इज्जत खराब करना। मैंने उसे सरे बाजार कौडी का कर डाला।

कौड़ी का बल न पड़ना—जरा भी हिसाब न छूटना। बड़े मुनीम जी से कौड़ी का भी बल नहीं पड़ता।

कौड़ी के तीन तीन होना—(१) खूब सस्ते होना। बाजार में जाओ तो मालुम हो कौड़ी के तीन तीन हो रहे हैं (२) बेकदर होना। वे अपनी करनी से कौड़ी के तीन तीन हो रहे हैं।

कौड़ी को न पूछना—(१) मुफ्त भी न लेना। मै इसे रुपये छोड़ कौड़ी को भी न पूछूँ, (२) बिल्कुल तुच्छ समझना। वहाँ तुम्हें कोई कौड़ी को भी न पूछेगा।

कौड़ी कोस दौड़ना—थोड़ी प्राप्ति के बदले बहुत दूर दूर तक जाना, कठिन परिश्रम करना, आजकल बेचारे का यह हाल है कि आप उसे कौड़ी कोस दौड़ा लो।

कौड़ी कौड़ी अदा करना, भरना, चुकाना—सारा कर्ज़ा दे देना, मैंने उसकी कौड़ी कौड़ी चुका दी है।

कौड़ी कौड़ी का मुहताज होना—रुपये पैसे से बिल्कुल खाली होना। उससे तुम्हें क्या सहायता मिलेगी, वह तो स्वय कौड़ी कौड़ी को मुहताज है।

कौड़ी कौड़ी जोड़ना—बड़ी मेहनत से रुपया इकट्ठा करना, बहुत थोड़ा थोडा रुपया इकट्ठा करना, कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी कर कर बातें छल की, भारी बोझ धरा सिर ऊपर केहि बिधि होवे हलकी।

कौड़ी कौड़ी भर पाना—कुछ भी बाकी न रहना। मैंने तो कौड़ी कौड़ी भर पायी, अब तुम्हारे रुपये बाकी बच गये हैं।

कौड़ी कौड़ी लेना—(१) अपना एक पैसा भी न छोड़ना। मै कौड़ी कौड़ी ले लूँगा क्यों छोड़ूँ ? (२) दूसरे का सारा धन ले लेना। उसके पास जो कुछ था निर्दयी ने कौड़ी कौड़ी ले लिया।

कौड़ी पास न होना—गरीबी होना, हाथ तंग होना। मेरे पास कौड़ी भी नहीं है क्या दूँ ?

कौड़ी फिरना—जुए मे किसी का दाव पड़ने लगना। अब मेरी कौड़ी फिरी है देखो क्या रंग लाती है।

कौन किसका होता है—कोई किसी की सहायता नहीं करता। सब कहने की बाते हैं विपत्ति मे कौन किसका होता है।

कौन होना—(१) कुछ अधिकार न होना। वह कौन होता है जो आज्ञा दे, मै उसके बाप की भी नहीं मान सकता। (२) कोई सबन्ध या रिश्ता न होना। तुम हमारे होते कौन हो जो तुम्हें अपने घर खाना खिलाते। (३) होत हैं कौन वे मेरी भटू जिन के सग फेरी हैं भाँवरियाँ।

कौर छीनना—देखते देखते किसी का भाग दबा बैठना। इतना चालाक है मुँह का कौर तक छीन सकता है।

कौरे लगना—(१) रूठकर कोने में खड़ा होना। जरा सी बात में ही काम छोड़कर कौरे जा लगती हो। (२) कोने में छिपकर सुनना। मन जिनि सुनै बात यह माई, कौरे लाग्यो होइगो कितहूँ कोई माई।

कौलका पूरा, पक्का या धनी—

[१६४२]

बात पर मर मिटने वाला, सच्चा। वह अपने कौल का पूरा है यदि तुम से कुछ भी कह दिया है तो करेगा भी जरूर।

कौल तोड़ना—वायदा पूरा न करना। देखो कह कर भी समय पर न पहुँचे कौल तोड़ ही दिया।

कौल पर जमना—बात कह कर उससे न हटना। कौल पर अपने जमी रही मैं, हुई न डाँवाडोल कभी मै।

कौल से फिरना—देखो कौल तोड़ना।

कौली भरना—प्रेम से मिलना। भाई को देखते ही तुरन्त श्याम कोली भर कर मिला।

कौवा उड़ानी—नीच स्त्री। क्या तुम्हें और कोई स्त्री न मिली जो इस कौवा उडानी से शादी करली।

कौवा गुहार मे पड़ना या फँसना—(१) बहुत शोर गुल के बीच में होना। हम तो वहाँ भीड़ में कौवा गुहार में पड़ गये आपकी आवाज़ सुनाई न पड़ी। (२) व्यर्थ झगडे में पड़ना। मै पहिले से जानता तो इस कौवा गुहार में न फँसता।

कौवे उड़ाना—व्यर्थ का कार्य करना, कुछ काम न होना। वहाँ बैठे बैठे कौए उड़ाया करो और क्या काम है।

क्या उखाड़ना—कुछ न कर सकना। मै न भी दूँगा तो मेरा क्या उखाड लेगा?

क्या कहना है! (१) खूब किया, धन्य। बहुत अच्छे क्या कहना! (२) (व्यग्य में) कुछ नहीं। तुम्हारे क्या कहने हैं तुम तो माने हुए विद्वान हो!

क्या कुछ—सब कुछ। मैंने क्या कुछ सहायता नही की परन्तु वह तो कृतघ्न है।

क्या किया—ठीक न किया है। यह क्या किया, क्या तुम्हें यह उचित था?

क्या क्या न किया—बहुत सहायता की, कुछ कमी न की। मैंने तुम्हारे लिये क्या क्या नहीं किया।

क्या खूब—बहुत अच्छे। क्या खूब तुम भी मूर्ख हो।

क्या चीज़ है—ना चीज़ है, तुच्छ है। वह मेरे सामने क्या चीज़ है!

क्या जाता है?—कुछ हानि नहीं। उनका क्या जाता है दोनों अदालत जायँगे तो उन्हीं दोनों की हानि है।

क्या जाने?—कुछ नहीं जानता। वह क्या जाने इन बातों को यह व्यापार की बाते हैं।

क्या पड़ी है—कुछ जरूरत नहीं। तुम्हें क्या पड़ी है जो दूसरों के लिये दौड़े दौड़े फिरते हो।

क्या पूछना है?—(१) बहुत

[१६६०]

अच्छा हुआ। बड़ा मज़ा आया क्या पूछते हो लोट पोट हो जाओगे। (२) देखो क्या कहना है।

क्या मुँह दिखाओगे—शर्मिन्दा होना पड़ेगा, क्या जवाब दोगे। शेखी मारते थे अब एक काम भी पूरा न कर सके उन्हें क्या मुँह दिखाओगे ?

क्या समझना—कुछ न समझना। मै उसे क्या समझता हूँ यह तो तुम्हारी वजह से दे दिया है।

क्या हुआ—कुछ परवाह नहीं, कुछ हानि नहीं। दो थप्पड़ भी लगा दिये तो क्या हुआ साहब होगा अपने घर का।

क्यों कर—कैसे नही। मै यहाँ उजाड़ मे क्यों कर रह सकता हूँ ?

क्यों नहीं—(१) ऐसा ही है। क्यों नहीं तुम जो कहोगे वही होगा। (२)—हाँ, जरूर। प्रश्न—तुम वहाँ जाओगे। उत्तर—क्यों नहीं ? (३) ऐसा नही है (व्यंग्य) क्यों नहीं तुम तो पुरोहित हो। (४) ऐसा नहीं कर सकता (व्यंग्य) क्यों नहीं तुम तो पहाड़ लाँघ सकते हो !

क्यों न हो—(१) तुम्हारे जैसे पुरुष से यही आशा थी। क्यों न हो आप वीर हैं आपको यही शोभा देता है। (२) छिः (व्यंग्य) क्यों न हो ब्रह्मचारी क्या संसार से दूर हैं जो यह स्त्रियों की बड़ाई न करें ?

क्रम क्रम करके, से—धीरे धीरे। जो कोउ दूर चलन को करै, क्रम क्रम करि महि में पग धरै।

—:o—

ख

खंगर लगना—दुर्बलता का रोग लगना। तुम्हे ऐसा क्या खगर लग गया है जब देखता हूँ पहिले से अधिक सूखा और कमजोर पाता हूँ।

खंगाल डालना—गुप्त रीति से मार डालना। सुनते हैं कि पुलिस ने भगतसिंह को खगाल डाल दिया था।

खचाखच भरना या कसना—ठसाठस भरना, पूरा होना। कमरा आदमियों से खचाखच भर गया है।

खटपाटी लेना या लगना—जिद या गुस्सा से रूठ कर खाटपर जा पड़ना। कैकेयी खटपाटी लिये पड़ी थी, दशरथ ने जब यह देखा···।

खट राग फैलाना—तूलकलाम करना, आडम्बर या झझट बढाना। इतने खटराग फैलाने की क्या जरूरत है सादा तरीका पर ही काम हो जायगा।

खट से दे देना—फौरन। उन्होंने कहते ही खट से रुपये निकाल कर दे दिये।

[१६७२]

खटाई में डालना—किसी कार्य को योंही पड़ा रहने देना कोई निश्चय न करना। पेशकार को रिश्वत न मिली बस उसने जज तक कागजात ही न पहुँचने दिये सारा मामला खटाई में डाल दिया।

खटाई में पड़ना—दुविधा या अनिश्चित दशा में होना। महाराज के विलायत से लौटने तक तो मामला खटाई मे पडा ही समझिये।

खटिया निकलना—मर जाना। यह तो ऐसी अशुभ घड़ी मे बीमार पड़ा कि खटिया ही घर से निकली।

खटिया लेना—बीमारी के कारण खाट पर पड़े रहना। बस उस दिन से जो तबियत खराब हुई है आज तक बेचारे खटिया ही से रहे हैं।

खट्टा जी होना दिल फिर जाना, किसी की ओर से मन मे अविश्वास या घृणा आना। उस दिन की चालबाजी से हमारा जी खट्टा हो गया है, ऐसे आदमी का यक़ीन नही।

खट्टा मीठा जी होना—जीभ में पानी भर आना, जी ललचाना। पकवानों की सुगन्धि से जी खट्टा मीठा हो गया।

खट्टे मीठे दिन—बुरे भले दिन, दुख सुख। बड़े बड़े महाराजों को भी खट्टे मीठे सभी तरह के दिन बिताने पड़ते हैं, हमारी गिनती ही क्या है!

खट्टे होना—अप्रसन्न होना। आज कल वे हमसे नही बोलते खट्टे हो रहे है।

खड़ा जवाब देना—फौरन इन्कार, सुनते ही मना कर देना। मैंने ज्योंही जिक्र किया उसने खड़ा जवाब दे दिया।

खड़ा पड़ा पीटना—हर दशा में शोक से रोते रहना। वह तो खड़ा क्या और पडा क्या दिन रात पीटता रहता है। (पिट्टना बना रहता है दिल्ली की औरतों मे प्रचलित)।

खड़ा रहना—प्रतीक्षा में रहना, बाट जोहना। भली मित्रता है जिस समय देखो उसके लिये दरवाजे पर ही खड़ा रहता है।

खड़ा होना—सहायता देना। मदद करना। कोई किसी की विपत्ति मे नहीं खड़ा होता।

खड़िया में कोयला—बेमेल बात, अच्छे के साथ बुरे का सयोग। और सब बात अच्छी हैं जरा जिद्दीपन ही खड़िया में कोयला है।

खड़ी पछाड़ें खाना—क्रोध या शोक से पृथ्वी पर गिर पड़ना। बेचारी सुनते ही खड़ी पछाड़ें खाने लगी।

खड़े खड़े करना, होना—(१) खड़े हुए। खड़े खड़े पानी मत पियो। (२) फौरन, झटपट। यों खड़े खड़े कोई काम नहीं होता।

खड़े खड़े फिरना—चिन्तित या घबराये हुए घूमना या फौरन लौटना। हलाँकि मै कलकत्ते बड़े ज़रूरी काम से गया था लेकिन यह तार पाते ही मै खड़े खड़े फिरा हूँ।

खड़े खड़े या खड़े पाँव—(२) खड़े हुए। (१) फौरन, झटपट। (३) चणभर के लिये। जरा खड़े खड़े मेरी भी बात सुन जाओ (४) बे-रुके। मै खड़े पाँव चला आया हूँ। (५) थोड़ी देर के लिये। खड़े पाँव वहाँ हो आओ फिर यहाँ भी तो काम है।

ख़त आना या निकलना—(१) रेख निकलना (२) डाढ़ी वगैरा के बाल निकलना। अब तो उसके खत आ [illegible] अब बच्चा नहीं है।

ख़त बनाना—(१) कलम काटना, कान के बराबर बालो को उस्तरे से मूँड़ना। मै जरा नीचा ख़त बनाऊँगा, आपकी सूरत पै बड़ा खिलेगा। (२) माथे के ऊपरी भाग के बालों को उस्तरे से बराबर करना।

ख़तम करना—मार डालना। एक को तो वही खतम कर डाला है, एक बचा है वह भी बुरी तरह घायल है।

ख़तम होना—प्राण निकल जाना, मर जाना। वे तो खतम हो गये, दस दिन हुए।

खतरा दूर करना—आपत्ति को दूर करना। थोड़ी देर बाद कुछ शिकारियों ने जंगल मे आकर सब खतरा दूर कर दिया।

ख़ता खाना—(१) धोखे में पड़ना, धोखे मे नुकसान उठाना। रात में जाओगे तो ख़ता खाओगे। रास्ता खराब है। (२) गलती करना। याद था ऐन मौके पर ख़ता खा गया।

खदशा में डालना—सोच मे डालना। इन्होंने तो कल हमे झूठा समाचार सुनाकर ही खदशा में डाल दिया।

खपा देना या डालना—(१) जान देना। उसने अपने को इसके लिये खपा ही तो दिया। (२) लगा देना। पंडित जी ने सारी उम्र देश के लिये ही खपा डाली। (३) मार डालना। इसे किसी झुरमुट मे लेजाकर खपा दो। (४) लगा देना। तुमने सारा का सारा इसी मे खपा दिया।

खप्पर भरना—खप्पर में मदिरा भर कर देवी पर चढ़ाना। यह

काम हो जाय तो मै देवी का खप्पर भरूँ ।

ख़बर उड़ना—अफ़वाह होना, खबर फैलना । उनके पकड़े जाने की ख़बर तो उड़ रही है, भगवान जाने ठीक है या गलत ।

ख़बर फैलना—खबर उड़ना । तमाम शहर में यही ख़बर फैली हुई है कि तुमने ही यह काम किया है ।

ख़बर लेना-(१) समाचार जानना । लेते रहो खबर कहाँ लौ शिवराज हैं । (२) दीन या दुखी की दशा पर ध्यान देना, सहानुभूति या सहायता करना । हम मरे या जिये आप तो हमारी कभी खबरें भी नहीं लेते । (३) दंडित करना, सज़ा देना । आज उनकी खूब डंडों से खबर ली गई । (४) खोजना, पूछना । तुमने न हमारी कुछ ख़बर ली, छाती पत्थर की क्यों कर ली ? (५) पालन पोषण करना, रक्षा करना । आपके बिना हमारी खबर लेने वाला यहाँ परदेश मे और है ही कौन ? (६) खबरगीरी करना, देखते रहना । मैं जरा बाजार तक हो आता हूँ तुम इन चीज़ों की खबर लेते रहना ।

खब्बत हो जाना—पागल हो जाना । यह क्या बक रहे हो, क्या दिमाग़ खब्बत हो गया है ।

खम खाना—(१) मुड़ना, झुकना । पहर रात भर मार मचाई, मुरक्यो तुरक वहाँ खम खाई । (२) हारना, पराजित होना, नीचा देखना । मैं जरा सी बात पर खम नहीं खा सकता । मर मिटूँगा पर सामना ज़रूर करूँगा ।

खम ठोकना—(१) लड़ने के लिये ताल ठोकना । आए तहाँ जहँ खल छलकारी, फेंट बाँधि खम ठोकि खरारी । (२) दृढ़ता दिखलाना । मै इस काम के लिये खम ठोकता हूँ ।

खम ठोककर—(१) ताल ठोक कर । (२) पक्की तौर पर । (३) निश्चय पूर्वक । मैं खमठोक कर उसके सामने भी यह बात कह सकता हूँ ।

खम बजाना या मारना—'देखो खम ठोकना ।

खमीर उठाना—उबालना । पहले इस काढ़े का खमीर उठाकर पानी निचोड़ दो, तब मिश्री डाल कर पी जाना ।

खमीर बिगड़ना—स्वभाव या व्यवहार में भेद पड़ना । मेरी ओर से खमीर बिगड़ा है ।

खरा आदमी—ईमानदार, व्यवहार में सच्चा या साफ । आदमी खरा है यह मै कह सकता हूँ देर मे दे परन्तु दे देता है ।

खरा करना—रुपये बजा कर देख लेना। खरा कर लो फिर कहीं मुझे बदनाम करो।

खरा खेल फर्रुखाबादी—साफ मामला, शुद्ध व्यवहार। हम व्यवहार मे झिकझिक नही चाहते हमारा खरा खेल फर्रुखाबादी है लेना है लो न लेना हो मत लो।

खरा खोटा परखना—भला बुरा जाँचना। खरा खोटा परखे बिना किसी से संबंध करने मे धोखा खाना पड़ता है।

खरा खोटा होना—मन डिगना, नीयत बिगड़ना।—हम स्त्रियों मे काम नहीं करना चाहते जरा देर में खरा खोटा होजाए तो जिन्दगी खराब होगी।

खराद पर चढ़ना—(१) बिल्कुल ठीक या दुरुस्त होना। एक इंच का भी फरक नहीं है खराद पर चढ़ा हुआ है। (२) सुधारना। खराद पर चढ़कर तो ठीक हो जाएगा। (३) दुनिया के व्यवहार में चतुर होना तजुर्बेकार या अनुभवी। बच्चा नहीं है खराद पर चढ़ा हुआ है वह धोखा नहीं खा सकता।

खरापन बघारना—बहुत सच्चा बनना, सचाई की डींग मारना। क्यों अपना खरापन बघारते हो तुम्हारी भी सब सुनली है।

खराब करना—नष्ट करना। यहाँ से हट जावो, क्यों चीजों को खराब कर रहे हो।

खराबी में डालना—कष्ट पहुँचाना। जब वह तुमसे माँफी माँग चुका है तो फिर क्यों उसे खराबी मे डालते हो।

खराबी में पड़ना—बुरी हालत होना। मैं तो खराबी मे पड़ गया नहीं तो मज़ा चखाता।

खरी खोटी सुनाना—बुरा भला कहना। यदि तुम उससे छेड़ छाड़ करोगे तो वह भी तुम को खरी खोटी सुनायेगा।

खरी सुनाना या खरी खरी सुनाना—(१) साफ तथा बुरी लगने वाली सच्ची या लगती बात कहना। मै उसे बडी खरी सुनाकर आया हूँ, याद रखेगा कि कोई था। (२) अगर न दोगे तो मैं खरी खरी सुनाऊँगा।

खरे आना—अच्छे मिले। अच्छे आये (व्यंग्य) आप तो खरे आये हम वहाँ प्रतीक्षा ही करते रहे।

खरे होना—रुपये मिलने का निश्चय हो जाना। तुम्हारे रुपये तो खरे हो गये अब हमारा इनका हिसाब रहा।

खर्च उठाना—(१) व्यय करना, खर्च का भार सहना। इतनी सी

चीज़ के लिये कितना खर्च उठाना पड़ा। (२) व्यय दूर करना, खर्च बद करना। मैंने मोटर का खर्च तो उठा दिया इससे भी १००) महीने की बचत हो गई।

ख़र्च चलाना—व्यय देते रहना, खर्च के लिये रुपये देना। घर का खर्च बड़ा लड़का चलाता है।

ख़र्च में डालना—(१) व्यय करना ही पड़ना। मुझे भी इस खर्च में डाल ही दिया वरना मुझे क्या मतलब था। (२) हिसाब में लिखना, खर्चे में लिखना। ये १५०) हमारे खर्च मे डाल दो उनके नाम मत लिखो।

ख़र्च में पड़ना—(१) ख़र्च करने के लिये विवश होना। इस खर्च में भी मै पड़ा पर कुछ हाथ न आया। (२) खर्चे मे लिखा जाना। आपके नाम नहीं वह रक़म खर्च मे पड़ गई है।

ख़र्राटा भरना, मारना या लेना—सुषुप्ति अवस्था, गहरी नींद सोना, बेखबर सोना। वह तो उस समय खर्राटे भर रहा था उसे तन की भी सुध न थी।

खलबली पड़ना या मचना—शोर गुल होना, हल्ला या हलचल मचना। डाकुओं के आने की ख़बर सुन कर सारे कस्बे में खलबली मच गई।

खवे से खवा छिलना—बहुत भीड़ के कारण कधे से कधा छिलना। बड़ा भारी मेला था, निकलना मुश्किल पड़ता था, खवे से खवा छिलता था।

खल होना—पिसना, चूर चूर होना। खल भई लोक लाज कुल कानी।

खावो वहाँ तो पानी पीवो यहाँ—अत्यंत शीघ्र आओ, बिल्कुल देर न करो। बहिन बहुत बीमार है, खत के देखते ही तुम अगर खाओ वहाँ तो पानी यहाँ आकर पीवो, थोड़ा लिखा बहुत समझो।

ख़ाक उड़ना—(कहीं पर) नाश होना, उजाड़ होना। अब वहाँ पर खाक उड़ रही है।

ख़ाक उड़ाना—(१) कुछ न करना। दूसरों को कहते हो तुमने ही क्या ख़ाक उड़ाई जरा भी न बोला गया। (२) अपनी इज्जत बरबाद करना। खूब ख़ाक उड़ाई कर कराके जरा सी बात पर बाप दादाओं के नाम पर धब्बा लगाया। (१) हँसी उड़ाना, मट्टी पलीद करना। लोगों ने उसकी खूब ख़ाक उड़ाई।

ख़ाक उड़ाते फिरना—ख़ाक छानना, इधर उधर यों ही मारे मारे फिरना। जमकर काम तो

[१७३५]

कहीं करता नहीं यो ही ख़ाक उड़ाता फिरता है।

ख़ाक करना—मिट्टी मे मिलाना, बरबाद, तबाह या नष्ट भ्रष्ट करना। उसने अपना लाख का घर जुए मे ख़ाक कर दिया।

ख़ाक चाटकर बात कहना—बहुत नम्र होकर बोलना। वह तुम्हारे सामने तो ख़ाक चाटकर बात करता है, पीछे शेर हो जाता है।

ख़ाक चाटना—सिर नवाना, अनुनय विनय करना। बहुत बढ़कर बाते करते थे लेकिन आख़िर ख़ाक चाटनी ही पड़ी।

ख़ाक छानना—(१) बहुत तलाश करना। कहाँ कहाँ की ख़ाक छानी पर वह न मिला। (२) मारा मारा फिरना। वह नौकरी के लिये चारों तरफ ख़ाक छानता फिरा।

ख़ाक डालना—(१) दबाना, छिपाना। उसके ऐबों पर कहाँ तक ख़ाक डाली जाय। (२) भूल जाना, गई गुजरी करना। पुरानी बातों पर ख़ाक डाल कर अब मेल करो।

ख़ाक फाँकना—(१) मारा मारा फिरना। (२) झूठ बोलना। ख़ाक क्यों फाँकते हो सच बोलने से क्या कोई दण्ड मिलेगा?

ख़ाक बरसाना—(१) अच्छी हालत न रहना। कुछ नहीं विचारे के सर पर खूब ख़ाक बरसा दी गई कहीं का न छोड़ा।

ख़ाक में मिलना—(१) बरबाद होना, चौपट हो जाना। वेचारे का भरी सभा मे अपमान होने से सारी आबरू ख़ाक में मिल गयी। (२) हस्ती मिटा देना, अपने को खतम कर डालना। चाहे मैं ख़ाक में मिल जाऊँ परन्तु बात से न टलूँगा।

ख़ाक मे मिलाना—बरबाद करना, नष्ट भ्रष्ट कर देना। उसने सारी आबरू ख़ाक में मिलादी।

खाकर डकार न लेना—एक दम हजम हो जाना, किसी की चीज़ या माल बिलकुल ले लेना और जरा भी जाहिर न होने देना, हजम कर जाना। वह बड़े बड़े लोगों के रुपये खाता है और डकार भी नहीं लेता तुम तो क्या चीज़ हो।

ख़ाका उड़ाना—(१) हँसी उड़ाना, हूबहू क्रियात्मक नकल करना। क्यों वेचारे का खाका उड़ाते हो अपना भी पता है कैसे बोलते हो और चलते हो। (२) बदनामी करना। न अपनी आबरू बरबाद करना, न अपनी ख़ाक का खाका उड़ाना।

ख़ाका उतारना—(१) बिलकुल नकल करना। बख्शी जी का तो ऐसा ख़ाका उतारता है कि दूर से

तो इसे ही लोग बख्शी समझें। (२) कच्चा नक़शा खींचना।

खा जाना—(१) हड़प कर लेना, चीज लेकर न देना, चट कर जाना। तीन सौ रुपये तो मेरे खागया आज तक देने का नाम नही। (२) बरबाद या नष्ट भ्रष्ट कर डालना। यह चिन्ता तुम्हे खा जायगी क्यों हवाई पुल बांधते हो। (२) मार देना। देखता तो ऐसा घूर घूर कर है मानो खा ही जायगा।

खा जाना (कच्चा)—(१) कच्चा खा जाना। प्राण ले लेना। मै तुझे कच्चा खा जाऊँगा मुझसे वैर मत कर।

खाट पर पड़े खाना—(१) बीमारी की दशा में खर्च होना। कई सौ रुपये तो खाट पर पड़े पड़े खागया। (२) नि:शक खर्च करना, वे फिकर रहना। उसे क्या परवा है वह तो अपने खाट पर पड़े खाता है लगी बँधी आमदनी है।

खाट लगना या खाट से लगना—बीमारी या कमजोरी के कारण खाट से उठने लायक भी न होना। ऐसी बीमारी भी भगवान किसी को न दे बेचारे छः महीने से खाट से लग रहे हैं।

खाट से उतारना—मरने के बिल्कुल करीब होना। कई बार खाट से उतारे जा चुके हैं।

खाता कमाता—इकट्ठा रुपया न हो, खर्च चला जाता हो। आदमी तो खाता कमाता है वैसे जमा जथा नहीं है।

खाता खोलना—(१) खाता डालना। (२) नया व्यवहार करना। दोस्ती तो बहुत दिन से थी परन्तु खाता तो अभी खुला समझिये।

खाता डालना—हिसाब खोलना, लेन देन शुरू करना। हमने अब आपका खाता डाल लिया सीधे मुनीम से भी जो चाहें सो आप स्वय ले सकते हैं।

खाता पड़ना—लेन देन आरम्भ होना। तुम्हारा खाता तो पड़ा हुआ है कुछ भी ले लो।

खाता पीता होना—(१) भोजन पान करना। (२) सुख से दिन बिताना। लड़के वाले भूखों मरते हैं और आप खाता पीता है।

खातिर में आना—(१) ध्यान आना, निगाह में जँचना। अब वह मेरी खातिर में आगया है मुझे उसका विश्वास है। (२) इज्जत होना। वह विद्वानों की भी खातिर में आता है।

खातिर में न लाना—अनादर

करना। तुम बड़े बुरे मनुष्य हो, चाहे कोई तुम्हारे दरवाज़े पर आवे उसे खातिर मे नहीं लाते।

खाते बाकी—किसी के नाम पर शेष। १००) तुम्हारे खाते बाकी हैं।

खाना और गुर्राना—उपकार न मानना, निर्वाह चलाना और फिर ऐंठ दिखाना। तुम यहाँ खाते हो और फिर गुर्राते हो, हम तुम्हारे कर्जदार तो नहीं, रास्ता नापो।

खाना (मुँह की)—(१) मुँह-की खाना, हार जाना, करनी का फल पाना। भरी सभा में उसने मुँह की खाई।

खाना कमाना—मेहनत मजदूरी से गुज़ारा होना। बस खाना कमाना बना है और कुछ नही।

खाना न पचना—बेकल होना, जी न मानना, व्याकुल रहना। मुझे तुम्हारे देखे बिना खाना तक नही पचता।

खान पान करना—खाना पीना, संबध रखना। वह तो मेरे साथ खान पान तक करता।

खाना पीना लहू मट्टी करना—क्रोध, शोक, खेद आदि के कारण खाने का आनन्द बिगड़ना। घर भर मे क्लेश ने खाना पीना भी मट्टी कर दिया है।

खाने के दाँत और दिखाने के और—भीतर बाहर में अंतर होना। उनकी बातों पर विश्वास मत करो खाने के दाँत और हैं दिखाने के दाँत और हैं यहाँ तो वह कह चले हैं करने के कुछ नही।

खाने दौड़ना—नाराज़ होना, बहुत क्रोधित होना। तुम तो जरा जरा सी बात पर खाने को दौड़ती हो ऐसी क्या तुम्हारी धौंस मे बसते हैं।

खा पका जाना वा डालना—खतम कर देना, खाने पीने में ही उड़ा देना। जो कुछ कमाता है खुद ही खा पका डालता है घर को कुछ भी नहीं भेजता।

खार खाना—(१) जलन होना, बुरा लगना। वह मुझसे खार खाते हैं। (२) क्रुद्ध होना। वे तुम पर खार खाये बैठे हैं।

खाल उधेड़ना वा खींचना—बहुत सख्त सज़ा देना, शरीर से चमड़ा अलग करना। मारे बेतों के खाल उधेड़ दूँगा।

खाल बिगड़ना—शामत आना, दण्ड पाने की इच्छा होना। तुम्हारी खाल बिगड़ी है इसी लिये मुझसे लड़ने आये हो?

खाल में मस्त होना—अपनी हालत में ही प्रसन्न होना। कोई खाल मे मस्त कोई माल मे मस्त।

खालसा करना—(१) जब्त

करना। छोटी छोटी मुसलमानी रियासतें खालसा करली गईं। (२) नष्ट करना। वह मुसलमान जो न माने, खालसा कर दिये गये।

खाला ऊँचा—(१) ऊँची नीची जमीन। (२) भला बुरा, नफा नुकसान। कुछ खाले ऊँचे की चिन्ता नहीं, जो करेंगे वह तो करेंगे ही।

खाला जी का घर—(१) सहज काम। यह भी खाला जी का घर है जो एक दम सब काम हो जायँ। (२) अपना घर, अधिकृत स्थान। जाओ हम सेवा करने के लिये नहीं हैं, यह तुम्हारी खाला जी का घर नहीं है।

खाली करना—(१) भीतर कुछ न रहने देना। घड़ा खाली करके फिर पानी भरो (२) छोड़ देना। मैंने उनका मकान खाली कर दिया है।

खाली जाना—ठीक न बैठना, सफलता न मिलना। इस बार तो हमारा निशाना खाली गया वरना यह नौकरी से छूट ही जाता। झूठा होना अगर आज रुपया उनके यहाँ न पहुँचा तो बात खाली जायगी।

खाली दिन—वह दिन जब कोई नया शुभकार्य न किया जाय। कल बुधवार है खाली दिन है परसों शुरू करेंगे।

खाली न जाना—वचन निष्फल होना। हमारी बात खाली न जायगी, वह कल जरूर आवेगा।

खाली (हाथ) होना—(१) रुपये न होना। आज कल हमारा हाथ खाली है, हम कुछ नहीं दे सकते। (२) हथियार के बिना। खाली हाथ मत जाओ मार्ग खराब है। (३) हाथ में लिया हुआ काम खत्म होना, फुरसत होना। आज कल हमारा हाथ खाली है कुछ काम हो तो दिला दो। (४) हाथ में कुछ भेंट न होना। बड़े आदमियों के पास खाली हाथ नहीं जाते जरा दो फूल ही ले जाओ।

खाली होना—(१) कोई काम धाम न करना। (२) बिना जीविका के रहना। आज कल वह खाली है।

खिंच जाना (मन)—मन मोहित होना। मेरा चित्त उस ओर खिंच गया है।

(दर्द)—दूर होना। इस लेप से सारा दर्द खिंच गया।

(हाथ)—बंद होना संबंध न रहना। अब इस काम से उनका हाथ खिंच गया है।

खिचड़ी खाते पहुँचा उतरना—अत्यंत नाजुक होना। अजी!

[१७८६]

उनका तो खिचड़ी खाते पहुँचा उतरता है, इतनी नाजुक है।

खिचड़ी छुआना—नव बधू से पहिले पहिल भोजन बनवाना। आज ही तो खिचड़ी छुआई है।

खिचड़ी पकाना—(१) आपस में चुप चाप सलाह करना। आप लोग अलग बैठे क्या खिचड़ी पका रहे हैं, क्या आप भी इसके विपरीत हैं। (२) **डेढ़ या ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकना या पकाना**, अपनी सम्मति सब से अलग रखना। तुम किसी की मानते भी हो या अपनी डेढ ..।

खिचड़ी होना—(१) दो तरह की वस्तुओं का मिला होना, काले तथा सफेद बाल होना। उनके बाल खिचड़ी हो गये हैं। (२) दो वस्तुओं का मिल जुल जाना। बिगड़ जाना। मैंने सुधार सुधार कर रखे थे, तुमने खिचड़ी कर दिये।

खिताब करना—सम्बोधन करना। आप उनमें से किसे खिताब कर रहे हैं, उसी को आपके पास लिवा लाऊँ।

खिदमत करना—सेवा करना। बालकों को अपने माता पिता की खिदमत करनी चाहिये।

खियानत करना—रुपया हड़पना। यदि उसके पास रक़म रक्खोगे तो खियानत कर जायगा।

खिल खिलाकर हँसना—कह-कहे के साथ हँसना, जोर की आवाज़ से हँसना। वह इसे सुन कर खिल खिलाकर हँसा, उसे बड़ी खुशी हुई।

खिलौना (हाथ का)—(१) प्रिय व्यक्ति, वह जिससे मन बहले। अपने गुण के कारण वह अमीरों के हाथ का खिलौना बना हुआ है। (२) वश मे होना। वह मेरे हाथ का खिलौना है।

खिल्ली में उड़ाना—यों ही हँसी में टाल देना, मज़ाक उड़ाना। मेरे उपदेशों को तो वह खिल्ली मे उड़ा देते हैं, फिर पछताना पड़ेगा।

खिसियाना करना—नीचा करना। अब तो उसके रिश्तेदार बैठे हुये हैं, इस समय पोल खोल कर खिसियाना न करो।

खींच खांच कर—जैसे तैसे, टेढ़ा सीधा लिखकर। यह काम खींच खाँच कर पार पड़ा है।

खींचना (मन)—मन मोहित करना, अपनी ओर लगाना। वह मेरे मन को खींच रही है।

(दर्द)—दर्द दूर करना। यह लेप सब दर्द खींच लेगा।

खींच लेना (हाथ)—न देना या

और कोई काम बंद करना। उसने एक दम अपना हाथ खींच लिया है, एक पैसा भी नहीं देता।

खीज निकालना—चिढ़ निकालना, किसी को नाराज करने का तरीका। उसने मेरी खीज निकाल ली है, जब मै आता हूँ उस दिन की बात याद दिला देता है।

खीरा ककड़ी समझना—अत्यंत तुच्छ वस्तु, गाजर मूली। मैं तो इन्हें तलवार के सामने खीरा ककडी समझता हूँ।

खीरे के मोल बिकना—बेकदर या बहुत सस्ता होना। वैसे पुनि आयके कुठौर कोई जाय पड़े, है तो वह हीरा पै बिकाने मोल खीरा के।

खीस काढ़ना—(१) मर जाना देखते देखते खीस काढ दी। (२) दीन होकर कुछ माँगना। दो दो पैसे के लिये क्यों खीस काढते फिरते हो। (३) बेढंगे तौर से हँसना। हर बात में तुम खीस काढते हो यह बेहूदापन।

खीस खवाना—नष्ट होना। कान्ह कृपाल बड़े नतपाल गये खल खेचर खीस खवाई।

खीस डालना—नष्ट करना। काहे को निर्गुण ज्ञान गनत हो जित तित डारत खीस।

खुगीर की भरती—व्यर्थ के लोगों या पदार्थों का संग्रह। क्या खुगीर की भरती शुरू की है इनसे भला कुछ काम बन सकता है?

खुजलाना—किसी काम को करने की इच्छा होना। तुम्हारे मारने के लिये मेरे हाथ खुजलाते हैं। मार खाने के लिये तुम्हारी पीठ खुजलाती है। बोले बिना तुम्हारा मुँह खुजलाता है।

खुजली उठना—(१) दण्ड पाने की इच्छा होना। तुम्हारे खुजली उठा करती है, पिट जाते हो फिर दस पाँच दिन ठीक रहते हो। (२) प्रसंग कराने की इच्छा होना। सौत! ऐसी भी क्या खुजली उठती है दो दिन के लिये भी उन्हें बाहर नहीं जाने देती।

खुजली मिटना—(१) पिटना। (२) प्रसंग हो जाना। आज तो खुजली मिट गई होगी आज तो वह आ गया है न!

खुदा खुदा करके—बड़ी कठिनता से। खुदा खुदा करके वह गाँव पकड़ा, पैरों में छाले पड़ गये।

खुदा की मार—ईश्वरी प्रकोप तुझ पर खुदा की मार तूने मुझे गिरा दिया।

खुलकर लगना—खूब बिना रुकावट के। गंगा के पानी से खुलकर भूख लगती है और खुलकर दस्त होता है।

खुलकर कहना—साफ़ कहना

[१८१४]

बेधड़क। जो कहना है खुलकर कहो।

खुल खेलना—(१) स्वतंत्रता से कार्य करना। खुल कर खेलने का मौक़ा मिले तो हम अपने जौहर दिखावे कि कितने योग्य हैं। (२) खेलने के लिये काफी जगह होना, दूर दूर होकर खेलना। जरा खुल कर खेलो तो देखें। (३) लज्जा वा कलंक का ख्याल न करके सब के सामने कोई बुरा काम करना। हम तो खुल कर खेलते हैं चोरी छिपकर किया तो क्या किया।

खुल जाना, खुल पड़ना, खुला होना—(१) बात उगल देना, साफ साफ कह देना। मित्रों से वह बिल्कुल खुला पड़ा है उनसे नहीं छिपाता। (२) हँसी मजाक की सब बाते कहने लगना। बड़े बूढ़ों के जाते ही वह भी गंभीरता छोड़ कर खुल पड़ा। (३) खो जाना। रास्ते चलते उनके १००) खुल गये।

खुलता रंग होना—(१) हलका सुहावना रंग। दुपट्टे का जरा और खुलता रग होता तो अच्छा लगता है। (२) गोश रगा। उस लड़के का रंग कुछ खुलता हुआ है।

खुले आम, खुले खज़ाने खुले बाज़ार या खुले मैदान—सरे आम, सबके सामने। मै तो खुले मैदान कहता हूँ मुझे किसी का क्या डर !

खुशामदी टट्टू होना—हाँ में हाँ मिलाने वाला, मुँह पर बड़ाई करते रहने वाला। वह तो खुशामदी टट्टू है वह साफ़ साफ़ नहीं कह सकता।

खुसर-फुसर करना—षड्यन्त्र रचना। अभी मुझे यह पता लगा है, कि वे आपके विषय में कुछ खुसर-फुसर कर रहे थे।

खूँटा गाड़ना—(१) हद बाँधना। (२) शर्त लगाना। देने को तो इन्कार न किया लेकिन दो रुपये का खूँटा गाड़ दिया। (३) अधिकार करना। मैंने पहिले ही अपना खूँटा गाड़ दिया है अब किसी की ताक़त नहीं कि ले ले।

खूँटे के बल कूदना—किसी सहायता की आशा पर अभिमान करना। तुम जिस खूँटे के बल कूदते हो मै उसको भी दीन दुनिया से उखाड़ दूँगा।

खूँटे पर मारना—तिरस्कार करना। उसे तो अब ऐसा घमड हो गया है कि हर एक को खूटे पर मारता है।

खून उतरना—(आँखों मे) क्रोध से आँख लाल होना। उसकी आँखों में यह सुनते ही खून उतर आया। [१८२४]

खून उबलना या खौलना—गुस्से में तमक कर लाल हो जाना। उस की नीचताएँ देख कर खून खौल उठता है, परन्तु लाचारी है क्या करूँ?

खून करना—जान लेना मार देना। कंधे पे तेग धरते हैं कौड़ी के वास्ते, आपस में खून करते हैं कौड़ी के वास्ते।

खून का प्यासा—जान लेने का इच्छुक। मैं अपमान के कारण उसके खून का प्यासा हूँ।

खून की नदी बहाना—खूब मार काट करना। जरा देर में वीर ने खून की नदियें बहा दीं।

खून खुश्क होना—अत्यत भयभीत होना। उनको देख कर खून खुश्क हो जाता है।

खून गर्दन पर चढ़ना या सवार होना—(देखो खून सिर पर सवार होना) (१) मरने का समय आना। बहुतेरा रोका परन्तु उसकी गर्दन पर खून सवार था रास्ते में डाकू मिले और क़त्ल कर दिया।

खून ठंडा होना—(१) भय लाना, डर जाना। अपने से बलवान को देखकर उसका खून ठंडा होगया।

खून निकलवाना—फसद खुलवाना। मैंने जौंक लगवा कर खून निकलवाया था अब दर्द नहीं है।

खून पीना—(१) दुख सहना। मेरा बहुत खून पीया गया है। (२) मार डालना। आखिर एक दिन भीम ने दुर्योधन का खून पीया ही तो सही। (३) बहुत दुखी या तंग करना। क्यों गरीबों का खून पीते हो सदा तुम्हारा ही राज न रहेगा।

खून बहाना—मारना, घातक आक्रमण करना। खून बहाये बिना काम नहीं चलता।

खून बिगड़ना—(१) खून में कोई खराबी आना। मेरा खून बिगड़ गया है अत: दस्त लिये हैं (२) कोढी हो जाना। (३) जोश न रहना। हमारा खून ही बिगड़ गया है स्वतंत्रता के भाव कहाँ से आवे?

खून सफ़ेद हो जाना—निर्दयी बनना। पहले तो बाबू जी बड़े दयालु थे, परन्तु न जाने अब क्यों खून सफेद हो गया है।

खून सिर पर सवार होना—(१) किसी को मार डालने को उद्यत होना। खून सिर पर सवार है वह क़त्ल किये बिना न मानेगा। (२) कत्ल के बाद पहचान का कारण होना। उसके सिर खून सवार था आखिर क्यों न पकड़ा जाता।

खून सुखाना—चिन्ता होना दुख से दुर्बल होना। तुम क्यों व्यर्थ के

लिये अपना खून सुखाये डालते हो, जो होगा मै देख लूँगा।

खेत आना—रण में मारा जाना। इतनी बड़ी लडाई मे सिर्फ दो हजार खेत आये।

खेत कमाना—(१) खाद इत्यादि डालकर खेत को उपजाऊ बनाना। (२) खेत से फसल उत्पन्न करना। आज कल हमारा खेत आदमी ही कमा रहे हैं।

खेत करना—(१) एकसा करना। सोखि कै खेत कै (कर) बाँधि कै सेतु करि उतरिबो उदधि न बोहित चाहिवो। (२) चद्रोदय का प्रकाश। (३) युद्ध करना।

खेत का लिखा पढा—किसान, गँवार। वह क्या जाने दस्तख़त करना वह तो खेत का लिखा पढा है।

खेत छोड़ना—(१) लड़ाई से भागना, लड़ाई बंद करना। बड़े बड़े वीर खेत छोड़ गये बली के सामने कौन खड़ा होता है। (२) काश्तकारी छोड़ना। उसने हमारा खेत छोड़ दिया है।

खेत रखना—विजय पाना, जीतना। उसने अकेले ही खेत रखा नहीं तो सबका दिल उखड़ गया था।

खेत रहना—खेत आना, काम आना, मारा जाना। मुगल सेना के कई हजार आदमी खेत रहे।

खेत हाथ रहना—मैदान मारना, विजय होना। आखिर खेत मुसलमानों के ही हाथ रहा।

खेती मारी जाना—फसल नष्ट होना। इस साल बर्फ से सारी खेती मारी गई।

खेप हारना—माल में घाटा उठाना। यह खेप तो हम हार ही गये।

खेल करना—काम को ठीक न करना, खेल मत करो जम कर काम करो।

खेल खिलाना—बहुत तग करना, खूब दिक करना। क्यों मुझे खेल खिलाते हो सच सच बताओ कहाँ रखी है ?

खेल खेलना—दगा देना चाल चलना। दोनों ओर के नीतिज्ञ अपने अपने खेल खेलते हैं देखो किसकी विजय हो।

खेल जानना या समझना—सरल; सहज जानना। बहुत कठिन काम है तुम उसे खेल समझते हो!

खेल जाना, खेलना—प्राण दे डालना। वह तो जान पर खेल गया अब चाहे जीत हो या हार।

खेल बिगड़ना— (१) काम ख़राब हो जाना। हमारा तो बना बनाया खेल बिगड़ गया। (२) रंग मे भंग होना। तुम्हारे बे मौके आते खेल बिगड़ गया।

खेलना खाना—खुशी व निर्द्वन्द्वता से दिन बिताना, चैन से रहना। अभी तुम्हारे खेलने खाने के दिन हैं, सोच करने के नहीं। खेलत खात लरिकपन गो जोबन जुबतिन लियो जीति ।

खेला खाया—पूरा जानकार, बहुत तजुर्बेकार। वह देश भर घूमा है खेला खाया आदमी है, तुम जैसों को तो बाज़ार मे बेच दे।

खेला खेला कर मारना—दुख दे दे कर ; धीरे धीरे चिढ़ा चिढ़ा कर, दौड़ा दौड़ा कर मारना। अबहि करौ का बहुत बड़ाई हतिहौ तोहि खेलाई खेलाई।

खेह खाना—(१) ख़ाक फाँकना, व्यर्थ वक्त बरबाद करना। वहाँ क्या खेह खाने गये थे घर मे जगह नहीं है ! (२) बुरी हालत में पड़ना। सोई रघुनाथ कपि साथ पाथ नाथ बाँध आयो नाथ भागे ते ख़िरिर खेह खाहिगो।

ख़ैर मनाना—खतरे से बचना। सड़क पर बैठा हुआ नित्य राहगीरों की ख़ैर मनाता।

खोंच आना—खूटे से कपड़ा फट जाना। तुमने खूटा ऐसी बुरी जगह गाड़ा है कि मेरी धोती में खोंच आ गई।

खोगीर की भर्त्ती—अनावश्यक लोगों का समूह। यहाँ काम वाले ही दो चार आदमी रहो, खोगीर की भर्त्ती का यहाँ कुछ काम नहीं।

खोज खोना — नाश करना। चाणक्य कुशा से रुष्ट हो कर उसके खोज खोने पर उतारू हो गया।

खोज मारना, मिटाना—पैर के चिन्ह या जाने के और कोई चिन्ह ज़मीन पर से मिटाना। चोर जाते वक़्त खोज मार कर गया है अब क्या पता लग सकता है।

खोटा खरा होना—नीयत ख़राब हो जाना, दिल पतित हो जाना। अब तो वे खोटे खरे हो गये हैं वरना पहिले बड़े सच्चे सीधे थे।

खोटा पैसा—(१) बुरी कमाई। क़साई का पैसा 'खोटा है इससे भीख अच्छी'। (२) ख़राब पैसा (सिक्का)। (३) मूर्ख या बुरा लड़का। अपना ही पैसा खोटा है परखने वाले का क्या दोष।

खोटी खरी सुनाना—बुरी भली बातें कहना, फटकारना। मैंने उसे बहुत खोटी खरी सुनाई क्योंकि मै भी आपका अपमान नहीं सह सकता था।

खोटा खाना—बेईमानी से बुरी तरह कमा कर खाना। वह खोटा खाता है इसका फल पायेगा।

खोद खोद कर पूछना—तर्क करके, बडी शकाएँ करके, ख़ूब

अच्छी तरह पूछना। पुलिस बड़ी खोद खोद कर पूछती है।

खोपड़ी (औंधा)—बेवकूफ। औंधी खोपड़ी है कुछ कहो कुछ समझता है।

खोपड़ी खा जाना या चाट जाना—बकवाद करके तंग करना। क्यों तुम खोपड़ी खाए जाते हो मैं बिलकुल नहीं सुनता चुप रहो।

खोपड़ी खुजलाना—(१) शामत आना, पिटने के सामान करना, ग़लत काम करना। क्यों तुम्हारी खोपड़ी खुजला रही है ? ध्यान से करो नहीं तो जूता बजेगा। (२) सिर पर जूते लगाना। क्यों खोपड़ी खुजलाऊँ क्या ?

खोपड़ी गंजी करना—सिर पर खूब जूते लगाना, मारते मारते सिर के बाल उड़ा देना। याद रखो बहुत शरारत करोगे तो मारते मारते खोपड़ी गंजी कर दूँगा।

खोपड़ी गंजी होना—(१) पिटते पिटते सिर पर बाल न रहना। सारी खोपड़ी गंजी हो गई है। (२) वैसे ही सिर के बाल उड़ जाना।

खोपड़ी बजाना—सिर फोड़ डालना। भीमसेन प्राय. दो कौरवों को पकड़ कर उनकी खोपड़ी बजा देते थे।

ख्याली पुलाव पकाना—(१) केवल सोचना। वह ख्याली पुलाव पकाना जानता है काम करना नहीं। (२) असंभव बातें सोचना। उसकी बात पर क्यों काम करते हो वह केवल ख्याली पुलाव पकाता है, भला सोचो यह काम आसान है ?

ख्याल बाँधना—अनुमान या कल्पना करना। ख्याल बाँधने मे क्या पता चल सकता है।

ख्याल में पड़ना—याद मे मस्त या लौलीन होना। वह उस लड़की के ख्याल मे पडा है।

ख्याल से उतरना—याद न रहना। मेरे ख्याल से उतर गई है बात मैं खूब जानता हूँ।

ख्याल रखना—(१) लिहाज रखना। मित्रता का तो ख्याल रखते ! (२) कृपा दृष्टि रखना। जरा हमारा भी ख्याल रखना।

ख्याल रहना—याद रहना ख्याल रहेगा कि नोट कर दूँ ?

ग

गंगा उठाना—गंगा जल से भरा बर्तन उठा कर क़सम खाना, गंगा की क़सम खाना। उसने भरी अदालत में गंगा उठाकर यह कह दिया कि मैंने रुपये नहीं लिये, अब क्या कहा जा सकता है।

गंगा नहाना—(१) लड़की की ब्याह कर देना। इस साल हम

लड़की के हाथ पैर पीले कर के गंगा नहा लिये। (२) निश्चिन्त हो जाना। बस यह काम हो जाय तो मै तो सर्वदा के लिये गंगा नहालूँ। (३) पाप धुलना। सारे जीवन कुकर्म किये थे परन्तु इस एक पुण्य के करने से वह गंगा नहा चुका। (४) कृतार्थ होना, मतलब बनना। तुम यहाँ से टलो तो मै गंगा नहा लूँ।

गंगा जली उठाना—गगा जली हाथ में लेकर कसम खाना। मै गगा जली उठा कर कह सकता हूँ मैंने रुपये नहीं लिये।

गंगा पार उतारना या कर देना—देश से निकाल देना। सारी जायदाद लेकर तुमने बिचारे को गगा पार कर दिया, मुँह दिखाने का भी न छोड़ा।

गंगा लाभ होना—मर कर गगा मे बहाया जाना, मुक्त होना। कल उन्हें गंगा लाभ हो गया अच्छा हुआ दुख से छूटे।

गंज डालना—मंडी आबाद करना, बाजार लगाना। महाराज ने राय-गज नाम से एक नया गज डाला है।

गंडा तावीज करना—झाड़ फूँक करना। वैद्य की औषधि नहीं, गंडा तावीज कर रही हैं।

गँवार का लट्ठ—(१) बेवकूफ। वह तो निरा गँवार का लट्ठ है उसे बोलने की तमीज़ नहीं। (२) ना समझी से अनुचित दंड देना। गँवार का लट्ठ बिना समझे चलता है अदालती न्याय तो भी पहिले कुछ निर्णय कर लेता है, पर वह नहीं।

गंदा करना—(१) कलंकित करना। एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है (कहावत) (२) ख़राब करना। तुमने सारे कपड़े गंदे कर दिये।

ग़ज़ब करना—(१) जुल्म या हद करना। गर्मी ने तो आज ग़ज़ब कर रखा है। (२) आश्चर्य जनक, अनोखा कार्य करना। यों तो चुप रहता है परन्तु जब बोलने के लिये स्टेज पर खड़ा होता है तो गज़ब करता है।

ग़ज़ब टूटना या पड़ना—मुसीबत आना, फफट मे पड़ना। हम पर तो एक के बाद एक ग़ज़ब ही टूट पड़ा है।

ग़ज़ब का—विलक्षण, अपूर्व, अत्यंत। वह ग़ज़ब का चोर है; ग़ज़ब की खूबसूरत हो तुम।

ग़ज़ब तोड़ना या ढाना—(१) कमाल करना, अनोखे काम करना। आप भी ग़ज़ब ढाते हैं सर्दी में बर्फ के पानी से नहाते है। (२) बदला लेना, वैर पूरा

करना। कई बार हारा है इस बार फिर ग़ज़ब तोड़ने आया है।

ग़ज़ब नाक होना—क्रुद्ध होना। यदि कोई लड़का काम पूरा करके नही लाता तो मास्टर साहब उस पर बड़े गज़ब नाक होते हैं।

गज्जर दम—बहुत सुबह, चार बजे प्रात.। वह गजरदम उठकर चला गया।

गज़ भर की छाती होना—उत्साह होना। अपने भाई को सहायता के लिये आया देख कर उसकी छाती गज़ भर की होगई।

गज़ भर की जीभ होना—(१) खाने के लिये अधिक जीभ चटकाना, ज्यादा खाना, चखने या खाने का हक़ ज्यादा होना। तुम्हारी ही कोई गज़ भर की जीभ है जो तुम्हे दिया जाय। (२) बहुत बोलना। हर वक्त बोलते रहते हो ऐसा क्या तुम्हारी ही गज भर की जीभ है हम भी जवाब देना जानते थे पर हम नहीं बोले।

गज़ट करना / गज़ट होना—(१) सरकारी पत्र में प्रकाशित होना कराना। (२) बहुत प्रसिद्ध होना। यह बात तो सब जगह गज़ट हो गई है कौन नही जानता।

गज़ी गाढ़ा—मोटा झोटा, साधारण। तुम रईस हो हम गज़ी गाढ़े पहिनने वाले गँवार।

गट पट होना—प्यार से लिपट जाना। आज दोनों भाई बहुत दिनों मे मिले हैं इसी से गट पट हो रहे हैं।

गट्ट करना—(१) दबा बैठना, हड़प जाना। वह सारा माल गट्ट कर गया। (२) निगल जाना, खाना। वह सारी रबड़ी गट्ट कर गया।

गट्टा उखाड़ना—(१) परास्त करना, हराना। एक ही कुश्ती में गट्टा उखाड़ दूँगा बड़े पहलवान बने फिरते हो।

गठरी करना—जोड़ना। उसने जो कुछ भी रुपया बचाकर गठरी किया था सब चोरी मे चला गया।

गठरी बाँधना—(१) सामान बाँध कर चलने की तैयारी करना। गाड़ी का वक्त है गठरी बाँधो। (२) घुटनों को छाती पर लगा कर दोनों हाथों से जकड़ना। सर्दी इतनी थी कि गठरी बाँध दी।

गठरी मारना—(१) चालाकी, चोरी आदि से माल उडाना। अब ईमानदारी से पेट नहीं भरता किसी की गठरी ही मारनी पडेगी। (३, बाँध कर डाल देना। रास्तेगीर की गठरी मारी और माल लेकर चंपत हुए।

गठाव गांठना—युक्ति निकालना। हमारी बुद्धि तो काम नहीं देती,

अन आप ही कोई गठाव गाँठिये।

गडंग मारना या हाँकना—(१) गप्पे मारना डींग हाँकना। क्यों गडंग हाँकते हो तुम सेर भर घी पी जाओगे ? (२) अहंकार करना, शेखी मरना। वह बड़ी अपनी गडंग मारता है।

गड़ जाना—झेंपना, शर्मिन्दा होना। तुम तो बेहया हो और कोई होता तो शर्म से गड़ जाता।

गड्ढा खोदना—(१) कमाना। रोज गडहा खोदना और रोज़ पानी पीनी ऐसे ही गुज़रती है। (२) नुक़सान पहुँचाना। क्यों बेचारे गरीब के लिये गडहा खोदते रहते हो नौकरी छूट भी गई तो तुम्हें क्या मिलेगा ?

गड़्ढा पाटना या भरना—(१) कमी पूरी करना, टोटा भरना। दो बार तो १००) १००) देकर गड़हा भर दिया अब बार बार मै कहाँ तक दूँ। (२) रूखी सूखी चीज़ से पेट भरना। बेचारे घास पात, चना-चबैना खाकर गड़हा भरते हैं क्या करे पैदा नहीं।

गड़हे पड़ना—गड्ढे हो जाना। वहाँ की मिट्टी बह जाने के कारण जगह जगह गड़हे पड़ गये हैं।

गड़हे में पड़ना—असमंजस या कठिनाई में पड़ना। दिल गडहे मे पडा है क्या करूँ प्यारी।

गड़े कोयले या मुर्दे उखाड़ना—(१) घाव हरा करना, पुरानी बातों को दुहराना। अब गडे मुर्दे क्यों उखाडते हो नही तो कुछ फैसला न होगा। (२) मरे हुए पुरुष के दोष दिखाना, छिपे हुए दोष प्रकट करना। जाने दो अब गड़े कोयले मत उखाड़ो।

गड्डु का गड्डु—ढेर का ढेर, बहुत सा। गड्डु का गड्डु पुस्तकें लाकर रख दिया।

गढ़ गढ़ कर बातें करना या बनाना—झूठ मूठ की कल्पना करके बात कहना, नमक मिर्च लगा कर बाते करना। क्यों गढ़ गढ कर बाते करती हो यों सचाई छिपाने से न छिपेगी।

गढ़ जीतना—(१) किला जीतना। (२) कठिन काम करना। अगर तुम यह काम कर लाये तो समझो गढ जीत लिया।

गतका—अच्छा, काम का। गतका कपड़ा भी तो पास नही।

गत बनाना या करना—(१) बुरी हालत करना। हमी से पूछते हो फिर कि यह क्या गत बनाई है। (२) मारना-पीटना, डाँटना डपटना, खबर लेना, दंड देना। घर पर जाओ देखो तुम्हारी क्या गत बनाई जाती है। (३, चेहरे पर रंग कीचड आदि लगाना,

[१६१६]

अनोखा रूप बनाना। होली पर तुम्हारी देखना क्या गत बनाई जायगी। (४) बिगाड़ना। देखो कपड़ों की क्या गत कर रखी है, जरा भी शहूर नही। (५) मरे का श्राद्ध करना। पिता जी की गति कर दी निश्चिन्त हुए। (६) हँसी उड़ाना, शर्मिन्दा करना। वे अपने को बड़ा बोलने वाला समझते हैं कल उनकी भी वह गत की गई कि याद रक्खेगे।

गत होना—मरना, मर जाना। उनकी लम्बी बीमारी के बाद कल गत हो गई।

गताल खाते में जाना—(१) व्यर्थ होना, व्यर्थ में जाना। हमारी सारी रक़म तो गताल खाते मे गई और उसने अपने रुपये निकाल लिये। (२) हड़प जाना, हज़म हो जाना। पहले के रुपये तो गताल खाते में गये अब और रुपया दो तो व्यौपार चलेगा वरना रहने दो।

ग़दर मचाना—विद्रोह करना। बादशाह अय्याशी मे पड़ गये, जिससे चारों ओर महरठों ने ग़दर मचाना आरम्भ कर दिया।

गदहा चन्द—बड़ा बेवकूफ। वह इस प्रश्न का उत्तर न दे सकेगा, क्योंकि वह तो पूरा गदहा चन्द है।

गदहे का हल चलना—उजड़ जाना, खंडहर हो जाना। आज कल तो गॉव वाले मकान में गदहे का हल चलता है, क्योंकि हम लोग शहर में आ बसे अब वहाँ मकान मे रुपये क्यों लगावे।

गदहे पर किताबें लादना—निर्बुद्धि को पढ़ाना, मूर्ख को व्यर्थ में किताबे वग़ैरा देना जब कि वह उनसे लाभ न उठा सके। इसे आवेगा जावेगा कुछ नही आप व्यर्थ मे गदहे पर किताबे लाद रहे हैं, यह न पढेगा रुपया चाहे बरबाद कर ले।

गदहे पर चढ़ाना—खूब बेइज्जत करना, बदनाम करना। उस बेचारे को तुमने गदहे पर चढाकर छोड़ा।

गद्दाड़ा सुनाना—फट कारना, झिड़कना।

गद्द करना—पेट मे जाकर किसी चीज़ का न पचना।

गद्दी चलाना—गद्दी पर बैठना, वंश क्रम या शिष्य क्रम जारी रखना महंत की गद्दी को अब कौन चलावेगा शिष्य तो कोई है नहीं।

गद्दी पर बैठना—(१) सिंहासन पर बैठना। पंचम जार्ज के बाद एडवर्ड अष्टम गद्दी पर बैठे हैं (२) उत्तराधिकारी होना।

ग़नीमत जानना—महत्व समझना। तुम यही ग़नीमत जानो

कि बाहर आकर तुमसे मिल लिया।

गप उड़ाना—झूठी खबर फैलना। उसने सारे गाँव मे यह गप उड़ा दी कि मै पकड़ा गया।

गप्प मारना, लड़ाना या हाँकना—(१) बहुत सी बाते करना। तमाम दुनिया की गप्प लड़ाते रहते हो। (२) शेखी बघारना। क्यों इतनी गप्प हाँकते हो हम जानते हैं तुम जितने वीर हो। (३) झूठी बाते बना बना कर कहना। उसका क्या विश्वास वह तो यों ही गप्प मारता होगा।

ग़म खाना—(१) क्षमा करना, ध्यान न देना। जाने दो ग़म खाओ, नाराज़ होने से कुछ न बनेगा। (२) ठहरना, समय लगाना। ग़म खाओ मुझे हो आने दो फिर जाना। (३) सब्र और शान्ति से रहना। बनिया क्यों मोटा? ग़म खाता है।

ग़म ग़लत करना—दुख भुलाना, शोक दूर करने का प्रयत्न करना। क्यों ग़म ग़लत करते हो मुझे रोने दो।

गये बीते होना—बुरी हालत को पहुँचना, निकृष्ट, किसी काम का नहीं। तुम हमसे भी गये बीते हो हम इतना तो कर लेते हैं तुम से इतना भी न होगा।

ग़रक़ी देना या ग़रक़ी में डालना—कष्ट देना, दुख देना। क्यों बिचारे को ग़रक़ी देते हो वह तो पहिले ही मरा हुआ है।

ग़रज़ का बावला—अपने मतलब से सब कुछ करने वाला। इस समय ग़रज़ का बावला है गाली भी दे लोगे तो परवाह न करेगा।

ग़रज़ कि—मतलब यह है कि, अर्थात् साराश है कि ग़रज़ कि तुम नहीं दे सकते।

ग़रज़ गाँठना—मतलब निकालना, काम सिद्ध करना। हम अपनी ग़रज गाँठने के लिये उससे बात भी करते हैं वरना हमें क्या मतलब।

ग़रज़ रखना—सम्बन्ध रखना। तुम कुछ ग़रज रखते हो तो उससे जाकर बाते कर लो।

गरदन उठाना—विरोध करना, सिर उठाना। वह मेरे खिलाफ गर्दन उठायेगा तो फल पायेगा।

गरदन उड़ाना—सिर काटना, मार डालना। तलवार के एक वार से ही गरदन उड़ा दी।

गरदन ऐंठना—दे० ग़रदन मरोड़ना।

गरदन ऐंठी रहना—घमंड मे या नाराज़ रहना। मै जब तक रहता हूँ उनकी गरदन ऐंठी ही रहती है।

गरदन कटना, काटना—(१) धड़ से सिर अलग करना। (२) बुराई

होना, हानि पहुँचाना। आपका तो कुछ न बिगड़ा अब गरदन तो हमारी कटी साहब हम से पैसे काट लेगा।

गरदन झुकाना—(१) शरमाना, लज्जित होना। उसने गरदन झुका कर भूल का पश्चाताप किया (२) नम्र आज्ञाकारी या आधीन होना। बड़ों के सामने उसकी गरदन झुकी रहती है, जरा घमंड नहीं कि मैं विद्वान हूँ। (३) बेहोश होना। (४) मरना। बैठे बैठे उसकी गरदन झुक गई बस फिर जमीन पर ले लिया गया।

गरदन न उठाना—(१) सब बातो को चुपचाप सह लेना। उस बेचारे की इतनी बुराई की गई पर उसने गरदन भी न उठाई। (२) बीमारी के कारण पड़े रहना। जब से यह लड़का बीमार पड़ा है इसने गरदन नही उठाई। (३) शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

गरदन नापना—(१) अर्ध चद्र देना, गरदनिया देना, गरदन पकड़ कर निकालना। वहाँ से तो तुम्हारी गरदन नापी ही गई थी यहाँ फिर चाहते हो मजा चखना! (२) अपमान करना, वेइज्जती करना।

गरदन नाचीज़ होना—जान की कीमत न होना। लड़ाई मे राजा की गरदन भी नाचीज़ होती है।

गरदन पकड़ कर करा लेना—ज़बरदस्ती करा लेना, दबाव डाल कर करा लेना। मै यह तो उसकी गरदन पकड़ कर करा लूँगा वह मेरी इतनी भी न मानेगा?

गरदन पकड़ कर निकालना—अपमान या बेइजती करना। वे तो गरदन पकड़ कर निकाले गये।

गरदन पर—जिम्मे, ऊपर। इसका पाप तुम्हारी गर्दन पर है।

गरदन पर छुरी फेरना - दुखी या तंग करना, बरबाद करना, हानि पहुँचाना। तुमने अपना भला किया, परन्तु हमारी गरदन पर तो छुरी फेर दी न! हमे वह रुपये भी न मिलेंगे।

गरदन पर जुवा रखना—(१) जिम्मेदारी सिर पर लेना। हम क्यों गरदन पर जुवा रखे हमें क्या फायदा है, जो यह काम करें। (२) सौंपना, भारी काम सुपुर्द करना। यह जुवा उसकी गरदन पर रक्खो वह इस काम को पूरा कर सकेगा।

गरदन पर बोझ होना—(१) बुरा लगना, खलना। मुझे यह काम गरदन पर बोझ मालूम होता है क्योंकि मेरी दिलचस्पी तो ज़रा नहीं। (२) सिर पड़ना, भार होना। इस काम का बोझ तुम्हारी गरदन पर ही है।

गरदन पर लेना—हत्या का अपराधी होना, अपने ऊपर लेना। उसने वह खून अपनी गरदन पर ले लिया, अदालत भी चौंक गई।

गरदन फँसना—जोखों में पड़ना, कफ़स मे पडना। जमानत देकर हमारी तो गरदन फँस गई, फिर करे तो तोबा!

गरदन मरोड़ना—(१) गलादबाना, मारडालना। भूत ने उसकी गरदन मरोड दी वह मर गया (२) कष्ट पहुँचाना, पीड़ित करना। क्यों दस रुपये के लिये उसकी गरदन मरोड़ते हो यह दस रुपये भी उसके लिये नियामत हैं।

गरदन मारना—(१) सिर काटना। (२) नुकसान पहुँचाना।

गरदन में हाथ देना या डालना—(१) बेइज्जती करना। (२) गरदनिया देना। गरदन में हाथ डाल कर निकाले गये। (३) प्रेम प्रदर्शित कर, छाती से छाती मिलाना। जब जाता हूँ गरदन मे हाथ डाल कर बातें करती है।

गरदन हिलाना—(१) अस्वीकार करना, इन्कार करना। खुदा का मान लेना दिल से फरमाना खबरदार उससे मत गरदन हिलाना। (२) झकझोर के कहना। वहाँ तुम्हारी गरदन हिलादी गई थी फिर भी नही लाये।

गरम करना—(१) गुस्सा दिलाना, नाराज़ करना। मैं उन्हे गरम कर दूँगा तुम लड़ने लगना। (२) (कान गरम करना)-कान उमेठना।

गरम मामला—हाल की घटना, अभी गरम मामला है जो करना है कर डालो।

गरम सर्द उठाना, सहना या देखना—भले बुरे दिन काटना, संसार का ऊँचा नीचा देखना। उसने गर्म सर्द सभी कुछ सहा है अतः गम्भीर बन गया है।

गरम हो उठना—नाराज़ या गुस्से में हो जाना। जरा सी बात पर गरम हो उठते हो।

गरमा गरमी से—शीघ्रता से, बड़े उत्साह से, बहुत जोश से। कांग्रेस का काम सन् ३० मे बड़ी गरमा गरमी से हुआ।

गरमा देना—(हाथ) रिश्वत देना। ५) से इसके भी हाथ गरमा दो।

गरमी करना—प्रकृति मे उष्णता लाना, पेट वा कलेजे मे ताप करना। कुनैन बहुत गरमी करती है।

गरमी छाँटना या निकालना—घमंड दूर करना, ऐंठ निकालना। अभी हम तुम्हारी

गरमी निकाले देते हैं, लाना रे ! जूता ।

ग़रीबी आना—दरिद्र या मुहताज होना । हम पर ग़रीबी आगई है इसलिये रुपया नहीं खर्च सकते ।

ग़र्क़ होना—तल्लीन होना । इस समय उसे न छेड़ो क्योंकि वह सवाल निकालने मे ग़र्क़ हो रहा है ।

ग़र्क़ी में आना—बाढ़ आना डूब जाना । वर्षा अधिक होने से नदियों के किनारों के गॉव ग़र्क़ी में आ गये हैं ।

गर्द उड़ाना—नष्ट करना, धूल में मिलाना । सेना ने गाँव की गर्द उड़ा दी ।

गर्द को न पहुँचना—बराबरी न कर सकना । ये बेचारे उसकी गर्द को भी नहीं पहुँच सकते वह बहुत बड़ा है ।

गर्द झड़ना—ऐसी मार खाना जिसकी परवाह न हो । ऐसे मुक्कों से क्या होता है मैने तो समझा कि कोट की गर्द झड़ रही है ।

गर्द फाँकना—फिजूल घूमना, आवारा फिरना । क्यों गर्द फॉकते फिर रहे हो वह तुम्हारा काम न करेगा ।

गर्दन झुकाना—अधीन होना । उस प्रभावशाली सन्यासी के सामने अच्छे अच्छे मनुष्य गर्दन झुकाते हैं ।

गर्दन पर छुरी फेरना—अत्याचार करना । पूंजी पति तो सदा ही बेचारे मजदूरों की गर्दन पर छुरी फेरते हैं ।

गर्दन पर सवार होना—पीछा न छोड़ना । ज़मीदार को जब देखो गर्दन पर सवार रहता हैं ।

गर्द होना—(१) नाचीज़ होना, तुच्छ होना । इसके सामने सब गर्द है । (२) नष्ट होना, चौपट होना । मुक़दमेबाज़ी मे वह गर्द हो गया ।

गर्भ रहना—गर्भवती होना । उसका तो नाल टल गया मालूम पड़ता है, जिससे गर्भ ही नहीं रहता ।

गर्मी पड़ना—दिन उष्ण होना । आज कल बड़ी गर्मी पड़ती है ।

गल जाना—व्यर्थ खर्च होना । कल तमाशे मे ५०) गल गये ।

ग़लती में पड़ना—धोखा खाना, धोखे में होना । मै ग़लती मे पड़ गया यह वही है या और है ।

गल बहियाँ डालना—गले में हाथ डालना, प्रेमालिंगन करना । गल बहियाँ न डालो रे बालमा ।

गल फटाकी करना—घमंड करना, अपनी प्रशंसा करना । बस, बहुत गलफटाकी मत करो ।

गला आना—गले के अंदर छाले या सूजन होना। मेरा गला आ रहा है रोटी नहीं खाई जाती।

गला काटना—(१) गरदन पर छुरी फेरना। (२) धड़ से सिर जुदा करना। (३) अत्यंत कष्ट देना, अन्याय करना। वह लोगों का गला काट कर रुपया जमा करता है। (४) खाने की चीज़ का गले मे चुभना। यह सूरन गला काटता है। (५) अहित करना, विरुद्ध काररवाई करना। जो मित्र बनते हैं वह पीछे गला काटते हैं।

गला घुटना—दम रुकना, अच्छी तरह साँस न आना। हवा नहीं आती है, गला घुटने लगा।

गला घोंटना, टीपना, दबाना या मरोड़ना—(१) ज़बरदस्ती या ज़ब्र करना। गला घोंट कर किसी से कब तक काम ले सकते हैं? (२) मार डालना, गला दबा कर प्राण निकालना। जी आता है गला घोंट कर मर जाऊँ, ऐसी ज़िन्दगी से तङ्ग आई। (३) गले को ऐसा दबाना कि साँस रुक जाय। (४) हानि पहुँचना। मेरा क्यों गला घोंटते हो जुर्माना ही लेना है तो साहब से लो।

गला चलना—सुरीला कंठ होना। बहुत मत गाओ फिर कल गला कैसे चलेगा?

गला छुड़ाना या छुटाना—पिंड छुटाना, झंझट मिटना, पल्ला छुड़ाना। (क) उसे कुछ दे लेकर गला छुड़ाओ। (ख) कल वह रास्ते में मुझसे ऐसा उलझ पड़ा कि गला छुड़ाना मुश्किल हो गया।

गला छूटना—छुटकारा मिलना, बचाव होना। मेरा गला छूटना मुश्किल है तुम चले जाओ।

गला पकड़ना या बैठना—(१) गले से शब्द सुरीला वा स्पष्ट न निकलना, आवाज़ बैठना। रात भर गाते गाते गला बैठ गया है। (२) सरदी के कारण गले में छोटी छोटी गिल्टियाँ पड़ना जिनसे खाने में कष्ट हो।

गला फँसना—मजबूर होना, विवश होना, गरदन फँसना। जब आदमी का गला फँसता है तब कुछ करने को तैयार होता है।

गला फँसाना—(१) मुश्किल में डालना, जिम्मेदारी सिर पर लेना। तुम क्यों अपना गला फँसाते हो जिसे ग़रज़ होगी अपने आप करेगा। (२) बंधन में डालना, वशीभूत करना। हमारा गला फँसा कर आप चलते बने।

गला फाड़ना—ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना इतनी आवाज़ से पुकारना कि गला दुखने लगे

क्यों गला फाड़ रहे हो वह नहीं बोलेगा ।

गला फिरना—तान और लय के अनुकूल स्वर निकलना । ज़रा गला फिर जाय तो ऐसा गाऊँ कि आनन्द आ जाय ।

गला फूलना—दम फूलना, उकता जाना । जरा गला फूल गया था इसलिये बोला भी नहीं जाता था ।

गला बँधना—विवाह बन्धन में पड़ना । इसी समय यह बातें बना रहे हो, जब गला बँधेगा तब सब मालूम पड़ जायगी ।

गला बाँधकर धन जोड़ना—खाने पीने का कष्ट उठा कर भी धन इकट्ठा करना । आज कल वह गला बाँधकर धन जोड़ रहा है ।

गला रेतना—(१) किसी की बुराई का सामान करना, हानि पहुँचाना । उसने ख़ुद ठेका कम पर लेकर हमारा भी गला रेत दिया और आप भी फँस ही गया समझो । (२) अधिक और असह्य दुख देना । हमने बड़े बड़े पाप किये हैं, एक दम नहीं बल्कि गला रेत कर क़त्ल किये हैं ।

गली कमाना—(१) पाख़ाना साफ करना । तीन तीन गलियाँ कमानी पड़ती हैं और फिर (२) गली में झाड़ू देना । सारी गली कमानी पड़ती है ।

गली गली फिरना या छानना—(१) शहर भर मे ढूँढ लेना । गली गली छान मारी कहीं न मिला । (२) व्यर्थ घूमना । क्यों गली गली फिरते हो घर बैठो ।

गली गली मारे मारे फिरना—(१) इधर उधर व्यर्थ घूमना । (२) जीविका के लिये इधर से उधर भटकना । गली गली मारे फिरना पड़ता है, तब कहीं रुपये आठ आने की मजूरी होती है । (३) चारों ओर अधिकता से मिलना, साधारण होना । ऐसे वैद्य तो गली गली मारे फिरते हैं ।

गली झँकाना—इधर उधर हैरान करना, खोज में फिराना । तुमने मुझे कितनी गलियाँ झँकाईं ।

गले का हार—(१) अत्यत प्यारा व्यक्ति, जो दूर न किया जा सके । इस समय तो राजा साहब उसे गले का हार समझते हैं । (२) पीछा न छोड़ने वाला, वह जो बोझ मालूम हो, न चाहने पर भी साथ रहने वाला । कितना ही दूर रहें अब वह गले का हार ही बना रहता है क्या करूँ ?

गले के नीचे उतरना या गले उतरना—(१) मन मे जमना, स्वीकृत होना, समझ मे आना । उसे कितना ही समझाया परन्तु

यह बात उसके गले के नीचे ही नही उतरती। (२) निगलना, पेट में जाना। दवाई इतनी कड़वी है कि गले के नीचे नही उतरती।

गले (तक, में) उतारना—स्वीकार कराना, समझ में बैठाना।

गले पड़ना—(१) मत्थे मढा जाना, न चाहने पर भी मिलना। गए नमाज़ छुड़ाने उल्टा रोज़ा गले पड़ा। (२) सिर पर आना, करना ही पड़ना। गले पड़ी ढोल बजाए सिद्ध। (३) आगे आना, सिर पडना। मै क्या जानती थी कि वियोग गले पड़ेगा, मै मोह ही क्यों डालती।

गले बांधना—(१) व्यर्थ में पास रखना। तुमने दो घोडियों का खर्च और गले बाँध रखा है, नही काम आतीं तो एक बेच डालो। (२) व्यर्थ मे संग लगाना। चार बरस के बच्चे को क्यों मेरे गले बाँधती हो मेले में इसे पाखाना आगया तो! (३) इच्छा विरुद्ध किसी से निवाह करना, अनुचित मेल। ऊँट के गले बकरी बाँध दी बेचारी लड़की क्या दुआ देगी। (४) जबरदस्ती देना। जब वह इसे नहीं लेना चाहता तो क्यों उसके गले बाँधते हो।

गले मढ़ना—(१) इच्छा के विरुद्ध देना, दे० गले बाँधना। (२) वह दूकानदार टूटी फूटी चीज़ें लोगों के गले मढ देता है। (३) न चाहने पर भी कार्य भार देना। मै नहीं कर सकता क्यों मेरे गले मढ़ते हो! (२) इच्छा के विरुद्ध व्याहना। कानी स्त्री उसके गले मढ़ी गई।

गले में जंजीर पड़ना—व्याह हो जाना, काठ मे पाँव पड़ना, पैरों मे बेड़ी पड़ना। हमारे गले तो जंजीर पड़ी है वरना जेल का क्या डर!

गले लगना—(१) गले मिलना, गले मे हाथ डालना। बरसों से बिछुड़े थे देखते ही दौड़ कर गले लगे। गले पड़ना।

गले लगाना—हृदय से लगाना, प्रेम करने लगना। क्यों रूठे हो गले लगाओ, गुज़र गया है ज़माना गले लगाये हुए।

गश खाना—मूर्छित होना, बेहोश होना। अमीचन्द गश खाकर ज़मीन पर गिर पड़ा।

गश्त मारना या लगाना—चारों ओर फिरना, चक्कर लगाना। एक बार गश्त लगा आऊँ देखूँ कौन जाग रहा है; कौन सो रहा है।

गस्सा मारना—कौर खाना। दो गस्से मारलूँ फिर चलता हूँ।

गहरा आसामी—धनी आदमी, ज्यादा देने वाला। वह तो गहरा आसामी है, उससे ही सारे रुपये क्यों न ले लो।

गहरा पेट—(१) ऐसा हृदय जिसका भेद न खुले। उसकी बातें कोई नहीं जान सकता, उसका बड़ा गहरा पेट है। (२) माल या बात हज़म कर जाने वाला। बड़ा गहरा पेट है १०००) ५००) बिना तो बात ही नहीं करता।

गहरा रंग पकड़ना—झंझट वा उलझन मे पड़ते जाना, बात बढ़ती जाना। अब इस विषय मे कुछ न बोलो नहीं तो यह मामला गहरा रंग पकड़ जावेगा, क्योकि दोनों ओर बड़ी बड़ी ताकतें आ गई हैं।

गहरा हाथ-पड़ना, मारना, लगाना—(१) काफी माल उड़ाना, बहुत रुपया हड़पना। अब कि तो गहरा हाथ मारा है साल भर का निर्वाह होगा ? (२) हथियार या हाथ का पूरा वार होना। मै धीरे से मारना चाहता था, परन्तु गहरा हाथ पड़ गया, बस दो टुकड़े हो गये। (३) खूब रुपया कमाना, कीमती वस्तु मिलना। इस बार हाथ ज़रा गहरा लगे तो मज़ा आये।

गहरी घुटना, छनना—(१) खूब गाढ़ी भंग घुटना। (२) बड़ी मित्रता होना। आज कल इन दोनों की गहरी घुटती है, हर वक्त ही साथ देखो (३) खूब आमोद प्रमोद होना। आज कल तो शाम को उनके यहाँ चले जाते हैं वहाँ बड़ी गहरी घुटती है ११ बज जाते हैं। (४) घुल घुल कर बातचीत होना। कहो एकान्त में क्या गहरी घुट रही है ?

गहरी नींद सोना—गाढ़ निद्रा में रहना। जिस समय शेर गहरी नींद में सो रहा था चूहा उसकी नाक पर चढ़ गया।

गहरे करना—माल मारना, खूब लाभ उठाना। नौकरी लग गयी है, नवाब के यहाँ गहरे कर रहे हैं।

गहरे चलना—(१) घात में लगना। (२) जाते हुए पथिक के प्राण लेना। (३) घोड़े को सवारी मे जोर से चलाना।

गहरे लोग—उस्ताद लोग, भारी, चतुर लोग। मेरी घड़ी लड़के कैसे उड़ा ले जायँगे, यह तो गहरे लोगों का काम है।

गहरे होना—सम्पत्ति की वृद्धि होना। आज कल तो चाँदी पर खूब तेजी आ रही है तुम्हारे तो खूब गहरे हैं।

गाँठ उखड़ना—किसी अंग का अपने स्थान से हट जाना। मैं जो जोर से कूदा तो गाँठ उखड़ गई, अब बड़ा दर्द है।

गाँठ कटना—(१) गाँठ में बँधी वस्तु का चोरी जाना (२) ठगा जाना, अधिक दाम दे देना।

गाँठ कतरना या काटना—(१) नुकसान होना, ठगना, थोड़ा माल मिलना। इस बार तो तौल में गाँठ काट ली। चार मे दो पैसे का भी माल नहीं दिया। (२) गाँठ काट कर रुपया निकाल लेना, जेब कतरना। बम्बई के गँठ कतरे चलते चलते गाँठ कतर लेते हैं।

गाँठ करना—(१) गाँठ में बाँध लेना, अंटी करना। (२) बटोरना, जमा करना। उसने इस घर से बड़ा माल गाँठ किया।

गाँठ का पूरा—रुपये वाला होना। आँख का अंधा गाँठ का पूरा कोई कोई ही होता है।

गाँठ का पैसा—अपना धन, पास का रुपया। गाँठ के पैसे को इस तरह खर्च करो तो हम समझें कि शौकीन हो।

गाँठ खुलना—(१) उलझन सुलझना, समस्या हल होना। इतनी देर की पचायत के बाद गाँठ खुली, बस फिर फैसला हो गया। (२) असली बात का पता लगना। अभी गाँठ नहीं खुली है, हृदय में गुब्बार है।

गाँठ खोलना—(१) उलझन या झगड़ा मिटाना, कठिनाई या अड़चन दूर करना। इस गाँठ को कोई ऐसा आदमी खोल सकता है जिसकी बात दोनों फरीक़ न टालते हों। (मन या हृदय की) गाँठ खोलना—(१) मन में रखी हुई बात कहना, जी खोल कर कहना। (२) भीतरी इच्छा प्रकट करना। अब तुमने मन की गाँठ खोली है अब मै, तुम जो कहोगे वही करूँगा। (३) हौसला पूरा करना, मन की निकालना। तुम अच्छी तरह अपनी गाँठ खोल लो।

गाँठना हीं नहीं—कुछ नहीं समझता, परवा न करना। वह तो अपने पिता जी तक को नहीं गाँठता मेरी तो बात क्या?

गाँठना (मतलब)—(१) मतलब निकालना, काम निकालना। हमे तो अपने मतलब गाँठने से काम हमारी तरफ से चाहे कल उसका दिवाला ही निकल जाय। (२) पूरी करना। वह अपनी बात या काम गाँठ लेता है, चाहे और कोई मरे या जिये।

गाँठ पड़ना या करना (मन में)—भेद मानना; बुरा मानना, बुरी लगना। उसकी ईर्ष्या भरी बात मेरे हृदय में गाँठ कर गई।

गाँठ पड़ना (मन में)—(१)

मामला पेचीला होता जाना, उलझन बढ़ती जाना। (२) द्वेष या मन मोटाव बढ़ता रहना। (३) दिलों में फरक हो जाना। कुछ न कुछ गाँठ पड़ गई है तभी वह नहीं बोलता।

गाँठ पर गाँठ पड़ना—दो गाँठ पड़ना, गहरा रंग पकड़ना।

गाँठ बाँधना—याद रखना। गाँठ बाँध लो कहीं फिर कहो कि भूल गया था।

गाँठ में बाँधना—(१) याद रखना, हमेशा ध्यान रखना। (२) निश्चय करना। उस दिन से कान पकड़ा और यह बात गाँठ में बाँध ली है कि झूठी गवाही न दूँगा।

गाँठ में होना—पल्ले में, पास मे। गाँठ में भी कुछ है या यों ही बाजार चल रहे हो।

गाँठ (मन में) रखना—(१) जी में बुरा मानना। (२) ईर्ष्या या जलन रखना। वह हमसे मन में गाँठ रखता है। (३) झपट लेना, ले लेना। वह उनसे भी कुछ न कुछ गाँठ कर रखता है।

गाँठ से—अपने पास से, अपना। गाठ से लगाना पड़े तो मालूम हो।

गाँस कर रखना—बात को मन में जमा कर रखना, स्मरण रखना। तुम वह बात गाँस कर राखी, हमको गई भुलाइ।

गाँस निकालना—बैर निकालना, बदला लेना। बहुत दिन की गाँस उन्होंने इस बार मुझे हानि पहुँचा कर निकाल ली।

गाँस में करना या रखना—अधिकार या वश में करना। पावेगा पुन कियो आपनो जोर करेगी गाँसी।

गाँसी लगना—तीर लगना। फाँसी से फुलेल लागे गाँसी सी गुलाल लागे गाज अरगजा लागे चोवा लागे चहकन।

गाज पड़ना—(१) बिजली गिरना, डर होना, चुप होना, न कर सकना। ऐसी गाज पड़ गई है पूछो तो जवाब तक नहीं देती। (२) आफत आना, ध्वंस होना। हमारे सारे रोजगार पर गाज पड़ गई एक पैसे का लाभ नहीं।

गाज मारना—(१) बिजली गिरना। (२) आफत आना।

(गल) गाजना—हर्षित होना। उनई आय दुहू गल गाजे हिन्दू तुरुक दोऊ सब बाजे।

गाजर मूली समझना—दे० खीरा ककड़ी समझना।

गाड़ में बैठना—(१) घात में या ताक मे बैठना। (२) चौकी या पहरे बैठना।

गाड़ा बैठाना—चौकी बैठाना, पहरा बैठाना।

गाढ़ी छनना—(१) भंग का खूब पिया जाना। (२) गहगड्ड नशा होना। आज तो बड़ी गाढ़ी छनी है होश भी नहीं है। (३) विरोध होना, लाग होना। हमारी उनकी आज कल काफी गाढी छन रही है, देखिये कौन झुकता है। (४) शेष देखो गहरी छनना।

गाढ़े का साथी या संगी—संकट और विपत्ति में मित्रता निभाने वाला। दौलत राम को मैं कैसे छोड़ दूँ यह मेरे गाढ़े का साथी है।

गाढ़े की कमाई—बहुत मेहनत से कमाया हुआ पैसा। बाप की गाढ़ी कमाई बेटा उड़ा रहा है।

गाढ़े दिन—विपत्ति का समय, दुख का वक्त।

गात से होना—गर्भवती होना। जब तक वह गात से है, तब तक उससे कोई भारी काम न कराना।

गाती मारना—गाती बाँधना, कपड़े के कोनों को पीठ से लाकर छाती पर से लेजाकर गले के पीछे बाँधना।

गाद बैठना—(१) कीट या कीचड़ या तलछट जमना।

गाना (अपना २)—देखो मु० अपनी अपनी गाना।

गाना (अपनी ही)—देखो "अपना ही राग गाना।"

गाभ डालना—गर्भपात करना। दुराचार के कारण जब स्त्रियों के गर्भ रह जाता है तो गाभ डालती हैं।

गाय का बछिया तले बछिया का गाय तले करना—(१) हेरी फेरी करना, इधर का उधर करना। (२) काम निकलने के लिये कुछ का कुछ करना। वह बड़ा चतुर है गाय का बछिया तले बछिया का गाय तले करके किसी तरह अपने रुपये निकाल ले गया।

गाय की तरह काँपना—बहुत डरना, थर थर काँपना। बहू तो बेचारी बहुत ही सीधी है तुम्हारी नाराज़ी सुन कर तो गाय की तरह काँपती है।

गाय ताल लिखना—बट्टे खाते लिखना, गत्ताल खाते लिखना।

ग़ायब करना—चुरा लेना। मेरे पास अभी तो रुपये थे ही, यहीं पर किसी ने ग़ायब कर लिये हैं।

गारद बैठना—पहरेदार नियुक्त करना। जिस मस्जिद में खाकसार नमाज़ पढ़ने गये हैं उसके चारों ओर पुलिस ने ग़ारद बैठा दिया है।

ग़ारद में डालना—कारागृह में रखना। अभी तो उन्हें एक माह

के लिये गारद में डाल दिया है।

गारना (तन, गात)—शरीर गलाना, शरीर को कष्ट देना। यों तप में तन गार्‌यो गुसाईं।

गारी (की) आना, पड़ना, लगना—कलंक या लाछन लगना। बरजत मात पिता पति बाधव अरु कुल आवे गारी।

गारी लाना—कलंकित करना, दाग़ लगाना।

गाल करना—(१) बोलने मे शंका या सकोच न करना, मुँहजोरी करना। कत सिख देइ हमहिं कोइ माई, गाल करब केहि कर बलपाई। (२) डींग मारना। वह मघवा बलि लेतु है नित करि करि गाल।

गाल पर गाल चढ़ना—मोटा ताज़ा बनना। जो ख़ूब अच्छे अच्छे माल खायगा उसका गाल पर गाल क्यों न चढ़ेंगे।

गाल पिचकना—दुबला पतला होना। कहो प[illegible] दिन के काम से ही तुम्हारे तो गाल पिचक गये।

गाल फुलाना—(१) अभिमान प्रकट करना, गर्व सूचक आकृति। वचन करहिं सब गाल फुलाई। (२) रूठना, रिसकर के बोलना। हँसब ठठाई फुलाउब गालू।

गाल बजाना—(१) डींग मारना। वृथा मरहु जनि गाल बजाई, मन मोदकन कि भूख बुझाई। (२) बढ़ बढ़ कर बात करना। बलवान है स्वान गली अपनी तिहि लाज न गाल बजावत सोहै। (३) व्यर्थ बकवाद करना। क्यों गाल बजा रहे हो तुम्हारी बातों मे कुछ सार नहीं। (४) शिवजी के सामने बंबं करना।

गाल में जाना (पड़ना)—(१) मुँह में पड़ना। जो गाल में गई अब वह क्या लौटेगी। (२) मौत के मुख मे जाना। काल के गाल गये भट मानी।

गाल में भरना—खाने के लिये मुँह मे भरना। (गाल भरना भी बोलते हैं—इतना मुँह भरना कि चलाया न जा सके)।

गाल मारना—डींग हाँकना, सीटना। मृषा मूढ जनि मारसि गाला (२) मिथ्या जल्पना, व्यर्थ बकना। क्यों न मारै गाल बैठो काल डाढन बीच (३) कौर मुँह में डालना, ग्रास मुख मे रखना। गाल मारले तो चलें।

गाला सा, रुई का गाला—उज्ज्वल, धौला, सफेद।

ग़ालिब होना—छा जाना। आज कल भारतवर्ष में तो अंग्रेजों का ही रौब ग़ालिब हो रहा है।

गालियों पर उतरना—गालियाँ

[२०८७]

बकने लगना, गालियाँ देना। जब बातों का ठीक ठीक जवाब नहीं दिया जाता, तो चिढ कर गालियों पर उतर आते हैं।

गालियों पर मुख खोलना—गाली बकना आरम्भ करना, दुर्वचन कहना शुरू करना। सास कभी नहीं बोलती बस गालियों पर मुख सर्वदा खोलती है।

गाली खाना—दुर्वचन सुनना, गाली सहना। क्यों गाली खाने वहाँ जाते हो, मत जाओ।

गाली देना—दुर्वचन कहना।

गाली पड़ना—अभिशाप, शाप या गाली का फल होना। ऐसा मत कहो तुम्हीं को गाली पड़ती है।

गाव खुर्द होना—(१) बरबाद जाना, नष्ट भ्रष्ट होना। (२) ग़ायब होना। देखते देखते पुस्तक यहाँ से गावखुर्द होगई।

गाहक (जी या प्राग के)—(१) मार डालने वाला, प्राणों का इच्छुक। तुम हो मम प्राणनु के गाहक, जीवन नहि दै हो मोहि। (२) चाहने वाला।

गाहकी पटना—सौदा होना। हमारी गाहकी १००) में पट गई।

गिटकरी लेना—आवाज़ को लहरा देना।

गिटपिट करना—टूटी फूटी अंग्रेज़ी बोलना।

गिन गिन कर (गालियाँ) देना, सुनाना—बहुत अधिक गालियाँ देना, बहुत बुरा भला सुनाना।

गिन गिन कर दिन काटना—बहुत कष्ट के साथ वक़्त बिताना, मुश्किल से दिन गुजारना।

गिन गिन कर पैर रखना—धीरे धीरे सावधानता से चलना। यहाँ अँधेरे में गिन गिन कर पैर रखने पड़ते हैं।

गिन गिन कर लगाना—खूब पीटना, गिनती से मारना। झूठ बोलोगे तो गिन गिन कर (जूतियें) लगाऊँगा।

गिनती (में) आना, होना—किसी कोटि में समझा जाना, कुछ समझना। तेऊ काल कलेऊ कीने तू गिनती कब आयो।

गिनती कराना—किसी श्रेणी के अंदर समझा जाना। वह विद्वानों में अपनी गिनती कराने के लिये मरा जाता है।

गिनती कराने या गिनाने के लिये—नाम मात्र को, कहने सुनने भर को। गिनती कराने के लिये उसे दोस्तों में समझिये, बस।

गिनती के—इने गिने, कुछ थोड़े से वहाँ गिनती के आदमी आए।

गिनती पर जाना—(१) हाजिरी

देने या लिखाने जाना। (२) गिनना। तुम गिनती पर क्यों जाते हो यह देखो कि खाना कितने आदमियों का खाया गया, चाहे खाया ५ ने या ५० ने खर्च तो हुआ ३०० का।

गिनती होना—किसी महत्व का समझा जाना। वहाँ बड़े बड़ों का गुज़र नही, तुम्हारी क्या गिनती है।

गिनना (दिन)—(१) आशा में समय बिताना, दुख बीतने की राह देखना। दिन औधि के कौं लौ गिनों सजनी अँगुरीन के पौरन छाले परे। (२) किसी प्रकार काल क्षेप करना, वक्त गुजारना। भाई दिन गिन रहे हैं हम ज़िन्दगी के।

गिने गिनाये—बहुत कम। बड़ी लज्जा की बात है कि बरात में गिने गिनाये मनुष्य आये, फिर भी उनकी खातिर न हो सकी।

गिन्नी खाना, गिन्नी खिलाना—पहिला चक्कर मारना (पतंग के लिये) दूसरा चक्कर देना।

गिरगिट की तरह रंग बदलना—बहुत जल्दी विचार, निश्चय या कपड़े बदलते रहना, अभी कुछ कहना थोड़ी देर मे कुछ और विचार हो जाना। वह तो गिरगिट की तरह रंग बदलता है, अभी लाल पीले हो रहे थे अभी जनाब प्रेम की बाते करने लगे।

गिरफ्त करना—दोष या आपत्ति निकालना या प्रकट करना। हरेक की चीज़ में गिरफ़्त करना तुम्हारी आदत है।

गिरफ़्त में लेना—चक्कर में फाँसना; वश मे करना। इस बार उसे मैं गिरफ्त मे ले आया हूँ।

गिरफ्तारी निकलना—पकड़े जाने का वारंट निकलना।

गिरह का बल होना—रुपये का घमंड। तुम्हे गिरह का बल है उसे तुम व्यर्थ समझो।

गिरह पड़ना—देखो गाँठ पड़ना।

गिरह लगाना—गाँठ बाँधना। इस बात की गिरह लगाओ कि अब से उसके साथ खेलने न जाना, वह बड़ा चालाक है।

गीत गाना—(१) बड़ाई या प्रशंसा करना। भाई जिसका नमक खावेंगे उसका गीत गावेंगे।

गीदड़ बोलना—बुरा शकुन होना। गाँव के पास गीदड़ बोलते हैं गाँव पर आपत्ति आयेगी।

गीदड़ भभकी—केवल धमकाना, डराने भर की बात। यह केवल गीदड़ भभकी है वह कुछ कर नहीं सकता।

गुजरना (किसी पर)—संकट या

विपत्ति आना। जिस पर गुज़रती है वही जानता है (कहावत)।

गुज़र जाना—मर जाना।

गुज़ारना (नमाज़)—नमाज़ पढ़ना। **अरजी**—अर्जी दस्ती पेश करना।

गुट्ट करना—मिल जुल कर काम करना। **—बाँधना**—(१) झुंड होना। एक सम्मति वाले कई होना। उन्होंने गुट्ट कर लिया एक जैसी सब कहते हैं। **—बनाना**—एक से ही कई आदमी होना। उन्होंने गुट्ट बनाया हुआ है और किसी को मौका ही नहीं देते।

गुड़ खाना गुलगुला से परहेज करना—कोई पूरा काम करना उसके अंश को करने को तैयार न होना।

गुड़ दिए मरे तो ज़हर क्यों दे—जब कोमलता व सरलता से ही काम हो जाय तो सख़्ती की क्या ज़रूरत। डरा धमका कर काम बन जाता है तो क्यों फिर शिकायत करो जो गुड़...।

गुड़ फूटना (कुल्हिया में)—(१) गुप्त रीति से कोई काम होना। (२) छिपा हुआ पाप होना। **जो गुड़ खायगा वह कान छिदावेगा—जो गुड़ खायगी अँधेरे में आयगी**—जो धन लेगा उसे ही कष्ट उठाना पड़ेगा।

गुड़ गोबर कर देना—बना बनाया काम मिट्टी कर देना, बात बिगाड़ देना। तुमने साफ साफ कह कर सारा गुड़ गोबर कर दिया।

गुड़ होगा तो मक्खियाँ बहुत आ जायँगी—धन होगा तो खाने वाले आप आ जायँगे।

गुड़िया सँवारना—हैसियत के मुताबिक लड़की का व्याह कर देना।

गुड़िया सी—छोटी सी। गुड़िया सी लड़की है बड़ी प्यारी।

गुड़ियों का खेल जानना, समझना—मामूली और सहज काम। तुमने इसे गुड़ियों का खेल समझ रखा है, यह बहुत मुश्किल है।

गुड़ियों का व्याह—(१) लड़की गुड़ियों का व्याह करती है। (२) छोटी छोटी बच्चियों का व्याह। (३) गरीब आदमी की लड़की का व्याह जिसमें धूम धाम न हो। गुड़ियों का सा व्याह किया पता भी न चला कब हुआ।

गुड्डा बाँधना, पुतला बाँधना—अपकीर्ति या निन्दा करना। अब तुलसी पूतरा बाँधि है, सहि न जात मोसों परिहास एते।

गुण गाना—प्रशंसा करना। जिसका खाओ उसके गुण गाओ। **मानना**—एहसान मानना, कृतज्ञ होना। मेरा यह काम कर दो मै तुम्हारा जनम भर गुण मानूँगी।

गुण छाँटना—किसी के महत्व को न समझना, वह संस्कृत के धुरंधर पंडित हैं, तुम जैसे मूर्ख उनके गुण को क्या छाँट सकते हैं।

गुदगुदाना वहीं तक जहाँ तक हँसी आवे—दिल्लगी उतनी अच्छी जितनी बुरी न लगे।

गुदगुदी करना—गुदगुदाना।

गुदड़ी का लाल—ऊपर से सीधा और गरीब वैसे बड़ा धनी या गुणी। गुदड़ी का लाल है रहता सीधा सा है; परन्तु वैसे लखपति है।

गुदड़ी में लाल—तुच्छ स्थान पर उत्तम वस्तु, छोटे स्थान में बहुमूल्य वस्तु या गुणी व्यक्ति। तुम क्या जानो गुदड़ी में यहाँ लाल छिपे हैं।

गुदड़ी (क्या है)—क्या ताक़त है? क्या मजाल या हकीक़त है! उनकी क्या गुदड़ी है जो मेरे लड़के से शादी करें!

गुद्दी की नागिन—गुद्दी में (बालों का चक्र होना) भौंरी होना जो अशुभ है।

गुद्दी नापना—सिर के पिछले हिस्से पर थप्पड़ मारना।

गुद्दी में आँखें होना देखो "आँखें गुद्दी में होना।"

गुद्दी से जीभ निकालना—बहुत कड़ा दण्ड देना।

गुनाह बख्शना—क्षमा करना। जब उसे बिल्कुल निर्दोष पाया तो उसका गुनाह बख्श दिया गया।

गुम करना—छिपाना। आज ताला खुला था, सो किसी ने कई चीज़ें बक्स मे से गुम कर दीं।

गुमसुम बैठना—चुपचाप बैठना। सुनकर गुमसुम क्यों बैठे हो, उत्तर दो।

गुमान करना—शेखी करना। भाई! बता न क्यों गुमान करता है।

गुरु घंटाल होना—बहुत चालाक और धूर्त होना।

गुर्गे छूटना, लगना, होना—गुप्तचर या पता लगाने वाले आदमी फिरना, हर जगह होना।

गुर्रा करना, देना, बताना—(१) छुट्टी करना (२) नागा करना (३) लंघन करना। (४) टाल मटूल करना।

गुल-कतरना—(१) दीपक की बत्ती का जला हुआ निर्जीव भाग काटना (२) कोई अनोखा काम करना। (३) क़ाग़ज़ या कपड़े

आदि के बेल बूटे बनाना।—करना—दीपक बुझाना।—खाना—अपने शरीर पर गरम धातु से दगवाना। खिलना—(१) अनोखी घटना होना, मजेदार-बात होना, ऐसी बात जिसका पहिले से अंदाज न हो हो जाना, भेद खुलना। आपके चले आने के बाद खूब गुल खिले दोनों ने गड़े मुर्दे उखाड़े बड़ी पुरानी बातें खुलीं। (२) उपद्रव मचना या बखेड़ा खड़ा होना। मैंने उसकी शिकायत घर कर दी है, देखो क्या गुल खिलता है। खिलाना—(१) अनोखी बातें या कार्य सामने रखना। (२) उपद्रव और बखेड़ा खड़ा करना। —बंधना—(१) आग का अच्छी तरह सुलग जाना, आग में ताव आ जाना। अभी तवा चढ़ाती हूँ जरा गुल बँध जाने दो (२) कुछ पूँजी या धन हो जाना। अब तो निश्चिन्त सा है कुछ गुल बँध गया है शायद। —गोथना सा—मोटा ताजा, फूले फूले गालों वाला। लड़का तो गुलगोथना सा है उससे तो भागा भी नहीं जा सकता।

गुलछर्रे उड़ाना—बड़े आनन्द और विलास मय जीवन बिताना। हमने भी महाराजा साहब के सेक्रेटरी होने की हालत में खूब गुलछर्रे उड़ाये।

गुलझट या गुलझटी पड़ना—मन में फर्क आना, मनोमालिन्य होना। अब तो कुछ गुलझट पड़ गई है पहिले बड़ा मेल था।

गुलझट या गुलझटी निकालना—मनमुटाव और दिल का फर्क दूर करना। गालियों से कहीं गुलझटी निकाली जाती है?

गुलाब चटकना—(१) गुलाब की कलियों का खिलना। (२) लड़की पर यौवन आ जाना। गुलाब चटक रहा है यही समय है।

गुलाब छिड़कना—गुलाब का अर्क छिड़कना, गुलाब छिड़कने की रसम अदा करना। बरातियों के चंदन मैं लगाऊँगा गुलाब तुम छिड़कना।

गुलाबी आना—चेहरे पर रौनक होना, गालों पर सुर्खी आना। अब तो गुलाबी आ गई है अंगूरों के सेवन का फल है।

गुलाम करना, बनाना—बिल्कुल अपने ही अधिकार या वश में करना। मैंने उसे अपना गुलाम बना लिया है जो कहता हूँ करता है।

गुलाम का गुलाम—सेवक का भी सेवक, बहुत तुच्छ सेवक।

गुलाम होना—वश में होना।

मैं तुम्हारा गुलाम नहीं हूँ, मेरी भी स्वतंत्र इच्छाएँ हैं।

गुलामी अख़्तियार करना—दासत्व स्वीकार करना। अन्त में जब राजा हार गया तो उसने विजयी नरेश की गुलामी अख़्तियार कर ली।

गुल्ली बँधना—वीर्य पुष्ट होना, युवावस्था आना। अब तो गुल्ली बँध गई है विवाह कर दो।

गुसल करना—नहाना। जिस समय राजकुमारी गुसल करने जाती है, दो तीन घंटे लग जाते हैं।

गुस्सा-उतरना—क्रोध दूर होना या शांत होना। गुस्सा उतरे तो कुछ अर्ज करूँ।—**उतारना**—(१) क्रोध जो इच्छा हो उसे पूर्ण करना, अपने क्रोध का फल चखाना। उन्होंने मुझे पीट कर अपना गुस्सा उतारा। (२) क्रोध किसी और पर हो उसे दूसरे पर प्रकट करके शांत होना। उनसे तो वश नहीं चला अब हम पर गुस्सा उतारने लगे।—**के मारे भूत होना**—बहुत क्रुद्ध होना, क्रोध से काँप जाना, बहुत कुछ करने लगना। सुनते ही गुस्से के मारे भूत हो गया और १० मिनट में वहाँ पहुँचा।—**चढ़ना**—क्रोध आना, कोप का आवेश होना। इस समय गुस्सा चढा हुआ है उनसे कुछ मत कहो।—**थूक देना**—क्रोध दूर कर देना, गई गुज़री करना, क्षमा करना। जाने दो मुई को, गुस्सा थूको आप बड़ी बुड्ढी हैं।—**नाक पर रहना, होना**—थोड़ी सी बात पर क्रोध आ जाना, बहुत जल्दी नाराज हो जाना। गुस्सा तो उनकी नाक पर रहता है, जरा देर मे आग बबूला हो जाते हैं।—**निकालना**—दे॰ गुस्सा उतारना।—**पीना, पी जाना**—अंदर ही अंदर क्रोध को छिपा जाना, क्रोध को रोक लेना। इस समय वह गुस्सा पी गया, वरना तुम्हें बड़ा मारता।—**मारना**—क्रोध को रोक कर समाप्त कर देना, अथवा गुस्सा पीना। गुस्सा मारने से मनुष्य शांत और गंभीर बनता है। जिसने गुस्से को मार लिया उसने जग जीत लिया।—**के मारे (से) लाल होना**—क्रोध से मुख वा आँखे लाल हो जाना, क्रोध के आवेश में आना। पुत्र की नीचता सुनते ही वह गुस्से से लाल हो गया।

गूँगे का गुड़—ऐसी बात जिसका अनुभव हो पर वर्णन न हो सके, बात जो कहते न बने। साहित्य का रस गूंगे का गुड़ है, जो चखता है वही जानता है।

[२१६६]

गू उछलना उछालना—कलंक फैलना व फैलाना। क्यों वेचारे के ऊपर गू उछालते हो कहीं का न रहेगा।

गू उठाना—(१) नीच से नीच काम करना। हमें तो रुपये चाहिये वह कहें तो हम तो उनका गू भी उठाने को तैयार हैं। (२) बहुत सेवा करना, बेचारे ने पब्लिक के गू तक उठाये हैं।

गू का चोथ—किसी काम का न होना, बैठे रहना। वह तो गू का चोथ है न लीपने का न पोतने का (कहावत)।

गू का टोकरा सिर पर रखना—बदनामी और कलक धारण करना। क्यों बुढ़ापे में भंगन को घर मे डालकर गू का टोकरा सिर पर उठाते हो।

गू गोड़ते फिरना—जैसी तैसी औरतों से मिलते फिरना। क्यों घर की बहू छोड़ कर गू गोड़ते फिरते हो शर्म करो।

गू खाना—(१) बहुत नीच या अनुचित काम करना। क्यों गू खाता है इतना नदीदा है तुझे ये चीज़ें घर नहीं मिलतीं? (२) व्यर्थ और बदनामी का काम करना, मना करने पर भी जाना, बेइज्जत होने पर भी काम करना। कितनी वार फटकार दिया है, किन्तु फिर आता है और गू खाता है।

गू मुँह में देना—(१) बहुत धिक्कारना। (२) झूठा साबित करना। (३) जलील करना। देखो तुम डींग हाँकते अब सब के सामने तुम्हारे मुँह मे गू दे दिया अब ठीक रहे न!

गू मूत करना—मल मूत्र साफ करना। सारे गू मूत किये बड़ा हुआ तो ये हाल है।

गू में ढेला फेंकना—बुरे आदमी से छेड़ छाड़ करना। उसे कुछ मत कहो गू मे ढेला फेकोगे तो छीटे आवेंगी।

गू में नहाना—बहुत बदनाम व कलंकित होना, फजीहत होना। एक नीचता करने से ही गू में नहाना पड़ा।

गूदा निकालना (मारते मारते)—बहुत मारना. गहरी मार मारना। मैं मारते मारते तुम्हारा गूदा निकाल दूँगा नहीं तो सच बता दो। (मारते मारते गू निकालना अधिक प्रचलित है)।

गूलर का कीड़ा, भुनगा—दुनिया की बाबत कुछ न जानने वाला, कूप मंडूक, अनुभव प्राप्त करने के लिये घर या देश से बाहर न निकलने वाला व्यक्ति। आप तो गूलर के कीड़े हैं आपको क्या

[२१७८]

पता यूरोप कितना स्वर्ग बन चुका है ?

गूलर का फूल होना—वह फूल जो कभी देखने मे न आवे कभी न मिलने वाला व्यक्ति, दुर्लभ वस्तु या व्यक्ति। आप तो गूलर के फूल हो गये हैं ऐसा भी क्या काम कभी दर्शन ही नहीं होते।

गूलर का पेट फड़वाना—भंडा फोड़ कर छिपी हुई बात को प्रकट करना। हमने गूलर का पेट फड़वाया तो दुनिया एक नई ही दुनिया निकली जिसकी बाबत कुछ भी मालूम न था।

गूलर फोड़ कर जीव उड़ाना—गूलर का पेट फड़वाना, गुप्त भेद प्रकट करना। हमने गूलर फोड़ कर सब जीव उड़ा दिये अब उनका हृदय साफ है।

गृहस्थी सँभालना—घर का काम काज करना या देखना भालना घर का खर्च बर्दाश्त करना। अब बड़े हुए अपनी गृहस्थी संभालो सारी जिन्दगी हम ही खिलाते रहें क्या !

गैल करना (किसी को)—किसी को साथ कर देना। कोई दासी गैल कर दो अकेली जाना ठीक नहीं।

गैल जाना (किसी को)—(१) साथ जाना। मै उसकी गैल गई थी अकेली नहीं। (२) अनुसरण करना, नकल करना। हम तो उन्हीं की गैल जा रहे हैं क्योंकि उसी पथ पर विश्वास है।

गैल लगे फिरना—छाया के समान पीछा करना। यदि उसके गुणों का पता लगाना है तो उसके गैल लगे फिरो।

गैल लेना—साथ में ले लेना।

गोंदा दिखाना—(१) बुलबुलों को लड़ाने के लिये उनके बीच में आटे की गोली फेकना जिससे लड़ने लगे। (२) लड़ाई लगाना, कोई ऐसा लोभ जिसे प्राप्त करने के लिये दोनों पक्ष लड़ने लगे।

गोंदी सा लदना—(१) बहुत अधिक फल लगना, फलों से भर जाना। (२) शरीर में माता या और किसी तरह के बहुत से दाने निकलना। बेचारा गोंदी सा लद रहा है, पता नहीं कैसे फोड़े हैं जाते ही नहीं।

गोटी जमना जमाना या बैठना बैठाना उपाय या युक्ति सफल होना, प्राप्ति की तदबीर पूरी होना। उन्होंने तो अपनी गोटी बैठा ली अब हम रह गये कहाँ नौकरी ढूँढे।

गोटी मरना—हारना।

गोटी मारना—हराना, किसी की युक्ति काट कर अपनी चलाना।

[२१६१]

उन्होंने हमारी गोटी मार कर आप जीत ली ।

गोटी लाल होना—चेहरा सुर्ख होना, फायदा या प्राप्ति होना। आज कल तो उनकी गोटी लाल हो रही है ।

गोटी हाथ से जाना निकल जाना—लाभ की तदबीर बिगड़ना, नुकसान होना । हमारी तो गोटी हाथ से निकल गई वरना हम तो तुम्हारा काम बना देते ।

गोड़ टूटना—निराश होना । हमारे तो गोड उसी दिन से टूट गये थे, जब डाक्टर ने दवा न दी थी ।

गोड़ पड़ना—पैरों पड़ना । लाला जी मै आपके गोड़ पड़ता हूँ । अब की बार रुपये देकर मुझे बचा लीजिये ।

गोड़ पसारना—मर जाना । जिस घर में पैदा हुआ था अन्त में जाकर उसी घर में गोड़ पसारे । पैर सीधे करना । खाट काफी बड़ी गोड पसार क्यों नहीं सोते ।

गोड़ी करना—कमाना । सेठ जी साहब इतने बड़े परिवार में केवल मै ही एक गोड़ी करने वाला हूँ ।

गोता खाना—(१) जल में डूबना । (२) धोखे में आना, चक्कर में आना । (३) असफलता या सकट में होना । अभी तो वे गोते ही खा रहे हैं बड़ी डाँवाडोल स्थिति है, क्या होगा भगवान जाने ।—**देना**—डुबोना, (१) चक्कर मे फँसाना । (२) धोखा देना । क्यों बेचारे को गोता दे रहे हो किसी अमीर पर हाथ फेरो ।—**मारना, लगाना**—(१) डुबकियें लगाना । (२ स्त्री प्रसंग करना (असभ्य) । (३) बीच बीच में अनुपस्थित रहना । तुम तो २,२ महीने को गोता लगा जाते हो, मिलते ही नहीं ।

गोद का—(१) छोटा सा बच्चा । एक गोद का ('गोद में' भी) है दो बड़े हैं । (२) पास का, समीपी । गोद की चीज़ छोड़ कर इतनी दूर जाना ठीक नहीं ।

गोद देना—दत्तक बनाने के लिये अपना पुत्र देना ।

गोद बैठना—किसी का माना हुआ पुत्र बनना, दत्तक पुत्र बनना ।

गोद भरी रहना—गोद में बच्चे, लड़के सर्वदा बने रहना बच्चे वाली रहना । बहू तुम्हारी गोद भरी रहे ।

गोद पसार कर विनती करना—बहुत अधीरता से माँगना या प्रार्थना करना । मै गोद पसारती हूँ परमेश्वर दया कर ।

गोद भरना—(१) विवाह आदि शुभ अवसर पर बहू के पल्ले में नारियल आदि शुभ पदार्थ

डालना, संतान होना। उसकी गोद भरी है।

गोद लेना—दत्तक पुत्र बनाना।

गोबर करना—(१) गौ बैल आदि का गोबर त्यागना (२) गोबर के कंडे वग़ैरा पाथना या ऐसे ही कुछ और काम करना। (३) गोबर हटाना। (४) बिगाड़ देना। तुमने सारा गुड़ गोबर कर दिया।

गोबर गणेश होना—बहुत बुरे रूप वाला, मोटा-ढीगना, सुस्त, मूर्ख। वह तो गोबर गणेश है जहाँ बैठाल दो वहीं बैठ गया उठाओगे तभी उठेगा।

गोल गाल—(१) मोटे हिसाब से, बड़ी बड़ी संख्या गिन कर। (२) अस्पष्ट रूप से, साफ़ साफ नहीं। वह गोल गाल समझा कर चला गया, साफ खुला नहीं।

गोल बात—बात ऐसी तरह से बनाना जिससे पूरा भेद न खुले। गोल बात तो मै बताये देता हूँ ज्यादा पता लगाना हो वहाँ जाकर लगाओ।

गोल पारना, डालना—गड़ गड़ या हल चल मचाना। उधो सुनत तिहारो बोल, ल्यायो हरि कुशलात धन्य तुम घर घर पार्यो गोल।

गोल बाँधना—दे० गुट्ट बाँधना।

गोलमटोल—(१) दे० गोलगाल। (२) नाटा और मोटा, गुल गोथना सा।

गोल माल करना—मिलाव करना। हलवाई लोग दूध मे कुछ न कुछ पानी की गोल माल अवश्य कर देते हैं।

गोल माल होना—गड़बड़ या साजिश होना। क्या गोल माल है कोई चोर पकड़ा गया है क्या?

गोल होना—चुप हो रहना, चुप हो जाना।

गोला धार बरसना—मूसलाधार वर्षा होना। आज के अखबार मे था कि कल कलकत्ते में गोला धार बरसा है।

गोली खाना—बंदूक की गोली लगना। हमने लड़ाई में दस गोली खाई।

गोली मारना—उपेक्षा से छोड़ देना। इस पुरानी साइकिल को लेकर क्या करोगे गोली मारो, कोई अच्छी लेना।

गोहार मारना—मदद के लिये पुकार मचाना।

गोहार लड़ना—(१) पुकार तथा ललकार कर लड़ना (२) गँवारों का लाठियों से लड़ना। (३) एक का कई से लड़ना। वह गोहार से लड़ता है, दस दस आदमी नहीं ठहर पाते।

गौं का—(१) मतलब का, काम

का। गौं का काम पकड़ो। (२) मतलबी, खुदग़रज़। वह केवल अपनी गौं का है और किसी का नहीं।

गौं का यार—मतलबी दोस्त, केवल अपने मतलब के लिये साथ रहने वाला। वह गौ का यार है हमारे काम न आवेगा अपना पड़ेगा तो पैरों में लोटा लोटा फिरेगा।

गौं गाँठना—मतलब निकालना।

गौं निकालना—(१) गौं गाँठना। अब तो गौं गाठली ('गँठ गई') वे हम से अब बात भी क्यों करेंगे। (२) काम पूरा करना, स्वार्थ सिद्ध कर लेना। हमने तो गौं निकाल ही ली अब चाहे कल ही मर जाय।

गौं पड़ना—ज़रूरत पर काम पड़ना। हमें क्या गौं पड़ी है जो तुम्हारे दरवाजे खटखटाया करें।

घ

घंटा दिखाना—माँगने वाले या चाहने वाले को वस्तु न देना। दे तो दिया अब लेने जाओगे तो घटा दिखा देगा (असभ्य)।

घंटा हिलाना—(१) फिजूल का काम करना, कुछ काम न करना। यहाँ क्या घंटा हिला रहे हो वहाँ जाकर काम करो। (२) पछताना, हाथ मलना। वह तो हाथ से निकल गया अब तुम घंटा हिलाओ अब हाथ न आवेगा (असभ्य)।

घंटी उठाना या बैठाना—गले की सूजन को गले की घटी दबा कर मिटाना। बुढिया ने वंटी बैठा दी गला ठीक हो गया।

घटका लगना—मरते समय कफ से गला रुँधना।

घटती का पहरा—बुरे दिन, गिराव या अवनति का समय। घटती का पहरा है वरना वह किसकी गाली सुनता।

घट में बसना, बैठना, रमना या व्यापना—(१) हृदय मे रहना। जाके घट मे बसत राम हम तासों आस करें। (२) किसी बात का मन में जम जाना। उस दिन का उपदेश घट में रम गया अब मैं वैसे ही चलता हूँ।

घटाव पर होना—पानी की बाढ़ का कम होना, घटती का पहरा।

घटी आना या पड़ना—दे० घाटा आना।

घट्टा खुलना—दरार या छेद हो जाना। वर्षा से छत मे घट्टा खुल गया है।

घट्टा पड़ना—अभ्यास होना, मश्क़ हो जाना। घट्टा पड गया है दो दो मन की बोरी उठा लेता है।

घड़ी गिनना—(१) मौके की बाट जोहना, चाह से वक्त जोहना। मै वह घड़िये गिन रही हूँ जब राम गद्दी पर बैठेगे। (२) मरने की घड़ी होना, मौत पास खड़ी होना। मानहु मीचु घरी गनि लेई।

घड़ी तोला घड़ी माशा—अभी कुछ अभी कुछ, जरा देर में बात बदल जाना। आपकी बात का क्या विश्वास करे, घड़ी तोला और घड़ी माशा, आखिर कितना समझे।

घड़ी में घड़ियाल होना या बजना—(१) क्षण भर में मौत आना, मौत का क्या ठिकाना। अजी घड़ी मे धड़ियाल बजता है कोई विश्वास नही कल हम ही न हों (२) दशा पलटते देर नहीं लगती।

घड़ी साग्रत पर होना—मरने के करीब होना।

घड़ों पानी पड़ जाना—बहुत लज्जित होना, नत ग्रीव होना। ज्यों ही मैने पोल खोली बिचारे पर घड़ों पानी पड़ गया, फिर न बोला।

घन का होना—बहुत अधिक होना। बड़े घन के बाल है, या घन के जगल हैं।

घन चक्कर में आना, पड़ना—फेर या संकट में फँसना। हम तो घन चक्कर में आ गये हैं क्या करें।

घन चक्कर होना—मूर्ख होना। क्या घन चक्कर हो, अरे कुछ समझते भी हो या योंही!

घपचा बांध कर पानी में कूदना—घुटनों को छाती से लगाकर हाथों में कस कर पानी में कूदना, एकदम काम में पड़ना। वह तो लड़ाई मे घपची बाँधकर कूद पड़ा आव देखा न ताव और शत्रु को मार भगाया।

घपले में पड़ना—(१) चक्कर या गड़-बड़ में होना। हम तो ऐसे घपले में पड़ गये हैं न इधर की कह सकते हैं न उधर की। (२) भीड़ या शोर-गुल हल्ले-गुल्ले में पड़ना।

घमंड टूटना—अभिमान दूर होना। मेरे सामने अच्छे अच्छों के घमड टूट गये तुम क्या चीज़ हो। **—निकालना**—घमंड दूर होना, ऐंठ चूर चूर हो जाना। तुम्हारा सारा घमंड मै दो थप्पड़ों में निकाल दूँगा!—**पर आना या होना**—अभिमान करना या इतराना। क्या घमंड पर आते हो तुम नहीं कर सकोगे।

घमसान करना, ठानना, मचाना—भारी युद्ध करना, लड़ाई तहलका मचा देना। गोरा बादल

[२२४७]

ने घमासान ठान दिया और पद्मिनी को छुड़ा लाये।

घर-अपना समझना—कुछ शर्म करने की जगह न होना, आराम की तथा घर जैसी ही जगह। अपना ही घर समझिये जो आवश्यक हो नि.संकोच कह दीजिये।

—उजड़ना—(१) कुटुम्ब नाश होना, सपत्ति आदि नष्ट होना। डाके के कारण हमारा तो घर ही उजड़ गया, कुछ भी तो न रहा। (२) घर के आदमियों का तितर-बितर होना या मर जाना। लड़के पढ लिख कर शहरों में चले गये, घर उजड़ ही गया समझो।

—उठना—(१) घर की दीवार बनना। (२) घर बिगड़ जाना, कहीं दूसरी जगह चले जाना।

—करना—(१) निवास करना, रहना। उन्होंने जगल में घर कर लिया है। (२) जमना, जगह करना, पसन्द आना। तुम्हारी बातों ने मेरे हृदय मे घर कर लिया है, विश्वास करो मैं तुम्हारे हर तरह साथ हूँ। (३) अपने लिये जगह बनाना, करना। पैर ने जूते में घर नहीं किया है इसी लिये जूता कसा मालूम होता है। (४) छेद करना, बिल बनाना। कीड़े काठ में घर करते हैं। (५) घर का इंतजाम करना। अब तुम बड़े हुए घर करना सीखो। (६) किफायत से चलना। (७) अपना अलग बचाना या कजूसी से जोड़ना। हमें घर करने की क्या जरूरत है जो कुछ है बाल बच्चों का है। (८) किसी स्त्री का खसम कर लेना। वह तो कहार के साथ अपना घर कर बैठी है। (आँख मे घर करना अर्थात् हृदय मे घर करना। देखो 'आँख' के मुहाविरों मे)।

घर आबाद करना—शादी कर लेना। तुम्हारे मित्र ने तो घर आबाद कर लिया है अब तुम भी कर लो।

घर कहना—(१) ठीक ठीक स्वर ताल के साथ साथ गाना। (२) चिड़ियों का मधुर स्वर से बोलना।

घर का—(१) अपना, निज का। घर का मकान, पैसा या बगीचा है। (२) आपस का, अपने आदमियों का। घर का मामला है, घर की बात है। (३) अपने संबन्धी, भाई बन्धु, सुहृद। तीन बुलाये तेरह आए नये गाँव की रीत, बाहर वाले खा गये घर के गावे गीत। (४) पति, स्वामी। घर के हमारे परदेस को सिधारे याते दया करि बूझी हम रीति राह वारे की।

घर का अच्छा—धनवान, अच्छे ख़ानदान का।

घर का आँगन हो जाना—(१) खँडहर हो जाना, घर उजड़ जाना। (२) घर मे संतान उत्पन्न होना।

घर का आदमी—कुटुम्ब का या बहुत समीपी आदमी। आप तो घर के आदमी हैं आपसे क्या छिपाना?

घर का उजाला—(१) कुल दीपक, कुटुम्ब की इज़्ज़त, कीर्ति तथा समृद्धि बढ़ाने वाला। लड़का तो घर का उजाला है कितने ग़रीब थे अब लखपति कर दिये हैं। (२) बहुत सुन्दर, मनोहर। (३) लाड़ला, बहुत प्यारा।

घर का काटे खाना या काट खाने दौड़ना—घर सूना या किसी बिना भयानक लगना। घर जाता हूँ तो घर काटने दौड़ता है अब उनके बिना अच्छा ही नहीं लगता।

घर का बोझ उठाना या सँभालना—गृहस्थी का खर्च या काम काज खुद करना। चौदह बरस का था जब से ही घर का बोझ सँभाला है।

घर का भेदी—छिपा हुआ भेद जानने वाला, भेद दूसरे से कह देने वाला। घर का भेदी लंका ढावे (कहावत)।

घर का भोला—बहुत सीधा सादा, बहुत मूर्ख। आप तो ऐसे ही घर के भोले हैं जो इतना नुक़सान मान जावेगे।

घर का न घाट का—(१) कहीं का न रहना, इधर उधर का न रहना। धोबी का कुत्ता घर का न घाट का (कहावत) (२) जिसके रहने का कोई स्थान निश्चित न हो। (३) बेकार, निकम्मा।

घर का रास्ता नापना लेना पकड़ना—अपने काम से काम, दूर होना, चले जाना। जाओ, घर का रास्ता नापो।

घर का रास्ता समझना, जानना—सहल सीधा काम। इस काम को घर का रास्ता न समझना।

घर का शेर, मर्द, बहादुर, या वीर—(१) सुरक्षित स्थान पर ही शेखी बघारने वाला, घर के बाढ़े। तुम घर ही के मर्द हो बाहर ज़बान तक पर ताला लग जाता है।

घर का नाम उछालना—(१) कीर्ति कमाना। तुमने ख़ूब घर का नाम उछाला! (२) घर का नाम डुबोना।

घर का नाम डुबोना—घर की बदनामी कराना, कुल कलंकित करना। तुमने तो घर का नाम ही डुबो दिया न केवल तुम्हें बल्कि घर भर को लोग बुरा कहते हैं।

घर की—स्त्री, घर वाली। हमारे घर की तो बड़ी फूहर है।

घर की तरह बैठना—आराम से बैठना, निःसकोच बैठना। घर की तरह बैठिये पैर ऊपर कर लीजिये।

घर की पूँजी—गाँठ का पैसा निज का धन। जिसने घर की पूँजी उड़ा दी वह दूसरों की क्या परवाह करेगा?

घर की बात—(१) कुल से सम्बन्ध रखने वाली बात। (२) आपस की बात। (३) छिपी हुई बात। घर की बात है आपको कैसे बता दे?

घर के आले लेते फिरना—घर के प्रत्येक स्थान कोने कोने और आले आले ढूँढना।

घर के घर—(१) गुप्त रीति से, भीतर ही भीतर। घर के घर तुमने निश्चय कर लिया हमको बताया भी नहीं। (२) बहुत से घर। प्लेग ने घर के घर साफ़ कर दिये।

घर के घर बंद होना, साफ हो जाना—घर के बहुत से आदमी मर जाना, उजड़ जाना, घरों के ताले लग जाना, संतान न बढ़ना। आग ऐसी लगी कि घर के घर बंद हो गये।

घर के घर रहना—हानि लाभ कुछ न होना, मूल धन ज्यों का त्यों रहना। हम तो घर के घर रहे न कुछ गया न आया।

घर के बाढ़े—घर के मर्द, बाहर कुछ न कर सकने वाले। मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े, द्विज देवता घरहि के बाढ़े। ग्वालिन घर ही की बाढ़ी, निस दिन देखत अपने ही आँगन ठाढ़ी।

घर की खेती—अपने यहाँ उत्पन्न होने वाली वस्तु। बाल तो घर की खेती है दो महीने पीछे फिर हो जावेंगे।

घर को सिर पर उठाना—(१) कुटुम्ब के सब आदमियों को तंग कर देना। हम क्या कहें इसकी इन बातों से हम ख़ुद दुखी हैं सारा घर सिर पर उठा रखा है। (२) बहुत शोर करना।

घर खाली छोड़ देना—(१) मौका और साधन बाकी रखना। आपके लिये हमने एक घर खाली छोड़ दिया उस बहाने तुम मिल सकते हो। (२) गोट के लिये जगह छोड़ना। (३) जगह छोड़ना। (४) वार न करना या चूक जाना।

तुमने जान कर घर खाली छोड़ दिया।

घर खोज मिटना—घर का नामो निशान भी न रहना।

घर खोना—घर का सत्यानाश करना, संपत्ति सारी नष्ट करना। मतलबी यारों की संगति मे पड़कर उसने अपना घर ही खो दिया, अब पैसों का मोहताज़ है।

घर घर होना—सब के यहाँ, स्थान स्थान पर। घर घर यही हाल है सास बहू की नहीं बनती।

घर घर के हो जाना—बेठिकाने, कहीं के न रहना, मारे मारे फिरना। तेरे मारे यातुधान भये घर घर के।

घर घलना—(१) परिवार का नाश होना या बुरी हालत होना। (२) वंश में कलंक लगना। कहे ही बिना घर कैते घलेजू।

घर घाट एक करना—तूल कलाम करना, बखेड़ा करना।

घर घाट देखना—(१) चाल ढाल, रीति रिवाज, आर्थिक हालत जाँचना। पहिले उनका घर घाट देख लो तब कुछ करो। (२) ढब या ढंग। वह और ही घर घाट का आदमी है। (३) ठौर ठिकाना। घर घाट देख कर संबन्ध जोड़ा जाता है।

घर घाट मालूम होना—(१) कुटुम्ब की उच्चता या घर-गाँव की बाबत मालूम होना। हमे आपके घर घाट सब मालूम है। (२) रीति रिवाज, रंग ढंग, चाल ढाल तथा रुपये-पैसे का ज्ञान (३) तरीके, सहायक और चलाकी का ज्ञान। मुझे तुम्हारे सब घर घाट मालूम हैं मै उन्हें बिगाड़ दूँगा।

घर घालना—(१) मोहित करना, वश में करना, प्रेम से व्याकुल करना। इसे सयानी हो जाने दो फिर तो न जाने कितने घर घालेगी। (२) कुल दूषित करना, घर बिगाड़ना। इस कुटनी ने न जाने कितने घर घाले हैं। (३) परिवार मे अशांति फैलाना, हानि पहुँचाना, नाश करना। शराब ने न जाने कितने घर घाले हैं। (४) दुनिया का ज्ञान होना, चालाक होना, फँसाना। इन्हें क्या सिखाते हो इन्होंने कितने ही घर घाले हैं।

घर घुसना—(१) अतःपुर में ही पड़ा रहने वाला, घर में ही बैठा रहने वाला। आप तो विवाह के बाद घर घुसने होगये दुकान पर भी तो नहीं आते। (२) घर तक में आने जाने वाला। वह बदमाश है उसे घर घुसना मत बनाओ।

घर चढ़ कर लड़ने आना—लड़ाई करने के लिये किसी के घर

जाना। वह सौत घर चढ़ कर लड़ने आई मैंने भी ख़ूब ही पर्दे फाड़े सौत के, मै ख़ूब जानती हूँ वह कैसी है।

घर चलना—घर के ख़र्च का पूरा पड़ना, निर्वाह होना। घर कैसा चला रहा है ? आनन्द है।

घर जमना—घर का सामान यथा स्थान लगना, घर ठीक होना, गुज़ारा ठीक चलना, घर स्थायी हो जाना। अब दोनों लड़के यहीं नौकर हो गये हैं घर जम गया है।

घर जाना—(१) घर का नाश होना। (२) घर के आदमियों का या स्त्री का कहीं जाना। घर काशी जा रहा है।

घर जुगुत—घर का प्रबध।

घर डुबोना—(१) घर भर की बदनामी कराना। (२) घर की संपत्ति नष्ट करना।

घर डूबना—(१) घर बरबाद होना (२) कलंकित होना। (३) संपत्ति समाप्त हो जाना, नष्ट हो जाना।

घर तक पहुँचना—(१) माँ बहिन की गाली देना। घर तक मत पहुँचो मुझे कह लो जो कहना है। (२) घर के आदमियों तक से शिकायत करना।

घर तक पहुँचाना—(१) आखीर तक करना या आखीर करना, पूरा करना। जिस काम को उठाओ उसे घर तक पहुँचाओ। (२) कायल करना, बुद्धि ठिकाने लाना। झूठे को घर तक पहुँचा दिया, जितनी झूठ थी सब उड़ गई सच्ची सच्ची रह गई।

घर देखना, देख लेना पाना—(१) माँगना। यहाँ कुछ न मिलेगा दूसरा घर देखो। २) और कोई पकड़ो, किसी और से कहो। हम कुछ न देगे कोई और घर देखलो। (३) ढर्रा, तरीका मालूम हो जाना। बदमाश को ७००) देने का सोच नहीं उसके घर देख लेने का सोच है कल को फिर मुझे ही पकड लेगा। (४) आदत या तरीका, मनुष्य को जान जाना। तुमने हमारा ही घर पा लिया है इसलिये दबा लेते हो।

घर पड़ना—(१) पत्नी भाव से घर रहना। (२) प्राप्त होना, मोल मिलना। ५) मन तो घर पड़े हैं तुम्हें कैसे ४) में दे दें।

घर फूँक तमाशा देखना—संपत्ति बरबाद करके मनोरंजन करना, हानि करके वाहियात मौज उड़ाना। हमने घर फूँक तमाशा देखा है ये बेचारे रुपया बहाने मे क्या हमारी बराबरी कर सकेंगे ?

घर फोड़ना—घर में लड़ाई, उपद्रव और झगड़ा खड़ा करना।

घर बंद होना—(१) गोटी चलने को जगह न होना। (२) घर मे ताला लग जाना। (३) घर में कोई न रहना, सब मर जाना, चले जाना। (४) किसी स्थान या घर से संबन्ध न रहना। उनके लिए अब घर बन्द हैं वह इधर झाँक भी नहीं सकते। (५) उन्नति का मार्ग न रहना। बिना बी० ए० पास किए कोई घर खुला हुआ नहीं है सब बद हैं, अत. पास कर लो।

घर बड़े की सैर—कैदखाना, जेल जाना। तुझे बड़े घर की सैर कराके छोड़ूँगा।

घर बनना—(१) रुपये पैसे से घर पूर्ण होना, धनवान होना। सच पूछो तो लड़के से इनका घर बन गया, ५००) महीना कमाता है। (२) मकान की इमारत तैयार होना।

घर बार की होना—घर की मलकिन होना आज कल तो राज महल में छोटी रानी ही घर बार की है। शादी होना। यह लड़की तो घर-बार की है।

घर बिगड़ना—(१) किसी की बहू बेटी को कुमार्ग पर ले जाना, किसी औरत को बहकाना। इस कुटनी ने बड़े बड़े शरीफ़ घर बिगाड़ दिए है। (२) घर मे फूट फैलाना, लड़ाई करा देना। पति देवता को सिखा कर मेरा घर तो बिगाड़ ही दिया। (३) घर की समृद्धि नष्ट करना, उजाड़ना। क्यों फिजूल खर्ची करके अपना घर बिगाड़ रहे हो।

घर बनाना—(१) कहीं जमकर या स्थायी तौर पर रहना। उन्होंने तो दिल्ली ही अपना घर बना लिया है यहाँ आते ही नहीं। (२) रुपये पैसे से घर पूर्ण करना। (३) मकान तैयार करना। (४) रुपया बचा कर छिपा कर रखना। नौकरों पर कोई आंख रखने वाला नहीं वे अपना घर बना रहे हैं।

घर बारबाद होना—परिवार या समृद्धि नष्ट होना।

घर बसना—(१) दुलहा दुलहिन का समागम होना। (२) घर में बहू आना, ब्याह होना। (३) घर की दशा अच्छी होना। (४) घर आबाद होना, घर में लोगों का रहना।

घर बसाना—(१) पति को या पत्नि को मना कर घर रहने के लिये तैयार करना। (२) घर आबाद करना। (३) घर की दशा

अच्छी करना, रुपये पैसे से भरा पूरा करना।

घर बैठना—(१) काम छोड़ना, काम पर न जाना। वह चार दिन कोई काम करता है फिर घर बैठ रहता है। काम नहीं होता तो घर बैठो। (२) जीविका न रहना, बेकार या बेरोज़गार रहना। आज कल घर बैठा है कोई काम दिलाओ। (३) घर ही में अर्थात् एकांत में बैठे रहना। (४) वर्षा आदि से मकान गिरना। लगातार २४ घंटों की वर्षा से कितने ही घर बैठ गए। (५) किसी के घर पत्नी भाव से रहना। वह अब ठाकुर के घर बैठी है।

घर बैठी रोटी—बिना मिहनत के जीविका। मेरे घर बैठी रोटी लिये जाओ और क्या चाहिये?

घर बैठे—(१) बिना हाथ पैर हिलाये, बिना परिश्रम। घर बैठे १००) मिलते हैं, कम हैं! (२) बिना कहीं गए आए, जाँच पूछ किए बगैर, अवस्था या परिस्थिति पहचाने बिना। घर बैठे बातें बनाते हो वहाँ जाओ तो ज्ञान हो क्या बीतती है। (३) घर में ही, बिना जाने आने का कष्ट उठाये। पुस्तकों से घर बैठे विदेशों की सैर हो जाती है।

घर बैठे की नौकरी—बिना परिश्रम किए पैसा मिलना घर बैठे की नौकरी है कुछ लिख दिया पैसे आ गए।

घर बैठे शिकार खेलना—बिना काम किये धन कमाना। वह तो ऐसा चालाक है कि घर बैठे ही शिकार खेलता है।

घर भरना—(१) घर को धन धान्य से पूर्ण करना, माल घर में लाना। उसने बेईमानी की कमाई से अपना घर भरा है। (२) घर का प्राणियों से भरना। बच्चों से घर भरा है। (३) घाटा पूरा होना, कमी पूरी करना। दोनों लड़कियें ग़रीब घर मे हैं किसका किसका घर भरूँ। (४) छेद मूँदना। चूहों के घर भर दो साँप का डर है।

घर में आना (कुछ)—प्राप्त होना, निजका लाभ। मेरे घर में क्या आता है ये तो सरकार के रुपये हैं।

घर में कहना—(१) स्त्री आदि से कह आना। मैंने घर में नहीं कहा है कि रात को न आऊँगा। (२) ठीक ठीक स्वर के साथ कहना। घर में कहो क्या गवैये के यही ढंग होते हैं।

घर में गंगा—बिना दौड़ धूप किये किसी वस्तु की प्राप्ति। तेरे तो घर में गंगा है सब पढ़े लिखे

हैं, तुझे यहाँ खत पढ़वाने आने की क्या ज़रूरत।

घर में घाम या धूप आना—बड़ी कठिनता का सामना होना। घर में घाम आई और समझो बरबादी हुई।

घर में डालना—किसी औरत को अपनी औरत बना लेना।

घर में पड़ना—(१) प्राप्त होना, मूल्य होना। घर मे तो २) पड़ी हैं बेचते ४) हैं। (२) किसी के घर में पत्नी भाव से रहना।

घर में बैठे शिकार खेलना—घर बैठे रुपया कमाना, घर बैठे माल मारना। तुम्हारे ऐसे भाग्य-वान घर बैठे शिकार खेलते हैं।

घर से—(१) निज का धन, पास से, पल्ले से,। आपके घर से क्या जाता है खर्च होगा तो उनका होगा। (२) स्त्री। (३) पति। बहिन! तुम्हारे घर से तो बहुत पंडित हैं।

घर से देना—(१) पास या पल्ले से देना। वह तुम्हारा रुपया देता ही नहीं है तब क्या मै घर से दूँगा? (२) मूलधन में से खर्च करना। फायदा तो क्या हुआ ५००) और घर से देने पड़े। (३) अपना रुपया खोना, खुद नुकसान उठाना। जमानत मत करो नहीं तो घर से देने पड़ेंगे।

घर से पाँव निकालना—(१) मर्यादा से बाहर होना, स्वेच्छाचार करना, इधर उधर घूमना। तुमने बहुत घर से पाँव निकाले हैं मै अभी जाकर कहता हूँ। (२) बाहर जाना। बहू ने घर से पाँव निकाले और बाहर की हवा लगी।

घर से बाहर पाँव निकालना—(१) वित्त या शक्ति से अधिक कार्य करना। जिसने घर से बाहर पाँव निकाले वह उजड़ा।

घर से बेघर करना—घर से निकाल देना। क्यों बेचारे को १००) के लिये घर से बेघर करते हो।

घर सेना—(१) घर में ही पड़े रहना। (२) बेकार, बिना काम• धधे के बैठे रहना। तुम घर सोते रहोगे या कुछ काम का भी विचार है।

घर होना—(१) गृहस्थी चलना, निर्वाह या गुज़र होना। ऐसे करतबों से कहीं घर होता है। (२) घर के प्राणियों में मेल होना, घर मे सुख शान्ति रहना। कोई कहीं के और कोई कहीं के हैं परन्तु सब ऐसे रहते हैं कि एक घर है।

घर्रा चलना—मरते समय कफ़ के कारण साँस के साथ आवाज होना।

घरौंदा भरना, मारना, लेना—

गहरी नींद मे सोना। घर्राटे भर रहा है अब मत जगाओ।

घाँइयाँ बताना—चकमा देना, धोखा या झाँसा देना। न देना हो तो साफ कहो, घाँइयाँ क्यों बताते हो।

घाट घाट का पानी पीना—(१) बहुत घूम फिर कर तजुर्बा हासिल करना। उन्होंने घाट घाट का पानी पिया है वह चेहरे से पहचान लेते हैं। (२) बहुत जानकार होना, अनेकों जगहों का ज्ञान होना। उन्होंने घाट घाट का पानी पिया है, इस दफ्तर में क्या काम ऐसा होगा जो वे न जानते हों। (३) सब जगह घूमना। मै तो घाट घाट का पानी पीता हूँ मुझे यहाँ रहने की क्या ज़रूरत है?

घाट धरना—ज़बरदस्ती करने के लिये मार्ग रोकना। घाट धर्यौ तुम यहै जानिकै करत ठगन के छंद।

घाट मारना—नाव या पुल का महसूल दिये बिना जाना। हमारा कई बार घाट मार चुके हैं हम नाव पर न चढ़ायेंगे।

घाट में आना—चक्कर में आना, फँसना। अब के आया है बेटा कूँडी के घाट में अब रुपये वसूल करके ही छोड़ूँगा।

घाट लगना—(१) नाव का किनारे पर पहुँचना। तूफान में कैसे घाट लगै नैया। (२) कहीं ठिकाना या आश्रय पाना। कहीं घाट लगे तो पता चले। (३) नाव चढ़ने के लिये पूरे आदमी होना। अब २१ हैं घाट लगा है चलो।

घाटा उठाना—नुक़सान सहना, हानि में पड़ना। इस रोजगार में ५०००) का घाटा उठाया।

घाटा भरना—(१) कमी पूरी करना, हानि का मूल्य देना। (२) मूल धन में से रुपया देना।

घात चलाना—जादू टोना करना, मारण प्रयोग करना। क्या घात चलाओगे मरूँगा तब जब आयु शेष होगी।

घात ताकना—मौके की प्रतीक्षा करना। देखिये घात ताक रहा हूँ, मौका लगा बस उसी समय धर दबाऊँगा।

घात पर चढ़ना या घात में आना—हत्थे चढना, वश में आना। घात पर चढ़ गये तब तो ठीक ही कर दूँगा।

घात में फिरना—ताक में घूमना, अनिष्ट करने के लिये मौका ढूँढना। वह तुम्हारी घात में पकड़े गये तो बस, ख़तम।

घात में बैठना—हमला करने के लिये छिप कर बैठना। वे लोग पुल के नीचे मेरी घात में बैठे थे

जैसे ही मैं निकला उन्होंने लाठी का वार किया ।

घात में रहना—किसी के विरुद्ध कार्य करने के लिये मौके की ताक में रहना ।

घात में होना—विरुद्ध कार्य के लिए समय की प्रतीक्षा में होना ।

घात लगना—मौका मिलना, सुयोग प्राप्त होना । घात लगते ही सौ पचास मार लेगा ।

घात लगाना—मौका ढूँढना, तदबीर करना, युक्ति भिड़ाना । केलि के राति अघाने नही दिन ही में लला पुनि घात लगाई । (२) ताक में रहना, प्रतीक्षा में । शेर शिकार की घात लगा रहा है, डाकू लूटने की घात मे लगा है ।

घान उतरना—(१) कोल्हू में डाली हुई वस्तु का तेल या रस या कढ़ाई में से पकवान का निकलना । पहिले घान उतरा था उसकी जलेबी दी हैं । (२) बार, तैयार की हुई वस्तु । पहिला घान तुम्हारा ।

घाम खाना—धूप में रहना । जाड़े के दिनों में मै जब तक अच्छी तरह घाम नहीं खालेती थी मेरा जाड़ा न छूटता था ।

घाल न गिनना—पासंग बराबर भी न समझना, तुच्छ समझना । रघुबीर बल गर्वित विभीषण घाल नहिं ताकहँ गिनै (तुलसी) चढ़हिं कुँवर मन करैं उछाहू, आगे घाल गनै नहिं काहू (जायसी) ।

घाव पर नमक छिड़कना—दुख के समय और चिढ़ाना, रज में और रंज पहुँचाना । क्यों घाव पर नमक छिड़कते हो मै तुम्हें भी मार बैठूँगा ।

घाव पूजना या भरना—घाव अच्छा होना ।

घाव हरा हो आना—दबा हुआ दुख फिर याद आ जाना, दुख की याद से दुखी होना । मैं जब उसकी फोटो देख लेता हूँ घाव हरा हो आता है ।

घास काटना या खोदना—(१) तुच्छ काम करना । करते क्या हैं घास काटते और कौन बाबू बन गये हैं । (२) व्यर्थ या निरर्थक प्रयत्न करना, तुमसो प्रेम कथा को कहिबो मनो काटिबो घास । (३) काम सँभाल कर न करना, जल्दी जल्दी करना । पढ़ते हो या घास काटते हो, धीरे धीरे पढ़ो ।

घास खाना—(१) पशु के समान हो जाना । (२) तुच्छ वस्तु पर गुज़ारा करना । हम तो घास खाकर दिन बिता रहे हैं ।

घास छीलना—(१) खुरपे से घास को काटना । (२) दे० घास काटना ।

घास फूस लाना—(१) बेकाम चीज़ लाना। योंही घास फूस उठा लाते हो देखते नही अच्छी है कि ख़राब। (२) कूड़ा करकट।

घिग्घी बँधना—(१) डर के मारे मुँह से साफ़ शब्द न निकलना। साहब के सामने जाते ही घिग्घी बँध गई कुछ भी न कह सके। (२) रोने में जोर से रुक रुक कर साँस निकलना, हिचकी बँधना।

घिन खाना—नफ़रत करना, घृणा करना।

घिरिया में घिरना—दुबिधा, असमजस या कठिनता में फँसना। हम तो ऐसे घिरिया में घिरे हैं कि कुछ नहीं कर सकते।

घिस घिस के चलना—बहुत दिनों तक या ख़ूब काम में लाना या चलना। मै इस जूते को घिस घिस कर चलता हूँ साल भर हो गया फटता ही नहीं।

घिसनी चलना—घुटनों के बल चलना यदि हमारा मुन्ना बीमार न पड़ता, तो अब तक कब का घिसनी चल उठता।

घिस लगाने को नहीं—जरासी भी नहीं।

घी का कुप्पा लुढकाना—(१) बहुत नुक्सान हो जाना, सारे धन की हानि हो जाना। तुम तो ऐसे मुँह लटकाये बैठे हो जैसे घी का कुप्पा लुढक गया हो। बड़े भारी धनी का मरना।

घी के कुप्पे से जा लगना—माल या धन की ख़ूब प्राप्ति होने वाले स्थान पर पहुँचना।

घी के जलना, घी के दीए जलना—(१) ख़ुशी होना। उसके मरने से आपके तो घी के दीये जलेंगे। (२) मनोरथ पूरा होना। (३) उत्सव होना, आनन्द मंगल होना। (४) धन, ऐश्वर्य, समृद्धि होना। वह बड़े आदमी हैं उनके यहाँ घी के दिए जलते हैं।

घी के दीए भरना—(१) आनन्द मंगल मनाना। भूप गहे ऋषिराज के पाय कह्यो अब दीप भरो सब घी के। (२) चैन की बंसी बजाना, मज़े उड़ाना। बाप के मरने पर घी के दीए भर रहा है।

घी खिचड़ी होना—ख़ूब घुटना, बड़ी दोस्ती। आज कल तो वे दोनों घी खिचड़ी हो रहे हैं, क्या मेल खाया है?

घी में होना (पाँचों अँगुली) फायदे और सुख में होना।

घुँघरू बाँधना—(१) नाचने में चेला बनाना। मैंने इसके घुँघरू बाँधे है, मैं तो उसका उस्ताद हूँ। (२) नाचने को तैयार होना।

घुँघरू बोलना—गले में से साँस के साथ कफ की आवाज़ आना।

घुँघरू सा लदना—शरीर पर बहुत फुंसी चेचक या छाले आदि होना।

घुडी खोलना—चित्त से दुर्भाव निकालना। बाबा मन की घुडी खोल, तेरा होवेगा निस्तार।

घुटना टेकना—(१) घुटनों के बल बैठना। (२) झुक कर प्रार्थना करना। उसने मेरे सामने घुटने टेक दिया, मुझे दया आगई।

घुटनों में सिर देना—(१) सिर नीचा किए उदास बैठना, चिंता से मुँह लटकाये बैठना। (२) शर्मिन्दा या लज्जित होना।

घुटनों से लग कर बैठना—हर वक्त पास ही रहना।

घुट घुट कर मरना—पानी या हवा के बिना मर जाना। घर में भीतर वे थे बाहर चारों तरफ आग थी, बेचारे घुट कर मर गये। (१) अंदर अंदर दुखी होकर मरना।

घुटा हुआ—(१) पक्का चालाक या बदमाश। (२) पूरा तजुर्बेकार।

घुन लगना—(१) अनाज या लकड़ी का पोला हो जाना। (२) किसी का अंदर ही अंदर क्षीण होना। लड़के के मरने के बाद उसे घुन लग गया और वह दुबली होती चली गई, आज बेचारी चल ही बसी।

घुमा घुमा कर पूछना, बातें करना—तर्क वितर्क से या हेर फेर से (बार बार पूछना या) बातें करना।

घुमाव फिराव की बात—गोल मोल या पेचीदी बात। घुमाव फिराव की बात मत करो साफ कहो असली किस्सा क्या है?

घुल घुल कर काँटा होना—क्षीण और दुबला हो जाना, हड्डिये हड्डिये रह जाना।

घुल घुल कर मरना—बहुत क्षीण होकर दुख भोग कर मरना।

घुल घुल कर बातें करना—अभिन्न हृदय होकर या घनिष्टता से बाते करना। आज तो बड़ी घुल घुल कर बाते हो रही हैं आखिर क्या माजरा है? घुट घुट कर बातें होना भी प्रचलित है।

घुल मिलकर—खूब ही मेल जोल से।

घुला घुला के मारना—तंग करना। इतने दिनों तक बेचारी को घुला घुला के मार डाला।

घुला हुआ होना—बहुत वृद्ध या भीतर से क्षीण और असाध्य। घुला हुआ बीमार है, बचना मुश्किल है।

घुस कर बैठना—(१) सामने न

आना, छिप रहना। घुस कर क्यों बैठती है खुद पूछ न, तेरा क्या जेठ लगता है। (२) पास पास या सट कर बैठना।

घूँघट उठाना—(१) पर्दा फाश करना। (२) मुँह पर से पल्ला ऊपर करना। (३) आँख खोलना, चेत। घूँघट उठा दिवाने सामने खुद ही श्याम खड़े हैं।

घूँघट उलटना—दे० घूँघट उठाना।

घूँघट करना निकालना, मारना—(१) घोड़े का पीछे की ओर गरदन मोड़ना। (२) पल्ला नीचा करना, मुँह छिपाना, परदा करना।

घूँघट काढ़ना—दे० घूँघट करना (२)।

घूँघट खाना—लड़ाई में पीठ दिखाना, युद्ध से मुँह मोड़ना।

घूँट फेंकना—(१) मुँह भर जाने लायक फेंक देना। (२) पीने से पहिले थोड़ा सा पृथ्वी पर डालना (देवता का अंश या नजर न लगे इस प्रयोजन से)।

घूँट लेना भरना—(१) थोड़ा-थोडा कर के पीना। घूँट मत लो, एक साँस मे सब दवा पी जाओ। (२) वह आज कल दुख के घूँट भर रहा है।

घूंसा लगाना—मुट्ठी से मारना। जैसे ही उसने गाली दी, मैंने पकड़ कर तीन चार घूसे लगाये बस ठीक हो गया।

घूँसों का क्या उधार?—मार-पीट कर बदला फौरन ले। घूसों का क्या उधार आप मेरा बुरा करेंगे मै तुम्हारा करूँगा।

घूम पड़ना—नाराज़ हो उठना, यकायक लड़ाई हो पड़ना। मैं तो समझाने गया था वे उल्टे मुझ पर ही घूम पड़े।

घूर घूर कर देखना—आँखें गड़ा गड़ा कर या टकटकी लगा कर देखना। क्यों घूर घूर कर देखते हो, रंडी है।

घेरा डालना—किसी किले को घेर लेना। मुग़ल सेना अहमद नगर पर कितने ही दिनों से घेरा डाले पड़ी रही, किन्तु उसे विजय न कर सकी।

घोट घोट कर मारना—दुख दे दे कर मारना।

घोटना गला—मेहनत से कम मजदूरी देना, अधिक पैसा वसूल करना। क्यों ग़रीबों का गला घोटते हो, पाप की कमाई है।

घोड़ा उठाना—इस बन्दूक के घोड़े को ऊपर उठाओ तब कार-तूस रक्खो।

घोड़ा चढ़ाना—बन्दूक का घोड़ा उठाकर गोली मारने की तैयारी

करना। कमांडर की आज्ञा सुनते ही सब सिपाहियों ने अपने घोड़े चढ़ा लिये।

घोड़ा फेंकना—घोड़ा तेज़ दौड़ाना। उस डाकू के पीछे पुलिस ने भी अपने घोड़े फेंके और तुरन्त पकड़ लिया।

घोड़ा बेच कर सोना—निश्चिन्त होकर सोना, गहरी नींद में सोना।

घोड़ा भर जाना—चलते चलते घोड़े का दम फूल जाना या भर जाना।

घोल पीना—(१) शरबत की तरह पीना। (२) कुछ भी न समझना।

घोल कर पिला देना—बिना सिखाये दिमाग में बैठा देना, बिना याद किये पढ़ जाना। मास्टर क्या घोल कर पिला देगा वह भी तो बता ही सकता है।

घोल कर पी जाना—(१) देखते देखते नाश कर देना। (२) कुछ न समझना। ऐसे ऐसों को तो मैं घोल कर पी जाऊँ।

घोल मट्ठा करना—हलचल मचाना। आज कल पञ्जाब में खाकसारों ने बड़ा घोल मट्ठा कर रक्खा है।

घोल में डालना—(१) रोक रखना, खटाई में डालना। (२) टाल मटूल करना।

घोल में पड़ना—बखेड़े में पड़ना, ऐसे काम में फँसना जो जल्दी न मिटे।

घोलुआ घोलना—किसी काम में बहुत दिन लगाना। क्या घोलुआ घोल रहा है करना है तो शीघ्र ही कर डालो।

घोलुआ पीना—कड़वी वस्तु का पीना। मैंने बड़े घोलुए पिये हैं यह तो कुछ भी कड़वी नहीं है।

च

चंग चढ़ना उमड़ना—पूर्ण यश होना, बढ़ी चढ़ी बातें होना, काफी रौब दौब होना। त्यौं पद्माकर दीजै निलाम क्यों चंग चबाइन की उमही है।

चंग पर चढ़ाना या चढ़ा देना—(१) बातें बना कर किसी को अपने अनुकूल बना लेना, किसी की प्रशंसा आदि कर के अपने मतलब का बना लेना। उसने तुम्हें चंग पर चढ़ा कर अपनी सिफारिश करा ली। (२) दिमाग़ बढ़ा देना, आसमान पर चढ़ा देना। तुमने उसे चंग पर चढ़ा दिया है, वह अब अपने को कुछ समझने लग गया है।

चंगुल में पड़ना—वश में हो जाना, किसी के हाथ में चले

जाना। हम तो उनके चंगुल में पड़ गये, वरना नुकसान न होता।

चंगुल में फँसना—काबू में आ जाना, पंजे या वश में होना। बदमाशों के चंगुल में फँस कर सब कुछ गँवा बैठोगे।

चंड-मुंड लड़ाना—दो आदमियों की आपस में लड़ाई करा देना। हम तो चंड-मुंड लड़ा कर सैल देखते हैं जो जीतेगा वही अपना हारा सो पराया।

चंडाल चौकड़ी—बदमाशों का झुंड। तुम तो बड़े सीधे थे, इस चंडाल चौकड़ी मे कब से रहने लगे हो।

चंडू खाने की गप—हवाई बातें, कोरी कल्पना की या बे मतलब कहानियें। चंडूखाने की गपें सुननी हों तो इनसे सुन लो, ऐसी बातें करते हैं जिनके सिर न पैर।

चंडूल (पुराना)—(१) बहुत चालाक या झगडालू। वह कब पीछा छोड़ने वाला है, पुराना चंडूल है। (२) बेवकूफ, भद्दा, बेडौल। किस पुराने चंडूल से बातें करते हो मुझे तो घृणा आती है।

चँदिया खाना—(१) बकवाद से दुखी होना, सिर खाना। मेरी चँदिया मत खाओ मैं नहीं सुनना चाहता। (२) सब कुछ लेकर दरिद्र बना देना। सेठ ने उसकी चँदिया खाली।

चँदिया खुजाना—(१) सिर खुजाना। (२) मार खाने के काम करना, जूते की चाह होना। तुम्हारी चँदिया खुजा रही है तभी ठाकुर साहब से भी ऐंठ कर बातें कर रहे हो।

चँदिया पर बाल न छोड़ना—(१) सिर गंजा कर देना, जूते लगाते लगाते बाल तक उड़ा देना। बकना लगाओगे तो इतना पीटूँगा कि चँदिया पर बाल तक न छोड़ूँगा। (२) सब कुछ ले लेना, कुछ न छोड़ना। चँदिया पर बाल तक न छोड़ेगा तुम दस पाँच रुपये कम कराना चाहते हो।

चँदिया मूँड़ना—(१) सिर मूँड़ना, हजामत बनाना। बाल काटने को कहा था उसने चँदिया ही मूँड़ दी। (१) खूब लूट लूट कर खाना। मैंने सेठ की चँदिया मूँडी, ऐसे कंजूस का यही इलाज। (३) खूब जूते लगाना।

चँदिया से परे सरक—पास से हट जा, सिर पर मत खड़ा हो।

चंद्रमा बलवान होना—किस्मत चेतना, अच्छा समय होना, भाग्यवान होना। आजकल उसका चन्द्रमा बलवान है जहाँ जाता है काम बन जाता।

[२४३०]

चंपत बनना, होना—चले जाना, गायब हो जाना। वह तो अपना काम करके चंपत बना, पकड़ा मैं गया।

चंदल लगना—खूब जल चढ़ना बाढ़ आना।

चक काटना—ज़मीन के हिस्से करना, भूमि की हद बाँध देना। मरते समय बुड्ढे ने ही चक काट दिया था, इतनी बड़े की और इतनी छोटे की है।

चक जमना—रंग जमना, अधिकार होना। उसका मुझ पर चक जमा है, ऐसा मत समझो।

चक बँधना—तार बधना, खूब बढना, एक पर एक अधिक होता जाना। यहाँ आकर काम करो, देखो रुपयों का चक बँधता जाता है।

चकती लगाना (बादल में)—(१) अनहोनी करने की इच्छा करना या कराना। क्यों बादल में चकती लगाने जा रहे हो तुम्हारे बस का यह काम नहीं। (२) बहुत बढ़ चढ़ कर बातें कहना। बड़ाई करते हुए तो वे बादल में चकती लगाते हैं, आता जाता कुछ भी नहीं।

चकत्ता पडना—गोल निशान पड़ना, धब्बा पड़ना। इतने जहरीले मच्छर हैं काटते ही चकत्ता पड़ जाता है।

चकत्ता भरना, मारना—दाँतों से काटना, दाँतों से मास निकालना। उसने चिढ़ कर मेरी बाँह मे चकत्ता भर लिया इससे खून आ गया है अब पट्टी बँधी है।

चकना चूर करना—चूर चूर कर डालना, तोड़ डालना, टुकड़े टुकड़े करना। उसने सारी तश्तरियें ऊपर से फेंक कर चकना चूर कर डाली।

चक फेरी देना—चक्कर लगाना, चारों ओर घूमना। तुम कुछ करते भी हो या योंही शहर में चक फेरी देते फिरते हो।

चकमा उठाना—(१) रंजीदा होना। (२) किसी के धोखे में आ जाना। (३) नुकसान सहना।

चकमा खाना—भुलावे मे आना, बहकाव मे पड़ना, धोखा खाना। तुम जैसा चालाक चकमा खा गया और रुपये दे बैठा यह आश्चर्य है।

चकमा देना—चक्कर मे डालना, धोखा देना, फाँसना। मुझे तुम चकमा दोगे तो मुझ से ले क्या लोगे मेरे पास क्या हैं।

चकमे में आना—धोखा खाना। यह आदमी छूटा हुआ है, कहीं इसके चकमे में मत आ जाना।

चकाचौंधी आना या लगना—(१) अधिक रोशनी के सामने

आँख न ठहरना। (२) आश्चर्य मे पड़ना। दृष्टि चकाचौंध गई सब सुबरन मई, एकनते एक ऐसे द्वारिका के भौन हैं। (३) बहुत घबरा जाना। (४) अचानक सिर पर चोट लगने से आँखों के आगे अँधेरा आ जाना।

चकाबू में पड़ना, फँसना—किंकर्तव्य विमूढ़ होना, फेर में पड़ना। हम तो ऐसे चकाबू मे पड़ गये हैं कि निकल ही नहीं पाते एक न एक झगड़ा लगा ही रहता है।

चक्कर काटना—(१) गोलाई मे घूमना। (२) इधर उधर घूमना, ढूँढ़ खोज में फिरना। तुम्हारे घर के कितने ही चक्कर काटे परन्तु तुम्हारा पता ही नहीं चलता।

चक्कर खाना—(१) पहिये की तरह घूमना। (२) घुमाव फिराव के साथ जाना, सीधे न जाकर टेढ़े मेढ़े जाना। यह रास्ता बहुत चक्कर खाकर गया है। उतना चक्कर कौन खाय, इस बगीचे से निकल चलो। (३) भटकना, हैरान होना, घंटों से चक्कर खा रहे हैं यह सवाल समझ में ही नहीं आता।

चक्कर देना—(१) परिक्रमा देना, गोल दायरे मे घूमना। (२) दे० चक्कर खाना (२)। (३) दुखी करना, हैरान कर डालना, फिराना। क्यों मुझे चक्कर दे रहे हो कल तुम खुद ही ले आना। (४) सिर मे घुमेरी आना, सिर मे दर्द होना। मुझे चक्कर आ रहा है बोला नहीं जाता।

चक्कर पड़ना—(१) कमी होना, गलती होना, हिसाब ठीक न बैठना। ३०) थे २८) का तो हिसाब ठीक है २) का चक्कर पड़ता है, पता नहीं खर्च हुए या खो गए। (२) जाने में फेर पड़ना, अधिक मार्ग होना। इस रास्ते से जाने में दो मील का चक्कर पड़ेगा। (३) सुदर्शन चक्र पड़ना यानी विपत्ति आना। तुम पर-चक्कर पड़े, भगवान करे!

चक्कर बाँधना—(१) गोलाई का रास्ता बनाना, घूमना। (२) आना जाना, फेर बाँधना। २००) का ऐसा चक्कर बाँधा कि ५००) का माल भी दुकान में पड़ा रहता है और ७ दिन से ज्यादा उधार भी किसी का नहीं रहता।

चक्कर मारना—(१) हो आना, हो जाना। कभी कभी इधर भी चक्कर मार जाया करो। (२) घूमना, चारों ओर फिरना। दिन भर तो चक्कर मारते रहते हो, थोड़ा बैठ जाओ। (३) पहिये की तरह अक्ष पर घूमना। (४) वृत्ता-कर परिधि मे घूमना।

चक्कर में आना—आश्चर्य मे पड़ना, दंग रह जाना। बालक की अद्भुत वीरता देखकर सब लोग चक्कर में आगये।

चक्कर में डालना—(१) ऐसी स्थिति मे डालना जिसमें सूझ न पड़े क्या करना चाहिये, कठिनता या दुविधा मे फँसना। हमको तो इस बात ने चक्कर मे डाल दिया है, समझ मे नहीं आता नौकरी छोड़े या माफी माँगे। (२) हैरान कर देना, समझ में न आना, आश्चर्य में डालना। सौ फीट ऊँचाई से आग में कूदना इस काम ने मुझे चक्कर में डाल दिया है।

चक्कर में पड़ना—(१) दुविधा मे फँसना, असमजस में हो जाना। (२) हैरान होना। (३) माथा खपाना। क्यों इनके चक्कर मे पड़ते हो ये तो यों ही बकते रहेंगे कहाँ तक जवाब दोगे?

चक्कर लगाना—(१) परिक्रमा करना, मँडराना। (२) फेर लगाना, आना जाना। तुम यहाँ रोज एक चक्कर लगा जाया करो। (३) घूमना फिरना। हम बड़ी दूर तक का चक्कर लगा कर आ रहे हैं।

चक्की का पाट—(१) चक्की का एक पत्थर। (२) बदसूरत, जिसके मुख पर शीतला के दाग हों।

चक्की पीसना—लगातार काम करना। क्या आप मुझ से चक्की पिसाना चाहते हैं?

चक्की में जुतना—काम में फँसना। यहाँ तो पहर रात से उठ कर फिर चक्की मे जुतना है।

चक्र गिरना या पड़ना—वज्र पात होना, विपत्ति आना। ऐसा अधर्म करोगे तो चक्र ही गिरेगा।

चख डालना—सब कुछ खर्च कर डालना। बाप ने जितना भी रुपया इकट्ठा किया था, मरते ही बेटे ने सब चख डाला।

चचा बनना—प्रतिशोध लेना, मज़ा चखाना, उचित दड देना। तुमने तो मुझे पिटवाया ही है मेरे फदे मे कभी फँस गये तो चचा ही बना कर छोड़ूँगा।

चटकर जाना—(१) सब खा जाना, उड़ा देना, खो देना। वह बाप दादाओं की सारी जायदाद चट कर गया है, तुम्हारी क्या छोड़ेगा। (२) हज़म कर लेना, लेकर न देना। वह किसी का एक रुपया भी सीधे हाथ से नहीं देता जिसका लिया सब चट कर गया।

चट से करना, होना—फौरन, बहुत सीघ्र। बहुत सीधी है मैंने कहा ही था कि चट से उसने रुपये लाकर मुझे देदिये।

[२४१४]

चटकाना (जूतियाँ)—यों ही मारे मारे फिरना, बेकार होना। करते धरते कुछ भी नहीं जूतियाँ चटकाते हैं।

चटकारे का—मुँह जलाने वाला, मजेदार, चरपरा। रायता बड़ा चटकारे का बना है।

चटकारे भरना—स्वाद आना, खाने को जी चाहना। तुम्हारी जीभ तो मिठाई के लिये चटकारे भरती है, तुम रोटियाँ क्यों खाओगे।

चटचट बलैया लेना—स्त्रियाँ उँगली चटका कर बच्चे को नज़र न लगे या दूर हो यह प्रदर्शित करती हैं। मै अपने प्यारे लल्लू की चट चट बलैया लेती हूँ।

चटनी करना बनाना, कर डालना—(१) बहुत महीन पीसना। मैंने जौकुट करने को कहा था तुमने चटनी ही कर डाला। (२) बहुत पीटना, (कभी कभी' मार डालना, खा जाना। तुम अगर बोलोगे तो चटनी कर डालूँगा। (३) चूर चूर कर देना, पीस डालना।

चटनी होना—(१) खूब पिस जाना। (२) चाटने भर को होना। सेर भर तो चटनी को होता है आखिर इतना बड़ा कुनबा है काफी चाहिये। (३) चट हो जाना। (४) खतम हो जाना, उड़ जाना।

चटपट की गिरह—वह फंदा जिसे खींचने से फौरन गाँठ पड़ जाय। यह चटपट की गिरह स्काउटों को खूब लगानी आती है।

चटपट होना—(१) बहुत जल्दी चुक जाना। इतनी चटपट हुई कि जंकशन से दूसरा इंजन भी आ गया आदमी भी आगये, सवेरे देखो तो अनुमान भी नहीं कि यहाँ रेल लड़ी थी। (२) थोड़े ही देर में, बात की बात में मर जाना। बड़ी चटपट हुई कल तो जरा बुखार आया ही था।

चटाक पटाक करना—(१) चट चट शब्द करना। (२) बहुत शीघ्रता करना।

चटाके का—बहुत तेज़, प्रचंड। चटाके की धूप पड़ी और चटाके की प्यास लगी।

चटाता होना—घूस, रिश्वत या रुपया देना। वह हर एक अफसर को कुछ न कुछ चटाता है अतः उसका काम बन ही जाता है।

चट्टी भरना—हानि पूरी करना, नुकसान देना। २००) से पहिले चट्टी भरी थी।

चट्टी धरना—दण्ड लगाना, सज़ा नियत करना।

चट्टे बट्टे (एक ही थैली के)—(१) एक सी ही फितरत के। (२) आपस में बड़े मिले हुए बाहर से बड़े अलग। ये चारों एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं, जिससे कहो वही ऐसी जवाब देते हैं।

चट्टे बट्टे लड़ाना—दो में लड़ाई कराना, भिड़ा देना। तुमको चट्टे बट्टे लड़ाना खूब आता है।

चड्ढो देना—(१) बच्चों का खेल में हार कर पीठ पर चढ़ाना।

चढ़ना (सूरज या चाँद)—सूरज या चाँद का उदय होकर कुछ ऊपर आ जाना। सूरज चढ़ने आया है, जाड़े हैं अतः कोई आठ बजे होंगे।

चढ़ना (दिन)—(१) दिन या वक्त व्यतीत होना। चार घड़ी दिन चढ़ा है। (२) दिन का प्रकाश फैलना। अरे! उठ दिन चढ़ आया है। (३) दिन होना, गर्भ के दिन। अभी कितने दिन चढ़े हैं? दो महीने।

चढ़ना (नस)—नस का अपने स्थान से हट जाने के कारण तन जाना। पैर की नस चढ गई है चला नहीं जाता।

चढ़ना (पाप)—(१) पाप के प्रभाव से बुद्धि ठिकाने न रहना। पाप सिर पर चढ़ कर पुकारता है। (२) पाप होना, पाप लगना। मै यह काम न करूँगा मुझ पर पाप चढ़ेगा।

चढ़ना (रँग)—(१) फंदे में फँसना, आज कल सेठ पर उस चालाक का रंग चढ़ गया है सो पटड़ा होगा। (२) रंग का किसी वस्तु पर आना, खिलना। (३) प्रभाव होना। सूरदास खल कारी कामरि चढ़े न दूजो रंग।

चढ़ बढ़ कर या बढ चढ़ कर होना—बढिया या अधिक अच्छा होना। वह इससे बढ़ चढ़ कर है, सूरत भी इससे अच्छी है, माल भी अच्छा है।

चढ़ बजना—(१) बात बनना, पैर बाहर होना, खूब चलती होना। अधर रस मुरली लूटि करावति, आजुमहा चढि बाजी वाकी जोइ कोई करै विराजै।

चढ़ बनना—(१) मनोरथ सफल होना, मौका मिलना, सुयोग हाथ आना। आजकल अफसर के जाते ही उनकी खूब चढ़ बनी है।

चढा उतरी लगाना—बार बार चढ़ना उतरना। ऊपर या नीचे एक जगह बैठ जाओ ये क्या चढ़ा उतरी लगा रखी है।

चढ़ा उपरी लगाना—एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करना। [२४६०]

राम, श्याम में परीक्षा में प्रथम होने की चढ़ा उपरी लगी हुई है ।

चढ़ाना (धनुष)—(१) धनुष की डोरी को तान कर छोर पर बाँधना । (२) धनुष की डोरी को खींचना । (३) धनुष पर बाण चढ़ाना ।

चढ़ा बढ़ा होना—(१) प्रसिद्ध होना । आजकल वह चढ़ा बढ़ा है । (२) धनमान आदि में ऊँचा होना । आजकल बाज़ार भर मे वही चढ़ा बढ़ा है ।

चढ़ा लाना—हमले के लिये किसी को उसकी सेना सहित साथ लाना । वह नादिरशाह को दिल्ली पर चढ़ा लाया ।

चढ़ावा बढ़ावा—उत्साह बढ़ाना, उकसाना, उत्तेजित करना । शाबाशी और चढ़ावे बढ़ावे से आदमी शक्ति से अधिक भी काम कर डालता है ।

चतुरई छाँटना, छोलना, तौलना—चलाकी करना, चतुरता प्रगट करना, धोखा देना । जाहु चले गुन प्रकट सूर प्रभु कहा चतुरई छोलत हो । बहुनायकी आजु मै जानी कहा चतुरई तौलत हो ।

चद्दर पड़ना बिछना—(१) नदी के बहते हुए पानी का कुछ भाग एक दम समतल हो जाना । (२) चाँदनी में सारी छत पर सफेद कपड़ा सा बिछा हुआ दिखाई देना ।

चने का मारा मरना—इतना कमजोर होना कि जरा सी (चने बराबर) चीज की मार से मर जाय । इस बीमारी ने तो उसे ऐसा कर दिया है कि बेचारा चने का मारा भी मर जाय ।

चने चबवाना (नाकों)—बहुत ही दिक या तंग करना । मै तुमको नाकों चने चबवा दूँगा जब तुम माफी माँगोगे तब छोड़ूँगा ।

चने नाकों चबाना—बहुत हैरान होना, दुखी होना । इस काम के करने में तो नाकों चने चबाने पड़े तब यह पूरा हुआ ।

चने लोहे के चबाना—बहुत कठिन परिश्रम से कार्य करना ।

चना लोहे का—दुष्कर कार्य, बहुत मुश्किल काम ।

चपत जमाना, [illegible] धरना—थप्पड़ देना, तमाचा लगाना । ज्यों ही वह ऐंठकर बोला मैंने उसके पाँच सात चपत जमा दी बस ठंडा हो गया ।

चपनी भर पानी में डूब जाना—लज्जा के मारे गड़ जाना । तुम उसकी पोल खोल रहे थे और वह चपनी भर पानी में डूबी जा रही थी ।

चपाती सा पेट होना—कृशोदर,

वह पेट जो निकला हुआ न हो। तुम कुछ खाते भी हो? पेट तो तुम्हारा चपाती सा है।

चबाचबा कर बातें करना—बहुत बनकर बड़े धीरे धीरे ठहर ठहर कर शब्द बोलना। क्यों चबा चबाकर बातें करते हो जरा कहानी लिखनी आगई हैं तो अपने को दार्शनिक ही समझने लगे।

चबूतरे चढ़ना—कोतवाली जाना, पकड़ा जाना, कचहरी चढना।

चबे को चबाना—किए हुए को फिर करना, पिष्ट पेषण करना। बरस पचासक लौं विषय मे रत रहे तऊ न उदास भये चबे को चबाइये।

चमक देना, मारना—चमकना, झलकना। यह पालिश चमक तो बहुत देती है। इस पर तो दूर से ही चमक मारती है।

चमकना (किसी की)—किसी की धन, कीर्ति या पदवी मे बढ़ती होना, दब दबा होना। आज कल तो राज्य भर में उनकी चमकती है।

चमड़ा उधेड़ना वा खींचना—(१) बहुत ही मारना। (२) चमड़े को शरीर के अलग करना।

चमड़ा सिझाना—चमड़े को मसाला डालकर मुलायम करना।

चमार चौदस मचाना—(१) चमारों का एक उत्सव। (२) चार दिन का जलसा, वह धूमधाम जो छोटे और दरिद्र लोग इतरा कर करते हैं। क्या चमार चौदस मचा रखी है, होश से वित्त के अनुसार काम करो।

चरण छूना—नमस्कार करना। अच्छे लड़के प्रातः काल उठ कर अपने माता पिता के चरण छूते हैं।

चरण पड़ना—आगमन होना। मै आपके लिये कितने दिनों से व्याकुल हो रही हूँ न जाने कब यहाँ आपके चरण पड़ेंगे।

चरणामृत लेना—(१) किसी महात्मा या पूज्य के पैर धोकर पीना। (२) कोई चीज बहुत थोड़ी मात्रा में पीना। तुम ये चरणामृत ले रहे हो या भग, अरे और लो।

चरबाँक दीदा—(१) ढीठ, निडर, शोख। (२) बहुत चंचल नेत्र। महा शैतान है चरबाँक दीदा है भीड़ में भी तो वहीं पहुँच जाती है।

चरबा उतारना—(१) नक़शा उतारना, चित्र खींचना। (२) नक़ल करना।

चरबी चढ़ना—बहुत मोटा होना, शरीर में वायु से मोटाई आना।

चरबी छाना—शरीर में मेद बढ़ना। कोरी चरबी छा रही है वैसे एक थप्पड़ में गिर पड़ेगा।

चलता करना—(१) चुप चाप भगा देना। इन्हें यहाँ मत बैठाओ पुलिस आ रही है चलता करो। (२) हटा देना, भेजना। इस काग़ज़ को आज चलता करो। (३) निपटाना, झगड़ा दूर करना। किसी प्रकार भी हो इस मामले को चलता करो।

चलता पुरजा होना—चुस्त-चालाक, व्यवहार कुशल। वह बहुत चलता है बहकाये में नहीं आ सकता।

चलता गाना—वह गाना जो शुद्ध राग रागनियों के अंतर्गत न हो, शीघ्र शीघ्र गाना। कोई चलता गाना सुनाओ पक्का गाना हमारी समझ में नहीं आता।

चलता लेखा व खाता—वह हिसाब जिसमें लेन देन अभी हो रहा हो। चलता लेखा है अभी तो कुछ ले सकते हो कल बंद होगा फिर पिछला चुका दोगे तब मिलेगा।

चलती गाड़ी में रोड़ा अट-काना—होते हुए कार्य में बाधा डालना। क्यों किसी की चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाते हो अभी तो उसका काम हो जायगा नहीं फिर गया तो गया।

चलती चीज़—व्यर्थ की चीजों से दुकान क्यों भरली है कोई चलती चीज़ रक्खो।

चलती हवा से लड़ना—बात बात पर लड़ना, ख़्वामख़ाह लड़ना।

चलते बनना (१) चल देना, चुपचाप चले या भाग जाना। तुम तो वहाँ से चलते बने, पकड़े गये हम। (२) होशियारी करना, चालाकी की बातें करना। तुम तो बहुत चलते बनते हो, परन्तु उस समय तुमसे भी नहीं बोला गया।

चलन से चलना—उचित रीति से मर्यादा के अनुकूल काम करना। वह चलन से चलता है उसे घाटा नहीं होगा।

चलना (किसी की)—(१) बात मानी जाना। आजकल बिरादरी में उनकी चलती है। (२) निर्वाह होना, गुजर होना। इतने रुपये में हमारा नहीं चल सकता। (३) उपाय लगना बश चलना। अंगनिरख अनंग लज्जित सकै नहिं ठहराय, एक की कहा चले शत शत कोटि रहत लजाय।

चलना (दिल या मन)—(१) इच्छा या लालसा होना। बाजार में जिस वस्तु पर मन चला वही खरीद ली (२) मन चंचल होना, भोग की इच्छा होना। पराई स्त्री पर मन नहीं चलना चाहिये।

चलना (पेट)—(१) दस्त आना। ज्यादा खाओगे पेट चलने लगेगा।

[२५३१]

(२) गुज़र होना । इतने में पेट कैसे चलेगा ?

चलना (मुँह)—(१) खाते ही रहना, खाते वक्त मुँह हिलना। जब देखो उसका मुँह चलता ही रहता है। (२) मुँह से बकवाद या अनुचित शब्द निकालना। तुम्हारा मुँह बहुत चलता है, तुमसे चुप नहीं रहा जाता।

चलना (मुँह पेट)—क़ै और दस्त होना।

चलना (हाथ)—अभ्यास होना, मारने के लिये हाथ उठाना, पीटना। तुम्हारा हाथ बहुत चल गया है इधर उधर से आये इस बेचारी को पीटना शुरू कर दिया।

चल निकलना—काम शुरू हो जाना, किसी कार्य में सफलता मिलना। अब तो तुम्हारा रोजगार चल निकला।

चल पड़ना—रवाना होना। इतना सुनते ही दो तीन जासूस उसकी खोज के लिये चल पड़े।

चल बसना—मर जाना। चल बसे जो आदमी थे काम के, बाकी इन्सॉ रह गये हैं नाम के।

चलते अपने—यथा शक्ति, भर सक। अपने चलत न आजुलगि अनभल काहुक कीन्ह। अपने चलते तो हम ऐसा कभी न होने देंगे।

चलाना (किसी को)—(चलना के सारे मुहाविरे चलाना भी बन जाते हैं।)

चले चलना—आगे बढ़ना। अभी चले चलो, जगह भी दूर है।

चश्मपोशी करना—(१) आँख चुराना, सामने न होना। (२) सामने बड़ाई करना और असलियत छिपाना।

चस्क लगना—मज़ा पड़ना। उन दिनों मुझे वीरता पूर्ण कथायें पढने का चस्का लग गया था।

चहका देना या लगाना—(१) आग लगाना। (२) चिढ़ाना, लगती हुई बात कहना। तुमने ही चहका दिया अब वह बकता ही रहेगा चुप न होगा।

चहल पहल होना—रौनक़ होना, धूम धाम होना। नुमायश के कारण आज कल खूब चहल पहल है।

चाँट मारना—जहाज के बाहरी तख्तों या पाल पर पानी छिड़कना।

चोंड सरना—इच्छा या काम पूरा होना। तोरे धनुष चोंड नहिं सरई, जीवत हमहिं कुँवरि को बरई।

चोंड सराना—लालसा मिटाना, इच्छा पूरी करना। पुरुष भँवर दिन चारि आपने अपनो चोंड सरायो।

चाँद का कुंडल या मंडल बैठना—बहुत हलकी सी बदली में चाँद के चारों ओर सफेद घेरा सा होना।

चाँद (चाँदनी) का खेत करना—चद्रमा के चारों ओर फैला हुआ प्रकाश, चद्रमा निकलने के पहिले की आभा का फैलना।

चाँद का टुकड़ा—बहुत सुँदर, गोल गोल चमकदार मुँह। लड़का क्या है चाँद का टुकड़ा है।

चाँद चढ़ना—चद्रमा का ऊपर आना, चद्रमा निकल आना चाँद चढ़ आया है अर्घ दे लो।

चाँदनी खिलना या छिटकना—चाँद का निर्मल प्रकाश फैलना। चाँदनी छिटका रही थी जैसे सफेद चादर ही बिछी हो।

चाँदी मारना—(१) चाँदनी का बुरा प्रभाव पड़ने से घाव का अच्छा न होना। जख्म भरता ही नहीं चाँदनी मार गई है। (२) चाँदनी पड़ने पर घोड़े को एक रोग हो जाता है जिससे वे तड़प तड़प कर मर जाते हैं, यह रोग पुरानी चोट के कारण होता है।

चाँद पर थूकना—निर्दोष को दोष लगाना जिससे खुद की बदनामी हो। लड़का चाल चलन का बहुत अच्छा है आप अगर उसकी बुराई करते हैं तो चाँद पर थूकते हैं।

चाँद पर धूल डालना—किसी महात्मा आदि पर दोष लगाना, निर्दोष को कलंक लगाना। आप चाँद पर धूल डालते हैं, ऐसे शान्त स्वभाव के खिलाफ तुम्हें कौन पूछेगा?

चाँद सा मुखड़ा—बहुत सुंदर मुख, चमकता हुआ चेहरा।

चाँद पर बाल न छोड़ना—दे० उलटे छुरे से मूँड़ना, लूट लूट कर खाना।

चाँदी कटना—सुख आराम से दिन व्यातीत होना। भाई आज कल तो चाँदी कटती है किसी चीज़ की परवाह नहीं सब मौजूद है।

चाँदी कर डालना—(१) जला कर खाक कर देना। तुम तो तमाखू को चाँदी कर डालते हो तब किसी को देते हो। (२) सब बेच बाच कर रुपये कर लेना। हमने सड़े गले माल तक की चाँदी कर डाली तुम इसके लिये कहते हो।

चाँदी का जूता मारना, लगाना—रुपये की मार, धन देकर वश मे करना। अजी चाँदी के जूते से बड़े बड़े जज जो चाहो सो फैसला लिख दे।

चाँदी काटना—खूब रुपया कमाना।

आज कल तो चाँदी काट रहे हो, मोटर भी लेली है शान से चलते हो।

चाँदी का पहरा—आनन्द के दिन। किसी दिन ये भूखों मरते थे किन्तु आज देखो तो उनके यहाँ चाँदी का पहरा है।

चाँदी खोलवाना—तालु या चाँद के बाल मुंडवाना। हम तो इतने बड़े थे तो जुल्फें रखना तो दूर चाँदी खोलवाया करते थे।

चाँप चढ़ाना—डोरी खींचना। परशुराम के आज्ञानुसार राम ने उनके धनुष का चाँप चढ़ाकर तीर छोड़ दिया।

चाक पूजना—विवाह के समय कुम्हार के चक्र को पूजने की एक विधि। काम जल्दी कर लो आज तो कुम्हार के यहाँ चाक पूजने जाना है।

चाट पड़ना—आदत होना। आज कल सदन को व्याख्यानों की बड़ी चाट पड़ी है।

चाट पोंछ कर खाना—सब खाजाना, बरतन में कुछ भी न छोड़ना। चाट पोंछ कर खाओ नीचे घी जमा हुआ है।

चादर उतारना—अपमान करना। यदि तुम वहाँ पर गये, तो समझ-लो अवश्य हा तुम्हारी चादर उतारी जायगी।

चादर देखकर पाँव फैलाना—अन्दाज़े से काम करना। इसके लिये चादर देखकर पाँव फैलाने की ज़रूरत न थी।

चादर रहना या चादर की लाज रहना—कुल की मर्यादा तथा इज्ज़त रहना। लाल बिनु कैसे लाज चादर रहैगी आज कादर करत आय बादर नये नये।

चादर से बाहर पैर फैलाना—(१) अपनी हद से बाहर जाना। (२) वित्त, शक्ति से अधिक खर्च करना। चादर से बाहर पैर फैलाओगे तो घाटा आवेगी ही।

चादर हिलाना—युद्ध रोकने का झंडा दिखाना, दुश्मन के सिपाहियों से घिरा हुआ होने पर आत्म समर्पण करने का झंडा दिखाना।

चाम के दाम चलाना—अपनी जबरदस्ती के भरोसे कोई काम करना, अन्याय करना। ऊधो अब कछु कहत न आवै, सिर पै सौति हमारे कुबजा चाम के दाम चलावै। दिन चारिक तू पिय प्यारे के प्यार सों चाम के दाम चलाय ले री।

चार आँखें करना—नज़र से नज़र मिलना, साक्षात्कार होना। झूठ कहता और मुकरता है. इसपे फिर चार आँख करता है।

चार आँखें होना—आँखें मिलना, देखा देखी करना। अब वह हमारे सामने चार आँखे करते हुए झेंपता है।

चार उँगलियाँ तक सिर पर न रखना—(१) जरा भी परवा या ख्याल न करना। वह किसी के लिये चार उँगलिये तक सिर पर नहीं रखता। (२) झुक कर या सिर पर हाथ रख कर प्रणाम न करना।

चार के कंधेपर चढ़ना चलना, जाना—(१) मर जाना। कौन जानता है कब किस दिन चार के कंधे चढ चले। (२) पालकी में बैठ कर जाना। महाराजाओं के नाई तक चार के कधे चढ कर चलते थे।

चार चांद लगना—(१) चौगुनी ख़ूबसूरती होना। (२) चौगुनी कीमत या इज्जत हो जाना। तुम्हारे कामों ने तुम्हें चार चाँद लगा दिये हैं।

चार दिन की चाँदनी—थोड़े दिन का सुख आनन्द, क्षणिक समृद्धि। क्यों ऐंठे ऐंठे फिरते हो। चार दिन की चाँदनी है फिर वैसे ही हो जाओगे, अँधेरी रात से।

चार दिन की चांदनी होना—थोड़े दिनों की ही दौलत होना। चार दिना की चाँदनी फेर अँधेरी रात।

चार पगड़ी करना—जहाज़ का लंगर डालना।

चार पांच करना या लाना—(१) इधर उधर की बातें, हीला हवाला करना। (२) हुज्जत या तकरार करना। (३) बातें बढाना। क्यों चार पाँच करते हो मै अभी रुपये गिनाऊँगा।

चारपाई से पीठ लगना या चारपाई से लगना—बीमारी के कारण उसकी पीठ चारपाई से लग गई है जरा धीरे से उठाना।

चारपाई पर पड़ना, धरना, पकड़ना या लेना, सेना—(१) खाट पर लेटना। (२) बहुत बीमार होना, बीमारी में खाट पर पड़े रहना। छ महीने से वे तो चारपाई पकड़े हुए हैं, रोग ही नही जाता। (३) सोना। तुम खाते ही चारपाई पकड़ते हो।

चार पैसे होना—कुछ धन, सम्पत्ति। जिसके पास चार पैसे हैं उसके दुनिया में बहुत दोस्त हैं।

चार मगज़—हकीकी में चार वस्तुओं के बीज-खीरा, ककड़ी, कद्दू, खरबूज़ा।

चारों फूटना—अँधा हो[…] बिलकुल ख्याल या सोच विच[…] न रहना। निस दिन वि[…]

विलासनि विलसत फूट गईं तव चार्यौं।

चारों खाने चित्त पड़ना या गिरना—(१) हाँथ पाँव फैला कर पीठ के बल गिरना। (२) एकदम कोई शोक या खिलाफ बात सुन कर जकड़ बंद हो जाना, सकपका जाना। 'जहाज डूब गया' सुनते ही वह तो चारों खाने चित्त पड़ गया। बेचारे की उस दिन से चारपाई से पीठ लग गई है, आज तक नहीं चलने फिरने लायक हुआ।

चाल उड़ाना—किसी की नकल करना, किसी की होशियारी खुद सीखना, समझना। उसने हमारी यह चाल उड़ाली और हमसे पहिले आप वैसी ही चीज़ बनाकर ले गये।

चाल खेलना—धोखा देना। तुमने मुझे निकालने के लिये यह चाल खेली है।

चाल चलना—(१) धोखे बाजी से काम पूरा होना। तुम्हारी एक चाल न चलेगी, यहाँ तुम से अधिक होशियार हैं। (२) चालाकी करना, धोखा देने की तैयारी करना। तुम हम से क्या चाल चलते हो, हम सब ताड़ लेते हैं।

चाल ठीक करना—(१) रफ़्तार ठीक करना। घड़ी की चाल ठीक करवानी है। (२) आचरण या आदत सुधारना। मै तुम्हारी सब चाल ठीक कर दूँगा, ज़रा मुझे फ़ुर्सत मिले।

चाल पट पड़ना—बात उलट जाना। जब वह चाल पट पड़ गई तब यह उपाय सोचा है।

चाल मिलना—(१) आहट मिलना, चलने फिरने का शब्द सुनना। वह यहाँ नही है क्योंकि उसकी चाल तो मिलती नहीं। (२) पहिनावा उढावा एकसा होना। (३) चालाकी को पहिचानना। इतना अधिक चलता पुर्जा है कि उसकी एक भी चाल बड़े बड़ों को नहीं मिलती।

चाल सुधारना—चाल चलन या आचारण ठीक करना। इस लड़के की चाल सुधार दो तो मै बड़ा एहसान मानूँ।

चाला देखना—जाने का मुहूर्त देखना।

चलाकी खेलना—होशियारी से काम निकाल लेना, किसी को मत देना। उसने ऐसी चालाकी खेली मेरा रूप बना कर वहाँ चला गया और सब जेवरात ले आया।

चाव निकालना—इच्छा, लालसा पूरी करना। तुम भी अपना चाव

निकाल लो, कहते थे तुम्हे बड़ा अच्छा घोड़े पर चढ़ना आता है।

चावल चबवाना—किसी वस्तु की चोरी हो जाने पर वहाँ उपस्थित आदमियों से मन्त्र पढ़े हुए चावल चबवाये जाते हैं, जो चीज़ चुराये होता है उसके मुख से खून आ जाता है, यह धमकी है इसके कारण चोर चीज़ फेंक देते हैं। बताओ किसने ली है वरना फिर चावल चबवाये जायेंगे।

चाशनी में पागना—मीठा करने के लिये चाशनी मे डुबोना। सेव चाशनी में पागे हुए हैं।

चिऊँटा गुड़ होना—एक दूसरे से चिपट जाना, गुत्थमगुत्था होना। ये तो दोनों लड़के चिऊँटा गुड़ हो गये हैं छूटते ही नहीं।

चिउँटिया लगना—गर्मी के मारे शरीर में जलन उठना। जब गर्मियो मे शरीर में चिउटियाँ सी लगती हैं।

चिउँटी की चाल चलना—बहुत सुस्त चाल, मंद गति। तुम तो चिऊँटी की चाल चलते हो जरा कदम बढ़ा कर साथ साथ चलो।

चिऊँटे की गिरह पेट में होना—बहुत थोडा खाना, थोड़े खाने की ही जगह पेट में होना। तुम्हारे पेट मे क्या चिऊँटे की गिरह है कुछ खाते भी हो?

चिऊँटे के पर निकलना या लगना—मरने का समय आना, बहुत ऐंठना जिससे अपनी ऐंठ निकालने की सूचना देना। तुम्हारा क्या कसूर मरते वक़्त चिऊँटे के भी पर निकल आते हैं अब तुम्हारी भी ठीक होने की इच्छा है?

चिंता नहीं—कोई खटके की बात नही, परवा नहीं। चिंता नहीं वह बुराई भी करके मेरा क्या बिगाड़ सकता है।

चिंता लगना, सवार होना—किसी बात का सोच विचार या याद ध्यान बराबर बना रहना, फिक्र रहना। मुझे अब यही चिंता सवार रहती है कि घर का खर्च कैसे चले।

चिंदी चिंदी करना—छोटे छोटे टुकड़े करना। काग़ज़ की चिंदी चिंदी करके फेकना चाहिये ताकि कोई पढ ही न सके।

चिकना घड़ा होना—(१) किसी की बात का असर न होना, निर्लज्ज या बेहया होना। वह तो चिकना घडा है उससे कितना भी कहो वह नही समझता। (२) पेट मे बात न पचना, क्षुद्र स्वभाव। वह चिकना घड़ा है उस पर पानी जरा भी नहीं

ठहरता, ऐसे से बात ही क्यों कहते हो ?

चिकना देख फिसल पड़ना—(१) बाहरी ख़ूबसूरती पर मोहित हो जाना, बनावटी चमक देख कर ही लेने की इच्छा करना। क्यों चिकना देख फिसलते हो इसमे कुछ है नहीं, दिखावट ही दिखावट है। (२) थोड़े से लाभ या धन पर अपने को गिरा देना। चिकना देख कर फिसल पड़े न भूल गये प्रतिज्ञा ?

चिकना चुपड़ा होना—बनठन कर रहना, सँवार सिंगार किए हुए। शहर के लड़के चिकने चुपड़े रहते हैं उनमे बल नाम को भी नहीं होता।

चिकनी चुपडी बातें करना—मीठी मीठी बाते जो धोखा देने को कही जायँ, दिखाने को प्रशंसा आदि करना। वह बड़ी चिकनी चुपड़ी बाते करता है, ज़रूर उसका कोई काम अटका है।

चिकना मुँह—(१) सुन्दर और सँवारा हुआ चेहरा। (२) मीठा बोलने वाला मुँह।

चिकने घड़े पर पानी न पड़ना—अच्छी बात या उपदेश का प्रभाव न पड़ना।

चिकने मुँह का ठग—देखने में बड़ा सीधा और मित्र सा वैसे काट करने और धोखा देने वाला। वह चिकने मुँह का ठग है तुमसे ही भला बना रहे और तुम्हारा ही चौपट कर डाले।

चिचड़ी सा चिमटना—पिंड न छोड़ना, साथ में बना ही रहना। वह मेरे से चिचड़ी सा चिमट गया है बहुतेरा कहता हूँ, परन्तु कहता है मेरा काम कर दो जब जाऊँगा।

चिट्टा लड़ाना—झूठा बढावा देना।

चिट्ठा बाँधना—लेखा तैयार करना, बजट तैयार करना।

चिट्ठा (कच्चा) खोलना—असलियत जाहिर करना, ऐसा वृत्तात जिसमें गुप्त से गुप्त बात छिपाई न गई हो, छोटी से छोटी बात कहना। मैं तुम्हारा सारा कच्चा चिट्ठा खोल दूँगा नही तो १००) दो।

चिट्ठी करना—रुपये देने की लिखित आज्ञा या हुँडी करना। मुझे चिट्ठी कर दो मैं रुपये ले आऊँ।

चिड़ निकालना—व्यंग छेडना। वह ऐसा नट खट है कि तुम्हारी कुछ न कुछ चिड निकाल ही लेता है।

चिड़िया का दूध—असंभव वस्तु। चिड़िया का दूध नहीं है जो मिले ही नहीं।

चिड़िया नोचन होना—चारों ओर से तकाज़ा, और माँग होना। घर से रुपया आ जाता तो हम चिड़िया नोचन से छुट्टी पाते।

चिड़िया फँसाना—(१) किसी मालदार या काम निकल जाय ऐसे व्यक्ति को अपने दाँव पर चढ़ाना। रोज नई चिड़िया फँसाकर १०) ५) रुपये ऐंठ ही लेता है। (२) किसी स्त्री को बहकाकर उसे सहवास के लिये राजी करना।

चिड़िया सोने की—(१) खूब धन देने वाला व्यक्ति। इस बार तो खूब सोने की चिड़िया पकड़ी है जब चाहते हो रुपया ले आते हो। (२) खूब सुन्दर या बहुत प्यारा व्यक्ति। ये मेरी सोने की चिड़िया इसे हटाऊँगा क्यों दिल से।

चिढ़ निकालना—खिझाने या छेड़ने का ढंग निकालना। अगर इस बात से इतना नाराज होगे और चिढोगे तो लड़के चिढ़ निकाल लेंगे।

चिढ़ाना (मुँह)—खिझाने या कुढाने के लिये मुँह को टेढ़ा या विलक्षण करना। क्यों मुँह चिढ़ाते हो तुम भी तो भूल कर ठोकर खाते हो।

चितवन का घार करना—तिरछी निगाहों से घायल करना। चितवन को वार भयो पार भयो जियरा।

चितवन चढ़ाना—भौं चढ़ाना, कुपित होना, त्यौरी चढ़ाना। क्यों चितवन चढ़ाई है हम जानते हैं तुम चाहती हो वे आकर तुम्हें रूठा हुआ समझे, यही न?

चिता में वैठना—सती होना। उसने बहुत हठ किया कि मै पती के साथ चिता में बैठूँगी, किन्तु लोगों ने न बैठने दिया।

चित्त उचटना—जी न लगना, किसी बात से वैराग हो जाना। अब मेरा चित्त उचट गया है। न मै पढ सकता हूँ न घर रह सकता हूँ, गंगा किनारे जाऊँगा।

चित्त करना—इच्छा होना, मन चाहना। ऐसा चित्त करता है यहाँ से चल दे।

चित्त चिहुँटना—चित्त में चुभना, दिल में काँटा सा लगना। लै चुभ की निकसै धँसे बिहँसै अग दिखाय, तकि तकि चित चिहुँटै खरी ऐंड भरी अँगिराय।

चित्त चुराना—मन को खींचना, मोहित करना। मेरा चित्त चुरा लिया चितवन ने यार की।

चित्त देना—ग़ौर करना, मन लगाना। चित्त दै सुनो हमारी बात।

चित्त धरना—(१) याद रखना।

मैने, चित्त धारी कबहूँ बिसारी न। (२) मन लगाना, ध्यान से। कहैं सो कथा सुनो चित धार, कहै सुने सो लहै सुख सार। (३) मन में लाना। प्रभू मेरे अवगुन चित्त न धरौ।

चित्त पर चढ़ना—(१) दिल मे बैठ जाना, मन में बसना। तुम्हारे तो वही लड़का चित्त पर चढ़ा हुआ है। (२) याद आना, स्मरण होना। देखो चित्त पर नही चढ़ रही मुझे कल तो ख़ूब याद थी।

चित्त बँटना—मन एक तरफ न रहना, विचार शक्ति दो ओर हो जाना। मै इस समय इस बात को विचार नहीं सकता क्योंकि मेरा चित्त कई ओर बॅटा हुआ है।

चित्त बॅटाना—किसी का ख़्याल इधर उधर कर देना, एकाग्र न होने देना। मुझे यह काम करने दो बार बार बीच मे बोलकर चित्त मत बॅटाओ।

चित्त में बैठना, जमना—किसी बात का मन में दृढ़ हो जाना, पक्का हो जाना। अब हमरे चित्त बैठो यह पद, होनी होउ सो होउ।

चित्त में होना या चित्त होना—इच्छा होना, जी चाहना। यह चित होत जाउँ मै अब हीं यहाँ नहीं चित लागत।

चित लगना—(१) मुहब्बत होना, दिल खिंच जाना। चित लाग्यौरी मेरो गुपाल सों। (२) जी न ऊबना, मन लगना। अब तो मेरा चित्त काम में ही लग गया है। (३) बहुत देर तक स्थिर-मन रहना। मेरा चित यहाँ नहीं लगता, अब चलो।

चित्त लेटना—पीठ के बल से लेटना। तुम चित्त लेट जाओ, तभी पेट की नस ठीक होगी।

चित्त लेना—(१) मन की थाह लेना, दिल मे छिपी हुई बात पूछना। उसका तो चित्त लो वह क्या चाहती है। (२) इच्छा होना। अपना चित्त ले चले जाओ।

चित्त से उतरना—(१) भूल जाना। सूर श्याम चित सों नहिं उतरत वह वन कुंज थली। (२) निगाहों से गिरना, दिल मे इज़्ज़त न रहना। प्रिय न रहना। अब मेरे चित्त से यह उतर गया है मै कैसे स्वीकार करूँ!

चित्त से न टरना—हृदय में याद बनी रहना, दिल में जमना। सूर चित्त ते टरति नाही राधिका की प्रीति।

चिथड़े लपेटना—कष्ट से दिन बिताना। आज कल बेचारे किसान रात दिन काम में लगे रहते

[२६४७]

हैं किन्तु फिर भी बेचारों को चिथड़े लपेटने पड़ते हैं।

चिनगारी छूटना (आँखों से)—गुस्से से आँख लाल हो जाना।

चिनगारी छोड़ना—(१) जलाने भड़काने या क्रोध दिलाने वाली बातें कहना। तुम तो एक बार चिनगारी छोड़ देते हो फिर वह लड़ने लगते हैं जब चुप होते हैं फिर वही आग लगा देते हो।

चिनगारी डालना—(१) चिनगारी छोड़ना। (२) अग्नि लगा देना।

चिनगी झड़ना—जगमगाना। जब रात को रोशनी होती है, तब देखिये उसमें से चिनगी झड़ती है।

चिन्ता सवार होना—फिक्र होना। आज कल तुम्हें किस बात की चिन्ता सवार रहती है।

चिराग गुल पगड़ी गायब होना—अँधेरा या मौक़ा मिलते ही माल चुरा या उड़ा लेना।

चिराग गुल होना—(१) दीप बुझाना। (२) रौनक मिटना। चिराग गुल हुआ फिर चहल-पहल कहाँ (३) वंश खतम होना। लड़के के मर जाने से बेचारे का चिराग़ ही गुल हो गया।

चिराग ठंडा करना—(१) दीपक बुझाना। (२) किसी का बल या शक्ति समाप्त कर देना।

चिराग तले अँधेरा होना—(१) उल्टी बात होना, रोक की जगह भी वह काम होना जिसकी रोक हो। दुनिया को दान देता है और उसका ही मित्र भूखों मर रहा है उसको पता ही नहीं, कैसे चिराग तले अँधेरा है। (२) किसी अच्छे मनुष्य द्वारा ही बुराई होना। महामहोपाध्याय का लड़का ही जाति बंधन तोड़े यह तो चिराग़ तले अँधेरा है।

चिराग लेकर ढूँढना—(१) बहुत ढूँढ खोज करना, खूब खोज कर हैरान होना। चिराग लेकर ढूँढोगे तो भी ऐसा ईमानदार आदमी सारी दुनिया में न मिलेगा।

चिराग से चिराग जलना—(१) एक से दूसरे का काम निकलना। चिराग से चिराग जलता है आज मैं बीमार हूँ मेरा काम कर दो, कल तुम्हे भी जरूरत पड़ेगी ही। (२) परस्पर लाभ पहुँचना, एक को दूसरे से फायदा होना।

चिलम चढ़ाना, भरना—(१) तम्बाकू भरना। जरा चिलम चढ़ा लाओ। (२) गुलामी करना। सारी जिन्दगी तो तुम्हारी चिलमें भरी अब सहायता के लिये किससे कहूँ।

चिल्ला खींचना—युद्ध की तैयारी करना। दुश्मन की चढ़ाई की खबर सुन कर राजाने चिल्ला खींचने की आज्ञा देदी।

चिल्ले का जाड़ा—बड़ी जोरदार सर्दी। चिल्ले का जाड़ा चीं करवा के छोड़ता है।

चीख मारना—चिल्लाना। बच्चे को यह भयावनी तसवीर न दिख लाओ, वह डर के मारे चीख मारता है।

चीरना (माल, रुपया आदि)—अनुचित रूप से धन कमाना। उसे बना कर ऐसा दाँव में फाँसा कि २००) चीर लाया।

चुकौता लिखना—भर पाई करना, सब प्राप्त हो गया ऐसा काग़ज़ पर लिखना। ३००) देकर चुकौता लिखा दिया।

चुगली खाना, लगाना—किसी की बुराई शिकायत के तौर पर किसी से करना. बुराई करके किसी को भड़काना। मेरी चाहे जितनी चुगली अफसर से लगाओ वह मेरा विश्वास करता है।

चुटकी देना—चुटकी बजाना, अँगूठे से उँगली का अग्रभाग घिस कर शब्द निकालना। जो मूरति जल थल में व्यापक निगम न खोजत पाई, सो मूरति तू अपने आँगन चुटकी दै दै नचाई।

चुटकी बजाना—चुटकी से संकेत करना। उसने ज्यों ही चुटकी बजाई मुझे सिपाहियों ने घेर लिया।

चुटकी बजाते मे ही—देखते देखते, बहुत शीघ्र, बात की बात में। यह काम तो चुटकी बजाते होगा जरा सेठ जी आ जायँ।

चुटकी बैठना—किसी ऐसे काम का अभ्यास पड़ना जो चुटकी से पकड़ कर किया जाय। अब तो चुटकी बैठ गई है फूल का कलाबत्तू वाला हिस्सा ही नोचती है कपड़े पर दाग़ भी नहीं आता।

चुटकियाँ (मीठी) लेना—(१) हँसी उड़ाना दिल्लगी उड़ाना। क्यों बेचारे की बेवक़ूफी पर मीठी चुटकियाँ ले रहे हो। (२) चुभती, व्यंग भरी या लगती बातें कहना। हमारे कामों पर आप मीठी चुटकियाँ लेते हैं, क्या आप से सब काम ठीक ही होते हैं? (३) चुटकी भरना या चुटकी से नोंचना (४) चुटकी से खोदना। बार बार कर गहि गहि निरखत घूँघट ओट करो किन न्यारो, कबहुँक कर परसत कपोल छुइ चुटकि लेत हाँ हमहिं निहारो।

चुटकियों में होना—चटपट, शीघ्र ही। देखते रहो, अभी चुटकियों में यह काम होता है।

[२६७१]

चुटकियों पर उड़ाना—दे० चुटकियों में उड़ाना।

चुटकियों में उड़ाना—(१) कुछ न समझना, परवा न करना। वह मेरा क्या कर सकता है, ऐसों को तो मैं चुटकियों में उड़ाता हूँ। (२) बात की बात में निबटाना, सहज समझना। ऐसे मामलों का तो मैं चुटकियों में उड़ाता हूँ।

चुटकी भरना—(१) चुटकी से नोचना या काटना। (२) चुभती या लगती बात कहना। (३) दे० चुटकी लेना।

चुटकी भरे लोहू टपकना—बहुत कोमल तथा गोरा होना। इतनी नाजुक और गुले अनार हैं कि चुटकी भरे लोहू टपकता है।

चुटकी माँगना—भीख माँगना। वह परिश्रम से डरता है, उसे तो घर घर चुटकी माँगना अच्छा लगता है।

चुटकी लगाना—(१) रुपया बजाने के लिये दो उँगलियों पर अँगूठे से रख कर उछालना। चुटकी लगाओ तो पता लगे खरा है या खोटा। (२) रुपया पैसा चुराने के लिये उँगलियों से जेब फाड़ना, जेब काटना। ऐसी चुटकी लगाई कि मालुम भी न हुआ और माल तीर कर लिया। (३) दूध दुहने के लिये गाय भैंस का थन पकड़ना। (४) चुटकी से पत्तों को मोड़ कर दोना बनाना। सींक से पत्ते नही जोड़ते दिल्ली के हलवाई तो चुटकी लगाकर दोना बना लेते हैं। (५) कपड़े के थान को उँगलियों से फाड़ना, थान पर से कपड़ा फाड़ना। (६) किसी चीज को पकड़ने, नोचने, खींचने, दबाने के लिये अँगूठे और बीच की उँगली को मिला कर काम में लाना। नाखून से चुटकी लगाओ तो काँटा अभी निकल आवेगा।

चुटकी लेना—(१) दे० चुटकियाँ मीठी लेना। (२) अस्पष्ट ताना मारना। क्यों साहब चुटकियाँ क्यों लेते हो साफ ही कह डालो न मैं बुरा थोड़े ही मानता हूँ।

चुटकुला छोड़ना—(१) विलक्षण या अनोखी बात कह बैठना, दिल्लगी की बात कहना। (२) लगती या चुभती हुई कोई ऐसी बात कहना जिससे एक नया ही मामला खड़ा हो जाय। उसने एक ऐसा चुटकुला छोड़ दिया कि दोनों आपस में लड़ पड़े।

चुटिया हाथ में होना—वश मे होना, अधिकार में होना, दबाव में होना। उसकी चुटिया तो मेरे हाथ मे है तुम कहो वही करवा दूँ।

चुनना (दीवार में)—जीते जी

[२६८१]

मनुष्य को खड़ा करके उस पर ईंटों की जोड़ाई करना। गोविंद सिंह के मासूम लड़के सरहिन्द के नवाब ने दीवार मे चुनवा दिये थे।

चुनौती देना—(१) चैलेंज देना, ललकारना। मै तुम में से प्रत्येक को चुनौती देता हूँ जिसका जी चाहे मेरे से आकर लड़े। (२) दिल बढ़ाना, उत्साह भरना। तुम अगर उसे चुनौती न दो तो उसकी क्या ताक़त है कि वह मेरी बराबरी करे।

चुप साधना—मौन धारण करना। आज तो मोहन सवेरे से चुप साधे बैठा है, ज़रा जाकर मनाओ।

चुप होना—जवाब न देना। जब पिता जी मुझ पर अधिक क्रुद्ध होते हैं तो मैं चुप हो जाता हूँ।

चुप्पी साधना—टालना। वह समझता था "अच्छा हुआ जो मैं चुप्पी साध गया"।

चुल्लू भर पानी में डूब मरना—शर्म से मर जाना, बहुत अधिक लज्जित होना, मुँह दिखाने लायक न होना। जाओ चुल्लू भर पानी मे डूब मरो, तुम्हारी नीच शक्ल मै नहीं देखना चाहता।

चुल्लू में उल्लू होना—थोड़ी सी भॉग मे सुधबुध भूलना, जरा से मादक द्रव्य में मदमस्त हो जाना तुम तो चुल्लू में उल्लू हो गये कहते थे हमे नशा ही नहीं होता।

चुल्लुओं रोना—बहुत आँसू बहाना, बहुत रोना। वह तुम्हारी नाराज़ी पर चुल्लुओं रोई।

चुल्लुओं लोहू पीना—बहुत दुखी करना, दुख या चिंता से खून सुखाना। इसके पकडे जाने के डर ने मेरा चुल्लुओं खून पी लिया है।

चुल्लू मे समुद्र न समाना—छोटे में बड़ी चीज़ या बात न समाना। कहीं चुल्लू में भी समुद्र समाता है उसके पेट में यह बात पचही कैसे सकती थी?

चूँ न करना—विरोध में कुछ न कहना। थानेदार ने वहीं सब को बुलाकर इतना अपमान किया किन्तु किसी ने चूँ तक न की।

चूड़ियाँ ठंडी करना या तोड़ना—पति के मरने पर स्त्री का अपनी चूड़ी तोड़ना या फोड़ना, विधवापन का निशान। बुड्ढा तो था और कुछ बरस बैठा रहता उसका क्या बिगड़ता था, इस बेचारी की भरी जवानी मे चूड़ियाँ ठंडी कर दी।

चूड़ियाँ पहनना—(१) औरत बनना यानी औरत जैसा वेष या चिह्न धारण करना। जब तुम

मर्द होकर इतना भी नहीं कर सकते तो चूड़ियाँ पहन लो। (२) डरपोक हो जाना। जब सिपाही आवे तो चूड़ियाँ पहिन कर बैठ जाना और कहना अबे मुए इधर जनाने हैं।

चूड़ियाँ बढ़ाना या बँधाना—चूड़ियाँ उतारना, हाथों से अलग करना (स्त्रियाँ चूड़ियों के साथ उतारना शब्द बोलना अपशकुन व बुरा समझती हैं। ये दो चूड़िये बँध गईं।

चूतड़ दिखाना—कायर होकर भाग जाना। जाते तो हो, कहीं चूतड़ दिखा कर न भागना।

चूतड़ सिकोड़ना—सुस्ती से चलना। ज़रा जल्दी कदम उठाओ, इस प्रकार चूतड सिकोड़ोगे तो गाड़ी निकल जायगी।

चूतड़ियों चलना—नितम्ब के बल से चलना क्या तुम्हारे पैर मारे गाये हैं, जो इस प्रकार चूतड़ियों चल रहे हो।

चूतिया चक्कर में—(१) व्यर्थ में। (२) बेवकूफी से। तुम क्यों चूतिया चक्कर में पड़ते हो यह तो आवारा है, तुम भी वही बनना चाहते हो?

चूना लगाना—(१) शर्मिन्दा करना, मात देना। हम समझते थे हम चालाक हैं अब तुमने हमारे भी चूना लगा दिया। (२) दिक करना, खूब धोखा देना। तुम्हारे भी किसी दिन ऐसा चूना लगाऊँ जो रोते रह जाओ, इस समय तो खैर जाने दो।

चूम कर छोड़ देना—(१) बिना काम किये छोड़ देना। (२) कार्य आरंभ करके छोड़ देना।

चूल न बैठना—बात ठीक न होना। परिवार बड़ा होने के कारण किसी तरह चूल न बैठती थी।

चूलें ढीली होना—दे० अजर पंजर ढीले होना (१, २)।

चूल्हा ठंडा करना—यदि चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता।

चूल्हा न जलना—(१) भोजन न बनाया जाना। (२) बहुत दरिद्र होना। कई कई दिन हो जाते हैं चूल्हा ही नहीं जलता, सब भूखे ही सो जाते हैं।

चूल्हा न्यौतना—घर के सब आदमियों को खाने का बुलावा देना। आज उनके यहाँ हमारा चूल्हा न्यौता था फिर खाना क्यों बनता?

चूल्हा फूँकना—भोजन बनाना। इतने महमान आये रहते हैं कि दिन भर चूल्हा ही फूँकने से फ़ुरसत नहीं मिलती।

चूल्हे में डालना—(१) नष्ट

करना, फेंक देना। (२) दूर करना, हटाना। चूल्हे में डालो मै नहीं देखती।

चूल्हे में पड़ना—(१) नष्ट भ्रष्ट होना। (२) कुछ भी होना। मेरी तरफ से चूल्हे में पड़े मुझे क्या ?

चूल्हे से निकल कर भाड़ या भट्टा में पड़ना—एक आफत से बच कर दूसरी उससे बड़ी विपत्ति मे फँसना।

चेक काटना—चेक लिख कर (किताब मे से काट कर) देना, बंक के नाम रुपये देने का रुक्का देना। इन्हे बगाल बंक का चेक काट कर दे दो।

चेपी लगाना— कागज़ का टुकड़ा चिपकाना। चेपी लगाने से अक्षर उभर आते हैं।

चेला मूँड़ना—शिष्य बनाना, अपने गुरुपन के धोखे मे फाँसना, अपना भक्त बनाना। बड़ा चालबाज साधु है जहाँ जाता है कोई न कोई चेला मूँड़ ही लेता है।

चेहरा उतरना—मुख पर उदासी या सूखापन होना, चिंता, लज्जा, रोग आदि के कारण चेहरे पर तेज न रहना। आज आपका चेहरा उतरा हुआ क्यों है ?

चेहरा तमतमाना—मुख पर लाली होना। क्रोध, गरमी या तेज से उसका चेहरा तमतमा रहा था।

चेहरा बिगड़ना—मुँह का रंग फीका पड़ना। बीमारी के कारण उसका चेहरा बिगड़ गया है।

चेहरा बिगाड़ना—इतना मारना कि सूरत तक न पहचानी जाय। उसको किसी ने ऐसा मारा है कि उसका चेहरा बिगाड़ दिया है।

चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना—मुँह पर उदासी छाना, डर या रज से मुख का रंग फीका पड़ जाना। आज चेहरे पर हवाइयाँ क्यों उड़ रही हैं, कोई ख़तरे की बात है ?

चैन उड़ाना—आनन्द से समय बिताना, ऐश करना। तुम तो चैन उडा रहे हो तुम्हे क्या परवा।

चैन की बंशी बजना—मज़े मे गुज़रना, सुख से जीवन बीतना।

चैन देना—सान्त्वना देना। जाकर कुछ चैन भी दे दिया करो।

चैन पड़ना—(१) शांति या सुख मिलना। (२) व्याकुलता मिटना। आज जब लड़का मिल गया तब मुझे चैन पड़ा है।

चैन से कटना—दे० चैन की बंशी बजाना।

चोंचें (दो-दो) होना—कहा सुनी हो जाना। कई दिनों से मुँह पर जवाब देना चाहता था आज हमारी उनसे दो दो चोंचें हो गई।

[२७२३]

चोट उभरना—चोट खाए हुए स्थान पर फिर से दर्द होना। बुढ़ापे मे जवानी की चोट उभर आती हैं।

चोट खाना—(१) नुक़सान उठाना। इनके लिहाज़ से मैने भी दुश्मनी की चोट खाई वरना मै उसके बाप से वसूल कर लेता। (२) आघात या प्रहार सहना। साँप चोट खाकर फिर काटे बिना नहीं छोडता।

चोट खाली जाना—वार चूकना, निशाना न बैठना। तुम्हारी चोट खाली गई मेरी ठीक बैठी।

चोट बचाना—चोट न लगने देना। उसने लाठी की चोट बचाकर छुरी घुसेड़ दी।

चोटी का—चुना हुआ। सर्वोत्तम।

चोटी का पसीना एड़ी पर आना—कड़ा परिश्रम करना, जान लडा कर काम करना। बड़ा मेहनती है जब काम करता है तो फिर नहीं कुछ भी सुनता चोटी का पसीना एड़ी पर आ जाता है।

चोटी दबना या हाथ में होना—दे० चुटिया हाथ मे होना।

चोर पड़ना—(१) चोरों का आकर कुछ चुरा ले जाना। (२) चोरों का आना। रात को तो हमारी गली में भी चोर पड़े थे, हल्ला मचाने पर भाग गये।

चोर पर मोर पड़ना—चालाक के साथ चालाकी करना, धूर्त से धूर्तता करना। यह बड़ा होशियार बनता था पर इस चोर पर मोर तुम्ही पड़े हो।

चोर बैठना (मन में)—दिल में खटका या सन्देह होना। उनके मन मे चोर बैठा था बस वही हुआ उनकी भी तलाशी ली गई।

चोरी चोरी, चोरी छिपे—छिपा कर, गुप्तरूप से। चोरी छिपे तो लाखों की कोकीन जर्मन से आती है।

चोरी लगना—चोरी करने का दोष या अपराध लगना। हमें २००) की चोरी लग गई क्या करे? ये भी भरने ही पड़ेंगे।

चोरी लगाना—चोर मानना, चोरी करने का अपराधी ठहराना।

चोला छोड़ना—प्राण त्यागना, मरना। महात्माजी ने कल चोला छोड़ दिया।

चोला बदलना—(१) मूर्ति धोकर चोला चढाना। (२) शरीर त्याग करना अर्थात् मर कर दूसरा शरीर पाना। (३) नया रूप धारण करना। आज तो चोला बदला है वर्षा होगी, क्या बात है पहिले तो आप कोट पहिनते ही न थे।

चोली दामन का साथ—गहरा ताल्लुक, बहुत मेल । उन दोनों का तो चोली दामन का साथ है, एक आवेगा तो दूसरा अपने आप साथ होगा ।

चौंर ढलना, दुरना—सिर पर चँवर हिलाया जाना, महाराज जैसा होना । अजी वे बहुत बड़े आदमी हैं उन पर चौंर ढलते हैं, तीन करोड़ के महन्त है ।

चौंर ढालना दुराना—चँवर हिलाना । अप्सरायें चौंवर दुराती थीं ।

चौंसठ घड़ी—हर समय, दिन-रात । चौंसठ घड़ी की गालियें हमसे नही सुनी जातीं ।

चौकड़ी भूल जाना—कोई उपाय न सूझना, घबरा जाना, यहीं तर्क कुतर्क करते हो वकील की जिरह पर सब चौकड़ी भूल जाओगे ।

चौकड़ी भरना—उछलना । जब हम सैर कर रहे थे, एक हिरनों की टोली सामने से चौकड़ी भरती हुई निकल गई ।

चौकन्ना होना—सजग या साव-धान होना । बदूकों की आवाज़ आई तो मै चौकन्ना हो गया ।

चौका देलना, लगाना—(१) सत्यानाश करना । कियो तीन तेरह सबै, चौका चौका लाय । (२) लीप-पोत कर धोकर ठीक ठाक करना ।

चौकी देना—(१) पहरा देना, रखवाली करना । (२) चौकी पर बैठाना, बैठने के लिये आसन देना । (३) आदर करना । वह मुई किसी को चौकी भी नहीं देती ।

चौकी बिठाना—रखवाली के लिये सिपाही तैनात करना ।

चौकी बैठना—पहरा होना ।

चौकी भरना—(१) बारी पर पहरा देना । (२) देवी, देवता के दर्शनों को मन्नत, संकल्प के अनुसार जाना ।

चौखट लाँघना—बहू को आते जाते दस बरस हो गये, यह भी नही कि कभी चौखट भी लाँघी हो ।

चौगुना (मन) होना—उत्साह होना, हिम्मत बढ़ना । इनाम मिलने से मन चौगुना हो गया, अब और अच्छा काम कर दिखा-ऊँगा ।

चौचंद पारना—बुराई उडाना बदनामी करना, चवाव करना ।

चौड़ा चकला—विस्तृत । जहाँ पर यह युद्ध हुआ था वह एक चौड़ा चकला मैदान है ।

चौथ का चाँद होना—भादों सुदी चौथ का चन्द्रमा, ऐसी वस्तु

[२७५५]

जिसके देखने से कलंक लगे। प्रात: काल उसका मुँह क्या देखा चौथ का चाँद देखा आज सारे दिन बुराइये सुनीं।

चौपट करना—सब बिगाड़ देना, बरबाद करना। उसने सारी जायदाद चौपट कर डाली।

चौपट होना—सत्यानाश होना, नष्ट भ्रष्ट या तबाह होना। हमारा किया कराया सब चौपट कर दिया इसकी अक्ल को कहें भी क्या।

चौपहरा देना—चार चार पहर के अतर पर घोड़े, आदमी आदि से काम लेना। हम तो चौपहरा देते हैं फिर बाद में कोई काम नहीं कराना चाहते।

चौमुखा दिया जलना—दिवाला निकालना (पहिले महाजन ऐसा करके दिवाले की सूचना देते थे)।

चौरंग उड़ाना या काटना—(१) ऊँट के बँधे हुए चारों पैरों को एक साथ काटना। (तलवार चलाने की वीरता की यह परीक्षा होती थी)। (२) तलवार आदि से कोई वस्तु बड़ी सफाई से काटना। (३) सब तरफ से किसी को निराश कर देना। तुमने मेरी बदनामी उड़ाकर मेरा चौरंग उड़ा दिया अब बाज़ार में मुझे कोई एक पैसा भी नहीं देता।

चौरासी में पड़ना या भरमना—ममता में फँसना, आवागमन के चक्कर में फँसना। चौरासी में पड़ी आत्मा दुख ही दुख उठावे।

चौरस का बाज़ार—चौक बाजार। चौरस के बाजार सब ही शहरों में मशहूर हैं।

छ

छँटा हुआ—माना हुआ चालाक, प्रसिद्ध धूर्त, बदमाश। वह बड़ा छँटा हुआ है उसका क्या यकीन।

छँटे छँटे फिरना—अलग अलग रहना, साथ बचाना। छँटे छँटे क्यों फिरते हो मै कोई लुच्चा तो नहीं हूँ जो तुम्हें दुनिया बुरा कहेगी।

छद बंद बाँधना—बातों में फाँसना, कपट की चाल चलना। हमेशा किसी को फँसाने के लिये छद बंद बाँधता ही रहता है।

छक्का पंजा करना—छल करना। यदि तुम मेरे सच्चे मित्र हो, तो उससे छक्का पंजा कभी न करना।

छक्का पंजा चलाना—चाल बाज़ी करना। क्यों छक्का पजा चलाते हो मैं एक न मानूँगा।

छक्का पंजा भूलना—किंकर्तव्य विमूढ़ होना, उपाय भूल जाना,

[२७६८]

कुछ न सूझना। तुम उनके तर्क के आगे सब छक्का पंजा भूल जाते हो।

छक्के छुटना—(१) होश उड़ना, अक्ल चकराना, दंग होना। छोटे से वकील से ही बैरिस्टरों के छक्के छूट गये। (२) साहस न रहना, घबरा जाना। नई सेना के आते ही शत्रुओं के छक्के छूट गये।

छक्के छुड़ाना—(१) पैर उखाड़ देना, अधीर कर देना। सिखों ने काबुलियों के छक्के छुड़ा दिये। (२) चकरा देना, विस्मित करना। उसने छ घंटे लगातार बोल कर बड़े बड़े नेताओं के छक्के छुड़ा दिये।

छछूँदर छोड़ना—हलचल मचा देना, आग लगाना। पचायत फैसला कर चुकी थी कि उसने ऐसी छछूँदर छोड़ी कि सब फिर बिगड़ उठे और मामला बढ़ गया।

छठी का दूध निकालना—मेहनत से तंग कर देना। तुम तो मुझे ऐसा काम देकर छठी का दूध निकालते हो।

छठी का दूध याद आना—बड़ी मेहनत करना पड़ना, बचपन की सब खिलाई पिलाई भूल जाना। बाप रे बाप, धूप मे काम करते करते छठी का दूध याद आ गया।

छठी का राजा—पुराना रईस।

छठी में न पड़ना—(१) किस्मत में ही नही लिखा। (२) स्वभाव विरुद्ध। देना तो उसकी छठी मे ही नहीं पड़ा है। (३) सिखाया ही न जाना।

छठे छमासे—कभी कभी, बहुत दिनों में। मै छठे छमासे शराब पी लेता हूँ।

छड़ी छटांक छड़ी सवारी—(१) अकेले (२) बिना सामान के। छड़ी सवारी रात में भी सफर करने में डर नहीं।

छत बँधना—बादल छा जाना।

छत बनाना—छप्पर डालना। यदि दो दिन दीवार बनाने में लगा दोगे तो फिर छत कब बनाओगे।

छत्र छाँह में होना—सरक्षा या शरण में होना।

छनना गहरी—दे० गहरी छनना।

छन्न होना—सूख जाना, उड़ जाना।

छप्पर टूट पड़ना—(१) विपत्ति पड़ना। (२) बुराई या आघात आना।

छप्पर पर फूँस न होना—बहुत दरिद्र या कंगाल होना। लड़की ब्याह भी दी तो खायगी क्या उनके तो छप्पर पर फूँस तक नही।

छप्पर पर रखना—अलग रखना, जिक्र तक न करना। तुम अपनी

[२७८५]

घड़ी घड़ी छप्पर पर रखो, लाओ हमारा रुपया दो।

छप्पर फाड़कर देना—अचानक प्राप्त होना, घर बैठे पहुँचाना। भगवान छप्पर फाड़ कर देता है, कल रोटियों को तंग थे मार्ग में थैली पा गये।

छप्पर रखना—(१) एहसान या बोझ रखना। (२) कलंक या दोष सिर मढ़ना। मुझ पर क्यों छप्पर रखते हो मुझे क्या सरोकार है मैने इतना कर दिया वह क्या कम है।

छम छाम हो जाना—बिल्कुल शांत हो जाना। बिल्ली के आते ही चूहे छमछाम हो गये।

छल छंद, छलछिद्र करना—कपट या धोखे का काम करना।

छल छंदों से दूर रहना—चालाकी आदि से दूर रहना। मै इन छल छंदों से दूर रहता हूँ मुझे बदनामी बुरी लगती है।

छल पिलाना—(१) कटोरे बजा बजा कर या वैसे ही राहगीरों को पानी पिलाना। (२) धोखे की चाल सिखाना।

छलनी कर डालना—(१) बहुत स्थानों पर छेद कर देना। (२) बहुत स्थानों पर फाड कर छेद कर देना।

छलनी में डाल छाज में उड़ाना—थोड़ी बात को बहुत बढ़ा देना। उससे मत कहना नहीं तो वह छलनी में डालकर छाज मे उड़ाता है, सारे शहर में बदनामी फैल जायगी।

छलनी हो जाना—(१) बहुत छेद हो जाना। तेजाब से तमाम धोती छलनी हो गई है। (२) बहुत स्थानों पर से घिस या फट जाना।

छलनी होना (कलेजा)—दे० कलेजा छलनी होना।

छलांग मारना—कूदना। यदि तुम इतने ऊँचे पर से छलाँग मारोगे तो तुम्हारे पैर में चोट आ जायगी।

छलावा सा—बहुत चंचल। करते छटकि छूटी छलकि छलावा सी।

छलावा खेलना—इधर उधर छिपना, दिखाई न देना। दे दो न क्यों छलावा खेलते हो मैं इसे छोड़कर ही घर चली जाऊँगी।

छाँट करना—वमन करना। न मालूम उसे क्या हो गया है, कल दोपहर से बराबर छाँट कर रहा है।

छाँह न छूने देना—(१) पास न आने देना। मै ऊपर ऊपर की बात करता हूँ इसकी छाँह भी नहीं छूने देता। (२) पास न जाने देना। मैंने लड़के को उनकी छाँह भी नही छूने दी।

छाँह बचाना—पास न जाना, दूर

ही रहना। उसके दाने निकल रहे हैं छाँह बचाना।

छाँह में कमाना—ढडक में बैठकर धन प्राप्त करना। हम भी पढ़ जाते तो क्यों हल चलाते कहीं छाँह मे कमाते न।

छाँह में होना—(१) रक्षा या शरण में। मेरी छाँह में उसका कोई क्या बिगाड़ सकेगा? (२) ओट मे, छिपना। पंथ अति कठिन पथिक कोई सग नहीं तेज भये तारागन छाँह भयो रवि है।

छाकटा होना—चालाक या बद-माश होना।

छ्'कटे बाजी चलना—धोखा देना। मुझसे भी छाकटे बाजी चलते हो?

छाती उड़ी जाना—(१) जी मिच-लाना, घबराना। (२) दुख या आशंका से व्याकुल होना।

छाती उमड़ आना—दे० छाती भर आना, याद से व्याकुल होना। पाती आई पीव की छाती उमड़ी जाय।

छाती करना—हिम्मत करना। कौन छाती कर सकता है कि रात में मरघट में जाय।

छाती का जम—(१) ढीठ या जिद्दी। (२) दुख दायक। (३) हर वक्त तग करने वाला। ये छाती का जम मर जाय तो अच्छा, ऐसा बेटा भी व्यर्थ।

छाती कूटना—(१) शोक या दुख से छाती पीटना। (२) दे० छाती ठोकना।

छाती के किवाड़ खुलना—(१) ज्ञान हो जाना, हिए की आँख खुलना। (२) बहुत आनन्द होना। तुम्हारे आते ही मा की छाती के किवाड़ खुल गए उन्हें बहुत चिंता थी। (३) खुल कर बातें होना। आज उनकी छाती के किवाड़ खुल गए, चलो बैर भाव मिटा। (४) जोर से चीख उठना। (५ छाती फटना।

छाती के किवाड़ खोलना—(१) कलेजा टुकड़े-टुकड़े करना। क्यों मेरे सामने मेरे बच्चे को मार कर मेरी छाती के किवाड़ खोलते हो। (२, अज्ञान, अंधकार मिटाना। (३) दिल की बातें खोल खोल कर कहना। (४) आनन्द देना।

छाती खोलना—(१) उदार चित्त होना, दिल खोलना। दान के लिये छाती खोल देता है। (२) मन मे मैल न होना। वह प्रत्येक मित्र के आगे छाती खोल कर रख देता है।

छाती छलनी होना—दुख झेलते झेलते जी ऊब जाना। अब मेरी

छाती छलनी हो गई है मै जीना नहीं चाहती ।

छाती जलना—(१) ईर्ष्या होना । मेरी उन्नति देखकर तुम्हारी छाती क्यों जलती है ? (२) सताप होना । उस दुष्ट को देखकर मेरी छाती जलती है । (३) कुढना । मुझे अच्छे कपडे पहिनते देखकर उस की छाती जलती है । (४) हृदय व्याकुल होना । उसे देखने के लिये मेरी छाती जल रही है ।

छाती जुडाना या ठंडी होना—दिल बाग़-बाग होना, इच्छा पूरी होना, मनोरथ सफल होना । अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती । आज तुम्हें सुखी देख कर मेरी छाती ठडी होगई है ।

छाती ठुकना—(१) विश्वास होना । मेरी छाती नहीं ठुकती कि तुम जैसा कहते हो कर ही दोगे । (२) हिम्मत बँधना । तुम्हारी छाती ठुकती हो तो तुम रुपया लगाओ, मैं कुछ नहीं कहता कितना लाभ होगा ।

छाती ठोकना—हिम्मत करके कहना, पक्की प्रतिज्ञा करना । मैं छाती ठोक कर कहता हूँ कि आज उसे पकड़ ही लाऊँगा ।

छाती तले रखना—(१) बहुत प्यार से रखना । (२) बिल्कुल अपने पास ही रखना । मैंने इस लडकी को लड़के की तरह हमेशा छाती तले रखा है, इसे दुख मत होने देना ।

छाती तले रहना—(१) आँखों के सामने रहना । (२) बहुत प्यारा होकर रहना ।

छाती थाम कर रह जाना—(१) दिल मसोस कर रह जाना । (२) शोक से स्तब्ध हो जाना । इस भारी वज्रपात को सुनकर सब लोग वहाँ छाती थामकर रह गये ।

छाती देना—स्तन पिलाना, दूध पिलाना । तुम ऊपर का ही दूध पिलाती हो या बच्चे को कभी छाती भी देती हो ?

छाती धड़कना—डर छा जाना । उसकी आहट सुनते ही उनकी छाती धड़कने लगी ।

छाती निकाल कर चलना—अकड़ से, तनकर चलना । जवानी मे सभी छाती निकाल कर चलते हैं ।

छाती निकाल कर रख देना—दे० कलेजा निकाल कर रख देना ।

छाती पक जाना—(१) दे० छाती छलनी होना । (२) स्तनों के अग्रभाग पक जाना । (३) छाती पत्थर की करना (१) ।

छाती पत्थर की करना—(१) दिल सख़्त कर देना । प्रति दिन

की आफ़तों ने मेरी छाती पत्थर की कर दी है। (२) भारी दुख सहने को दिल पक्का या मजबूत करना। छाती पत्थर की करके मैंने चीरा लगवाया है।

छाती पर झेलना—खुद दुख सहना, वार सहना। मै सारे दुख अपनी छाती पर झेल कर तुझे पाला है।

छाती पर चढ कर ढाई चुल्लू लहू पीना—मारना, कठिन दण्ड देना, बदला लेना। भीम ने दु:शासन की छाती पर चढकर ढाई चुल्लू लहू पीलिया तब उसे शान्ति हुई।

छाती पर चढ़ना या सवार होना—दुख देने के लिये मौजूद होना। तुम हर समय मेरी छाती पर चढ़े रहते हो कभी तो सुख से बैठने दो।

छाती पर धर कर ले जाना—मरते वक्त भी अपने साथ लेजाना, अपने साथ परलोक मे ले जाना। कंजूस पेट काट कर रुपया जोड़ता है, परन्तु सब यहीं रह जाता है। क्या छाती पर धर कर ले जाता है?

छाती पर पत्थर रखना—(१) दिल सख्त कर लेना। (२) चुपचाप कष्ट सह लेना। तुमने तो छाती पर पत्थर ही रख लिया है इतने कष्ट में भी उफ तक नहीं करते।

छाती पर बाल होना—(१) दयावान, उदार होना। छोटा तो छिछोरा है, परन्तु बड़े भाई की छाती पर तब भी बाल हैं। (२) हिम्मत होना, वीर होना। जिसकी छाती पर बाल हो वह सामने आवे।

छाती पर साँप लोटना—(१) जलन से दुखी होना, दिल जलना। जब मुझे गैर का खयाल आया, मेरी छाती पर साँप लोट गये। (२) कलेजा दहल जाना, डर होना। यह काम करने का तो नाम सुन कर भी छाती पर साँप लोटता है।

छाती पर मूँग या कोदों दलना—बहुत कष्ट या तकलीफ देना, किसी के सामने उसे जलाने का काम करना। मिलती हो दिखाकर हमे ग़ैरों के गले से, क्या फायदा छाती पे मेरी मूँग दले से।

छाती पीटना—विलाप करना। रोहिताश्व की मृत्यु होने पर शैव्या छाती पीटती हुई, उसकी लाश मरघट के लिये ले चली।

छाती फटना या दरकना—(१) दे० छाती जलना। (२ बहुत

दुख उत्पन्न होना। बच्चे का दुख देखकर तो छाती फटती है।

छाती पर फिरना—घड़ी घड़ी याद आना। मेरी छाती पे फिरता है, तुम्हारा वह शराब।

छाती पर बने रहना—हर समय मौजूद या पास रहना। तुम मेरी छाती पर ही क्यों बने रहते हो, और कोई काम नहीं है?

छाती फुलाना—(१) घमंड करना, अभिमान दिखाना। (२) ऐंठ कर या अकड़ कर चलना। क्यों छाती फुलाते हो एक थप्पड़ में जान निकल जायगी।

छाती फाड़ कर कमाना—दिल तोड़ कर परिश्रम करना, बहुत मेहनत से कमाना। भाई! हम छाती तोड़ कर कमाते हैं हम कैसे पैसे का ख्याल न करें?

छाती भर आना—(१) दुख से पिघल जाना। उसके घाव देख कर तो छाती भर आती है (२) मुहब्बत या दया से गद्‌गद् हो जाना। वारि, विलोचन बाँचत पाती, पुलकि गात भरि आई छाती। (३) स्तनों मे दूध आ जाना। बच्चे को जब भूख होती है छाती स्वयं भर आती है।

छाती मसोसना—दिल ही दिल दुखी होना। उनका कोई अपना न था बेचारी छाती ममोस कर रह गई, कुछ न कर सकी।

छाती में छेद होना—दे० छाती छलनी होना।

छाती से पत्थर टलना—(१) पुत्री का ब्याह होना। (२) किसी बड़े भारी खटके वाले काम को करके निश्चिन्त हो जाना। लो चलो यह भी छाती से पत्थर टला दो महिने से इसके लिये भी रात दिन चैन न था।

छाती से लगा कर रखना—बहुत प्यार से अपने पास ही रखना।

छाती से लगाना—प्रेम से दोनों भुजाओं के बीच दबाना, गले लगाना। कलेजे के सब मुहाविरे कलेजे के बजाय छाती शब्द लगाकर काम मे लाये जा सकते हैं—छाती के बाकी मुहाविरे भी 'कलेजे' के मुहाविरों जैसे अर्थ में ही प्रयोग होते हैं।

छान डालना या मारना—बहुत ढूँढ खोज करना। गली गली छान मारी परन्तु तुम्हारा कहीं पता न मिला।

छान बीन करना—(१) बहुत विचार करना। (२) बहुत खोज कर के, एक एक चीज़ ढूँढ कर। पूरी छान बीन के साथ यह पुस्तक लिखी गई है।

छापा मारना—(१) दौड़ देना, चढ़ आना। पुलिस ने कल उनके घर छापा मारा और कुछ जब्त पुस्तकें उठा ले गई।

छापा लगाना—मुहर लगाना। मुंशी ने चिट्ठी लिखकर महाराज को दे दी, और महाराज ने छापा लगाकर हरकारे को सौंप दी।

छिपे छिपे चोट करना—मिलकर नुक़सान पहुँचाना। छिपे छिपे चोट करना कोई उनसे सीख ले।

छिया छरद करना—बहुत घृणा करना।

छींकते नाक कटना—छोटी सी बात पर दण्ड देना, कहते ही पकड़ा जाना। वहाँ तो छींकते ही नाक कटी; मैंने जो जरा कहा मुझे भी गवाह बना लिया।

छींक होना—बुरा शकुन होना, न करने की सूचना। छींक होते ही क्यों जाते हो और लड़ाई हो जायगी।

छींका टूटना—बिना मेहनत चीज़ मिलना। बिल्ली के भागों छींका टूटा (कहावत) तुम चाहते ही थे कि वह न मिले।

छीछालेदर उड़ाना, करना—(१) हँसी उड़ाना। (२) दुर्दशा करना, पोल खोलना। भरी सभा में बिचारे का ऐसा छीछालेदर उड़ाया कि शर्म से गर्दन नीची हो गई।

छींटे पड़ना—व्यंग से कहना। यदि तुम साथ जाते तो तुम पर भी छींटे पड़ते।

छीर डालना—कपड़े के छोरों पर झालर डालना। यह डुप्पटे पर छीर किसने डाले हैं।

छुछहँड़ दिखाना—इनकार कर देना, 'है ही नहीं' कहना। क्यों छुछहड़ दिखाते हो हम जानते हैं तुम्हारे पास है, देखो! काम तुम्हें भी कभी पड़ेगा ही।

छुटा छरिंदा—(१) अकेला, निश्चित। वह तो छुटा छरिंदा है कुछ करना नहीं धरना नहीं। (१) स्वच्छन्द, आज़ाद। छुटा छरिंदा है जिसकी बहू बेटी निगाह पड़ी उसी पर हाथ डाल देता है।

छुट्टी पाना—(१) झंझट न रहना। भाई हमने तो अपना काम पूरा करके छुट्टी पाई। (२) निश्चित होना। (३) झंझट से बचना। तुम तो यह बहाना बना कर छुट्टी पाओगे तंग तो हमे होना पड़ेगा।

छुट्टी मनाना—(१) काम न करना, तुम हर रोज छुट्टी मनाते हो? (२) छुट्टी के दिन आनन्द से बिताना।

छुरियाँ कटखन में पड़ना—(१) खून के दस्त होना। (२) हाथ लगना और काम में आना। यहाँ

[२८६४]

आम रखे थे न जाने किसके छुरियाँ कटखन में पड़े।

छुरी कटारी दिखाना या बनाना—मारने की धमकी देना। तुम क्या मुझे छुरी कटारी दिखाते हो मैं तुम से अधिक कसाई हूँ।

छुरी कटारी रहना—बैर होना, दुश्मनी रहना। उन दोनों में छुरी कटारी रहती है।

छुरा चलना—(१) चीरना छुरी से, छुरियों से लड़ाई होना। जरा सी बात में वहाँ छुरिये चल जाती हैं।

छुरी चलाना—बहुत दुख देना, हानि पहुँचाना। क्यों गरीब पर छुरी चलाते हो।

छुरी तले दबा लेना—अत्यन्त दुख देना। इनके यहाँ तो कोई भी नौकरी करे, उसी को छुरी तले दबा लेते हैं।

छुरी तेज करना—नुकसान पहुँचाने की तैयारी करना। क्यों छुरी तेज करते हो वह तो पहले ही मरा हुआ है।

छुरी तेज होना—(१) हुकूमत होना, आज्ञा मानी जाना। आज कल उनकी छुरी तेज है। (२) किसी को नुकसान पहुँचाने की तैयारी होना।

छुरी फिरना—(१) छाती फटना। उसे मज़ा पाते देख मुझ पर छुरी फिरती है। नुकसान या अनिष्ट होना।

छुरी (गले पर) फेरना—(१) बहुत ही हानि पहुँचाना। (२) मारना।

छूटना (प्राण, शरीर, नाड़ी)—मरना।

छू बनना या होना—चलता बनना, चुपचाप भाग जाना। पुलिस से पहिले ही वह छू बना।

छूछू बनाना—मूर्ख बनाना।

छून उतारना—भूत प्रेत की छाया मंत्र से दूर करना।

छूमन्तर होना—(१) शांत होना। (२) गायब होना, उड़ जाना। मार खाते ही भूत छू मंतर हो गया।

छेड़ निकालना—चिढ़ाने वाली बात करना। उसने चिढ़ाने के लिये अच्छी छेड़ निकाली है।

छेद ढूँढना, निकालना—(१) बुराइयाँ ढूँढना। (२) पोल खोलना। क्यों किसी के छेद निकालते हो भीतर सब ही ऐसे हैं।

छै जाना—छेद का फटजाना। भारी झुमकी पहिनने से कान छै गये।

छोड़ना (किसी पर, किसी को)—(१) पीछे दौड़ाना, पीछे लगा देना। मैंने ऐसे आदमी तुम

पर छोड़ रखे हैं कि तुम्हारी एक एक मिनट की खबर रखते हैं। हिरन के पीछे कुत्ते छोड़ दिये। (२) मादा पर नर पशु चढ़ाना। घोड़ी पर घोड़ा छोड़ दिया।

छोड़ना (किसी को) छोड़ कर—सिवाय। तुम्हें छोड़ मेरा कोई नहीं।

छोह करना—प्यार करना। उसका स्वभाव ऐसा अच्छा था, छोटे छोटे बच्चों से बड़ा छोह करती थी।

छोहाना—(१) बहुत प्रेम जाहिर करना। (२) दया या अनुग्रह करना। महन्त जी ने छोहा कर मुझे नौकर रख लिया। (३) क्रोधित होना। क्यों छोहाता है साड़े (साले) को मार दूँगा।

ज

जंगल जाना—टट्टी या पाखाने जाना। जंगल गये हैं फिर स्नान करके आप से मिलेगे।

जंगल में मंगल करना, होना—निर्जन स्थान में चहल पहल होना। स्वामी जी की कुटिया से जगल में मंगल हो गया है।

जँचा तुला होना—(१) बिलकुल ठीक, उपयुक्त, पूरी होना। बिल्कुल जँची तुली बात कही है। (२) सधा या मँजा होना। जँचा तुला बोलता है एक अक्षर इधर उधर करने पर वह मजा नही रहता। (३) अव्यर्थ (४) सुपरीक्षित। उसका काम जँचा तुला है, सैकड़ों दफा हाथों से निकला हुआ है।

जंजाल में पड़ना, फँसना—उलझन में पड़ना, चक्कर मे पड़ना कठिनता सामने आना। हम तो विवाह करा कर जजाल में फस गये, गृहस्थी के कामों से ही पीछा नहीं छूटता।

जंजीर डालना—(१) पैरों में बेड़ी डालना। (२) बधन में फाँसना। ऐसी जजीर डाली है कि तीन बरस तक तो कुछ नही हो सकता—कागज़ लिख दिया है।

जंजीर बजाना—किवाड़ की कुँडी खट खटाना। देखो सेठानी जजीर बजा रही हैं, पूछो क्या मँगाती हैं।

जंतरी खींचना—(१) तारों को जंते में डाल कर पतला लंबा बनाना। (२) सीधा करना, टेढ़ा पन दूर करना।

जंदरा ढीला होना—(१) कल पुर्जे ढीले होना। (२) हाथ पैर वेकार होना, थकावट आना। दफ्तर के काम से जदरा ढीला हो जाता है।

जई डालना—अंकुर निकालने के लिये जई, जौ आदि को भिगोना।

जई डाल दो दशहरे को आवश्यकता पड़ेगी।

जई लेना—अंकुरित होगा या नहीं; यह परीक्षा लेना। गेहूँ की जई ले लो तब खेत मे लेना।

जक पड़ना, बँधना—(१) चैन पड़ना। तुम्हे किसी एक तरह जक नही पड़ती। (२) रट लगना, धुन लगना। तव पद चमक चक चाने चन्द्र चूड़ चख चितवत एक टक जक बँध गई है।

जकड़ बन्द करना—(१) कसकर बाँधना। (२) अच्छी तरह काबू मे कर लेना। मैने उसके हस्ताक्षर कराकर जकड़ बंद कर लिये हैं, अब वह चूँ भी न करेगा।

जकड बन्द होना—अकड़ जाना सुन्न होना। बेहोशी के बाद शरीर जकड बन्द सा हो जाता है।

ज़ख्म खाना—घायल होना। जब शेर का बच्चा, और भालू का बच्चा, एक घंटे तक लड़ते रहे तो दोनों जख्म खाकर गिर पड़े।

ज़ख्म देना—चोट पहुँचाना। वह धोखे से मेरे सिर में ज़ख्म देकर तेजी से पीछे की ओर भाग गया।

ज़ख्म पकना—घाव में पीव पडना। यदि फोडे पर पानी पड़ेगा तो जख्म पक जायगा।

ज़ख्म पड़ना—घाव हो जाना। उस दिन ज़रा खूँटे से पैर छिल गया था, उसी जगह जख्म पड़ गया है।

ज़ख्म (ज़ख्म) ताजा या हरा होना—(१) घाव भरा हुआ न होना। (२) गई हुई विपत्ति वा कष्ट का फिर लौट आना। मुझे जब उसकी याद दिला देते हो तो मेरा ज़ख्म हरा हो आता है।

ज़ख्म पर नमक छिड़कना—कष्ट मे और कष्ट देना, दुखी को दुखी करना, जले को जलाना। क्यों चिढ़ाने की बाते करके मेरे जख्म पर नमक छिड़क रहे हो।

ज़ख्म हरा करना—(१) घाव को ताज़ा करना। (२) दुबारा रंज या दुख पहुँचाना। (३) दुबारा विपत्ति लाना।

जग-हँसाई करना, कराना—ऐसा काम करना जिससे दुनिया पतित वा बेवकूफ समझ कर हँसी उड़ावे। क्यों जग-हँसाई कराते हो, ऐसा और भी कभी किसी ने किया है ?

जगह छोड़ना—(१) जहाँ बैठे हों वहाँ से सरकना, हटना। जगह छोड कर बैठो और भी आदमी तो बैठेगे। (२) लिखने में सादा काग़ज़ छोड़ना, नया अनुच्छेद।

सादा दो अंगुल जगह छोड़ कर शुरू करो। (३) नौकरी छोड़ना मैंने वह जगह छोड़ दी है, वहाँ रुपये कम मिलते थे। (४) रहने का स्थान बदलना। मैंने वह जगह छोड़ दी है दूसरे मुहल्ले में मकान ले लिया है। (५) दुकान का स्थान बदलना। वह जगह तो छोड़ दी अब दुकान लेकर कहाँ बैठे हो!

जगह जगह होना—(१) सब स्थानों पर, सब जगह। (२) थोड़ी थोड़ी दूर पर जगह। जगह लट्ठे गाड़ दिये गये।

जटल मारना—अट बंट बातें करना। क्या इस समय भाँग पी कर आये हो जो ऐसी जटल मार रहे हो।

जटल हाँकना—झूठे बयान करना। उसने यह सब आप से जटल हाँकी है असली हाल कुछ भी नहीं बतलाया।

जड़ उखाड़ना या खोदना—(१) बिल्कुल नाश कर देना। (२) हानि या बुराई करके किसी की स्थिति बिगाड़ना। मैंने जड़ उखाड़ दी अब वह उससे एक पैसा भी न ले सकेंगे।

जड़ जमाना—दृढ़ करना, स्थायी करना। मैंने उसकी जड़ जमादी है अब जिन्दगी भर वही नौकरी कर सकता है।

जड़ पकड़ना—(१) मज़बूत होना। तुम्हारी एक भी बात मेरे हृदय में जड़ नहीं पकड़ सकती, क्योंकि तुम झूठे हो।

जड़ पड़ना—(१) प्रारम्भ होना, सहारा होना। बुरे विचारों की जड़ ही न पड़ने दो। (२) नींव या बुनियाद पड़ना।

जड़ें ढीली करना—(१) विश्वास दूर करना, मान न रहने देना। मैंने उनकी जड़ें ढीली कर दी हैं अब वह इनकी कुछ न मानेगा। (२) स्थायित्व नष्ट करना।

जत्था बाँधना—समूह बनाना। क्या बात है सब जत्था बाँधकर कहाँ जा रहे हैं।

जनम गँवाना—जीवन का समय व्यर्थ नष्ट करना। हमने तो बेकार बैठे बैठे जनम गँवा दिया कुछ भी तो न किया जो काम आता।

जनम (घुट्टी) घुँटी में पड़ना—बहुत ही आदत होना, आदी या अभ्यस्त भी ऐसा कि पीछा न छूट सके, बचपन से ही आदत होना। झूठ तो इनकी जनम घुँटी में पड़ा है, कोशिश करने पर भी सत्य नहीं बोल सकते।

जनम डुबोना—जिन्दगी बरबाद

[२६१६]

करना। क्यों पाप में पड़ कर जनम डुबोते हो।

जनम जनम—सर्वदा, हमेशा। जनम जनम मुनि जतन कराहीं अंत राम कहि आवत नाहीं।

जनम बिगड़ना—धर्म नष्ट होना। शराब पीने से जन्म बिगडता है।

जनम में थूकना—घृणा पूर्वक धिक्कारना। बुरा काम करोगे तो सब तुम्हारे जनम में थूकेंगे।

जनम हारना—(१) व्यर्थ जीवन खोना। (२) दूसरे के वश मे या दास होकर रहना। हमने तो उनके हाथों जनम हार दिया वे चाहे जो कहें करेंगे ही।

जब जब—जिस जिस समय, जब कभी। जब जब मैंने कहा उसने विरोध ही किया।

जब तक जीना, तब तक सीना—जीवन भर किसी काम में लगा रहना। भाई हमे तो इसी नौकरी में, जब तक जीना तब तक सीना ही पड़ेगा।

जब तब—कभी कभी, मौके बे मौके। जब तब वे यहाँ आ जाते हैं रोज नहीं।

जब देखो तब—हमेशा, हर समय। जब देखो तब तुम यहीं खड़े रहते हो।

जब होता है तब—प्रायः बराबर। जब होता है तब तुम मार देते हो।

जबड़ा फाड़ना—मुँह खोलना या फाड़ना, जंभाई आना। असभ्यता से जबड़ा फाड़ते हो मुँह पर हाथ रख लिया करो।

ज़बान उलटना—(१) मुँह से शब्द निकलना। पाँच बरस का हो गया ज़बान ही नहीं उलटती। (२) कह कर मुकर जाना या बदल जाना। तुम्हारा क्या यकीन तुम तो ज़बान उलट जाते हो।

ज़बान काट कर देना—(१) वायदा या प्रतिज्ञा करना। मैंने ज़बान काट कर दे दी है मै अब अवश्य करूंगा। (२) कह तो दिया और क्या ज़बान काट कर दे दूँ?

ज़बान काटना—अफसोस या पछतावा होना। बात ग़लती से कह गया अब ज़बान काटूँ तो झूँठा बनूँ।

ज़बान के नीचे ज़बान रखना या होना—कह कर मुकर जाना या बदल जाना। तुम ज़बान के नीचे ज़बान रखते हो, पहिले कुछ कहते थे अब कुछ कहते हो।

ज़बान को मुँह में रखना—(१) चुप होना। (२) बेमौके बात न कहना, ज़बान को वश में रखना।

ज़बान को मुँह में रखो यह बात अभी नहीं कहनी चाहिये।

ज़बान खींचना—अनुचित या धृष्टता पूर्ण बातों के लिये कठोर दण्ड देना। गाली दी तो ज़बान खींच लूँगा।

ज़बान खुलना—मुँह से शब्द निकलना। ज़बान खुले तो कुछ कहूँ।

ज़बान खोलना—बोलना, मुँह से शब्द या बात निकालना।

ज़बान घिसना या घिस जाना—कहते कहते थक जाना। ज़बान अपनी गई घिस खुदा खुदा करते, हैं दोनों हाथ मेरे थक गये दुआ करते।

ज़बान चलना—(१) खाते ही रहना। (२) मुँह से अनुचित शब्द कहना। (३) जल्दी जल्दी कहना। तुम्हारी जबान चलती ही रहती है एक मिनट को भी तो बंद नहीं होती।

ज़बान चलाना—(१) बोलना, बहुत जल्दी जल्दी बोलना। (२) अनुचित शब्द कहना। क्यों ज़बान चलाते हो चुप रहो।

ज़बान चाटना-दे० ओंठ चाटना।

ज़बान टूटना—(१) (बालक का) साफ बोलना शुरू करना। (२) ज़बान दुखना, ज़बान में तकलीफ होना (व्यंग्य) बोलने में क्या ज़बान टूटती है?

ज़बान डालना—(१) प्रश्न करना, पूछना। ज़बान डालो तो उत्तर दूँ। (२) माँगना, याचना। मैं उस नीच के आगे ज़बना न डालूँगा।

ज़बान थामना या पकड़ना—(१) बोलने न देना, कहने से रोकना। ज़बान क्यों पकड़ते हो बात करने दो (२) अशुद्ध उच्चारण या कथित शब्द पर तर्क करना। जब बात न काट सके तो जबान ही पकड़ने लगे, भला जल्दी मे किससे ग़लती नहीं होती!

ज़बान दबाकर कहना, दबी ज़बान से बोलना, कहना—(१) धीरे से या चुपके से कहना। ज़बान दबा कर क्यों कहते हो ज़ोर से कहो जो मै भी तो सुन लूँ। (२) डरते, सहमते हुए कहना। बेचारे ने बड़ी दबी ज़बान से छुट्टी माँगी परन्तु उस निर्दय ने नहीं दी।

ज़बान देना या हारना—वायदा, प्रतिज्ञा करना। हम ज़बान देकर नही टल सकते।

ज़बान निकालना—कुछ भी कहना। यदि तुम लोगों में से

किसी ने भी जबान निकाली तो ज़बान ही खींच लूँगा।

ज़बान पर आना—कहने की इच्छा होना, मुँह से निकलना। मेरी ज़बान पर आयेगा वही कहूँगा, तुम्हें इससे क्या?

ज़बान पर रखना, रहना—(१) चखना, स्वाद लेना। ज़बान पर रखो तो ज्ञात हो कि नमक कितना है। (२) याद रहना, कहते रहना। उसका नाम तुम्हारी ज़बान पर ही रहता है।

ज़बान पर लाना—कहना, बोलना। मैं इस बात को ज़बान पर भी न लाऊँगा।

ज़बान पर होना, धरा होना—(१) एक दम याद होना या स्मरण रहना। गाली तो उसकी ज़बान पर धरी रहती है। (२) प्रसिद्ध होना। पं० जवाहर लाल का नाम हर एक की ज़बान पर है।

ज़बान बंद करना—(१) बहस या विवाद में हराना। उसने बड़े बड़े पंडितों की ज़बान बंद करदी। (२) बोलने न देना या बोलने से रोकना। (३) चुप होना। (४) इजहार लिखना।

ज़बान बंद होना—(१) बहस में हार जाना। (२) बोला न जाना, मुँह से शब्द न निकलना। (३) बोलने का अधिकार या आज्ञा न होना। तुम्हारी क्या ज़बान बंद थी तुम्हीं कह देते?

ज़बान बदलना, बदल जाना—कह कर मुकर जाना। लिखा लो नहीं जबान बदल जावेगा।

ज़बान बिगड़ना—(१) बुरे शब्द कहने का अभ्यास होना। (२) ज़बान चटोरी होना। (३) खाने की कोई चीज़ अच्छी न लगना। बुखार में जबान बिगड़ जाती है, मुनक्का तक कड़वी लगती है।

ज़बान में (पर) काँटे होना—बहुत प्यास से जीभ सूखना। जबान में काँटे पड़े हैं पानी पिलाओ।

ज़बान में पड़ना—दे० ज़बान पर होना।

ज़बान में लगाम देना—गाली देने से रोकना या सोच समझ कर बोलने को कहना।

ज़बान में लगाम न होना—सोच समझ कर न बोलना, भला बुरा कह ही देना। उनकी ज़बान में लगाम नहीं है, वे तो उचित हो चाहे अनुचित बस कह ही डालते हैं।

ज़बान रोकना—(१) चुपकरना। वह कुछ विरोध में जरूर कहता,

परन्तु मैने ज़बान रोकदी। (२) ज़बान पकड़ना।

ज़बान लड़ाना—(१) बात चीत करना। (२) सवाल जवाब करना। (३) कोई काम करने के लिये कहना। (४) कुछ माँगना। तुम्हारा सब ज़बान लड़ाना फिजूल है।

ज़बान सँभालना—सोच समझकर बोलना, अनुचित न कहना। ज़बान सँभाल कर बोलो तुम बच्चे नहीं हो।

ज़बान सीना—दे० मुँह सीना।

ज़बान से निकलना—(१) न चाहते हुए कह देना। जब वह बात जबान से निकल गई तो मुझे पछतावा आया। (२) उच्चारण होना।

ज़बान से निकालना—(१) कहना। (२) उच्चारण करना, बोलना। उससे 'त्' ज़बान से नहीं निकाला जाता।

ज़बान हिलाना—(१) जरा कह देना, मुँह से शब्द निकालना। तुम्हारे ज़बान हिलाने की देर है, काम तो कहते ही होगा। (२) बोलने की कोशिश करना। यह बच्चा ज़बान तो हिलाता है, बोल नहीं पाता।

ज़बानी जमा खर्च करना—बातें ही बातें करना, केवल कहना करना कुछ नहीं। तुम केवल ज़बानी जमा खर्च करते हो कभी करके भी दिखलाया है?

जमना (दृष्टि)—नज़र का बहुत देर तक एक जगह ठहरना। बुढापे में दृष्टि जमती नहीं।

जमा कुल या कुल जमा, में—(१) सब मिलाकर, सब। वह कुल जमा पाँच रुपये लेकर घर से चले हैं। (२) अमानत के तौर पर रखा हो। उनका सौ रुपया बंक में जमा है।

जमाना बात (मन में)—दिल मे बैठना, बात का मन पर पूरा प्रभाव पड़ना। यह बात मेरे मन में जम गई है, अब मै ऐसा ही करूँगा।

जमाना रंग—असर हो जाना। तुम्हारे संगीत का ख़ूब रंग जमा।

जमाना (रंग)—असर डालना, मुग्ध करना। एक बार तो रंग जमा दूँगा, कोई भी जगह से हिल जाय तो मेरा जिम्मा।

ज़माना देखना—खूब अनुभव या तजरबा होना, खूब होशियारी जानना। हमें क्या चलाते हो हमने जमाना देखा है।

ज़माना जानता होना—दुनिया जानती होना, सब द्वारा जाना होना। उन्हें जमाना जानता है

[२१७४]

किसी से भी पूछ लो वही बता देगा।

ज़माना है—(१) समय है। (२) दुनिया है। अब क्या ज़माना है बाप बेटे में झगड़ा होता है।

ज़माने भरके होना—बहुत भारी, बहुत अधिक। वह जमाने भर का बदमाश है उससे क्या जीतोगे।

जमा मारना—बेईमानी से किसी का धन या माल ले लेना या हज़म कर जाना। कही से जमा मार लाया होगा वरना दो लाख रुपया चार साल में कैसे कमा सकता है?

ज़मीन आसमान एक करना—दे० आसमान ज़मीन एक करना।

ज़मीन आसमान का फ़रक़ होना—दे० आसमान जमीन का अंतर।

ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाना—(१) बहुत शेखी बघारना, बहुत गप्पें लड़ाना। बातों में तो वह जमीन आसमान के कुलाबे मिला देता है, करने के नाम नानी मर जाती है। (२) बहुत परिश्रम या उद्योग करना। खूनी का पता लगाने में उसने जमीन आसमान के कुलाबे मिला दिये।

ज़मीन उठना—(१) खेत अन्न पैदा करने के लिये किराये पर देना। इस बार जमीन नहीं उठाई खुद ही कुछ बो देंगे। (२) खेत जोतने बोने लायक होना।

ज़मीन का पैबंद होना—खाक में मिल जाना, मर जाना। कभी हम भी जमीन का पैवंद होंगे, सदा कोई नहीं रहा।

ज़मीन का पैरों तले से खिसकना—भौचक्का रह जाना, होश हवास जाते रहना। वारंट का नाम सुनते ही उसके पैरों तले की ज़मीन खिसक गई।

ज़मीन चूमने लगना—(१) नीचा देखना। बहुत मुकदमे बाज़ बनता था, मुझसे सामना पड़ते ही अब वह ज़मीन चूमने लगा है। (२) पटक खाना। क्या पहलवान हो एक लड़के से कुश्ती लड़ने में ही ज़मीन चूमने लगे। (३) औंधे गिरना। जरा से धक्के से वह जमीन चूमने लगा।

ज़मीन दिखाना—(१) नीचा दिखाना, मात देना। (२) कुश्ती में उल्टी पटक देना। इस पहलवान ने सब को ज़मीन दिखाई।

ज़मीन देखना—(१) नीचा देखना, हारना। तुम मुझे क्या ज़मीन दिखाओगे, मैंने अच्छे अच्छों के होश उड़ा दिये हैं। (२) पटक खाना। (३) औंधे गिरना।

ज़मीन पकड़ना—(१) कुश्ती में नीचे आकर ऊपर के पहलवान से उठाया न जाना। उसने ऐसी ज़मीन पकड़ी कि चित्त ही न किया गया। (२) जम कर बैठना। तुम तो चलने का नाम भी नहीं लेते, ज़मीन पकड़ लेते हो।

ज़मीन पर आ रहना—(१) किये पर बहुत पछताना। आखिर वह ज़मीन पर आरहे पहिले तो आसमान पर चढ़े रहते थे। (२) मुँह के बल गिरना।

ज़मीन पर चढ़ना—(१) घोड़ा तेज़ दौड़ाने का अभ्यास होना। (२) किसी काम का अभ्यासी होना।

ज़मीन पर पैर न रखना या पैर न पड़ना—बहुत इतराना या अभिमान करना, अकड़ कर फिरना। जब से एम० ए० पास हुआ है ज़मीन पर पैर ही नहीं रखता।

ज़मीन बाँधना—(१) कार्य की प्रणाली निश्चित करना। पहिले ज़मीन तो बाँधो फिर कहो कि हम फौरन करेंगे। (२) सुन्दर कल्पना करना। ज़मीन तो बड़ी अच्छी बाँधता है। परन्तु शब्द जरा चुने हुये नहीं होते।

ज़मीन में समा जाना—(१) शर्म से जमीन में गड़ना, नीची नज़र होना। वह बेचारी पर्दा फास होते ही ज़मीन में समाई जा रही थी।

ज़मीन से पीठ न लगना—(१) चैन न पड़ना, तड़पना। रात भर उसकी पीठ ज़मीन से नहीं लगी। (२) चित्त नहीं पाना।

जय मनाना—समृद्धि या विजय चाहना। हम तो आपकी ही जय मनाते रहते हैं, भगवान आपको सफल करे।

ज़रदी छाना—चेहरा पीला हो जाना, खून न रहना या दुर्बलता होना। तुम्हारे चेहरे पर ज़रदी छा रही है कुछ इलाज करो।

ज़रब देना—(१) चोट लगाना, पीटना। दगा देत दूतन, चुनौती चित्र गुसै देत. जम को जरब देत पापी लेत शिव लोक। (२) गुणा करना।

जरीब डालना—भूमि को जरीब से नापना।

जर्द पड़ना—बीमारी से खून सूखना। वह तो अब की बार इतना बीमार रहा है कि सब जर्द पड़ गया है।

जल उठना—(१) बहुत क्रोधित होना, नाराज होना। वह मेरी बात सुनते ही जल उठा और मारने को तैयार हो गया। (२) आग में लपटें निकलना।

जलकर पतंगा या खाक हो जाना या कोयला हो जाना—क्रोध से पागल हो जाना। तुम तो ज़रा ज़रा सी बातों पर जल कर खाक हो जाते हो।

जलती आग बुझाना या जलती आग में पानी डालना—(१) आफत टालना। (२) झगड़ा मिटाना। उसने आकर जलती आग मे पानी डाला वरना यहाँ खून हो जाता।

जलती आग में कूदना—विपत्ति में पड़ना। क्यों तुम जलती आग में कूदते हो ये दोनों तो एक हो जावेंगे तुम बुरे बनोगे।

जलती आग में घी डालना—लड़ाई या क्रोध और भड़काना। तुम चिढ़ाने की बाते कह कर और जलती आग में घी डालते हो।

जल थल एक होना—(१) खूब वर्षा होना। आज तो वर्षा ने जल थल एक कर दिया है। (२) पानी ही पानी नजर आना। (३) बाढ़ आना।

जल मरना—डाह, ईर्ष्या, द्वेष आदि से बहुत कुढना और व्यथित होना।

जला जला कर मारना—बहुत दुख देना, सताना या तग करना। क्यों मुझे जला जला कर मार रहे हो मै विवश हूँ नहीं तो मजा चखा देता।

जली कटी पर आना या सुनाना—(१) खरी खरी सुनाना। (२) गाली गलौज करना। यह दिल्लगी नहीं अच्छी जली कटी पे न आ, हँसी हँसी में ही मुझको रुलायगा तू क्या ? (३) द्वेष ईर्ष्या या डाह से लगती हुई बात कहना। तुम भी जली कटी पर आ गये तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ?

जली कटी या जली भुनी बात कहना, सुनाना—दे० जली कटी पर आना या सुनाना।

जले पर नमक छिड़कना या लगाना—दे० जख़्म पर नमक छिड़कना।

जले पाँव की बिल्ली—घुमकड़ स्त्री।

जले फफोले फोड़ना—बदला लेने के लिये दुखी को सताना, मरे को मारना। भाई तुम भी इस कगाली में मेरे वारंट निकलवा कर जले फफोले फोड़ते हो।

जवानी उठना या उभरना—यौवन प्रारंभ होना, जवानी की उमर आना। अब तो उसे जवानी उठ रही है, निराली ही अदा है।

जवानी उतरना या ढलना—जवानी का समय समाप्त होना,

उमर ढलना। हमारे कामों से तो जल्दी ही जवानी उतरने लगी।

जवानी चढ़ना—(१) जवानी उठना। (२) मद पर आना, मद मत्त होना। आज कल तो तुम्हें जवानी चढ़ी है छाती निकाल कर चलते हो।

जवाब तलब करना—(किसी घटना का) कारण पूछना, कैफियत मांगना। दो दिन की देर होते ही उन्होंने जवाब तलब किया।

जवाब देना—इनकार करना। यह ढंग से काम नहीं करते थे, इसी लिये मालिक ने आज नौकरी से जवाब दे दिया।

जवाल में पड़ना फँसना—आफ़त सिर पर लेना। हम तो रुपया देकर जवाल में फँस गये, रोज कचहरी जाना पड़ता है।

जवाल में फांसना, डालना—आफ़त में फँसाना।

ज़हमत उठाना—मुसीबत सहना, दुख भोगना। माँ बच्चे के लिये बड़ी जहमतें उठाती है।

जहन्नुम में जाय—चूल्हे में जाय, हमें कोई संबन्ध नहीं, कुछ भी हो। जब वह मानता नहीं तो जहन्नुम में जाय।

ज़हर उगलना—(१) जली कटी कहना। तुम्हारा क्या छीन लिया है जो ज़हर उगलते हो। (२) चुभती या मर्म भेदी बात कहना जिससे सुनने वाला दुखी हो।

ज़हर करना या कर देना—(१) भोजन कड़वा कर देना। (२) खाने के समय झगड़ा आदि करके जी जला देना। खायें क्या तुमने तो खाना जहर कर दिया शान्ति से खाने देती तो अच्छा लगता, (३) असह्य कर देना। मेरे लिये उसने हर एक चीज़ जहर कर दी है।

ज़हर का घूँट पीना—गुस्सा जाहिर न होने देना, मन मसोस कर रह जाना। मैं सिर्फ तुम्हारी वजह से ज़हर का घूँट पीकर रह गया वरना उसका मुँह तोड़ देता।

ज़हर का बुझाया हुआ—बहुत अनिष्ट कारक या उपद्रवी, बहुत खतरनाक। वह अगर आ गया तो खाक कर देगा क्योंकि वह तो ज़हर का बुझाया हुआ है, वह इन बातों का जानी दुश्मन है।

ज़हर की गांठ—दे० विष की गाँठ।

ज़हर खाना (किसी पर)—किसी बात वा आदमी के कारण ग्लानि, दुख, ईर्ष्या, लज्जा आदि से आत्महत्या पर उतारू होना। तुम्हारे इस नीच काम पर तो उन्हें ज़हर खा लेना चाहिये।

ज़हर देना—ज़हरीली, मार देने वाली वस्तु खिलाना या पिलाना। खर्चा नहीं चला सकते तो घर वालों को जहर दे दो, क्यों !

ज़हर मालूम होना—अप्रिय प्रतीत होना। मै यहाँ कैसे रह सकता हूँ जब भाई को मेरा यहाँ रहना ज़हर मालूम होता है।

ज़हर मिलाना—बात को अप्रिय कर देना, अपनी तरफ से बुरी बात जोड़ देना। मैं सीधी बात कहता, वह उसमें जहर मिलाकर जा लगाता, आखिर वे लड़ पड़े।

ज़हर में बुझा हुआ—(१) दे० जहर का बुझाया हुआ। (२) काम या बात को अप्रिय बनाना। आप जो बात कहते हैं जहर मे बुझी हुई कहते हैं।

ज़हर लगना—बुरा या अप्रिय लगना। मुझे आज कल सब कुछ जहर लगता है।

जहाँ का तहाँ रह जाना—(१) पड़ा होना, पहिले वाले स्थान पर ही रहना (२) दब जाना, आगे न बढ़ना। लड़का बीमारी के कारण जहाँ का तहाँ रह गया अब क्या लम्बा होगा। (३) कुछ कार्रवाई न होना। मामला जहाँ का तहाँ रह गया है, अब गर्मियों में कुछ करेंगे।

जहाँ तहाँ होना—(१) कहीं कहीं। जहाँ तहाँ यह बूटी मिल पायेगी। (२) सब जगह। रहा एक दिन अवधिकर अति आरत पुरलोग, जहँ तहँ सोचहिं नारिनर कृस तनु राम वियोग। (३) इधर उधर। जहँ तहँ गईं सकल मिलि, सीता कर मन सोच, मास दिवस बीते जु मोहिं, मारहि निसिचर पोच।

जहाज का कौआ या पत्ती होना—(१) दूर फिर कर एक ही आश्रय। सीता पति रघुनाथ जू तुम लग मेरी दौर, जैसे काग जहाज़ को सूझत और न ठौर। (२) बहुत बड़ा धूर्त।

जहूर में आना—प्रकट होना। अब जरा जहूर में आये हैं अब हम देखेंगे।

जागता हुआ—(१) प्रत्यक्ष, साक्षात, सामने। उसकी कलाएँ जागती हुई हैं। (२) चमकती हुई, उज्वल। उसका दिमाग़ बड़ा जागता हुआ है, फौरन समझ जाता है।

जात से खारिज करना—जाति भ्रष्ट करना उसने कई कई काम समाज के विरुद्ध किये थे इसी से उसे पंचों ने जात से खारिज कर दिया।

जाता क्या है—(१) कुछ खर्च नही होता, कुछ नुकसान नहीं।

तुम्हारा जाता ही क्या है नुकसान तो हमारा होगा।

जान आना—(१) जी ठिकाने होना। गर्मी से बेहोश था अब ज़रा शर्बत पीकर जान आई है। (२) शोभा बढ़ना, महत्व बढ़ जाना। तुम्हारे शब्दों से इस लेख में जान आ गई है। रंग फेर देने से तसवीर मे जान आगई है।

जान कर अनजान बनना—जानते हुए किसी को चिढ़ाने, धोखा देने या अपना मतलब निकालने के लिये मूख सा बनना।

जान का गाहक या जान का लागू बनना या होना—(१) बहुत तग करना, पीछा न छोड़ना। तुम तो मेरी जान के गाहक बन गये हो शाति से नहीं बैठने देते, कोई न कोई झंझट छेड़ ही देते हो। (२) प्राण लेने को इच्छा होना, भारी शत्रु। यह तो मेरी जान का लागू बन गया अकेला मिलते ही मार डालेगा।

जान का जंजाल होना—आफत होना। इन का यहाँ चौबीसों घंटों रहना हमारे लिये जान का जंजाल हो गया है।

जान का रोग—(१) दुखदायी रोग, मरने पर ही पीछा छोड़ने वाला। तपेदिक जान का रोग है जान लेकर ही जाता है। (२) आफ़त होना, बहुत तंग करने वाला। तुम तो मेरी जान के रोग हो चैन नहीं लेने देते।

जान के लाले पड़ना—जी पर आ बनना, जीना दुश्वार होना। हमें अपनी जान के लाले पड़े हैं उनकी रक्षा क्या करें।

जान को जान न समझना—(१) प्राण जाने की परवा न करना। उसने जान को जान न समझा और मुझे दुश्मनों के बीच से ले ही आया। (२) बहुत परिश्रम करना। जान को जान न समझ कर रात दिन पिला ही रहता है, न खाने की परवा न पीने की, उसे तो काम ही काम सूझता है।

जान को जान न समझना (दूसरे की)—(१) बहुत निष्ठुर व्यवहार करना (२) मार डालने बहुत दुख देने में कुछ न सोचना। वह जान को जान नहीं समझता यों ही काट डालता है।

जान को रोना (किसी की)—दुखी होकर बुरी बातें कहना, स्मरण करना। दुखदाता या दुख को याद करना। तुमने उसकी जीविका ली, वह अब तक तुम्हारी जान को रोता है।

जान खाना—(१) बार बार

[३०४८]

कहना। क्यों जान खाते हो कह तो दिया कल ला दूँगा। (२) बार बार घेर कर दिक करना, तग करना। भाई क्यों जान खाते हो एक काम कर लूँ जभी तो दूसरा करूँगा।

जान खोना—जान कर मरना, प्राण देना। उसने इस लड़की के पीछे जान खोदी।

जान चुराना—दे० जी चुराना।

जान छुडाना—(१) प्राण बचाना। जब काम करने का वक्त आता है तो लोग जान छुड़ाकर भागते हैं। (२) छुटकारा पाना, अप्रिय या दुखदायक वस्तु को दूर करना। इसे कुछ ले देकर जान छुड़ाओ।

जान छूटना—झंझट से अलग होना, छुटकारा मिलना। हमारी तो जान छूटी अब वहाँ रोज रोज न जाना पड़ेगा।

जान जाना—मरना, प्राण निकलना। सैकड़ों जानें जायँगी तब इस युद्ध का अंत होगा।

जान जोखो का काम होना—प्राण जाने का डर, बहुत कष्टप्रद। कुएं में कूदना जान जोखों का काम हैं।

जान दूभर होना—(१) कठिन या असभव होना। वहाँ जान बचना दूभर होता है। (२) जिन्दगी बोझ सी दिखाई देना, जीने की इच्छा न रहना। हमें अपनी जान दूभर है हम अब इस संसार में रहकर क्या करें ? (३) जान बचना कठिन होना। हमे अपनी जान दूभर है तुम्हारा क्या इन्तजाम कर सकते हैं।

जान देना—वह तो तुम पर जान देता है किन्तु तुम्हें उसकी कुछ भी परवाह नही।

जान पर आ बनना या जान की नौबत आना—(१) प्राण जाने का भय होना। जब जान पर आ बनी तो मैने भी पिस्तौल चलाई। (२) घोर आपत्ति आना। कल ही रुपये जमा करने हैं अब जान पर आ बनी है तब माँगने आया हूँ। (३) व्यग्रता या नाक मे दम होना।

जान पर खेलना—प्राणों को सकट में डालना, जान जाने की परवा न करना। जान पर खेल कर वह लड़ाई के बीच मे पहुँचा।

जान बचाना—(१) पीछा छुड़ाना। तुम जान बचाते फिरते हो कि तुम से कोई काम करने को न कह दे। (२) प्राण रक्षा करना। तलवार ने मेरी जान बचाई।

जान बूझ कर करना—भूल से नही बल्कि संकल्प करके। तुमने जान बूझ कर इस काम को बिगाड़ा है।

जान भारी होना—जीने की इच्छा न होना, जिन्दगी बोझ मालूम होना।

जान मार कर काम करना—बहुत परिश्रम करना। वह जान मार कर काम करता था यह यों ही बेगार टालता है।

जान मारना—(१) बहुत सख्त मेहनत कराना। उनके यहाँ कौन काम करने जाय! दिन भर जान मार डालते हैं। (२) बहुत सिखाना, बार बार कहना पड़ना। इसके साथ जान मारो जब कहीं यह समझता है। (३) किसी को मार डालना।

जान में जान आना—चित्त स्थिर होना, कठिनाई का समाप्त होना। व्यग्रता दूर होना। डाकू पीछे पीछे भाग रहे थे जब मैं गाँव में पहुँच गया तब जान में जान आई।

जान लड़ाना—अत्यधिक प्रयत्न करना। तुम तो जब पढ़ने में जान लड़ा दोगे तभी पास हो सकोगे।

जान लेवा—तुम ऐसे मनुष्य के साथ प्रति दिन जाते हो जो तुम्हारी जान का लेवा है।

जान सूखना—(१) होश हवास उड़ जाना। शेर को देखते ही मेरी तो जान सूख गई। (२) बहुत कष्ट होना। क्यों बेचारी को घर में बंद करके जान सुखा रहे हो। (३) बुरा लगना, खलना। किसी को कुछ देते देख तुम्हारी क्यों जान सूखती है।

जान से जाना—प्राण खोना, मरना। तुम अगर बीच में पड़ोगे तो जान से जाओगे मेरा क्या बिगड़ेगा।

जान से हाथ धोना या धो बैठना—प्राण गँवाना, मर जाना। तुम अगर झगड़े मे पड़ोगे तो जान से हाथ धो बैठोगे।

जान हलाकान करना—दिक़, हैरान या तग करना। क्यों बेचारे न्योले को बाँध कर उसकी जान हलाकान कर रहे हो।

जान हलाकान होना—तग, दिक या हैरान होना।

जान होठों पर होना—(१) प्राण कंठ में आना, प्राण निकलने पर होना। प्यास के मारे मेरी जान होठों पर है, पानी लाओ। (२) बहुत पीड़ा होना।

जा पड़ना—कहीं एक दम अचानक पहुँचना।

ज़ाब्ता बरतना—नियम के अनुसार चलना। यदि आपको यहीं रहना है तो यहीं का जाब्ता बरतना पड़ेगा।

जामे में फूला न समाना—बहुत खुश होना। वह तो यह सुनकर जामे में फूला न समाएगा।

जामे से बाहर होना—(१) अत्यंत क्रुद्ध होना, आपे से बाहर होना। क्यों जामे से बाहर हुए जाते हो तुम्हीं बुद्धिमान थे तो खुद कर लेते। (१) दे॰ जामे में फूला न समाना।

जाया करना—नष्ट करना। आप क्यों इसके इन्तज़ार में वक्त जाया कर रहे हैं।

जारी करना—शुरू करना। कांग्रेस ने कानून बना तो लिये हैं पर अभी तक जारी नही किये।

जाल डालना या फेंकना—मछलियाँ पकड़ने या कोई चीज़ निकालने के लिये जल में जाल छोड़ना। जाल डाला ही था कि भारी हुआ, निकाल कर देखा तो एक लाश थी।

जाल फैलाना या बिछाना—(१) चिड़ियों आदि के लिये जाल जमीन पर लगाना। (२) किसी को फँसाने के लिये युक्ति या आडम्बर करना। खूब जाल बिछा रखा है दिन भर में एक आध तो आ ही फँसता है बस हो जाती है मज़दूरी। (३) बहुत होना। भारत में बीमा कम्पनियों ने जाल बिछा रखा है।

जाल मारना—धोखा देना। तुम खूब जाल मारते हो।

जाल में फँसना—धोके में आना। लोग सौन्दर्य पर मुग्ध होकर वेश्याओं के जाल में फँस जाते हैं

जिगर का खून पीना—(१) दुख देना। क्यों जिगर का खून पी रहे हो। (२) दुख सहना। मन मसोस मसोस कर रहना, हर दम खून जिगर का पीना।

जिद चढ़ना, पकड़ना, पर आना—हठ करना, अड़ना। क्यों जिद पकड़ते हो मै न दूँगा।

जिद्द चढ़ना—हठ पकड़ना। तुम उसे दिखाना मत, यदि जिद्द चढ़ गई तो फिर ले कर ही टलेगा।

जिन चढ़ना—गुस्सा या जिद्द चढ़ना। जब जिन चढ़ता है तो वह किसी की नहीं मानता।

जिन्दगी के दिन पूरे करना, भरना—(१) मरने वाला होना। हालत खराब है, जिन्दगी के दिन भर रहे हैं। (२) दुख के दिन काटना। क्या खुश हैं? जिन्दगी के दिन पूरे कर रहे हैं।

जिम्मे करना—भार सौंपना।

जिम्मे डालना—कर्ज ठहराना या देना।

जिम्मे निकलना, होना—नाम ऋण होना। ५) तुम्हारे जिम्मे निकलते हैं।

जिरह काढ़ना या निकालना—(१) पूछ ताछ करना, खोद खोद

कर पूछना । (२) तर्क वितर्क करना ।

ज़िल्लत उठाना, या पाना—(१) बेइज्जत होना । तुम्हारे लिये मैंने कितनी जिल्लत उठाई, पर तुम पर एहसान नहीं । (२) तुच्छ होना ।

ज़िल्लत देना—(१) हतक करना, शर्मिन्दा करना । (२) अपमानित करना ।

ज़िहन खुलना—बुद्धि का विकास होना । जिहन खुल गया है अब जल्दी समझ जाता है ।

ज़िहन लड़ना—अक़्ल पहुँचना । जिसका जिहन लड़ गया उसी ने सवाल निकाल लिया ।

ज़िहन लड़ाना—बुद्धि दौड़ाना । क्यों जिहन लड़ाते हो कुछ समझ में न आवेगा ।

जिहाद का झंडा—वह झंडा जो मुसलमान क़ाफिरों से लड़ने के समय लेकर चलते थे ।

जिहाद का झण्डा करना—काफिरों से लड़ना । मुहम्मद गोरी ने जिहाद का झण्डा करके सोमनाथ को लूटा ।

जिह्वाग्र होना—खूब अच्छी तरह याद होना । आज का पाठ तो मुझे जिह्वाग्र है, गुरु जी चाहें जहाँ से पूछ लें ।

जी अच्छा होना—नीरोग होना, चित्त स्वस्थ होना । दो तीन दिन से बुखार था आज जी अच्छा है ।

जी आना (किसी पर)—प्रेम या आसक्त होना, प्राप्ति की इच्छा होना । जिस पर जी आवे ले जाओ । आगया जी किसी पे जी ही तो है, लग गई आँख आदमी ही तो है ।

जी उकताना—मन न लगना, उचाट होना । मेरा जी बैठे बैठे उकता गया ।

जी उचटना—मन हटना । अब तो इस काम से जी उचट गया है ।

जी उठना—पुनर्जीवित होना । यदि कंजूस से रुपयों का नाम ले दो तो एक बार मर कर भी जी उठेगा ।

जी उड़ जाना—घबराहट या चंचलता होना, धैर्य न रहना । दवाई की गर्मी से जी उड़ा जा रहा है ।

जी उदास होना—चित्त चिन्ता मय या खिन्न होना ।

जी उलट जाना—(१) मन बदल जाना । (२) मन वश में न रहना, विक्षिप्त होना, होश हवास न रहना । उसका जी उलट गया है अब वह घर वालों से भी नहीं बोलता ।

जी ऊपर तले होना—उबकाई आना, कै आने को होना । मेरा

जी ऊपर तले हो रहा है मोरी पर ले चलो।

जी करना— (१) इच्छा होना। अब तो जी करता है यहाँ से चल दें। (२) हिम्मत, साहस, हौसला करना।

जी काँपना—भय से हृदय धक-धक करना। उस दिन से ऐसा डर लगा है कि वहाँ जाने से मेरा जी काँपता है।

जी का बुखार निकालना—दिल के गुब्बार निकालना, कुछ कह कर मन की जलन मिटाना। तुम भी गालियाँ देकर, पीटकर अपने जी का बुखार निकाल लो।

जी का बोझ हलका होना—चिन्ता मिटना, खटका दूर होना। आज परीक्षा हो गई अब जी का बोझ हलका हो गया।

जी की अमान माँगना—रक्षा की प्रतिज्ञा कराना। रुपया नहीं मैं तो जी का अमान माँगती हूँ।

जी की आ लगना—पीछा छूटना या प्राण बचना कठिन होना। अब जी की आ लगी तब मैं यह करने पर उतारू हुआ हूँ।

जी की जी में रहना—इच्छा पूरी न होना, सोची व चाही बात न कर पाना या न होना। हमारे तो जी की जी में ही रह गई आपकी कुछ भी सेवा न कर सके।

जी की निकालना—(१) मन की उमङ्ग पूरी करना, हविस पूरी करना। (१) हृदय के उद्गार निकालना। तुम भी जी की निकाल लो फिर कहोगे कि लिहाज की थी।

जी की पड़ना—प्राण बचाना या पीछा छुड़ाना कठिन होना। तुम अपनी गाओ मोहि जी की परी है आय।

जी को जी समझना—दूसरे जीव के कष्ट को कष्ट समझना, क्लेश न पहुँचाना, दया करना। तुम दूसरे के जी को भी जी समझो तो इतना न मारो।

जी को न लगना—(१) चित्त में अनुभव न होना, हृदय में संवेदना या सहानुभूति न होना। दूसरों की पीड़ा किसी के जी को नहीं लगती। (२) प्यारा लगना, भाना। तुम्हारे जी को ऐसी चीज़ नहीं लगती।

जी को मारना—(१) मन की इच्छाओं को रोकना। (२) संतोष करना। जिसने जी को मार लिया वह सोना हो गया।

जी खट्टा करना—दुर्भाव, वैराग, घृणा आदि उत्पन्न करना। तुम्हारे इन नीच कामों ने हमारा जी-खट्टा कर दिया, अब हम दोस्त नहीं रह सकते।

जी खट्टा होना—मन फिर जाना, घृणा, वैराग आदि होना। उस एक बात से मेरा जी खट्टा हो गया।

जी खपाना—(१) तन्मय हो जाना, जी तोड़ कर किसी काम में लगना। हमने तो आपको प्रसन्न करने में जी खपा डाला पर आप खुश न हुए। (२) प्राण देना, जान लड़ा देना। वह जो काम उठाता है उसी में जी खपा डालता है।

जी खुलना—हिचक या संकोच न रहना। यह कुछ शर्माती है जिनसे जी खुला हुआ है उनसे तो खूब बोलती है।

जी खोल कर कहना—(१) जितनी इच्छा हो, मन माना। जी खोलकर बुरा भला कहो, मुझे परवा नहीं। (२) बेधड़क, बिना संकोच या हिचक के। जो कुछ तुम्हें कहना है जी खोलकर कहो।

जी गंवाना—प्राण खोना। यदि प्रति दिन रात में उस रास्ते से जाओगे तो किसी दिन जी गंवा बैठोगे।

जी गिरा जाना—जी बैठा जाना, तबियत सुस्त या शिथिल होना। आज तो कुछ जी गिरा जा रहा है।

जी घट जाना—पहले तो बड़ा प्रेम रखते थे, पर अब न जाने क्यों उनका जी घट गया है।

जी घबराना—(१) चित्त व्याकुल या व्यग्र होना। मुझे इतना काम करना पड़ेगा यह देख कर जी घबराता है। (२) मन न लगना, जी ऊबना। मेरा जी घबरा रहा है मुझसे नहीं लिखा जाता। (३) घृणा होना। तुम्हारी तो शक्ल देख कर जी घबराता है।

जी चलना—(१) इच्छा होना, चाहना। (२) चित्त मोहित होना जी आना।—(१) दिलेर, शूर। (२) दानी, उदार। (३) रसिक।

जी चाहना—अभिलाषा होना, इच्छा होना।

जी चाहे—यदि मन में आवे।

जी चुराना या छुपाना—(१) मोहित कर लेना, हृदय लेना। इन्दिरा ने मेरा जी चुरा लिया है। (२) काम से भागना, न करने की इच्छा करना। यह काम से जी चुराता है। छीन लेना, मोह लेना। उसने चार आँखें होते ही उसका दिल चुरा लिया।

जी छूटना—निराश होना। इतनी जल्दी क्यों तुम्हारा जी छूट जाता है, तनिक प्रयत्न तो किया करो।

जी छोटा करना—(१) दिल उदास, निराश या निरुत्साह

करना। (२) व्यय में संकोच या कजूसी करना।

जी छोड़ना—(१) प्राण त्यागना। (२) हिम्मत हारना। कार्य में कठिनता आवे तो जी मत छोडो, सफलता अवश्य मिलेगी।

जी छोड़ कर भागना—(१) एक दम भागना। (२) हिम्मत हार कर काम से चले जाना। हाथ से मशीन चलाने बीस आदमी आये सब जी छोड कर भाग गये।

जी जलना—(१) ईर्ष्या होना। (२) कुढना क्रोध आना, मन में संताप होना। मुझे अपनी ये करतूतें मत सुनाओ मेरा जी जलता है।

जी जलना—(१) ईर्ष्या उत्पन्न करना। (२) रंज पहुँचाना, दुखी करना। (३) कुढाना या चिढाना।

जी जानता है—कहा नहीं जा सकता। उसने इतनी मार खाई कि जी ही जानता होगा।

जी जान लड़ाना—(१) बहुत परिश्रम से करना। (२) दत्त चित्त होना, मन लगाना।

जी जान से चाहना—हृदय से चाहना। मैं जी जान से तुम्हारी सफलता चाहता हूं।

जी जान से लगना—(१) सारा ध्यान लगा देना, तत्पर होकर करना। उसने इस काम में जी जान लगा कर मेहनत की है। (२) एक ही चिंता होना। उसे जी जान से लगी है कि मकान बन जाय।

जी टँगा रहना, होना—चिंता या खटका लगा रहना। दो महीने से पत्र भी नहीं आया जी टँगा हुआ है।

जी टूट जाना—(१) निराश या उत्साह भग होना, पस्त हिम्मत होना। उनकी बातों से हमारा जी टूट गया है अब कुछ न करेंगे। (२) मन फीका हो जाना।

जी ठंडा होना—(१) संतुष्ट या शात होना। उन्हें क्रोध नहीं उनका जी सदा ठंडा है। (२) मनोभिलाप पूरी होना। वह यहाँ से निकाल दिया गया अब तो जी ठंडा हो गया ?

जी ठुकना—(१) मन को सतोप होना। (२) विश्वास होना। (३) हिम्मत बँधना। जी नहीं ठुकता कि मैं इसे कर सकूँगा।

जी डालना—(१) जीवित करना। (२) मरने से बचाना। वद्य जी ने ही जी डाला है वरना मै तो चल ही दिया था। (३) प्रेम करना, हृदय मिलाना। जी डाल दिया उनमें अब तुम्हें क्या दें ?

जी डूबना—(१) बेहोशी होना,

विह्वल होना। (२) घबराहट या बेचैनी होना।

जी ढहा जाना—दे० जी बैठा जाना।

जी तपना—दे० जी जलना। सुनि गज जूह अधिक जिउ तपा, सिंह जाति कहुँ रह नहिं छिपा।

जी तरसना—(१) पाने के लिये अधीर या व्याकुल होना। तुम्हारे दर्शनों को जी तरसता है। (२) इच्छा पूरी न होना। जब तक बंगाल में रहे रोटियों को जी तरसता ही रहा।

जी तोड़ कर काम करना—दे० जान मार कर काम करना।

जी दहलना—आशंका या भय से जी काँपना, ठिकाने न रहना।

जी दान देना—प्राण रक्षा करना प्राण बचाना।

जी दार होना—साहसी या बहादुर होना।

जी दुखाना—चित्त को कष्ट देना। व्यर्थ किसी का जी दुखाने से क्या लाभ?

जी देना—(१) प्राण खो देना। (२) दूसरे की प्रसन्नता या रक्षा के लिये प्राण तक प्रस्तुत करना। (३) बहुत प्रेम करना। वह तुम पर जी देता है तुम भागे फिरते हो।

जी दौड़ाना—लालसा होना, मन चलना।

जी धँसा जाना—दे० जी बैठा जाना।

जी धक धक करना } भय आदि
जी धक धक होना } से कलेजा उछलना, जी धड़कना।

जी धड़कना—(१) हिम्मत न पड़ना। चार पैसे निकालते जी धड़कता है। (२) डर के मारे घबराहट होना। मेरा जी अब तक धड़क रहा है कहीं यहाँ भी साँप न आजाय!

जी निकलना—(१) प्राण छूटना। (२) भय से चित्त व्याकुल होना, प्राण सूखना। अब तो उधर जाते जी निकलता है। (३) प्राणांत कष्ट होना। तुम्हारा रुपया तो नहीं जाता, फिर क्यों जी निकलता है।

जी निढाल होना—चित्त स्थिर न रहना।

जी पक जाना—(१) कष्ट सहने के लिये कलेजा पका हो जाना। (२) चित्त दुखी होजाना या फिर जाना। नित्य तुम्हारी जली कटी बातें सुनते सुनते जी पक गया है।

जी पकड़ लेना—कलेजा थामना, असह्य दुख के वेग को दबाने के लिये छाती पर हाथ रखना।

जी पकड़ा जाना—माथा ठनकना,

मन म खटका या संदेह होना। तार आते ही मेरा जी पकड़ा गया।

जी पड़ना—जान आना, मरे में जान आना।

जी पर आ बनना—प्राण बचाना कठिन होना।

जी पर खेलना—प्राणों को संकट में डालना, जान को आफत में डालना।

जी पाना—किसी का स्वभाव समझ लेना। दो चार दिन ठहरिये, जी पाते ही आपकी नौकरी के लिये कह दूँगा।

जी पानी करना—(१) चित्त में दया उत्पन्न करना। उसकी दुख भरी आवाज ने मेरा जी पानी कर दिया। (२) लोह-पानी एक करना, जान लेने देने की नौबत आना।

जी पानी होना—दया से भर आना।

जी पिघलना—(१) जी पानी होना। (२) मन में प्रेम का संचार होना। तुम्हारा कभी जी नहीं पिघलता जो मेरी ओर भी आजाया करो।

जी पीछे पड़ना—चित्त बँटना, एक ओर लग जाने पर कुछ दुख भूल जाना।

जी फट जाना—(१) प्रेम में अंतर पड़ना, दिल मिला न रहना। अब मेरा जी उनसे फट गया है। (२) चित खिन्न होना।

जी फिर जाना—मन हट जाना, अरुचि, घृणा वा वैराग्य होना। जी फिर जाने पर फिर वह बात नहीं रह जाती।

जी फिसलना—मन मोहित, आकर्षित, या अनुरक्त होना। तुम्हारा जी बाज़ारी स्त्री पर फिसल पड़ा है।

जी फीका होना—दे० जी खट्टा होना।

जी बँटना—(१) जी बहलाना, एक ओर चित्त लगने से दुख आदि भूल जाना। (२) ध्यान भंग होना, एकाग्र चित्त न होना। काम करते समय यदि कोई बोलने लगे तो जी बँट जाता है।

जी बद होना—दे० जी फिर जाना।

जी बढ़ना—(१) हिम्मत दुगनी होना। (२) चित्त खुश या उत्साहित होना।

जी बढ़ाना—(१) हौसला बढ़ाना, हिम्मत बँधाना। (२) उत्साह देना, उत्तेजित करना। इनाम देकर जी बढ़ा देने से बच्चा बड़ी मेहनत कर डालता है।

जी बहलना—(१) मनोरंजन होना, आनन्द अनुभव करना। थोड़ी देर खेलने से जी बहल जाता

है। (२) चित्त के किसी विषय में लग जाने से दुख चिंता भूल जाना। मित्रों के यहाँ आने जाने से जरा जी बहल जाता है, वरना दिन रात उसी का दुख बना रहता है।

जी बहलाना—(१) दे० जी बँटना। (२) मनोरंजन करना। जी बहलाने के लिये कभी ताश खेल लेते हैं।

जी बिखरना—(१) बेहोशी या मूर्छा होना। (२) चित्त ठिकाने न रहना, मन विह्वल होना।

जी बिगड़ना—(१) दे० जी ऊपर तले होना। (२) घृणा होना। गन्दगी देख कर जी बिगड़ जाता है।

जी बुरा करना—(१) कै करना। (२) घृणा या क्रोध करना, बुरी धारणा करना। उनके कामों ने मेरा जी बुरा कर दिया है, अब मै उनसे बात भी नही करता। (३) दूसरे के ख़्याल खराब करना। मेरी ओर से उन्होंने सेठ जी का जी बुरा कर दिया है।

जी बुरा होना—(१) ख्याल खराब करना। (२) कै होना।

जी बैठा जाना—(१) मूर्छा सी आना, चित्त ठिकाने न रहना, चित्त विह्वल होना। आज न जाने क्यों कमजोरी सी जान पड़ती है और जी बैठा जाता है। (२) मन मरना, उदासी होना। मेरा जी बैठा जाता है, मै अब साधु ही बनूँगा।

जी भटकना—चित्त मे घृणा होना, घिन मालूम होना।

जी भर आना—दया या दुख से आँसू तक आ जाना। मेरा तो जी भर आता है जब मै उसको भीख माँगता देखता हूँ, समय का फेर है वह एक दिन करोड़पति था।

जी भरना—(१) तृप्त होना। जी भर गया अब न खाएँगे। (२) अधिक इच्छा न रहना। तुम्हारी बातों से जी भर गया, अब जाते हैं। (३) अभिलाषा पूरी होने पर संतोष, प्रसन्नता आदि होना। लो मै आज यहाँ से चला जाता हूँ अब तो तुम्हारा जी भरा। (२) रुचि के अनुकूल होना, मन मानना। इतने गंदे बरतन मे पानी पीते हो न जाने कैसे तुम्हारा जी भरता है। (५) आशंका दूर करना, दिल जमई करना। यों तो घोड़े में कोई ऐब नहीं पर दस आदमियों से पूछ कर दिल भर लीजिए।

जी भर कर—दे० जी खोल कर (२)।

जी भरभरा उठना—रोमाच होना, हृदय के आवेग से चित्त विह्वल हो जाना।

[३१६६]

जी भारी करना—चित्त दुखी या खिन्न करना।

जी भारी होना—तबियत अच्छी न होना।

जी भुरभुराना—दिल खिंचना, चित्त आकर्षित होना।

जी मतलाना या मिचलाना—क़ै करने की इच्छा होना। जी मतलाता है क़ै होगी।

जी मलमलाना—अफसोस, दुख या पछतावा होना। गाँठ से पैसे खर्चते हुए जी मलमलाता है।

जी मारना—दे० जी को मारना।

जी मिलना—एक सा स्वभाव होना, अनुकूल हृदय होना। जी मिल गया तो जिन्दगी गुज़र जायगी।

जी में आना—(१) मन में इच्छा होना, इरादा होना। तुम्हारे जी में आवे सो करो मैं नहीं रोकूँगा। (२) विचार होना, मन में भाव उठना। जी में आता है सब झंझट छोड़ दूँ।

जी में गड़ना या खुभना—(१) चित्त में जम जाना, मर्म भेदना, गहरा प्रभाव करना। (२) हृदय में अंकित होना। माधव मूरति जिय में खुभी।

जी में घर करना—(१) बराबर ध्यान बना रहना। मेरे जी में तो तुमने घर कर लिया तुम्हारे बिना पल भर भी चैन नहीं। (२) हृदय मे विश्वास, योग्यता आदि जम जाना। तुमने तो उनके जी में घर कर लिया है, वे बस तुम्हारी बात ही पर चलते हैं।

जी में जलना—क्रोध से संतप्त होना, मन मे कुढ़ना। (२) मन ही मन ईर्ष्या या डाह करना। वह जी में तो मुझ से जलता है, ऊपर से प्यार की बाते करता है।

जी में जी आना—चित्त शांत होना। जब वह सकुशल लौट आये तो जी में जी आया।

जी में जी डालना—(१) विश्वास दिलाना। (२) चिंता, खटका मिटाना।

जी में धरना या रखना—(१) वैर रखना, मन में बुरा मानना। (२) ख्याल करना।

जी में पैठना—दे० जी में गड़ना या खुभना।

जी में बैठना—(१) सत्य प्रतीत होना, निश्चय होना। उन्होंने जो कहा जी में बैठ गया। (२) गहरा प्रभाव पड़ना। (३) हृदय में अंकित होना। मेरे जी में यह बात बैठ गई है।

जी में रखना—(१) द्वेष रखना, बुरा मानना। उसे जो चाहो कहो वह जी में नहीं रखता। (२) गुप्त रखना। इस बात को जी में रखो,

किसी से मत कहो। (३) ख्याल बनाए रहना।

जी रखना—(१) मन रखना, इच्छा करना। वह मुझ पर जी रखते हैं। (२) इच्छा पूरी करना। तो उनका भी जी रख दो, जैसे वह कहें कर दो।

जी रुकना—(१) हिचकना। (२) घबराना।

जी लगना—(१) प्रेम होना, आसक्त होना। जी लगा है उससे मै तुम्हें क्या करूँ। (२) चित्त प्रवृत्त होना। पढ़ने में जी नहीं लगता।

जी लगाना—(१) तत्पर होना। जी लगाकर पढ़ो। (२) चिन्ता होना। कई दिन से पत्र नहीं आया उधर ही जी लगा है।

जी लगाना (किसी से)—प्रेम करना।

जी लरजना—जी काँपना।

जी ललचना—(१) चित्त आकर्षित होना। (२) लालसा होना, लालच होना। वहाँ की सुन्दर वस्तुओं को देख कर जी ललचा गया।

जी ललचाना—चित्त मे लालच उत्पन्न करना, जी तरसाना। दूर से दिखाकर क्यों जी ललचाते हो, देना हो तो दे दो।

जी लुटना—मन मोहित या मुग्ध होना।

जी लुभाना—चित्त आकर्षित करना।

जी लूटना—मन मोहित करना। माशूक ने जी लूट लिया।

जी लेना—(१) प्राण लेना। (२) इच्छुक होना। हमारा जी नहीं लेता कि ऐसा करें। (३) मन का भेद लेना। मेरा जी लेने को आयो हो, पर मै न बताऊँगा।

जी लोटना—जी छट पटाना, ऐसी इच्छा कि रहा न जाय। उसके लिये जी लोटा जा रहा है।

जी सनसनाना, जी सॉय सॉय करना—(१) जी सन्न होना। (२) भय, आशंका, घृणा आदि से अंगों की गति क्षीण हो जाना।

जी सन होना—होश उड़ जाना, स्तब्ध हो जाना। उसे सामने देखते ही जी सन हो गया।

जी से उतर जाना—(१) भला न जँचना, बेकदर हो जाना। (२) चाह न रहना। (३) दृष्टि से गिर जाना। जो जी से उतर गया फिर पास न रखो।

जी से करना—ध्यान देकर, तत्पर होकर। जी से जो किया जायगा वह क्यों न अच्छा होगा।

जी से जाना—जान खो बैठना। बकरी तो जी से गई, खाने वाले को स्वाद ही न आया (कहावत)।

जी से जी मिलना—(१) मित्र होना। (२) चित्त से प्रेम होना। (३) हृदय के भाव एक होना।

जी हट जाना—(१) चित्त विरक्त होना। ऐसे कामों से अब मेरा जी हट गया है। (२) इच्छा न रहना।

जी हवा हो जाना—(१) प्राण निकल जाना। (२) जी घबरा जाना, चित्त ठिकाने न रहना।

जी हाथ में रखना, जी हाथ में लेना—(१) किसी के भाव अपने प्रति अच्छे रखना, राजी रखना। मै बड़े अफसर का जी हाथ में रखता हूँ, और नायब की परवा नहीं करता। (२) दिलासा दिए रहना, खटका पैदा न होने देना। मैंने उसका जी हाथ में रखा जब विश्वास हो गया तब उसे शोक समाचार सुनाया।

जी हारना—(१) दिल दे बैठना। (२) हिम्मत हारना। (३) काम से ऊब या घबरा जाना।

जी हिलना—(१) भय से दिल काँपना। (२) दया से चित्त उद्विग्न होना। उसके रोने से मेरा जी हिल गया।

जी ही जी में—अपने मन में। तुमने जी ही जी में कह लिया होगा, हमसे कहते तो अवश्य लेते आते।

जीता चुनवाना—कठिन दंड देना। राजा ने उस बाँदी से कहा कि यदि अब तनिक भी झूठ बोलेगी तो जीता चुनवा दूँगा।

जीता जागता चित्र खींचना—किसी बात का पूर्णरूप से वर्णन करना। बिहारी कवि ने अपनी सतसई मे शृङ्गार का जीता जागता चित्र खीचा है।

जीती मक्खी निगलना—(१) जान बूझकर कोई अनुचित कर्म करना या स्वीकार करना, सरासर बेईमानी करना। उससे रुपया लेकर मैं इनकार करूँ? इस तरह जीती मक्खी तो नहीं निगली जा सकती? (२) जान कर आपत्ति, संकट में पड़ना, धोखा खाना या बुराई में फँसना।

जीते जी—(१) मौजूदगी जीवित रहते। उसके जीते जी तो ऐसा कभी न होने पावेगा। (२) जिंदगी भर। मैं जीते जी तुम्हारा उपकार न भूलूँगा।

जीते जी मर जाना—(१) जीवन मे ही मौत से बढ कर दुख पाना। (२) किसी भी कारण जीवन का सारा सुख चला जाना। पोते के मरने से हम तो जीते जी मर गए। (३) जिन्दगी से जब कोई लाभ न हो। माँ बाप को जब कोई लाभ नहीं तो उनकी तरफ़ से तो बेटा जीते जी मर ही गया समझो।

(जब तक) जीना तब तक सीना—जिन्दगी भर (किसी काम में) लगे रहना है। पेट के बेट बेगारहिं मे जब तक जियना तब तक सियना है।

जीना भारी होना—(१) जिन्दगी बहुत दुख भरी होना। (२) जिन्दगी के सुख न रहना।

जीना (अपनी खुशी)—अपने सुख से आनन्दित होना। वह अपनी खुशी जीता है दूसरो की तरफ से तो जैसा ही जीता वैसा मरा।

जीभ (छोटी)—गल शुंडी।

जीभ (कलम की)—कलम का वह भाग जो छील कर नुकीला करते हैं।

जीभ करना—बढ़कर बोलना या ढिठाई से जवाब देना।

जीभ के नीचे जीभ होना—कह कर बदल जाना, दो जबान होना।

जीभ खोलना—कुछ भी कहना। यहाँ जीभ खोली और पिटे।

जीभ चलना, बढ़ाना—चटोरपन की आदत होना।

जीभ चलाना—शेखी मारना। क्यों ज्यादा जीभ चलाते हो, अब तो चुप हो जाओ।

जीभ थोड़ी करना—कम बोलना, बकवाद कम करना। थोड़ी जीभ करो, बको मत।

जीभ निकालना—(१) जीभ बाहर करना। (२) जीभ खींचना।

जीभ पकड़ना—बोलने न दना। हम कुछ भी कहे वह फौरन जीभ पकड़ लेते हैं।

जीभ पर सरस्वती बसना—बड़ा पंडित होना। ऐसा सुना जाता है कि काशी में अध्ययन के पश्चात् कालीदास की जीभ पर सरस्वती बस गई थी।

जीभ बंद करना—(१ बोलना बंद करना। (२) चुप रहना।

जीभ हिलाना—मुँह से कुछ बोलना। जरा भी जीभ हिलाइ तो मालूम हो जायगा।

नोट—जबान के मुहावरे भी 'जीभ' शब्द के साथ बोल सकते हैं।

जीवन भारी होना—बहुत कष्ट सहना। आजकल नौकरी न मिलने से हमारा तो जीवन भारी हो रहा है।

जीविका लगाना—रोजी का ठिकाना होना, निर्वाह का उपाय करना।

जुकाम होना (मेढ़की के)—स्वभाव या अवस्था के विरुद्ध कार्य करना, नखरे होना। कल तो पैदल चलते थे आज मोटर बिना चला नही जाता, अब हम समझे मेढ़की को जुकाम हो गया है

जुग जुग जीना—बहुत दिनों तक जीवित रहना। उस बुढिया के पैर

छूने पर उसने आशीर्वाद दिया "बेटा जुग जुग जियो" ।

जुग टूटना—(१) मंडली तितर बितर होना। सेना पर आक्रमण होते ही उसके जुग टूट गए और भागने लगे। (२) मंडली में मेल न रहना। अब तो जुग टूट गए वरना पहिले सब एक मन थे।

जुग फूटना—जोड़ा खंडित होना, साथी का न रहना। बुढ़ापे जुग फूटा, जीना दुस्वार हुआ।

जुगत लगाना—ताल मेल बैठाना, तदबीर करना, ढग रचना। मैंने १००) की तो जुगत लगा ली है बाकी १०) तुम दे दो।

जुटा देना—काम में लगाना। अगर जायगा तो दस पाँच रुपये और जुटा दूँगी।

जुल खिलाना, देना—दम पट्टी देना, ठगना।

जुल में आना—धोखे में आना। उसने मुझ से वहाँ चलने को बड़ी बातें लगाई किन्तु मै उसके जुल में न आया।

जुल्म टूटना—आफ़त आना। हम पर जुल्म टूट रहे हैं, रक्षा करो।

जुल्म ढाना—(१) अत्याचार करना। क्यों निर्दोष पर जुल्म ढाते हो। (२) अद्भुत काम करना। जुल्म ढा दिया, इतना भयंकर काम कर दिखाया।

जूठे हाथ से कुत्ता न मारना—बहुत कंजूस, मक्खीचूस होना। वह तुम्हें खाना क्या खिलायगा जो जूठे हाथ से कुत्ता भी नहीं मारता।

जूता उछालना या चलाना—(१) जूतों से मार पीट होना। (२) लड़ाई झगड़ा होना। उन दोनों मित्रों में खूब जूते चले।

जूता उठाना—मारने के लिये जूता हाथ में लेना। गुस्से में उन्होंने मुझ पर जूता उठा लिया।

जूता उठाना (किसी का)—(१) हीन से हीन सेवा करना। वह तो लोगों के जूते उठाता फिरता है। (२) चापलूसी, खुशामद करना। इस तरह जूते उठाने से तरक्की नहीं होगी।

जूता चाटना—मान का ध्यान न रख कर दूसरे की सेवा करना, खुशामद या चापलूसी करना।

जूता बरसना—जूतों की मार पड़ना। जैसे ही चोर निकल कर भागा, कि उस पर जूता बरसने लगा।

जूते का आदमी, जूते का यार—बिना दण्ड या पिटने के भय के काम न करने वाला। वह तो जूते का यार है, सीधी तरह से काम न करेगा।

जूते से खबर लेना—जूते से

मारना । न मानोगे तो जूते से खबर ली जायगी ।

जूतों (में) दाल बँटना—लड़ाई झगड़ा या अनबन होना । चुगल खोर ने ऐसा भरा कि दोनों की जूतों दाल बँट गई ।

जूतों से आना
जूतों से बात करना } —जूते मारना । जरा सी बात पर वे जूतों से आते हैं जरा भी लिहाज़ नहीं कि लड़का बराबर का है ।

जूती की नोक पर मारना—तुच्छ समझना, जरा परवाह न करना । इतना रुपया तो मै जूते की नोक पर मारता हूँ, जो कहा है वही होगा ।

जूती (की नोक) से—बला से, कुछ परवा नही । वह यहाँ नही आती हैं तो मेरी जूती की नोक से ।

जूती के बराबर न होना—बिल्कुल नाचीज़ या तुच्छ होना । मैं तो आपकी जूती के बराबर भी नहीं मुझ पर दया करो ।

जूतियाँ उठाना—नीच सेवा करना । वर्षों जूतियाँ उठाई हैं तब जाकर आज यह जगह मिली है ।

जूतियाँ चटकाते फिरना—(१) फ़िज़ूल इधर उधर घूमना । क्यों जूतियाँ चटकाते फिर रहे हो घर नहीं बैठा जाता । (२) दीन या दुर्दशा ग्रस्त होकर, कुछ प्राप्ति की इच्छा में घूमना । आजकल एम० ए० बी ए० जूतियाँ चटकाते फिर रहे हैं हमे कौन पूछे ।

जूतियाँ तोड़ना—तुम उनके पास बार बार जाकर जूतियाँ भले ही तोड़लो नौकरी तो मिलने को नहीं ।

जूतियाँ सिरपर रखना—बहुत खुशामद करना, मित्र । यदि नौकरी करोगे तो मालिक की जूतियाँ सिर पर रखनी पड़ेगी ।

जूतियाँ सीधी करना—खुशामद करना । वह तो सारे दिन उन्हीं की जूतियाँ सीधी करेगा ।

जूती पर रखकर रोटी देना—निरादर के साथ खाना पीना देना या पालना । सास तो मुझे जूती पर रखकर रोटी देती है, सो भी एक वक्त ।

जूती पैज़ार होना—जूतों से मार पीट होना । कल की पचायत मे तो एक ऐसी बात हो गई जिससे जूती पैज़ार होते होते बच गई ।

जूती बगल में दबाना—जूतियाँ उतार कर भागना जिससे पैर का शब्द न हो, चुपचाप खिसकना । ज्यों उन्होंने सुना हर एक को ५) ५) देने पड़ेगे वे तो जूतियाँ बगल में दबाकर चल दिये ।

जूतों से खबर लेना—जूतों से पीटना । मैने समझ लिया जब

[३२६४]

तक तुम्हारी जूतों से खबर न ली जायगी तब तक न मानोगे।

जेठा रंग—रँगाई में सबसे बाद का रंग।

ज़ेब देना—शोभा बढ़ाना या देना। यों नखरे करना आपको ही ज़ेब देता है।

जेल काटना—जेल में रह कर दंड भोगना। उसने इस अपराध में ७ बरस की जेल काटी।

ज़ेहन नशीन करना—दिल में गड़ना। मास्टर साहब जो कुछ भी तुम से बात कहें उसे ज़ेहन नशीन कर लिया करो।

ज़ेहन लड़ाना—सोचना, विचारना।

जैसे का तैसा होना—(१) पहिले जैसा रूप। वह साठ बरस का होगया परन्तु जैसे का तैसा ही बना हुआ है। (२) ज्यों का त्यों। दरजी के यहाँ अभी कपड़ा जैसे का तैसा रखा है। (३) न घटा न बढ़ा कोई फेर फार न हुआ। खाना जैसे का तैसा रखा है किसी ने नहीं खाया।

जैसे को तैसा—(१) जो जैसा व्यवहार करे उससे वैसा ही व्यवहार करने वाला। (२) एक से स्वभाव का। जैसे को तैसा मिले, मिले नीचे को नीच।

जैसे जैसे—ज्यों ज्यों। जैसे जैसे रोग घटता गया शक्ति बढ़ती गई।

जैसे तैसे—(१) बड़ी मुश्किल से। (२) किसी भी तरह से। खैर जैसे तैसे वह आ तो गये।

जैसे बने, जैसे हो—जिस तरह संभव हो या बन सके। जैसे बने तुम तो चले ही आना।

जोंक होकर लिपटना या जोंक की तरह चिपटना—इतना पीछे पड़ना कि पीछा छुटाना मुश्किल।

जों तों करके—दे० जैसे तैसे।

जोखिम उठाना या सहना }
जोखिम में पड़ना }
नुकसान सहना। मैं इस जोखिम में नहीं पड़ना चाहता।

जोखिम में जान होना—जान जाने का डर होना

जोड़ उखड़ना—शरीर के किसी जोड़ का अपनी जगह से हटना।

जोड़ का जोड़ मिलाना—जैसे को तैसा मिलाना।

जोड़ जोड़ धरना—कंजूसी से रुपया जमा करना। जोड़ जोड़ घर जाँयगे, माल जमाई खाँयगे (कहावत)।

जोड़ तोड़ करना, मिलाना—तदबीर करना। मैंने तो बहुतेरे जोड़ तोड़ मिलाये परन्तु वह तैयार ही न हुए।

जोड़ बाँधना—(१) कुश्ती के

लिये दो पहलवानों को चुनना। (२) काम पर अलग अलग दो आदमी नियत करना (३) चौपड़ मे दो गोटी एक ही घर में रखना।

जोड़ बैठना—शरीर के जोड़ का अपने स्थान पर आना । तेल मलने से घुटने का जोड़ बैठ गया, बस सूजन हट गई।

ज़ोर करना—(१) ताकत लगाना। (२) कोशिश करना। ज़रा ज़ोर करोगे तो काम बन जायगा।

ज़ोर चलना—अधिकार होना। यदि वहाँ पर उनका ज़ोर चलेगा तब तो तुम्हारा काम हो जायगा।

ज़ोर जताना—अधिकार दिखाना। मालिक तो इन्हे कुछ नही समझता, ये तो वैसे ही कारखाने पर अपना जोर जताया करते हैं।

जोर टूटना—ताकत घटना, शिथिल होना। खीचते खींचते जोर टूट जाता है।

ज़ोर डालना—(१) दे० जोर देना। (२) दबाव डालना। तुम जोर डालोगे तो वह जरूर कर देगा।

ज़ोर देना—(१) ताकत लगाना। (२) बोझ डालना। जगले पर ज़ोर दोगे यह टूट जायगा। (३) महत्व पूर्ण या जरूरी बताना। उन्होने इस बात पर जोर दिया कि सब साथ ही चले। (४) आग्रह या हठ करना। तुम क्यों जोर दे रहे हो तुम्हारा क्या लाभ है?

ज़ोर पकड़ना या बाँधना—(१) प्रबल होना। अभी दवा करो वरना रोग जोर पकड़ जायगा। (२) तेज़ होना। इस फोड़े ने बड़ा जोर बाँधा है। (३) दे० जोर में आना। (४) दे० जोरों पर होना।

ज़ोर मारना या लगाना—(१) ताकत लगाना। (२) बहुत कोशिश करना। उन्होंने बहुतेरा जोर मारा पर वह नौकर नहीं हो पाया।

ज़ोर मारना या करना—प्रबलता दिखाना। आपकी मुहब्बत ने जोर मारा तभी आप यहाँ आये भी।

ज़ोर में आना—ऐसी हालत जिसमें सहज ही में उन्नति तथा वृद्धि हो जाय। आज कल जोर में आ रहा है शायद कुछ पदवी ही मिल जाय।

जोरों पर होना—(१) पूरे बल पर। शहर में चेचक ज़ोरों पर है। (२) तेज़ होना। मुझे बुखार ज़ोरों पर है। (३) उन्नत दशा में। कांग्रेस खूब जोरों पर थी।

जोश खाना—(१) आवेश में आना। (२) उबलना, खौलना।

[३३२७]

जोश खून का आना—प्रेम उमड़ना। खून का जोश आही जाता है आखिर वे रो ही उठे और राज़ी हो गये।

जोश देना—उबालना। इस दवा को जोश देकर पियो।

जोश में आना—गुस्से या आवेश में हो जाना। तुम जोश में क्यों आगये शांति से बात करो।

जोश मे लाना—(१) खूब गुस्सा चढ़ाना। (२) भड़काना।

जौ जौ हिसाब लेना—कौड़ी कौड़ी का हिसाब देखना। ज़रा ध्यान से काम करना, यहाँ जौ जौ का हिसाब लिया जाता है।

जौहर खुलना—(१) खूबी जाहिर होना। (२) भेद खुलना। अदालत मे जौहर खुले कि वे कितने कत्ल कर चुके थे।

जौहर खोलना—(१) गुण, करतब या खूबी दिखाना। अपने जौहर खोलूँ तो तुम दंग रह जाओ।

जौहर होना—चिता पर जल मरना। जौहर भई सब स्त्री, पुरुष भए संग्राम।

ज्ञान छाँटना—जानकारी या पांडित्य जताने के लिये लंबी चौड़ी बातें बनाना।

ज्ञान दौड़ाना—खूब सोच विचार करना। भाई हमने तो उसके लिये दिन भर ज्ञान दौड़ाया है कुछ समझ में ही नहीं आता।

झ

झंडा खड़ा करना—(१) झंडा गाड़ कर सैनिकों को इकट्ठे होने का संकेत करना। (२) आडम्बर करना। (३) दे० झंडा गाड़ना।

झंडा गाड़ना, **झंडा फहराना**—(१) पूरी तरह काबू में आना। आज कल तो भारत में अंग्रेजी झंडा फहरा रहा है। (२) राज्य चिह्न स्वरूप झंडा स्थापित करना। आज तो दुश्मन ने क़िले पर झंडा गाड़ दिया, गई पुरानी बादशाहत।

झंडी दिखाना—(१) झंडी से संकेत करना। (२) इनकार करना। वक्त पर झंडी दिखा जाते हो।

झंडे तले आना—युद्ध आदि के लिये किसी के साथ होना। जो कांग्रेस के झंडे तले आया जेल गया।

झंडे तले की दोस्ती—राह चलते की जान पहचान।

झंडे पर चढ़ना—बहुत बदनामी लेना।

झंडे पर चढ़ाना—बदनाम कर डालना। उसने उन्हें झंडे पर

चढ़ा दिया जिधर जाते हैं ऊधर ही उँगलियें उठती हैं।

झंप देना—कूदना। करि अपनो कुल नास बनहि सो अगनि झंप दे आई।

झक सवार होना—जिद या धुन चढ़ना। उसे तो हर काम की झक सवार होती है फिर कुछ नहीं सोचता।

झख मारना—(१) वक्त खराब करना। आप सवेरे से यहाँ बैठे झख मार रहे हैं या कुछ किया भी। (२) लाचार होना। तुम्हे झख मार कर यह करना पड़ेगा। (३) कुढना, सौबार झख मारो और वहाँ जाओ मिले या न मिले। (४ अपनी मिट्टी खराब करना ·काम पूरा होना।

झगड़ा पाक होना—जब यह तुम्हारे मकान का झगड़ा पाक हो जाय तब एक दिन हमसे मिलना।

झझक निकलना—भय संकोच न रहना।

झझक निकालना—भय, संकोच या हिचक दूर करना। हम चार दिन में झझक निकाल लेंगे फिर यह निधड़क पढ़ेगा।

झट से—दे० चट से।

झटक कर—(१) जबरदस्ती। (२) धोखा देकर। वह ५) झटक कर लेगया। (३) झोंके या तेजी से।

झटका उठाना, खाना—आफ़त या मुसीबत सहना।

झटका झेलना—(१) नुकसान सहना। बाजार बहुत गिर गया है इस मदी के जो झटके झेल ले समझो उसके पास तरी है। (२) आक्रमण सहना। बचपन से ही इस बेचारे ने रोग के बड़े बड़े झटके झेले हैं तब बच पाया है।

झटके का माल—जबरदस्ती छीना या चुराया-उड़ाया हुआ माल।

झड़ना (फूल)—दे० फूल झड़ना।

झड़ बांधना—खूब बोलना। जब बोलने लगता है तो झड़ बाँध देता है।

झड़बेरी का कांटा—लड़ने या उलझने वाला आदमी। उससे पीछा छुटाना मुश्किल हो जायगा वह तो झड़बेरी का काँटा है।

झड़ी बांधना, लगना—नन्हीं नन्हीं बूँदे पड़ती ही रहना।

झप खाना—पतंग का पेंदी के बल गिर पड़ना।

झपटा मारना—झपट लेना। बच्चा रोटी हाथ में लिये हुए था, बन्दर ने ऐसा झपटा मारा कि उसके हाथ में भी खोंसा मार गया।

झपट लेना—(१) तेजी से बढ़ कर छीनना। (२) छीन लेना।

झपेट में आना } **झपेटे में आना** }—(१) धक्का लगना या घिस्सा लगना। वह मोटर की झपेट में आगया, सख्त चोट आई। (२) दुख पहुँचना। (३) भूत प्रेत से ठुकराया जाना।

झमेले में फँसना—आफत में आना।

झराझर रुपया बरसना—खूब आमदनी होना।

झाँई बताना—(१) धोखा देना। (२) आँख बचाना। वह झाँई देकर निकल गया।

झाँई माईं होना—नज़रों से ग़ायब होना।

झाँवली देना—आँख से इशारा करना।

झाँवली में आना } **झाँसे में आना** }—धोखे में आना। तुम किसी के झाँसे में मत आया करो, ये सब बेईमान हैं।

झाँसा देना, बताना—धोखा देना। वह सिपाही को भी झाँसा दे गया।

झाड़ का काँटा—दे० झड़बेरी का काँटा।

झाड़ देना—झाड़ू से साफ करना। क्या तुम सुबह घर झाड़ नहीं देती जो इतना कूड़ा पड़ा हुआ है।

झाड़ना झटकना—जो कुछ किसी के पास हो ले लेना। झाड़ झटक कर कुल १०) लाया हूँ।

झाड पाछ कर देखना—परीक्षा करना। आप खूब अच्छी तरह से झाड़ पोंछ कर देखलो इसमें कोई ख़राबी नहीं है।

झाड़ बाँधना—लगातार वर्षा होना। सुनते हैं, देहली मे तो आठ दिन से मेह ने झाड़ बाँध रक्खी है।

झाड़ होकर लिपटना—बुरी तरह चिमटना।

झाड़ा फिरना—टट्टी जाना। आप चिन्ता न करे मै स्वयं झाड़ा फिर कर छै बजे तक आ जाऊँगा।

झाड़ा लेना—तलाशी लेना। जेल में घुसते ही झाड़ा ले लिया गया।

झाड़ू फिरना—सफ़ाया हो जाना, कुछ न रहना।

झाड़ू फेरना—बिल्कुल नष्ट कर देना।

झाड़ू मारना—(१) घृणा करना। (२) निरादर करना।

झाड़ू से बात करना—झाड़ू से मारना।

झापड़ कसना, देना—थप्पड़ मारना।

झार बरना—जलने से ज्वाला उठना। जिस दिन गाँव मे आग

लगी थी, यदि उस दिन हवा न चलती तो इतना झार न बरता।

झिड़की देना, खाना—डाँट डपट करना, घुड़की देना - सुनना।

झुंड के झुंड—बहुत से।

झुंड में रहना—मंडली में रहना।

झुक झुक पड़ना—नशे मे झूमना। अमी हलाहल मद भरे स्वेत स्याम रतनार जियत मरत झुकि झुकि परत जिहि चितवत एकबार।

झुरमुट मारना—कपड़े से इस तरह शरीर ढकना कि कोई पहचान न सके।

झुलसना (मुँह)—दे० मुँह झुलसना।

झूठ के पुल बाँधना—बहुत झूठ बोलना।

झूठ सच कहना या लगाना—(१) निन्दा करना, शिकायत करना। वह उनके बारे में झूठ सच लगाता फिरता है, बात ठीक नहीं है। (२) बातों में फँसाना। झूठ सच लगाकर रुपया ले गया।

झूठा पड़ना—असत्य सिद्ध होना। यदि तुम उनके सामने मुकर जाओगे तो मै झूठा पड़ जाऊँगा।

झूमना दरवाजे पर हाथी—हाथी रखना। झूमत द्वार अनेक मतंग जँजीर जड़े मद अंबु चुचाते।

झूमना (बादल)—बादलों का इकट्ठा होना।

झूम झूम कर—झुक झुक कर। झूम झूम कर पढ़ना, नाचना या भूत के कारण खेलना।

झूल पड़ना (गधे पर)—अयोग्य व कुरूप का बढ़िया-बहुमूल्य वस्त्र पहिनना।

झोक मारना—कम तोलना, डंडी मारना।

झोंकना (भाड़)—(१) भाड़ में सूखे पत्ते फेकना। (२) तुच्छ व्यवसाय करना। बारह बरस दिल्ली मे रहे, भाड़ झोंकने रहे (कहावत)। (३) फेकना। भाड़ में झोंक दो। मै क्या करूँगी?

झोंका खाना—अघात या वेग से किसी ओर बार बार झुकना। झोका खाकर गिरना, नीद के झोंके खाना।

झोंके आना—ऊँघना।

झोंझ मारना—खुजली या चुल होना।

झोंटा देना, झोंटा मारना—पेंग मारना, झूला बढ़ाने के लिये धक्का देना।

झोंटा पकड़ कर निकालना, घसीटना आदि—(स्त्री को अपमान से) सिर के बाल पकड़ कर ऐसा करना।

झोटा झोटी होना—एक दूसरे के सिर के बाल पकड़ कर लड़ना।

झोपड़ा अंधा—पेट (फकीरी बो०)।

झोंपड़े में आग लगना—भूख लगना (फकीरी बो०)।

झोल डालना—सिकोडना। इस कोट में बहुत झोल डाल दिया है।

झोल निकालना—बच्चे देना। हमारे यहाँ जो कुतिया है, वह साल में दो बार झोल निकालती है।

झोल बैठाना—मुरगी के नीचे सेने के लिये अंडे रखना।

झोला मारना (किसी को)—(१) लकवा मारना। (२) सुस्त या बेकाम हो जाना।

झोली छोड़ना—(१) बुढ़ापे से चमड़ा झूलना। (२) मास बढ़ना।

झोली डालना—भीख माँगने के लिये झोली उठाना।

झोली बुझाना—काम हो चुकने पर फिर दिखावे के लिये करने चलना, पीछे व्यर्थ कुछ करना। पंचायत तो हो चुकी अब क्या झोली बुझाने आये हो।

झोली भरना—साधु को भर पूर भिक्षा देना।

झोंक देना, डालना—इसमें शक्कर क्यों इतनी झोंक दी गई है।

ट

टंटा खड़ा करना—उपद्रव पैदा करना। तुम हर बात में टंटा खड़ा कर देते हो।

टक बँधना—स्थिर दृष्टि से देखना।

टक बाँधना—स्थिर दृष्टि होना।

टक टक देखना—बिना पलक गिराये देखना। वह मेरी सूरत को टक टक देखने लगा।

टक लगाना—आसरा देखते रहना। तुम किस की ओर टक लगा रहे हो वह कुछ न देगा।

टकटकी बँधना—स्थिर दृष्टि से देखना। टकटकी बंध गई और आँसू आ गए।

टकटकी बाँधना—टकटक देखना।

टकराते फिरना—मारे मारे फिरना, हैरान घूमना।

टकराना (माथा)—(१) घोर प्रयत्न करना, हैरान होना। (२) पैरों पर सिर रख कर विनती करना। कितना ही माथा टकराओ वह निर्दय है, दया की आशा ही नहीं।

टकसाल का खोटा—कम असल, नीच, अशिष्ट। वह टकसाल का ही खोटा है उपदेशक सुधार ही नहीं सकते।

टकसाल चढ़ना—(१) टकसाल में परखा जाना। (२) पारगत

माना जाना। (३) निर्लज्ज होना। (४) बदमाशी में पक्का होना। वे टकसाल चढ़ चुके हैं वे पुलिस के बाबा के हाथ नहीं आ सकते।

टकसाल बाहर—(१) खोटा या अप्रचलित सिक्का। (२) (वाक्य या शब्द) जिसका प्रयोग प्रामाणिक या शिष्ट न माना जाय। वह विद्वान होकर भी टकसाल बाहर शब्द बोलता है।

टकसाली बात करना—पक्की या जँची तुली बात करना। बात बड़ी टकसाली करता है, काट नहीं सकते, माननी पड़ती है।

टकसाली बोली—नागरिक तथा सर्वसम्मत बोली।

टका पास न होना—दरिद्र या निर्धन होना। टका पास नहीं चले शादी करने।

टका भर—(१) जरा सा, थोड़ा सा। टका भर घी दे दो। २) दो या एक तोले।

टका सा जवाब देना—(१) खट से साफ इनकार कर देना। दो दिन के घोड़ा माँगा था, उन्होंने टका सा जवाब दे दिया। (२) साफ निकल जाना, कानों पर हाथ रखना या मैं बिलकुल नहीं जानता। मैंने पूछा कि तुम्हें मालूम है, उन्होंने टका सा जवाब दे दिया।

टका सा मुँह लेकर रह जाना—खिसिया जाना, छोटा सा मुँह लेकर रह जाना। बड़ी आशा थी, परन्तु जब इनकार कर दिया तो विचारा टका सा मुँह लेकर रह गया।

टका सी ज़बान हिलाना—फौरन कह दिया या इनकार कर दिया। टके सी जबान हिला दी खुद करो न!

टके गज की चाल—थोड़े खर्च में गुजर।

टके गिनना—(१) हुक्के का गुड़ गुड़ बोलना। (२) रोजी का हिसाब करना।

टके सी जान—अकेला आदमी। देवर जी की टके सी जान है खुद ही पका खाते हैं।

टक्कर का—बराबरी का, समान। उनकी टक्कर का कोई विद्वान नहीं।

टक्कर खाना—(१) किसी वस्तु के साथ धक्का खाना। चट्टान से टक्कर खाकर नाक चूर चूर हो गई। (२) मारा मारा फिरना। नौकरी छूटने से वह बेचारा टक्कर खाता फिरता है। (३) प्रयत्न करना, बहुत कहना। सैकड़ों टक्कर खाकर मर गये पर वह टस से मस न हुआ।
[३४४४]

टक्कर झेलना—(१) हानि उठाना, नुकसान सहना। (२) संकट या आपत्ति सहना। बड़ी टक्करें झेल कर सुख के दिन देखे हैं।

टक्कर मारना—(१) आघात पहुँचाने के लिये जोर से सिर मारना। (२) माथा मारना। (३) उद्योग करना। लाख टक्कर मारो वह तुम्हारे हाथ नहीं आवेगा।

टक्कर लड़ना—दूसरे के सिर पर सिर मार कर लड़ना। दोनों मेंढे खूब टक्कर लड़ रहे हैं।

टक्कर लगाना—मुकाबिला करना। आज देखेंगे दगंल में उस पहलवान से कौन टक्कर लगाता है।

टक्कर लड़ाना—सिर से धक्का मारना।

टक्कर लेना—(१) मुकाबिला करना, लड़ना-भिड़ना। उनसे अच्छे अच्छे टक्कर लेने में चकराते हैं। (२) समान होना। इस टोपी का काम सच्चे काम से टक्कर लेता है। (३) चोट या वार सहना। क्यों नाहक टक्कर ले रहे हो भाग चलो

टक्कर लेना (पहाड़ से)—भारी शत्रु से सामना करना। तुमने इस बार पहाड़ से टक्कर ली है हज़ारों रुपयों का चूरा करना पड़ेगा।

टटोलना मन—दिल के भाव या विचारों का पता लगाना। वे मेरा मन टटोलने आये थे परन्तु मैंने अपना भेद न दिया।

टट्टर देना, लगाना—टट्टी या टट्टर बंद करना। बुढ़िया बेचारी झोंपड़ी का टट्टर देकर सो रहती थी।

टट्टी का शीशा—पतला शीशा।

टट्टी की आड़ या ओट में शिकार खेलना—(१) छिपकर किसी के विरुद्ध चाल चलना। टट्टी की ओट में क्यों शिकार खेलता है सामने जाकर लड़े तो बताऊँ। (२) लोगों की निगाह बचाकर, छिपाकर कोई अनुचित काम करना।

टट्टी में छेद करना—खुल खेलना, प्रकट कुकर्म करना, लोक लज्जा छोड़ देना। अंकुस रहा न अब तेरी टट्टी में छेद कर।

टट्टी लगाना—(१) परदा या ओट करना। जनाने में टट्टी लगा दो। (२) किसी के सामने भीड़ लगाना। यहाँ क्या टट्टी लगा रखी है, क्या कोई तमाशा हो रहा है!

टट्टी धोखे की—(१) वह टट्टी जिसकी ओट में शिकारी शिकार खेलते हैं। (२) बाहर से बुराई या असलियत का पता न लगे। उसकी दुकान आदि सब धोखे की टट्टी है, उसे भूलकर भी रुपया न देना। (३) देखने में सुन्दर पर

जल्दी टूट या बिगड़ जाने वाली चीज़।

टट्टू पार होना—काम निकल जाना।

टट्टू भाड़े का—रुपया लेकर काम करने वाला। भाड़े का टट्टू है, मालिक के फायदे नुकसान से क्या अपने पैसे सीधे करने से काम।

टन हो जाना—फौरन मर जाना। लाठी सिर पर लगते ही टन हो गया।

टप से—फुर्ती से, झट से। बिल्ली ने टप से चूहा पकड़ लिया। टप से आओ।

टपक पड़ना—यकायक आ जाना, तुम यहाँ बीच मे कहाँ से टपक पड़े? (इसी अर्थ में आ टपकना भी चलता है)।

टपका टपकी लग जाना—पानी बरसने लगना, वर्षा होना।

टपका पड़ना—(१) गिरा पड़ना। (२) निकला पड़ना। तुम क्यों टपके पड़ते हो मै ही जो कह दूँगा।

टपटप—जल्दी से।

टप्पा उलटना—दिवाला निकलना।

टप्पा खाना—फेंकी हुई वस्तु का जमीन से लगना फिर उछल कर आगे बढ़ना।

टप्पा देना—(१) लंबे लंबे डग बढ़ाना, कूदना। (२) अंतर या फर्क डालना।

टप्पे डालना, भरना, मारना—(१) दूर दूर बखिया देना, भद्दी सिलाई करना। (२) लंगर डालना।

टर टर करना—(१) जबानदराजी करना, ढिठाई से बोलते ही जाना। टरटर करता जायगा न मानेगा? (२) बकवाद करना। क्यों टरटर कर रहा है।

टर टर लगाना—व्यर्थ या झूठ मूठ बक बक करना, इस तरह बोलना जो अच्छा न लगे। क्यों टर टर लगाई है बात करने दो न।

टरक जाना, देना—चुप चाप चले जाना, खिसक जाना। जब काम का वक्त आता है तो कहीं टरक जाता है।

टर फिस करना—(१) शरारत करना। (२) शोखी दिखाना।

टर (टर) फिस होना—थोड़े दिन काम होकर फिर बैठ जाना। तुम्हारी टर टर फिस हो गई।

टल जाना (बात से)—वायदा पूरा न करना, मुकरना। तुम अपनी बात से टल जाते हो मैं कहूँगा तो जरूर करूँगा।

टल जाना—(१) चुपके से चले जाना। (२) हट जाना। मेरी आँखों के आगे से टल जाओ नहीं मैं मार बैठूँगा।

टस से मस न होना—(१) भारी चीज़ जरा न हटना। कई मन वज़न है दो आदमियों से तो टस से मस न होगा। (२) पकाने या गलाने का ज़रा असर न होना। (३) कहने का ज़रा प्रभाव न पड़ना, तनिक अनुकूल न होना। उसे बहुत लोभ दिखाया, पर वह टस से मस न हुआ।

टसुए बहाना—झूठ मूठ आँसू बहाना। क्यों टसुए बहा रही हो हम जानते हैं तुम्हें जितना सोच है।

टहल टकोर करना—देने में अनिच्छा करना। जब तुमने उससे नग़द रुपया उधार लिया है, तो देने में क्यों टहल टकोर करते हो।

टहल जाना—दे० टल जाना।

टहल बजाना—सेवा करना।

टही लगाना—जोड़ तोड़ लगाना।

टही में रहना—काम निकालने की ताक में रहना। वह अपनी टही में रहता है उसे तुम से क्या मतलब।

टहोका खाना—धक्का खाना। मैंने इनकी ठंडी साँस की फाँस का टहोका खाकर झुँझला कर कहा।

टहोका देना—ठेलना, धक्का देना।

टाँक रखना, लेना—(१) याद रखने के लिये लिख लेना। (२) रकम बही में दर्ज करना। (३) फर्क रखना। वह मेरी ओर से मन में टाँक रखता है।

टाँका चलाना—सीने के लिये आर पार सुई डालना।

टाँका भरना, मारना—सीना।

टाँकी खाना—जेल हो आना।

टाँकी बजना—(१) पत्थर पर टाँकी बजाना। (२) पत्थर की इमारत का काम होना।

टाँके उधड़ना, खुलना—भेद खुलना। उनके टाँके खुल गये।

टाँग अड़ाना—(१) फिजूल दखल देना। तुम क्यों बीच में टाँग अड़ाते हो जब तुम्हारी जरूरत ही नहीं। (२) विघ्न डालना। वह टाँग न अड़ाता तो मेरा काम बन जाता। (३) जिसका ज्ञान न हो उसकी बाबत कुछ कहना। जिस बात को तुम नहीं जानते उसमें क्यों टाँग अड़ाते हो?

टाँग तले से निकलना—हार मानना। तुम इसे कर डालो तो तुम्हारी टाँग तले से निकल जाऊँ।

टाँग तले से निकालना—(१) नीचा दिखाना, हराना। (२) सिखाना।

टाँग तोड़ना—(१) अंग भंग करना। (२) चलते चलते पैर थकना। (३) किसी काम का न रखना। उन्होंने तो ऐन वक्त पर धोखा देकर हमारी टाँग तोड़ दी

अब कोई भी तो इन्तजाम नहीं हो सकता। (४) टूटे फूटे अशुद्ध वाक्य बोलना। क्या अंग्रेज़ी की टाँग तोड़ते हो।

टाँग पसार कर सोना—(१) निश्चिन्त, निर्द्वन्द सोना। (२) चैन से दिन बिताना। हमें क्या खटका है हम तो टाँग पसार कर सोते हैं।

टाँग बराबर—छोटा सा। टाँग बराबर लड़का ऐसी ऐसी बातें करता है।

टाँग से टाँग बाँध कर बैठना—सदा पास बैठे रहना, जरा देर को दूर न होना। तुम तो औरत के पास टाँग से टाँग बाँध कर बैठे रहते हो, क्यों न ?

टाँग से टाँग बाँध कर बैठाना—पास से न हटने देना।

टाँगे रह जाना—(१) लकवा या गठिया से पैर बेकार होना। (२) चलते चलते पैर दर्द करने लगना।

टाँगें लेना—(१) टाँग पकड़ना। (२) कुत्ते की तरह काटना। (३) पीछे पड़ जाना, सिर होना।

टाँट के बाल उड़ना—(१) सिर के बाल झड़ना। (२) पास में कुछ न रहना। (३) मार खूब पड़ना।

टाँट के बाल उड़ाना—सिर पर मारते मारते बाल न रहने देना, बहुत मारना।

टाँट खुजाना—मार खाने की इच्छा होना।

टाँट गंजी कर देना—दे० टाँट के बाल उड़ाना। (२) खूब ख॰ कराना। अदालत ने टाँट गंजी कर दी।

टाँट गंजी होना—(१) खूब मार पड़ना। (२) खर्च के मारे धुर्रे निकलना।

टाँडा लदना—(१) बिक्री का माल लदना। (२) कूच की तैयारी होना। (३) मरने की तैयारी होना।

टाँडा लादना—सब माल असबाब लेकर चलना। नौकरी छूटते ही उसने अपना टाँडा लाद दिया है।

टाँय टाँय फिस होना—(१) आरम्भ बड़ा पर फल कुछ नहीं। (२) बड़ी बढ़ चढ़ कर बातें या तत्परता दिखाना परंन्तु अंत में सब व्यर्थ। बहुत उछलते थे, सब टाँय टाँय फिस हो गई।

टाट उलटना—दिवाला निकलना, निकालना।

टाट करना—मस्तूल खड़ा करना।

टाट के (एक ही)—(१) बिरादरी के (२) एक ही मंडली या विचार के।

टाट में पाट या मूँज का बखिया—भद्दी चीज़ में बढ़िया साज।

टापा टोई करना—टटोलना।

[२५१५]

क्यों अधिक टापा टोई कर रहे हो, मैंने देख लिया है।

टापा देना—लंबे डग भरना या छलांग मारना। राम नाम जाना नहीं आए टापा देन।

टाल करना—ढेर लगाना। यहाँ इन बाँसों का क्या बनेगा, जो लाकर टाल कर दी।

टाल जाना—उपेक्षा करना। मेरी बात को श्याम तो हाँ हाँ करके टाल जाता है।

टाल देना (किसी पर)—किसी के सिर मढ़ देना। जो काम उसके पास जाता है वह दूसरों पर टाल देता है।

टाल मटूल करना—बहाना या हीला हवाला करना।

टाल मारना—पहिये के किनारों को छीलना।

टाला बाला बताना या देना—(१) टालना। (२) धोखा देना। (३) बहाना।

टिक टिक्की पर खड़ा करना—लड़ाई में हटने वाले चोट खाकर मरे हुए मुरदों को तीन लकड़ियों पर खड़ा करना।

टिक्की जमना, बैठना; लगना—प्रयोजन या उपाय सिद्ध होना। हमारी तो टिक्की बैठ गई हमें दूसरे से क्या।

टिटकारी पर लगना—इशारे या आवाज़ पर लगना, पहचानना।

टिड्डी दल—बड़ा झुंड, भीड़ या सेना। तैमूर की सेना टिड्डी दल की तरह भारत पर चढ़ी और जहाँ गई वहीं सफाया कर दिया।

टिप टिप करना—बूँद बूँद गिरना, बरसना।

टिप्पन का मिलान—विवाह के लिये वर कन्या की जन्म पत्रियों का मिलान।

टिप्पस अड़ना, जमना, लगना—मतलब बनने का ढंग होना।

टिमटिमाना (आँख)—आँख बार बार थोड़ा थोड़ा खोलना बंद करना।

टिर्र फिस करना—शरारत, शोखी, दगा करना।

टीकन देना—पौधे को सीधा सुडौल रखने के लिये थूनी लगाना।

टीका टिप्पणी करना—(१) विनोद करना। (२) आलोचना, बुराई भलाई करना। इस घटना के सम्बन्ध में लोग टीका टिप्पणी करने लगे।

टीका देना—माथे पर टीका लगाना।

टीका भेजना—तिलक संबंध भेजना, सगाई भेजना।

टीका लगाना—नश्तर लगाना। जब चेचक इत्यादि बीमारियाँ जोर पकड़ती हैं, तब वैक्सी नेटर टीका लगाते फिरते हैं।

[२५३६]

टीका लेना—शादी के समय उपहार लेना। उन्होंने साफ़ कह दिया कि व्याह में पाँच सौ रुपये से कम का टीका न लूँगा।

टीके का—अनोखा, विशेष। वहन ! वही कोई टीके का है जो सब कुछ रख लेगा।

टीप टाप करना—थोड़ी बहुत मरम्मत करना। बरसात से पहले ही मकान में टीप टाप कर दिया करो, जिससे पानी न चुचावे।

टीम टाम रखना, करना—बनावटी तड़क भड़क करना।

टीस उठना—दर्द, पीड़ा होना।

टीस मारना—रह रह कर दर्द होना। घाव में टीस मार रही है।

टुंच भिड़ाना, लगाना—(१) थोड़ी पूँजी से व्यापार शुरू करना। (२) थोड़ी पूँजी से जुआ खेलना। टुंच लगाने को फिरते हैं मै बेवकूफ हूँ जो खेलूँ।

टुंच लडाना—दे० टुंच भिड़ाना।

टुँड़िया कसना, बाँधना—मुश्कें बाँधना।

टुँड़िया खींचना—मुश्कें बँधना, हथकड़ी पड़ना।

टुक टुक ताकना—एकटक देखना।

टुक सा—जरा सा। टुक सी नज़र इधर भी।

टुकड़ा तोड़ना—दूसरे के दिये भोजन पर गुज़र करना। वह तो ससुराल के टुकड़े तोड़ता है।

टुकड़ा तोड़कर जवाब देना—संकोच न करना, झट स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना। वह टुकड़ा तोड़ कर जवाब दे देगा क्यों माँग कर मुँह बिगाड़ते हो।

टुकड़ा देना—भिखमंगे को रोटी या खाना देना।

टुकड़ा माँगना—भीख माँगना। अब टुकड़ा माँगता फिरता है।

टुकड़ा सा जवाब देना या टुकड़ा तोड़ कर हाथ में देना—लगी लिपटी न रखना, कोरा जवाब देना।

टुकड़ो पर पड़ना, रहना—पराई कमाई या रोटी पर गुज़र करना। वह ससुराल के टुकड़ों पर पडा है।

टुटरूँटूँ—(१) सुन सान, अकेला, सब चले आगे मै टुटरूँ टूँ रह गया। (२) तुच्छ, हीन।

टूट टूट कर बरसना—बहुत बरसना।

टूटना (पानी)—पानी कम होना। बहुत खिंचाई से कुएँ का पानी टूट गया।

टूटना (बदन, अंग)—अँगड़ाई आना। आज तो बदन टूट रहा है कहीं ज्वर न आ जाय।

टूट पड़ना—आक्रमण करना। जयद्रथ को देखते ही अर्जुन फौरन उस पर टूट पड़े।

टूटा फूटा बात, बोली—(१) अशुद्ध बोली। मैं टूटी फूटी अंग्रेजी भी बोल लेता हूँ। (२) अस्पष्ट बात। अभी तीन बरस का है टूटी फूटी बात करता है। (३) छोड़ छोड़ या रह रह कर। बेहोशी सी है बोला नहीं जाता टूटी टूटी बात कर लेते हैं।

टूटी बाँह गले पड़ना—किसी अपाहिज आदमी का खर्च सिर पड़ना। बहन विधवा हो गई यह टूटी बाँह भी हमारे गले पड़ी।

टूम छल्ला—छोटा मोटा गहना।

टुम टाम—(१) गहना पत्ता। (२) बनाव सिंगार।

टूम देना—कबूतर को छतरी पर से उड़ाना।

टेंट में कुछ होना—पास में कुछ रुपया पैसा होना।

टेंटें करना—(१) व्यर्थ बकवाद करना। क्यों टें टें कर रही है चुप बैठ न। (२) तोते की तरह बोलना।

टें बोलना या होना—दे० टन होना।

टेंटुआ दबाना—गला घोटना। मैंने देखा कि चिड़ीमार कबूतरों का टेंटुआ दबाकर कर उनकी जान ले रहा था।

टेक गहना, पकड़ना, रखना—आग्रह करना, ज़िद पर आजाना। तुम्हें तो अपनी टेक रखनी है, चाहे काम मिट्टी हो जाय।

टेकना माथा—दंडवत, प्रणाम करना।

टेक निभना, रहना—(१) जिस बात का आग्रह या हठ हो उसका पूरा होना। (२) प्रतिज्ञा पूरी होना। काम होगया हमारी टेक रह गई।

टेढ़ की लेना—नटखटी, शरारत, उजड्डपन करना।

टेढ़ा पड़ना या होना—(१) ऐंठना, अकड़ना। वह जरासी बात में टेढ़ा पड़ जाता है। (२) कठोर व्यवहार करना, गुस्से होना। टेढ़े होने पर तो वह झट रुपया गिन देगा। जैसा तैसा, बहुत साधारण। हाँ, टेढ़ा मेढ़ा अनुवाद कर सकता हूँ।

टेढ़ा मेढ़ा करना—किसी तरह काम कर लेना। वह तुम्हारी तरह बैठा तो नहीं रहता अपना काम टेढ़ा मेढ़ा कर ही लेता है।

टेढ़ी अंगुली से घी निकलना—धूर्तता से काम निकालना। टेढ़ी अँगुली घी निकलता है पीट दूँगा तो ठीक हो जायगा।

टेढ़ी आँखें करना—(१) क्रोध की आँखें करना, बिगड़ना। उनसे बस

नहीं चला मुझ पर आँखे टेढ़ी करने लगे।

टेढ़ी आँखो से देखना—बैर की निगाह रखना, नुकसान पहुँचाने की इच्छा रखना। वह बड़ी टेढ़ी आँखों से देखता है बचते रहना नहीं तो किसी दिन रोना पड़ेगा।

टेढ़ी खीर—मुश्किल काम, मुसीबत की खीर। यूनीसिटी मे प्रथम आना टेढ़ी खीर है।

टेढ़ी चितवन—तिरछी नज़र, भाव भरी दृष्टि। मुझे तेरी टेढ़ी सी चितवन ने मारा।

टेढ़ी सीधी सुनाना या टेढ़ी सुनाना—भली बुरी, ऊँची नीची सुनाओगे तो पीट डालूँगा भाई को दी है भाई से लो।

टेढ़े टेढ़े जान—इतराना, घमड करना। कबहूँ कमला चपला पाय के टेढ़े टेढ़े जात।

टेनी मारना—(सौदा) कम तौलना।

टेर करना—गुज़ारना, बिताना, काटना। जिंदगी टेर करते हैं।

टोक में आना—नज़र लगाने वाले आदमी के सामने पड़ जाना। बच्चा टोक में आगया।

टोकरे पर हाथ रहना—परदा न खुलना, इज्जत बनी रहना। भगवान ने टोकरे पर हाथ रखा है किसी को पता नहीं हम लाख के हैं या खाक के।

टोटका करने आना—थोड़ी देर भी न ठहरना। जरा बैठो, ऐसी क्या टोटका करने आई थी।

टोटका होना—बहुत जल्दी चटपट हो जाना। दस मिनट में खाना तैयार, बहन! ऐसा क्या टोटका हो गया।

टोटा पड़ना—हानि होना। अब की वार गेहूँ के सौदे में उन्हें लगभग एक हज़ार का टोटा पड़ा है।

टोटा भरना—घाटा पूरा करना। अब की वार इस रुई ने पार साल के गेहुँओं का टोटा भर दिया।

टोपी उछलना—निरादर होना।

टोपी उछालना—बेइज्जती करना। मेरी टोपी उछालने वाले पर जूते पड़ते हैं।

टोपी देना—टोपी पहनाना। हाथ खराब हैं जरा मेरे सिर पर टोपी दे दो।

टोपी बदलना—(१) भाई चारा करना। तुमने किससे टोपी बदली है। (२) राजा बदलना। अंग्रेजी राज की तीन टोपी बदल चुकी हैं। (३) राज्य बदलना। हिन्दुओं के बाद दो टोपी बदल-चुकी हैं।

टोपी बदल भाई—वह जिससे टोपी बदल कर भाई का सबन्ध जोड़ा हो।

[३५६४]

टोरना (आँख)—लज्जा आदि से दृष्टि हटाना, आँख मोड़ना। सूर प्रभु के चरित्र सखियन कहत लोचन टोरि।

टोह मिलना—पता लगना। चोर की टोह मिल गई।

टोह मे रहना—तलाश में रहना। मै ईमानदार आदमी की टोह में रहता हूँ।

टोह रखना—खबर, देख भाल रखना। मै तुम्हारी खूब टोह रखता हूँ।

टोह लगाना, लेना—पता या सुराग़ लगाना।

ट्रेन छूटना—रेल का स्टेशन से चल देना।

ठ

ठंडक पड़ना—सरदी फैलना। रात को तो ठंडक पड़ती है।

ठंडक लगना—सरदी का असर पड़ना। रात को ठंडक लगी।

ठंड चढ़ना—ज्वर से पहिले सरदी लगना। मुझे ठंड चढ़ रही है कुछ उढ़ा दो।

ठंडा करना—(१) दफन करना। (२) तोड़ना, फेंकना। चूड़ियाँ ठंडी करो। (३) बुझाना। आग ठंडी करो। (४) जल में विसर्जन करना। आज सरस्वती की मूर्ति को ठंडी करने ले जावेंगे। (५) क्रोध शांत करना। स्त्री ने आकर गलबाँहीं डालते ही उनको ठंडा कर दिया। (६) तसल्ली देना, ढाढस बाँधना। उन्हें समझा बुझाकर ठंडा किया। (७) हराना, दबाना। इस बार की चढ़ाई शत्रुओं को ठंडा कर देगी। (८) जोश मिटाना, गरमी झाड़ना। अभी उछलने दो, किसी खतरे में डाल कर सब ठंडा कर दूँगा।

ठंडा पड़ जाना, होना—(१) बे रौनक होना, मंदा होना। आज कल बाजार ठंडा पड़ गया है। (२) मरने के समीप होना। उसका तमाम बदन ठंडा पड़ गया है। (३) मर जाना। वैद्य जी! आपका बीमार तो ठंडा हुआ। (४) उदास होना, हिम्मत न रहना। फेल होना सुन कर ठंडा होगया, फिर न पढ़ा। (५) खुश होना। सुन कर ठंडे हो जाओ। (६) क्रोध शांत होना। उसका गुस्सा ठंडा भी बड़ी जल्दी पड़ता है।

ठंडी आग—(१) पाला, तुषार। (२) बरफ, हिम।

ठंडी आना—(१) शीत काल आना। (२) ज्वर से पहिले ठंड लगना।

ठंडी करना (माता या शीतला)—चेचक की अंतिम पूजा करना। [२६०८]

ठंडी गरमी—ऊपर की प्रीति, बनावटी प्रेम का आवेश।

ठंडी ढलना—चेचक के दानों का मुर्झाना। ठडी कल ढल गई।

ठंडा सांस खींचना—दुख की लम्बी साँस, आह भरना। तुम क्यों ठडी साँस भरती हो तुम्हारे भी लड़का हो जायगा। तुम्हारे बिना सारी रात ठंडी साँस खींचते बीती।

ठंडे ठडे—(१) हँसी खुशी से। ठंडे ठडे घर चली आई यही बहुत। (२) बिना विरोध, चुप चाप। ठडे टंडे यहाँ से चले जाओ नहीं तो कुटंत हो जाएगी। (३) सवेरे, धूप से पहिले। रात भर यहाँ सोओ सबेरे ठडे ठंडे चले जाना।

ठडी कढ़ाई—कढ़ाई में पीछे हलुआ बना कर बाँटने की रीति, (हलवाई, बनिये)।

ठंडी निकलना—चेचक के दाने होना।

ठडी मार—भीतरी मार, ऊपर न दिखाई दे अदर चोट आवे। ठंडी मार मारो रिपोर्ट भी करे तो सबूत न दे सके।

ठंडी मिट्टी—(१) ऐसा शरीर जिसमें जवानी जल्दी न मालूम दे। (२) ऐसा शरीर जिसमें कामोद्दीपन न हो। यह स्त्री तो ठडी मिट्टी है।

ठक रहना—सन्देह में होना। मैं तो सुनते ही ठक रह गया।

ठकुर सुहाती बातें करना—मुँह देखी या सिर्फ खुश करने वाली बाते करना। हमहु कहब अब ठकुर सुहाती।

ठग लगना—ठगों का आक्रमण करना या पीछे पड़ना। उस रास्ते मे बहुत ठग लगते हैं।

ठगा सा रहना, रह जाना—चकित, भौचक्का, धोखा खाया हुआ। कहा ठगी सी रही बाला परचौ कौन विचार।

ठग मूरी खाना—मतवाला होना। बूझति सखी सुनत नहिं नेकहुँ तुही किधौ ठगमूरी खाई।

ठगलाडू खाना—मतवाला होना। सूर कहा ठग लाडू खायो, इत उत फिरत मोह को मातो कबहुँ न सुध कर हरि चित लायो।

ठग विद्या खेलना—धोखा देना, धूर्तता या छल करना। मुझसे क्या ठग विद्या खेलोगे।

ठट कर बातें करना—बना बना कर एक एक शब्द पर जोर देते हुए बात करना।

ठट के ठट—झुंड के झुंड, बहुत से।

ठट लगना—(१) भीड़ होना। आदमियों के ठट लग गये। (२)

ढेर, इकट्ठे होना। अर्जियों के ठट लगे हैं।

ठट्ठा उड़ाना मारना लगाना—दिल्लगी करना, हँसी करना। तुम तो ठट्ठा उड़ा रहे हो मैं सच कह रहा हूँ।

ठट्ठे में उड़ाना—मज़ाक मे उड़ाना, बात बहलाना। सोचने की बात है, ठट्ठे मे मत उड़ाओ।

ठठरा होना—दुबला हो जाना। तुम तो ठठरी हो रहे हो, ऐसा क्या रोग लगा है।

ठठाकर हँसना—जोर से हँसना। पास के कमरे में तुम्हारे श्वसुर बैठे हैं, और तुम ऐसी ठठाकर हँस रही हो।

ठठेरे ठठेरे बदलाई—जैसे का तैसा व्यवहार, दो समान धूर्तों, बलवानों का व्यवहार। यह तो ठठेरे ठठेरे बदलाई है उसने दीवानी दावा किया दूसरे ने फौजदारी मे धर घसीटा।

ठठेरे की बिल्ली—खटके की आवाज़ का अभ्यस्त। रात दिन सड़क पर आहट रहती है तब भी नींद आ जाती है, भाई ठठेरे की बिल्ली जो ठहरे।

ठनकना (माथा)—बुरा संदेह होना, खटका या बुरी आशंका होना। तार पाते ही माथा ठनका।

ठनका कर लेना (रुपया)—खरे करके, बजा कर लेना। रुपये ठनका कर लाया हूँ।

ठन जाना (किसी बात पर) ठनना—(१) उद्यत हो जाना, प्रारम्भ हो जाना। अब जो ठन गई तो ठन ही गई पूरा ही करेंगे। (२) वैर बँध जाना, लड़ाई होना। उन दोनों में ठनी है देखे कौन जीते।

ठन ठन गोपाल—(१) अज्ञान, मूर्ख। निरे ठनठन गोपाल हो कुछ अक्ल से तो सोचा होता ? (२) गरीब। हमारे पास क्या रखा है हम तो ठन ठन गोपाल हैं।

ठसाठस भरना—(१) खूब कस कर या ठूँस कर भरना। ठसाठस भरो ताकि और न आवे। (२) बहुत भीड़ होना। कमरा ठसाठस भरा था तिल भर जगह न थी।

ठह ठह कर बोलना—हाव भाव के साथ, एक एक शब्द पर जोर देकर, मठार मठार कर बोलना। ठह ठह कर बोलता है जैसे कोई नवाब हो।

ठहरना (मन)—चित्त स्थिर या शान्त होना। जबै आऊँ साधु संगति में कछुक मन ठहराई।

ठहरना (किसी बात पर)—सकल्प या निश्चित विचार होना। क्या अब चलने की ठहरी ? गप बहुत हुई, अब खाने की ठहरी।

ठहरा—है। वह तुम्हारा भाई ठहरा कहाँ तक खबर न लेगा। तुम घर के आदमी ठहरे तुमसे क्या छिपाना। वे अपने सम्बन्धी ठहरे उन्हें क्या कहें।

ठाट खड़ा करना—ढाँचा तैयार करना। आपने क्या ठाट खड़ा किया ?

ठाट खड़ा होना—ढाँचा तैयार होना।

ठाट पड़ा रह जाना—दुनियाँ की सम्पत्ति तथा सुख यहीं रह जाना। सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा।

ठाट बदलना—(१) वेश या रूप रंग नया दिखाना। आज खूब ठाट बदले हैं। (२) और का और भाव दिखाना। काम निकालने या श्रेष्ठता प्रकट करने के लिये झूठे लक्षण दिखाना। (३) रग बाँधना, बड़प्पन जताना। क्या ठाट बदल कर काबू मे किया है। पैतरा बदलना। ठाट बदल कर वार किया।

ठाट बाँधना—वार करने की मुद्रा से खड़े होना। उसने ठाट बाँध कर गहरा घाव दिया।

ठाट बाट से रहना—सजधज कर, बनठन कर रहना। रहता तो बड़े ठाट बाट से है मेरे खयाल में तो लखपती ही होगा।

ठाट बिगड़ जाना—बात बिगड़ जाना। उन्हें नाराज़ करने से सारा ठाठ बिगड़ जायगा।

ठाट मांजना—दे० ठाट बदलना।

ठाट मारना—(१) पर झड़झड़ाना। (२) मौज उड़ाना, चैन करना।

ठाट से कटना—मज़े से दिन बीतना। अपनी तो ठाट से कटती है दूसरा मरे चाहे जिये।

ठाढ़ा देना—(१) स्थिर रखना, ठहराना। बारह वर्ष दमो हम ठाढ़ो यह प्रताप बिनु जाने, अब प्रगटे वसुदेव सुवन तुम गर्ग वचन परिमाने। (२) खड़े तैरना।

ठाला बताना—(१) बिना कुछ दिये चलता करना, धता बताना। मैने तो उसे ठाला बताया रुपये नहीं दिये।

ठाली होना—बेकार होना। जब तक तुम ठाली हो तब तक हमारा यह काम कर दिया करो तो अच्छा है।

ठाले बैठे—खाली बैठे, काम धंधा न रहते हुए। बैठे ठाले यही किया करो, अच्छा है।

ठिकाना करना—(१) व्याह के लिये घर ढूँढना। इनका भी कहीं ठिकाना करो तो घर बसे। (२) आश्रय, नौकरी लगाना। इनके लिये भी ठिकाना करो, खाली बैठे

[३६५६]

है। (३) ठहरना, टिकना। वहाँ मित्र के यहाँ ठिकाना किया। (४) स्थान करना, जगह नियत करना। अपने सोने का ठिकाना करो, मेरी फिक्र छोड़ दो।

ठिकाना ढूँढना—(१) जगह तलाश करना। (२) रहने के लिये जगह ढूँढना। (३) नौकरी या काम धंधा खोजना। (४) कन्या के व्याह के लिये वर ढूँढना। घबराओ नहीं, इस साल तुम्हारे लिये भी ठिकाना ढूँढ दूँगी।

ठिकाना लगना—(१) ठहरने को जगह मिलना। सिपाही जो भागे तो बीच में और तो कहीं ठिकाना न लगा बुढ़िया के घर मे जा घुसे। (२) नौकरी जीविका का प्रबन्ध होना। इस आदत से तुम्हारा कहीं भी ठिकाना न लगेगा। (३) पता लगना। तुम्हारा ठिकाना नहीं लगता कहाँ रहते हो।

ठिकाना लगाना—(१) ढूँढना, पता लगाना। मैंने उनका ठिकाना लगा दिया है रात को चलेंगे। (२) आश्रय या जीविका, नौकरी देना।

ठिकाने आना—(१) मतलब की या असली बात पर आना। अब तुम ठिकाने पर आये अब समझ जाओगे (२) ठीक विचार या बहुत सोचने के बाद यथार्थ बात समझना। हाँ इतनी देर बाद अब बुद्धि ठिकाने पर आई है। (३) वाँछित स्थान पर पहुँचना। जो कोउ ताको निकट बतावे, धीरज धरि सो ठिकाने आवे।

ठिकाने की बात—(१) ठीक, सच्ची बात। ठिकाने की बात बतलाओ इधर उधर की मत बको। (२) समझदारी या युक्ति युक्त बात। जरासा लड़का है परन्तु बात बड़ी ठिकाने की कहता है। (३) पते की बात भेद खोलने वाली बात। (४) होश से बात करना।

ठिकाने न रहना—चचल हो जाना। बुद्धि ठिकाने न रही, होश भी ठिकाने न रहे।

ठिकाने पहुँचाना—(१) ठीक जगह पहुँचाना। (२) मार डालना। (३) चीज़ लुप्त या नष्ट कर देना। वह तो ठिकाने पहुँचा दी अब क्या हो सकता है।

ठिकाने लगना—(१) ठीक स्थान पर पहुँचना। चलते चलते दस बजे ठिकाने लगे। (२) काम या उपयोग मे आना, अच्छी जगह खर्च होना। बहुत दिनों से बेकार पड़ी थी, आज ठिकाने लगी अच्छा हुआ। (३) सफल होना। मेहनत ठिकाने लग गई।

ठिकाने लगाना—(१) मार

डालना। सैकड़ों पथिक ठिकाने लगा दिये। (२) काम को आखीर तक पहुँचाना। कोई भी तो काम ठिकाने नहीं लगाते सब अधूरा छोड़ देते हो। (३) ग़ायब करना। कहीं ऐसा ठिकाने लगाओ जो ढूँढने पर भी न मिले। (४) आश्रय देना, नौकरी, जीविका आदि लगाना। इस वेचारे को भी कहीं दस पाँच के ठिकाने लगा दो। (५) खर्च कराना। २०) तो मेरे ठिकाने लगा दिया काम कुछ किया नहीं। (६) सार्थक या सफल करना। इतनी मेहनत की है इसे तो ठिकाने लगाओ। (७) काम या उपयोग में लाना। (८) अच्छी जगह खर्च करना। (९) ठीक जगह पहुँचाना। (१०) खो देना। कोई चीज़ दे दो पता नहीं कहाँ ठिकाने लगा आता है। (११) खर्च कर डालना। उन्होंने सब कमाई ठिकाने लगाई।

ठीक आना—(१) ढीला सा कसा न होना। यह कोट मेरे ठीक आता है। (२) पूरा पूरा तथा शुद्ध याद होना। (३) दे० ठीक उतरना (२)।

ठीक उतरना—(१) तोल में पूरा होना। अनाज तोलने पर ठीक उतरा। (२) सुन्दर और जैसा चाहिये वैसा होना। इस काग़ज़ पर चित्र ठीक उतरता है।

ठीक करना या बनाना—(१) दण्ड देकर राह पर लाना। मैं मार मार कर ठीक कर दूँगा। (२) तग करना या दुर्गति करना। मै उसे ठीक कर दिया है अब वह गाली न देगा। (३) घड़ी ठीक कर दो।

ठीक देना. लगाना—(१) मन में पक्का निश्चय करना। नीके ठीक दई तुलसी अवलब बडो उर आखर दु की। (२) जोड़ निकालना।

ठीक लगाना—भला जान पड़ना। मुझे तुम्हारा यह काम ठीक लगता है।

ठीकरा फोड़ना—दोष या कलंक लगाना। अरे तुम तो और ठीकरा उसके सिर फोड़ते हो।

ठीकरा समझना—किसी काम के या किसी भी मूल्य का न समझना। पराए माल को ठीकरा समझना चाहिये।

ठीकरा होना—पानी की तरह बहाया जाना, अंधा धुंध खर्च होना। रुपये तो इस काम में ठीकरे होंगे तब जीतोगे।

ठीकरी चुनना—पहले यह बड़ा विद्वान् था, अब कुछ दिनों से ही ठीक। चुनने लगा है।

ठीकरे पकवाना—नीलाम करा देना, असबाब तक बिकवा देना।

[३६७५]

तुमने उस बेचारे से ठीकरे पकवा दिये, ऐसा क्या बिगाड़ा था।

ठीहा होना—रहने की जगह होना। तुम्हारा कहीं ठीहा भी है, यों ही मुझे तो पता न लगा।

ठेंगा दिखाना—(१) दे० अँगूठा दिखाना।

ठेंगा बजना—(१) मार पीट, लड़ाई दंगा होना। खूब ठेंगा बजा मुझे बड़ी खुशी हुई। (२) कोशिश बेकार जाना। जिसका काम उसी को साजे, और करे तो ठेंगा बाजे।

ठेंगे से—बला से, कुछ परवा नहीं। मेरे ठेंगे से मुझे क्या? कुछ भी हो।

ठेंठी लगाना (कान में)—न सुनना।

ठेकना—सेकना, रोटी बनाना। हम तो खुद ही ठेक लेते हैं और खा लेते हैं।

ठेका भरना—घोडे का उछल कूद करना। मेरा घोड़ा ऊँची नीची जगह खूब ठेका भरता है।

ठेका भेंट—ठेकेदार द्वारा दिया हुआ नजराना।

ठेपी मुँह में देना—मौन होना। आज क्या बात है जो इन्होंने, सबेरे से ठेपी मुँह में दे ली है।

ठोंक ठोंक कर लड़ना—जबरदस्ती, ताल ठोक कर लड़ना। दिन दिन देत उरहनो आवै ठुंकि ठुंकि करत लरैया।

ठोंकना पीठ—दे० पीठ ठोकना।

ठोकना बजाना—जाँचना, परखना। लोग दमड़ी की हाँडी भी ठोक बजा कर लेते हैं।

ठोकर उठाना—हानि, आघात या दुख सहना। तुम्हारी बदौलत यह १००) का ठोकर उठाना पड़ा है।

ठोकर खाता फिरना—इधर उधर मारा फिरना। कुछ नहीं करता यों ही सारा दिन ठोकरें खाता फिरता है।

ठोकर या ठोकरें खाना—(१) रास्ते के कंकड़ आदि की चोट पैर में सहना। जो सँभल कर न चलेगा वह ठोकर खाकर ही गिरेगा। (२) असावधानी या भूल के कारण हानि सहना। ठोकर खावे बुद्धि पावे (कहावत)। (३) धोके में आना, चूक जाना। ५) की ठोकर खा गये। (४) दुर्गति सहना, जीविका के लिये भटकना। यदि वह कुछ न सीखेगा तो आप ठोकर खायगा। (५) लात सहना, पैर का आघात सहना। बड़ी ठोकरें खाकर दरोगा बनते हैं।

ठोकर लगना—भूल चूक के कारण नुकसान होना। हमें तो इस बार गवाही देकर ऐसी ठोकर

लगी अब कभी भूल कर भी गवाही न देंगे।

ठोकर लेना—ठेस या पैर में चोट खाना। घोड़े ने दौड़ते दौड़ते ठोकर ली और गिर पड़ा।

ठोकर देना, जड़ना—पैर से आघात देना, ठोकर मारना। मैंने ऐसी ठोकर जड़ी कि वह चित्त हो गया।

ठोकरों पर पड़ा रहना—बेइज्जत होकर, मार गाली खाकर गुज़ारना। हम तो ठोकरों पर पड़े रहते हैं दूसरी नौकरी मिले तो यहाँ से छोड़े।

ठोड़ी पर हाथ धर कर बैठना—चिंता या सोच में बैठना। ठोड़ी पर हाथ धरे कैसे बैठे हो क्या विचार रहे हो।

ठोड़ी पकड़ना या ठोड़ी में हाथ देना—(१) प्यार करना। (१) मीठी बातों से क्रोध शान्त करना। (३) मिन्नतें खुशामदें करके मनाना। मैंने ठोड़ी में हाथ देकर कहा कि इस बार मान जाओ पर वह बड़ा निर्दय है।

ठेंगा दिखाना—दे० अँगूठा दिखाना।

ठाम्हे से—दे० ठेंगे से।

ठौर कुठौर—(१) बुरे ठिकाने, बेजगह। क्यों पत्थर फेंकते हो, किसी के ठौर कुठौर लग गया तो जान को आ जायगा। (२) बे मौके, बुरे वक्त पर।

ठौर न आना—पास न फटकना। हरि को भजै सो हरिपद पावै, जनम मरन तिहि ठौर न आवै।

ठौर रखना—मार कर गिरा देना, मार डालना। दो आदमी तो वहीं ठौर रखे दो भागे उन्हें रास्ते में मार गिराया।

ठौर रहना—(१) जहाँ के तहाँ रह जाना। दस डाकू तो ठौर रहे, दो भाग गये। (२) मारे जाना।

ठौर (किसी के)—(१) किसी के स्थानापन्न। मुझे अपने पिता की ठौर समझो शरमाओ मत। (२) तुल्य। किबले के ठौर बाप बादशाह शाहजहाँ ताको कैद कियो मानो मक्के आग लाई है।

ठौर ठौर तोड़ देना—हड्डी हड्डी तोड़ देना, बहुत गहरी मार मारना।

ड

डंक जलना—बुरा होना। इसका डंक जले मुई ने मेरी शिकायत कर दी।

डंक मारना—बिच्छू आदि का डसना। रास्ते में नंगे पैरों जाते हुए, बिच्छू ने मेरे पैरों में डंक मार दिया।

डंका देना, पीटना—(१) घोषित करना, चिल्ला चिल्ला कर सब को सुनाना। डका दिया कि जो पकड़ेगा इनाम पावेगा। (२) मुनादी करना। (३) दे० डंका बजाना।

डंका डालना—(१) मुरगे का चोंच मारना। (२) मुरगे से मुरगे को लड़ाना।

डंका बजना—शासन, अधिकार होना। अंग्रेज़ों से पहिले मुग़लों का डंका बजता था।

डंका बजाना—(१) खुशी मनाना, वहाँ होली का डंका बजा ही था कि मुग़ल सेना ने आक्रमण कर दिया। (२) राज्य या हुकूमत होना। और दस दिन डंका बजा लेने दो फिर तो गद्दी से उतारे जावेंगे। (३) अपने को नामी बनाना। वह अपने नाम डंका हर जगह बजाता है। (४) घोषित या प्रसिद्ध करना। उसने अपने पाडित्य का डंका बजाया।

डंड पड़ना—नुकसान या फ़िजूल ही खर्च होना। खेल तुम देखो डंड हम पर पड़े?

डंड पेलना—(१) खूब डंड करना। (२) मज़े उड़ाना। नहीं मिली तो इमली के पत्ते पर डंड पेलो।

डंड भरना—नुकसान के बदले में धन देना, जुरमाना या हरजाना देना। १००) डड भरना पड़ा।

डंडा खींचना—दीवार बनाना। पहले चारों ओर का डंडा खींचलो तब भीतर से बनाना प्रारम्भ करना।

डंडा बजाते फिरना—मारे मारे फिरना, योंही घूमना। क्यों डंडे बजाते फिरते हो घर बैठो।

डंडी मरना—तराजू ऐसे झुकाना कि सौदा कम चढ़े।

डंडे देना—विवाह के बाद भादों बदी चौथ को बेटे वाले के यहाँ चाँदी के पत्तर चढ़े कलम दवात आदि भेजना।

डकार जाना—धन अपहरण कर लेना सारा रुपया अकेले ही डकार जाओगे, या हमें भी कुछ दोगे।

डकार न लेना—(१) धन या वस्तु लेजा कर या उड़ाकर पता न देना या न लौटाना। वह हजारों रुपये खाकर भी डकार नहीं लेता। (२) कोई काम करके पता न देना। तुम्हारे पेट की माया तुम्हीं जानो तुम तो डकार तक नहीं लेते।

डग देना—कदम बढ़ाना, चलने में आगे की ओर पैर रखना। पुर ते निकसी रघुबीर बधू धरि धीर दिये मग में डग द्वै।

डग भरना—कदम बढ़ाना। जरा

लबे डग भरो क्या धीरे धीरे चलते हो।

डगडगा कर पानी पीना—एक दम में बहुत सा पानी पी जाना।

डग मारना—लबे पैर बढ़ाना, तेज चलना। चार डग मारी कि गाँव आया।

डगर बताना-(१) उपाय बताना। (२) उपदेश देना। (३) रास्ता बताना। वे अच्छे अच्छों को डगर बता देते हैं।

डटकर खाना—खूब पेट भर कर खाना।

डटा रहना—ठहरे रहना, जहाँ का तहाँ रहना। तुम मुकाबिले में डटे रहे तो जीत जाओगे।

डफली जितनी राग उतने—जितने लोग उतनी राय। भारत में एक मत नहीं जितनी डफली उतने राग गाते हैं।

डब पकड़ कर कराना—गला दबा कर काम कराना। वह मेरा बड़ा दोस्त है यह काम तो मैं डब पकड़ कर करा लूँगा।

डब में आना—वश या काबू मे आना। अब वह डब में आया है।

डबोना नाम—प्रसिद्धि नष्ट करना, कलंक लगाना। नीच कार्य करके तुमने बाप का नाम डुबो दिया।

डबोना लुटिया—महत्व, प्रतिष्ठा खोना। लुटिया डबोदी अरे कुछ तो समझ कर कहते।

डबाना वंश—कुल में कलंक लगाना। डूबा बंश करीब का जब उपजा पूत कमाल।

डल का डल—ढेर का ढेर, बहुत सा।

डाँगर घसीटना—(१) चमारों की तरह मरा चौपाया घसीट कर ले जाना। (२) अपवित्र काम करना।

डाँट में रखना—वश या आज्ञा में रखना। बच्चे को डाँट मे रखो नहीं बिगड़ जायगा।

डाँट रखना (किसी पर) दबाव या शासन रखना। डाँट न रखोगे तो औरत सिर चढेगी।

डाँट डपट करना—हिदायत करना मुझे सन्देह हुआ था इसी से डाँट डपट की।

डाँट बताना—फटकारना। उसे ऐसी डाट बताऊँ कि ठीक हो जाय।

डाँड चलाना—नाव खेना। चाल बढ़ते देख उसने ज़ोर ज़ोर डाँड चलाना शुरू किया।

डाँड मारना—मेंड उठाना।

डाँड लेना—जुर्माना लेना। यदि तुम ने कल रुपये दाखिल न किये तो अदालत फिर सौ रुपये से कम डाँड न लेगी।

डाँडा डोली का—लकडियों का

ढेर जो होली जलाने के लिये बसंत पञ्चमी से रखा जाता है। बच्चे होली के डाड़े में पेड के पेड़ काट लाते हैं।

डाँड़ी मारना—कम तोलना।

डाँवाडोल फिरना—दुविधा में घूमना।

डाक बैठाना, डाक लगाना—शीघ्र यात्रा के लिये जगह जगह चौकी लगाना। दिल्ली से कलकत्ते दो दिन में पहुँचते थे हर सात मील पर डाक बैठती थी।

डाक लगना—जल्दी खबर पहुँचाने या यात्रा के लिये रास्ते में जगह जगह आदमियों, सवारी आदि का प्रबन्ध होना। महाराजा की डाक रात को लगती थी जब वह गया जाते थे।

डाका डालना—डकैती करना। अभी चोरों ने उस अमीर के यहाँ डाका डाल दिया और माल ले गये।

डाका पड़ना—डकैतों से घेरा जाना। आज से दस वर्ष पहले हमारे गाँव में बड़ी ज़ोर का डाका पड़ा था।

डाढ़ गरम होना—(१) रिश्वत मिलना। हमारी डाढ़ गरम हो तो हम काम करा दें। (२) भोजन मिलना, बढ़िया ताजा खाना मिलना।

डाढी का एक एक बाल करना—दुर्दशा करना, डाढ़ी उखाड़ लेना।

डाढी को कलंक लगाना—श्रेष्ठ बुड्ढे को कलंक लगाना।

डाढ़ी छोड़ना—डाढ़ी बढ़ाना, डाढ़ी न मुड़वाना। आज कल छः महीने से डाढ़ी छोड़ रखी है।

डाढ़ी पेट में होना—मन का भेद न देना, छोटी अवस्था में गम्भीर ज्ञान होना।

डाढ़ी पेशाब से मुड़वाना—अपमान करना। तुमने इतने आदमियों के सामने उसकी डाढ़ी पेशाब से मुड़वा कर अच्छा नहीं किया।

डाढ़ी फटकारना—(१) हाथ से डाढ़ी के बाल झटकना। (२) संतोष और उत्साह प्रकट करना। ठाकुर साहब ने डाढ़ी फटकार कर कहा, मुझे कोई चिन्ता नहीं।

डाढी रखना—डाढ़ी के बाल न मुँडवाना, डाढ़ी बढाना।

डाढ़ें मार मार कर रोना—छाती पीट पीट कर, खूब चिल्ला कर रोना।

डाल का टूटा—बिल्कुल ताजा। यदि तुम किसी अमरूद के बाग में जाओ तब तुम्हें डाल के टूटे अमरूद मिल सकते हैं।

डाल रखना—(१) रख छोड़ना, रखे रहना। मैंने उसे घर डाल

रखा है कल ला दूँगा। (२) काम लेकर उसे हाथ न लगाना, रोक रखना, देर लगाना। करना है तो कर डालो यों ही क्यों डाल रखा है। (३) स्त्री बना रखना।

डाली देना, लगाना—डलिया में मेवे. फल आदि सजा कर भेंट रूप भेजना।

डींग मारना, हाँकना—अपनी झूठी बड़ाई करना, बढ़ बढ़ कर बातें करना।

डीठ चुराना, छिपाना—नज़र छिपाना, सामने न देखना।

डीठ जोड़ना—चार आँखें करना।

डीठ बाँधना माया या जादू कर के निगाह बाँध देना जिससे सामने की वस्तु ठीक ठीक न सूझे।

डीठ मारना—नजर डालना।

डीठ रखना—देख रेख रखना।

डीठ लगाना—नज़र लगाना।

डील डौल का होना—लंबा, ऊँचा, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होना। डील डौल का आदमी है।

डुगडुगी पीटना—दे० डंका देना।

डुबकी खाना, मारना, लगाना—गायब हो जाना। तुम तो ऐसी डुबकी मार गये पता भी न चला।

डुबोना-नाम-लुटिया-वंश—दे० डबोना नाम।

डूब जाना—(१) मारे जाना। १००) हमारे भी डूब गये। (२) इज्जत, नाम न रहना। (३) कुछ न हो सकना। तुम भी डूब गये छोटे से पिट गये। (४) छिप जाना, गायब होना।

डूबती नैया पार लगाना—दुख से बचाना। मेरी डूबती नैया पार लगा दो मै जन्म भर याद करूँगा।

डूबते को तिनके का सहारा होना—संकट में पड़े को थोड़ी सहायता भी बहुत होना। मुझ डूबते को तुम्हारे ५) के तिनके का सहारा भी बचा लेगा।

डूबना उतराना—(१) सोच में पड़ना। (२) चिंताकुल होना, जी घबराना। हम तो यों डूबते उतराते ही मर जायँगे।

डूबना चुल्लू भर पानी में, डूब मरना—शरम के मारे मर जाना।

डूबना जी—(१) बेहोशी होना। (२) जी घबराना या व्याकुल होना।

डूबना नाम—बदनामी होना। प्रतिष्ठा नष्ट होना। हमारा नाम लड़की पर रुपया लेने से डूब गया।

डूबा नाम उछालना—गई इज्जत फिर पैदा करना। उसने यह एक नामवरी का काम करके डूबा नाम उछाल लिया।

[३७८०]

डेढ़ ईंट की मस्जिद जुदा बनाना—मिलकर न काम करना।

डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना—अपनी राय बहुमत से अलग रखना।

डेढ़ चुल्लू लहू पीना—मार डालना। मै सौत का डेढ़ चुल्लू लहू पीकर ही चैन से बैठूँगी।

डेरा डंडा उखाड़ना—अपना समान लेकर चला जाना। साधू जी ने अपना डेरा डंडा उखाड़ लिया।

डेरा डालना—ठहरना, सामान फैलाकर रहना। आज एक दोस्त के यहाँ डेरा डाला है कल तुम्हारे घर रहेंगे।

डेरा पड़ना—छावनी या टिकान पड़ना। भरि चौरासी कोस पड़े गोपन के डेरा।

डेरे ठीक करना—तैयारी करना। आप सवेरे जा कर दोनों डेरे ठीक कर आइये।

डोब देना—डुबोना, गोते देना। नील का डोब दो तो कपड़ा सफेद होगा। कलम को डोब देना।

डोर पर लगाना—ढब पर लाना, अनुकूल बनाना। कई दिन समझा कर कहीं डोर पर लगाया है अब वह चला चलेगा।

डोर भरना—फलीता लगाना।

डोर मजबूत होना—जिन्दगी बाकी रहना। अभी तो डोर मजबूत है अभी न मरेंगे।

डोर लगना—ध्यान या प्रेम होना। भगवान सों लगी डोर वही लगावे पार।

डोर होना—मोहित, लट्टू होना।

डोरा डालना—प्रेम में फँसना, अपनी ओर खींचना। डोरा ही डाल रखा है, मनोरथ पूरा नहीं हुआ है।

डोरा लगना—प्रीति सम्बन्ध होना।

डोरी खींचना—पास बुलाने के लिये याद करना। जब भगवती डोरी खींचेगी तब जायेगी।

डोरी ढीली छोड़ना—देख भाल, चौकसी कम करना। जहाँ डोरी ढीली की और बच्चा बिगड़ा।

डोरी लगना—पहुँचने या मिलने की ही याद या ध्यान रहना। अब तो घर की डोरी लगी हुई है।

डोरे छूटना—आँख लाल होना।

डोरे छोड़ना—सुरमा लगाना।

डोला आना—राजा ने कहा जब तक डोला न आ जायगा तब तक यहाँ से एक क़दम भी न हटूँगा।

डोला देना—(१) बेटी को वर के घर लेजाकर ब्याहना। (२) राजा या सरदार को भेंट की तरह अपनी बेटी ब्याहना।

डोला निकालना—दुलहिन को विदा करना।

डोला लेना—भेट में कन्या लेना।

डौंडी देना, पीटना—(१) दे० डंका देना। (२) सब किसी से कहते फिरना। घर में बात होती है यह शहर भर मे डौंडी पीट देता है।

डौंडी बजना—(१) घोषणा होना। (२) चलती होना। (३) दुहाई फिरना, जय जयकार होना। लौंडी के घर डौंडी बाजी ओछों निपट अजानो।

डौल डाल होना—आशा या स्वरूप होना। अभी तो तुम्हारे रुपये पट जायँगे ऐसा डौल डाल दिखाई नहीं देता।

डौल डालना—लग्गा लगाना, ढाँचा खड़ा करना। अब तो उसने कुछ डौल डाला है इस साल सारा काम हो जायगा।

डौल पर लाना—(१) काट छाँट कर सुडौल या दुरुस्त करना। (२) ऐसा करना जिससे कुछ मतलब निकल सके।

डौल, बाँधना, लगाना—उपाय या युक्ति करना। कहीं से १००) का डौल बाँधो तो काम चले।

डौल से लगाना—क्रम से या इस तरह लगाना, जो देखने में भावे। डौल से लगाओ जो गाहक देखते ही ले।

ड्योढ़ी खुलना—(१) दरबार या घर में आने या आने जाने की आज्ञा मिलना। मेरे लिये तो उनकी ड्योढ़ी सदा खुली ही रहती है।

ड्योढ़ी बंद होना—(राजा या रईस के यहाँ) आपने जाने की मनाही होना। उनकी ड्योढ़ी बंद है अंदर से हुकुम आवगा तब जाना होगा।

ड्योढ़ी लगना—द्वार पर द्वारपाल बैठना, जो बिना आज्ञा अंदर न जाने देता हो। अजी वह भी एक तरह के राजा ही है, ड्योढ़ी लगती है बिना आज्ञा लाट साहब भी नही जा सकते।

ढ

ढंग का होना—(१) खूबसूरत। वह लड़का कुछ ढग का नहीं है। (२) व्यवहार चतुर, काम कुशल। आदमी तो बड़े ढग का है, वह गलती नहीं कर सकता।

ढंग पर चढ़ना—काम निकलने के अनुकूल होना। कुछ रुपया उससे भी लेंगे परन्तु अभी वह हमारे ढंग पर नही चढा है थोड़े दिन और ठहरो।

ढंग पर लाना—ऐसा बनाना (आदमी को) कि कुछ अर्थ सिद्ध हो सके। बड़ी मुश्किल से ढंग पर लाया हूँ अब वह तुम्हारा काम कर देगा।

[३८१७]

ढँग बर्तना—दिखाऊ व्यवहार करना। वह बड़ा ढँग बर्तता है ताकि दूसरों को मालूम दे बड़ा सीधा है।

ढँग से बर्तना—किफायत से खर्च करना।

ढँग होना—आशा या स्वरूप होना। उनके देने के ढँग होते तो दावा ही क्यों करते।

ढँढारा पीटना }
ढँढारा फेरना } —ढोल बजाकर चारों ओर सूचना देना या मुनादी करना।

ढई देना—बोझ डालना, समय लेना, खाने के लिए जा पड़ना। यहाँ तो ढई न दो, अपने घर जाओ।

ढकोसला होना—ऊपरी दिखावट, कपट व्यवहार। उनका प्रेम ढकोसला है वे अंदर से इतना प्रेम नहीं करते जितना दिखाते हैं।

ढचर बाँधना—(१) ढकोसला करना। (२) बखेड़ा या टंटा बढ़ाना, तड़क भड़क रखना। उसने ढचर तो ऐसा बाँध रखा है जैसे लखपती है।

ढब की बात—उचित और मौके की बात। ढब की बात करो जो हो भी सके।

ढब डालना—(१) आदत डालना। मैंने पहिले से ही वह ढब डाला है कि वह कुछ न कह सके। (२) शऊर सिखाना, अच्छी आदत डालना। लड़के को ढब पर डालो क्यों बिगाड़ते हो।

ढब पर चढ़ना—ऐसी अवस्था जिससे मतलब निकल सके। अगर वह ढब पर चढ़ गया तो बहुत काम निकलेगा।

ढब पर लगाना या लाना—अपने मतलब का बनाना। मै अब उसे ढब पर ले आया हूँ आप काम निकाल सकते हैं।

ढय पड़ना—उतर पड़ना, यकायक आकर ठहर जाना। तुम कहाँ ढय पड़े कोई चिट्ठी न पत्री।

ढरकना दिन—(१) दिन का उतरार्द्ध होना। (२) सूर्यास्त होना।

ढर्रा डालना—आदत अभ्यास कराना। पहिले से ही ढर्रे पर डालोगे तो ठीक होगा।

ढलती फिरती छाया—भाग्य का फेर। भाई धन पाकर इतना गर्व क्यों करते हो, यह तो ढलती फिरती छाया है।

ढलना जवानी—युवावस्था का जाता रहना।

ढलना दिन—शाम होना।

ढलना सूरज या चाँद—अस्त होना।

ढला हुआ साँचे में—(१) सुन्दर, सुडौल। (२) शुरू से ही होना।

वह तो ढला ही ऐसे साँचे में है कि किसी के काम न आवे।

ढा देना—गिरा देना। बनी बनाई इमारत को मिस्त्री ने न मालूम क्यों ढा दिया।

ढाई घड़ी की आना—चटपट मौत आना। मुई को ढाई घड़ी की आये।

ढाई चुल्लू लहू पीना—(१) दे० डेढ़ चुल्लू...। (२) कठिन दण्ड देना। तेरा ढाई चुल्लू लहू पीकर ही मुझे कल पड़ेगी।

ढाई दिन की बादशाहत—(१) दुल्हा बनना। (२) थोड़े दिनों का ऐश्वर्य भोग। ढाई दिन की बादशाहत मे यह ज़ोर जुल्म!

ढाक के तीन पात—(१) सदा का निर्धन। (२) परिवार थोड़ा। वही ढाक के तीन पात जो लड़के की बहू आई तो लड़की उतर गई घर में फिर पाँच के पाँच।

ढाक तले की फूहड़ महुए तले की सुघड़—धन वाली गुणवती निर्धन निर्गुणी। कुछ नहीं आता पर हैं तो सेठानी कोई बुराई नहीं कर सकता भाई ढाक ...।

ढाड़ मारना—चिल्लाकर रोना।

ढाढ़स देना या बँधाना—वचनों से दुखी या निराश के चित्त को शांति करना, तसल्ली देना।

ढाल बाँधना—ढाल हाथ में लेना।

ढिंढोरा पीटना या बजाना—दे० डंका देना।

ढील देना ढीली छोड़ना—(१) बंधन ढीला करना। (२) अंकुश न रखना, स्वच्छंद करना। तुमने ज़रा ढील छोड़ी और यह सिर पर चढ़ा।

ढीला पड़ जाना—(१) कमजोर तथा सुस्त हो जाना। अब तो आप कुछ ढीले पड़ गये हैं क्या बहू यहीं है! (२) गुस्सा कर रह जाना। (३) रहम आ जाना, नरम हो जाना।

ढीली आँख—अधखुली, रस या मद भरी दृष्टि। ढाली अँखियन ही इतै गई कनखियन चाहि।

ढुँढिया चढ़ाना—मुश्के बाँधना। उसने झट उसकी पगड़ी उतार ढुँढिया चढ़ाय मूछ डाढी और सिर मूँड़ रथ के पीछे बाँध लिया।

ढूका देना—झाँक कर देखना। ढूका देकर न देखो नहीं तो तुम्हारे ही ऊपर शक हो जायगा।

ढेडा फूलना—गर्भवती होना। बहू को आये अभी दो साल भी नहीं हुए कि ढेडा फूल गया।

ढेर करना—मार कर गिरा देना।

ढेर रहना—(१) गिर कर मर जाना। (२) थक कर चूर चूर हो जाना, बहुत शिथिल हो जाना। तुमने इतना भगाया कि हम तो ढेर रह गये।

ढेर हो जाना—(१) गिर पड़ना। सारा मकान भूचाल में ढेर हो गया। (२) गिर कर मर जाना। (३) बहुत थक कर बैठ जाना।

ढोल पीटना या बजाना—(१) चारों ओर कह डालना, प्रकट करना। हमारे मामले का तुमने शहर भर में ढोल पीट दिया।

ढोला गाना रहना—मस्त होकर गाता फिरना। वह तो ढोला गाता फिरता है घर तो सिर्फ खाने के लिये आता है।

त

तंग आना, होना—घबरा जाना, थक जाना, दुखी होना। हम तो तुम्हारी आदतों से तंग आगये।

तंग करना—दुख देना सताना। मुझ गरीब को क्यों तंग करते हो।

तंग रहना—दुखी, दरिद्र होना।

तंग हाथ होना—धनहीन या पल्ले पैसा न होना। आजकल हाथ तंग है आपके रुपये अगली फसल पर देंगे।

तंग हाल होना—(१) संकट में फंसा होना। (२) निर्धन होना। (३) बीमारी होना। आजकल तो बड़ा तंग हाल है देख आओ बल्कि मदद करने जाओ।

तंग होना—ओछा, चुस्त होना। यह कोट कुछ तंग है।

तंत निकालना—सार ग्रहण करना। इन बातों से मैंने तत निकाला कि तुम रुपया न दोगे।

तंदूर झोंकना—भाड़ झोंकना, निकृष्ट काम करना।

तक़दीर का खेल होना—भाग्य में परिवर्तन होना कल वह करोड़-पति थे आज भीख माँगते हैं यह सब तकदीर का खेल है।

तक़दीर का मुँह फेर लेना—बुरे दिन आना, काम बिगड़ना। जिस कार्य में पहिले लाखों मिलते थे आज कौड़ी नहीं यह सब तक़दीर के मुँह फेर लेने के कारण।

तक़दीर ठोकना—(१) सुख के बाद दुख होना। बेचारे अब तक़दीर ठोकते हैं,—तब तो धनी थे पढ़ना व्यर्थ समझते थे। (२) भाग्य को कोसना, बुरा कहना।

तक़दीर लड़ना—भाग्य से विजय होना, काम बनना। तक़दीर लड़ गई १०००) की लाटरी आगई।

तक़दीर सीधी होना—बात बनना।

तक़दीर सोजाना—भाग्य खराब होना।

तकलीफ उठाना—कष्ट सहना आजकल बड़ी तकलीफ उठाकर पढ़ रहा है।

तकिया कलाम होना—किसी शब्द को बार बार कहने का

[३८७४]

अभ्यास होना। 'समझे' तो उनका तकिया कलाम है, हर बात में समझे जरूर कहते हैं।

तख्ता उलटना—(१) बने बनाये काय या इन्तजाम का बिगड़ जाना। सुबह जाकर देखा तो तख्ता ही उलटा हुआ था, रात को बैरी ने सिखा दिया सो वह बोलते भी न थे। (२) बना बनाया काम बिगड़ना। तुमने तो तख्ता ही उलट दिया अब वह मेरी भी नहीं मानता।

तख्ता हो जाना—ऐंठ या अकड़ जाना। फकीर को रात में सर्दी लगी सुबह देखा तो तख्ता हो गया है।

तख्फ़ीफ में लाना—कम करना। जब तक तुम अपने व्यर्थ के खर्चों को तख्फीफ में लाओगे तब तक कुछ न बचा सकोगे।

तज़रबा करना—अनुभव करना। पहले कुछ दिनों तज़रबा करके फिर देखा जायगा।

तजवीज करना—निर्णय करना। अब इस बात का फैसला यहाँ न होगा, अब तो अदालत ही इसकी तजवीज करेगी।

तटस्थ होना—किसी की ओर न होना। मै किसी के झगड़े में नहीं मैं तो तटस्थ हूँ।

तदारुक करना—दंड देना। आप उसे कितना भी तदारुक करिये किन्तु वह चोरी करना नहीं छोड़ेगा।

तन की तपन बुझाना—(१) भूख मिटाना। (२) मुहब्बत की मुराद मिलना।

तन को लगना—(१) (खाने की चीज़ का) शरीर को पुष्ट करना। जब चिंता छूटे तब खाना पीना भी तन को लगे। (२ जी पर असर होना, हृदय मे बैठना। चाहे कोई काम हो, जब तक तन को नहीं लगता तब तक पूरा नहीं होता।

तनमन मारना—इंद्रियों तथा इच्छाओं को काबू में करना। विधवा को तन मन मार कर जीवन बिताना है।

तन मन से करना—दिल लगाकर, परिश्रम से करना। वह मालिक का काम तन मन से करता है।

तन में फूले न समाना—बहुत खुश होना। लड़का जज बन गया यह सुनकर वह तो तन में फूली न समाती थी।

तपन का महिना—बहुत गरमी वाला महिना। जेठ तपन का महिना है।

तपाक बदलना—नाराज़ होना, तेवर बदलना। उसने तपाक

बदल कर कहा अब हद होगई मै नही सह सकता।

तपौनी का गुड़—(१) तपौनी की पूजा का गुड़ जो ठग लोग नए साथी को खिलाते थे। (२) नए आदमी को मंडली में मिलाते समय दिया जाने वाला पदार्थ या काम। ये इलायचियें तपौनी के गुड़ हैं इन्हें खाओ तो मंडली वाले समझे जाओ।

तफ़सील करना—ब्यौरेवार विवरण करना। आपने इसके लिये जो भी खर्च किया है, उसकी एक कागज़ पर तफ़सील कर दीजिये।

तबला खनकना, ठनकना—(१) नाच रंग होना। दिन रात तबला ठनकता था आज वही भीख मांगते हैं। (२) तबला बजाना। खनकाओ तबला मैं गाता हूँ।

तबला मिलाना—गुल्लियों को ऊपर नीचे हटा कर पूरी हर समान तनाव डालना जिससे स्वर सब ओर एक सा निकले।

तबियत बहाल होना—रोग मुक्त होना। प्रायः अमीर मनुष्यों की तो तबियत बहाल होती है।

तबीअत आना—(१) लेने की इच्छा होना। फाउन्टेन पेन पर तबीअत आ गई है तो खरीद लो। (२) प्रेम होना, आशिक होना। जिस पर तबीअत आई उसके आग लगो।

तबीअत उलझना—(१) प्रेम हो जाना, दिल फँसना। (२) जी घबराना।

तबीअत खराब होना—(१) जी मिचलाना। मेरी तबीअत कुछ खराब हो रही है इलायची दे दो। (२) बीमारी होना। आजकल तबीअत खराब है अगले सप्ताह आवेंगे।

तबीअत पर जोर या बोझ डालना—खास ध्यान देना तवज्जह करना। जरा तबीअत पर जोर डाला करो बढ़िया शायरी करने लगोगे।

तबीअत फड़क उठना, फड़क जाना—उमंग आना, खुश होना, उत्साह होना। भूषण के कवित्तों और बिहारी के दोहों से तबीअत फड़क उठती है।

तबीअत फिरना—प्रेम न रहना, जी हटना। अब तो उनसे तबीअत ही फिर गई।

तबीअत बिगड़ना—दे० तबीअत खराब होना।

तबीअत भरना—(१) संतोष या तसल्ली होना। (२) तृप्त होना। बस अब तबीअत भर गई अधिक की कोई जरूरत नही। (२) संतोष

[३६०१]

करना। हमने अच्छी तरह उनकी तबीअत भरदी तब उन्होंने रुपये लिये। (३) मन भरना, इच्छा न रहना। अब इन कामों से हमारी तबीअत भर गई।

तबीअत लड़ना—दे० तबीयत पर जोर डालना।

तबीअत लगना—(१) ध्यान लगा रहना। कई दिनों से उनकी चिट्ठी नहीं आई, तबीअत इधर ही लगी है पता नहीं क्या कारण है। (२) मन में मुहब्बत होना। तबीअत लगी है जिनसे उनके गले लगो।

तबीअत लगाना—(१) परिश्रम करना, ध्यान लगाना। तबीअत लगा कर काम किया करो। (२) मुहब्बत में फँसना। तबीअत लगाई जिससे हम हो गये उसी के।

तबीअत होना—चाहना होना, दिल में अनुराग होना। मेरी तो उस पर तबीअत है, दिला सको तो दिला दो।

तमा करना—लालच करना। तुम्हारे पास इतना रुपया है, फिर भी खर्च करने में तमा करते हो।

तमा देना—रिश्वत देना। जब तक उसे कुछ तमा न दोगे, तुम्हारा काम कभी न करेगा।

तमाचा जड़ना, लगाना—थप्पड़ मारना।

तमाचे से मुँह लाल करना—जोर से तमाचा मार कर गाल लाल कर देना।

तमाम होना—(१) मर जाना। वह तो तमाम हुए, रास्ते का काँटा गया। (२) पूरा होना। (३) ख़त्म होना। दे ले के किस्सा तमाम हुआ।

तमाशे की बात होना—अनोखी बात। क्या तमाशे की बात है वह मानता नहीं। तुम मनाते हो।

तय पाना—निश्चित होना, ठहरना।

तरतीब देना—क्रम से रखना, सजाना। कमरे में हर एक चीज़ को तरतीब दी गई थी।

तरद्दुद में पड़ना—चिंता में पड़ना।

तरफ़ दारी करना—पक्षपात करना। जब तुम्हें न्यायाधीश ही बना दिया है, तो फिर उसकी तरफ़दारी क्यो करते हो।

तरफ़ होना—किसी का पक्ष लेना। मैं तो चुनाव में कांग्रेस की तरफ़ से हूँ।

तरस खाना—रहम करना।

तरसा तरसा कर देना—थोड़ा थोड़ा करके, इच्छा से कम देना।

तरसा तरसा कर मारना—

[३६१६]

एक ही दम नहीं धीरे धीरे सता सता कर मारना।

तरह उड़ाना—ढंग की नकल करना।

तरह देना—(१) टालमटूल करना, चकमा देना। वह मुझे तरह देकर आप चलता बना। (२) जाने देना, ख्याल न करना। इन तेरह ते तरह दिये बनि आवे साईं। (३) पूर्ति के लिये समस्या देना।

तराजू हो जाना—(१) तीर का घुसकर आधा इधर उधर हो जाना। (२) बराबर बराबर का सैनिक बल होना। दो घटे हो गये न कोई हारता है न जीतता है तराजू हो गये हैं; कोई पलड़ा भी हलका भारी नहीं।

तरारा भरना—जल्दी जल्दी करना।

तरारा मारना—डींग हाँकना। क्यों तरारा मारते हो हम जानते हैं जितने वीर हो।

तरीक़ा बरतना—हम तो अब जब तक जीवित रहेंगे, इसी तरीके को बरतेंगे।

तर्का में छोड़ना—वसीयत करना। लड़के के पागल होने के कारण, राजा ने लड़की को ही तर्का में छोड़ा।

तर्कीब देना—रचना। जिसने इस सारे संसार को तर्कीब दी है, हमें उसकी उपासना करनी चाहिये।

तल करना—नीचे दबा लेना, छिपा लेना (जुआरी)।

तलब करना—(१) बुला भेजना, पेश कराना। गवाह तलब करो। (२) माँगना, मँगाना। जवाब तलब कर लिया।

तलमलाता फिरना— बेचैन फिरना। बेचारा रुपये के लिये तलमलाता फिरता है कोई नहीं वक्त का साथी।

तलवा खुजलाना—यात्रा का अभ्यास होना, यात्रा करना। तुम्हारे बड़े तलवे खुजलाते हैं हर हफ़्ते कभी यहाँ जाते हो कभी वहाँ।

तलवा न टिकना } **तलवा न भरना** } जम कर न बैठना, पैर न टिकना।

तलवे चाटना—बहुत ही खुशामद करना। रोज मेरे तलवे चाटता है, पहिले ऐंठा फिरता था।

तलवे छलनी होना—चलते चलते पैर घिस जाना बहुत दौड़ धूप करनी पड़ना।

तलवे तले आँखें मलना—दे० तलवों से आँखें मलना।

तलवे तले मेटना—रौंद डालना, कुचल कर नष्ट करना। सौत को तलवे तले मेट दूँगी तब पानी पीऊँगी।

तलवे तले हाथ धरना—खुशामद करना।

तलवे धो धो कर पीना—बड़ी श्रद्धा-भक्ति, प्रेम, सेवा भाव प्रकट करना।

तलवे सहलाना—बहुत सेवा, खुशामद करना।

तलवों में से तेल निकलना निकालना—(१) बहुत किफायत करना। (२) बहुत दूर जाने के लिये भी सवारी किराये न करना।

तलवों से आँखें मलना—(१) दे० तलवे चाटना। (२) बहुत प्रेम प्रकट करना। वह दिखाने को तो तलवों से आँखें मलता है जैसे मुझे ही सब कुछ मानता है। (३) बड़ी दीनता, आधीनता दिखाना।

तलवों से आग लगना—बहुत क्रोध चढना।

तलवों से मलना—रौंदना, कुचल देना।

तलवों से लगना—(१) बुरा लगना, चिढ़ होना। (२) क्रोध चढ़ना।

तलवों से लगना सिर में जाकर बुझना—सिर से पैर तक क्रोध होना, क्रोध में सारा शरीर काँपना।

तलवार का खेत—लड़ाई का मैदान। तलवार के खेत में जो काटेगा वह पावेगा।

तलवार का डोरा—बाढ़, धार।

तलवार का बल—(१) तलवार का टेढ़ापन। (२) चलाने की शक्ति। तलवार का बल ही विजय देता है।

तलवार का मुँह—धार।

तलवार का हाथ—(१) चलाने का ढंग। उसके तलवार के हाथ तो बड़े सधे हुए हैं। (२) तलवार का वार। तलवार का हाथ जमा और मुक्त हुए।

तलवार की आँच या आग—तलवार की चोट का सामना करना। तलवार की आग से बचा तो दागी न बचा तो गया।

तलवार के घाट उतारना—तलवार से मारना। सैकड़ों वीर तलवार के घाट उतार दिये।

तलवार खींचना—म्यान से तलवार निकालना।

तलवार जड़ना—तलवार मारना।

तलवार तोलना—तलवार सँभालना, वार पूरा बैठे इसका अंदाजा लगाना।

तलवार पर हाथ रखना—(१) तलवार की कसम खाना। मैं तलवार पर हाथ रख कर कहता हूँ, या तो मर जाऊँगा वरना

[३६५७]

छुड़ा कर लाऊँगा। (२) तलवार निकालने के लिये मूठ पकड़ना।

तलवार बरसना—खूब तलवार चलना।

तलवार बाँधना—तलवार साथ रखना या कमर मे बाँधना।

तलवार म्यान में करना—मारने की इच्छा न रहना। तलवार म्यान में करो महाराज! यह तो दूत है।

तलवार सूँतना, सौंतना—तलवार म्यान से निकालना।

तलवारों की छाँह में—(१) रण क्षेत्र में। (२) तलवार लिये हुए वीरों की रक्षा में। तलवारों की छाँह में रानी को वहाँ पहुँचाया।

तलाशी देना—घर-बार, कपड़ा-लत्ता आदि ढूँढने देना।

तलाशी लेना—गुम या छिपी वस्तु को पाने के लिये किसी के रखने ढकने के सब स्थान देखना। तुम तलाशी ले सकते हो मेरे पास नही है।

तले ऊपर—(१) उलट पलट गड्ड मड्ड, ऊपर की नीचे, नीचे की ऊपर। सब काग़ज़ लगा कर रखे थे तुमने तले ऊपर कर दिये। (२) एक के ऊपर दूसरा। किताबों को तले ऊपर रख दो।

तले ऊपर के—आगे पीछे के, एक के बाद झट दूसरा। तले ऊपर के लडके हैं इसी से लड़ा करते हैं। दोनों व्याह तले उपर के हैं एक से सीधे दूसरे मे जाना है।

तले ऊपर जी होना—(१) दे० जी मचलना। (२) जी ऊबना, घबराना।

तले ऊपर होना—(१) उलट पलट हो जाना। (२) संभोग में प्रवृत्त होना।

तले की दुनिया ऊपर होना—(१) बहुत बदल जाना, उलट फेर हो जाना। (२) जो चाहे सो हो जाना। चाहे तले की दुनिया ऊपर हो जाय मै अब वहाँ न जाऊँगा।

तले की साँस तले और ऊपर की ऊपर रह जाना—(१) भौचक्का रह जाना। (२) डर से स्तब्ध रह जाना। ज्यों ही उन्होंने घुड़क कर आँख दिखाई तो तले ····।

तले बच्चा होना—पशु के साथ बच्चा होना। गाय के तले बछड़ा है।

तवा सा मुँह होना—काला मुँह होना।

तवा सिर से बाँधना—प्रहार सहने के लिये सुरक्षित होना। हमने तो पहिले ही तवा सिर से बाँध लिया है ताकि वार सह सके।

तवे का हँसना—तवे के नीचे लगे कालिख का बहुत जलते जलते लाल हो जाना जो घर में विवाद

होने का कुशकुन समझा जाता है।

तवे की बूँद होना—(१) कुछ असर न होना। तुम्हारा क्रोध तो तवे की बूँद है मै क्या परवा करूँ ऐसों को तो यों ही जला डालूँ। (२) क्षण स्थायी। (३) जिससे कुछ तृप्ति न हो। इतना दूध तो तवे की बूद है इससे क्या पेट की आग ठडी होगी।

तशरीफ़ रखना—(१) बैठना, विराजना। आइये, तशरीफ रखिये। (२) ठहरना, गए होना, रहना, वे आज कल दिल्ली तशरीफ रखते हैं।

तशरीफ़ लाना—आना, पधारना।

तशरीफ़ ले जाना—चले जाना।

तस्फ़िया करना—फैसला करना। अदालत मे क्यों जाते हो यहीं कुछ दे लेकर तसफिया करलो।

तसबीह फेरना—माला जपना, फेरना।

तसमा खींचना—गला घोंटना, एक खास तरीके से गले में फदा डाल कर मारना।

तसमा लगा न रखना—गरदन साफ़ उड़ा देना।

तसलीम करना—स्वीकार करना। उसने अपने आप यह तसलीम कर लिया कि मैं दोषी हूँ।

तसल्ली दिलाना—धैर्य, आश्वासन देना।

तसवीर बन जाना—चित्र लिखित सा, एक टक रह जाना। वह आये तो बनाने थे खुद तसवीर बन गये।

तह करना—कोई वस्तु एक सी मोड़ना, परत करना।

तह कर के रखना—रहने देना, जरूरत न होना। तह कर रखो क्या जरूरत है ऐसा जाड़ा नहीं है।

तह का सच्चा होना—(१) वह कबूतर जो घर पर आजाय, भूले नहीं। (२) दिल का सच्चा आदमी। बेचारे को झूठ बोलना पड़ा बाकी है तह का सच्चा।

तह की बात—छिपी हुई, असली बात। तह की बात तो यह है कि उसके पास रुपया नहीं है।

तहक़ीकात आना—पता लगाने या जाँच करने आना।

तह को पहुँचना या तह तक पहुँचना—असली बात, रहस्य या गुप्त अभिप्राय जान जाना। वह इसकी तह को पहुँच गया है इसलिये निर्द्वन्द बैठा है।

तह जमाना या बैठाना—(१) भोजन पर भोजन किए जाना। ऐसी क्या तह जमा रहे हो कल भी तो खाना मिलेगा ही। (२) परत के ऊपर परत दबाना।

तह तोड़ना—(१) झगड़ा निबटाना। (२) कुएँ का सब पानी निकाल लेना जिससे जमीन दिखलाई दे।

तह देना (किसी चीज़ को)—(१) हलकी परत चढ़ाना। बिस्कुट पर क्रीम की तह दी है। (२) हलका रंग देना। (३) अतर बनाने में जमीन या आधार देना। चंदन की तह दे दो तो वह खुशबू हो कि मज़ा आजाय।

तह मिलाना—जोड़ा लगाना, नर और मादा एक साथ रखना।

तह लगाना—चौपरत करके समेटना।

तांतड़ी या तांत सा होना—बहुत दुबला पतला। लड़का है तो तांतड़ी सा पर जब चिपट जाता है तो आदमी के होश बिगाड़ देता है।

तांता बँधना—एक के बाद दूसरा आना जाना। आज कल हमारे घर मेहमानों का तांता बँधा है।

तांता बांधना—पंक्ति में खड़ा होना।

तांता लगना—तार न टूटना, एक पर एक चला चलना। दे० तांता बँधना।

ताक झाक करना—मौका देखना।

ताक़त करना—शक्ति का प्रयोग करना। तनिक एक बार ताक़त तो करो, शायद उठा ही लो।

ताक पर धरना या रखना—(१) उपयोग न करना। तुम अपनी किताब ताक पर रखो, मुझे इसकी जरूरत नहीं। (२) पड़ा रहने देना। किताब ताक पर धरी और खेलने निकल गया।

ताक पर रहना या होना—पड़ा रहना, व्यर्थ जाना। यह दस्तावेज़ ताक पर रह जायगी और उसकी डिगरी हो जायगी।

ताक भरना—सैयद, पीर आदि पर मनौती की पूजा चढ़ाना। (मुसल०)।

ताक में रहना—मौका देखता रहना। मै इस ताक में हूँ कि इसे नीचा दिखाऊँ।

ताक रखना—घात में रहना, मौका देखते रहना। वह बदमाशों की ताक रखता है, जो मिला वही मारा।

ताक लगाना—घात लगाना।

तागा डालना—तागना, दूर दूर पर सिलाई करना। रजाई में तागा डाल दो।

ताज़ा करना—(हुक्का·१) हुक्के का पानी बदलना। (२) फिर छेड़ना। दबा दबाया झगड़ा क्यों ताजा करते हो। (३) याद दिलाना। फिर रंज ताज़ा क्यों करते हो मैं रो पड़ूँगा।

ताजा होना—(१) नए सिरे से,

फिरसे से शुरू होना। उनके आने से मामला फिर ताज़ा हो गया।
(२) फिर चित्त में आना, याद आजाना।

ताजिया ठंडा होना—(१) ताजिया दफन होना। (२) किसी बड़े आदमी का मर जाना। (३) हिम्मत और उम्मीदें ख़तम होना। कहिये कैसे ताजिये ठंडे से हो गये अभी तो एक ही वार हुआ है।

ताड़ जाना—भाप लेना, अंदाज से समझ जाना। मैं पहिले ही ताड़ गया कि तुम इस लिये आये हो।

तातील मनाना—दे० छुट्टी मनाना।

तान उड़ाना—(१) मज़े से बिताना। (२) गीत गाना, अलापना।

तान कर तमाचा देना—जोर से थप्पड़ मारना।

तान कर सोना—आराम से सोना आनन्द से रहना। वह तो तान कर सोता है किसी की परवा नहीं करता।

तान की जान होना—खुलासा, सारांश। तान की जान यह है कि मैंने उसे झेंपा दिया।

तान तोड़ना—(१) लय को खींच कर झटके से ठहरना। (२) आक्षेप या बौछार छोड़ना। जिस पर तान तोड़ते हो वह मेरा घनिष्ठ मित्र है, संभल कर बातें करो।

तान भरना, मारना, लेना—गाने में लय के साथ सुरों को खींचना।

ताना बाना करना—हेरा फेरी करना, व्यर्थ इधर से उधर जाना। क्या ताना बाना कर रहे हो तुम्हारा काम न बनेगा।

ताना मारना—चुभती हुई बात कहना।

ताने देना—बुरा भला कहना। यदि रख भी लेंगे तो उठते बैठते ताने दिया करेंगे।

ताबड़ तोड़—लगातार। वह बड़ा ऊधम मचाता था, आज मैंने ताबड़ तोड़ दो तीन थप्पड़ जमा दिये, बस ठीक हो गया।

तार टूटना—लगातार, चलता हुआ काम बंद होना। जहाँ माल का तार टूटा और दुकान डूबी।

तार तार करना—धज्जियाँ धज्जियाँ या सूत सूत अलग करना। तार तार कीन्हीं फारि सारी जरतारी की।

तार देखना—पक्की चाश्नी का चुटकी पर तार बना कर देखना।

तार देना—यदि तबियत ज्यादा खराब है, तो इसके पिता को तार दे दो।

तार बँधना—सिलसिला, क्रम जारी

[४०२६]

होना। सवेरे से जो रोने का तार बँधा है वह अब तक नहीं टूटा।

तार बाँधना—बराबर करते जाना। गालियों का तार बाँध दिया है चुप ही नहीं होती।

तार बैठना, जमना—काम बनाने मे सुभीता होना। अब तो कुछ तार जमा है कुछ समय से काम खूब चल रहा है।

तार लगना—क्रम बँधना, जारी होना। मेहमानों का तार लग गया है एक गया दूसरा आया।

तार लगाना—दे॰ तार बँधना।

तारा डूबना—(१) नक्षत्र अस्त होना। (२) शुक्रास्त होना (इसमे मगल कार्य नहीं किये जाते)

तारा हो जाना—(१) बहुत ऊँचा हो जाना। पतग तो तारा हो गई है। (२) बहुत दूर हो जाना। दिल्ली के विद्युत् दीप कई मील से तो तारे हो जाते हैं।

तारीख टलना—और आगे का दिन नियत होना। मुकदमे की वह तारीख टल गई।

तारीख डालना—(१) दिन नियत करना। (२) तिथि, मास आदि लिखना।

तारीख पड़ना— दिन नियत होना। बीस दिन आगे की तारीख पड़ी है।

तारीफ करते मुख सूखना
तारीफ के पुल बाँधना } खूब तारीफ करना।

तारे खिलना—तारे निकलना, टिमटिमाना। बादल नहीं हैं, तारे खिल रहे हैं।

तारे गिनना—बेचैनी से रात काटना। तुम्हारी याद में रात सारी तारे गिनते काटी।

तारे छिटकना—स्वच्छाकाश में तारे टिमटिमाना।

तारे तोड़ लाना—(१) बड़ी कठिनाई का काम करना। (२) चालाकी का काम करना। तुम तो सचमुच तारे तोड़ लाये भला और किस की ताक़त थी कि वहाँ से यह ले आता।

तारे दिखाना—(१) (मुसलमानियों मे छठी के दिन ज़च्चा को बाहर लाकर तारे दिखाना। (२) आँखों मे अँधेरा छा जाना। ऐसा थप्पड़ मारा कि तारे दिखा दिये।

तारे दिखाई दे जाना—कमजोरी की वजह से आँखों के आगे तिरमिरे छा जाना।

तारे सी आँखें हो जाना—स्वच्छ चमकती आँखें होना। रोज काजल डालता है तारे सी आँखे हो गई हैं।

तारों की छाँह—बहुत सवेरे। तारों की छाँह यहाँ से चल देंगे।

[४०४८]

ताल उठाना—गाना शुरू करना। सब लोगों के अधिक आग्रह करने पर उसने ताल उठाई।

ताल ठोकना—लड़ने को ललकारना।

ताल बेताल—(१) जिसका ताल ठिकाने से न हो। (२) मौक़े बे मौक़े।

ताल मेल खाना या बैठना—प्रकृति आदि का मेल होना। उन दोनों का ताल मेल खाता है, दोनों एक से हैं।

ताल से बेताल होना—(गाने-बजाने में) नियम बाहर हो जाना या उखड़ जाना।

ताला जकड़ना—ताला लगा कर बन्द करना।

ताला तोड़ना—वस्तु चुराना (ताला तोड़कर)। उसने ताला तोड़ा वह पकड़ा गया।

ताला भिड़ना—(१) ताला बन्द होना। (२) तहस नहस होना। भिड़जावे राम तेरा ताला, मो पै पीसने का दुख डाला।

ताला भेड़ना—ताला लगाना।

ताली पीटना, बजाना—हँसी उड़ाना। क्यों बेचारे की ताली पीटते हो तुम भी तो कभी फिसलते हो।

ताली बज जाना—(१) हँसी उड़ाई जाना। (२) निरादर होना। ज्यों ही व्याख्यान देने खड़े हुये उनकी ताला पिट गई।

ताली न बजना (एक हाथ से)—बैर या प्रीति एक ओर से ही न होना। दोनों में ही खोट होगा एक हाथ से ताली नहीं बजती।

तालू से जीभ न लगना—बोलते, चुप न रहना। एक पल को जीभ तालू से नहीं लगती चबर चबर करती ही रहती है।

ताव आना—(१) उचित गरम होना। अभी ताव नहीं आया पूरियाँ मत डालो। (२) गुस्सा आना।

ताव खाना—(१) आँच में गरम होना। (२) गुस्सा करना।

ताव खा जाना—(१) आँच के कारण अधिक गरम होना या जल जाना। चाशनी ताव खागई अतः कड़वी सी है। (२) खौलाई, तपाई या पिघलाई वस्तु का बहुत ठंडा होना। (३) कई बार गरम करना पड़ना। कई ताव खाकर यह पकी है। (४) क्रोध में आजाना। इतनी बात सुनते ही ताव खा गया और लड़ने को तैयार हो गया।

ताव चढ़ना—(१) ऐसी इच्छा होना कि काम चटपट हो जाय। (२) कामोद्दीपन होना।

[४०६५]

ताव दिखाना—अभिमान भरा क्रोध दिखाना।

ताव देना—(१) आँच पर या आग में गरम करना। (मूँछों पर २) अभिमान से मूँछें ऐंठना। मूँछन पै ताव दै दै कूदि परे कोट में।

ताव पर—इच्छा हो उसी समय। तुम्हारे ताव पर तो रुपया नहीं मिल सकता।

ताव में आना—घमंड भरे क्रोध में आना। ताव में आकर कहीं चीज़ें मत फेंक देना।

तिनक जाना—नाराज होना, रूठ जाना, झुँझला उठना। तुम ज़रा ज़रा सी बातों पर तिनक जाती हो, सोचो तो सही मेरा क्या कसूर है!

तिनका चुनना—नशे से मस्त हो जाना। आज पूरी एक बोतल चढ़ा गया है इसी से तिनके चुन रहा है।

तिनका तोड़ना—(१) सम्बन्ध तोड़ना। हमने तिनका तोड़ जवाब दिया इससे उसने भी तिनका तोड़ दिया। (२) बच्चे को नज़र न लगे इस लिये तिनका तोड़ कर बलाय लेना।

तिनका दाँतों में पकड़ना या लेना—दीनता पूर्वक विनय करना, गिड़गिड़ाना। तुम्हें दाँतों तले तिनका लेना पड़ेगा तब क्षमा करूँगा, ऐसे ही नहीं।

तिनका न रहना—(१) कुछ भी न रहना। एक तिनका नहीं रहा वह खाय क्या। (२) साफ़ हो जाना, झाड़ू फिर जाना। तिनका नहीं रहा है, कैसी सफाई की।

तिनका भी न तोड़ सकना—बहुत कमज़ोर होना। बेचारी अब तो तिनका भी नहीं तोड़ सकती, खाट से लग गई है।

तिनका सिर से उतरना, उतारना—एहसान न रखना। वक्त पर ज़रा सी मदद की थी उनका भी तिनका सिर से उतारना है।

तिनके का सहारा—(१) बहुत थोड़ा सहारा। (२) थोड़ा ढाढ़स बँधाने वाली बात। तुम्हारा तो तिनके का भी सहारा नहीं, कभी यह भी नहीं कि सौदा भी ला दिया करो।

तिनके की ओट पहाड़—छोटीसी बात मे बहुत बड़ी बात का छिपा होना। कौन जानता है इस ज़रा सी फूट में महान भारत का नाश तिनके की ओट पहाड़ छिपा है।

तिनके को पहाड़ करना—थोड़ी सी बात को बहुत बढ़ा देना। मैंने यों तो नहीं कहा था, जो तुमने तिनके का पहाड़ कर दिया।

तिनके को पहाड़ कर दिखाना—बहुत बढ़ाकर कहना या बनाना। मुमताज़ की ज़रा सी प्रार्थना पर

शाहजहाँ ने तीन करोड़ का ताज़ खड़ा कर दिया, तिनके का पहाड़ कर दिखाया।

तिनके चुनना—पागल होना, व्यर्थ काम करना। वह लड़का तो अभी से तिनके चुनने लगा, अब क्या याद कर सकेगा।

तिनके चुनवाना—(१) पागल बनाना। (२) मोहित करना। तुमने घर के सामने तिनके चुनवाये पर कृपा न की।

तिरछा चितवन, नजर—बिना सिर फेरे बगल की ओर दृष्टि। लोगों की दृष्टि बचाकर प्रेमी लोग तिरछी नज़र से ताकते हैं।

तिरछी बात, तिरछो वचन—कड़वी या अप्रिय बात। हरि उदास सुन वचन तिरीछे।

तिरास लगना—प्यास लगना। ऐसा क्या खाकर आये हो जो मिनट मिनट पर तिरास लगती है।

तिल का ताड़ करना—बात का बतंगड़, तिनके को पहाड़ करना। इससे उनकी ज़रा भी बुराई की तो यह उनसे तिल का ताड़ बनाकर कहेगा।

तिल की ओझल, ओट पहाड़ होना—दे० तिनके की ओट पहाड़।

तिल चाटना—मुसलमानों में विदा के समय दूल्हा बधू के हाथ पर रखे हुए काले तिल चाटता है जिससे दूल्हा सदा वश में रहे यह ज्ञात हो। जब क्यों तिल चाटे थे अब निकाह के बाद ऐंठते हो।

तिल चावले बाल होना—दे० खिचड़ी बाल।

तिल तिल—(१) थोड़ा थोड़ा। तिल तिल दोगे तो भी बहुत होगा। (२) ज़रा ज़रा सा भी। मै तिल तिल रखवा लूँगा।

तिल तिल का हिसाब—कौड़ी कौड़ी का हिसाब आज मै यहीं से बिल्कुल जा रहा हूँ। आप अपना तिल तिल का हिसाब ले लीजिये।

तिल धरने को जगह न होना—तनिक भी स्थान न होना। इतनी भीड़ है कि तिल धरने को भी जगह नहीं।

तिल भर—(१) क्षण भर, थोड़ी देर। (२) ज़रा सा। तिल भर भूमि न सकेउ छुड़ाई।

तिलस्म तोड़ना—कठिन रहस्य या स्थान का पता लगाना। दिल्ली के व्यभिचार के अड्डों का पता लगाना तिलस्म तोड़ना है।

तिलांजलि—बिल्कुल त्याग देना। झूठ को तो तुमने तिलांजलि दे दी है न!

तिस पर—(१) इतना होने पर भी। इतना मना किया तिस पर भी वह चला ही गया। (२) ऐसी अवस्था

में भी। हमारी चीज़ भी ले गये तिस पर हमीं को बात सुनाते हो। (३) इसके बाद। तिस पर वह कहने लगा मै ला दूँगा।

तिहाई मारी जाना—फसल नष्ट होना।

तीखे होना—गुस्सा दिखाना। मुझ पर क्यों तीखे होते हो जिसने गाली दी है उसे मारो।

तीन तेरह करना, होना—अलग अलग, तितर-बितर, बारह बाट करना, होना। भगवान! तुम्हें। तीन तेरह कर दे मिलकर एक दिन भी कहीं न रह सको।

तीन तेरह मे न होना—(१) किसी के झगड़े में न होना, तटस्थ होना। मैं तुम्हारे तीन तेरह में नहीं हूँ मेरी ओर से कुछ भी न करो। (१) किसी गिनती में न होना, जिसे कोई न पूछे।

तीन पाँच करना—(१) हुज्जत, घुमाव फिराव करना। देना है तो दे दो तीन पाँच क्यों करते हो? (२) पाजीपन करना। तीन पाँच करोगे तो पीटोगे।

तीनो लोक नजर आना—(व्यग्य)—(१) आँखों के आगे अँधेरा छा जाना। सिर पर ऐसी लाठी मारी कि तीनों लोक नज़र आ गये। (२) बहुत आनन्द मिलना। थोड़ी सी तो (भग) पियो देखो तीनों लोक यहीं नज़र आ जायेंगे।

तीया पाँचा करना—तै करना, निबटाना। इस झगड़े का भी शीघ्र तीया पाँचा कर दो तो ठीक है।

तीर चलाना—युक्ति भिड़ाना। तीर तो गहरा चलाया था पर वार खाली गया वे माने ही नहीं।

तीरथ करना—तीर्थ या यात्रा करना। ये लोग अभी बद्री नरायण तथा जगन्नाथ जी से तीरथ करके आ रहे हैं।

तीर सा लगना—चुभना, बुरी लगना। उनकी बात तो मेरे कलेजे में तीर सी लगी।

तीस मारखाँ बनना, होना—वीरता की शेख़ी बघारना, होना। आप बड़े तीस मारखा हैं जो डाकू से छीन लावेंगे (व्यग्य)।

तुक जोड़ना, मिलाना—(१) भद्दी कविता बनाना। (२) छंद के अतिम अक्षरों का मेल बनाना। मैं क्या कविता करता हूँ तुक जोड़ लेता हूँ और कुछ नहीं।

तुक्का सा—ऊपर उठा हुआ। जब देखो रास्ते में तुक्कासी बैठी रहती है।

तुनतुना बँधना—रौब दौब होना। अभी तो तुनतुना बँधा है कोई मेरी बात नहीं टाल सकता जो काम निकालना है निकाल लो।

[४११०]

तुमताम करना—गाली गलौज करना। सँभल कर बात करो तुम ताम करोगे मुँह तोड़ दूँगा।

तुरई का फूलसा—जल्दी खर्च हो जाने वाला, चटपट चुक जाना। सौ रुपये तो तुरई के फूल से देखते देखते उठ गए।

तुर्रा करना—(१) कोड़ा मारना। (२) कोड़ा मार कर घोड़ा बढ़ाना।

तुर्रा यह कि—इस पर इतना और। मोटर भी दें और तुर्रा यह कि तेल भी हमारा हो।

तुर्रा होना (किसी बात का)—(१) एक में दूसरी बात और बढ़ाई जाना। (२) असली बात के साथ एक और बात होना।

तुर्रा चढ़ाना या जमाना—भाँग पीना।

तुल जाना (काम या बात पर)—करने पर उतारू होना, उद्यत होना। वह इस पर तुल गये हैं कि तुम क्षमा माँगों अब माँगनी ही पड़ेगी।

तुले हुए—तैयार। अब वे उसे भी गायब करने पर तुले हुए हैं।

तू तड़ाक, तू तुकार, तू तू मैं मैं करना—कहा सुनी, अशिष्ट शब्दों में वाद विवाद होना। न जाने किस बात पर वे तू तड़ाक तक कर बैठे, अच्छा हुआ बीच करा दिया।

तू तड़ाक से बोलना—अशिष्टता से या बहुत बराबरी प्रेम से बात करना। तू तड़ाक से बोलते हो, पढ़े लिखे होने का यही लाभ है?

तूती की आवाज़ कौन सुनता है (नक्कार खाने में)—(१) शोर गुल में बात सुनाई नहीं पड़ती। (२) बड़े बड़े लोगों के सामने छोटों की कोई नहीं सुनता। वहाँ बड़े बड़े दिमाग़दार बैठे थे वहाँ नक्कार खाने मे हमारी तूती की आवाज कौन सुनता।

तूती बोलना—प्रभाव होना, चलती होना। शहर में तुम्हारी तूती बोल रही है मजाल क्या जो कोई बात टाल जाय।

तू तू मै मैं होना—बातों मे लड़ाई हो जाना। आज उनसे तू तू मै मैं हो गई।

तूफ़ान आना—बड़े ज़ोर की आँधी आना। कल दोपहर ऐसे ज़ोर का तूफान आया कि घंटों घर से निकलना मुश्किल हो गया।

तूफ़ान जोड़ना, बाँधना, बनाना—झूठा कलंक या दोष लगाना। मैं तो उन्हें बचाने गया था, लोगों ने जाने क्या तूफ़ान जोड़ दिया कि औरत को यह भी उड़ाना चाहता था।

तूफ़ान मचाना—हुल्लड़ मचाना।

[४१२६]

यहाँ बैठकर तुम न पढ़ सकोगे, ये लोग यहाँ बड़ा तूफ़ान मचाते हैं।

तूफ़ान बरपा करना—तूल तमील करना, जल्दी मचाना, झंझट खड़ा करना। तुमने भी तूफ़ान बरपा कर दिया, ज़रा ठहरो हाथ मत फुलाओ।

तूफ़ान लगाना—कलंक लगाना। अगर उसके साथ जाओगे तो कुछ न कुछ तुमसे तूफ़ान लगा देगा।

तूल देना—लम्बा करना, बढाना। जब द्रौपदी ने भगवान से प्रार्थना की, तो भगवान ने उसकी साड़ी को तूल दे दिया।

तृण गहना या पकड़ना—दे० तिनका दाँतो में पकड़ना।

तृण गहाना, पकड़ाना—नम्र, वशीभूत करना। कहौ तो वाकों तृण गहात कै जीवत पायन पारौं।

तृण टूटना—बहुत सुंदर होना। आजु की बानिक पै तृण टूटत कहि न जाय कछु स्याम तोहि रत।

तृण तोड़ना—(१) संबन्ध या नाता मिटाना। भुजा छुड़ाई तोरि तृण ज्यों हित करि प्रभु निठुर हियो। (२) सुन्दर वस्तु को नज़र न लगने के उपाय करना। स्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी, निरखत छवि जननी तृण तोरी।

तेरा मेरा करना—(१) चीज़ के लिये झगड़ना। चार चार पैसे की चीज़ पर तेरा मेरा करते हो बस यही मित्रता है? (२) मोह ममता में फसना।

तेल उठना या चढ़ना—तेल की रस्म पूरी होना। तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार।

तेल चढ़ाना—तेल की रस्म पूरी करना। करि कुल रीति कलश थापि तेल चढ़ावहिं।

तेल निकालना—बहुत शारीरिक परिश्रम कराना। ढाई आने पैसे देता है और इतना काम कि धूप में खड़े खड़े तेल निकाल लेता है।

तेली का बैल होना—(१) हर वक्त काम में लगा रहना। बेचारा इधर से उधर तेली के बैल की तरह हर वक्त घूमता रहता है, फिर भी गालिये मिलती हैं। (२) काला चश्मा लगाना।

तेवर चढ़ना, तेवर पर बल चढ़ना—ऐसी दृष्टि जिससे क्रोध प्रकट हो। क्यों ऐसा क्या बिगड़ गया जो तेवर चढ़ रहे हैं?

तेवर बदलना या बिगड़ना—(१) मौत के चिह्न जाहिर होना। (२) ख़फ़ा, नाराज हो जाना। (३) बे मुरौवत हो जाना। अब तो तेवर बदल गये पता नहीं कब क्या हो जाय।

तेवर बुरे नज़र आना—प्रेम में

फ़र्क पड़ना। पहिले तो मुझे बहुत (पवित्रता से) प्यार करते थे परन्तु अब तो कुछ तेवर बुरे नज़र आते हैं।

तेवर मैले होना—निगाह से खेद, क्रोध या उदासीनता दिखाना। क्यों तेवर मैले हो रहे हैं ऐसी क्या बात ?

तैश मे आना—क्रोध करना। इन्द्र ने तैश में आकर ब्रज पर बड़ी घोर वर्षा की थी।

तोड़ना (कमर, कलम, किला, गढ़, तिनका, पैर, मुँह, रोटी, सिर, हिम्मत)- क्रमश इन्हीं शब्दों के मुहावरों मे देखिये।

तोड़े उलटना (किसी के आगे,- सैकड़ों हजारों रुपये देना। माजी ने फौरन तोड़े उलट दिये और कहा जितना चाहे धन लेजा परवा नही।

तोता पालना-दोष, दुर्व्यसन, रोग को जान बूझ कर बढने देना। फोड़ा क्या तोता पाल लिया है खुद भी तो मिटाने की कोशश नही करते।

तोते उड़जाना (मुँह के—बोला न जाना। उनके आते ही तुम्हारे मुँह के तोते उड जाते हैं, आखिर उनसे क्यों दबते हो ?

तोते उड़जाना (हाथो के)—घबरा जाना, सिटपिटा जाना। डाकुओं के नाम सुनते ही बंदूकची के हाथों के तोते उड़ गये।

तोते की तरह आँखें फेरना, बदलना—बहुत बे मुरव्वत होना। ये वक्त पर किसी भारी मित्र के भी काम नहीं आता फौरन तोते की तरह आँखे बदल जाता है।

तोते की तरह पढना—बिना समझे बूझे रटना। तोता सा पढा दिया वैसे लेक्चर देता है पर आता जाता कुछ नहीं।

तोप के मुँह पर रख कर उड़ाना—प्राण दण्ड देना। ऐसे आये कहीं के लाट साहब जो न मानेगे तो तोप के मुँह पर रख कर उड़ा देंगे।

तोबा करना—न करने की प्रतिज्ञा करना। रात को मद्य पी सुबह को तोबा करली।

तोबा तिल्ला करना, मचाना—रोते चिल्लाते, दीनता दिखाते तोबा करना।

तोबा तोड़ना- 'न' की प्रतिज्ञा करके भी वही काम फिर करना।

तोबा बुलवाना—चीं बुलवाना, इतना तंग करना कि 'न' कहना पड़े।

तोबा से (करके) कहना- अभिमान छोड़ कर कहना।

तोहमत का घर या टट्टी—व्यर्थ कलंक लगने की जगह।

[४१५७]

तोंद निकल आना—पेट बड़ा हो जाना।

तौर बे तौर होना—(१) रंग ढंग या लक्षण खराब होना। इस औरत के तो तौर बे तौर हैं इससे बचते रहना (२) अवस्था, दशा खराब होना। भगवान ही मदद करे, उनके तो तौर बेतौर हो गए हैं।

तौल तौल के पड़ना लगना—खूब मार (जूते) पड़ना। ऐसे तौल तौल के पड़े जन्म भर याद रखेगा।

त्योरी चढ़ना या बदलना—दे० तेवर चढ़ना।

त्योरी चढ़ाना, बदलना—दे० तेवर चढ़ाना।

त्योरी में बल डालना—त्योरी चढ़ाना। त्योरियों में बल डाले फिरता है मानों मुझे खा ही डालेगा।

त्योरी में बल पड़ना—क्रोध झलकना। मैंने ज्योंही गुरुजी की बेइज्जती की बात कही उसकी त्योरियों में बल पड़ गये मैं समझ गया इसे उनसे प्रेम है।

त्योहार मनाना—आनन्द उत्सव मनाना। दुश्मन को जेल हुई तुम तो त्योहार क्यों न मनाओगे!

त्राण करना—रक्षा करना। हे भगवान किसी प्रकार इस आपत्ति से हमारा त्राण कीजिये।

त्राहि त्राहि करना, मचाना—दया, रक्षा या शरण के लिये प्रार्थना करना। त्राहि त्राहि मची है वहाँ हो रहा अंधेर है।

त्रिशंकु रहना, होना—बीच में होना, न इधर के रहना न उधर के। हम तो त्रिशंकु की तरह बीच में लटक रहे हैं, क्या करें?

त्रेता के बीजों में मिलना—सत्यानाश होना। भगवान तुम्हें त्रेता के बीजों में मिलावे।

थ

थक कर चूर होना—बहुत शिथिल हो जाना। हम तो चलते चलते थक कर चूर हो गये, हम से अब कुछ नहीं होगा।

थपोड़ी पीटना या बजाना—हँसी दिल्लगी ज़ोर ज़ोर से उड़ाना। क्यों थपोड़ी पीट रहे हो वह बिगड़ उठेगा।

थप्पड़ कसना, देना, लगाना—तमाचा मारना। दो थप्पड़ कस दिये, मुँह सूज गया।

थरथर करना—काँपना। वह जाड़े के मारे और मैं डर के मारे दोनों थर थर कर रहे थे।

थरथरी छूटना, बँधना—डर के

कारण काँपना। गिगिया गया थर थरी बँध गई।

थल बैठना या थल से बैठना—(१) आराम से बैठना। (२) स्थिर तथा शात भाव से बैठना।

थलथल करना—मोटाई के कारण अग का झूल झूल कर हिलना। चलने से उसका पेट थलथल करता है।

थल बेड़ा लगना—ठिकाना या आश्रय होना।

थल बेड़ा लगाना—(१) आश्रय ढूँढ़ना (२) सहारा देना। मैंने उनका मदिर मे थल बेड़ा लगा दिया है।

थांग लगाना—पता लगाना। मैने उन्हे थाग लगाने के लिये भेजा है, देखें वो क्या खबर लाते हैं।

थान अच्छे का घोड़ा—प्रसिद्ध स्थान या अच्छी जाति का घोड़ा यह अच्छे थान का घोड़ा है ऐब-दार नहीं।

थान का टर्रा होना—(१) वह घोड़ा जो बँधे बँधे नटखटी करे। (२) गली या घर पर ही शेर होने वाला। वह बस थान का ही टर्रा है बाजार मे उसे दस गाली भी दो तो सीधा चला जाता है।

थान का सच्चा—सीधा पशु या घोड़ा, अपने खूँटे पर या घर पर आजाने वाला।

थान में आना—(घोड़े का) धूल में लोटना।

थाना चढ़ आना—सिपाहियों का किसी मकान पर छापा मारना।

थाना बिठाना—पहरा चौकी बिठाना।

थाने चढ़ना—थाने मे रिपोर्ट करना।

थाप देना (किसी की)—कसम खिलाना। तुझे देवी थाप तू सच्ची सच्ची कह।

थाप मारना—धावा करना। सर-कारी फौज़ ने रात के बारह बजे दुशमन की फौज़ पर थाप मारा और उसे क़ैद कर लिया।

थाली का बैंगन—बे दों का लोटा, लुढ़कू। उसका कुछ विश्वास नही थाली का बैंगन है क्या ख़बर उधर ही लुढ़क जाय।

थाली (का) जोड़—थाली कटोरा।

थाली फिरना—बहुत भीड़। वहाँ थाली फिरती है (उसे भी नीचे पहुँचने को जगह नहीं) हम कैसे जायँ।

थाली बजना—थाली बजा कर साँप का विष आदि के दूर करने के मंत्र पढ़े जाना।

थाली बजाना—साँप के विष उतारने के मंत्र, या बच्चे होने पर

[४१६३]

उसके डर दूर करने के लिये, थाली बजाने की रीति करना ।

थाह डूबते को मिलना—आफत में सहारा मिलना ।

थाह मिलना—(१) गहराई का पता चलना । (२) दिल के विचार या धन सम्पत्ति की तादाद का पता चलना (३) जल में जमीन तक पहुँचना ।

थाह लगना—दे० थाह मिलना ।

थाह लेना—(१) गहराई का पता लगाना । (२) कोई वस्तु कितनी या कहाँ तक है पता चलाना ।

थिगली लगाना—जहाँ कठिन हो वहाँ भी पहुँच कर काम करना, युक्ति लगाना ।

थिगली लगाना बादल में—कठिन या असभव काम कर डालना ।

थुड़ी थुड़ी करना—धिक्कारना, निन्दा करना ।

थूक उछालना, बिलोना—व्यर्थ बकना । क्यों थूक बिलोते हो चुप रहो ।

थूक कर चाटना—(१) कह कर पूरा न करना, मुकर जाना । (२) दी हुई लौटा लेना ।

थूक लगाकर छोड़ना—तंग कर के नीचा दिखाकर या दड देकर छोड़ना ।

थूक लगा कर रखना—कंजूसी से जमा करना ।

थूक लगाना—हराना, नीचा दिखाना, चूना लगाना ।

थूकना भी नहीं—ध्यान तक न करना, पसंद ही न करना । हम तो ऐसी चीज़ पर थूके भी नहीं ।

थूक देना—घृणा पूर्वक त्याग देना ।

थूकों सत्तू सानना—कजूसी व किफायत से काम करना । थूकों सत्तू नही सनते दिल खोल कर खर्च करोगे जीतोगे वरना हारोगे ।

थूथनी फैलाना—मुँह फुलाना, नाक भौं चिढाना ।

थू थू करना—घृणा प्रकट करना । तुम्हारे इस काम पर दुनिया थू थू कर रही है ।

थूथू होना—निन्दा होना । लड़की पर रुपया लेने से चारों ओर थू थू हो गई ।

थेई थेई होना—नाच रंग होना । होली के दिनों में तो स्थान स्थान पर थेई थेई होने लगती है ।

थैली करना—मार कर ढेर करना, मारते मारते ढीला करना ।

थैली कटना या काटना—(१) रुपये की गठरी या जेब कतरना । तुम्हारी क्या ऐसी थैली काट ली जो तुम बुरा कहते हो । (२) खूब

[४२१४]

खर्च करना। मौके पर बनिया थैली काट देता है खोलता नहीं।

थैली खोलना—रुपया देना। दान के काम में थैली का मुँह खोल देते हैं।

थोक करना—इकट्ठा करना, जमा करना।

थोड़ा थोड़ा होना—लज्जित सकुचित होना।

थोड़ा ही—नहीं, बिल्कुल नही। हम थोड़ा ही जायँगे, जो जाय उससे कहो।

थोथी बात होना—भद्दी या व्यर्थ बात, केवल बातें ही। यह सब थोथी बातें हैं, काम की कुछ नहीं।

द

दंग रहना—अचम्भे मे पड़ना। मै तो यह कौतुक देख कर दंग रह गया।

दंगल में उतरना—(१) कुश्ती लडने के लिये अखाड़े में आना। (२) गृहस्थी होना, अब जरा दंगल में उतरे हो अब मालूम होगा कैसे खर्च से विजय पाते हो। (३) मुकदमा लडना।

दंड ग्रहण करना—संन्यास लेना।

दंड डालना—(१) जुरमाना करना। (२) कर, महसूल लगाना।

दंड पड़ना—नुकसान उठाना। लाभ उन्होंने उठाया दण्ड हम पर पड़ा।

दंड भरना—(१) जुरमाने की रकम देना। (२) दूसरे का नुकसान पूरा करना। उनकी चीज़ तो पहिले से ही टूटी हुई थी हमारे हाथ में आकर दो टुकड़े हो गई, हमें उसका पूरा दण्ड भरना पड़ा।

दंड भुगतना, भोगना—(१) सज़ा सहना, नुकसान उठाना, व्यर्थ कष्ट उठाना। अपराध तुम्हारा और दण्ड भुगतना पड़ा हमको।

दंड सहना—नुकसान, घाटा सहना। हम क्यों १००) का दण्ड सहें हम तो पूरे रुपये लेंगे।

दई का घाला—अभागा, कम्बख़्त। जननि कहत दई की घाली! काहे को इतरात।

दई का मारा, दई मारा—ईश्वर का मारा हुआ, अभागा।

दई दई—हे दैव! रक्षा के लिये ईश्वर की पुकार। दई दई आलसी पुकारा।

दक़ीका बाकी न रखना—सब उपाय कर लेना, कोई तरकीब न छोड़ना। मुझे नुकसान पहुँचाने मे तुमने कोई दक़ीका बाकी नहीं रखा।

दखल करना—अधिकार में करना। जिस समय मुगल बादशाह

अख्याशी में पड़े हुये थे अंग्रेजों ने उन्हें हरा कर भारतवर्ष पर अपना दख़ल कर लिया।

दख़ल देना—हम तुमसे आज कहे देते हैं, कि हमारी बात में दख़ल मत दिया करो।

दखल पाना—अब तो मैं शीघ्र ही जायदाद पर दख़ल पा लूँगा।

दत्तक लेना—दूसरे के पुत्र को गोद लेकर अपना पुत्र बनाना। कोई बच्चा नहीं हुआ आखिर दत्तक लिया, वश का नाम तो चले।

दफा करना, दफ़ा दफ़ान करना—बे इज्जत करके दूर हटाना। ये हमारे सामने इस तरह जबान चला रहा है दफा करो इसे यहाँ से।

दफ़ा लगाना—क़ानून का नियम आरोपित करना। उस पर फौजदारी में चोरी की दफ़ा लग गई है।

दफ़्तर खोलना—लंबा चौड़ा वृत्तान्त सुनाना। अब यहाँ दफ्तर खोल बैठे, यह बात सब के सामने कहने लायक है।

दबकी मारना—छिपा जाना, अदृश्य हो जाना। वह झट दबकी मार गया आज तक पता नहीं चलता।

दबा बैठना, लेना—अनुचित रूप से धन, वस्तु आदि हड़पना, लेना। वह बेचारी विधवा की सारी सम्पत्ति दबा बैठा, तब अमीर है।

दबी आवाज़—(१) धीमी आवाज़। (२) डरते हुए। सत्य कहने में किसका डर जो दबी आवाज से बोलते हो।

दबी जबान से कहना—(१) साफ साफ न कहना। (२) डर आदि के कारण कहना। मुझे दबी जबान से यह कहना ही पड़ा कि मै अपराधी हूँ।

दबे दबाके रहना—शांति पूवक, चुपचाप रहना, विरुद्ध कार्रवाई या उपद्रव न करना। हम तो दबे दबाये रहते हैं उभरेंगे तो मार डाले जायँगे।

दबे पांव (पैर) उतरना, चलना—ऐसे चलना जिसमें आहट न हो, चुह चाप उतरना। वह तो दबे पाँव वहाँ से चला (खिसक) गया मालूम भी न हुआ।

दबे पाँव निकल जाना—चुपचाप चले जाना। दबे पॉव निकल गये वरना बड़े पिटते।

दम अटकना—(२) साँस रुकना, खास कर मरते वक्त साँस रुकना। दम उखड़ना। (१) दे० दम अटकना। (२) दमे या खाँसी का दौरा होना।

दम उलझना—जी घबराना, व्याकुल होना।

दम उलटना—(१) दे० दम उलझना। (२) दे० दम घुटना।

दम के दम—क्षण भर। वे यहाँ दम के दम बैठे, फिर चले गये।

दम के दम में—अति शीघ्र। दम के दम में वह तैयार कर लिया।

दम खाना—(१) दिक या तंग करना। क्यों दम खाते हो चल तो रहा हूँ। (२) किसी पदार्थ का बन्द मुँह के बर्तन में भाफ द्वारा पकाया जाना। (३) ठहरना, विश्राम लेना। दम खाओ अभी ला देता हूँ। (४) छल फरेब में फँस जाना।

दम खिँचना—दे० दम अटकना।

दम खींचना—(१) न बोलना, चुप रह जाना। दम क्यों खींच गये बोलते क्यों नहीं ? (२) सांस खीचना साँस ऊपर चढ़ाना।

दम खुश्क होना—बहुत भय के कारण चुप हो जाना, सांस तक न लेना स्तब्ध रह जाना। मास्टर को देखते ही लड़के का दम खुश्क हो गया।

दम गनीमत होना—जीवित रहने के कारण अच्छी बातों या आदर का कारण होना। शहर में अब तो कोई अच्छा पंडित नहीं, पर फिर भी आपका दम गनीमत है।

दम घुटना—हवा की कमी से या और कारण से सांस रुकना। खिड़कियें खोल दो दम घुटता है।

दम घुट घुट कर रहना—अपनी इच्छा के विरुद्ध रहना। बेचारे मज़दूर का कुछ बस नहीं चलता, बेचारे का दम घुट घुट कर रह जाता है।

दम घोंटना—(१) बहुत कष्ट देना। क्यों बेचारे का दम घोंटते हो गरीब है। (२) साँस न लेने देना। गले में रस्सी डाल कर दम घोंट दिया।

दम घोंट कर मारना—(१) बहुत कष्ट देना। (२) गला दबाकर या हवा न पहुँचने देकर मारना। सब दरवाज़े बन्द कर दिये क्या दम घोंट कर मारोगे ?

दम चढ़ना—(१) बहुत परिश्रम से साँस जल्दी जल्दी चलना। भागते भागते दम चढ़ गया। (२) दमे के रोग का दौरा होना।

दम चुराना—(१) जान बूझ कर साँस रोकना। बन्दर मार खाने के समय दम चुराता है। ताकि मारने वाला उसे मुरदा समझे। (२) जी चुराना, बहाने से काम करने से अपने को बचाना। काम के नाम तो दम चुरा जाते हो, ताकि करना न पड़े।

दम छोड़ना—अब आप डाक्टर

को लाकर क्या करेंगे, वहाँ तो रोगी दम छोड़ चुका है।

दम झाँसा देना या दम पट्टी पिलाना—धोखा या फरेब करना न देता दिल न देता दिल न देता, अगर दिलदार दम झाँसा न देता।

दम टूटना, उखड़ना—(१) साँस बन्द होना, प्राण निकलना। (२) साँस शीघ्र चलने के कारण काम न कर सकना। तैरने और दौड़ने में दम टूट जाने पर फिर ज़रा भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता।

दमड़ी के तीन होना—(१) बहुत सस्ता, कौड़ियों के मोल होना। (२) दरिद्र या अप्रतिष्ठित हो जाना। (३) बेकार होना। उन जैसे दमड़ी के तीन तीन होगये हैं, जो कभी लाट बने फिरते थे।

दमड़े करना—बेचकर दाम खड़े करना।

दम तोड़ना—अंतिम साँस लेना या झटके से प्राण छोड़ना। रेल के साथ भाग कर स्टेशन पहुँचते ही घोड़े ने दम तोड़ दिया।

दम दिलासा देना—झूठी आशा देना।

दम देना—धोखा देना, बहकाना, फुसलाना।

दम न मारना—(१) कुछ न बोलना। (२) ज़रा विश्राम न करना। दम न मारा कि चलने का हुक्म हो गया।

दम नाक में आना, करना—बहुत तंग, दुखी या परेशान होना, करना। तुम काम क्या कराते हो नाक में दम कर डालते हो एक आदमी एक साथ क्या क्या कर डाले।

दम निकलना—वियोग में प्राण त्याग या कष्ट होना। उसी को देख कर जीते हैं जिस पर दम निकलता है।

दम पचना—परिश्रम करने में साँस न फूलने का अभ्यास होना।

दम पर आ बनना—(१) प्राण भय होना। (२) आफ़त आना। वह एक दम सारे रुपये माँग बैठा, अब दम पर आ बनी। (३) हैरानी, व्यग्रता होना।

दम पर दम—(१) बराबर। दम पर दम शैतान बना जा रहा है। (२) थोड़ी थोड़ी देर पर। दम पर दम कै आरही है।

दम फूँकना—किसी चीज मे मुँह से हवा भरना।

दम फूलना—दे० दम चढ़ना।

दम फड़क उठना या जाना—सुन्दरता, गुण आदि देख कर हृदय प्रसन्न होना।

दम फ़ना होना—होश फ़ाख्ता

होना। देने के नाम तो उनका दम फना होता ही फिर पुलिस को देख कर तो दम फना ही हो गया।

दम बंद करना—जबर्दस्ती बोलने से रोकना।

दम बंद होना—बिल्कुल चुप रह जाना। मेरे डर से तो उनका दम बन्द होता है।

दम बदम—दे० दम पर दम।

दम बांधना—चुपकी लगाना। जितना सूरदास दम बाँधता है उतना दूसरा नही।

दम भरना—(१) प्रेम, मित्रता आदि का पक्का विश्वास रखना। जो मुहब्बत का दम भरते थे या जो दोस्ती का दम भरते (विश्वास-दिलाते) थे, कंगाली में कोई घर भी नहीं फटकते थे। (२) दौड़ने या परिश्रम के कारण साँस फूलना, थकना। इतनी सीढियाँ चढ़ने में दम भर गया जरा बैठ जाय फर चढ़ेगे। (३) कुश्ती लड़ा कर थकाना, साँस फूलना। दम भरा पहलवान पिछड़ा। (४) भालू का हाथ या लकड़ी पर मुँह रख कर सास खींचना। रीछ दम भरता है जिससे क्रोध शात हो, भोजन पचे। (५) किसी स्वर का देर तक उच्चारण करना। (६) कबूत का पेट में हवा भरना।

दम मारना—(१) ज़रा सुस्ताना, विश्राम करना। इतना काम है कि दम मारने की भी फुर्सत नही। (२) दखल देना। यहाँ काइ दम मारने वाला भी नही। (३) कुछ कहना, चूँ करना। आपकी क्या ताकत है जो मेरी बात मे दम भी मार सके। (४) मत्र आदि द्वारा झाड़ फूँक करना।

दम मारने की फुरसत न होना—ज़रा भी समय न होना यहाँ तो दम मारने की फुरसत नही आप और काम बढ़ाते जाते हैं।

दम में आना—धोखे, जाल मे फँसना। दम में आ गये रुपये गँवा बैठे ?

दम में दम आना—घबराहट दूर होना, चित्त स्थिर होना। पाई तो दम मे दम आया।

दम में लाना—दे० दम झाँसा देना या दम देना।

दम में दम रहना—जिन्दगी रहना। दम में दम रहा तो कभी यह भी दिखा ही देगे।

दम लगना—गाँजे, चरस का धुआ खीचना।

दम लगाना, मारना—गाजे तम्बाकू आदि का धुआँ खींचना। हुक्के मे दम मार लें, चलते हैं अभी।

दम लेना—(१) ठहरना, दम लो, अभी चलते हैं। (२) विश्राम

करना, सुस्ताना। वहाँ पहुँच कर ही दम लूँगा।

दम रोकना—साँस न लेना। क्या तुम दम रोक कर एक से लेकर सौ तक गिन्ती गिन सकते हो?

दम ले रहना, लेकर बैठना—चुप होना या टाल जाना। कुछ कह न सके हिम्मत न पड़ी दम लेकर बैठ गये।

दम साधना—(१) सांस रोकना, सांस की गति रोकने का अभ्यास। तैराकों को भी प्राणायामी लोगों की तरह से ही दम साधना पड़ता है (२) चुप होना, मौन रहना। रुपयों का नाम सुन कर वे दम साध गये। इस मामले में अब हम भी दम ही साधेंगे क्यों व्यर्थ बीच में पड़ें!

दम सूखना—दे० दम खुश्क होना या दम फना होना।

दम हाँ दम में रखना—झूठी आशा बँधाये रहना।

दर किनार रहा—दूर की बात है, कुछ चर्चा नहीं। देना तो रहा दर किनार मैं बात भी न करूँगा।

दरखास्त गुजरना, पड़ना—अर्जी पेश किया जाना।

दरख्वास्त देना—प्रार्थना पत्र भेजना। मैंने बंदूक की दरखास्त दी है।

दरगुजर करना—टाल देना, मुआफ करना, जाने देना।

दर दर फिरना—(१) बुरी हालत होकर घूमना। (२) कार्य सिद्धि या पेट पालने के लिये घर घर घूमना। यह कुत्ता दर दर फिरे दर दर दुर दुर होय, एक हि दर का हो रहे तो दुर दुर करे न कोय।

दर दर मारे मारे फिरना—दे० दर दर फिरना।

दर पेश होना—सामने आना, उपस्थित होना। मामला दर पेश है।

दरबार करना—(१) राजसभा में (राजा या और किसी का) बैठना, आना जाना।

दरबार खुलना—राजसभा में आने जाने की आज्ञा होना। उनका दरबार गरीब अमीर सब के लिये हर दम खुला है।

दरबार बंद होना—दरबार में जाने की रोक होना।

दरबार बर्खास्त होना—राजसभा समाप्त होना।

दरबार बाँधना—(१) रिश्वत निश्चित करना। (२) बड़े आदमी द्वारा कोई काम सदा के लिये हाथ में लिया जाना।

दरबार लगना — राजसभा में सर्दारों का इकट्ठा होना।

दरवाजे की मिट्टी खोद या ले डालना—बार बार घर पर आना। उसने तो मेरे दरवाजे की मिट्टी ले डाली, कई बार माँगने आया।

दराँती पड़ना—फसल कटना शुरू होना।

दरेग़ करना—देने से इन्कार करना। जब तुम्हारे पास रुपये आ गये हैं, तो उसके उधार के देने में क्यों दरेग़ करते हो।

दर्ज करना—लिखना। मैंने जो चीज़ें आपको दी हैं, उन्हें उसी पहले वाले रजिस्टर में दर्ज कर लीजिये।

दर्जा उतारना—ऊँचे से नीचे दर्जे में कर देना।

दर्जा चढ़ना—नीची से ऊँची श्रेणी में जाना।

दर्जा चढ़ाना—श्रेणी या पद ऊँचा करना।

दर्ज़ी की सुई होना—हर काम का आदमी। टाइप, शौर्ट हैण्ड, डाक्टरी, चिट्ठी पत्री, मुनी से कोई काम करालो वह तो दर्जी की सुई है।

दर्द आना—तकलीफ मालूम होना। रुपया देते दर्द आता है।

दर्द उठना—पीड़ा पैदा होना।

दर्द करना—पीड़ित होना।

दर्द खाना—(१) कष्ट या पीड़ा सहना। उसने क्या दर्द खाकर नहीं जना जो प्यारा न हो। (२) रहम, तरस या दया करना। दर्द खाओ, मुझ दुखिया के हाल पर।

दर्द लगना—पीड़ा शुरू होना।

दर्शन देना—देखने में आना।

दर्शन पाना—देखना।

दर्शन मिलना—साक्षात्कार होना।

दर्शन होना—मिलना।

दल दल में फँसना—(१) कीचड़ में फँसना। (२) खटाई में पड़ना। दोनों दलों की दलादली में चुनाव का काम दल दल में फँस गया। (३) मुश्किल या दिक़्क़त में पड़ना।

दलबादल खड़ा होना—बड़ा भारी शामियाना या खेमा गड़ना।

दलबादल से चढ़ना—बहुत सी सेना लेकर चढ़ाई करना।

दलील करना—वाद विवाद करना। जब तुम जानते ही हो कि ऐसा करने में दोष है, तो व्यर्थ दलील क्यों करते हो।

दलेल बोलना—सज़ा के तौर पर कवायाद कराना।

दवा को न मिलना—थोड़ा सा भी न प्राप्त होना। असली शहद तो दवा को भी नहीं मिलता।

दवा को न होना—ज़रा भी न होना।

दवा देना—औषध खिलाना, पिलाना।
दस्तक देना—किवाड़ खटखटाना।
दस्तक बाँधना, लगाना—व्यर्थ का खर्च जिम्मे डालना।
दस्त लगना—पाख़ाना बार बार होना।
दस्तखत लेना—किसी का नाम उसी के हाथ से लिखाना।
दस्तबरदार होना—अधिकार छोड़ देना, बाज आना। अगर तुम मकान से दस्त बरदार हो जाओ तो १०००) और दें।
दहलना कलेजा, जी—हृदय काँपना, दिल धक धक करना।
दहना कमर पेंच—(पालकी के कहार का) दाहिनी ओर घूमना।
दहलीज का कुत्ता—पिछलग्गू।
दहलीज की मिट्टी ले डालना—दे० दरवाजे की मिट्टी ले डालना।
दहलीज झाँकना—द्वार पर आना, मैं तो सौत की दहलीज़ भी न झाँकूँ।
दहशत देना—भयभीत करना। अभी कुछ दिनों से किसी ने उसे दहशत दे दी है, इसी से अब अकेला नहीं जाता है।
दहाड़ मारकर रोना, मारना—चिल्ला चिल्ला कर रोना। ऐसी दहाड़ मार कर रोते हो जैसे बड़ा ही मारा गया हो।
दहिने होना—(१) शुभ होना। (२) अनुकूल होना, प्रसन्न होना। (३) लाभदायक होना। आज कल तो सेठ जी ही दहिने हैं उन्हीं की रोटी खाते हैं।
दही का तोड़—दही का पानी।
दही दही करना—चीज़ मोल लेने के लिये लोगों से कहते फिरना। वे अपनी किताब के लिये मित्रों से दही दही करते फिरते हैं।
दाएँ बाएँ देकर निकल जाना—भुलावा देकर खिसक जाना। तुम तो दाएँ बाएँ देकर निकल गये, हम वहाँ बुरी तरह फँस गये।
दाँत उखाड़ना—(१) मसूड़े से दाँत अलग करना। (२) मुँह तोड़ना, कठिन दण्ड देना। एक भी गाली दी तो दाँत उखाड़ लूँगा।
दाँत काटी रोटी होना—गहरी दोस्ती। राम और श्याम की तो दाँत काटी रोटी है।
दाँत काढ़ना—दे० दाँत निकालना।
दाँत किटकिटाना, किचकिचाना—(१) दाँत पीसना। (२) अत्यंत क्रोध से दाँत पीसना।
दाँत किरकिराना—(१) रेत कंकड़ी आदि पड़ने के कारण दाँत किसकिसाना। (२) खाली दाँत रगड़ना। सोते में दाँत किरकिराना अपशकुन है।

दाँत किर किरे होना—हार मानना, हैरान हो जाना।

दाँत कुरेदने को तिनका न रहना—सब कुछ चला जाना।

दाँत खट्टे करना—(१) खूब हैरान करना। (२) लड़ाई में परास्त करना। राजपूतों ने कई बार मुसलमानों के दाँत खट्टे कर दिये।

दाँत खट्टे होना—हार जाना, हैरान होना। उसके कई बार दाँत खट्टे हो चुके हैं वेचारा क्या बराबरी करेगा।

दाँत गड़ना—दे० दाँत लगना।

दाँत चबाना—क्रोध से दाँत पीसना। दाँत चबात चले मधुपुर तें धाम हमारे को।

दाँत जमना—दाँत निकलना।

दाँत झाड़ देना—(१) दाँत तोड़ डालना (२) कठिन दण्ड देना। अब हँसा तो तेरे दाँत झाड़ दूँगा।

दाँत तले उँगली दबाना—(१) दग या चकित होना। पुरानी भारतीय शिल्पकला को देख बड़े बड़े अंग्रेज दाँतों तले उँगली दबाते हैं। (२) (इस) इशारे से मना करना। (३) अफ़सोस करना। मुझ निर्दोष को शान्ति से दण्ड पाता देख उन्होंने भी दाँत तले उँगली दबाई।

दाँत तालू में जमना—बुरे दिन या शामत आना। किसके दाँत तालू में जमे हैं जो ऐसी बात मुँह से निकाल सके।

दाँत तोड़ना—(१) हैरान करना। (२) कठिन दण्ड देना। (३) परास्त करना। अलादीन के दाँत तोड़ि निज धर्म बचाओ।

दाँत दिखाना—(१) हँसना। (२) डराना, घुड़कना। मुझे क्या दाँत दिखाते हो, मै गीदड़ भबकियों से नहीं डरता। (३) अपनी बड़प्पन दिखाना। (४) असमर्थता प्रकट करना। पहिले से तो कहते थे, परन्तु मौके पर हिः हि करके दाँत दिखा गये।

दाँत देखना—घोड़े बैल आदि की उम्र का अंदाजा करने के लिये दाँत देखते हैं।

दाँत न लगाना—दाँतों से न कुचलना। दाँत न लगाना, योंही निकल जाना।

दाँत निकलना—बच्चों के दाँत प्रकट होना

दाँत निकालना—(१) दाँत उखाड़ना। (२) ओंठों को कुछ हटा कर दाँत दिखाना। (३) व्यर्थ हँसना। क्यों दाँत निकालते हो सीधे बैठो। (४) दीनता दिखाना, गिड़गिड़ाना। वह दाँत निकाल माँगने लगा, तब कैसे न देते। [४३७३]

(५) टे बोलना, डर या घबराहट से मुँह बा देना। (६) फट जाना, उधड़ना। जूती का दाँत निकालना, दीवार का दाँत निकालना।

दाँत निकोसना, निपोरना—दे० दाँत निकालना।

दाँत पर न रखा जाना—(१) अत्यत खट्टा होना। (२) दाँत में पीड़ा के कारण न खाया जाना।

दाँत पर मैल न होना—अत्यत दरिद्र होना। उसके तो दाँत पर मैल नहीं तुम्हें क्या देगा!

दाँत पीसना—अत्यंत क्रोध से दाँत पर दाँत रख कर हिलाना। दाँत पीस कर मारने दौड़े।

दाँत बंधवाना—हिलते दाँत तार से कसवाना।

दाँत बजना—दाँत कट कट बजना। सरदी से दाँत बजने लगे।

दाँत बजाना—दाँत किट किटाना।

दाँत बनवाना—हड्डी, सीप आदि के दाँत लगवाना।

दाँत बैठ जाना—नीचे ऊपर के जबड़ों का सट जाना। लकबे से दाँत बैठ गये।

दाँत मसमसाना, मीसना—दे० दाँत पीसना।

दाँत रखना—(१) वैर से लेने का विचार रखना। (२) क्रोध या द्वेष भाव रखना। (३) लेने की चाह रखना। तुम उस लड़की पर दाँत रखते हो पर वह तुम्हें न मिलेगी।

दाँत रहना—प्राप्ति इच्छा। भारत पर सदा से विदेशियों का दाँत रहा है।

दाँत लगना—(१) दाँत चुभने से घाव होना। (२) लेने की गहरी चाह होना। जब उन का दाँत इस मकान पर लगा है तो वह कैसे बच सकता है।

दाँत लगाना—(१) दाँत धँसना। (२) लेने की चाह रखना, प्राप्ति के प्रयत्न में रहना।

दाँत से दाँत बजाना—काँपने में दाँत पर दाँत पड़ना। सरदी ऐसी कि दाँत से दाँत बजाती थी।

दाँत होना—(१) प्राप्ति की इच्छा होना। जिस वस्तु पर तुम्हारा दाँत है वह कब तक रह सकती है। (२) क्रोध, द्वेष आदि भाव होना। जिस पर तुम्हारा दाँत है वह कब तक बच सकता है।

दाँता किलकिल होना—गाली-गलौज, कहा-सुनी। मुझे रोज की दाँता किलकिल अच्छी नहीं लगती, एक दिन झगड़ा चुकाओ।

दाँता पड़ना—हथियार की धार में गड्ढे हो जाना।

दाँतो बैठना, लगना—दाँतों का

ऐसा मिल जाना कि मुँह जल्दी न खुल सके

दाँतों उँगली काटना—दे० दाँत तले उँगली दबाना।

दाँतों चढ़ना—(१) बुरी नज़र का निशाना बनना। (२) किसी को खटकना।

दाँतों चढ़ाना—(१) बुरी नज़र डालना। (२) पीछे पड़ा रहना। (३) आक्षेप करते रहना।

दाँतों पर रखना—चखना। दाँतों पर रखो तो स्वाद आवे।

दाँतों पर होना—दाँत निकलने की उम्र होना।

दाँतों में जीभ सा होना—शत्रुओं से घिरा रहना। विभीषण ने कहा मैं तो दाँतों के बीच में जीभ की तरह रहता हूँ।

दाँतों में तिनका लेना—हा हा खाना, गिड़गिड़ाना। दाँतों में तिनका लेकर जा और कह मै, तुम्हारी गऊ हूँ, वे तुझे क्षमा कर देंगे।

दाँतों में पसीना आना—बहुत मेहनत पड़ना। खेत में कुदाल चलाते चलाते दाँतों में पसीना आ गया।

दाँतों से उठाना—बड़ी कंजूसी से जोड़ना। एक दाना भी गिरे तो वह दाँतों से उठावे।

दाँतों से हाथ काटना—(१) गुस्सा उतारना। (२) बहुत पछताना।

दाई से पेट छिपाना—रहस्य जानने वाले से बात छिपाना। ऐब न अपना तुझको जताना, है दाई से पेट छिपाना।

दाखिल करना—देना, भर देना जुरमाना दाखिल कर दिया।

दाखिल होना—अदा कर देना, लाकर जमा करना।

दाग़ देना—क्रिया-कर्म करना कलंकित या बदनाम करना। पुत्र होत मर जाय जो कुल मे दाग़ लगावे।

दाग बेल गेरना—शुरू करना। उसकी कल दाग बेल गेरने की शामत है।

दाढ़ गरम करना—(१) अच्छा भोजन मिलना। (२) रिश्वत देना। पुलिस की दाढ़ गरम किये बिना कुछ न होगा।

दाढ़ न लगाना—दाँत से न कुचलना।

दाढ़ मारकर रोना—दे० दहाड़ मार कर रोना। वह ऐसी दाढ़ मार कर रो रही है मानों कोई मर गया हो।

दाढ़ा फूँकना—जलन पैदा करना।

दाढ़ी बनवाना—दाढ़ी की हजामत कराना। तुम्हारे बाल बड़ी जल्दी बढ़ जाते हैं, जो तीसरे दिन दाढी बनवाते हो।

दाद को पहुँचना—न्याय मिलना।

यह बुढ़िया और बुड्ढे दाद को पहुँचने की आशा में एक महीने तक जहाँगीर के महल के नीचे पड़े रहे।

दाद चाहना—(१) अत्याचार के प्रतिकार की प्रार्थना करना। (२) सराहना चाहना।

दाद देना—(१) न्याय करना। देव तो दया निकेत देत दाद दीन की पै मोरिये अभाग मेरी बार नाथ ढील की। (२) सराहना, वाह वाह करना। दाद देना तो अलग रहा नुक्ता चीनी करते हैं, यह है बुड्ढे शायरों का हाल।

दाने को मुहताज—अति दरिद्र होना।

दाने दाने को तरसना—अन्न का कष्ट सहना।

दाना पानी उठना—जीविका न रहना। दिल्ली से दाना पानी उठ गया जभी तो चले आये वरना २० वर्ष यहीं रहे थे।

दाना पानी के हाथ—भाग्याधीन है। सुख दुख दाना पानी के हाथ है।

दाना पानी छोड़ना—न खाना न पीना, उपवास करना। २१ दिन के लिये दाना पानी छोड़ा है।

दाना बदलना—एक पक्षी का दूसरे पक्षी की चोंच में दाना डालना।

दाना भरना—चिड़ियों का बच्चों के मुँह में चारा डालना।

दाने का माल—वह बरतन जिसकी नकाशी उभारी नहीं जाती।

दाव तले होना—वश में होना। मै किसी की दाव तले नही, जो जी में आवेगा करूँगा।

दाव दिखाना—अधिकार या भय जताना। मुझे क्या दाव दिखाते हो मै तुम्हारी तनखाह नही पता।

दाव बैठना—(१) हक या माल न देना। (२) जबरदस्ती कब्जा कर लेना। वह हमारी जायदाद दाव बैठा है।

दाव मानना—डर या वश मे रहना। लड़का किसी की दाव नहीं मानता, शरारती है।

दाव में रखना—वश या शासन में रखना। लड़के को दाव में रखो नहीं तो बिगड़ जायगा।

दाव में रहना—काबू में होना। मैं तुम्हारी दाव में नहीं रहता।

दाव में लाना—वश में करना।

दाव में होना—अधीन या वश में होना।

दाम उठना—कीमत मिलना, बिकना। इसके पूरे दाम उठे।

दाम करना—(१) कीमत तै करना। कितने दाम कर दिये २) के बजाय ५) ? (२) सौदा करना। झट से दाम कर लो मैं दे दूँगा।

दाम खड़ा करना—किसी भाव भी बेचना। तुमने तो इसके अच्छे दाम खड़े किये, मैं कहाँ बेचता।

दाम चुकाना—(१) कीमत देना। (२) कीमत ठहराना। दाम चुका कर लिया करो यहाँ के दुकानदार चौगुनी कीमत बोलते हैं।

दाम दाम भर देना—कुछ (ऋण) बाकी न रखना, कौड़ी कौड़ी चुका देना।

दाम दाम भर लेना—कौड़ी कौड़ी ले लेना। उसने दाम दाम भर लिये एक पैसा न छोड़ा।

दाम देने आना—कीमत देनी पड़ना। मुझसे जरा सी टूट गई, सारे दाम देने आये।

दाम भरना—नुकसान रूप कीमत देना। हमें सारी के दाम भरने पड़े, टूटी आधी थी।

दाम भर पाना—कीमत मिलना।

दाम में लाना—धोखे में फँसना। तुम क्या दाम में लाओगे, मैं तुमसे ज्यादा होशियार हूँ।

दामनगीर होना—पीछे लगना, ऊपर आ पड़ना। बला दामनगीर हुई, पीछा न छूटा।

दामन झाड़कर उठना—अप्रसन्न होकर उठ जाना। तुमने ऐसी जली कटी क्यों सुना दीं, जो वे दामन झाड़ कर उठ गये।

दामन पकड़ना—किसी की शरण लेना। जाकर किसी ऐसे का दामन न पकड़ो जो तुम्हे इन कष्टों से मुक्त कर सके।

दामन फैलाना—प्रार्थना करना। उस ग़रीब ने बहुतेरा दामन फैलाया, किन्तु सेठ जी को ज़रा भी तरस न आया।

दायर करना—मुकदमा चलाना। उसने मेरे ऊपर दावा दायर किया है।

दायर होना—पेश होना। अपील दायर होगी, मुकदमा एक तरफा दायर हुआ है।

दायें बायें होकर निकल जाना—आँख बचा कर या धोखा देकर निकल जाना।

दायें होना—अनुकूल या प्रसन्न होना। भगवान दाये हों तो काम स्वयं बने।

दाल गलना—(१) दाल पक जाना। (२) मतलब निकलना, युक्ति चलना। हमारी दाल तब गले जब मन्त्री विरोध न करे।

दाल चप्पू होना—गुत्थमगुत्थी होना, लिपट कर एक हो जाना। दोनों पतगें दाल चप्पू हो गईं, कटतीं कैसे।

दाल छूटना—खुरड अलग होना। शीतला की दाल तो छूट गई।

दाल जूतियों बटना—खूब लड़ाई झगड़ा होना, अनबन होना। [४५५३]

दोनों भाइयों में जूतियों दाल बटी, हमने सैल देखी।

दाल दलिया—(१) रूखा सूखा भोजन। (२) अंतिम फैसला। इस का कुछ दाल दलिया कर डालो तो फिर दूसरे काम में लगें।

दाल न गलना—वश न चलना। यहाँ तो रात भर पहरा रहता है, चोरों की दाल यहाँ नहीं गलने पाती।

दाल बँधना-(१) अक्स का इकट्ठा होकर पड़ना। (२) खुरंड पड़ना।

दाल भात का कौर समझना—सरल या आसान जानना। यह भी दाल भात का कौर समझे हो जो हड़प लोगे, मुकदमे में जीतोगे तब ले सकोगे।

दाल में कुछ काला होना—(१) खटका या संदेह होना। (२) बुरा दहल होना। जरूर दाल में कुछ काला है नहीं तो उनके सामने क्यों न आये।

दाल रोटी चलना—गुजर होना।

दाल रोटी से खुश होना—खाने पीने का कष्ट न होना। जमा जथा तो नहीं है हाँ दाल रोटी से खुश हैं।

दावँ करना—घात में लगना, मौका तकना।

दावँ खेलना—धोखा देना, चाल चलना। कितने ही दावँ खेले परन्तु काम न बना सके।

दावँ चलना—(१) शतरंज की गोटी या ताश के पत्ते आदि रखना। (२) चाल चलना।

दावँ चूकना— मौका खोना, सुअवसर निकलना। दावँ चूकते ही उसने मात दी, देखते रह गये।

दावँ ताकना—अवसर या मौका ढूँढना, देखते रहना।

दावँ देना—(१) खेल में हारने पर नियत दंड देना, परिश्रम करना (लड़के)। तुम्हारे संग काहे को खेले दावँ देत नहि करत रुनैया? (२) दे० दावँ खेलना।

दावँ पर चढ़ना—(१) वश में होना, अनुकूल झुकाव होना। सेठ जी मेरे दावँ पर चढ़े हैं तुम्हारी एक न चलेगी।

दावँ पर चढ़ाना—मतलब के मुआफिक बनाना।

दावँ पर रखना— बाजी पर लगाना।

दावँ पर लाना—दे० दावँ पर चढाना। दावँ पर लाकर उसी से सारा काम करा लिया।

दावँ फेंकना—जुए की कौड़ी आदि डालना।

दावँ में आना—दे० दावँ पर चढ़ाना।

दावँ लगना—मौका अनुकूल

अवसर मिलना। दावँ लगते ही वह उड़ा ले गया।

दावँ लगाना—(१) दे० दावं पर रखना। (२) दे० दावँ ताकना।

दाँव लेना—(१) खेल में हारने वाले से नियत दंड लेना। (२) बदला लेना। अब लैहों वह दावँ छाड़िहौ नहि बिनु मारे।

दावा खारिज होना—मुकदमा हारना, हक्क साबित न होना।

दावा जमाना, ठोकना—मुकदमा चलाना।

दाहिना हाथ होना—बहुत सहायक या मान्य कार्यकर्ता होना। तुम तो मेरे दाहिने हाथ हो तुम्हारे बिना क्या कर सकता हूँ।

दाहिना होना—अनुकूल या प्रसन्न होना। राम भये जिहि दाहिने सबै दाहिने ताहि।

दाहिनी देना—दाहिना तरफ़ से प्रदक्षिणा करना।

दाहिनी लाना—प्रदक्षिणा करना। पंचवटी गोदहि प्रणाम करि कुटी दाहिनी लाई।

दिक़ करना—कष्ट देना। यह लालाजी काम तो करा लेते हैं, किन्तु मज़दूरी देने में बड़ा दिक़ करते हैं।

दिन आना—(१) समय पूरा होना। (२) अंतिम समय आना। उसके दिन आगये समझो जो ऐसी बातें करता है।

दिन काटना—समय बिताना। क्या सुखी हैं? दिन काट रहे हैं।

दिन का तारे दिखाई देना—दुख से बुद्धि ठिकाने न रहना। मुझसे विरोध करोगे तो दिन को तारे दिखाई देने लगेंगे।

दिन को दिन रात को रात न समझना—अपने आराम का ध्यान तक न करना, दिन रात काम मे लगना। जिनके लिये मैंने दिन को दिन और रात को रात न समझकर कष्ट सहे वही अब विरोध कर रहे हैं।

दिन गवाना—फिजूल वक्त खोना। क्यों बैठे बैठे दिन गवाँ रहे हो कुछ काम करो।

दिन चढ़ना—(१) गर्भ के दिन होना। कितने दिन चढे हैं, दो महीने? (२) सूर्योदय के बाद समय बीतना।

दिन छिपाना, डूबना—सूर्यास्त होना।

दिन जाना—(१) आनन्द में समय बीतना। तुम्हारे पास रह कर तो दिन जाते मालूम भी नहीं होते। (२) समय बीतना। वह दिन गये जब हमारी पूछ थी।

दिन टलना—(१) मौत से बिस्तरे

पर पड़ने वाले का समय गुज़रना। (२) गर्भ के चिह्न ज़ाहिर होना।

दिन ढलना—तीसरा पहर, सध्या होना। दिन ढले चलेंगे दो घंटे मे दिन डूबते तक पहुँच जावेंगे।

दिन दहाड़े, दिहाड़े, या धौले—सब के जागते देखते हुए, दिन के समय। दिन दहाड़े उनके यहाँ दस हज़ार की चोरी हो गई।

दिन दिन, दिन पर दिन—हर रोज़, नित्य प्रति। दिन दिन वह कजूस बन रहा है।

दिन दूना रात चौगुना होना, बढ़ना—बहुत जल्दी और बहुत ज्यादा बढ़ना, उन्नति करना। वह तो दिन दूना रात चौगुना मोटा हो रहा है, सात दिन में दस सेर वजन बढ गया।

दिन धरना, धराना—दिन निश्चित करना, कराना।

दिन निकलना—(१) सूर्योदय होना। दिन निकले तक मत सोओ। (२) समय न रहना। वे दिन निकल गये जब मैं भोला था।

दिन पड़ना—सकट आना। दिन पडने पर मित्र भी नहीं पूछते।

दिन पूरे करना—जैसे तैसे गुज़ारा करना। भाई जीवन के दिन पूरे कर रहे हैं वरना क्या रखा है दुनिया में।

दिन पूरे होना—गर्भ का नवाँ महिना पूरा होना। बहन! दिन तो इसी अमावस को पूरे हो जायँगे, होने को बच्चा चाहे जब हो जाय।

दिन बिगड़ना—बुरे दिन आना।

दिन बहुरना, फिरना—अच्छे दिन फिर आना। जब दिन फिरेंगे तो बनते देर न लगेगी।

दिन भरना—दे॰ दिन पूरे करना।

दिन भारी होना, रहना—कठिन समय आना। ऐसे ही ग्रह पड़े हैं यह दिन कुछ भारी हैं।

दिन भुगताना—दे॰ दिन काटना।

दिन मुंदना—सायकाल होना। अब तो बिल्कुल दिन मुंद गया है, अब से जाकर ठीक समय पर न पहुँच सकोगे।

दिन रो रो कर काटना—दुख से दिन बिताना।

दिन होना—सूर्य आकाश में होना। अभी दिन है चले जाओ।

दिनों का, के फेर होना—दशा बदलना। दिनों का फेर है जो जमीन पर पैर न रखते थे आज नंगे पाँव भाग रहे हैं।

दिनों को धक्के देना—बहुत कष्ट से जीवन विताना। भाई क्या करें, खाने वाले तो इतने हैं, कमाने वाला मैं अकेला हूँ, दिनों को धक्के दे रहे हैं।

दिनों से उतरना—जवानी ढलना।

दिमाग़ आसमान पर चढ़ना, होना—बहुत अभिमान होना, ऐंठे रहना। उनका तो दिमाग़ आसमान पर है वह तुमसे बात भी नहीं करेंगे।

दिमाग़ ऊँचा होना—(१) दे० दिमाग़ आसमान पर होना। (२) बहुत बुद्धिमान होना। बहुत ऊँचा दिमाग़ है ऐसी बात कहता है जो बीस वकील भी न बता सकें।

दिमाग का अर्क निचोड़ना—बुद्धि से बहुत काम लेना। घंटों दिमाग़ का अर्क निचोड़ा तब समझ मे आया।

दिमाग़ को कौड़ियों के मोल खरीदना—मेहनत से लिखी पुस्तक पर कम रुपये देना।

दिमाग़ खाना, चाटना—(१) बहुत बोलकर किसी को दुखी करना। तुम तो दिमाग़ खाए डालते हो मुझसे यह बकवाद नहीं सुनी जाती। (२) सोचने से सिर दर्द होना, बुद्धिक्षीण होना। रात को काम करना दिमाग़ चाट जाता है।

दिमाग़ खाली करना—(१) मगज पच्ची करना, अधिक बुद्धि-व्यय करना। तुम्हें समझाने के लिये तो दिमाग़ घंटों खाली करें तब समझोगे। (२) दे० दिमाग़ खाना।

दिमाग चढ़ना—दे० दिमाग़ आसमान पर चढ़ना।

दिमाग़ झड़ना—घंमड दूर होना। एक ही चक्कर मे दिमाग़ झड़ गया।

दिमाग़ न पाया जाना, न मिलना—दे० दिमाग़ चढना।

दिमाग़ परेशान करना—दे० दिमाग़ खाली करना।

दिमाग़ में खलल होना—पागल होना।

दिमाग़ में रहना—ऐंठ में रहना।

दिमाग़ लड़ाना—बहुत विचार करना। बहुत देर तक दिमाग़ लड़ाया फिर क्या था सारी बात समझ में आगई।

दिया बाती करना—सन्ध्या काल में दिया जलाना। उन्होंने मन्दिर की दिया बाती करने के लिये, अब एक आदमी को नियत कर दिया है।

दिया लेकर ढूँढना—खूब चारों तरफ ढूँढना। गोविन्द जैसा विद्वान तुम्हें दिया लेकर ढूँढने से न मिलेगा।

दियासलाई लगाना—जलाना, किसी काम की चीज़ है न होना। अश्लील किताबें दियासलाई लगाने लायक हैं।

दिल अटकना—दे० जी लगना।

दिल अटकाना—दे० जी लगाना।

दिल आना—दे० जी आना।

दिल उकताना—दे० जी उकतना।

दिल उचटना—दे० जी उचटना।

दिल उचाट होना—दे० जी उचाट होना।

दिल उठाना—दे० जी हटाना।

दिल उमड़ना—दे० जी भर आना।

दिल उलटना—दे० जी घबराना।

दिल कड़ा करना, कड़वा करना—दे० जी कड़ा करना।

दिल कबाब होना—दे० जी जलना।

दिल का कँवल खिलना—चित्त प्रसन्न होना।

दिल का गवाही देना—(१) संभालना या औचित्य का निश्चय होना। हमारा दिल गवाही देता है कि वह जरूर आवेगा। (२) उचित अनुचित, होना न होना मानना। उनके साथ अकेले जाने के लिये हमारा दिल गवाही नहीं देता।

दिल का बादशाह—(१) बहुत उदार। (२) मन मौजी, लहरी। वह तो जी का बादशाह है देने पर आवे तो सैकड़ों दे दे।

दिल का बुखार निकलना—दे० जी का बुखार निकलना।

दिल की आग खुलना—मन के बुखार निकलना। आग खुली दिल की न किसी पर, घुल गई जान अंदर ही अंदर।

दिल की कली खिलना—जी खुश होना। तुम्हें देखते ही मेरे दिल की कली खिल जाती है।

दिल की गाँठ खोलना—मन-मुटाव या ईर्ष्या दूर करना। उन्होंने आकर दोनों के दिल की गाँठ खोल दी और मेल करा दिया।

दिल का भर जाना—दे० जी भर जाना।

दिल की दिल में रहना—दे० जी की जी में रहना।

दिल की फाँस—मन की पीड़ा दुख। वही सिखाता था चला गया दिल की फाँस निकल गई।

दिल की लगी बुझाना—हृदय के दुख को दूर करना। मेरे दिल की लगी बुझाएगा दिल का रागी।

दिल कुढ़ना—चित्त दुखी होना। तेरी यह करतूतें देख मेरा जी कुढ़ता है।

दिल कुढ़ाना—चित्त दुखी, रजीदा करना।

दिल कुम्हिलाना—मन दुखी या शोकाकुल हो जाना।

दिल के दरवाजे खुलना—जी का

हाल मालूम होना। उसे विश्वास हो गया कि मैं किसी से न कहूँगा, तब उसके दिल के दरवाजे खुले, और उसने असली भेद कहा।

दिल के फफोले फूटना—हृदय के उद्गार निकलना।

दिल के फफोले फोड़ना—जली-कटी, भली-बुरी कहकर हृदय के उद्गार निकालना, मन ठंडा करना।

दिल को (में) करार होना—हृदय मे शांति, धैर्य या संतुष्टि होना। मुझे दिल में करार हो जो तुम मेरी कसम खालो कि न कहोगे।

दिल को मसोसना—शोक, क्रोध आदि को दबा रखना। दिल को मसोस रह गये, बेबसी ठहरी।

दिल को लगना—दिल पर प्रभाव पड़ना, जी में बैठना। बस यह बात मेरे दिल को लग गई और मैं बदल ही तो गया।

दिल खटकना—दे० जी खटकना।

दिल खट्टा होना—दे० जी खट्टा होना।

दिल खिलना—चित्त प्रसन्न होना।

दिल खुलना—दे० जी खुलना।

दिल खोलकर—दे० जी खोल कर।

दिल चलना, चलाना—दे० जी चलना, चलाना।

दिल चीर कर देखना—भीतरी हाल मालूम करना। मेरा दिल चीर कर देखो मैं कितना दुखी हूँ पर प्रकट किस पर करूँ, कोई साथी नहीं।

दिल चुराना—दे० जी चुराना।

दिल छीन लेना दिल जमना—(१) काम में जी या ध्यान लगना। तुम्हारा दिल तो जमता नहीं, तुम काम कैसे करोगे ? (२) चित्त संतुष्टि होना, जी भरना। अगर तुम्हारा दिल जमे तो तुम हमारे साथ चलो। (३) रुचि अनुकूल होना। जिस चीज़ पर दिल जमे उसे खरीदो।

दिल जमई करना—सान्त्वना देना। अगर तुम रुपये पैसे से सहायता नहीं कर सकते तो वैसे ही उसकी दिल जमई कर दिया करो।

दिल जमाना—ध्यान देना, चित्त लगाना। करना है दिल जमाकर करो वरना मत करो।

दिल जलना—दे० जी जलना।

दिल जलाना—दे० जी जलाना।

दिल जान से लगना—दे० जी जान से लगना।

दिल टूटना—दे० जी टूटना।

दिल टूट जाना—दे० जी टूट जाना।

दिल ठिकाने लगाना—मन को

सहारा देना, शांत करना, व्याकुलता दूर करना।

दिल ठिकाने होना—धैर्य, संतोष, स्थिरता होना।

दिल ठुकना—जी ठुकना।

दिल ठोकना—मन को पक्का करना, दृढ़ करना।

दिल डूबना—दे० जी डूबना।

दिल ढूँढना—मन की बातों का पता लगाना। जो औरत के दिल को ढूँढ़ ले वह समझो सुखी है।

दिल तड़पना—प्रेम की व्याकुलता, बेचैनी या घबराहट होना। दिल तड़प कर रह गया जब याद आई आपकी।

दिल तोड़ना—हिम्मत या उत्साह भंग करना। बेचारी का दिल तोड़ दिया अब परीक्षा न देगी।

दिल थामना—सहना, धैर्य या संतोष धारण करना। हाथ निकले अपने दोनों काम के दिल को थाम उनका दामन थाम के।

दिल दहलना—दे० जी दहलना।

दिल दुखना—दे० जी दुखाना।

दिल दुखाना—दे० जी दुखाना।

दिल देखना—मन के भेद का पता लगाना, मन टटोलना। हमें रुपयों की कोई जरूरत नहीं, खाली तुम्हारा दिल देखते थे।

दिल देना—आशिक होना।

दिल दौड़ाना—दे० जी दौड़ाना।

दिल धक धक करना—दे० कलेजा धक धक करना।

दिल धड़कना—दे० कलेजा धड़कना।

दिल धुकड़ पुकड़ करना—दे० कलेजा धुकड़ पुकड़ करना।

दिल पक जाना—दे० कलेजा पक जाना।

दिल पकड़ लेना, पकड़ कर बैठ जाना—दे० कलेजा पकड़ लेना।

दिल पकड़ा जाना—दे० जी पकड़ा जाना।

दिल पकड़े फिरना—ममता· मुहब्बत से विकल होकर घूमना।

दिल पर नक्श होना—जी में बैठ जाना, जम जाना। उसकी बात मेरे दिल पर नक्श हो गई कि मामला वैसा ही होगा।

दिल पर मैल आना—दिल फट जाना, मन मोटाव, प्रीति भंग होना। अब वह उस तरह प्रेम से बातें नहीं करते कुछ दिल पर मैल आगया है।

दिल पर साँप लोटना—दे० कलेजे पर साँप लोटना।

दिल पर हाथ रखना—(१) संतोष देना। मैंने पूछा हाथ यह क्यों मेरे दिल पर रख दिया, मुस्करा कर बोले, हाँ, कुछ तो समझ कर रख दिया। (२) सत्य,

जो दिल में हो। दिल पर हाथ रख कर कहो क्या तुम दोषी नहीं हो?

दिल पर हाथ रखे फिरना—दे० दिल पकड़े फिरना।

दिल पसीजना—दे० दिल पिघलना।

दिल पाना—मन की थाह पाना। मैने उसका दिल पा लिया है वह और कुछ नहीं थोड़ा सा रुपया चाहता है।

दिल पीछे पड़ना—दे० जी पीछे पड़ना।

दिल फिरना, फिर जाना—दे० जी फिर जाना।

दिल फीका होना—दे० जी खट्टा होना।

दिल फेरना—(१) घृणा दिला देना। (२) खिलाफ़ कर देना। मेरी ओर से उनका दिल फेर दिया है, अब वह मुझसे बोलते तक नहीं।

दिल बढ़ना—दे० जी बढ़ना।

दिल बढ़ाना—दे० जी बढ़ाना।

दिल बहलाना—दे० जी बहलाना।

दिल बाग़ बाग़ होना—बहुत खुश होना। दाग़ की शायरी दिल बाग़ बाग़ करती है।

दिल बुझना—उत्साह या उमंग न रहना। आफ़तें सहते सहते दिल बुझ गया है अब न चाह है न हिम्मत।

दिल बुरा होना
दिल बेकल होना } —दे० जी बुरा होना।

दिल बैठा जाना—दे० जी बैठा जाना।

दिल भटकना—चित्त चंचल, व्यग्र होना। दिल न फिरे दुनिया में भटकता, कोई रहे कांटा न खटकता।

दिल भर आना—दे० जी भर आना।

दिल भरना—दे० जी भरना।

दिल भारी करना—दे० जी भारी करना।

दिल मर जाना—दिल का जोश, हिम्मत, इच्छा, उमंगें आदि जाती रहना।

दिल मसोस कर रह जाना—दे० कलेजा मसोस कर रह जाना।

दिल मसोसना—दे० दिल को मसोसना।

दिल मारना—दे० मन मारना।

दिल मिलना—दे० जी मिलना, मन मिलना।

दिल में आग लगाना—मन को जलाना। तूही दिलों में आग लगाये, तूही दिलों की आग बुझाये।

दिल में आना—दे० जी में आना।

दिल में कांटा सा खटकना—बुरा लगना।

दिल में खुभना, गड़ना—दे० जी में गड़ना खुभना।

दिल में गाँठ, गिरह पड़ना—दे० गाँठ मन में पड़ना।

दिल में घर करना—दे० जी में घर करना।

दिल चुटकियाँ, चुटकी लेना—दे० चुटकी लेना।

दिल में चुभना—दे० जी में गड़ना।

दिल में चोर बैठना—दे० मन में चोर बैठना।

दिल में जगह करना—दे० जी में घर करना।

दिल में दिल डालना—(१) अपना सा दूसरे का दिल बनाना। (२) किसी के दिल पर अपना असर डालना।

दिल में फफोले पड़ना—चित्त को कष्ट, दुख पहुँचना।

दिल में फरक आना } **दिल में बल पड़ना** }—सद्भाव में अंतर आना, मन मोटाव होना। दिलों मे बल पड़ने पर मेल होना असम्भव है।

दिल में रखना—दे० जी में रखना।

दिल मैला करना—दे० मन मैला करना।

दिल रखना—दे० जी रखना।

दिल रुकना—दे० जी रुकना।

दिल लगना—दे० जी लगना।

दिल लगाना—दे० जी लगाना।

दिल ललचना—दे० जी ललचना।

दिल लेना—(१) प्रेम में फँसाना। दिल लेके चले जाओगे कैसे जियेंगे हम। (२) मन की असली बात जानना। मैं उनका दिल ले चुका हूँ उनकी इच्छा यह नहीं है।

दिल लोटना—दे० जी लोटना।

दिल सम्हालना—मन को वश में रखना। जोश था मेरे दिल में जहाँ तक, मैंने सम्हाला दिल को वहाँ तक।

दिल से उठना—करने की इच्छा स्वयं उत्पन्न होना।

दिल से उतरना, गिरना—(१) आँखों से गिरना, मान न रहना। (२) अच्छी न लगना। यह चीज़ मेरे दिल से इतनी उतर गई है जितना कि वह मेरे दिल से गिर गया है।

दिल से उतारना—भुलाना, चाह न रखना। उसने मुझे अपने दिल से उतार दिया है।

दिल से दूर करना—भुला देना, ध्यान छोड़ देना। यह ख्याल ही दिल से दूर कर दो कि वह तुम्हें मिल जायगी।

दिल से धुआँ उठना—आह निकलना। आँसू जारी है मेरी

आँखों से, आह का दिल से धुआँ उठता है।

दिल हट जाना—दे० जी फिर जाना।

दिल हाथ में रखना—प्रसन्न या वश में रखना। उसका दिल तो मैं हाथ मे रखता हूँ चाहे जो करा लूँ।

दिल हाथ में लेना—किसी को प्रसन्न कर अधिकार में, वशीभूत करना। दो दिन मे मालिक का दिल हाथ में ले लूँगा फिर तो मेरा ही राज होगा।

दिल हिलना—दे० जी दहलना।

दिल ही दिल में—मन ही मन, चुपके से। वह दिल ही दिल में जला है मुँह से मीठा बना है।

दिलेरी करना—साहस करना। जब किसी की हिम्मत न पड़ी तो एक आदमी दिलेरी करके झट पुल पर से कूद पड़ा।

दिलो जान से—दे० जी जान से।

दिल्लगी उड़ाना—(१) हँसी करना। वह तुम्हारे कार्यों को महत्व देना तो दूर रहा, दिल्लगी उड़ाता है। (२) हँसी कह कर बात टाल देना। आप तो योंही दिल्लगी उड़ाया करते हैं।

दिल्लगी में—हँसी में, योंही। मैंने दिल्लगी में उन्हें यहाँ से जाने को कहा था वह नाराज़ होकर चले गये।

दिल्ली दूर होना—काम होने में विलंब होना अभी से कहाँ आराम करने जा रहे हो, अभी तो दिल्ली दूर है।

दिवाला निकलना—दिवाला होना।

दिवाला निकालना, मारना—ऋण चुकाने में असमर्थ, दिवालिया बन जाना।

दिशा जाना—आप बैठ जाइये, पिता जी दिशा गये हैं, अभी आते होंगे।

दिसावर उतरना—विदेश मे भाव सस्ता हो जाना। बाँसों का दिसावर उतर गया है, अब यहाँ भी सस्ते हो गये हैं।

दीठ उठाना—ताकने के लिये आँख ऊपर करना।

दीठ उतारना, झाड़ना—मंत्र द्वारा नज़र दूर करना।

दीठ करना—ताकना, देखना।

दीठ खा जाना—बुरी दृष्टि से शारीरिक हानि। बच्चे को ज़रा सजा कर भेजो बस उसकी दीठ खा जाती है।

दीठ गड़ाना, जमाना—एक टक देखना।

दीठ चुराना—(शर्म या डर से) सामने न आना।

[४६७२]

दीठ चूकना—नज़र न पड़ना। दीठ चूकते ही चुराली।

दीठ जलना—नज़र उतारने के लिये राई नोन का टोटका करना।

दीठ जुड़ना—देखा देखी होना, साक्षात्कार होना।

दीठ जोड़ना—आँख मिलाना, देखा देखी करना।

दीठ पर चढ़ना—(१) निगाह में जचना, पसंद आना। (२) खटकना। मुझे फलता फूलता तो वह कभी नहीं देख सकते हर समय दीठ पर चढा रहता हूँ। (३) दे० दीठ खाजाना।

दीठ फिरना—(१) आँखों का दूसरी ओर देखने में लगना। (२) प्रेम या ध्यान न रहना। मेरी ओर से दीठ फिरी है, न जाने क्या कसूर हुआ।

दीठ फिसलना—चमक दमक के कारण नज़र न ठहरना, आँख में चकाचौंध होना।

दीठ फेंकना—दूरी पर नज़र डालना, ताकना।

दीठ फेरना—(१) नज़र हटा लेना, दूसरी ओर देखना। (२) कृपा दृष्टि न रखना। क्यों दीठ फेरली है, क्या है गुनाह मेरा?

दीठ बचाना—(१) दे० दीठ चुराना। (२) न दिखाना, छिपाना। दीठि बचाय सलोनी की आरसी में चिपकाइ गयो बहराई कै।

दीठ बांधना—जादू से नज़र को बाँधना जिससे और का और दिखाई दे।

दीठ बिछाना—(१) बड़ी श्रद्धा से स्वागत करना। (२) उत्सुकता से आने की प्रतीक्षा करना।

दीठ भर देखना—जी भर कर देखना।

दीठ मारना—(१) आँख से इशारा करना। (२) आँख के इशारे से रोकना।

दीठ मारी जाना—देखने की शक्ति न रहना।

दीठ मिलना, मिलाना—दे० दीठ जुड़ना, जोड़ना।

दीठ में आना } दिखाई पड़ना।
दीठ में पड़ना } तुम्हारी दीठ में आवे तो तुम ले आना।

दीठ में समाना—हृदय मे ध्यान बना रहना।

दीठ लगना—(१) देखा देखी से प्रेम होना। दीठ लगी वे पड़े घायल हैं।

दीठ लगाना—ताकना। नहिं लावहिं पर तिय मन दीठी।

दीठ लड़ना—घूराघूरी होना।

दीठ लडाना—घूरना, आँखे आँखों के सामने किए रहना।

दीठ से उतरना, गिरना—श्रद्धा, विश्वास या प्रेम पात्र न रहना।

दीठ होना—इच्छा होना, दृष्टि शक्ति होना।

दीदा दलेल समझना—बेहया बेशर्म समझना। सब को दीदा दलेल समझा है, क्या मुलाक़ात खेल समझा है?

दीदा धोना—बेशर्म होना। खौफ़ दिलों से खो दिये जिसने, शरम से दीदे धो दिये जिसने।

दीदा फोड़ना—आँख फोड़ना।

दीदा लगना—मन लगना। यहाँ इसका दीदा नहीं लगता, क्योंकि काम करना पड़ता है।

दीदे का पानी ढल जाना—बुरे काम में शर्म न रहना, आँखों में लिहाज़ न रहना।

दीदे निकालना—(१) आँखें क्रोधित करना। कैसे भैंस के से दीदे निकाल रही है मानो खा जायगी। (२) अंधा करना। सौत के ये दोनों दीदे निकाल लूँगी।

दीदे पटम होना—आँखें फूट जाना।

दीदे फाड़ कर देखना—टकटकी बाँधकर या आँख खूब खोल कर देखना।

दीदे मटकाना—हाव भाव सहित आँखे चलाना।

दीन दुनिया भूल जाना—कुछ सुध न रहना, ज़रा ख्याल न रहना। उसके पीछे वह दीन दुनिया को भूल गया है, दीवाना हुआ फिरता है।

दीमक खाया—(१) दीमक की खाई वस्तु की तरह गड्ढेदार। (२) अंदर से खोखला। मेरा शरीर तो खाँसी और चिन्ता की दीमक ने खा डाला है। (३) दीमक के कीड़े का खाया हुआ।

दीमक का चाटना—दीमक द्वारा खाया जाना। किताब के पन्ने दीमक चाट गई।

दीप का हँसना—दे० चिराग़ का हँसना।

दीया जलना—दे० चिराग़ जलना।

दीया जलाना—दिवाला निकालना।

दीया जलने के समय—दे० संध्या के समय।

दीया ठंडा करना—दीया बुझाना।

दीया ठंडा होना—घर में रौनक न रहना।

दीया दिखाना—दे०—चिराग दिखाना।

दीया बढ़ाना—दीया बुझाना।

दीया बत्ती करना—दीया जलाने का समान करना, चिराग़ जलाना।

दीया बत्ती का समय—सूर्यास्त का समय।

दीया ले कर ढूँढना—छानबीन करना।

दीये में बत्ती पड़ना—दीया जलाने का समय होना।

दीये से फूल झड़ना—गुल झड़ना।

दीवाना होना—(किसी वस्तु या व्यक्ति के लिये) व्यग्र, हैरान होना।

दीवार उठाना—दीवार बनाना, ऊँची करना।

दीवारें चाटना—दिन काटना।

दुआ माँगना—प्रार्थना करना।

दुआ लगना—आशीर्वाद का फल मिलना।

दुकान उठाना—दुकान या कार-बार बंद करना।

दुकान करना—व्यापार शुरू करना, दुकान खोलना। पानों की दुकान की उसमें भी घटा आया।

दुकान खोलना—(१) दे० दुकान करना। (२) दुकान के किवाड़ खोलना।

दुकान चलना—सौदा खूब बिकना। आजकल तो दुकान अच्छी चल रही है १०) रोज का नफ़ा है।

दुकान बढ़ाना—(१) दुकान के किवाड़ बंद करना। दुकान तो रात को ११ बजे बढ़ाता हूँ।

दुकान लगाना—(१) बिक्री की चीज़ें ठीक ठीक रखना। दुकान तो नौकर लगाता है मैं तो देर में आता हूँ। (२) दुकान बंद करना। दुकान लगाकर रात को आऊँगा। (३) चीज़ें फैलाकर रखना। वह लड़का जहाँ बैठता है दुकान लगा देता है।

दुख उठाना—तकलीफ़ सहना।

दुख देना—कष्ट पहुँचाना।

दुख पड़ना—संकट, विपत्ति आना।

दुख पहुँचना—दुख होना।

दुख पहुँचाना—दुखित करना।

दुख पाना—आपत्ति, संकट, कष्ट सहना।

दुख बटाना—दुख के समय सहायता देना, साथ देना। दुख बटाओगे दुआ पाओगे।

दुख बिसराना—(१) शोक रंज की बात भूलना। (२) जी बहलाना। दुख बिसराने के लिए ज़रा खेल में मन लगाता हूँ।

दुख भरना—कष्ट के दिन गुज़ारना।

दुख भुगतना, भोगना—दुख उठाना।

दुख लगना—खेद या रंज होना।

दुखड़ा पड़ना—स्त्री का विधवा होना।

दुखड़ा पीटना—बड़े दुख से जीवन गुज़ारना। जब से इस घर में आई हूँ दुखड़ा पीटती हूँ एक दिन सुख से नहीं बिताया।

दुखड़ा रोना—दुख की कहानी

कहना। वह दिन रात यही दुखड़ा रोता है कि बहू खराब है।

दुखाना जी—मन में दुख पहुँचाना। बुरा भला कह कर क्यों बिचारी का जी दुखाते हो।

दुग दुगी में दम होना—प्राण गले में आना।

दुटूक बात—स्पष्ट और संक्षेप में कही हुई बात। मुझे यह गड़ बड़ करना नहीं आता, मैं तो जो कुछ कहता हूँ, दुटूक बात कहता हूँ।

दुनिया की हवा लगना—संसारी विषयों का ज्ञान होना। दुनिया की हवा लगी लड़का बिगड़ा।

दुनिया के परदे पर—संसार भर में।

दुनियादारी की बात—दिखावे की बनावटी बात। दुनियादारी की बात रहने दो ठीक ठीक मतलब बतलाओ।

दुनिया भर का—बहुत अधिक। वह दुनिया भर का चालाक है इस लिये दिखावे का दुनिया भर का बखेड़ा फैला रखा है।

दुनिया से उठजाना, दुनिया के परदे से उठजाना—मर जाना।

दुनिया से चल बसना—मर जाना।

दुपट्टा तान कर सोना—मजे से दिन बिताना, निश्चित सोना।

दुपट्टा बदलना—सहेली बनाना।

दुविधा में डालना—संदेह दिलाना, अनिश्चित दशा में करना।

दुबिधा में पड़ना—सोच या संदेह में होना।

दुम के पीछे फिरना—साथ साथ लगा रहना।

दुम दबा कर भागना, चल देना—डरपोक कुत्ते की तरह चल देना, भागना। मैं तो ऐसा दुम दबा कर भागा कि घर आकर ही दम लिया।

दुम दबा जाना—(१) डर से भाग जाना। (२) भय से कोई काम या इरादा छोड़ना। बस जेल का नाम सुनते ही दुम दबा गये, उन्हें देखो जो फासी के तख़्ते पर चढ़ते हैं।

दुम में घुसना—गायब हो जाना। एक चाँटे में सारी बदमाशी दुम में घुस जायगी।

दुम में घुसा रहना—खुशामद के मारे साथ लगे रहना।

दुम में रस्सा बाँधूँ—नटखट चौपाए की तरह बाँधूँ (विनोद)।

दुम हिला कर बैठना—साफ करके बैठना। कुत्ता भी दुम हिला कर बैठता है तुम तो आदमी हो, कपड़े झाड़ कर बिछाओ।

दुम हिलाना—प्रसन्नता या चाहना

प्रकट करना। तुम क्यों दुम हिलाते हो तुम्हें न मिलेगी।

दुर दुर करना—तिरस्कार या घृणा पूर्वक हटाना।

दुर दुर फिट फिट—बेइज्जती।

दुरा गौन देना—लड़की को दूसरी बार सुसराल भेजना।

दुरा गौन लाना—बहू को दुबारा लाना।

दुरुस्त करना—(१) चाल सुधारना। (२) दड देना। दो थप्पड़ों मे दुरुस्त कर दूँगा।

दुलत्ती छाँटना, झाड़ना—दोनों लाते मारना।

दुलत्ती फेंकना—दोनों लात चलाना।

दुशाले में लपेट कर मारना, लगाना—मीठे शब्दों में आक्षेप करना या बुरा भला कहना। शरीफ को दुशाले में लपेट कर ही लगाने चाहिये और उजड्ड को साफ़ साफ।

दुह लेना—(१) सार खींच लेना। (२) धन हर लेना। बेचारे भोले रईस को खूब दुह लिया खाने से तग करके छोड़ा।

दुहाई तिहाई करना—बार बार शिकायत करना। अब शाम को उनसे कहना, यदि दुहाई तिहाई करोगे तो मास्टर साहब नाराज़ हो जायँगे।

दुहाई देना—रक्षा या बचाव के लिये पुकारना। हम बचाने वाले कौन हैं, राजा दुष्यंत की दुहाई दे वही बचावेगा। किसी ने आकर दुहाई दी कि मेरी गाय चोर लिये जाता है।

दुहाई फिरना—(१) राजा के नाम की घोषणा होना। बैठे राम राजसिंहासन चहुँदिसि फिरी दुहाई। (२) प्रताप का डंका होना। मीड़ि डारे राजा सब दुहाई फेरी रब की। (३) जयजयकार।

दूज का चाँद होना—बहुत दिनों बाद दर्शन होना, कम दिखाई पड़ना। आप तो दूज का चाँद हो गये हैं महिनों हो जाते हैं, दर्शन ही नहीं होते।

दूध उगलना उलटना—बच्चे का दूध पीकर कै कर देना।

दूध उछालना—ठडा करने के लिये धार बाँध कर बार बार बर्तनों में डालना।

दूध उतरना—स्तनों में दूध भर जाना। दूध उतरता ही नहीं, क्या कारण है!

दूध का दूध पानी का पानी करना—ठीक ठीक न्याय करना। दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया कसूर जिसका था सज़ा उसे ही मिली।

दूध का बच्चा होना—दूध पीने वाला बच्चा।

दूध का सा उबाल—शीघ्र शांत होजाने वाला क्रोध, उत्साह आदि मनोवेगे। तुम्हें तो दूध का सा उबाल उठता है, करो तो अभी वरना फिर कभी नहीं।

दूध की मक्खी—तुच्छ, तिरस्कृत पदार्थ।

दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंकना—तुच्छ समझ कर निकाल बाहर करना। उन्होंने उसे एक दम दूध की मक्खी की तरह घर से बाहर निकाल फेंका।

दूध की बू मुँह से आना—अनुभव, ज्ञान हीन, भोला होना। तुम अभी क्या जानों अभी तुम्हारे मुँह से दूध की बू आती है।

दूध के दांत—सब से पहिले दांत।

दूध के दांत न टूटना—बच्चा ही होना। अभी तो दूध के भी दांत नहीं टूटे वह क्या बात करेगा।

दूध चढ़ना—(१) दूध कम निकलना। (२) दूध गर्म करना।

दूध चढ़ाना—कई दिनों से इसकी माँ का दूध चढ़ गया है। (२) दूध की मात्रा बढ़ाना। (३) दूध का भाव तेज़ होना।

दूध चुराना—लेना या दूध कम निकलना। दुहने में देर हो गई गाय ने झट दूध चुरा लिया।

दूध छुड़ाना—दूध पीने की आदत छुड़ाना।

दूध डालना—दे० दूध उगलना।

दूध तोड़ना—(१) गाय आदि का दूध देना बन्द या कम कर देना। (२) गरम दूध को ठंडा करने के लिये हिलाना।

दूध पड़ना—अनाज में रस पड़ना।

दूध पिलाना—बालक का मुँह स्तनों से लगा कर उसे दूध पीने देना।

दूध पीता बच्चा—गोद का बच्चा।

दूध भर आना—माता के, प्रेम के कारण या जब बच्चे को भूख लगती है, स्तनों में दूध आ जाना।

दूध मूत करना—बचपन में पालना। सारे दूध-मूत किए बड़े हुए तो काम न आए।

दून की लेना, हांकना—शेखी हाँकना, बढ़ चढ़ कर या गप्प कहना। वह तो दून की हाँकता है ऐसा भी कहीं हो सकता है?

दून की सूझना—शक्ति से बाहर की बात सूझना। तुम्हें तो दून की सूझती है, इतना तो तुम दस बरस में भी न कर पाओगे।

दूबदू कहना—किसी के सामने कहना। यदि तुमने उसे जुआ खेलते देखा है, तो उसके दूबदू क्यों नहीं कहते।

दूबदू होना — सम्मुख हो बातें करना। अब तो जब वह भी दूबदू होगा, तभी हमारी तुम्हारी बातें होंगी।

दूर करना—(१) अलग करना। (२) मिटाना। कपड़े का धब्बा दूर करो। हमने बुरे आदमियों को पहिले ही दूर कर दिया।

दूर की कहना—समझदारी से होने वाले फल को बताना। उसने बड़ी दूर की कही थी कि आगे यह होगा, बात ठीक थी।

दूर की बात होना—(१) भविष्य की बात। (२) सूक्ष्म भेद। (३) मुश्किल काम। तुम्हारे लिये यह दूर की बात है।

दूर की सुनाना —बड़ों को गालियाँ देना। मेरी तुम्हारी लड़ाई है, मुझे कुछ कह लो, दूर की मत सुनाओ।

दूर की सूझना—सूक्ष्म बात का ख़्याल आना। बहुत दूर की सूझी ठीक है होगा भी ऐसा ही, मैं भी समझ गया।

दूर क्यों जाइए, जायँ—पास में ही देखिये। दूर क्यों जायँ अपने घर का हाल भी तो ऐसा ही है।

दूर खींचना—घमंड करना। दूर इतना आपको मुझसे न ए खूँ खार खींच, एक दिन इससे तो तू मेरी कत्ल की तलवार खींच।

दूर तक पहुँचना—(१) बड़ों को गाली देना। (२) आगे चल कर आने वाली बात कहना।

दूर दूर करना—घृणा, तिरस्कार करना।

दूर पहुँचना—(१) दूर की बात सोचना। शक्ति के बाहर। तुम तो दूर पहुँच जाते हो अरे जो बन सके वह तो करो।

दूर भागना, रहना — पास न जाना। हम तो नीच लोगों से सदा दूर भागते हैं।

दूर होना—(१) हट जाना। (२) मिट जाना, नष्ट होना। दूर हो मुए।

दृग डालना, देना—देखना।

दृग फेरना—नाराज़ रहना। दृग फेर लिये उनने जबते, तब ते यह हाल बुरो ही भयो है।

दृष्टि आना—दिखाई देना।

दृष्टि उठाना
दृष्टि करना
दृष्टि गड़ाना, जमाना
दृष्टि चलाना
दृष्टि चुराना
दृष्टि चूकना
दृष्टि जुड़ना
दृष्टि जोड़ना
दृष्टि देना
दृष्टि पड़ना
दृष्टि पथ में आना

} आँख—के सारे मुहावरे देखो

[४८३४]

दृष्टि पर चढ़ना
दृष्टि फिसलना
दृष्टि फेंकना
दृष्टि फेरना
दृष्टि बचाना
दृष्टि बाँधना
दृष्टि बिछाना
दृष्टि भर देखना
दृष्टि मारना
दृष्टि मिलना
दृष्टि मिलाना
दृष्टि में आना
दृष्टि में पड़ना
दृष्टि में समाना
दृष्टि रखना
दृष्टि लगना
दृष्टि लगाना
दृष्टि लड़ाना
दृष्टि से उतरना, गिरना

—आँखें में देखिए

देखते देखते—(१) सामने। (२) तुरंत जान बूझ कर, देख भाल कर देखते देखते कौन कुएँ में गिरता है।

देखते रह जाना—चकित हो जाना, हक्का बक्का रह जाना। उसने देखते देखते सर्दियों में आग मँगा दिये मैं देखता रह गया।

देखते हुए—रहते हुए, सामने। मेरे देखते हुए ऐसा कुकर्म नहीं हो सकता।

देखना चाहिए, देखा चाहिये, देखिये, देखो—कौन जाने (क्या होगा ?) आने के लिए, उन्होंने कह तो दिया है, देखना चाहिए, आते हैं या नहीं।

देखना सुनना—पूरा पता लगाना। बिना देखे सुने कैसे सम्मति दे दूँ ?

देखने में—(१) बाहर से, साधारण व्यवहार से। देखने में तो वह बहुत सीधा है पर अंदर काला है। (२) रूप रंग में। देखने में वह बड़ी सुन्दर है।

देख लेंगे—उपाय या प्रतिकार करेंगे। हम देख लेंगे, उनकी शक्ति भर (कितनी शक्ति है) वे कर डालें।

देखा जायगा—(१) फिर विचार करेंगे। (२) पीछे जो कुछ करना करेंगे। अब तो इन्हें टालो, फिर देखा जायगा।

देखो—(१) ध्यान दो। देखो, इसी रुपये के लिये लोग कितना तरसते हैं। (२) सावधान रहो। देखो, फिर कभी ऐसा न होने पावे। (३) सुनो, इधर आओ।

दे मारना—जमीन पर गिरा देना, पटक देना।

देर लगाना—विलम्ब करना। वह तो तुम्हारे साथ से बड़ी देर का आगया, तुमने रास्ते में कही देर लगा ली।

देवलोक को सिधारना—मर जाना।

देशावर आना—अन्य देशों से माल आना।

देह छूटना—मौत होना।

देह धरना—जन्म लेना। देह धरे का यह फल भाई, भजिय राम सब काम बिहाई।

देह बिसारना—शरीर की सुध न रखना, होश हवास न रखना।

दैयन कै—बड़ी मुश्किल से, राम राम करके।

दैव लगना—बुरे दिन आना, ईश्वर कोप होना।

दो आँसू डालना, गिराना, बहाना—कुछ रोना। हम भी उसके शोक मे सम्मिलित होकर दो आँसू डाल आवे।

दो एक—कुछ थोड़े से। दो एक बाते करके चले आवेगे।

दो कौड़ी का आदमी होना—(१) गरीब। (२) किसी काम का नहीं, नालायक। वह दो कौड़ी का आदमी है, उससे भेद न कहना।

दो कौड़ी की इज्जत होना—बेइज़्ज़त होना।

दो कौड़ी की बात कर देना—बात को बिगाड़ देना, बात बदल जाना। तुमने यह कह कर मज़ा किरकिरा कर दिया, दो कौड़ी की बात कर दी।

दो चार—कुछ। दो चार आदमी चले आये, बस।

दो चार होना—मुलाकात होना।

दो टूक कहना, जवाब देना—सच, खरी कहना, साफ। हम तो दो टूक कहते हैं बुरी लगे चाहे भली।

दो दिन का—कुछ समय का।

दो दिन का महमान होना—(१) जाने वाला। (२) मरने वाला।

दो दो दाने को फिरना—खाना तक माँगते फिरना, दरिद्र होना।

दो दो बातें करना—कहना सुनना। आज दो दो बाते कर ले दिल साफ हो जाय।

दो दो मुँह या गाल हँस लेना—थोड़ा हँस लेना।

दो नावों पर पैर रखना—दोनों तरफ़ होना। दो नावों पर पैर नहीं रख सकते या तो हमारे ही साथ चलो या उनके साथ।

दो सिर होना—मरने से न डरना फालतू सिर होना। किसके दो सिर है जो तलवार के सामने जाय।

दोना खाना, चाटना—बाज़ार की चीज़ खाना। घर खाना न बने तो दोने चाटते फिरो।

दोना चढ़ाना—प्रसाद भोग लगाना। मंदिर में दोना चढ़ाऊँगी।

दोना देना—(१) दे० दोना चढ़ाना। (२) अपने थाल में से भोजन प्रसाद देना।

दोनों की चाट पड़ना—बाजारी चाट का चस्का पड़ना।

दोपहर ढलना—दिन में दो तीन बजे का वक्त।

दोष देना लगाना—अवगुण, नुक्स बताना।

दौड़ धूप करना—बहुत उद्योग करना।

दौड़ मन की—कल्पना, सूझ।

दौड़ मारना, लगाना—(१) जल्दी जाना। (२) दूर तक जाना। मामा जी के यहाँ तक की दौड़ लगाते (पहुँचते) हो?

दौर चलना—शराब पिया जाना।

दौरा करना—भ्रमण करना। वर्षा पीड़ितों की देख भाल के लिये, ज़िले के हाकिम लोग गाँवों में दौरा कर रहे हैं।

दौरा सुपुर्द करना होना—सेशन-जज के पास भेजना, भेजा जाना।

दौरे पर रहना, होना—बाहर जाँच आदि के लिये जाना।

दौलत का मेंह बरसना—खूब संपत्ति आना। मेंह कहीं दौलत का बरसता, है कोई पानी को तरसता।

दौलत की हवा लगना—रुपये का घमंड होना। वह क्यों आवेगा उसे तो दौलत की हवा लगी है।

द्राविड़ी प्राणायाम खींचना—सीधी बात को बहुत घुमाना, सोचना। एक बात को लेकर द्राविड़ी प्राणायाम खींच जाते हो।

द्वार खुलना—उपाय, मार्ग निकलना। अब द्वार खुल गया इस बहाने मैं सीधा चला जाऊँगा।

द्वार द्वार फिरना—(१) काम बनाने के लिये घर घर जाना। (२) घर घर भीख माँगना। (३) द्वार द्वार फिरो इससे घर ही बैठो।

द्वारा लगना-(१) दरवाजा बद होना। (२) उपाय न रहना। (३) किवाड़ के पीछे छिपकर देखना, सुनना।

द्वार लगाना — किवाड़ बंद करना।

द्वारा (किसी के)—(१) करने से। (२) सहायता से। (३) उपयोग से।

ध

धँधले आते हैं (किसी को)—छल छंद का अभ्यास है।

धँसना जी (मन) में—(१) दिल मे जमना। लाख समझाओ उसके दिल में एक नहीं धँसती। (२) बराबर ध्यान रहना। मन मँह धँसी

मनोहर मूरति टरति नहीं वह टारे।

धक धक जी करना—दे० कलेजा धक धक करना।

धक हो जाना (जी)—(१) चौंक उठना। (२) जी दहल जाना।

धक होना, धक से होना (जी)—(१) घबराहट होना। (२) भय होना, दहल जाना।

धकेल देना—ढकेलना। कल एक लंगूर ने एक स्त्री को छत की मुड़ेरी पर से नीचे धकेल दिया जिससे उसके बड़ी चोट आई।

धक्का खाना—(१) धक्का सहना। (२) नुकसान उठाना।

धक्का देना—ढकेलना। यहाँ से सीधी तरह उठ कर चले जाओ, नहीं तो धक्का देकर निकाल दूँगा।

धक्का लगना—हानि होना। अब की बार रुई के सौदे में तो उसे ऐसा धक्का लगा है कि अंटाचित हो गया है।

धक्के खाते फिरना—मारे मारे फिरना। वह तो नौकरी छुट गई अब धक्के खाते फिर रहे हैं।

धक्के देकर निकालना—बे इज्जती से निकालना। वह दरबार से धक्के देकर निकाला गया।

धक्का उठाना—घाटा सहना।

धज्जियाँ उड़ना—(१) टुकड़े टुकड़े हो जाना। (२) निंदा, दुर्गति होना दोषों का खूब उधेड़ा जाना।

धज्जियाँ उड़ाना—(१) खंड खंड करना। (२) बोटी काट डालना। (३) निन्दा आदि करना। सब के सामने सभा में उसकी धज्जियाँ उड़ाई गई।

धज्जियाँ लगना—चीथड़े पहिनने की नौबत आना।

धज्जियाँ लेना—दोष निकालना, बनाना, दुर्गति करना।

धज्जी हो जाना—(१) दुबल हो जाना। (२) फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाना।

धड़ धड़ाता हुआ—(१) शीघ्रता से शब्द करती हुई। गाड़ी धड़ धड़ाती हुई निकल गई। (२) बेधड़क, निःशङ्क। तुम धड़धड़ाते भीतर चले जाना, कोई न रोकेगा।

धड़ में डालना, उतारना—पेट में डालना। जरा सी शराब धड़ में डाली और नशा चढ़ा।

धड़ रह जाना—लकवा मारना, शरीर सुन्न हो जाना।

धड़ से सिर अलग होना—सिर कटना।

धड़कना छाती या दिल—दिल काँपना, भय या आशंका से हृदय में धड़कन होना।

धड़ल्ले से या धड़ल्ले के साथ—(१) बिना रुकावट के। (२) बिना

भय संकोच के। जो कहना हो धड़ल्ले के साथ कहो, कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड सकता।

धड़ा उठाना—तोलना।

धड़ा करना—(१) तराजू के पलड़े बराबर करना।

धड़ा बाँधना—(१) दे० धड़ा करना। (२) कलंक लगाना। (३) दल बाँधना।

धड़ाके से—(१) शीघ्र। (२) बिना रोक टोक। धड़ाके से कर डालो, डरो मत। (३) धड़ धड़ करते हुए।

धाड़यो होना—ढेरसा, बहुत।

धड़ी धड़ा करके लुटाना, लूटना—सब कुछ लुटाना, लूटना।

धत होना—चल देना।

धता करना—हटाना चलता करना। उसे पुलिस से पहिले ही धता कर दिया था।

धता बताना—(१) दे० धता करना। (२) बहाना करके टालना, पीछा छुड़ाना। वह अच्छे अच्छों को धता बता देता है, आप क्या वसूल करेंगे।

धतूरा खाए फिरना—उन्मत्त घूमना, दीवाना बना फिरना। सूरदास प्रभु दरसन कारन मानहुँ फिरत धतूरा खाए।

धन उड़ाना—(१) जल्दी खर्च डालना। (२) सम्पत्ति दबा लेना, चुरा लेना। उड़ाया हुआ धन यों ही उडाया जाता है।

धन कुट्टी करना—बहुत पीटना, कचूमर निकालना। क्यों बेचारे बच्चे को धन कुट्टी किए देती हो।

धनिये की खोपड़ी में पानी पिलाना—प्यास से मारना, बहुत तंग करना। बेचारी को पानी भी धनिये की खोपड़ी में पिलाया जाता है, दुखी है।

धनी धोरी—(१) वारिस, अधिकारी। इस वस्तु का कोई धनी धोरी नहीं। (२) धन मर्यादा वाला।

धनी बात का होना—सत्य प्रतिज्ञ होना। वह बात का धनी है, कह देगा तो करेगा भी।

धनी मानी—धनवान, इज्जतदार।

धन्ना सेठ (का नाती) होना—बहुत धनी (व्यंग्य) हम जानते हैं तुम्हीं एक धन्ना सेठ के नाती हो न जो खर्च की परवा नहीं?

धप्पा मारना—माल धोखे से उडाना। धप्पा मार कर लाए हैं, कमाया क्या है?

धप्पा लगना—(१) चाँटा लगना। (२) नुकसान होना।

धब्बा नाम में लगना, लगाना—बदनामी का काम करना।

[४६५०]

धब्बा रखना (किसी पर)—कलंक लगाना।

धमकना (आ, जा)—एकदम पहुँच जाना। मैं कह ही रहा था कि वह आ धमका, बात अधूरी रह गई।

धमकियाँ देना—भय दिखाना। यदि तुम सच्चे हो, तो वह कितनी ही धमकियाँ दे डरना मत।

धमकी में आना – डराने में आकर (काम कर बैठना)। तुम उनकी धमकियों में मत आओ।

धमा चौकड़ी मचाना—ऊधम मचाना। क्या धमा चौकड़ी मचाई है, तेरी शायद शामत आई है।

धरती का फूल—(१) कुकर मुत्ता। (२) मेढक। (३) नया अमीर।

धरती बाहना—(१) जोतना। (२) परिश्रम करना।

धरती में (पर) पांव न रखना—घमंड में भरे, ऐंठे फिरना।

धरन खिसकना, टलना, डिगना, सरकना — गर्भाशय की नस का हट जाना।

धरना देना—अड़ कर बैठना, न हटना।

धर दबाना, दबोचना—(१) जबरदस्ती वश में कर लेना। कुत्ते ने बिल्ली को धर दबोचा। (२) तर्क या वाद विवाद में हराना, गलती पकड़ना।

धर पकड़ कर—जबरदस्ती, जैसे तैसे। धर पकड़ कर कहीं काम होता है ?

धरा ढका – बचा कर रखी वस्तु। चूल्हा मत चढाओ धरा ढका ही खालेंगे।

धरा रह जाना—व्यर्थ रह जाना। सब तर्क वक्त पर धरे रह जाते हैं, जब डंडा पडता है।

धर्म उठाना—धर्म से कहना। यदि तुम धर्म उठा जाओ कि यह पुस्तक मेरी है, तो जाओ मैंने छोडी।

धर्म कमाना — धर्म के काम करना।

धर्म करना—पुण्य कार्य करना। संसार के इन झंझटों ही में फँसे रहते हो या थोड़ा बहुत धर्म भी करते हो।

धर्म खाना—ईमान उठाना, धर्म की कसम खाना।

धर्म बिगाडना—(१) धर्म के विरुद्ध काम करना। (२) सतीत्व नष्ट करना।

धर्म में आना—आत्मा को ठीक जान पड़ना। जो धर्म में आवे करो।

धर्म रखना—धर्म बचाना। धरा में धर्म राख्यौ, माला राखी गर में।

धर्मराज करना—न्याय से शासन करना। राजा हरिश्चन्द्र अपने साम्राज्य मे धर्मराज करते थे।

धर्म लगती कहना—धर्म का ध्यान रख कर, उचित, सत्य कहना। हम तो धर्म लगती कहेंगे चाहे बुरी लगे चाहे भली।

धर्म से कहना—सत्य, उचित कहना। धर्म से कहना असली बात क्या है ?

धाक जमना—असर जमना। महन्त जी की उन इलाकों में बड़ी धाक जमी है।

धाक बँधना—आतंक, रौब छाना। शहर भर मे उनकी धाक बँध गई, वही नेता बने।

धाक बाँधना—रौब, दबदबा जमाना। जहाँ जाते हैं अपनी धाक बाँध देते हैं।

धागा भरना—तागा भर कर रफू करना।

धागे धागे करना—चिथड़े चिथड़े चीर चीर करना।

धाड़ पड़ना—जल्दी होना। ऐसी क्या धाड पड़ी है जो अभी चले चले।

धातु गिरना—प्रमेह, पेशाब के साथ वीर्यपात होना।

धानपान होना—बहुत नाजुक होना। वह तो ऐसा धानपान है कि थप्पड़ मारोगे तो चार जगह जाकर गिरेगा।

धाय पूजना—दूर रहना, हाथ जोड़ना। धाय पूजे इस नौकरी से।

धार गिरना—किसी हथियार की धार तीक्ष्ण न रहना। इस चाकू की धार गिर रही है।

धार चढ़ाना—देवता पर या नदी में जल, दूध धार बाँध कर डालना।

धार टूटना—लगातार-गिरना बद होना।

धार देना—(१) दूध देना। (२) फायदा पहुँचाना। हमें क्या धार देते हो जो हम रोटी खिलावे।

धार पर मारना—परवा न करना, तुच्छ समझना। (२) क्या लोभ दिखाते हो, हम ऐसे रुपये धार पर मारते हैं।

धार बँधना—(१) धार बन कर गिरना। (२) मंत्र बल से अस्त्र की तेज़ी चली जाना।

धार बाँधना—(१) तरल पदार्थ को धार बना कर गिराना। (२) मंत्र बल से हथियार की धार निकम्मी कर देना।

धावा बोलना—चढ़ाई की आज्ञा देना। फौरन किले पर धावा बोल दिया।

धावा मारना — जल्दी जल्दी

चलना। ऐसी धूप में चार कोस का धावा मार कर आ रहे हैं।

धाह मारना—चीखना, चिल्लाना। क्यों धाह मारता है, क्या तुझे कोई यहाँ काट रहा है।

धींगा धींगी करना—(१) जबरदस्ती करना। (२) शरारत करना।

धींगा मुष्टी करना—झगड़ा करना। यदि वह सीधी तरह दे तो ले आना, अधिक धींगा मुष्टी मत करना।

धीमा पड़ना—शान्त होना। अब तो बहुत दिनों से कांग्रेस का प्रचार कुछ धीमा पड़ गया है।

धीरज बँधाना—धैर्य देना। उसका सिवाय उसके छोटे पुत्र के संसार में कोई धीरज बँधाने वाला भी नहीं है।

धीरज बाँधना—संतोष करना। अब होना था सो हो गया, अधिक रोने से काम न चलेगा, अब हृदय मे धीरज बाँधो।

धुँधले का वक्त—अँधेरे के समय, सुबह या शाम को।

धुआँ उठना—आह निकलना। क्या करूँ हाय, कलेजे से धुआँ उठता है।

धुआँ काढ़ना निकालना—बढ़ बढ़ कर शेखी हाँकना। जस अपने मुँह काढ़े धुआँ, चाहेसि परा नरक के कुआँ।

धुआँ देना—(१) धुआँ देना। यह तेल बड़ा धुआँ देता है। (२) धुआँ पहुँचाना, लगाना। गन्धक का धुआँ दो मच्छर मर जावेंगे।

धुआँ रमना—धुआँ भरा रहना।

धुआँ सा मुँह होना—मुख मलीन होना, रंगत बिगड़ना। शर्म के मारे मुँह धुआँ सा हो गया।

धुआँ होना—काला पड़ना।

धुएँ उड़ाना, बखेरना—दे० धज्जियाँ उड़ाना।

धुएँ का धौरहर—बालू की भीत, जल्द मिटने वाला आयोजन। ये संसार धुएँ का धौरहर क्षण भर में मिटि जैहै।

धुएँ के बादल उड़ाना—(१) गप्पें हाँकना, बड़ी बड़ी झूठी बातें बनाना। तुम काम कुछ नहीं करते धुएँ के बादल उड़ाते रहते हो। (२) हुक्का ही पीते रहना।

धुकधुकी धरकना—जी धकधक करना। मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की, सुरगन सभय धुकधुकी धरकी।

धुन का पक्का—काम में लग जाय तो पूरा ही करे। वह धुन का बड़ा पक्का है, जी में आगया तो कर ही डालेगा।

धुन बाँधना—ख्याल में जमाना। अब तो काम की धुन बाँध ली, कर ही डालेंगे।

धुन समाना, सवार होना—करने का ध्यान होना। अब तो कमाने की धुन सवार है, और कुछ नहीं।

धुरसिर से—बिलकुल शुरू से। बना बनाया काम बिगाड़ दिया, अब हमें फिर धुरसिर से करना पड़ेगा।

धुरें उड़ाना, उड़ा देना, बखेरना—(१) टुकड़े टुकड़े कर डालना। (२) छिन्न भिन्न करना। (३) दुर्गति करना। (४) बहुत मारना पीटना।

धूनी जगना, लगना—(साधुओं के पास की) आग जलना।

धूनी जगाना, लगाना—(१) साधुओं का अपने पास आग जलाना। (२) विरक्त, योगी होना। धूनी लगा भये सन्यासी, भोग वृत्ति तौहू नहिं छूटी। (३) शरीर तपाना।

धूनी देना—धुआँ पहुँचाना, उठाना। इन मिर्चों की धूनी दो तो भूत छोड़ेगा।

धूनी रमाना—दे० धूनी जगाना।

धूप खाना—धूप में गर्म होना, तपना। जाड़े में लोग धूप खाते हैं। थोड़ा धूप खा लो तो काँपना दूर होगा।

धूप खिलाना—धूप में रखना।

धूप चढ़ना—दिन चढ़ना।

धूप दिखाना, देना—धूप में रखना। कपड़ों को धूप दे दो नहीं कीड़ा लग जायगा।

धूप निकलना—सूर्योदय के पीछे प्रकाश, ताप फैलना।

धूप पड़ना—सूर्य ताप अधिक होना।

धूप में बाल, चूँड़ा सफेद करना—बूढ़ा होने पर भी अनुभव न होना। हमने भी दुनिया देखी है, बाल धूप में नहीं सफेद किए।

धूप लेना—दे० धूप देना।

धूम डालना—ऊधम करना हल्ला गुल्ला करना। सारे शहर में डाकुओं ने धूम डाल रखी थी।

धूम धड़का मचाना—हल्ला गुल्ला, शोर। बरात में खूब धूम धड़का मचाया।

धूरा, करना, देना—शीत से अंग सुन्न होने पर गरम राख आदि की बुकनी मलना।

धूरा देना—बहकाना। औरत को धूरा देकर ज़ेवर ले गया।

धूल उड़ना (कहीं)—(१) सन्नाटा होना। जहाँ कल नुमायश की चहल पहल थी आज वहाँ धूल उड़ रही है। (२) बरबादी, नाश होना।

धूल उड़ना (किसी की)—(१)

बदनामी होना। (२) हँसी उडना। कल सभा में उनकी खूब धूल उडी।

धूल उडाना (किसी की)—(१) बुराइयों को ज़ाहिर करना। बदनामी करना (२) हँसी करना।

धूल उडाते फिरना—बुरी हालत, मारे मारे फिरना। क्यों इधर से उधर धूल उडाते फिर रहे हो कोई सहायता न देगा।

धूल की रस्सी बटना—असम्भव करने का प्रयत्न करना। धूल की भी कहीं रस्सी बटी जाती है, तुम्हारी मेहनत फिजूल है।

धूल चाटना—(१) बहुत गिड़ गिडाना। (२) बड़ी नम्रता दिखाना। उनके सामने धूल भी चाटो तो भी दया न करें।

धूल छानना—दे० खाक छानना।

धूल झडना—मार पड़ना (विनोद ऐसे घूँसों से क्या होता है, कोट की धूल झडती है।

धूल झाडना—(१) मारना, पीटना (विनोद)। आप मारते हैं या कोट की धूल झाडते हैं। (२) सेवा, खुशामद करना। वह तो अमीरों की धूल झाड़ता फिरता है।

धूल डालना—दे० खाक डालना।

धूल फाँकना—दे० खाक फाँकना।

धूल बरसना—रौनक न रहना। अब तो वहाँ धूल बरस रही है, कल तक चहल पहल थी।

धूल में मिलना—दे० खाक मे मिलना मिलाना।

धूल मिलाना
धूल ले डालना } बहुत फेरे करना। उसने दरवाजे की धूल ले डाली।

धूल समझना—तुच्छ मानना।

धूल सिर पर डालना—पछ-ताना। पदमिनि गवन हंस गए दूरी, हस्ति लाज मेलहिं सिरधूरी।

धूल होना (पैर की)—नाचीज़, तुच्छ होना।

धोखा उठाना—विश्वास करके नुकसान सहना, असावधानता से हानि होना। अच्छी तरह जान लिया करो, नहीं तो धोखा उठाओगे।

धोखे की टट्टी होना—(१) वह परदा जिसकी ओट में शिकार खेलते हैं। (२) असली बात छिपाने वाली चीज़। मै उनके आगे से धोखे की टट्टी हटाता हूँ। (३) दिखाऊ चीज़, बाहरी बनावट भर। यह धोखे की टट्टी है, पास जाकर देखो कुछ भी सौन्दर्य नहीं।

धोखा खड़ा करना या रचना—जाल फैलाना, माया रचना। यह तो धोखा खड़ा किया हुआ है, रुपया इकट्ठा करके झट भाग जावेगा।

[५०५१]

धोखा खाना—ठगा जाना, किसी के छल या कपट के कारण भ्रम मे पड़ जाना, नुकसान उठाना। औरन धोखा देत जो आपहि धोखा खात।

धोखा देना—(१) भुलावा देना, छलना। लोगों को धोखा देने के लिए यह सब ढग रचा है। (२) भ्रम में डालना, विश्वास घाते करना। हमको मित्रों ने धोखा दिया, इसी से सब कुछ खो बैठे। (३) अकस्मात मर कर, नष्ट होकर दुख पहुँचाना। इस बुढापे में वह पुत्र को लेकर दिन बिताते थे, उसने भी धोखा दिया कल चल बसा। (४) चिमनी कमजोर है किसी दिन धोखा देगी।

धोखा पड़ना—और का और होना।

धोखा लगना—(१) कसर, त्रुटि होना। (२) धोखा दिखाई देना। मुझे तो धोखा लगता है, कहीं वही न हो?

धोखा लगाना—कमी करना। मैं कहने में कोई धोखा न लगाऊँगा, करना उसके हाथों है।

धोत ढीली करना, होना—डर लगना, भय-कंपन। सिपाही आते देख दुकनदार की धोती ढीली हो गई। क्रोध या आनन्द की वजह से आपे से बाहर हो जाना।

धोती बाँधना—(१) धोती पहनना मुद्रा श्रवन जनेऊ काँधे, कनक पत्र धोती कटि बाँधे। (२) तैयार होना।

धो बहाना—न रहने देना, छोड़ना। गंगा में पाप धो बहाए।

धोब पड़ना—धोया जाना। कपड़े पर कई धोब पड़े पर रंग न गया।

धोबी का कुत्ता—निकम्मा, व्यर्थ घुमक्कड़। धोबी का कुत्ता घर का न घाट का (कहावत)।

धोबी का छैला—(१) दूसरे के माल पर इतराने वाला। (२) माग कर कपड़े पहनने वाला। वह धोबी के छैले हैं, यह कपड़े उनके न समझो।

धोया धाया (दूध का)—(१) निर्दोष निष्कलंक। (२) निर्लज्ज, धृष्ट। (३) निष्पक्ष। आप तो बिल्कुल दूध के धोये धाये हैं आप ऐसी बातो मे शामिल नहीं (व्यंग्य)।

धोवन पैर का होना—मुकाबिले मे तुच्छ होना। हमारे सेठ के सामने यह सेठ पैर का धोवन भी नहीं।

धौं धौं करना—खाँसना। यह बुड्ढा यहाँ पड़ा पड़ा रात दिन धौं धौं किया करता है।

धौंक लगना, धौंका लगना—लू लगना।

[५०६६]

धौंकनी लगना—दम फूलना, साँस चढना। भागते भागते धौंकनी लग गई।

धौंस की चलना—चाल चलना, रौब से काम निकालना।

धौंस जमाना—रौब कायम करना। दरोग़ा ने आकर उलटे सराफ़ पर धौंस जमाई।

धौंस देना, ध्वा... —चढाई का डका बजाना। जरासध असुर सेना ले धौंसा दे चला।

धौस पट्टी में आना—रौब या बहकाये में आकर करने को तैयार हो जाना। इनकी धौस पट्टी मे मत आओ मालिक खुद कहे तो करना।

धौंस बाँधना—(१) खर्चा सिर मढना। काम अपने घौंस हम पर बाँधी। (२) रौब जमाना।

धौल कसना, जमाना—थप्पड़ मारना।

धौल खाना—थप्पड़ सहना, खाना।

धौल धूर्त होना—पक्का चाल बाज। ऊधो ! हम यह कैसे माने। धूर्त धौल लपट जैसे पट हरि तैसे औरन जाने।

धौला पड़ना—पीला पड जाना। अब की बार इतना बीमार रहा है कि धौला पड गया है।

ध्यान आना—विचार पैदा होना, याद आना।

ध्यान छूटना—एकाग्रता नष्ट होना। अप्सरा गान से ऋषि का ध्यान छूटा।

ध्यान जमना—(१) चित्त एकाग्र होना। (२) विचार स्थिर होना। यही ध्यान जमा कि ध्यान जमे तो कर डालें।

ध्यान जाना—दृष्टि पडना, याद आना। मेरा ध्यान उधर गया तो उसे खड़ी ही पाया।

ध्यान दिलाना—(१) याद दिलाना। (२) सुझाना, चेताना। मुझे ध्यान दिला दिया तो कर डालूँगा।

ध्यान देना—(१) गौर करना, चित्त लगाना। ध्यान देकर काम करो, ठीक होगा।

ध्यान धरना—भगवान की ओर चित्त लगाना।

ध्यान पर चढ़ना, ध्यान में आना—(१) चिन्ता, परवा करना। (२) सोचना, समझना। ऐसी बातों पर तो वह ध्यान ही नहीं धरता।

ध्यान बँटना—ख्याल इधर से उधर हो जाना। तुम बाते करते हो तो मेरा ध्यान बटता है।

ध्यान बँधना—(१) लगातार ख्याल रहना। उसें जिस बात का

[५०८६]

ध्यान बँधा बस उसी मे लगा। (२) चित्त लग जाना, एकाग्र होना। हमे उसी का ध्यान बँधा है।

ध्यान में डूबना, मग्न होना—सब कुछ भूल कर एक ओर लगना। ध्यान में मग्न है शरीर का भी ध्यान नहीं।

ध्यान में लगना—मन लगा कर मग्न होना। लगि कपोल के ध्यान, मग्न भये पिया प्रिया में।

ध्यान रखना-याद रखना, विचार बनाए रखना। वहाँ जाओ तो हमारा नौकरी का भी ध्यान रखना।

ध्यान रहना—याद रहना। ध्यान रहा तो जरूर लाऊँगा।

ध्यान लगना, लगाना—मन से ख्याल, याद रहना। मुझे हर दम तुम्हारा ध्यान लगा है।

ध्यान से उतरना—याद न रहना।

ध्वनि उठना—शब्द उत्पन्न होना, फैलना। अकाल से पहिले हमारे कुएँ से ध्वनि उठती है।

न

नंगा करना, कर देना—(१) कपड़ा जेवर उतार लेना। (२) बेइज्जत करना। (२) लूट लेना।

नंबर दागना, लगाना—स्त्री प्रसग करना।

नक तोड़े उठाना झाड़ना—अनुचित्त अभिमान नखरा सहना, करना।

नकल करना—प्रति लिपि करना। यह किसी ने तुम्हारी उसी किताब की बिल्कुल नकल कर दी है।

नकसीर न फूटना—कुछ हानि न होना।

नकसीर फूटना—नाक से खून बहना।

नकाब उलटना—घूँघट हटाना। नकाब उलटते ही देखा तो मर्द था।

नकेल हाथ में होना—वश, कहे में होना। जो चाहूँ करालूँ नकेल हाथ मे है।

नक्कार खाने में तूती की आवाज कौन सुनता है—दे० तूती की आवाज़।

नक्कारा बजा कर—डंके की चोट, खुल्लमखुल्ला। नक्कारा बजा कर करते हैं चोरी छिप्पे नही।

नक्कारा बजाते फिरना—सब से कहते फिरना। तुम तो ज़रा सी बात का शहर भर में नक्कारा बजाते फिरते हो।

नक्कारा हो जाना—बहुत फूलना।

नक्कू बनना—(१) अपने को बहुत बड़ा समझना। (२) सब से निराला काम करना। नक्कू बन

कर काम न चलेगा दुनिया मे दुनिया की तरह रहो।

नक्श करना, कराना (मन मे)—निश्चय कराना, जमाना, । यह बात उनके मन मे नक्श कर दी है, वे वैसे ही करेगे।

नक्श बिगड़ना—अधिकार न रहना, रंग उखड़ना।

नक्श बैठना, बैठाना—अधिकार, रग जमना, जमाना।

नक्श होना—मन में जम जाना निश्चय होना।

नक्शा खिंच जाना—रूप रंग ठीक ठीक ध्यान में आना। कल की सी बात है मेरी आँखों में नक्शा खिंच गया है, वे यहाँ खड़े थे।

नक्शा जमना—रग, प्रभाव होना। शहर के रईसों मे उनका नक्शा जमा हुआ।

नक्शा जमाना— प्रभाव, रंग डालना।

नक्शा तेज़ होना—दे० नक्शा जमना।

नखरा बघारना— नाज़-नखरा करना।

नख शिख से—सिर से पैर तक। वह नख-शिख से सुन्दर है।

नखास पर चढ़ाना, भेजना—बेचने बाजार में भेजना।

नखास की घोड़ी, नखास वाली—वेश्या, खानगी।

नग बैठाना—नग जड़ना।

नगीना सा—बहुत सुन्दर छोटा सा।

नगीना होना— छोटा सा सुन्दर। सिया सोने की अँगूठी राम साँवरो नगीना है।

नचा मारना—बहुत फिराना। ज़रा सी चीज़ के लिये व्यर्थ सैकड़ों चक्कर लगवाये नचा मारा।

नजर आना—दिखाई देना। नज़र आता है कोई अपना न पराया मुझको।

नजर उतारना—बुरी नजर का दोष हटाना।

नज़र करना—(१) भेंट करना। यह अगूठी आप को नज़र करता हूँ। (२) देखना। नज़र उधर की तो वह खड़ा था।

नजर खाना, खा जाना—बुरी नज़र लगना।

नजर चुराना—छिप कर रहना। पहले तो उसने मेरे दिल को छीन लिया अब नज़र चुराते है।

नजर जलाना, झाड़ना—नज़र का प्रभाव दूर करना।

नज़र दौड़ाना—चारों ओर ढूँढना। मैने चारों ओर नज़र दौड़ाई किन्तु फिर उसका कहीं पता न लगना।

नजर पड़ना—दिखाई देना। मेरी नज़र उन्हीं पर पड़ी।

नज़र पर चढ़ना—पसंद आना। जो चीज़ नज़र पर चढ़ी खरीद ली।

नजर फिसलना—चकाचौंध से दृष्टि न जमना।

नज़र फेंकना—(१) दूर तक देखना। (२) सरसरी तौर से देखना।

नज़र बंद रखना—हिरासत, कारागार में रखना, कहीं जाने आने न देना।

नजर बाँधना—जादू से दृष्टि बाँधना।

नज़र मारना—चितवन से देखना। वह तुम्हारी ओर कितनी देर से नज़र मार रही है किन्तु तुम उसकी ओर देखते ही नहीं।

नज़र मिलाना—तुलना करना। आप जब दोनों की नज़र मिलायेंगे तब आप को भले बुरे की पहचान होगी।

नज़र में आना—दिखाई देना। कोई नज़र में आगया तो भेज दूँगा।

नज़र में तोलना—देख कर गुण आदि की परीक्षा करना।

नज़र रखना—मेहरबानी करना। नजर रखिये कहीं नौकरी मिल जाय।

नजर लगना, लगाना—बुरी दृष्टि का असर होना।

नजर होना, हो जाना—(१) दे० नजर लगना। (२) भेंट चढ़ जाना, किसी के लिये जान दे देना।

नज़र से गिराना—अपमान करना। भाई तुम्हारा कोई दोष नहीं ग़रीब आदमी को तो सभी नज़र से गिरा देते हैं।

नज़र से नजर दो चार होना—दे० आँख से आँख मिलना।

नज़र से निकलना—देखने में आना। यह पुस्तक कई बार नज़र से निकल चुकी है।

नजरों से गिरना—मन में इज्जत न रहना घृणा हो जाना।

नोट—'दीठ' के मुहावरे 'नज़र' शब्द लगा कर काम में लाये जाते हैं।

नथना फुलाना, फूलना—क्रोध करना, आना।

नथनों में दम करना—दे० नाक में दम करना।

नदी नाव संयोग—इत्तिफाक से मिल जाना।

नन्हा सा—बहुत छोटा। नन्हा सा बच्चा नन्हा सा हाथ।

नब्ज़ चलना—नाड़ी में गति होना।

नब्ज़ छूटना, न रहना—प्राण न रहना, नाडी में गति न रहना।

नमक अदा करना—मालिक का कार्य करना, उपकार का बदला चुकाना।

नमक कटे पर छिड़कना—दे० कटे पर नमक...।

नमक का सहारा—जरा सा भी सहारा। इतना बड़ा हो गया इसका नमक का भी सहारा नहीं।

नमक का हराम होना—(१) कुछ न खाना। (२) कुछ प्राप्ति न करना। मुझे उनका नमक भी हराम है, मैने रुपये नहीं लिये।

नमक खाना—(किसी का) दिया खाना। बरसों से उनका नमक खाया है, आज अगर उन्होंने गाली भी दे दी तो क्या हुआ।

नमक फूट फूट कर निकलना—नमक हरामी, कृतघ्नता का दण्ड मिलना।

नमक मिर्च मिलाना, लगाना—बात को बढा कर कहना। मैंने तो ज़रा सी बुराई की थी उन्होंने नमक मिर्च लगा कर उनसे कही।

नमदा बाँधना—दण्ड दिलाना, जेल भिजाना। मैंने उसका नमदा बाँध' दिया अब जेल मे सड़ रहा है।

नमाज़ क़ज़ा होना—वक्त पर नमाज़ न पढी जाना।

नमाज़ पढना—ईश्वर प्रार्थना करना।

नया करना—(१) नया फल आदि मौसम मे पहिली बार खाना। (२) फाड फूड़ देना। (व्यंग्य) इसे जो पहिनाओ नया करके रख देता है।

नया गुल खिलना—(१) अनोखी बात, कारण बताना। (२) विचित्र खबर उडाना। तुम्हारे आने से एक नया ही गुल खिला, हमें मालूम न था कि यह कारण था।

नया पुराना करना—(१) पुराना हिसाब चुकता करके नया शुरू करना। २) पुराने के स्थान पर नया करना, रखना। नौकरों को नया पुराना करने से काम बिगड़ेगा।

नया राग या रंग लाना—नया झगड़ा तैयार करना।

नये सिरे से जन्म पाना, लेना—मरते मरते बचना।

नरक होना—नरक भोगने का दण्ड मिलना।

नरम-गरम उठाना—भली-बुरी बात, सुख दुख सहना। जीवन निर्वाह में नरम गरम सभी उठानी पडती है।

नल चलना—जादू के बल से चोर का पता लगाना।

नल, नला टलना—पेशाब की नाली में नस डिगने से पीड़ा होना।

नशा उतरना—अभिमान दूर होना, नशा न रहना। दो थप्पड़ों में सब नशा उतर जायगा।

नशा उतारना, झाड़ना—ऐंठ दूर करना।

नशा किर किरा हो जाना—(१) मज़ा बिगड़ना। नाच मे मस्त थे तुम बीच में आ गये नशा किर किरा हो गया।

नशा चढ़ना—नशा होना।

नशा छाना—मस्ती चढना। तुम्हारी आंखों मे नशा छा रहा है, मुझे देखने से नशा चढ गया है।

नशा जमना—खूब नशा होना। थोड़ी सी भंग से तो नशा जमता ही नहीं।

नशा टूटना—नशा दूर होना, उतरना।

नशा हिरन हो जाना—बीच में ही नशा न रहना। खूब पीये हुये गाली बक रहा था, ज्यों ही सिपाही ने हाथ पकड़ा सारा नशा हिरन हो गया।

नशीली आंखें—मदमत्त आंखे, यौवन मे मस्त आंखे।

नशे में चूर होना—(१) खूब गहगड्डु नशा होना। (२) धुन सवार होना। जो मुहब्बत के नशे में चूर हैं, क्या करें बेबस हैं और मजबूर हैं।

नश्तर लगना, देना, लगाना—फोड़ा आदि चीरा जाना, चीरना, इंजेक्शन लगना, लगाना।

नस चढ़ना, नस पर नस चढ़ना—नस का बल खाना या स्थान से इधर उधर होना जिससे पीड़ा सूजन हो।

नस नस फड़क उठना—बहुत खुशी होना। आपकी कविता से नस नस फड़क उठती है।

नस नस में—सारे शरीर में। तुम्हारी नस नस मे शरारत भरी पड़ी है।

नस भड़कना—(१) दे० नस चढ़ना। (२) पागल होना। क्या नस भड़क गई है जो ऐसी बातें करते हो ?

नसें ढीली पड़ना, होना—(१) थकावट आना। (२) पुंसत्व की कमी होना।

नसीब आजमाना—
नसीब खुलना, चमकना, जागना
दे० किस्मत के मुहावरे।

नसीब लड़ जाना }
नसीब होना— } मिलना, प्राप्त होना। गरीबों को आराम कहाँ नसीब होता है।

नसीहत करना—(१) उपदेश, शिक्षा देना। (२) डाँटना, मला-

मत करना। बच्चों को बुरे कामों पर नसीहत न दोगे तो बिगड़ेंगे ही।

नहार तोड़ना—सुबह कुछ खा लेना।

नहार मुँह—बिना कुछ खाए।

नहार रहना—भूखे रहना, न खाना।

नहीं तो—वरना, अगर ऐसा न किया तो। आप बुला लीजियेगा नहीं तो मैं न चलूँगा।

नहीं सही—न हो तो चिंता, परवा नहीं। खूब धन है न पढ़े नहीं सही।

नाक ऊँची होना—इज्ज़त होना, मान रहना। इज्ज़त इसी बात मे ऊँची है कि पुरुषाओं के मार्ग पर चलो।

नाक कटना, कटाना, काटना—इज्ज़त चली जाना, न रहना या न रहने देना। अगर विवाह की धूम धाम मे कोई कमी रह गई तो हमारी नाक कट जायगी।

नाक काट कर चूतड़ों तले रख लेना—दुनिया की शर्म छोड़ देना, अपमान की परवा न करना। हमारे नाक है ही कहाँ वह तो पहिले ही काट कर चूतड़ों तले रखली है, तभी वेहयाई की बातें करने आये हैं।

नाक कान काटना—(१) सख्त सज़ा देना। (२) हरा देना।

नाक का बाल होना—पूर्ण प्रभाव होना, जिसकी सलाह से काम होता हो। मंत्री जी तो राजा की नाक का बाल हो रहे हैं, उनके बिना क्या हो सकता है।

नाक की सीध में—ठीक सामने। नाक की सीध मे चले जाओ उन्हीं के घर पहुँचोगे।

नाक घिसना—बहुत विनती, मिन्नतें करना। वह रोज यहाँ आ कर नाक घिसता है कि नौकर रख लो।

नाक चढ़ना—गुस्सा आना।

नाक चढ़ाना—(१) क्रोध से नथने फुलाना। (२) घृणा करना, नापसंद करना। मेरी चीज़ों पर वह नाक चढ़ाता है, वह तो बढ़िया चीज़ पसंद करता है।

नाक चोटी काट कर हाथ देना—(१) कठिन दण्ड देना। (२) दुर्दशा करना।

नाक चोटी काटना—कठिन दण्ड देना।

नाक चोटी मे गिरफ़्तार—अपनी इज्ज़त का हर वक्त ख्याल होना।

नाक तक खाना—बहुत खाना खाना।

नाक तक भरना—(१) बरतन खूब मुँह तक भरना। (२) खूब ठूँस ठूँस कर खाना। पेट में जरा जगह नहीं नाक तक भर रहा है।

नाक न दी जाना—अति दुर्गंध आना।

नाक पर उंगली रख कर बात करना—नाज़ नखरे से, औरतों की तरह बात करना।

नाक पर गुस्सा होना—शीघ्र ही क्रोध आना।

नाक पर दीया बाल कर आना—मुख उज्ज्वल करके, सफलता प्राप्त करके आना।

नाक पर दीवा बालना—फौरन काम हुआ चाहना तुम तो नाक पर दीवा बालते हो, ज़रो धीरे धीरे हो जायगा।

नाक पर पहिया फिर जाना—चपटी

नाक पर मक्खी न बैठने देना—(१) ज़रा भी अहसान न लेना। (२) खरी आदत होना। (३) बहुत साफ रहना।

नाक पर रख देना—फौरन सामने रखना। वह रुपयों के लिये बिगड़ने लगा मैने फौरन वहाँ से लाकर उसकी नाक पर रख दिये।

नाक पर सुपारी तोड़ना—खूब तंग करना।

नाक फटने लगना—असह्य दुर्गंधि आना। उस मुहल्ले मे जाते तो नाक फटने लगती है।

नाक बैठना—नाक चपटी होना।

नाक बोलना—खर्राटा भरना। जब यह खूब सो जाता है, तो इसकी नाक बोलने लगती है।

नाक भौं चढ़ाना, सिकोड़ना—अरुचि, नापसंदगी जाहिर करना। मैले कपड़े देखकर नाक भौं क्या चढ़ाती हो, एक दिन तुम भी तो गरीब थीं।

नाक में जान या दम आना, करना—तंग या हैरान, होना, करना। तुमने फिरा फिरा कर नाक में दम कर दिया, पर वह न मिला।

नाक में तीर करना, डालना, होना—(१) बहुत तंग करना, हो जाना। (२) वश में करना, होना।

नाक में दम करना—तंग करना। यदि अधिक मेरी नाक में दम करोगी तो एकाध को पीट दूंगा।

नाक में बोलना—ङ ङ करके बात करना।

नाक में सुतली पिरोना—(१) आँखों पर पट्टी बाँध कर ले जाना। (२) बहुत सताना। (३) वश में करना। हमारी तो नाक में सुतली पिरो रखी है, बैल की तरह कोल्हू में काम कराता है।

नाक रखना
नाक रख लेना } इज्जत बचा लेना। ऐन मौके पर सहायता देकर बिरादरी में हमारी नाक रख ली।

नाक रगड़ना—दे० नाक घिसना।

नाक लगाकर बैठना—बड़ा इज्जत वाला बनना।

नाक सिकोड़ना—घृणा करना। सुनि अघ नरकहु नाक सिकोरी।

नाकों आना—दुखी होना।

नाकों चने चबवाना—खूब परेशान, हैरान, तंग करना।

नाखून नीले होना—मरने के लक्षण होना।

नाखून लेना—(१) नख काटना। (२) घोड़े का ठोकर खाना।

नाग खेलना—खतरे, प्राण भय का काम करना।

नागा करना, देना—बीच डालना। रोज नहीं एक दिन नागा करके आया करो।

नाच दिखाना—(१) सामने नाचना। (२) उछलना कूदना। (३) अनोखे आचरण करना।

नाच नचाना—(१) जैसा चाहना काम कराना। जो कुछ जा के मन आवे सोई नाच नचावे। (२) दिक, हैरान करना।

नाज़ उठाना—नखरे सहना।

नाड़ी खोलना—संभोग करना।

नाड़ी चलना—दे० नब्ज चलना।

नाड़ी छूटजाना—दे० नब्ज छूटना।

नाड़ी देखना, धरना, पकड़ना—अँगूठे की नस से रोग ज्ञान करना।

नाड़ी न बोलना—(१) प्राण न रहना। (२) मूर्च्छा आना (३) नाड़ी में गति न होना।

नाता टूटना—संबन्ध न रहना।

नादिरशाही हुक्म होना—जी में आवे सो हुकम देना, जोर जुल्म करना।

नाधना (काम में)—लगाना।

नानी याद आना, मर जाना—(१) होश ठिकाने आ जाना। हरमोहन की नानी तो थाने वालों को देखते ही मर गई। (२) दुख में पड़ कर पहिले समय की याद आना।

नाम उछालना—निंदा, बदनामी कराना। बुरे काम करके खूब बाप दादा का नाम उछाला है।

नाम उठना, उठ जाना—(१) नाम, चिन्ह, यादगार मिट जाना। पुरानी इमारतों के सड़क मे आ जाने से बनाने का नाम ही उठ गया। (२) मर जाना।

नाम कमाना—बड़ाई, प्रसिद्धि पाना। भले कामों से नाम कमाओ।

नाम कर जाना—स्मारक, यादगार छोड़ जाना। वह धर्मशाला बना कर नाम कर गये।

नाम करना—(१) दे० नाम कमाना। (२) काम को पूरी तरह न करना। पढ़ते क्या हैं नाम करते हैं, याद तो अक्षर नहीं। (३) दूसरे

को दोष लगाना। आप चुरा कर दूसरे का नाम करते हैं।

नाम का—नाम धारी। इस नाम का कोई आदमी यहाँ नहीं। (२) कहने भर को, काम या उपयोग को नहीं। वह तो नाम के राजा हैं, हुकूमत अँग्रेज ही करते हैं।

नाम के लिये—(१) थोड़ा सा। (२) दे० नाम का।

नाम को—(१) ज़रा सा। नमक तो नाम को डाला है फीकी है। (२) दे० नाम का।

नाम को नहीं—ज़रा सा नही। (२) एक भी नहीं। मैदान मे नाम को पेड़ नही।

नाम चढ़ना, चढ़ाना—नाम लिखा जाना, लिखना।

नाम चमकना—बड़ाई फैलना।

नाम चलना—यादगार बनी रहना। संतान से नाम चलता है।

नाम चार को—(१) नाम को। वह तो नाम चार को यहाँ आता है काम तो करता नहीं। (२) बहुत थोड़ा।

नाम ज़द करना—चुनना, मनोनीत करना।

नाप जपना—(१) नाम बार बार लेना, रटना। बेचारी तुम्हारा ही नाम दिन रात जपती है। (२) ईश्वर, देवता आदि का नाम बार बार लेना।

नाम डालना—नाम लिखना। १००) मेरे नाम डाल दो।

नाम डूबना—(१) यादगार न रहना। (२) नाम कलंकित होना। वंशों के नाम डूब गये पर चित्तौड़ का नाम न डूबने पाया।

नाम देना—(१) नाम करण करना। (२) देवता के नाम का मन्त्र देना।

नाम धरना—(१) बदनामी होना। ऐसा काम मत करो जो दस आदमी नाम धरे। (२) नाम करण करना, नाम रखना। (३) चीज़ का मूल्य कहना। तुम अपनी चीज़ का नाम धरो फिर मै मोल कहूँगा। (४) दोष निकालना। हमारी पसद की हुई चीज़ में तुम नाम नहीं धर सकते।

न म धराना—(१) नाम करण कराना। (२ बदनामी कराना।

नाम न लेना—बचना, चर्चा तक न करना। उसने मुझे बहुत दुखी किया है अब उसका नाम भी न लूँगा।

नाम निकलना, निकालना (१) किसी विशेषता के लिये प्र सद्ध होना, करना। मिठाई मे नुकती बनाने के लिए तो उसका नाम निकला हुआ है। (२) चुराने वाले का नाम प्रकट होना। ज्योतिषी ने चोर का नाम निकाल दिया। (३)

नाम प्रकाशित होना। गज़ट में नाम निकला है। (४) नामावली से नाम कटना।

नाम पड़ना—(१) नाम होना। कोठी का क्या नाम पड़ता है? (२) नाम रखा जाना (३) वही में नाम लिखा जाना।

नाम पर जान देना, मरना, मिटना—शौहरत, यश चाहना।

नाम पर धब्बा लगना—कलंक या बदनामी होना। नाम पर धब्बा न आवे, छिप कर करो यदि बुरा काम करना ही है तो।

नाम बाकी रहना—(१) प्रसिद्धि मात्र रह जाना। अब तो केवल नाम बाकी है कि रईस हैं, है कुछ नहीं। (२) यादगार बनी रहना।

नाम बिकना—नाम की प्रसिद्धि से कदर होना। चीज तो कुछ अब अच्छी नहीं पर इसका तो नाम बिकता है।

नाम बिगाड़ना—(१) नाम को छोटा करके या बुरा करके बोलना। (२) बदनामी कराना। (३) बदनाम करना।

नाम बेच डालना—इज्जत या लियाकत के खिलाफ़ काम करना।

नाम मात्र—दे० नाम को।

नाम मिटना—(१) यश, स्मारक न रहना। (२) नाम तक भी न रहना। गुलामी का संसार से नाम ही मिट गया।

नाम रखना—(१) नाम निश्चित करना। (२) कीर्ति बनाये रखना। (३) बदनामी करना। (४) दोष निकालना। क्यों बेचारे का नाम रखते हो ऐसे मामूली अवगुण सब में हैं।

नाम लगना, लगाना—अपराध, कलंक सिर मढ़ा जाना, मढ़ना। किया किसी ने हमारे नाम लगा।

नाम लेकर—(१) नाम के प्रभाव से। बाप का नाम लेकर भीख माँगेगा, उसे भी डुबायेगा। (२) स्मरण करके। भगवान का नाम लेकर कूद पडो, जरूर मिलेगा।

नाम लेना—(१) नाम पुकारना। (२) देवता आदि का नाम जपना। सुबह शाम दो नाम ले लेते हैं। (३) गुण गाना। इस उपकार के बदले हम सदा आप का नाम लेते रहेंगे। (४) चर्चा करना। फिर जाने का नाम लेते हो? (५) दोष लगाना, बदनामी देना। क्यों किसी का नाम लेते हो न मालुम यह काम किसने किया है?

नाम से—(१) चर्चा से। मुझे उसके नाम से घृणा है। (२) जिम्मेदारी सम्बन्ध बता कर जितना रुपया चाहो मेरे नाम से ले लेना। (३) हक़दार, मालिक बना कर।

वह लड़के के नाम से जायदाद खरीद रहा है। (४) नाम के प्रभाव से। तुम तो अपने बडों के नाम से भीख माँग खाओगे। (५) नाम लेते ही। वह मेरे नाम से काँपता है।

नाम से काँपना—नाम सुनते डर जाना।

नाम से बिकना } नाम की प्रसिद्धि
नाम से पुजना } से आदर पाना।

नाम ही नाम रह जाना—केवल प्रसिद्धि ही रह जाना। अब तो नाम ही नाम रह गया है, पल्ले कुछ नहीं है।

नाम होना—(१) कलंक लगना। बुराई कोई करे नाम हो हमारा। (२) नाम प्रसिद्ध होना। काम तो दूसरे करते हैं नाम उसका होता है।

नामी होना—प्रसिद्ध होना। जब से वह पहलवान मरा है, तब से इधर कोई वैसा नामी अभी तक नही हुआ।

नार नवाना-(१) गर्दन झुकाना। (२) शर्म से दृष्टि नीची करना।

नारियल तोड़ना—मुसलमानों में ऐसा करके गर्भ में लड़का है या लडकी यह शकुन निकालते हैं।

नाल काटा है?—बड़ी बूढ़ी, दाई होना। मेरे लौंडे का नाल काटा है? जो मै मानूँ।

नाल गड़ा है—(१) स्थान पर अधिकार, दावा होना। यहाँ क्या हमारा नाल गड़ा है जो सर्वदा रहेंगे। (२) स्थान से बहुत प्रेम होना। ऐसा क्या नाल गड़ा है जो वहाँ जाऊँगा ही, गया गया न गया।

नालिश करना, दागना—अभियोग लगाना।

नाव पार लगा देना—काम बना देना।

नाव में खाक, धूल उडाना—(१) व्यर्थ कलक लगाना। (२) बे सिर पैर की बात कहना।

नाव सूखे में नहीं चलती—बिना खर्च काम नहीं होता।

नाह नूह करना—नाहीं करना।

निकट किसी के—(१) किसी से। तुम्हारे निकट माँगने आऊँ तो न देना। (२) समझ मे। (३) लिये। तुम्हारे निकट तो यह काम कुछ भी नहीं।

निकल चलना—(१) उन्नति होना। उनका व्यापार निकल चला है। (२) अति घमंड करना।

निकल जाना-(१) चला जाना। वह बहुत दूर निकल गये। (२) न रह जाना। नुमायस मे सब माल निकल गया। (२) घट जाना। ५ मे से ३ निकल गये। (४) भाग जाना। (५) न पकड़ा जाना। चोर

भी निकल गया उसी के साथ औरत भी निकल गई।

निकल पड़ना—(१) बाहर आना। (२) चल देना। (३) बहुत क्रोधित होना।

निकाल डालना—काट लेना।

निकाल देना—(१) कम करना। (२) दूर करना। इसे निकाल दो यहाँ से।

निकाल लाना, लेना—स्त्री को भगा लाना।

निकाह पढ़ाना—विवाह करना।

निगाह—के मुहावरे वही हैं जो 'दीठ' 'नज़र' और 'आँख' के हैं।

निगाह बानी करना—रखवाली, निरीक्षण करना।

निगोड़ा नाथा होना—लावारिस होना।

निचला बैठना—(१) चंचलता न करना। (२) शिष्टता से बैठना।

निछक्के में—एकान्त में।

निछावर करना, होना—वारना, त्यागना, किसी के लिये प्राण त्यागना।

निज का—खास अपना।

निज करके—निश्चय, जरूर।

निन्नानबे के फेर में आना, पड़ना—धन बढ़ाने की चिंता में होना।

नियम का पालना—कायदे के अनुकूल व्यवहार करना।

नियम का भंग—कायदे के विरुद्ध करना।

निरने, निरन्ने मुँह—बिना कुछ भी खाए। दवा निरन्ने मुँह न पियो।

निशान उठाना, खड़ा करना—(१) अगुआ बनना। बगावत का निशान उसने ही उठाया। (२) आन्दोलन करना।

निशान करना, बनाना—हथियार का लक्ष्य बनाना।

निशान देना—(१) पता बताना। (२) पहचान बताना।

निशाना बाँधना—ठीक वार के लिये अस्त्र साधना।

निशाना मारना, लगाना—ताक कर वार करना।

निशाना साधना—(१) निशाना बाँधना। (२) ठीक ठीक वार करने का अभ्यास करना।

निशाना होना—लक्ष्य, निशाना बनना।

निसबत देना—तुलना, बराबरी करना।

निसा भर—जी भर के।

निहाल करना, कर देना—धनवान बना देना, खुश करना।

निहाल होना—धनवान, खुश होना।

निहोरा मानना—एहसान समझना।

नींद उचटना, उचट जाना—नींद दूर होना, न रहना।

नींद का दुखिया—बहुत सोने वाला, सदा सोने की इच्छा वाला।

नींद खराब करना—सोने में बाधा डालना।

नींद खुलना— आँख खुलना, जागना।

नींद खोना, गँवाना—नींद न रहना, नींद में हर्ज करना।

नींद पड़ना—नींद आना।

नींद भर सोना—इच्छा भर सोना।

नींद मारना }
नींद लेना } खूब सोना।

नींद हराम करना } सोने न देना,
नींद हराम होना } सोना तक छूट जाना। इम्तहान की तैयारी में नींद हराम हो गई है।

नीक लगना—(१) सुहाना, अच्छा मालूम होना। (२) सजना। यह साड़ी नीकी लागति है, और डुपट्टा नाहीं।

नीच ऊँच समझना—आगे पीछे को सोचना। अब तो तुम सब ऊँच नीच समझने लायक हो, फिर भी ऐसा काम कर रहे हो।

नीच ऊँच समझाना—गुण व अवगुण का ज्ञान कराना। अभी वह कुछ जानता नहीं है, उसे नीच ऊँच समझा दोगे तो सब समझ जायगा।

नीचा-ऊँचा दिखाना—(१) शर्मिंदा करना। (२) हराना।

नीचा-ऊँचा सुनाना—दे० ऊँचा-नीचा सुनाना।

नीचा खाना—(१) तुच्छ, अपमानित होना। (२) हारना। (३) लज्जित होना।

नीचा दिखाना—(१) घमंड दूर करना, मान भंग करना। (२) तुच्छ बनाना। (३) हराना। ४) झेंपाना। क्यों बेचारे को नीचा दिखाते हो यह तो भोला भाला लड़का है।

नीचा देखना—दे० नीचा खाना।

नीची दृष्टि से देखना—कदर न करना, तुच्छ समझना। उसे सब नीची दृष्टि से देखते हैं, काम ही ऐसा करता है।

नीठ नीठ करके-(१) बड़ी मुश्किल से। (२) किसी न किसी तरह।

नीयत डाँवा डोल होना, डिगना—दे० ईमान डिगना।

नीयत बदल जाना—(१) इरादा दूसरा हो जाना। (२, दे० नीयत बद होना।

नीयत बद होना—(१) बुरे विचार होना। इस लड़की पर उसकी नीयत बद है। (२) बेईमानी सूझना।

नीयत बाँधना—मन में ठानना, संकल्प करना।

नियत बिगड़ना—दे० नीयत बद हो जाना।

नीयत भरना—दे० जी भरना।

नियत में फर्क आना—दे० नीयत बद होना।

नीयत लगी रहना—ध्यान या इच्छा रहना। हमारी नीयत इस घड़ी पर लगी है, दे दो।

नीर ढल जाना—दे० आँखों का पानी ढलना।

नीर ढलना—आँसू बहना।

नील का खेत होना—कलंक का स्थान होना।

नील का टीका लगाना—बदनामी उठाना, लेना। क्यों एक बुरा काम करके नील का टीका लगाते हो।

नील का माट बिगड़ना—(१) बनते समय नीले रंग का खराब हो जाना। (२) अभागा भाग्यहीन होना। (३) अनोखी बात सुनने में आना।

नील की सलाई फिरवा देना—अंधा कर देना।

नील घोटना—झगड़ा मचाना, अकारण उलझना।

नील डालना—गहरी मार मारना। मारे बेतों के पीठ पर नील डाल दिये।

नील बिगड़ना—(१) चाल चलन बिगड़ना। (२) चेहरे का रंग उड़ना। (३) बे सिर पैर की बात फैलना। (४) समझ पर पत्थर पड़ना। (५) कुदिन, शामत आना। (६) घाटा, दिवाला होना।

नीला करना—(१) खूब पीटना। मारते मारते नीला कर दिया। (२) कलंकित करना।

नीला पड़ना—नीला हो जाना।

नीला पीला हो जाना—(१) चेहरे का रंग काला हो जाना। (२) आकृति बिगड़ जाना।

नीला पीला होना—बहुत गुस्सा आना, बिगड़ना। मुझ पर क्यों नीले पीले होते हो जिसने कहा है उसे मारो।

नीलाम पर चढ़ना—नीलाम हो जाना, होना।

नीवँ का पत्थर—(१) असली साहारा। ये तो संस्था की नींव के पत्थर हैं, हजारों रुपये देते हैं। (२) प्रारम्भिक कार्य, सहारा। गर्भ क्या स्त्री को वश मे करने की नींव का पत्थर है। (३) मकान के नीचे का सब से पहिला पत्थर।

नीवँ जमाना, डालना, देना—(१) दीवार की जड़ जमाना। (२) आरम्भ करना, सूत्र पात करना। क्लाइव ने अँग्रेजी राज्य की नींव डाली। (३) गर्भ स्थित करना।

नीव पड़ना—(१) मकान बनना शुरू होना। नीवँ तो पड़ गई है जल्दी तैयार हो जायगा। (२) आधार खड़ा होना। (३) आरम्भ होना। झगड़े की नीव नये राज्य की नीवँ के साथ ही पड़ी।

नीवँ भरना—दीवार के लिए खुदे गड्ढे मे कंकड़ पत्थर भरना।

नीव होना—आदि कारण, सहारे होना। तुम्ही इस झगड़े की नीव हो, तुम्ह ही मारेंगे।

नुक्ता चीनी करना—दोष निकालना। तुम हर एक के काम में नुकता चीनी करते हो, कोई पसद नही आता।

नुकसान उठाना—हानि, घाटा सहना।

नुकसान करना—(१) हानि देना। (२) अस्वस्थ करना। आलू हमे नुकसान करता है।

नुकसान पहुँचना—हानि होना।

नुकसान पहुँचाना—घाटा, हानि देना।

नुकसान भरना—घाटा हानि पूरी करना। १००) का नुकसान पल्ले से भरना पड़ा।

नुत्फ़ा ठहरना—गर्भ रहना।

नुत्फ़ाहराम होना—नीच होना। बदमाशी, बेईमानी जो कुछ करे थोड़ा वह तो नुत्फा हराम है।

नुसखा लिखना—दवाए लिखना।

नुसखा बाँधना—वैद्य के लिखे अनुसार दवाएँ देना, पसारी की दुकान करना।

नूर का तड़का—बहुत सवेरा। नूर के तडके चले जाना, रात को आराम करो।

नूर बरसना—शोभा, ज्योति, खूबसूरती खूब होना।

नेकी और पूछ पूछ—उपकार में पूछने की क्या ज़रूरत। नेकी और पूछ पूछ देना है तो दे दो, नाहीं कौन करता है?

नेकी बदी—भलाई-बुराई। नेकी-बदी खुदा सब का फल देता है।

नेग करना—(१) शुभ मुहूर्त मे शुरू करना। जरा नेग कर दिया अब चाहे जब कर डालना। (२) दे० नाम करना।

नेग लगना—(१) रीति रवाज के अनुसार इनाम देना। यहाँ ५०) नेग लगेगा। (२) सार्थक होना। पैसा नेग लगा यही उचित था।

नेज़ा हिलाना—बरछा, बल्लम फिरना।

नोक की लेना—गर्व दिखाना, डीग हाँकना। वह बड़ी नोक की लेता है, यों कर डालूँगा यों कर डालूँगा वक्त पै कुछ नहीं।

नोक बनाना—रूप सँवारना।

नोक रह जाना—आन, प्रतिष्ठा, टेक निभ जाना। १००) बाँट दिये

तो नौकर रह गई, ये भी कोई रईस हैं।

नौकरी देना, बजाना—सेवा या नौकरी में लगना। १० से ५ तक नौकरी देता हूँ।

नौकरी से लगना—नौकर होना।

नौ दो ग्यारह होना—चल देना, भाग जाना। चोर थे हमको देखते ही नौ दो ग्यारह हुए।

नौनिध बारह सिद्ध होना—मनसा इच्छा पूरी होना। हमारे तो जब नौनिध बारह घर बैठे सिद्ध होते हैं।

नौबत आ जाना—दशा, हालत हो जाना। अब तो भूखे मरने की नौबत आ गई है।

नौबत को पहुँचना—दशा को प्राप्त होना। अब तो इस नौबत को पहुँचे हैं कि पानी भी नहीं पचता।

नौबत झड़ना, बजना, बजाना—(१) खुशी मानना, मनाना। (२) प्रताप की घोषणा होना, दबदबा दिखाना।

नौबत बजा कर, की टंकोर—(१) डंके की आवाज। (२) डंके की चोट, खुले आम। मर्‌यौ अफ़जल तिन फिर नौबत बजाय कै।

प

पंख जमना—(१) भाग जाने, न रहने के लक्षण होना। इस नौकर के भी पेट भर रोटी मिलते ही पंख जम गये हैं, अब न रहेगा। (२) बुरे रास्ते पर जाने के ढंग होना। बाज़ार में फिरने से औरतों के पख जम जाते हैं। (३) शामत, मौत आना। क्यों पंख जमे हैं, चींटी की तरह मरोगे क्या?

पंख न मारना—अगम्य होना। वहाँ तो चिड़िया भी पंख नहीं मारती आदमी तो क्या!

पंख लगना—दे० पंख जमना।

पखा करना—पखे से हवा करना।

पंच की दुहाई—सब से दुख, अन्याय दूर करने की पुकार।

पंच की भीख—(१) सब की कृपा, आशीर्वाद। (२) सर्वोपकार का चन्दा।

पंच परमेश्वर—दस आदमियों का कहना ईश्वर वाक्य के तुल्य है।

पंचत्व प्राप्त होना—मरना। सब एक दिन पंचत्व को प्राप्त होंगे।

पंच बदना, मानना—झगड़ा निबटाने वाला स्वीकार करना। दोनों ने मुझे पंच माना तब फैसला किया है।

पंजर-पंजर ढीला होना—थकान कमजोरी या बुढ़ापे से शरीर शिथिल हो जाना।

पंजर होना—दुबला-पतला, कंकाल

सा होना। बीमारी से पंजर हो गया है।

पंजा करना, लड़ाना—हाथ की अँगुलियों में अँगुलिये डाल कर मरोड़ने का यत्न करना।

पंजा फेरना, मोड़ना, लैजाना—पंजा लड़ाने में दूसरे का पंजा मरोड़ना।

पंजा फैलाना, बढ़ाना—हथियाने, लेने का उद्योग करना। पजा तो सब ने फैलाया माल तो वारिस को ही मिलना था।

पंजा मारना—झपाटा मारना।

पंजे झाड़ कर पीछे पड़ना—सिर हो जाना, हाथ धोकर पीछे पड़ना।

पंजे में आना—(१) मुट्ठी, पकड़ में आना। पजे में आया शिकार। (२) वश में, अधिकार मे। मै तुम्हारे पंजे में नहीं आ सकता।

पंजे में लाना—वश में करना।

पंजे से छूटना, निकलना—वश, अधिकार में से निकल जाना। मेरे पजे से छूटना मुश्किल, छूट जाय तो जीना मुश्किल।

पंजों के बल चलना—घमड करना। संभल के रहो पंजों के बल मत चलो, ज़मीन पर पैर रखो।

पंथ गहना—मार्ग या संप्रदाय ग्रहण करना। बिछुरत प्राण पयान करेंगे, रहै आजु, पुनि पंथ गहो।

पंथ दिखाना—(१) मार्ग दिखाना। (२) उपदेश देना। तर गई पंथ दिखायो प्रभु जी!

पंथ देखना निहारना—प्रतीक्षा करना, मार्ग देखना। ऊँचा चढ चढ़ पंथ निहारूँ, रोई रोई अँखियाँ राती।

पंथ पर लगाना, लाना—ठीक मार्ग, उचित कार्य का ध्यान दिलाना।

पंथ लगना—पीछा करना, तंग करना। नाइक माया पथ लगी मो, कैसे हूँ, नहिं छोड़ै।

पकवाई देकर कच्ची खाना—मूल्य देकर भी काम खराब होना।

पंथ सेना—आसरा, मार्ग देखना।

पकड़ धकड़ होना—गिरफ्तारी होना। **पकड़ पकड़ना**—तर्क में बात पकड़ना।

पकड़े जाना—कैद होना, हराम-कारी का इलज़ाम लगना। **पकड़ में आना**—(१) चाल में फँसना। (२) कच्ची बात करना।

पका पकाया मिलना—बिना परिश्रम प्राप्त होना।

पकौड़ी सी नाक—बड़ी नाक। इस मनुष्य की बड़ी पकौड़ी सी नाक है।

पक्का करना—(१) तैयार करना। उसे जमानत देने को पक्का कर

लिया है वा (२) तै, निश्चय करना। (३) बलवान बनाना।

पक्का कागज—कानूनी या स्टाम्प का काग़ज। बिना टिकट के पक्का कागज नहीं होता।

पक्का-काम होना—असली सोने, चाँदी का काम। इस साड़ी पर पक्का काम है। **खाना**—घी में पका भोजन। **घर**—चूने ईंट से बना घर। **चिट्ठा**—ठीक जँचा चिट्ठा। **पान होना**—बहुत बूढा होना। **पानी**-(१) औटाया हुआ पानी। (२) स्वास्थ्य ाद जल। पक्का पानी है कोई हानि नहीं। **बही**—ठीक जँचे हुए हिसाब की बही। **रंग**—(१) स्थायी, न छूटने वाला रंग। (२) काला रग। लड़के का रग पक्का है, लड़की गोरी है।

पक्का कर लेना—(१) जाँच करना। (२) वायदा करना।

पक्की बात होना—विश्वास योग्य होना।

पक्ष-करना—तरफदारी करना। भाई का पक्ष करके नौकर को ही बुरा बताते हैं। **ग्रहण करना**—दे० पक्ष लेना। **गिरना**—हार होना। तीस वोटों से उनका पक्ष गिर गया। **निर्बल पड़ना**—मत की पुष्टि न होना। गवाही तथा प्रमाण न होने से पक्ष निर्बल पड़ गया। **प्रबल पड़ना, होना**—दलील, मत पक्की होना। उनके पक्ष में हम हैं उन्हीं का पक्ष प्रबल है। **में होना**—(१) ठीक या अच्छा समझना। (२) मत की ओर होना। **लेना**—(१) सहायक होना। वे जिसका पक्ष लेंगे निभायेंगे अंत तक। (२) तरफ़दारी करना।

पख फैलाना, निकालना—नुक्स, बुराई निकालना।

पख लगाना—विघ्न डालना।

पगड़ी अटकना—बराबरी, मुक़ाबिला होना। दोनो की पगड़ी अटकी है देखे राजा किसको मंत्री चुने। **—उछलना**—दुर्दशा होना। भरी सभा में बेचारे की पगडी उछली। **—उछालना**—(१) दुर्दशा करना। (२) हँसी उड़ाना। भरी सभा में बुड्ढों की पगड़ी उछालते हो। **—उतरना**—इज्जत बिगडना। **—उतारना**—(१) इज्जत खराब करना। (२) ठगना, लूटना। वह पगडी तक उतार लेता है **—की शरम रखना**—बेइज्जत का काम न करना। **बग़ल में ले लेना**—इजत बचा लेना। **बँधना**—१) पिता के अधिकार मिलना। पगड़ी भतीजे के सर बँधी। (२ प्रतिष्ठा मिलना। ऊँचा पद प्राप्त होना। **बाँधना**—(१) ऊँचा अधिकार देना। (२) उत्तराधिकार देना।

—फेर कर रखना—वायदे से फिर जाना ।**—बदलना**—मित्रता, भाई-पन स्थापति करना । वे दोनों पगड़ी बदले दोस्त हैं ।**—में खाक डालना**—(१) धिक्कारना । (२) बेइज्जती करना । **—में फूल रख जाना**— बदनामी करा जाना । **—रखना**—(१) इज्जत बचाना। आपने वक्त पर मदद देकर हमारी पगड़ी रग दी । (२) गिड़गिड़ाना, नम्रता दिखाना । कितनी बार उसके पैरों पर पगड़ी रखी पर उसे दया न आई ।

पगडंडी लेना—तंग रास्ते पर चलना । जंगल मे हम लोग पगडंडी लेते हुये, एक सिरे से दूसरे सिरे तक निकल गये ।

पगड़ी बाँधना— गौरव प्राप्त करना । इनके सारे परिवार में सिवाय इनके और किसी ने पगड़ी नहीं बाँधी हैं ।

पग धरना—जाना । यदि तुम इस तरह मेरा अपमान करोगे तो फिर तुम्हारे यहाँ कभी पग भी न धरूँगा ।

पग पसारना—मरना ।

पच मरना— यत्न करते करते थक जाना ।

पचा बैठना—हड़प जाना, ले कर न देना । तुम पचा बैठे हो पराया माल, दिल की नालिश करेंगे हाकिम से ।

पच्चर अड़ाना—अड़गा लगाना, बाधा डालना । तुम क्यों बने बनाये काम में पच्चर अडाते हो ।

—ठोंकना—(१) खूँटा ठोकना, कष्ट देने के लिये विघ्न डालना, तग करना । मै भी तुम्हारे ऐसी पच्चर ठोकूँगा जो काम ही न बने । (२) आड़ा होना, रोकना । **मारना**—बनता, हुआ काम बिगाड़ना, भाँजी मारना । गरीब के काम में पच्चर मत मारो ।

पच्चर लगाना—दे० पच्चर अड़ाना ।

पच्छी हो जाना—बिल्कुल मिल जाना । कबूतर इतना ऊँचा उड़ता है कि अबर में पच्छी हो जाता है ।

पछड़ जाना—(१) पीछे रह जाना । (२) हार जाना । (३) गिर जाना ।

पछाड़ खाना— बेसुध हो गिरना । खबर सुनते ही पछाड़ खाने लगी ।

पछाड़ें खाना—गिर गिर पडना ।

पजावे का पजावा खंखड हो जाना—(१) घर के सब आदमियों का बिगड़ जाना, (२) सब काम खराब हो जाना ।

पट उघरना, खुलना—(१) मदिर का द्वार खुलना । (२) ज्ञान होना । **—पड़ना**—(१) कुश्ती मे नीचे पड़ना । (२) औंधा पड़ना । (३)

न चलना, धीमा पड़ना। मेरे बिना रोजगार पट पड़ा है। (४) तलवार औंधी गिरना।—बंद होना—(१) मन्दिर का द्वार बन्द होना। (२) ज्ञान न होना। धन के मद में उसके पट बन्द थे अब खुले हैं जब घाटा आया है। —मारना—किवाड़ बन्द करना। —लेना—कुश्ती में उल्टा गिरना। अखाड़े मे उतरते ही उसने पट लिया हालांकि इतना बडा पहलवान था।

पटकनी देना—नीचे गिराना, किसी मनुष्य को उठा कर पृथ्वी पर गिराना।

पटका जाना—प्रतिष्ठा कम होना। यदि अब तुम नीच मनुष्यों के साथ रहोगे तो पटके जाओगे।

पटका पकड़ना—पल्ला पकड़ लेना, किसी वजह से जबरदस्ती कहलाने के लिये मजबूर करना।

पटका बांधना—तैयार होना, (लड़ने के लिये)।

पटरा कर देना, फेरना—(१) चौपट, नाश कर देना। एक कुपुत्र ने सारा घर पटरा कर दिया। (२) खडी चीज़ को गिरा कर जमीन के बराबर कर देना। (३) मार कर गिरा देना। लड़ाई में सैकड़ों पर पटरा फेर कर पद्मिनी को बचा लाये। (४) अधिकार छीन लेना। (५) लूट लेना।

पटरा होना—(१) नष्ट हो जाना। (२) मर जाना। हैजे से लाखों घर पटरा हो गये। (३) ज़मीन में मिल जाना।

पटरी जमना—(१) मेल होना। (२) अपना कोशिश चल जाना।

पटरी जमाना—(१) घोड़े पर रान जमाकर बैठना। (२) संधि का यत्न या संधि करना। (३) काम बनाना।

पटरी बैठना—पटना, मन मिलना। हमारी उनकी पटरी कभी न बैठगी।

पट से बोल उठना—बिना सोचे, फौरन कह डालना। तुम पट से बोल उठे, उसने बात पकड़ ली, देखो काम बिगड़ गया न?

पट्टम होना—नाश हो जाना।

पट्टा तुड़ाना—(१) आजादी चाहना, बंधन से भागने की इच्छा करना।

पट्टा लिखवा लेना—वादा करवा लेना।

पट्टी का गांव—कई मालिकों का एक गाँव।

पट्टीदारी अटकना—ज़मीन के अधिकार मे हिस्सा होना। मेरी क्या पट्टीदारी अटकी है जो मैं लड़ूँ।

पट्टीदारी करना—(१) बराबरी करना। (२) ज़मीन में हिस्से के

कारण, बराबर का अधिकार जताना।

पट्टा देना—(१) घोड़े को लम्बा दौड़ाना (२) बहकाना।

पट्टी पढ़ना, पढ़ाना—(१) सीखना, बहकाना। उसे मेरे विरुद्ध पट्टी पढा भी दो तो भी वह मेरा क्या कर सकेगा? (२) शिक्षक का पाठ पढ़ाना।

पट्टी आंखो पर बाँध लेना—चश्मपोशी करना, टाल जाना। जानते हैं कि शराब पीता है पर लाचारी से आँखों मे पट्टी बाँध ली है, कहते नहीं।

पट्टी में आना—बातों या बहकावे में आना। बदमाश की पट्टी मे आ गये।

पट्ठ चढ़ना—(जाँघ में) नस पर नस चढ़ना।

पट्ठे पर हाथ न धरने देना—पास न आने देना।

पट्ठों मे घुसना बहुत गहरा दोस्त बनना। तुम तो उनके पट्ठों मे घुसे हुये हो, उनमे काम करा लो।

पड़ जाना—लेट जाना, बीमार हो जाना। दो घटे मेहनत की इसी से पड़ गये।

पड़ता खाना, पड़ना—खर्च-मुनाफा मिलना। इस भाव बेचने में पड़ता नहीं खाता।

पड़ता निकालना, फैलाना, बैठना—खर्च-मुनाफे के अनुसार भाव निकालना। पड़ता फैला लो ३॥) पड़ती है ३।।)॥ बेच रहे हैं।

पड़ता रहना—औसत होना।

पड़ताल करना, पड़ना—जाँच करना, होना।

पड़ती उठना—(१) काश्तकार मिलना। यह पड़ती भी इस बार १००) में उठगई। (२) पड़ी हुई ज़मीन के जोतने का प्रबन्ध होना।

—**उठाना**—(१) खाली पड़ी जमीन को खेती के काम में लाना। (२) जोतने का बन्दोबस्त करना।

—**छोड़ना**—खेत को खाली ही छोड़ देना। इस फसल मे पड़ती छोड दोगे तो आगे की फसल में बहुत नाज पैदा होगा। —**पड़ना**—(१) बंजर जमीन होना। (२) उजाड़, बर्बाद होना।

पड़ा पाना—सरलता से मिल जाना, बिना परिश्रम पाना।

पड़ाव डाल देना—दे० डेरा डालना।

पड़ाव मारना—ठहरे हुए यात्रियों को लूटना छापा मारना। (२) बड़ा भारी कार्य करना। ऐसा कौनसा पड़ाव मारा है, दो निहत्थे ही तो पीटे हैं। (३) हिम्मत का कार्य करना।

पड़ा होना—(१) एक जगह बने रहना। तीन दिन से वे यहीं पड़े

थे, आज गये हैं। (२) उपयोग में न आना, धरा रहना। बरसों किताब पड़ी रही देखी तक नहीं। (३) बाकी रहना। सारी किताब पढ़ने को पड़ी है।

पड़ा क्या है?—कुछ मतलब नहीं, क्या प्रयोजन है। तुम्हें क्या पड़ी है जो दूसरों के लिये कष्ट उठाओ।

पड़े वह जाने—दुख भुगतने पर ही ज्ञात होता है। जिस पर पड़े वह जाने, तुम्हें क्या पता कि हम कितने दुखी हैं।

पड़ रहना—निकम्मा, लेटे रहना। दिन भर पड़े रहते हो कुछ किया ही करो।

पड़ोस करना — समीप रहना। पड़ोस तो आपका किया, माँगने किससे जाऊँ।

पढ़ंत पढ़ना—जादू मंत्र पढ़ना।

पढ़ा देना—(१) सिखा देना। तुम क्या चतुर हो मैं तुम्हें अभी १० बरस पढ़ा दूँ। (२) आगाह कर देना।

पढ़े लिखे को शीशे में उतारना—बड़े चालाक को फँसाना।

पतंग काटना—(१) पतंग की डोरी काटना। (२) प्रभाव या सम्बन्ध हटा देना। मैंने सेठ के यहाँ से उनकी पतंग काट दी।

पतंग होना—काम के लिये बहुत दौड़ धूप करना।

पतंगे लगाना—(१) शरारत करना। (२) चिढ़ाना, दिल जलाना।

पत उतारना, लेना—बेइज्जती करना।

पत रखना—इज्जत बचाना।

पतला पड़ना — दुर्दशाग्रस्त, अशक्त, दीन होना। पहिले भारी क्रोध था, अब कुछ पतले पड़ने से शांत हो गये हैं।

पतला हाल होना—(१) दुर्दिन आना। निर्बल, बे ताकत होना। पहिले ही दिन सारी ताक़त घट गई, शेख़ जी का आज पतला हाल है।

पतलून से बाहर होना—आपे मे न रहना, जोश में आजाना। क्यों पतलून से बाहर हो रहे हो दो थप्पड़ों में ठीक कर दूँगा।

पताका उड़ना—(१) राज्य हो जाना। किसी समय यहाँ राजपूतों की पताका उड़ती थी। (२) सर्व श्रेष्ठ होना। आज उत्तर भारत में, पंडित जी की ही पताका उड़ रही है। (३) शोहरत या धूम होना। उनकी दान वीरता की पताका चारों ओर उड़ रही है।

पताका उड़ाना—(१) विजयी होना, झंडा फहराना। (२)

प्रधान, मशहूर, होना। (३) राज करना।

पताका गिरना, पतन या पात होना—(१) हार हो जाना। दिन भर खूब ही लड़े और विजय से शत्रु की पताका गिर गई।

पताका फहराना—दे० पताका उड़ना, उड़ाना।

पते की कहना, सुनाना—भेद बताना। उसने बड़ी पते की कही थी अन्त मे ठीक वही हुआ।

पते की बात—भेद खोलने वाली बात।

पत्तल—(एक के खाने वाले)—गहरे दोस्त। वह दोनों एक पत्तल के खाने वाले हैं।

पत्तल खोलना—पत्तल बाँधने की पहेली का उत्तर दे देना।

पत्तल झाड़ कर चल देना—मतलब साध कर चले जाना।

पत्तल डालना, पड़ना—भोजन के लिये पत्तल बिछना।

पत्तल परसना, लगाना—(१) पत्तल पर खाना रखना। (२) भोजन सहित पत्तल रखना। पत्तल परस गया।

पत्तल बनाना—(१) पत्तल बनाना, पत्तों को सीक से जोडना। (२) पत्तल मे पदार्थ रखना। (३) पदार्थ भरी पत्तल सामने रखना।

पत्तल बांधना—पहेली कहकर उत्तर देने से पहिले न खाने की कसम देना।

पत्तल में (खाना और) छेद करना—भलाई करने वाले के साथ बुराई करना। दस साल से मेरा नमक खारहा है फिर भी जिस पत्तल में खा रहा है उसी में छेद करना चाहता है।

पत्ता खड़कना—आने की आहट, खटका होना। पत्ता खड़का बंदा भड़का (कहावत)।—**तोड़कर भागना**—बड़े जोर से भागना। वह आपको आते देख पत्ता तोड़ भागा। —**न हिलना**—हवा न चलना। गर्मी बहुत है, पत्ता हिलता नहीं, दम घुट रहा है। —**लगना**—पत्ते से लगे रहने से फल मे दाग़ पड़ना।—**हो जाना**—काफूर हो जाना, भाग जाना, चम्पत होना।

पत्रे खोलना—भेद, पोल खोलना, ऐब जाहिर करना। चुप रहो अगर और बकोगे तो मै भी तुम्हारे पत्रे खोल दूँगा।

पत्थर का कलेजा, दिल, हृदय—दे० कलेजा पत्थर का।—**का छापा**—लिथो की छपाई। पुरानी पुस्तक पत्थर के छापे की हैं।—**की छाती**—दे० कलेजा पत्थर का। —**की लकीर**—पक्की, स्थायी अमिट। ओछों की दोस्ती पानी

की लकीर सज्जन की मित्रता पत्थर की लकीर है।—के देवता—कुछ न बोलना, चुप चाप रहना। तुम्हें लेजा कर क्या करूँ पत्थर के देवता हो।—को जोंक लगना—असंभव बात करना। कृपण से दान दिलाना, निर्दय को दया लाना मूर्ख को समझाना पत्थर को जोंक लगना है।—चटाना—पत्थर पर घिस कर तेज़ करना। छुरी को पत्थर चटा कर काम में लाओ।—छाती पर धरना—लाचारी से दुख झेलना, सहना। —ढोना—(१) बहुत परिश्रम करना। बड़े घर पढिये पत्थर ढो ढो मरिये। (२) फिजूल मेहनत करना। —तले से हाथ निकालना—मुसीबत से छूटना।—तले हाथ आना, दबना—(१) संकट में फँसना। (२) लाचार, मजबूर होना, जबरदस्त के पंजे में फँसना, हत्थे पड़ना।—निचोड़ना —(१) स्वभाव विरुद्ध कार्य कराना। (२) पत्थर को जोंक लगना।—पड़ना—(१) नष्ट होना। अक्ल पर क्या पत्थर पड़े थे जो न सोचा। (२) इच्छा पूरी न होना। जहाँ जाता हूँ वहाँ पत्थर पड़ते हैं, कोई साथी नहीं। (३) दुख पड़ना। —पड़े—चौपट, नष्ट हो जाय।—पर दूब जमना—निराशा में आशा, असंभव में संभव होना। बंध्या के पुत्र होना पत्थर पर दूब जमना है। —पसीजना, पिघलना—निर्दय को दया, कृपण में दानेच्छा होना। सैकड़ों प्रार्थनाओं के बाद पत्थर पसीजा है, सो भी कुल १००) दिये।—पानी होना—निर्दय को दया आना।—बरसना—ओले पड़ना।—मारे भी न मरना—मरने के सामान होने पर भी न मरना, बेहयाई से जीना।—लुढ़काना—(१) भारी और बेजोड शब्द बोलना, लिखना। (२) किसी का बुरा चाहना।—सा खींच या फेंक मारना—असह्य, लट्ठमार, कड़ी बात कहना।—से भाग्य (नसीब) फूटना—(१) बेहद भाग्य बुरे होना। (२) संगदिल से बैर बँधना। —से सिर फोड़ना या मारना— (१) असम्भव के लिये प्रयत्न करना। (२) मूर्ख को समझाना।

पत्थर हो जाना—(१) जमकर सख्त हो जाना। (२) चुप्पी साधना, न टलना।

पत्थर होना—(१) तोल मे बहुत भारी होना। (२) निर्दय, कठोर दिल होना। (३) न टलना, न हिलना। (४) बहरा बन जाना।

पथ्य से रहना—परहेज़ से रहना।

पथ्य होना—अनुकूल या लाभदायक

होना । नशेबाज को नशा भी पथ्य है ।

पनाह देना—आश्रय देना, रक्षा करना ।

पनाह माँगना—(१) दूर रहने की इच्छा करना । आप दूर रहिये मैं आप से पनाह माँगता हूँ । (२) सहारा, रक्षा चाहना ।

पनाह लेना—शरण में पहुँचना, सहारा पाना ।

पनीर चटाना—काम निकालने के लिये खुशामद करना ।

पनीर जमाना—(१) ऐसी बातें करना जिससे आगे बहुत काम निकले । (२) अधिकार के लिये आरंभिक कार्य करना । पनीर तो जमा लिया है लाला लौटे और काम बना ।

पपड़ा जाना—फट जाना । मेरे होठ गर्मी से पपड़ा गये हैं ।

पपड़ी छोड़ना—पतली तह का सूख कर चिटकना । शीतला ने पपड़ी छोड़ दी है ।

पयाल गाड़ना, झाड़ना—(१) व्यर्थ श्रम करना । (२) ऐसे की सेवा जिससे लाभ की आशा न हो ।

पर और बाल निकलना—(१ ऊधम मचाना । (२) सीधा सादा न रहना । अब तो उसके पर और बाल निकल आये हैं अब वह तुम्हें भी चला दे ।

पर-कट जाना—(१) शक्ति का सहारा न रहना । उनके मरने से हमारे तो पर कट गये वरना अब तक तो बीस बार विलायत को उड़ गये होते (२) साहस या पहुँच न होना ।—**काट देना**—अशक्त, असमर्थ कर देना ।-**कैंच करना**—पख कतरना ।—**जमना**—(१) पर निकलना । (२) चलाकी चतुरता सूझना, आना । शहर में रहने से साल भर मे ही लड़के के पर जम गये अब वह धोखे देता है, खाता नहीं ।-**जलना**—(१) हिम्मत न होना । (२) पहुँच न होना । वहाँ जाते हुए बड़े बड़ों के पर जलते हैं तुम्हारी क्या गिनती है । (३) लाचारी से सामना न कर सकना ।—**झाड़ना**—(१) पुराने पर गिराना । (२) पंख फटफटाना ।-**टूट जाना**-दे० पर कट जाना ।-**टूटना**—दे० पर जलना ।-**बाँध लेना**—अधिकार या वश में कर लेना । जायदाद बहू के नाम करके पर बाँध लिये हैं ।—**न मारना**—कोई जा न सकना । जनाने में चिड़िया भी पर नहीं मार सकती ।-**निकलना**—(१) पंख युक्त होना । (२) इतराना, बढ़कर चलना ।-**पुरज़े झड़ना**—शक्ति ही न रह जाना ।-**मारना**—(१) उड़ना । (२) जा

सकना, पहुँच होना, आने-जाने का मौका मिलना।—**लग जाना**—(१) तरक्की होना, फैलना। (२) शेखी में आ जाना (३) जल्दी उड़ना, हालत ही बदल जाना। —**लगना**—(१) प्रसिद्ध होना। बुराई के बड़ी जल्दी पर लग जाने हैं। (२) समझ आना। अभी इसके पर नहीं लगे हैं वरना यह तो चालाकों के चूना लगायेगा। —**लेना**—पर कतरना। कबूतर के पर लेलो।

परचा देना— १) परिचय बताना। (२) लिखकर देना।

परचा माँगना—(१) प्रमाण देने के लिये कहना। (२) देवता से शक्ति दिखाने की प्रार्थना करना।

परचा लेना—(१) जाँच-परीक्षा लेना। (२) ललचाना। (३) अपने मन का बना लेना। दाग में परचा ही लूँगा बातों बातों में उन्हें, शत है बस यह कि उनका सामना होने लगे।

परछाई न पड़ना—कुछ भी पता न मिलना। असली तो क्या परछाई भी न पा सकोगे।—**पड़ना**—संगत सोहबत का असर होना। तुम पर भी सेठजी की परछाई पड़-गई इसीलिये कंजूस हो गये हो। —**से डरना**—(१) बहुत डरना। (२) पास तक आने से डरना। (३) कोई लगाव न चाहना।—**से भागना**—बहुत घृणा करना। वह तो बुरे कामों की परछाई से भागता है। (घृणा, आशंका से)।

परतीत करना—विश्वास करना। जब से उसके सौ रुपये चोरी चले गये हैं, तब से वह किसी की परतीत नहीं करता है।

परदा उठाना, खोलना—(१) छिपी बात प्रकट करना। (२) शर्म छोड़ना।

परदा उठा देना—(१) घूँघट की रीति न रखना। (२) बे शरम हो जाना।

परदा डालना, ढकना- छिपाना, न कहना। उन्होंने मेरे ऐबों पर परदा डाल रखा है।

परदा पड़ना—(आँख या बुद्धि पर) दिखाई न देना, समझ में न आना।

परदा फाश करना—भेद प्रकट करना। उसके पेट मे बात नहीं पचती वह परदा फाश कर देगा।

परदा रखना—(१) भेद छिपाना, बुराई न प्रकट होने देना। (२) परदे के भीतर रहना। स्त्रियाँ मरदों से परदा रखती हैं। (३) छिपाव रखना।

परदा रख लेना, रह जाना—(१) इज़्ज़त बचा लेना, शर्म, बात

रह जाना। (२) भेद न खुलने पाना।

परदा लगाना—सामने न होना। पहिले तो मारी मारी फिरती थी अब परदा लगा है।

परदा होना—(१) स्त्रियों के सामने न होने का नियम होना। उनके घर बच्चों से भी परदा है। (२) छिपाव होना। तुम तो सब हाल जानते ही हो तुमसे क्या परदा है।

परदे-परदे—छिपे छिपे।

परदे बिठाना—(स्त्री को) परदे के भीतर रखना।

परदे मे चाहना—दिल ही दिल मे इच्छा करना।

परदे में छेद होना—परदे के भीतर व्यभिचार होना।

परदे में रखना—(१) स्त्रियों को किसी के सामने न होने देना। (२) छिपाकर रखना।

परदेश में छाना—घर पर नहीं, दूसरे देश मे रहना। अंग्रेज अधिक तर परदेशों में ही छा रहे हैं।

परले दरजे, सिरे का—अत्यत। बहुत अधिक। वह तो परले दरजे का बदमाश है। परले सिरे का मूर्ख है।

परले पार होना—(१) अंत तक पहुँचना। (२) समाप्त होना। काम का परले पार होना गङ्गा नहाना है।

परलोक वासी होना, सिधारना—मरना।

परवरिश करना—पालन पोषण करना। जिस माता ने तुम्हारी परवरिश की है, उसे इस तरह दुख देते हो।

परवा न करना—ख्याल न करना, अनादर करना।

परवान चढ़ना—पूरी आयु तक पहुँचना ; विवाहित होना।

पर व बाल निकलना—(१) होश सँभालना। (२) झगड़ा खडा करना।

परवाना होना—निछावर होना जान देना।

परवाह करना—धारा मे बहाना। मुर्दे को परवाह कर दो।

पराकाष्ठा को पहुँचना—अत्यत, बहुत अधिक होना। अब तो अत्याचार पराकष्ठा को पहुँच चुका है।

पराक्रम चलना—उद्योग हो सकना। बुढापे मे पराक्रम नहीं चलता।

पराया समझना—(१) भेद भाव रखना। (२) भला बुरा समझना। देखो अपना पराया समझो वरना धोखा खाओगे।

पराए बिरते पर शिकरा पालना—दूसरे के भरोसे काम करना।

पराए माल पर दीदे लाल होना—दूसरे के माल पर या सहारे इतराना।

परिन्दा पर नहीं मारता—कोई आ जा नहीं सकता। आदमी की क्या चलाई वहाँ परिन्दा भी पर नहीं मारता।

परे बैठना, रहना—अलग रहना।

परे बैठाना—(१) हटकर बैठाना। (२) दूर रखना, घृणा करना। बगल में बिठाने वाले भी गरीबी में परे बैठाने लगे।

परेशान करना—दुखित करना। हमारी किताब छिपा कर हमें क्यों परेशान करते हो, हमें देर हो रही है।

पर्वत को राई गिनना—बड़े को छोटा, कठिन को सहज समझना। दिल में जिनके हैं तेरी बड़ाई गिनते हैं वह पर्वत को राई।

पलंग को लात मार कर खड़ा होना—(१) बहुत भारी बीमारी सहकर अच्छा होना। (२) संतान उत्पत्ति के बाद सुख से होना। गरीब औरतों को तो मजदूरी करनी पड़ती है वह तो बच्चे के दस दिन बाद ही पलंग को लात…।

पलंग तोड़ना—व्यर्थ पड़े रहना, घर में बेकार बैठे रहना। यों ही पलंग तोड़ते हो, किसी की नौकरी ही क्यों न कर लो।

पलंग लगाना—बिस्तर-बिछौना बिछाना। तुमको पलंग लगाना तक तो आता नहीं।

पलक झपकना—(१) ज़रा सो रहना। (२) डर हो जाना। भूत को देखते ही पलक झपक गई।

पलक झपकते—थोड़ी देर में, क्षणभर में। पलक-झपकते ही उसका पता न चला।

पलक पसीजना—दया रहम आना, आँसू आना। गरीबों के दुख पर अमीरों के पलके भी नहीं पसीजते।

पलक बिछाना—(१) प्रेम से आदर, स्वागत करना। आइये आपके लिये पलके बिछी हैं। (२) राह में टकटकी लगी होना।

पलक भँजना, भाँजना—आँखों या पलकों से संकेत करना, पलक गिराना।

पलक मारना—(१) आँख बंद करना। (२) आँख से इशारा करना, सैन मारना। मैंने तो जेब से निकाल ही लिये थे पर उसने पलक मार दी।

पलक लगाना—सोना आँख बन्द करना। पलक लगाओ नींद आ जायगी।

पलक से पलक लगना—बहुत थोड़ी सी नींद आना। नींद आना। पलक से पलक लगा ही था कि तुम आगये।

पल को (के) पल में—थोड़ी ही देर मे। पल में परलय होयगी बहुरि करोगे कब।

पलकों से जमीन झाडना, तिनके चुनना, नमक उठाना—श्रद्धा प्रेम से सेवा सुश्रूषा करना; सुख देना। मै आपके लिये पलकों से तिनके चुनूँगा।

पलट आना—लौट आना। तो पलट आते, मै और तरीका बताता।

पलट जाना—मुकर या बात बदल जाना। वह झूठा है बात झट पलट जायगा।

पलटा खाना—(१) नीचे-ऊपर हो जाना। (२) कह कर बदल जाना। इन्कार करना। उसका विश्वास नहीं वह पलटा खा जाता है।

पलटा लेना—(१) बदला लेना। (२) लौटा लेना। (३) बदलवा लेना। दुकानदार पलट लेगा तुम पलटा लाओ।

पलथी मरना—पैरों को मोड़ कर बैठना। क्या बुरी तरह पाँव फैला कर बैठते हो, रोटी खाते समय तो पलथी मार कर बैठा करो।

पल मारते, मारने में—दे० पलक झपकते।

पल मारना—आँखों को बन्द करके झट खोलना। दो मिनट तक तो साधु बात करता रहा, पल मारते ही अन्तर्ध्यान हो गया।

पलस्तर उड़ाना—बहुत मारना, बुरी हालत करना। पीटते पीटते बदमाश का पलस्तर उड़ा दिया, पलेथन निकाल दिया।

पलस्तर ढीला करना, बखेरना बिगाडना बिगाड़ देना—तग, दुखी कर देना। अदालत तक चलो सब पलस्तर बखेर दूँगा देखे क्या सबूत देते हो।

पलस्तर बिगड़ना, बिगड़ जाना ढीला होना—(१) तग दुखी होना। (२) नसें ढीली हो जाना।

पल्ली पल्ली जोड़ना—थोड़ा थोड़ा इकट्ठा करना, बड़ी मुश्किल से मालदार बनना। बंदा जोड़े पल्ली पल्ली लुकमान लुटावे कुप्पे (कहावत)।

पलीता चाटना—(१) बंदूक या तोप का न चलना। (२) कढाई के घी तेल का आँख से भड़कना।

पलेथन निकलना, निकालना—दे० पलस्तर उड़ाना।

पल्ला आना—समीप घुसे आना।

पल्ला छूटना, छुड़ाना—पिंड छुड़ाना, छुटकारा पाना। घंटों

खड़ा रहना पड़ता है, पल्ला छुटाना भारी होता है।

पल्ला झुकना—पक्ष बलवान होना। उनका पल्ला झुका हुआ है, तुम कैसे बराबर हो सकते हो?

पल्ला पकड़ना—(१) सहारा लेना। भगवान का पल्ला पकड़ो वह बचायेगा। (२) रोक लेना। पल्ला पकड़ लिया आने ही न दिया।

पल्ला पसारना—(१) माँगना, हाथ फैलाना। (२) दुआ-प्रार्थना करना। मैं गरीबिनी और किस के आगे पल्ला पसारू मुझे तो तुम्हीं से आस है।

पल्ला भारी होना—एक ओर अधिक बल या सबूत होना। जिधर पल्ला भारी होगा उधर की कहेंगे।

पल्ला लेना—दे० पल्ला पकड़ना।

पल्ले पर आना—ज़िद पर आना। पल्ले पर आ गया तो जिन्दा न छोड़ेगा।

पल्ले पड़ना—(१) हिस्से में आना। अच्छा अच्छा वे ले गये ये हमारे पल्ले पड़ा। (२) हाथ लगना। (३) दे० पल्ले बँधना।

पल्ले पर रहना, होना—ओर होना। मगर जिसके पल्ले पर अल्लाह हो, न हारे न भटके न गुमराह हो।

पल्ले पार होना—तोड़ कर निकल जाना, पार होना।

पल्ले बाँधना—(१) ब्याह देना। (२) गाँठ बाँधना, याद रखना। (३) तह करना, बन्द करना। (४) ऊपर या जिम्मे लेना, करना। कहीं आने जाने का नहीं छोटे छोटे बच्चे पल्ले बाँध गयी है।

पल्ले से बँधना—(१) गले पड़ना, मैं न कर सकूँगा मेरे पल्ले से न बँधे तो अच्छा। (२) विवाह में आना। (३) जबरदस्ती मिलना।

पवन का भुस होना—उड जाना, महत्त्व न होना। मेरो कह्यो पवन को भुस भयो, काहू न दीनो कान।

पशम उखाड़ना—कुछ हानि न कर सकना।

पशम न उखाड़ना—कुछ न कर सकना।

पशम न समझना—कुछ भी न समझना।

पशम पर मारना—परवा न करना।

पसंगा भी न होना—कुछ भी बराबर न होना, बहुत तुच्छ होना।

पसंद आना—भाना, रुचना, अच्छा लगना।

पसंद करना—चाहना, इच्छा करना।

पसली फड़कना या फड़क उठना—(१) खबर हो जाना। (२) खबरदार हो जाना। (३)

[५६३२]

देखने को व्याकुल होना। पसली फड़क रही थी कल से तुम्हारी कसम तुम आ गये न।

पसलियाँ ढीली करना, पसली तोड़ना — बहुत भीतरी मार मारना।

पसीने की जगह लोहू बहाना—किसी की थोड़ी सी तकलीफ में जान की भी परवा न करना, बहुत प्रेम करना। क्यों डरते हो तुम्हारे पसीने की जगह मे लोहू भी बहा दूँगा।

पसीने पसीने होना—बहुत लाज्जत होना (स्त्री)।

पसीने (गाढ़े की कमाई)— दे० गाढ़े पसीने की कमाई।

पसो पेश करना—हिचकिचाना देर करना। पसो पेश क्यों करते हो नाराज़ होंगे तो हो जाने दो।

पस्त करना—पीछे हटाना, हरा देना।

पहरा अच्छा, हलका या बुरा, भारी—नौकरी या रखवाली का ऐसा होना।

पहरा देना—रखवाली करना। कहाँ तक २४ घंटे पहरा देता आँख झपकी वह भागा।

पहरा पड़ना—दे० पहरा बैठना।

पहरा बदलना—रखवाला बदलना। आठ घंटे में पहरा बदलो वरना ये थक जाँयगे।

पहरा बैठना, बैठाना—रखवाली, चौकसी, रक्षा के लिये सिपाही बैठाना। उनपर पहरा बैठा है आ-जा नहीं सकते।

पहरे में डालना देना बैठाना— दे० पहरा बैठाना।

पहरे में रखना—(१) दे० पहरा बैठाना। (२) बंधन, जेल या हवालात में रहना। बेईमान रुपये नहीं देता था अब पहरे मे रखवा दिया है।

पहरे में होना—(१) रखवाली पर (२) वश में होना। मालिक मेरे पहरे में हैं पर मैं भी तो उनके पहरे में हूँ बिना आज्ञा जा नहीं सकता।

पहल निकालना—कोने बनाना।

पहली बिस्मिल्लाह गलत—काम होते ही बिगड़ना।

पहलू गरम करना (किसी का)—बगल में बैठना।

पहलू गरम करना (किसी से)— बगल में बैठाना।

पहलू दबाना—सेना या क़िले पर किसी ओर से आक्रमण करना, टूटना।

पहलू निकालना—मौक़ा तरीक़ा निकालना। छोटे वकील ने ऐसा पहलू निकाला कि साफ़ जीत गये।

पहलू पर होना—सिद्धान्त पर होना।

पहलू बचाना—(१) जी चुराना। (२) आँख बचाकर या कतरा कर निकल जाना। तुमने पहलू बचाया इसीलिये मैंने पुकारा।

पहलू बदलना—रंग पलटना। भाई इतनी जल्दी पहलू बदलने की सनद नहीं।

पहलू बसाना—(१) गोद में बैठना। (२) समीप में जा बसना।

पहलू में बैठना, बैठाना—बगल में या जघाओं पर बैठना बैठाना।

पहलू में रहना—पास रहना।

पहलू लिये हुए होना—मतलब की चीज़ पाना। जो था वही दिल लिए हुए था, अपना पहलू लिए हुए था।

पहाड़ उठाना—भारी काम पूरा करना या सिर पर लेना। थोड़ा काम लो पहाड़ मत उठाओ।

पहाड़ कटना—(१) भारी काम पूरा होना। (२) विपत्ति दूर हो जाना। आज साल भर में पहाड़ कटा निश्चित हुए।

पहाड़ काटना, पहाड़ के पत्थर ढोना—(१) असभव काम कर डालना। (२) कठिन काम करना। यह तो पहाड़ काटना है मुझसे न होगा।

पहाड़ गुजरना—सहा न जाना, नागवार गुजरना। मुझे उनके ताने पहाड़ गुजरते हैं।

पहाड़ टालना—विपत्ति दूर करना, सकट से पीछा छुड़ाना। ज्यों त्यों करके पहाड़ टाला नहीं तो दिन रात काम करना पड़ता।

पहाड़ टूटना, टूट पड़ना—भारी विपत्ति आना। गरीबी में पहाड़ टूटा २००) का खर्च आ पड़ा।

पहाड़ से टक्कर लेना—(१) बड़े से बैर करना। (२) ऊँचे की बराबरी करना। वह २५ लाख के आसामी हैं उस पहाड़ से क्या टक्कर ले।

पहाड़ हो जाना—भारी होना, न कटना। वियोग के दो दिन भी पहाड़ हो गये।

पहुँचने वाला—जो जा सके।

पहुँचा पकड़ना—(१) बरजोरी रोकना। (२) तरकीब या उपाय करना। ऐसा पहुँचा पकड़ूँ कि जज भी मात खा जाय।

पहुँचा हुआ—सिद्ध, पारंगत, ईश्वर ज्ञानी। यह चालाकी में पहुँचे हुए हैं वह भक्ति में।

पहुनाई करना—स्वागत आदर करना। हम तो सूखी रोटियों से ही पहुनाई कर सकते हैं।

पहेली बुझाना—चक्करदार बात करना, मतलब को घुमा फिरा कर कहना। ऐसी पहेली बुझाता है कि आदमी चक्कर में आ जाये।

पाँचों उँगली घी में होना—खूब लाभ ही लाभ, आनन्द होना,

अच्छी बन आना। नवाब के सेक्रेटरी हो पाँचों उँगली घी में हैं भाई !

पाँचों उँगली बराबर नहीं—सब एक से नहीं। दो लड़के अच्छे हैं तो एक बुरा भी है, पाँचों · ।

पाँचों सवारों में नाम लिखाना—बड़े लोगों में बताना, गिनाना। ५० हज़ार ब्याह मे लगावोगे बिक जाओगे, हाँ नाम ज़रूर पाँचों सवारों में लिखा लोगे।

पाँचों से बाहर होना—तीन लोक से मथुरा न्यारी।

पाँसा उलटना—कार्य का फल बदल जाना।

पाई करना—केस बिगाड़ना। कम्पोज़ीटर सारा केस पाई कर गया (प्रेस ।

पाक करना—(१) पवित्र बनाना। (२ खतम करना। अजी क़िस्सा पाक करो ऐसे आदमी से क्या ताल्लुक़।

पाक करना (झगड़ा)—(१) झगडा मिटाना। (२) मार देना। (३) चिन्ता दूर करना।

पाकट गरम करना—रिश्वत, घूँस लेना। कचहरी और पुलिस वाले खूब पाकट गरम करते हैं।

पाक होना—साफ, दूर होना, खत्म होना।

पाखंड फैलाना—धोखे का जाल डालना। ढोंगी ने पाखंड फैलाया है साधू नहीं है।

पाखाना निकलना, फिर देना—(१) डर से गू निकलना। (२) बहुत डरना।

पाखाना फिरना—विष्ठा, गू त्यागना।

पाखाना लगना—टट्टी जाने की इच्छा होना।

पाखाने जाना—दे० पाखाना फिरना।

पाजामे से बाहर होना—जोश में आना।

पाट देना—मालामाल कर देना, ढेर कर देना।

पाटा फेरना—नाश कर देना। सारी इज्जत पर पाटा फेर दिया।

पाठ पढ़ना—सीखना, बहकाये में आना।

पाठ पढ़ाना (उलटा)—उल्टी शिक्षा देना।

पाताल की खबर लाना—बहुत दूर की खबर लाना।

पादर रकाब होना—रवाना होना।

पान उठाना—बीड़ा उठाना, भारी काम करने की प्रतिज्ञा करना। उसने पान उठा लिया और कहा कि बिना लाये मुँह न दिखाऊँगा।

पान कमाना—उलट पुलट कर पान का गला अंश दूर करना।

[५६६६]

पान खिलाना—मँगनी, सगाई करना।

पान चीरना—व्यर्थ के काम में समय बिताना। पान चीर रहे हैं, करते क्या! करना ही नहीं चाहते।

पान देना—वायदा कराना, पक्का कराना, हामी भरवाना।

पान-पत्ता, **पान फूल**—(१) मामूली भेंट। गरीबों के पास पान फूल ही तो हैं। (२) कोमल वस्तु।

पान फेरना—दे० पान कमाना।

पान बनाना—(१) पान कमाना। (२) चूना कत्था लगा कर बीड़ा बनाना।

पान लेना—दे० बीड़ा उठाना।

पानदान का खर्च—वह रकम जो स्त्रियों को पान तथा अन्य निजी खर्च को दी जाय, साधारण खर्च।

पानी आना (मुँह में)—(१) पाने का लोभ होना। (२) चखने के लिए जीभ ललचाना। आशा होते ही कि मिल सकती है मुँह में पानी आ गया।

पानी आना—(१) पसेव, लार निकलना। (२) मेह पड़ना, पड़ने वाला होना। (३) कुएँ आदि में सोता खुलना।(४) घाव, आँख में पानी भर आना या गिरना।

पानी उठाना–(१) पानी सोखना। मुलायम आटा खूब पानी उठाता है।

पानी उतर जाना—(१) बहाव कम होना। (२) चमक (मनुष्य, मोती, शीशे की) न रहना। (३) शर्म न रहना।

पानी उतरना—(१) उतार होना, बाढ घटना। (२) इज्जत या चेहरे का नूर बिगड़ना। (२) अण्डकोश बढना। (४) नजला आखों मे।

पानी उतारना—बेइज्जत करना।

पानी करना—(१) दया ला देना, द्रवित करना। दुख की वह तस्वीर खींची कि पत्थर के दिल को पानी कर दे। (२) सरल, सहल कर देना। मैंने इस काम को पानी कर दिया। (३) क्रोध दूर कर देना। (४ शर्मिन्दा करना।

पानी को आसरा—सहायता की आशा। सेवा तो सेवा उनसे पाना तक का आसरा नहीं।

पानी का हगा मुँह को आना—ऐब खुलजाना, किए का फल मिलना।

पानी काटना—(१) बहाव एक से दूसरी तरफ़ करना। अपने खेत से मेरे खेत में पानी काट दिया। (२) तैरने में हाथ से पानी हटाना। बहाव के रुख पानी नही काटा जायगा।

पानी का बतासा, बुलबुल—क्षणभंगुर, थोड़ी देर रहने वाला।

क्रोध तो पानी का बुलबुला है हमेशा न रहेगा।

पानी की तरह बहाना—उड़ाना, लुटाना, बे विचारे खर्चना। लाखों रुपये पानी की तरह बहा दिये।

पानी की धौंकनी लगना—बहुत प्यास लगना।

पानी की पोट—(१) वह साग जिसमें पानी का अंश अधिक हो। (२) जिसमें पानी ही पानी हो।

पानी की लहरें गिनना—असंभव काम करना।

पानी के मोल—बहुत सस्ता। गाँव में घी भी शहर के पानी के मोल होता है।

पानी के घड़े पड़ना—दे० घड़ों पानी पड़ना।

पानी के मोल बिकना—बहुत सस्ता बिकना।

पानी के रेले में बहना—(१) नष्ट कर देना। जवानी तो पानी के रेले में बहा दी। (२) कौड़ियों में लुटाना।

पानी खुलना—वर्षा बन्द होना।

पानी गले तक आ जाना—हद हो जाना।

पानी चढ़ना—(१) पानी ऊँचाई पर जाना। नल में पानी ही नहीं चढ़ता। (२) पानी बढ़ना। गंगा में पानी चढ़ा। (३) सींचा जाना।

पानी चढ़ाना—(१) बहुत पानी पीना। सेर भर पानी चढ़ा गये। (२) खेत सींचना। (३) पानी चूल्हे पर रखना, गर्म करना। पानी चढ़ा दो जो नहाने के वक्त तक गर्म हो जाय। (४) पानी ऊँचाई पर ले जाना।

पानी चलाना—(१) आँसू बहाना। (२) पानी फेरना।

पानी चुराना—घाव में पानी जाना।

पानी छानना—खूब सावधानी से परीक्षा करना। वह पानी को भी छान लेते हैं तब विश्वास करते हैं।

पानी छूटना—कुएँ में कम पानी जो निकाला न जा सके।

पानी छूना—पीठ धोना।

पानी छोड़ना—पानी निकलना। घाव पानी छोड़ता है।

पानी टूटना—(१) कुएँ में पानी कम हो जाना। हमारे कुएँ का पानी टूट गया है। (२) मेह रुकना।

पानी ढलना—रौनक नूर जाता रहना। अब वह खूबसूरत नहीं, पानी ढल गया।

पानी तोड़ना—(१) जल्दी जल्दी खूब खींच कर कम पानी कर देना। कुएँ का पानी तोड़ दो तो बदबू जाय। (२) पानी काटना (नाविक)।

पानी थामना—(१) धार पर चढ़ाना (नाविक)। (२) पानी रोकना।

पानी दम करना—दुआ पढ़ कर पानी पर फूँकना।

पानी दिखाना—पशु को पानी पिलाना।

पानी देना—(१) तर्पण करना, पितरों को जलांजलि देना। (२) सींचना। वृक्ष में पानी दो तो पनपे। (३) चमकाना।

पानी देवा न नाम लेवा—खानदान में कोई न रहना। आज भारत के सम्राट् मुगलों का कोई पानी देवा है न नाम लेवा है।

पानी न माँगना—चटपट मरना। ऐसे साँप ने (तलवार ने) काटा कि पानी भी न माँग सका।

पानी पड़ना—(१) वर्षा होना। (२) शर्मिन्दा होना। इस बात से उन पर पानी पड़ गया।

पानी पड़ा—ढीला ढाला। कन कौवा पानी पड़ा है, डोर ढीली है।

पानी पढ़ना—पानी चुल्लू में ले मंत्र पढ़ना। पानी पढ़कर छिड़का तो भूत भागा।

पानी पर नीव डालना, देना, होना—पक्का, दृढ़ आधार न होना। ऐसा काम मत करो जिसकी पानी पर नीव हो।

पानी पानी करना, होना—बहुत लज्जित करना, होना। यह सुनकर वह पानी पानी हो गया।

पानी पीकर जात पूछना—काम करने के बाद सोचना कि यह ठीक था या नहीं, पीछे औचित्य पर विचार करना।

पानी पी पी कर कोसना—हर समय गाली देते रहना।

पानी फिरना, फिर जाना—(१) काम बिगड़ना, चौपट होना। इस एक बात से सारे काम पर पानी फिर गया। (२) ताज़गी आ जाना।

पानी फूंकना—मंत्र पढ़ कर पानी पर फूंकना।

पानी फूटना—(१) उबाल आना। (२) बाँध या मेंड़ तोड़ कर पानी निकलना। मेरे खेत में पानी फूट गया, फसल खराब हो गई।

पानी फेरना, फेर देना—बात बिगाड़ देना, बना काम बिगाड़ना, चौपट कर देना।

पानी बचाना—इज्जत बचाना। आपने मेरा ऐन मौके पर पानी बचा लिया भगवान भला करे।

पानी बाँधना—(१) बहाव रोकना (२) जादू से जलस्तम्भ करना।

पानी बुझाना—ईंट, लोहा आदि गरम करके पानी में डालना।

[५७५७

पानी तबीब दे हैं हमे क्या बुझा हुआ, है दिल ही जिन्दगी से हमारा बुझा हुआ।

पानी भरना (किसी के सामने)—(१) शर्मिन्दा या वश में होना। उनकी बुद्धि के आगे अंग्रेज़ पानी भरते हैं। (२) पानी खींचना। (३) फोड़े में पानी भरना।

पानी भरी खाल—अनित्य शरीर। तुलसी को भलो पै तुम्हारे ही किए कृपाल कीजे न विलम्ब बलि पानी भरी खाल है।

पानी मरना—(१) सूखना। (२) दोषी सिद्ध होना। मामले में तुम्हारे सिर पानी मरता है। (३) पानी चुराना, नीव में पानी चुराना। नीव में पानी मरता है दिवार गिर पड़ेगी। (**किसी के सिर पानी मरना**) किसी का दोषी सिद्ध होना।

पानी में आग लगना, लगाना—(१) असंभव का संभव होना, करना। उनके परिश्रम ने पानी में आग लगा दी। (२) बिना कारण झगड़ा उठना, खड़ा करना। क्यों पानी में आग लगाते हो दोनों का नाश होगा तुम्हें क्या मिलेगा।

पानी में फेंकना, बहाना—खराब कर देना, खो देना। सैकड़ों रुपये पानी में बहाये तब जीते।

पानी रखना—इज्जत बचाना।

पानी लगना—(१) पानी जमना। (२) ठंढक से दाँतों में टीस होना। (३) किसी जगह के गुण से शरारत सूझना। (४) कहीं रहने से स्वास्थ्य बिगड़ना। (५) संग-साथ का असर पड़ना। दिल्ली का पानी लग गया लड़का चंट हो गया है।

पानी लेना—(१) इज्जत खराब करना। (२) पानी ले कर जाना।

पानी सर से ऊँचा हो जाना—झगड़ा वश से बाहर हो जाना या बढ़ जाना। अब कुछ फैसला नहीं पानी सर से ऊँचा हो गया है।

पानी से पतला—(१) तुच्छ। (२) बहुत बदनाम। (३) अति सरल। यह काम मेरे लिये पानी से भी पतला है।

पानी से पहिले पुल बाँधना—फिजूल मेहनत करना, कष्ट उठाना।

पानी होकर बह जाना—बरबाद हो जाना।

पानी होना—(१) गल कर द्रव होना। बरसात में बंद नमक भी पानी हो गया। (२) क्रोध उतर जाना। मुझे देखते ही वह पानी हो गये। (३) धीमा, मंद पड जाना।

नोट:—पानी के साथ कच्चा, पक्का, भारी, हलका, भभके का, आदि विशेषण लगाते हैं, जिनके अर्थ अति सरल हैं।

[५७७०]

पाप उदय होना—(१) पुराने पापों का फल मिलना। भयंकर रोग के बहाने पाप उदय हुए हैं। (२) दुख मिलना।

पाप कटना—(१) दुखदाई वस्तु या दुख दूर होना। (२) झगड़ा, जंजाल हटना।

पाप कमाना, बटोरना—बहुत पाप करना। जन्म भर पाप बटोरे एक तो पुण्य कर दे।

पाप काटना—(१) पाप से छुड़ाना। (२) जंजाल हटाना। तुमने ही यह पाप काटा। मैं चाहता था कि उसका पाप कटे मैं दुखी था, अतः सम्बन्ध तोड़ा।

पाप की गठरी (पोट) सिर पर रखना—बहुत पापी होना।

पाप गले पड़ना या पीछे लगना—बिना इच्छा बाधा झंझट सिर पड़ना।

पाप पड़ना—कठिन होना शक्ति से बाहर होना। सहिबे को ग्रीषम दिननु पर्‌यौ परौसिन पाप।

पाप बिसाना—बवाल में पड़ना। नटखट लड़के को नौकर रख कर पाप बिसा लिया।

पाप मोल लेना—जानबूझ कर जंजाल में फँसना। वायदा करके तो मैंने पाप मोल ले लिया।

पाप लगना—पाप, दोष होना। दुख देने से पाप लगता है।

पापड़ बहुत बेलना—दे० बहुत पापड़ बेलना।

पापड़ बेलना—बहुत दुख, मेहनत पड़ना। बड़े पापड़ बेल कर यह काम कर पाया हूँ।

पापी कुआँ—जिस कुए में कई आदमी गिर कर मर गये हों।

पापोश पर मारना, पापोश के बराबर समझना—(क्रमश) ठुकराना, तुच्छ समझना।

पाबंद करना नौकर रखना, रोकना। उसे पाबंद कर लो उसका घोड़ा भी फिर अपने ही यहाँ आयेगा।

पाबंद होना—बंधन, नौकरी। मैं सिर्फ ८ घंटे का पाबंद हूँ फिर कुछ भी करूँ तुम्हें क्या!

पायजामे से बाहर होना—अत्यन्त जोश में आना। इतने पायजामे से बाहर क्यों होते हो क्या कुछ देकर भूल गये हो।

पार उतर जाना—दे० पार उतरना १, २, ३, ४,। (५) काम साध कर अलग होना। तुम तो ले देकर पार उतर गये बेचारा गरीब फँस गया।

पार उतरना—(१) उस पार पहुँचना। (२) काम पूरा करना। छः महीने की भगदौड़ के बाद मुकदमे के पार उतरे। (३) सफलता मिलना। (४) मर मिटना

(स्त्री) मै तो इस दुख से पार उतरूँ भगवान करे।

पार उतारना—(१) उद्धारना। रघुबर पार उतारिए अपनी ओर निहारि। (२) ठिकाने लगाना, मारना। (३) दूसरे किनारे लगाना। (४) पूरा करा देना।

पार करना—(१) दे० पार उतरना, उतारना। (२) दुर्गम मार्ग तै करना। खैबर पार करना कठिन है।

पार पाना—(१) अन्त तक पहुँचना। (२) जीतना। बड़ा चालाक है उससे पार न पा सकोगे।

पार बसाना—बस चलना, संभव होना। जब (जहाँ) तक पार बसावे झूठ न बोलो।

पार लगना—(१) उस पार होना। (२) काम पूरा होना। (३) निर्वाह होना। ऐसे ही आलसी रहे तो कैसे (जीवन बेड़ा) पार लगेगा? (४) काम होना। तुम्हारा काम हम से पार न लगेगा।

पार लगाना—(१) उद्धार करना हरि मोरी नैया पार लगाओ। (२) पूरा करना। (३) दूसरे किनारे लगाना। (४) निर्वाह करना।

पार हो जाना—(१) तैर कर पार होना। (२) छुटकारा पाना। (३) अपना काम करके अलग हो जाना। वह तो काम बना कर पार हुए मै अकेला रह गया।

पार होना—(१) मतलब निकाल कर दूर होना। काम बने या न बने वह तो रिश्वत लेकर पार हुआ। (२) अलग हो जाना। घाटा देखा तो हिस्सा ले मैं तो पार हुआ। (३) दूसरे किनारे पहुँचना। मशक पर बैठ हुमायूँ पार हुआ। (४) दूसरी ओर निकलना। कटार कलेजे के पार हो गई। (५) काम पूरा कर चुकना। लड़की व्याह के बाप बेटी दोनों पार हुए।

पारा उतरना, उतारना—क्रोध दूर होना, करना। दो थप्पड़ों मे पारा उतर जायगा।

पारा चढ़ना, तेज़ होना—क्रोध आना।

पारा पारा करना—टुकड़े टुकडे करना।

पारा पिलाना—(१) वजनी बनाना। (२) पारा भरना।

पारा भरा होना—बहुत भारी होना। संदूक में क्या पारा भरा है? बड़ा वजन है।

पाल डालना—अधपके फलों को फूस-अनाज मे पकने के लिये दबाना। पाल डाले आम हैं।

पाला जीतना—पक्ष जीतना। उन्होंने पाला जीत लिया कबड्डी में तुम हारे।

पाला पड़ना—(१) काम, वास्ता पड़ना। बड़े नीच से पाला पड़ा, तंग कर डाला। (२) वश में आना। (३) विवाह हो जाना। अच्छे के पाले पड़ी जो रोटी भी न दे। (४) बर्फ गिरना। (५) नाश हो जाना। सारी उम्मीदों पर पाला पड़ गया।

पाला मार जाना, मारना—पाला, बर्फ़ पडने से फसल नष्ट होना।

पाले पड़ना—वश में आना। परेहु कठिन रावण के पाले।

पाँव अड़ाना—व्यर्थ बीच में पड़ना, विघ्न डालना। हमारी उनकी बातें हैं तुम क्यों पाँव अडाते हो।

पाँव आगे बढाना—हद से बाहर होना। पाँव आगे बढाया तो जान गई समझो।

पाँव उखड़ जाना, उठ जाना—(१) पैर न जमना। अधिक गहरा पानी था पाँव उखड़ गये। (२) उच्चता से गिरना। थोड़े दिनों तो समाज में उनकी धूम रही फिर पाँव उखड़ गये, पूरी योग्यता न थी। (२) विचार बदल जाना। ज्यों ज्यों किया कठिन होता गया अंत मे पाँव उखड़ गये। (४) लड़ाई मे ठहर न सकना। इस बार की लड़ाई में मुग़लों के पाँव उखड़ गये, वे बुरी तरह हारे।

पाँव उखाडना—(१) हरा कर भगा देना। सिखों ने पठानों के पाँव उखाड़ दिये। (२) बात पर ठहरने न देना।

पाँव उठा कर चलना—जल्दी चलना। पाँव उठा कर चलो यों पैर घिसते हुए न पहुँचोगे।

पाँव उठाना—(१) जाने लगना। उन्होंने पाँव उठाया ही था कि मै पहुँच गया। (२) जल्दी जल्दी चलना। जरा पाँव उठाओ सुस्त मत चलो।

पाँव उड़ाना—(१) दुश्मन के आघात से पैर बचाना। (२) पैर काट देना।

पाँव उतरना—(१) पैर का जोड़, गट्टा उखड़ना। (२) पैर समाना। छत में पैर उतर गया सारी पोली थी।

पाँव कट जाना—(१) संसार से उठ जाना। आज यहाँ से उसके पाँव कट गये, बेचारा बुरी मौत मरा। (२) अन्न जल उठना। (३) आना जाना बंद होना। मैंने उस घर से उनके पाँव ही काट दिये, बहू बेटी का खतरा था।

पाँव काँपना—काम के विचार से डर लगना। अफसर के घर जाने में पाँव काँपते हैं।

पाँव का खटका—चलने की आहट, शब्द। पाँव का खटका पाते ही कमरे में सब सँभल गए।

पाँव का जूता—तुच्छ सेवक। मैं तो उसे पाँव की जूती समझता हूँ।

पाँव का जूता सिर को लगाना—नीच का सिर चढ़ाना, छोटे का बड़े के सामने पड़ना।

पाँव की ठुकराई का सर पर चढ़ना—दे० ऊपर का मु०।

पाँव की मेंहदी न घिस जायगी—कुछ हानि न होगी, जाने में पैर मैले न होंगे।

पाँव खींचना—न जाना, न घूमना। अब तो व्यर्थ घूमने से पाँव खींचो।

पाँव गाड़ना—(१) जम कर खड़ा होना, ठहरना, लड़ना। (२) बात पर स्थिर रहना। जो कह दो पाँव गाड़ कर करो वरना बदनामी होगी।

पाँव गोर में लटकाना—मरने वाला होना।

पाँव घिसना—चलते चलते थकना। क्यों बार बार जाकर पाँव घिसते हो वह रुपये न देगा।

पाँव चप्पी करना—खुशामद करना, पाँव दबाना।

पाँव चलना—दे० पाँव उठाना।

पाँव चूमना—पूजा, मान करना, खुशामद करना। तुम्हीं पाँव चूमो मुझे गर्ज़ नहीं।

पाँव छुटाना—पीछा छुटाना।

पाँव छूटना—रजस्वला होना।

पाँव छोड़ना—रुका मासिक धर्म कराना।

पाँव जमना, जमाना—(१) न हटना, खड़ा रहना। (२) स्थिर हो जाना। अभी से उसे हटाने की कोशिश करो पाँव जम गये तो कुछ न कर सकोगे।

पाँव जमीन पर न रखना—(१) घमंड करना। (२) खुशी से उछलना।

पाँव जोड़ना—झूले में दो आदमियों का रस्सी में पैर उलझाना, पाग या पैंग जोड़ना।

पाँव टिकना, टिकाना—(१) खड़ा होना। पानी गहरा है पाँव नहीं टिकते। (२) विराम करना।

पाँव टूटना—चलते चलते थकना, हैरान होना। चलते चलते पाँव टूट गये हुक्के का दुख पाया।

पाँव ठहरना—(१) पैर न जमना। बहाव जोर पर है पाँव नहीं ठहरते। (२) स्थिरता होना। किसी नौकरी पर पाँव भी ठहरे!

पाँव डगमगाना—(२) लड़खड़ाना. पैर ठीक न पड़ना। लक्ष्मण झूले पर हवा में पाँव डगमगाते थ। (२) दृढ़ न रहना।

पाँव डालना—काम मे पड़ना। इस व्यापार में पाँव डाला और फँसे।

पाँव डिगना—फिसलना, स्थिर न

रहना। सत्य से पाँव डिगे और विश्वास गया।

पाँव तले की चींटी—दीन जीव। आप लखपती हैं मै मजदूर तो पाँव तले की चींटी हूँ।

पाँव तले की धरती सरकी जाती है—मर्म भेदी दुख से धरती कपी जाती है।

पाँव तले की मट्टी निकल जाना—सन हो जाना, स्तब्ध हो जाना, होश उड़ना। शेर को देखते ही पाँव तले…।

पाँव तले मलना—बहुत तग, पामाल करना, रौंदना।

पाँव तोड़ना—(१) हिम्मत हराना। काम की भयंकरता दिखाकर मेरे पाँव तोड दिये। (२) बहुत दौड़ धूप करना। सारे बाज़ार में पाँव तोडे मुझे तो मिला नहीं। (३) तंग करना।

पाँव तोड़ कर बैठना—(१) अचल होना, भारत में गुलामी पाँव तोड़ कर बैठी है। (२) हार कर बैठना। सैकड़ों बार गये नहीं मिला अत में पाँव तोड़ कर बैठना पड़ा।

पाँव थरथराना—साहस, हिम्मत न होना। आगे आगे तुम चलो मेरे तो पाँव थरथराते हैं।

पाँव दबना—बेबस होना। क्या करें पाँव दबा था वरना मै बेइज्जती क्यो सहता।

पाँव दबाना, दाबना—(१) पाँव पलोटना, हाथ से दबाव डालना। (२) सेवा करना। उनके पाँव दबाओ तो शका समाधान करें।

पाँव धरती पर न रखना—(१) इतराना, बहुत घमंड होना। (२) फूला न समाना। जब से मैनेजर हुए हैं धरती पर पाँव नहीं रखते।

पाँव धरती पर न रहना—(१) घमंड होना। (२) बहुत खुश होना।

पाँव धरना—(१) पधारना। (२) (काम में) आगे होना। आप पाँव धरिये हम पीछे चलेंगे। (३) (किसी का) पैर छूकर प्रणाम करना, विनती करना, हा हा खाना। (४) शुरू करना। ऐसे काम में पाँव भी मत धरो।

पाँव धोकर पीना—(१) इज्ज़त करना, पूजा-सेवा करना। गुरु के पाँव धोकर पियो विद्या आ जायगी। (२) खुशामद करना।

पाँव न धुलाना—नीच समझना।

पाँव न होना—साहस, दृढ़ता न होना। झूठ के पाँव नहीं होते।

पाँव निकलना—बदचाल-चलन की बात फैलना। बहू-बेटी के पाँव निकले और घर डूबा।

पाँव निकालना—(१) इतरा कर

चलना। (२) बेकहा होना। अब वह आज्ञा नहीं मानता उसने पाँव निकाल लिये हैं। (३) व्यभिचार करना। (४) सीमा से बाहर होना। (५) वापिस ले लेना। कम्पनी डूबती देखी तो हमने तो पाँव निकाल लिये एक पैसा नुकसान न हुआ। (६) चालाक होना। पहिले बड़ा सीधा था अब बाप के बाद पाँव निकाले हैं। (७) (किसी काम से) अलग होना। मैंने तो उस जंजाल से पाँव निकाल लिया।

पाँव पकड़ना—(१) विनती करना। (२) सिर झुकाना। (३) आदर से आग्रह करना। पाँव भी पकड़े पर दया न आई।

पाँव पखारना—पैर धोना।

पाँव पड़ना
पाँव पर गिरना } (१) पैरों पर सिर धरना। (२) बड़ी दीनता से विनय करना। मैं तुम्हारे पाँव पड़ूँ मुझ को क्षमा करो।

पाँव पर पाँव रख कर बैठना, सोना—(१) लापरवाह, असावधान होना। पाँव पर पाँव धरे बैठे हो पता है बाहर क्या हो रहा है? (२) बिना काम के आराम से बैठना। तुम्हें तो यों ही १००) मिल जायँगे पाँव···।

पाँव पर पाँव रखना—अनुसरण, नकल करना। पुत्र पिता के पाँव पर पाँव रखता है।

पाँव पर सिर झुकाना
पाँव पर सिर रखना }
गिड़गिड़ाना, प्रार्थना करना। लाख पाँव पर सिर रखो मैं न छोड़ूँगा।

पाँव पसारना—(१) ठाठ बाट या आडम्बर बढ़ाना। हैसियत से आगे पाँव पसारे और दिवाला निकला। (२) पैर फैलाना। (३) आराम से सोना। (४) मरना। बुढ़िया ने कल रात ८ बजे पाँव पसार दिये।

पाँव पाँव चलना—पैदल चलना।

पाँव पीटना—(१) घोर प्रयत्न करना। बहुत पाँव पीटे पर एक न चली।

पाँव पीट पीट कर मरना—बहुत दुख झेल कर मरना। मृत्यु का दुख भोगना, बेचारा पाँव पीट पीट कर मर गया पानी भी न मिला।

पाँव पूजना—(१) वर का पूजन करना। (२) बहुत पूज्य मानना। हम तो उनके पाँव पूजते हैं उन्हीं के चेले हैं।

पाँव फसना—झंझट मे पड़ना।

पाँव फिसलना—रपटना। काई पर पाँव फिसला और गिरे।

पाँव फूँक फूँक कर रखना—भय व सावधानी से चलना। एक

बार नुकसान उठा लिया अब पाँव फूँक फूँक कर रखते हैं।

पाँव फूलना—(१) थक जाना। (२) डर से व्याकुल होना। आग लगी सुनते ही पाँव फूल गये पहुँचना भारी हो गया।

पाँव फेरने जाना—(१) नाश करने जाना। तुम तो पाँव फेरने गये थे बना बनाया नाश कर आये। (२) प्रसव के बाद मायके जाना।

पाँव फैला कर सोना—निश्चित, बेखटके रहना।

पाँव फैलाना—(१) आग्रह करना। (२) अधिक पाने की इच्छा करना। इतने रुपये मिल चुके अधिक पाँव मत फैलाओ।

पाँव बढ़ाना—(१) आगे बढ़ना। पाँव बढ़ाओ खा थोड़े ही जायगा। (२) जल्दी चलना। (३) अधिकार, शक्ति बढाना।

पाँव बाहर निकालना—(१) दे० पाँव निकालना। (२) बढ़कर चलना। योग्यता से बाहर पाँव न निकालो।

पाँव बिचलना—(१) पैर रपटना, फिसलना। पाँव बिचला और गये खड्ड में। (२) ईमान, सत्यता डिगना। दुख में पाँव न बिचले। (३) पक्कापन न रहना।

पाँव बीच में होना—जिम्मेदार होना। मेरा पाँव बीच में है अतः जमानत दे दी है।

पाँव बीच से निकाल लेना—वास्ता न रखना, अपना जिम्मा उठा लेना।

पाँव भर जाना—पैर थकना, थकावट से पैर बोझ से दुखना।

पाँव भारी होना—(१) गर्भवती होना। (२) आगमन बुरा होना। बहू का पाँव भारी है जब से आई घर बिगड़ता ही गया।

पाँव भी न धुलवाना—तुच्छ सेवा योग्य भी न समझना।

पाँव मुरीद—अति आज्ञाकारी। वह तो स्त्री का ऐसा पाँव मुरीद है कि उससे बिना पूछे कुछ नहीं करता।

पाँव में क्या मेंहदी लगी है—ऐसे क्या मेंहदी लगा कर बैठो हो जो छूटने के डर से नहीं चल सकते (व्यंग्य)।

पाँव में पर लगना—बहुत तेज़ चलना। ऐसे क्या पाँव मे पर लगे हैं जो पाँच मिनट में जा पहुँचे।

पाँव में बेड़ी पड़ना—(१) बंधन या चक्कर में फँसना। (२) विवाहित होना, घर का भार सिर पर होना। पाँवों में बेड़ी पड़ी हैं कहीं नहीं आ जा सकते।

पाँव में सनीचर, घनचक्कर होना—मारे फिरने की आदत या भाग्य होना। वह एक जगह नौकरी नहीं कर सकता उसके पाँव मे ही सनीचर है।

पाँव में सिर देना—मिन्नत करना।

पाँव रखने का ठिकाना न होना—रहने को जगह न होना। सारी छत चू रही थी पाँव रखने को कहीं ठिकाना न था।

पाँव रगड़ना—(१) घोर यत्न करना (कुछ हाथ न आना)। (२) छटपटाना। पीड़ा बहुत है पाँव रगड़ते रात गुजरी।

पाँव रह जाना—पैर मारे जाना, शक्ति न रहना, थकावट होना। पाँव रह गये हैं जा आ नहीं सकते।

पाँव रोपना—अड़ना, संकल्प करना। पाँव रोप दिया कि लेकर ही जाऊँगा।

पाँव लगना—(१) पैर छूना, प्रणाम करना। (२) विनती करना।

पाँव लगा होना—बहुत बार आना-जाना होना, थोड़ा या सरल होना, आदत होना।

पाँव लड़खड़ाना—दे० पाँव काँपना।

पाँव लेना—पैर छूना, आज्ञा पालना, निवेदन करना।

पाँव सकोड़ना—पैर फैला न रहने देना।

पाँव समेटना—(१) मरना। (२) व्यर्थ घूमना, छोड़ना। हमने तो पाँव समेट लिये अब कहीं नहीं जाते। (३) लगाव न रखना। हमने पाँव समेटा हम किसी की ओर नहीं। (४) पैर खींचना, सकोड़ना।

पाँव से पाँव बाँध कर रखना—(१) पास रखना। (२) चौकसी करना, रखना। अब मै उसे पाँव से पाँव बाँध कर रखूँगा।

पाँव सोजाना—पैर सुन्न होना, या झन्ना उठना।

पाँव हाथ निकालना—हैसियत से बढ़ कर चलना।

पासंग भी न होना, पासंग बराबर भी न होना—बहुत कम या कुछ भी न होना। वह इनके सामने पासंग भी नहीं।

पास आना या जाना—समागम करना।

पास करना—(१) लिहाज़, रियायत करना। तुमने मेरा ज़रा भी पास नहीं किया। (२) परीक्षा में उत्तीर्ण होना। (३) काम दुरुस्त होना। साहब ने काम पास कर दिया।

पास न फटकना—निकट न

[५६०६]

जाना। तुम उसके पास भी न फटक सकोगी।

पास पास—(१) आपस मे निकट। (२) लगभग।

पास फटकने न देना—न मिलने देना।

पास बैठना—(१) साथ रहना, करना। भले आदमियों के पास बैठना अच्छा है। (२) पहुँचना। जैसा बोया वैसे पेड़ के पास बैठो। (३) निकट बैठना।

पास बैठने वाला—(१) मुसाहिब। (२) सगत मेल जोल वाला। पास बैठने वाला भी बड़ा ही आदमी होगा।

पास फटकना—निकट जाना।

पास रहना—(१) संयोग करना। (२) अधिकार में रहना। मेरे पास रह जाओ तो सब सिखा दूँ।

पासा उल्टना या पलटना—(२) दाव फिरना। (२) हारना बिगड़ना। काम बनते बनते पासा पलट गया। (३) फल या भाग्य उल्टा होना।

पासा पड़ना—(१) भाग्य अनुकूल होना। जिन्दगी मे पासा पड़ गया तो मजा चखा ही दूँगा। (२) जीत का दाव पढ़ना। एक पासा पड़ा और सौ जीते। (३) अच्छा अवसर मिलना। कोई पासा पड़े तो उनसे कहूँ।

पासा फेंकना—भाग्य की जाँच करना। सौ रुपये का पासा फेंका है देखो शायद कुछ बन जाय।

पिंड छोड़ना—(१) तंग न करना, साथ न लगा रहना, जान बचाना, दूर बचना। (२) सम्बन्ध, या पीछा छोड़ना।

पिंड अछूता होना, कोरा होना—अक्षत योनि होना।

पिंडा फीका होना—देह गरम, थोड़ा बुखार या तबियत खराब, होना (स्त्री)।

पिचकारी छूटना, निकलना—पतली चीज़ का जोर से निकलना। सिर से लोहू की पिचकारी छूटी।

पिचकारी छोड़ना—द्रव पदार्थ को जोर से निकालना। पान खाकर पीक की पिचकारी छोडी।

पिचकारी देना—एनीमा करना।

पिछला दिन—बीता हुआ कल।

पिछला पहर—दोपहर या आधी रात के बाद। पिछले पहर जो नींद खुली तो दीया बलता ही देखा।

पिछली रात—(१) आधी रात के बाद। (२) गत रात्रि पिछली रात दिल्ली गुज़ारी आज यहाँ आ गये।

पिछले पाँव फिरना—आते ही चले जाना।

पिछाड़ी मारना—(१) लात

मारना । (२) पीछे से हमला करना ।

पिटारी का खर्च—(१) पान्दान का खर्च । (२) व्यभिचार की कमाई ।

पिट्टना या पिट्टस पड़ना—रोना धोना या हाय हाय होना । वही रुपया था खो गया इसी का तो पिट्टना है ।

पिराड पड़ना—(१) पीछे पड़ना । टोपी उसने फाड़ी पिड मेरे पड़ते हो । (२) तैयार होना ।

पित्त उबलना, खौलना—बहुत क्रोध आना । गाली सुनते ही पित्त उबल गया, और थप्पड मार दिया ।

पित्त गरम होना क्रोध बहुत, जल्दी आना । जरा सी बात पर पित्त गर्म हो जाता है ।

पित्त डालना—वमन, क़ै, उल्टी होना ।

पित्तर पानी पड़ना-होश न रहना ।

पित्ता उबलना, खौलना—बहुत गुस्सा आना । तुम्हारी बातें सुनकर मेरा पित्ता खौल उठता है ।

पित्ता निकालना—(१) बहुत काम कराना, सताना । सारे दिन घुमा के पित्ता निकाल लेता है । (२) डाँटना । इतना तो काम कर दिया फिर भी पित्ता निकालते हो ।

पित्ता पानी करना, होना—काम करते करते पानी पानी हो जाना । दिन भर के काम से पित्ता पानी हो जाता है ।

पित्ता पानी पड़ना—किसी की हानि से दिल में ठंडक पड़ना । वह मर गया अब तो पित्ते पानी पड़ा न !

पित्ता मारना—(१) कठिन काम से न ऊबना । बड़ा पित्ता मारो तो यह काम होवे । (२) गुस्सा न रहना, दबा जाना । बुढ़ापे में पित्ता मार के बैठ रहना पड़ता है ।

पित्ता मार काम—(१) मन मार कर दिया जाने वाला काम । (२) हमेशा बैठे का काम ।

पित्ते ले डालना—तंग कर देना ।

पिनाक होना—(किसी काम का) अति कठिन होना ।

पिये हुए होना—शराब के नशे में होना ।

पिल पड़ना—लग जाना । काम मे पिल पड़ा तो हो ही गया ।

पिलाना, पिला देना-बात कानों में या जी में भर देना ।

पिस जाना-(१) शरमिन्दा होना । (२) बरबाद होना या मुसीबत झेलना । (३) आशिक हो जाना ।

पिसान होना-दब कर चूर होना । कनस्तर के नीचे चूहा पिसान हो गया ।

पीं बोलना—बोझ से दब कर आवाज़ निकलना।

पीछा करना—(१) भगाना, खदेड़ना। पुलिस ने चोरों का दो मील तक पीछा किया। (२) साथ लगे रहना। (३) दिक़, तग करना। इतना पीछा मत करो दुखी होकर मना न कर दे।

पीछा छुड़ाना—(१) सबन्ध तोड़ना। हमने तो अब उनसे पीछा छुड़ा लिया। (२) छुटकारा पाना। बिना कारण बताये पीछा नहीं छुड़ा सकते।

पीछा छूटना—(१) संबन्ध या दुख देने वाली वस्तु का अत होना। मरा तो, तकलीफ से तो पीछा छूटा। (२) छुटकारा मिलना। बीमारी से पीछा छूटे तो काम करूँ।

पीछा छोड़ना—(१) दिक़ या तग करना बद करना। (२) साथ, सहारा संबन्ध छोड़ना। (३) देर के कारण छोड़ देना।

पीछा दिखाना—(१) हार कर भाग जाना। दो घटे की लड़ाई में पीछा दिखा गये। (२) मुकरना। तब तो बढ बढ़ कर कह रहे थे उनके सामने पीछा दिखा गये। (३) धोखा देना। ऐन मौक़े पर ऐसा पीछा दिखाया कि विश्वास उठ गया।

पीछा देना—(१) पीछे पीछे जाना। (२) मने कर जाना, भरोसा देकर सहायता न देना।

पीछा पकड़ना—(१) साथी बनना, बनाना। चालाक का पीछा पकड़ो तो चालाक बनो। (२) सहारा बनाना। बडे आदमी का पीछा पकडो तो इज्ज़त होगी।

पीछा भारी होना—(१) बाद में दुख उठाना। (२) पीछे से घेरना। शत्रु आगे बढ़ रहा था पीछा भारी देखा तो लौट पड़ा। (३) अच्छी सहायता होना। राय साहब मित्र हैं अतः उनका पीछा भारी है।

पीछे चलना—नकल करना, नेता या गुरु मानना। सैकड़ों लोग गाँधी जी के पीछे चल रहे हैं।

पीछे छूटना- (१) भेद लेने के लिये जासूस लगाना। कई आदमी उनके पीछे छूटे हैं कि उनके चाल चलन की रिपोट दे। (२) रास्ते में पीछे रह जाना। (३) भागे हुए आदमी को पकड़ने को नियुक्त होना। (४) किसी विषय में घट जाना।

पीछे छोड़ना (किसी को)—आगे बढ़ जाना, अधिक होना। आज का विज्ञान पुरानी खोजों को पीछे छोड़ गया है।

पीछे छोड़ना, भेजना—(१) पकडने के लिये दौड़ाना, भेजना। (२) भेदिये लगाना।

पीछे डालना—(१) पीछा करना। सूअर के पीछे घोड़ा डाल दिया।

पीछे डालना (धन)—रुपया बचाना। कमाई में से कुछ कुछ पीछे डालो जो बुढ़ापे मे काम आवे।

पीछे दौड़ाना—(१) जाते हुए को लौटाने के लिये भेजना। नौकर को पीछे दौडाया तब आये (२) भागे हुए को पकड़ने के लिये आदमी दौड़ाना।

पीछे पड़ना (व्यक्ति के)—(१) बार बार कहना। पीछे पड़ोगे तो कुछ करा लोगे। (२) मौक़े मौक़े पर बुराई करते ही रहना। तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो बेचारे के पीछे पड़े हो।

पीछे पड़ना (काम के)—करने पर तुल जाना। जो वह इस काम के पीछे पड गया तो करके ही दम लेगा।

पीछे पड़ा रहना—(१) कहते रहना। (२) तंग करते रहना। पीछे पड़े रहोगे तो यह मर जायगा।

पीछे लगना—(१) नकल अनुकरण करना। भले के पीछे लगो जो भला सीखो। (२) बुरे से सबन्ध होना। हमारे तो यह रोग पीछे लगा है वरना हम तो कर देते। (३) किसी मतलब से साथ साथ घूमना। पीछे लगे रहोगे तो दया आ जायगी।

पीछे लगाना (अपने)—(१) सहारा देना, साथ कर लेना। कई सबन्धियों को अपने पीछे लगा लिया वे सुख से रहते हैं। (२) रोग आदि अकारण होना। बहुत दिनों तक होना। क्यों यह आफ़त पीछे लगा ली?

पीछे लगाना (दूसरे के)—(१) साथ लगाना, मत्थे पड़ना। आप तो निकल गये और मेरे पीछे आफ़त लगा दी। (२) लगाना, भेजना। आदमी पीछे लगा दो पता तो चले ये कहाँ जाते हैं।

पी जाना—चुप्पी लगाना, तरह दे जाना, सह जाना, दर गुज़र करना। उस समय तो मै पी गया मौके पर बदला लिया।

पीटना (बात को)—पश्चात्ताप या हाय हाय करना। सोच कर कहते तो अब क्यों पीटना पडता।

पीटना (व्यक्ति को)—मरने पर सिर धुनना।

पीठ का—दे० पीठ पर का।

पीठ का कच्चा, सच्चा—(१) सवारी मे दुख या सुखदायी घोड़ा। (२) उम्र मे छोटा या पक्का घोड़ा।

पीठ की खाल या पीठ उधेड़ना—पीठ पर खूब मार लगाना। कल

स्त्री की पीठ की खाल उधेड़ दी निशान पड़े हैं।

पीठ खाली होना—सहारा, सहायक न होना। अगर मेरी पीठ खाली न होती तो क्या मुझे वह पीट देता?

पीठ चारपाई से लग जाना—उठ बैठ न सकना। बीमारी के कारण पीठ चारपाई से लग गई है।

पीठ ठोकना—(१) शाबासी देना, बड़ाई करना। (२) हिम्मत बढ़ाना। (३) प्यार जताना। कुत्ते की पीठ ठोकी वह मुँह चाटने आया।

पीठ तोड़ना—दिल तोड़ना, हिम्मत तोड़ना। बच्चे की पीठ मत तोड़ो जितना चाहे पढने दो मै खर्च दूँगा।

पीठ दिखा कर जाना—प्रेम, मोह छोड़ जाना। जैसे पीठ दिखा कर जाते हो वैसे ही शीघ्र मुख भी दिखाना।

पीठ दिखाना—दे० पीछा दिखाना।

पीठ देना—(१) जाना, विदा होना, मुँह मोड़ना। पिता जी ने पीठ दी और हमने ऊधम मचाना शुरू किया। (२) भाग जाना। शत्रु पीठ दे गया लड़ाई में जम न सका। (३) साथ न देना। ऐसे मौक़े पर पीठ दोगे तो क्या मित्रता? (४) सो जाना, लेटना।

पीठ देना (किसी की ओर)—(१) मुँह फेरना। मेरी ओर से पीठ देकर खाना खाती है। (२) लापरवाही, उपेक्षा, घृणा, नापसंदगी दिखाना। बदसूरती देख कर मैंने तो पीठ दी।

पीठ पर—बाद, एक ही माता द्वारा जन्म क्रम मे पीछे। इस लड़के की पीठ पर लड़की थी वह मर गई।

पीठ पर की—एक के बाद दूसरी। एक दूसरे के पीठ पर की सात सन्तानें हैं।

पीठ पर खाना—भागते हुए पीछे मार खाना। कहो साहब पीठ पर खाई उनसे न जीत सके न?

पीठ पर हाथ फेरना—दे० पीठ ठोकना।

पीठ पर होना—(१) सहायक, सहारा होना। पीठ पर कोई होता तो मैं क्यों दुख से यों भटकता। (२) बड़े से छोटे होना। मेरी पीठ पर लड़की हुई थी वह मर गई।

पीठ पीछे—अनुपस्थिति, परोक्ष में। पीठ पीछे बुराई मत करो।

पीठ फेरना—(१) चले जाना, भाग जाना। क्लेश से दुखी होकर घर से ही पीठ फेर ली। (२) मुँह

फेरना, इच्छा न दिखाना। जब पूछा पसंद है ? तो पीठ फेर ली।

पीठ फोड़ डालना—बहुत पीटना। सारी पीठ फोड़ डाली खून खून हो रही है।

पीठ लगना—(१) लेटना, पड़े ही रहना। बीमारी के कारण छः महीने पीठ लगी रही। (२) चित्त होना, पछाड़े जाना। ऐसा पछाड़ा कि ज़मीन से पीठ लगी। (३) पीठ पर घाव होना। घोड़े की पीठ लग गई है।

पीठ लगाना—(१) कुश्ती में पछाड़ना। (२) घोड़े या बैल को ऐसा कस कर लादना कि पीठ में घाव हो जाय।

पीनक में आना—(१) अफीमची का नशे में ऊँघना। (२) ऊँघना (व्यंग्य) क्यों क्या पीनक में आ गये या सुन रहे हो ?

पीर न आना—किसी के दुख से दुखी न होना। अमीरों को गरीबों की पीर नहीं आती।

पीला पड़ना, होना—(१) रंग, लाली न रहना (शरीर में)। बेचारा बीमारी से पीला पड़ गया है। (२) भय से चेहरा सफ़ेद होना। मेरी शक्ल देखते वह पीला पड़ गया।

पीली फटना—पौ फटना, उषा होना। पीली फटते तक दस मील पहुँचेंगे।

पीलू पड़ना—कीड़े पैदा होना। अमरूद में पीलू पड़ गये हैं।

पीस कर पी जाना—नष्ट-भ्रष्ट, बरबाद कर देना। राक्षस हूँ तुझे तो पीस कर पी जाऊँ।

पीस डालना—(१) नाश कर देना। (२) अति कष्ट देना, सताना। पतिव्रता को पीस डालो आह न करेगी।

पीसना पीसना—(१) बहुत मेहनत करते जाना। विधवा माँ पीसना पीस कर पालती है। (२) क्या पीसना पीस रहे हो जल्दी करो न ?

पुकार देना—घोषणा करना। राजा जनक ने यह पुकार दिलवा दी कि जो कोई धनुष तोड़ेगा वही सीता जी को ब्याहेगा।

पुकार पड़ी होना—धूम होना, माँग होना। इस दवाई की बड़ी पुकार पड़ी है सारा जलसा माँगता है।

पुचारा फेरना—(१) नाश करना। उसने सारे धन पर पुचारा फेर दिया। (२) बहकाना। उस बेवकूफ पर पुचारा फेरो तो रुपये ऐंठो।

पुचारे में आ जाना—धोके में आ

जाना। उस नीच के पुचारे में आकर कई हज़ार बिगाड़े।

पुजापा फैलाना—(१) बखेड़ा, आडम्बर करना। (२) बिना क्रम के वस्तु फैला रखना।

पुटका पड़ना—विपत्ति या मृत्यु आना (स्त्री का शाप)।

पुट्ठे पर हाथ न रखने देना—(१) सवार को पास न आने देना। (घोड़ा)। (२) छूने न देना। बहुत होशियार लड़की है पुट्ठे पर हाथ नहीं रखने देती।

पुतला बाँधना—बदनामी करना। साइमन कमीशन का भारत में पुतला बाँधा गया।

पुतलियाँ फिरना—(१) घमंड करना। (२) मर जाना।

पुतलियों में घर करना—आँखों में बसना। प्यारे तुमने तो मेरी पुतलियों में घर किया है, कहाँ जाते हो।

पुतली का तारा—दे० आँखों का तारा।

पुतली फिर जाना—(१) आँख का ढेला फिर जाना (मरने का चिह्न) (२) घमंड होना। बड़ा होते ही जब वह कमाने लगा पुतलिएँ फिर गईं।

पुनि पुनि—बार बार।

पुरखे तर जाना—पुरुषाओं को उत्तम गति मिलना, कृतकृत्य होना। महात्मा घर पधारे तो पुरखे तर गये।

पुरज़े निकालना—(१) हद से बढ़ना। अब तो उन्होंने भी पुरज़े निकाले हैं खुदा खैर करे। (२) पुराने कागज़ खोजना।

पुरजे पुरजे उड़ाना, करना—टुकड़े टुकड़े करना, धज्जियाँ धज्जियाँ करना। बदमाश तेरे पुरज़े पुरज़े उड़ा दूँगा नहीं तो बत्ता दे।

पुरजे पुरजे होना—टुकड़े टुकड़े होना, धज्जियाँ होना। सारा का सारा पुरज़े पुरज़े हो गया।

पुरवट नाधना—चरस की रस्सी में बैल जोतना। पुरवट नाधा ही था कि बैल खिंचे और कुएँ का आदमी कुएँ में गिरा।

पुरवट हाँकना—पुर खींचने वाले बैलों को चलाना। पुरवट हाँकते हुए किसान बैलों को नहची में ले जाता है।

पुरवना (बल)—शक्ति, सामर्थ्य पूरी लगाना, होना। बल पुरवो तो खिंचे।

पुरवना (साथ)—साथ देना। पुरवहु साथ तुम्हार बड़ाई।

पुराना खुर्राट,-पुरानी खोपड़ी—बहुत अनुभवी। पुराना खुर्राट है लड़कों की बातों में नहीं आ सकता।

पुरानी लकीर पीटना—पुराने नियमों का अंध भक्त होना। भारतीय पुरानी लकीर पीटते आ रहे हैं।

पुराना घाघ— चालाक बुड्ढा, अनुभवी। वह पुराना घाघ है सब रास्ते जानता है।

पुल टूटना—(१) पुल गिर पड़ना। (२) भीड़ होना। महात्मा जी के दर्शन के लिये मनुष्यों का पुल टूट पड़ा।

पुल बाँधना—(१) ढेर लगाना। (२) बहुत बढ़ाकर कहना। उसने तो बड़ाई के पुल बाँध दिये। (३) सीमा बनाना। पुल बाँध दिया कि इससे आगे न करो।

पुराना धुराना होना—निकम्मा, खराब होना। पुराना धुराना कपड़ा हो तो दे दो।

पूँछ पकड़ कर चलना—(१) पिछलग्गू बनना (व्यंग्य)। हर बात में अमीरों की पूँछ पकड़ कर चलते हो। (२) सहारा लेना, निर्भर होना। क्यों तुम तो उनकी पूँछ पकड़ कर चलते हो न! जब वह आवे तब ही चलोगे।

पूँछना (बात न)—ध्यान न देना, आदर न करना। स्वागत तो दूर वह तो किसी की बात तक नहीं पूँछता।

पूँजी खोना, गँवाना—घर का रुपया व्यापार में खोना। सारी पूँजी फिल्म खरीदने में खोदी अब विज्ञापन को भी पैसे नहीं।

पूँजीदार, पूँजी वाला—व्यापार में धन देने वाला। दुकान के पूँजीदार तुम बनो काम मैं करूँगा।

पूछ गछ होना—आव भगत, सलाह आदि होना। बुड्ढों की पूछ गछ नहीं हुई बहू मंत्री है न।

पूरा उतरना—(१) अच्छी तरह हो जाना। काम पूरा उतरे तो जान में जान आवे। (२) तोल में ठीक बैठना। (३) पक्की, सच्ची बात होना। तुमने कहा था वही पूरा उतरा, बात ठीक थी।

पूरा पड़ना—(१) पूरा हो जाना, कमी न होना। सेर भर आटे में पूरा पड़ गया गो आदमी छः थे। (२) बाधा न होना। सौ रुपये में भी पूरा पड़ जाय तो बहुत समझो।

पूरा होना—सपन्न, पक्का, दृढ। यों नंगा-भूखा नहीं पूरा है पर कंजूसी मान मारती है।

पूरी उतरना—जाँच तोल में जैसी कही वैसी ही होना।

पूरे करना—समय बिताना। दुख सुख। भाई हम तो जिन्दगी के दिन पूरे कर रहे हैं।

पूरे दिनों से होना—बालक होने के दिन होना।

पूरे होना—(दिन) मरने का समय आना। अब उसके दिन पूरे हो गये, मर गया।

पूले तले गुजरान करना—बुरी हालत में झोंपडी में दिन काटना।

पेंदे के बल बैठना—(१) हार मानना। लड़ने को चले थे पर एक ही लाठी में पेंदे के बल बैठे। (२) पालती, पलथी मार कर बैठना।

पेंदे का हलका—ओछा। वह कह देगा पेंदे का हलका है।

पेच उठाना—रंज उठाना। मरने दो तुम क्यों पेच उठाओ।

पेच काटना, लड़ाना—पतग की डोरी काटना, लड़ाना।

पेच खाना—दिल दिल मे दुखी होना।

पेच खेलना—एक पतंग की डोर दूसरी में काटने के उलझाना।

पेच घुमाना—मन बदल देना, विचार फेरना। मैंने पेच घुमा दिया तो वह एक पैसा देने वाला नहीं।

पेच डालना—(१) फांसना। (२) बाधा डालना। ऐसे पेच डाले कि पतग काट दी।

पेच ताव खाना—नाराज़ होना। पेच ताव तो ऐसे खाते हो जैसे हम तुम्हारे बाप के नौकर हैं!

पेच देना—धोखा देना। हमें क्यों पेच दे रहे हो, हमने पहले ही सब कुछ मालूम कर लिया है।

पेच पड़ना—उलझाव में पड़ना। कठिनाई पडना। पतग की डोरी दूसरी मे उलझना।

पेच में आना—दे० चक्कर में फँसना।

पेच हाथ में होना—विचार बदल सकना। पेच तो मेरे हाथ है मैं घुमाऊँगा तभी वह जायेगा।

पेट का कुत्ता—रोज़ी, पेट के लिये सब कुछ करने वाला। पेट का कुत्ता है चार पूरी खिला दो अपना बना लो।

पेट काटना—खाने में से बचाना। पेट काट के इसके पढ़ने का खर्च दिया है।

पेट का धंधा—(१) रोटी कमाने का झंझट। पेट का धंधा करते हैं क्योंकि स्त्री नहीं है। (२) आजीविका निर्वाह मार्ग, मज़दूरी। सब पेट के धंधे हैं कोई मुफ़्त नहीं बाँटता।

पेट का पानी न पचना—(१) रह न सकना। बिना सब हाल कहे पेट का पानी नहीं पचता। (२) रहा न जाना।

पेट का पानी न हिलना—कुछ भी कष्ट-परिश्रम न होना। ज़रा सा काम है इससे तो पेट का...।

पेट का हलका होना—ओछा,

कह देने वाला। उससे गुप्त बात मत कहना वह पेट का ओछा है।

पेट की आग—भूख। बिना खाये पेट की आग नहीं बुझती।

पेट की आग बुझाना—भोजन करना।

पेट की खबर न लेना, बात न पूछना—खाने-पीने की न पूछना, न प्रबन्ध करना। दिन भर काम ही काम, भाई! पेट की भी खबर ली?

पेट की चोट्टी—गर्भ होने पर लक्षण न दिखे।

पेट की बात—मन की, छिपी बात। पेट की बात स्त्री से भी नहीं कहता।

पेट की मार देना, मारना—भोजन न देना। पेट की मार मारने से शेर भी वश में हो जाता है।

पेट के लिये दौड़ना—गुज़र के लिये श्रम उठाना। पेट के लिये दौड़ते हैं वरना वहाँ कौन जाय।

पेट को धोखा देना—(१) दे॰ पेट काटना।

पेट को लगना—भूख लगना, खाने की चाह होना। पेट को लगेगी तो खुद कमायेगा।

पेट खलाना — दीनता, भूखापन दिखाना।

पेट गड़ना, गुड़गुड़ाना—बद-हजमी से पेट में गड़गड़ होना। पेट गुड़गुड़ाता है चूरन खालो।

पेट गदराना—गर्भ लक्षण होना।

पेट गिराना—गर्भपात करना। आज कल समाज की कुरीतियों के कारण सैकड़ों विधवाएँ पेट गिराती हैं।

पेट चलना—दस्त होना। कल से पेट चल रहा है कुछ दवाई दो।

पेट छँटना—पेट की मोटाई, मल या गर्भाशय का मल दूर होना। अब तोंद नहीं है, पेट छँट गया है।

पेट छूटना—दस्त होना।

पेट जलना—(१) जोर की भूख लगना। मेरा पेट जल रहा है खाना जल्दी दो। (२) गुस्सा आना। *ऐसी बातें मेरे सामने मत करो मेरा पेट जलता है।*

पेट जारी होना—दस्तों की बीमारी होना।

पेट जिलाना—किसी तरह अपना पेट भरना। बेचारों को अच्छा खाना तो मिलता नहीं, किसी तरह पेट जिला लेते हैं।

पेट ठंडा रहना—संतान जीवित रहना, बच्चों से सुख मिलना। भगवान करे पेट ठंडा रहे, बच्चे जियें।

पेट दिखाना—(१) रोग या गर्भ पहचनवाना। (२) भूखापन कहना। [६०८३]

पेट दिखा कर रुपये माँगे तब दिये।

पेट देना—दिल की कहना। हर किसी को पेट न दो।

पेट न भरना—इच्छा पूरी न होना। कुछ भी दे दो उसका पेट नहीं भरता।

पेट पकड़ कर भागना—(१) पाखाने की तरफ दौड़ना। (२) डर कर भागना।

पेट पकड़े या थामे फिरना—दुखी, तंग या परेशान होना। तुम्हारे पीछे पेट पकड़े फिरते हैं तुम्हें दया नहीं आती।

पेट पतला होना—धन की तंगी, लाचारी या कंजूसी होना।

पेट पाटना—खाने से पेट भरना।

पेट पर पट्टी बाँधना—भूखे रहना। १०) न सही ५) ही सही पेट पर पट्टी तो नहीं बाँधी जा सकती।

पेट पानी होना—(१) पतले दस्त आना। (२) डरना। पुलिस का आना सुनकर पेट पानी हो गया।

पेट पालना—(१) मतलबी होना। वह तो अपना पेट पालता है और का चाहे नाश हो जाय। (२) जैसे तैसे गुज़ारा करना।

पेट पीटना—बेचैन होना। क्यों पेट पीटते हो अभी दे जायगा।

पेट पीठ एक होना, पेट पीठ से लगना—(१) भूख से पेट अंदर धस जाना। (२) निर्बल होना। बेचारे का बुरा हाल है पेट पीठ से लगा है।

पेट पोंछना—अंतिम संतान।

पेट फटना—(१) हँसते हँसते व्याकुल होना। (२) हसद, रश्क, स्पर्धा होना (३) अधीर होना। क्यों पेट फटा जाता है दो दिन ठहरो हो जायगा।

पेट फूलना—(१) जलन होना। दाता दे भंडारी का पेट फूले। (२) जानने पाने के लिये आकुल होना। न बताओगे तो चैन न पड़ेगा पेट फूलने लगेगा।

पेट बँधना, बाँधना—आवश्यकता से कम, नियमित भोजन करना, अभ्यास करना।

पेट बढ़ना—(१) बहुत खाना। (२) दूसरों का हड़प लेना।

पेट भर जाना—(१) उकता जाना, घबरा जाना। (२) मालदार हो जाना।

पेट भरना—(१) खूब खाना। (२) सन्तुष्ट होना। उनका पेट भरो उन्हें मनाओ।

पेट मसोसना—भूखा रहना। पेट मसोस कर पाँच रुपये बचाये थे।

पेट मारना—(१) दे० पेट काटना। (२) आत्महत्या करना। संखिया खाकर पेट मार कर क्यों मरते हो, मेहनत करो।

पेट मार कर मर जाना—आत्म-हत्या करना।

पेट में आंत न मुँह में दांत—बहुत बूढ़ा।

पेट में खलबली पड़ना, पानी होना—चिन्ता, घबराहट होना। यह सुनते ही पेट में पानी हो गया।

पेट में घुसना—मतलब के लिये मुहब्बत बढ़ाना, भेद लेना। उसने मेरे पेट में घुस कर धोखा दिया।

पेट में चूहें। का दौड़ना, कला बाजी खाना, फुदकना—भूख या चिन्ता बहुत होना। 'बर्खास्त होगा' सुनते ही पेट में...।

पेट में चींटे की गिरह होना—बहुत कम खाना। तुम्हारे पेट मे तो चींटे की गिरह है एक पूरी में ही पेट भर गया!

पेट में डाढ़ी होना—बच्चे का बहुत बुद्धिमान होना। बड़ा लड़का मूर्ख है छोटे के पेट में डाढ़ी है।

पेट में डालना—(१) खाना, इच्छा न होते खाना। पेट में डाल लिया फिर जाने कब मिलता। (२) भेद न खोलना। अभी यह बात पेट में डालो, कहो मत।

पेट में पॉव होना—चालबाज़ होना। उसके पेट में पॉव है वह जाकर जरूर शिकायत कर देगा।

पेट में पानी न पचना—भेद न छुपा सकना।

पेट में बल पड़ना—हँसी से पेट दुखना। ऐसी हँसी आई कि हँसते हँसते पेट में बल पड़ गये।

पेट में रखना — गुप्त रखना। कहना मत पेट में रखना।

पेट में होना—(१) दिल में इच्छा, विचार होना। मेरे पेट में तो पहिले से ही थी वक्त आते ही कर डाली। (२) पास में होना। तुम्हारी पुस्तक इन्हीं लोगों के पेट में है।

पेट मोटा हो जाना—रिश्वत, घूँस बहुत लेना। पुलिस वालों के पेट मोटे हो जाते हैं।

पेट रहना—गर्भ हो जाना।

पेट लगना, लगजाना—भूख से पेट अन्दर धँस जाना। उपवास करते करते पेट लग गया है।

पेट से पाँव निकालना—(१) ऐंठना, अब तुम भी पेट से पाँव निकालने लगे! (२) बुरे काम करना। पेट से पॉव मत निकालो घर बार बिक जायँगे।

पेट से निकालना — गई चीज़ उगलवाना, वापिस पाना। न मुझसा होता न उनके पेट से निकालता, वह तो हज़म कर चुके थे।

पेट से होना—गर्भवती होना।

पेटा खाली होना—अन्दर कुछ

न होना। कहने को लखपती हैं पर पेटा खाली है।

पेटा छोड़ना—उड़ती गुड्डी की डोर का बीच में ढीला होना, झूल जाना।

पेटा तोड़ना—(१) गुड्डी की झूलती डोर तोड़ना। (२) अंदरूनी नुकसान पहुँचाना। इस चोरी ने पेटा तोड़ लिया पैसा भी पास न रहा।

पेटी उतरना—सिपाही की नौकरी छूटना। दरोग़ा की पेटी उतर गई।

पेटी पड़ना—पेट तोंद बढ़ना।

पेड़ लगना, लगाना—(१) पौधा जमना, जमाना। (२) काम शुरू करना। पेड़ उन्होंने लगाया फल हमने खाये।

पेश आना—(१) होना, सामने आना। ऐसा हादिसा पेश आया कि दंग रह गया। (२) बर्ताव करना। भले आदमी से अच्छी तरह पेश आता है।

पेश करना—(१) भेंट करना। यह छड़ी उसने पेश की थी। (२) दिखाना, सामने रखना। चोरों को हमारे सामने पेश करो।

पेश चलना, जाना—वश या जोर चलना। जहाँ तक मेरी पेश चलेगी बिगड़ने न दूँगा।

पेश पाना—जीतना, सफल होना। इस चालबाज से कोई पेश नहीं पा सकता।

पेशवाई करना—(२) अगमानी करना। (२) रक्षा के लिये साथ जाना।

पेशाब करना, पेशाब भी न करना—कुछ न समझना, घृणा करना। मै उनकी चीज़ पर पेशाब भी न करूँ।

पेशाब की धार पर मारना—अति तुच्छ समझना।

पेशाब की राह बहा देना—रंडीबाज़ी में ख़र्च कर देना।

पेशाब निकल पड़ना या खता होना—बहुत डरना, इतना कि पेशाब निकल जाय। हाथ में कोड़ा देखते ही पेशाब निकल पड़ता था।

पेशाब बंद होना—बहुत डरना, इतना कि पेशाब बन्द हो जाय। डर के मारे पेशाब बन्द हो गया।

पेशाब का या से चिराग जलना—बहुत रौब, प्रताप होना। उन्हें कौन 'ना' कर सकता है उनके पेशाब से चिराग जलता है।

पैंग बढ़ाना—मेल जोल डालना। उनसे पैंग तो बढ़ा रहे हो पर उस कोर्टशिप में कुछ है नहीं।

पैड़ा मारना—पीछे पड़ना, तंग करना।

पैंड़े पड़ना—दे० पीछे पड़ना।

पैगाम डालना—सम्बन्ध का सन्देश भेजना ।

पैज पड़ जाना—हठ या लाग डाट होना । उन्हें पैज पड़ गई है करके ही मानेंगे ।

पैतरा बदलना—(१) पटा चलाने में इधर उधर ढब से पैर रखना । (२) मौक़े के अनुसार वार बदलना । बड़ा भोला सा था पर मौक़े पर ऐसा पैतरा बदला कि देखते रह गये ।

पैतरे बदल कर चलना—ऐंठ कर चलना । ये नख़रे ! पैतरे बदल कर चलती हो !

पैदा करना—(१) कमाना । (२) उत्पन्न करना । हज़ारों पैदा किए ।

पैदा होना—(१) आमदनी होना । उन्हे हज़ार रुपये महीने की पैदा है । (२) उत्पन्न होना ।

पैबंद लगाना—बिगड़ी हुई या अधूरी बात सुधारना, बात में बात जोड़ना । तुम खूब पैबद लगा रही हो, उन्हें ही कहने दो न !

पैमाना भर जाना—दे० प्याला भर जाना ।

पैर छूटना—रज अधिक जाना । **नोट**—पैर और पाँव के एक ही मुहावरे हैं ।

पैर से जा लगना—पैर पर गिरना । मुझे देखते ही वह मेरे पैर से जा लगा कि किसी तरह मुझे बचाइये ।

पैर पर सिर रखना—खुशामद करना । तुम जैसे तो सैकड़ों उनके पैर पर सिर रखते हैं, वह तुमसे दबेंगे ।

पैरा हुआ—होशियार, पारगत । वह इन सब कामों में पैरा हुआ है ख़तरा नहीं खा सकता ।

पैरो में पर लगना—तेज़ चलना । जिस समय चलता है पैरों मे पर लग जाते हैं ।

पैरों में बेड़ी डालना—पाबन्दी करना । तुम ऐसी वेड़ी पैरों मे मत डालो ।

पैरों में मेंहदी लगाके बैठना—न जाने का बहाना करना । क्या पैरों मे मेंहदी लगाके बैठे हो । जो मेरे साथ नहीं चलते ।

पैसा उठना, उठाना—अधाधुंध, कुल खर्च करना । ब्याह में बड़ा पैसा उठा ।

पैसा कमाना—धन पैदा करना । ठेकेदारी में बड़ा पैसा पैदा किया ।

पैसा खींचना—धन इकट्ठा करना । मेरी नाबालग़ी में बड़ा पैसा खींचा ।

पैसा डूबना—घाटा होना । हमारा तो सब पैसा डूब गया, वह दिवाला जो हो गया ।

पैसा ढो ले जाना—एक देश के

धन को दूसरे देश ले जाना। अंग्रेज बड़ा पैसा ढो ले जा रहे हैं।

पैसा धोकर उठाना—देव पूजा के निमित्त पैसा धोकर अलग रखना।

पैसा पैसा करना—धन कमाने की चिन्ता में रहना।

पैसा लगाना—धन कमाने के लिए धन खर्चना। जितना पैसा लगाया था उससे दुगना कमाया।

पैसे के तीन धेले भुनाना—किफायत से खर्च करना, थोड़े में बुद्धि से बहुत काम निकालना। वह पैसे के तीन धेले भुनाता है रुपये में डेढ का माल लावेगा।

पैसे पर रखकर बोटियाँ उड़ाना—हद दरजे की तकलीफ देना।

पैसे पैसे को तरसना—बहुत ग़रीब होना। वही आप आज पैसे पैसे को तरस रहा है।

पैसा समेटना—पैसा बहुत कमाना। उसे शराबी बना कर इसने बड़ा पैसा समेटा है।

पों बोलना—हार मानना, दिवाला होना। एक साल के खर्चे में पों बोल गये।

पोत पूरा करना—कमी, काम ज्यों त्यों पूरा करना। चाहे भूखे हो जायँ पोत तो पूरा करेंहीगे।

पोत पूरा होना—कमी पूरी होना।

पोता फेरना—लूटना, बर्बाद करना। सारी जायदाद पर पोता फेर दिया।

पोदना सा—नन्हा सा। पोदना सा लड़का है उछलता ऐसा है।

पोल खुलना—भंडा फूटना, भीतरी बुरी हालत जाहिर होना। कैसे सेठ थे आज पोल खुली जब पकड़े गये।

पोल खोलना—भेद खोलना, भंडा फोड़ना। तुमने पोल खोल दी वरना वह यहाँ भी उल्लू बनाता।

पौन चलाना, मारना—जादू, टोना करना।

पौन बिठाना—किसी के पीछे भूत-प्रेत लगाना।

पौने सोलह आना—अधिक भाग में, अधिकतर। पौने सोलह आने तो यह बात ठीक निकलेगी।

पौ फटना—सुबह होना।

पौबारह पड़ना—जीत का दाव पड़ना।

पौबारह होना—(१) दे० पौबारह पड़ना। (२) अपनी बन आना। अब तो पौबारह है बाप मर गया है।

प्याज़ के से छिलके उतार कर रख देना—बुरी गत बनाना, बुरा-भला सुनाना। बकेगा तो प्याज़ के से छिलके उतार दूँगा।

प्याला देना—शराब पिलाना।

प्याला पीना—(१) दे० प्याला भर जाना। (२) शराब, भंग पीना।

(३) जहर पीना। प्याला पीकर सो जाना।

प्याला बहना—गर्भ गिरना।

प्याला भर जाना—उम्र तमाम होना, दिन पूरे हो जाना। भर गया प्याला टरक गये दुनिया से।

प्याला भरना—मौत के दिन आ जाना।

प्यास बुझाना — जलन ठंडी करना। मेरी प्यास कौन बुझावे।

प्यास मारना—पीने की इच्छा दबाना, रोकना।

प्यास लगना—पीने की इच्छा होना।

प्यासा मरना—मरते वक्त पानी तक न मिलना। बहुत प्यास होना।

प्रपञ्च फैलाना—आडम्बर, छल करना, बहकाना। उसने ऐसा प्रपंच फैलाया कि मानो बड़ा भारी वैद्य है।

प्रसाद पाना—(१) खाना, भोजन करना। (२) फल पाना।

प्रस्थान धरना—(१) जाने के लिये दुपट्टा सुपारी रखना। (२) रवाना होना।

प्राण उड़ जाना—(१) बहुत डर या घबरा जाना। (२) भौचक्का, हक्का बक्का रह जाना। शराब खाने मे पिता जी को आते देख मेरे प्राण उड़ गये।

प्राण कंठ में होना—मरने वाला होना।

प्राण खाना—तंग करना, मग़ज चाटना। मेरे प्राण मत खा किसी और से माँग, मै कभी न दूँगा।

प्राण गले या मुँह को आना—(१) मरने की हालत होना। (२) बहुत दुख होना।

प्रान जाना, छूटना, निकलना—मर जाना।

प्राण छुटाना—दे० जान छुड़ाना।

प्राण डालना—जीवित करना। उसने जादू से इसमे प्राण डाल दिये।

प्राण तजना, त्यागना, छोड़ना—मरना, मरने को होना। दुरजोधन लों देखियत तजत प्राण यह बाल।

प्राण देना—(१) किसी के काम से दुखी हो मरना। हार कर उसने शर्म से प्राण दे दिये। (२) किसी को प्राणों से ज्यादा प्रेम करना। वह तुझ पर प्राण देता है।

प्राण निकलना—(१) मरना (२)। डर से होशहवास जाते रहना। साँप देखते ही मेरे प्राण निकल गये।

प्राण पयान होना—मर जाना। प्राण पयान होत को राखा।

प्राण बचाना — (१) जीवन बचाना, रक्षा करना। मुझ डूबती के तुमने प्राण बचाये। (२) पीछा छुड़ाना। बड़ा गप्पी है बड़ी

मुश्किल से प्राण बचा कर आया हूँ।

प्राण मुट्ठी या हाथ में लिये फिरना, रहना—जान देने पर उतारू होना, जीवन की आशा न करना। वह तुम्हारे लिये प्राण भी मुट्ठी में लिये फिरता है।

प्राण रखना—जिलाना, मरने से बचाना। वैद्य जी ने मेरे प्राण रख दिये।

प्राण लेकर भागना—बचने के लिये ज़ोर से भागना। भेड़िया आते देख मैं तो प्राण लेकर भागा और पेड़ पर जा चढ़ा।

प्राण लेना—(१) जान लेना, मार डालना। (२) अति दुखदायी। लड़का क्या है प्राण लेवा पैदा हुआ है।

प्राण हरना—(१) मारना। कौन के प्राण हरैं हम यों हग कानन लागि मतो चहैं बूझना। (२ अति दुख देना, बहुत सताना। मिलत एक दारुण दुख देहीं, बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं।

प्राण हारना—(१) मर जाना। गढ प्राप्ति के लिए प्राण तक हार दिये। (२) हिम्मत टूट जाना। क्यों इतने ही में प्राण हार गये?

प्राणी दोनों—पुरुष-स्त्री दोनों प्राणी सुख से रहते हैं।

प्राणों का मुँह को या गले को आना—(१) मरने ही वाला होना। (२) बहुत कष्ट होना। जेल की मार से प्राण मुँह को आ जाते हैं।

प्राणों पर आ पड़ना, बनना—जीवन का खतरे में पड़ना। मेरे प्राणों पर बनी और वे हँसने लगे।

प्राणो पर खेलना—जान जाने का खतरा उठाना। प्राणों पर खेल कर आग में से निकाला।

प्राण पर आ पड़ना, बीतना—(१) जान जाने का डर होना। जब प्राणों पर आ बने तो धर्माधर्म मत देखो। (२) मर जाना। डूबने को बचाने गया पर अपने ही प्राणों पर बीती।

प्राणों में प्राण आना—डर कम होना, जी ठिकाने आना। जब तुम आ गये तो प्राणों में प्राण आये वरना मै मरी जाती थी।

प्राणों से हाथ धोना—मर जाना। उससे लड़े तो प्राणों से हाथ धोओगे।

प्राप्त होना—मिलना। मुझे एक पैसा भी प्राप्त नहीं हुआ।

प्रूफ उठाना—कापी की नकल या अक्षरों का जोड़ कागज पर देना।

फ

फंका करना—नाश कर देना। बाप दादा की सारी कमाई को फंका किया।

फंका मारना—चूर्ण को मुँह में डालना। फंका मारे बड़ा स्वाद है।

फंद कटना—दे० पीछा छूटना।

फंदा देना लगाना—(१) धोखा, जाल फैलाना। (२) गाँठ लगा के फंदा लगाना।

फंदा पड़ना—(१) फँसना। अब के फंदा पड़ा है देखे कैसे बचते ! (२) जाल पड़ना।

फंदा लगना—जाल, धोखा चलना। फंदा लग गया तो सौ दो सौ ले ही आऊँगा।

फंदे में पड़ना, फँसना—(१) धोखे या वश में आ जाना। (२) संकट मे पड़ना। हम तो भाई बुरे फंदे में फँसे जीना दुश्वार हो रहा है।

फँस जाना (किसी से)—प्रेम संबन्ध या अनुचित सम्बन्ध होना। वह एक नाइन से फँस गया है।

फगुआ खेलना — दे० फाग खेलना।

फक्कड़ होना — (१) बदजबान होना। (२) अकेला होना। फक्कड़ आदमी है परवाह क्या है।

फक कराना—सम्बन्ध तोड़ना। मैं क्यों डूब कर जान दूँ मैंने डोरी फक करा दी।

फक पड़ जाना (रंग)—डर के चिन्ह मुख पर होना, घबरा जाना। मुँह फक पड़ गया बोला तक न गया।

फकीर होना—(१) साधु बनना। (२) गरीब हो जाना। मुकदमे बाजी में फ़कीर हो गया।

फगुआ मनाना—स्त्री पुरुषों का रंग से खेलना। लोचन आजहि फगुआ मनाइ, छाँडिइ नचाइ हा हा कराइ।

फज़ीलत की पगड़ी—बहुत पढ़े लिखे पन का चिन्ह, विद्वत्ता का चिन्ह।

फ़ज़ीहत करना—बदनाम करना। यदि उसको इस बात का पता लग गया तो तुम्हारी बड़ी फ़ज़ीहत करेगा।

फ़ज़ीहत होना—अपमान होना। तुम जान बूझ कर ऐसा काम क्यों करते हो जिससे फ़ज़ीहत हो।

फटकना पछोरना—(१) छाज में अनाज साफ करना। (२) खूब जाँचना। (३) कपड़े धोने को पत्थर पर मारना।

फटकने न देना—पास न आने देना। मा को पास भी न फटकने दो।

फटका न खाना—फौरन मर जाना।

फटकार खाना—(१) तड़फना। (२) बुराई सुनना, लानत-मलामत, धिक्कार सहना। मै क्यों फटकार खाऊँ, चला आया।

फटकार बताना — बुरा भला कहना। जिसका कसूर उसे फटकार बताओ।

फटकार बरसना (मुँह पर)—चेहरा फीक पड़ना।

फटकार बरसना—गाली गलौज होना, थू-थू होना।

फटके चलना—(१) अलग चलना, रहना। बुरे दोस्तों से फटके चलो। (२) घृणा जाहिर करना।

फट पड़ना—(१) एकदम आक्रमण करना या क्रोध करना। (२) बहुत होना। जाने रुपया कहाँ से फट पड़ा है बेशुमार लुटा रहा है। (३) सहसा पहुँचना। तुम यहाँ कहाँ से फट पड़े?

फटफट होना — झगड़ा होना। दोनों मित्रों में फट फट हुई।

फट से—तुरन्त, झट।

फटा जाना, पड़ना — वेदना या कष्ट बहुत होना। दर्द से सिर फटा पड़ रहा है।

फटियल रहना—(१) अलग रहना। (२) फटे कपड़े रहना।

फटे में पाँव देना — झगड़े में पड़ना।

फटे हाल होना—गरीब होना। वह नहीं जानता कि ऐसे फटे हाल रहती हूँ।

फटे हालों रहना—दरिद्र, बुरी हालत होना।

फट्टा लौटना, उलटना—टाट उलटना, दिवाला निकलना।

फड़क उठना—प्रसन्न होना, प्रफुल्लित होना। मेरी कविता सुन कर फड़क उठोगे।

फड़क जाना—बेचैन होना, खुश होना, आशिक हो जाना। मोहित होना।

फफोले फूटना, फोड़ना—दिल की जलन, बुखार निकलना, निकालना। पुरानी बातों से जरा फफोले फूट जाते हैं वरना, दुख में बेचैन हैं।

फफफस होना—देखने में मोटा ताजा पर अन्दर बल न होना।

फब जाना—सुन्दर लगना। टोपी भी फब गई और बात भी मौके पर कही फब गई।

फबती उड़ाना—हँसी उड़ाना। क्यों बेचारे सीधे सादे की फबती उड़ाते हो।

फबती कसना, कहना—हँसी भरी चुभती बात कहना। ऐसी फबतियें कहीं कि मज़ाक में हार मान गया।

फरक फरक होना—(१) हटो बचो होना। चल्यो राम मन्दिर की ओरा, फरक फरक माच्यो मग सोरा। (२) अन्तर होना। दोनों के स्वभाव फरक फरक हैं।

फ़रागत करना, पाना, होना—(१) पूरा करना या होना। (२) चिन्ता दूर होना। रुपये देकर फ़रागत पाई।

फ़रार होना—भागना, चल देना। क़ैदी जेल से फ़रार हो गया।

फ़रेब देना—धोखा देना। उसने मुझे बहुतेरा फ़रेब दिया किन्तु मै उसकी बातों में न आ सका।

फ़रोख्त करना—बेचना। वह ग़रीब लड़का बहुत दिनों तक इसी प्रकार दियासलाइयाँ फ़रोख्त करता रहा।

फ़र्क करना—भेद करना। यह उसकी नन्द का लड़का है, किन्तु खिलाने पिलाने मे अपने लड़कों से फर्क नहीं करती।

फ़र्क पड़ना—अन्तर पड़ना। यदि सीधी सड़क के रास्ते से जाया जाय तो एक कोस का फर्क पड़ता है।

फ़र्ज़ करना—(१) मान लेना। (२) आज्ञा देना या तरीका बताना। (३) कल्पना या भावना करना। फर्ज करो मै न करूँ तो क्या होगा।

फर्द में नाम चढ़ाना, लिखना—सूची या लिस्ट में लिखना, भर्ती करना। न्यौते की फर्द में तुम्हारा नाम नहीं चढ़ाया।

फर्मायश करना—किसी चीज़ का आर्डर देना देखिये फर्मायश तो की है, माल दो एक दिन में आने ही वाला है।

फ़र्मायिशी करना—खूब जूते खाना। यदि बुरा कर्म करोगे तो इसी तरह फर्मायशी करोगे।

फर्याद करना—शिकायत करना। मैंने लगातार कई दिनों तक फर्याद की तब कहीं सुनाई हुई।

फर्राटा मारना, भरना—तेजी से दौड़ना। एक फर्राटा मारा और पहुँचा।

फर्श कर देना—खूब मार कर ज़मीन पर गिरा देना। पुलिस ने मारते मारते चोर को फर्श कर दिया किन्तु उसने कुछ भेद न बताया।

फल आना, फूल जाना—(१) परिणाम, नतीजा निकलना। (२) वृक्षों में फल आना।

फलना फूलना—इच्छा पूरी होना, सफल होना। तुम फलो फूलो यह माँ की दुआ थी।

फल पाना, मिलना—कार्य का परिणाम होना। मुझे जो दुख दिया है उसका फल तो मिलेगा ही।

[६२८०]

फली के दो टूक करना, तोड़ना—(१) तनिक काम करना। बहू फली के दो टूक भी नहीं करती सास को ही सब काम करना पड़ता है। (२) संबन्ध तोड़ना।

फस फसाकर बैठ जाना—कच्ची दीवार का पानी के असर से पृथ्वी में समा जाना।

फ़साद पैदा करना—उपद्रव उत्पन्न करना। उन्होंने हमारे लड़के को बहका कर हमारे घर में फसाद पैदा कर दिया है।

फ़साद मचाना—कलह करना। तुम क्यों दिन रात फसाद मचाया करते हो, इसका परिणाम अच्छा न होगा।

फ़स्द खोलना—खून बहाना। वह सच्चा वीर था, ग़रीबों के लिये ही फस्द खोलता था।

फांका मारना—चीज मुँह में डालना, फांकना। सारे चूरन का फॉका मारा तो दस्त हो जायेंगे।

फांड़ा पकड़ना—(१) पल्ला पकड़ना। (२) स्त्री का किसी पुरुष को भरण-पोषण का जिम्मेदार ठह-राना।

फांड़ा बांधना, कसना—तैयार, मुस्तैद होना। फांड़ा बाँध कसके मारने चला।

फांद पड़ना—कूद पड़ना। तुम क्यों दूसरे की बातों में फाँद पड़े।

फांद मारना—फँदा डालना, जाल बिछाना।

फांस चुभना—दिल में बात खट-कना। मेरे दिल में वह फाँस चुभी है बदला लेकर छोड़ूँगा।

फांस निकलना—काँटा या झंझट दूर होना। उसकी नौकरी छूटी फाँस निकली बहुत दुख देता था।

फांस निकलना, निकाल देना—खटके की या कष्टकर वस्तु दूर करना। राजा से शिकायत करके यह भी फाँस निकाल ही दो।

फांस रखना—वश या बंधन में रखना। ऐसा फाँस रखा है कि किसी की नहीं सुनता।

फांस लाना—धोके से पकड़ लाना। डाकू को फाँस लाये वरना हाथ न आता।

फांसी खड़ी होना—(१) फाँसी तैयार होना। हत्यारे के लिये फाँसी खड़ी है समझे ? (२) प्राण जाने का डर होना। जाने क्यों नहीं ऐसी क्या फाँसी खड़ी है ?

फांसी चढ़ना—प्राण दण्ड पाना। वे हँसते हँसते फाँसी चढ़ गये।

फांसी देना, लगाना—गले में फंदा डाल कर मार डालना। डाकू ने फाँसी लगा कर मार डाला।

फ़ाक़ा करना—उपवास करना। बेचारे किसानों को भर पेट रोटी

नहीं मिलती, कई कई दिन फाके करते बीत जाते हैं।

फाका पड़ना—अनशन, उपवास होना। गरीबों के घर में फाके पड़ते हैं।

फाको का मारा—भूखों मरना। फाकों मारा आया था अब माल पल्ले है तो ऐंठता है।

फाग खेलना—(१) आनन्द-उत्सव मनाना। (२) होली को रंग-रलियाँ करना। (३) उड़ाना।

फाड़खाना—क्रोध में बोलना। मुझे फाड़ खाने को दौड़े।

फाफा कुटनी—दुष्ट, एक से दूसरे की बुराई करने वाली कुटनी बुढ़िया।

फायदे का—लाभ, फायदा देने वाला। फायदे का काम करो नुकसान का नहीं।

फारसी बघारना—ऐसी भाषा बोलना जो दूसरा न समझे। यहाँ तो गँवार बैठे हैं क्यों अधिक फारसी बघार रहे हो।

फाल बांधना—उछल कर लांघना।

फाल भरना—कदम रखना। हिरन ने दो फाल भरीं और ओझल हो गया।

फालिज गिरना—अंग सुन्न पड़ना। दाये अग पर फालिज गिर गया है।

फावड़ा चलना—खेत में काम करना, कठिन काम करना। ऐसा क्या फावड़ा चलाते हो आराम से लिखते हो और कमाते हो।

फावड़ा बजना, बजाना—(१) खोद गिराना। चूँ की तो मकान पर फावड़ा बजा दूँगा। (२) दुखदायी होना। छाती पर फावड़ा बज रहा है तो भी तुम शिकायत नहीं करते।

फाश (परदा) करना—दे॰ परदा फाश करना।

फिक्र करना—(१) पहिले से ही सोचना। लड़की के ब्याह की फिक्र करो। (२) सोचना। (३) चिन्ता या दुख। फिक्र तो करते ही नहीं चाहे जो हो। (४) विरुद्ध षड्यन्त्र करना।

फिक्र लगना—चिन्ता, खटका रहना। मुझे ब्याह की फिक्र लगी है।

फिटकार लगना—शाप ठीक उतरना। उस मुई की फिटकार लगी बच्चा बीमार हो गया है।

फिट्टा मुँह—उतरा हुआ चेहरा। इस फिट्टे मुँह वहाँ जायगी?

फिर कर न देखना—घृणा दिखाना, वापिस न आना। मै अब उसकी तरफ फिर कर भी न देखूँ जाना तो दूर रहा।

फिरकी की तरह फिरना—इधर उधर काम करते ही रहना,

[६३१८]

एक जगह चैन न पड़ना। मेरी बीमारी में बिचारी फिरकी की तरह फिरती थी।

फिरकी सी घूमना—इतना प्रेम है कि मेरी बीमारी मे फिरकी सी घूमती थी, बड़ी सेवा की।

फिर क्या है ?—फिर क्या पूछना है, सब बात ठीक है, कुछ कसर नहीं। फिर क्या है अभी चलो।

फिर जाना—आकर लौट जाना। कई बीमार फिर गये वैद्य जी घर पर न थे।

फिरना किसी ओर—झुकना, प्रवृत्त होना। अगर इस काम की ओर फिर गये तो लाखों लगा देंगे।

फिरना जी—जी उचट जाना। इस काम से जी फिर गया अब न करेंगे।

फिरना (सिर)—बुद्धि भ्रष्ट होना, अक्ल फिरना। तुम्हारा सिर फिर गया है ? मालूम है किससे कह रहे हो ?

फिर पड़ना—क्रोध करना। तुमसे बस न चला मुझ पर फिर पड़े और पीट डाला।

फिसल जाना—(१) आशिक होना, जी आजाना। (२) कायदे से फिर जाना। क्यों फिसल गये न ? मैने पहले ही कहा था न कर सकोगे।

फिसल पड़ना—आशिक होना। क्यों ! नाइन पर ही फिसल पड़े न ?

फिसलना (जी)—मन लुभाना। उन पर फिसल गया जी कोठे पर जो रहती है।

फिस हो जाना, होना (टॉय टॉय फिस)—(१) अधिक धूम अंत कुछ नहीं। हजारों खर्चे पर जरा सी बात पर फिस हो गई। (२) कुछ न रह जाना, हवा हो जाना।

फीका पड़ जाना—(१) रग उड़ जाना। (२) रौनक जाती रहना। अब कुछ चेहरा फीका पड गया है क्या बात है ?

फुँकारी मारना—साँप का फुसकार मारना। नेवले को देखते ही साँप फुङ्कारी मार कर खड़ा हो गया।

फुरती करना—जल्दी करना। ऐसी फुरती करता है घटों का काम मिन्टों में कर देता है।

फुरसत पाना—(१) छुट्टी पाना। काम से फुरसत पाकर तुम्हारे घर आऊँगा। (२) नौकरी से छूटना। मैंने वहाँ से तो फुरसत पाई अब कहीं जगह ढूँढ़ो।

फुरसत से—(१) खाली वक्त में। फुरसत से करना जल्दी क्या पड़ी है। (२) धीरे धीरे।

फुरहरी लेना—काँपना, थरथराना, उसके तो नाम से फुरहरी लेती हैं।

फुलासरे में आ जाना—(१) धोखा उठाना। फुलासरे मे आ गये उसने बड़ाई की रुपया लेके चम्पत बना। (२) हिमायत की ऐंठ मे आना। किसी के फुलासरे मे न आना मैं उसे भी ठीक कर सकता हूँ।

फुरेरी आना, लेना—कँप कँपी आना, कँपकँपाना।

फुलझड़ी छोड़ना — झगडा उठाना। फुलझड़ी तो तुमने ही छोडी थी यार!

फुलौरियाँ खाना—मज़े उडाना। यदि तुम उससे कुछ न कहोगे तो तुम्हारे सिर ही फुलौरियाँ खाता रहेगा।

फुल्ली निकालना — आँख की फुली ठीक करना हमारे गाँव में एक आदमी था, जो फुल्ली निकालना जानता था।

फुस फुस करना—काना फूसी करना। मैंने अभी अभी सुना है कि यह लोग कुछ फुस फुस कर रहे हैं।

फुसला लेना—बहकाना। बेचारी औरत को फुसला लिया और भगा ले गया।

फूँक देना—(१) जला देना। (२) मंत्र आदि से भूत भगाना। (३) फैलाना डालना। उन्होंने एक ही लैकचर में जान फूँक दी। (४) उड़ा देना, खर्च कर देना, लुटा देना। इस काम में हजारों रुपये फूँक दिये।

फूँक निकल जाना—मर जाना। बुड्ढा था एक धक्के में फूँक निकल गई।

फूँक फूँक कर पैर रखना—सावधानी से चलना या काम करना।

फूँकना (कान में)—धीरे से कहना, बहकाना। कान मे फूँक दो कि लड़ने आया है जो देखते ही सर कटवा दे, नहीं पोल खुल जायगी।

फूँक सरक जाना—दे० प्राण उड़ जाना।

फूँसड़ा हो जाना—कपड़े का तार तार हो जाना। सारी धोती फूँसडा हो गई और ला दो न।

फूट आना—अंकुर, फुगी निकलना।

फूट डालना—विरोध पैदा करना। हममें फूट डाल कर अपना काम बनाओगे।

फूट निकलना—शरीर पर फुसी आदि होना। उनके कोढ फूट निकला है।

फूट पड़ना—(१) झगड़ा, विरोध होना। (२) रोग का शरीर मे निकलना। (३) अलग अलग होना।

फूट फूट कर रोना—बहुत विलाप करना। भारी जेवर खोया जभी फूट फूट कर रो रही थी।

फूट बहना—रो पड़ना। बेचारी सुनते ही फूट बहने लगी। पानी दीवार या बाँध तोड़ कर बहना।

फूट सा खिल जाना—टुकड़े टुकड़े हो जाना। एक लाठी में ही सिर फूट सा खिल गया।

फूटी आँख का तारा—एक, कई में से बचा प्यारा लड़का। बुढ़िया की फूटी आखों का तारा है।

फूटी आँखों न देख सकना—(१) दे० फूटी आँखों न भाना। (२) बुरा मानना, कुढ़ना। किसी की उन्नति तो वह फूटी आँखों...।

फूटी आँखों न भाना—तनिक न सुहाना, बहुत बुरा लगना। बुड्ढों को नया फैशन फूटी आँखों नहीं भाता।

फूटी कौड़ी मिलना—कुछ न मिलना। वहाँ से तुम्हें एक फूटी कौड़ी तो मिलेगी नहीं।

फूटे मुँह से न बोलना—परवा न करना। बात तक न करना। मैं उनके घर गया फिर भी वह फूटे मुँह से न बोले।

फूल आना—फूल लगना। पेड़ों पर फूल आ रहे हैं।

फूल उतारना—(१) फूल तोड़ना। माली सवेरे फूल उतार लेता है। (२) सिर के बालों में से फूल निकालना।

फूल करना—बुझाना (दीप)। फूल कर दो और सो जाओ।

फूल कर कुप्पा होना—बहुत खुशी या नाराजी से मुँह फुलाना। वह ब्याह की सुनते ही फूल कर कुप्पा हो गई।

फूल उठना—मृत्यु के पश्चात् जली हुई हड्डियों को गंगा में डालना। आज राम के बाप के फूल उठेंगे।

फूल की थाली बजना—आनन्दोत्सव होना। सेठ जी के लड़के का ब्याह है घर में फूल की थाली बज रही है।

फूल चढ़ाना—फूलों से पूजा करना। महन्त पर फूल चढ़ाते हैं।

फूल चुनना—फूल (तोड़ कर) इकट्ठा करना। कुछ फूल चुन लाओ।

फूल जाना, फूल बैठना—नाराज़ हो जाना। सास को मनाने गई वह और फूल बैठी, चूल्हे में जाय।

फूल जाना—(१) सूजना। (२) मोटा हो जाना। (३) खुश होना।

फूल झड़ना—मुँह से मीठी, प्यारी बात निकलना। इतनी प्यारी आवाज़ है कि उनके मुँह से तो गाली भी फूल सी झड़ती है।

फूल झड़ जायँगे—इतना नाजुक कि कर ही नहीं सकता। वे कैसे करेंगी फूल झड़ जायेंगे।

फूल नहीं पँखड़ी सही—जो मिले वही ठीक। रानी नहीं लौंडी सही फूल नहीं पँखड़ी सही।

फूल पान सा—बहुत कोमल।

फूल पड़ना—(१) गुल जली बत्ती होना। दीये मे फूल पड़ा है उजाला इस लिये ही कम है। (२) सफ़ेद धब्बे पड़ना।

फूलना फलना–रुपये पैसे, सन्तान से खुश होना। पुत्र कई हैं फूल फल रहा है।

फूल सा–हल्का, सुन्दर, कोमल। 'फूल सा कुमार मेरा कैसे लड़ेगा'।

फूल सूँघ कर रहना—बहुत कम खाना। आप खाना नहीं खातीं फूल सूंघ कर रहती हैं।

फूला फिरना—(१) घमंड में घूमना। क्या फूले फिरते हो सारी ऐंठ निकल जायगी। (२) प्रसन्न घूमना।

फूला फूला फिरना—खुश खुश आनन्द में घूमना। फूली फिरत रोहिणी मैया नखसिख किए सिंगार।

फूली फूली खाना—बेफिक्री से गुजारना। माँ बाप हैं तब तक फूली फूली खालो पीछे मालूम पड़ेगी गृहस्थी में क्या मुश्किल है।

फूले अंग न समाना— बेहद खुश होना। खुशी के मारे आपे से बाहर होना। राम का आना सुन भरत फूले अंग न समाये।

फूलों के दिन—नौजवानी, उठती उम्र। फूलों के दिनों में मैंने भी घायल किये थे।

फूलों का गहना—हार, नाजुक, दिखावे का। लड़की फूलों का गहना है ऐसी और न मिलेगी।

फूलों में तुलना—बहुत लाड से पाली जाना। मेरी रानी तो फूलों से तुली है जरा ध्यान रखना।

फूस में चिनगारी डालना–शान्ति या मेल में झगड़ा फूट पैदा करना।

फेंट कसना, बाँधना–(१) तैयार होना। आज कहाँ के लिये फेंट कसी है? (२) पक्का इरादा करना।

फेंट धरना, पकड़ना—जाने न देना। कई बार आना चाहा पर उसने फेंट पकड़ ली कैसे आता?

फेफड़ी बँध जाना—बात न कर सकना। वह झूठी गवाही देने आया था, इसीलिये हाकिम के सामने उसकी फेफड़ी बँध गई।

फेर की बात—घुमाव फिराव की बात। मेरे से तुम्हारी एक भी फेर की बात न चलेगी?

फेर खाना—घूम कर आना। इस रास्ते बहुत फेर खाकर पहुँचोगे।

फेर दिनों का—बुरे दिन आना। दिनों का फेर है क्या करे?

[६३६२]

फेर देना—लौटा देना। भाजी आवे तो फेर देना, रखना मत।

फेरना माला—(१) माला जपना। (२) बार बार नाम लेना। मैं तो आपकी ही माला फेरता हूँ।

फेरना हाथ—(१) उड़ा लेना। रंडी ने रईसों पर हाथ फेरा, भिखारी किया। (२) इधर उधर छूना। हाथ फेरोगे काट खायगा। (३) प्यार से हाथ रखना। शाबाशी दी, हाथ फेरा।

फेर निन्नानवे का—रुपया बढ़ाने या जोड़ने का चस्का। गृहस्थी होकर निन्नानवे के ही फेर में पढ़ोगे?

फेर पड़ना, या पड़ जाना—(१) कमी या हानि होना, फर्क होना। जरा सी देर में १००) का फेर पड़ गया। (२) घुमाव का रास्ता होना। उस रास्ते आने में दस मील का फेर पड़ा।

फेर फार करना—अंतर डालना, बदलना, परिवर्तन करना। फेर फार डाल कर रुपये चटका लिए।

फेर फार की बात—(१) चालाकी की बात। (२) टालने की बात। मैं लेकर हटूँगा फेर फार की बात मत करो।

फेर बाँधना—सिल सिला, उपाय, ढंग होना। सौ रुपये से ही ऐसा फेर बाँधा है कि ५००) का माल दुकान में पड़ा रहता है।

फेर में आ जाना—बुरे दिन हो जाना। उनके फेर में आकर सब गवाँ बैठे।

फेर में डालना—असमंजस, चक्कर में डालना। उसने यह बात कह कर और फेर में डाल दिया।

फेर में पड़ना, आना—(१) धोखा खाना। उसके फेर में पड़े बरबाद हुए। (२) घाटा सहना। हजार के फेर में हम भी पड़ गये। (३) कठिनाई आ जाना। कुफेर- बुरी हालत, बुरे दिन। सुफेर—अच्छे दिन।

फेर लेना—वापिस लेना। दुकानदार ने किताब फेर ली।

फेरी पड़ना—(१) ब्याह होना। जिससे फेरी पड़ी उसे तो निभाओ। (२) परिक्रमा करना। मदिर की फेरी पड़ी है।

फेरी फिरना—चक्कर लगाना घर घर भीख माँगना।

फेरे डालना- ब्याह करना। लड़के के फेरे डाल दूँ फिर फिक्र नहीं।

फैज को पहुँचना—करनी का फल पाना। जेल गये, फैज को पहुँचे।

फैज पहुँचाना दान-धर्म करना, लाभ होना। वह कंजूस मुझे क्या फैज पहुँचायेगा।

फैयाजी करना—बहुत उदार

होना। जो ग़रीबों के प्रति फैयाज़ी नहीं करता, वह मनुष्य कहलाने लायक नहीं।

फैला पड़ना—प्राप्ति के लिये हठ करना। बच्चा फैला ही पड़ता है दे दो न!

फोकट का—विना मेहनत या दाम का। क्या फोकट का माल है जो तुम्हें दे दे?

फोकट में—अनायास, मुफ़्त में बिना खर्चे या कुछ करे। फोकट में आया है तुम ले लो।

फोटो लेना—कैमरे से तस्वीर खींचना।

फौं फौं करना—क्रोधित होना, साँप की तरह फुंकार मारना।

फौज़दारी होना—मार पीट होना। सुना है कि कल उनके गाँव मे दो दलों में खूब फ़ौजदारी हुई है।

फ़ौत होना—मृत्यु होना। वे बहुत दिनों से बीमार थे। दो तीन दिन हुये अस्पताल मे जाकर उनकी फौत हो गई।

ब

बंद करना—रोकना। उन्होंने रास्ते मे एक दीवार खड़ी कराके उधर से निकलने वालों का रास्ता बन्द कर दिया है।

बंद होना—रुकना। अब ज़रा जल्दी जल्दी पैर उठा कर निकल चलो, अब तो मेंह बन्द हो गया है।

बंदगी बजा लाना—सेवा करना। किसी समय बीसियों नौकर इनकी बन्दगी बजा लाने को खड़े रहते थे।

बंद बद जुदा करना—हड्डी हड्डी टूटना, पुरज़े पुरज़े करना। पीटते पीटते बद बद जुदा कर दूँगा।

बंद बंद टूटना—जोड़ जोड़ में दर्द होना। इतनी मेहनत करनी पड़ी कि बद बंद टूट रहा है।

बंद बंद ढीले करना—खूब पीटना; थका मारना, कमज़ोर कर देना।

बद बद पकड़ना—किसी को अच्छी तरह पकड़ लेना। जब मैने उसका बद बंद पकड़ लिया था तो फिर कैसे निकल जाता।

बद बाँधना—मेड़ बाँधना, गिरह लगाना, मंसूबा बाँधना, रोक थाम करना।

बंद में गिरह देना—याद के लिए गाँठ बाँधना।

बंदर घुड़की, भबकी—कोरी धमकी, डराने के लिये डाँट डपट। मै तुम्हारी बन्दर भबकी से नहीं डरता।

बंदर की तरह नचाना—परेशान करना। यह अच्छे आये हैं, कि दिन भर मुझे बन्दर की तरह नचाते हैं।

[६४२८]

बंदर की सी आँख बदलना—बात की बात में चिढ जाना। ऐसे मनुष्य से हँसी क्यों करते हो-जो बदर की सी आँख बदलता है।

बंदर भभकी देना—भय दिखाना। अब तो मैं खूब होशियार हो गया हूँ, तुम्हारी बंदर भभकियों में नहीं आ सकता।

बंदूक छतियाना—निशाना ठीक करना, चलाने को तैयार होना।

बंधन ढीला करना—खूब मारना पीटना।

बंधन में पड़ना—गिरफ्तार होना। पुलिस कितने ही दिनों से इसकी तलाश में थी, आज बंधन में पड़ा है।

बक बक, बक-झक करना—(१) बुरा भला कहना। (२) व्यर्थ की बातें करना। बक बक की तो पीट डालूँगा।

बखिया उधेड़ना—भेद खोलना। मैंने बहुत बात छिपायी पर उन्होंने बखिया उधेड दिया।

बखेडा खड़ा करना—झगडा-झंझट तैयार करना। उन्हें बरबाद करने को ही यह बखेडा खड़ा किया है।

बखेडा चुकाना—झगड़ा मिटाना। क्यों यह झगड़ा डाल रक्खा है। कुछ दे दिला कर इस बखेड़े को चुका क्यों नहीं देते।

बख्श देना—प्रदान करना। छोड देना। बाबर ने ईश्वर से प्रार्थना की कि हे ईश्वर! मेरी जान लेले, और हुमायूँ की जान बख्श दे।

बख्शिश देना—इनाम देना। राजा ने उसकी बहादुरी पर प्रसन्न होकर उसे एक गाँव बख्शिश दिया।

बगल में ईमान दबाना, रखना—बेईमानी करना। ईमान तो हमारी बगल में रखा है मुख में नहीं है जो सच बोले।

बगल में दबाना—ले लेना अधिकार करना। काग़ज़ बगल में दबाये और चल दिये।

बगल में धरना—बगल में छिपाना, छीन लेना। बगल में धर लो फिर न देना।

बगल में मारना—बगल में दबाना। धोती बगल में मारी और नहाने चले।

बगल में मुँह डालना—लज्जित करना, होना। मेरे सामने देखो अब क्यों बगल में मुँह डालते हो

बगल सूँघना—पछताना। जब न हो सका तो बगल सूँघने लगे।

बगल हो जाना—एक ओर हट जाना। मैं तो बगल हो गया चोट उसके लगी।

बगला भगत—कपटी, छली, दिखावे का ही सच्चा। तीर्थ पर

बहुत से माल चुराने वाले बगला भगत भी होते हैं।

बगली घूँसा—(१) छिपी दुश्मनी (स्त्री)। (२) वह घूँसा जो बगल में होकर मारा जाय। बगली घूँसा मार कर निकल भागा।

बग़ली डूबना—पूँजी नष्ट होना।

बग़ली देना—सेंध लगाना। मुझे बड़ा आश्चर्य है कि उधर घना होते हुये भी चोरों ने बग़ली देली।

बग़ली मारना—जेब कतरना। आज तो किसी ने खूब बग़ली मारी दस रुपये साफ उड़ा ले गया।

बगलें झाँकना—(१) जवाब न दे सकना। (२) शर्मिन्दा होना। जब उसने भी कहा झूठ है तो बगलें झाँकने लगे। (३) बचाव का रास्ता ढूँढ़ना। वे मारने दौड़े मैंने भी लट्ठ उठा लिया तब तो वे बगलें झाँकने लगे।

बगलें बजाना—(१) खूब खुशी मनाना। बगलें बजाते घर आये और प्रसाद बाँटा। (२) हँसी उड़ाना। उनकी सूरत देखी और बगलें बजाने लगे।

बघारना (शेखी) दे० बड़ाई मारना।

बचन डालना—माँगना। जीवन भर में आज ही वचन डाला है।

बचन छोड़ना, तोड़ना—वायदा, प्रतिज्ञा पूरी न करना।

बचन देना—दे० जबान देना।

बचन निभाना, पालना, पूरा करना—जो कहना वही करना।

बचन बन्ध करना—प्रतिज्ञा से मजबूर करना। कैकेयी ने दशरथ को वचन बन्ध करके राम को वनवास दिलाया।

बचन बन्ध होना—वचन देना। दशरथ जी वचन बन्ध हो गये थे, इस लिये फिर तनिक भी अनिच्छा प्रकट न कर सके।

बचन में बाँधना—वायदा, प्रतिज्ञा कराना। कैकेयी ने वचन में बाँध लिया।

बचन लेना—प्रतिज्ञा कराना।

बचन हारना—(१) दे० जबान देना। (२) कह कर न करना। वचन हारने में वीरता नहीं।

बच रहना—(१) छूटना। (२) जूठन रहना। खाने से यही बच रहा है।

बचाव करना—(१) रक्षा का उपाय करना। (२) हिफ़ाजत करना। (३) खर्च न होने का उपाय करना। अपने रुपयों का बचाव कर मेरे रुपये उठवा दिये।

बचा लाना—(१) रक्षित ले आना। (२) बाक़ी ले आना। बाँट भी आये और बचा भी लाये।

बच्चों का खेल—सरल कार्य। कठिन काम है, बच्चों का खेल नहीं।

बछिया का ताऊ, बाबा—मूर्ख, सीधा सादा, बुद्धू। वह क्या खबर लायेगा वह तो बछिया का ताऊ है।

बजा कर—डंका पीट कर, खुल्लम खुल्ला। देखूँ भरत कहँ राज बजाई।

बजाना ठोकना—खूब परखना। ठोक बजा लो फिर कहो खोटा था।

बजा लाना—(१) पूरा करना। अभी हुक्म बजा लाता हूँ। (२) करना। आदाब बजा लाता हूँ।

बटाऊ होना—(१) सार्थक होना। (२) चल देना। भए बटाऊ नेह तजि बादि बकत बे काज।

बटेर का जगाना—रात को बटेर के कान में आवाज़ देना। (बटेर बाज़)।

बटेर का बह जाना—दाना न मिलने से बटेर दुबला होना।

बट्टा काटना—दलाली, डिसकाउंट निकालना।

बट्टा लगना—(१) कटौती होना। (२) ऐब लगना।

बट्टा लगाना—कलंक लगाना। बड़ों के नाम पर बट्टा मत लगाओ।

बट्टे खाते लिखना—नुकसान में लिखना। उससे पैसा न पटा तो बट्टे खाते लिखा।

बड़ाई देना—आदर करना। यदि दुर्व्यसनों में पड़ जाओगे, तो कोई तुम्हें बड़ाई नहीं दे सकता।

बड़ाई मारना—डींग हाँकना। क्यों बड़ाई मारते हो हम जानते हैं तुम कितने बड़े हो।

बड़ा करना—पालन करके होशियार करना।

बड़ा नाम करना—यश नाम फैलाना।

बड़ा पेट वाला होना—सहन, शील होना। यदि उनमें से बड़ी बहू बड़े पेट वाली न होती तो दोनों में रोज़ गाली गलौज हो।

बड़ा बोल मारना—घमंड की, बढ़ बढ कर बातें करना। बहुत बड़े बोल मारते थे अब पछताते हैं।

बड़ा रास्ता पकड़ना—(१) मारना। (२) दूर का सफ़र करना। अब के बड़ा रास्ता पकड़ा है साल भर में लौटेंगे।

बड़ी बड़ी बातें करना, डींग की लेना, हाँकना—दे० बड़ाई मारना।

बड़ी बात नहीं—कुछ कठिन नहीं।

बड़ी बात होना—कठिन काम होना। किसी बात का कहना तो सहज है परन्तु करना बड़ी बात है।

बढ़ा लाना—आगे ले आना। मोटर को थोड़ा सा और बढा

[६४६०]

लाओ, जिससे सब लोग आसानी से बैठे सकें।

बड़े बाप का बेटा होना—(१) बहुत धन मान वाला होना। (२) अनोखा होना। तुम्हीं तो बड़े बाप के बेटे हो जो सब से आगे बैठोगे?

बढ़ चलना—हद से बाहर काम करना, घमंड करना। नौकरी लगते ही बढ़ कर चलने लगे।

बढ़ बढ़ कर बोलना—बघारना (शेखी)।

बढ़ावे में आना—उत्साह देने, बड़ाई करने से टेढ़े काम मे प्रवृत्त होना।

बताशे सा घुलना—(१) दुबला होना। (२) जल्दी खतम हो जाना। महीने ही भर मे सारा बतासा घुल गया।

बतीसी दिखाना—(१) दाँत दिखाना। (२) बेहूदा हँसी हँसना।

बतीसी बजना—(१) सर्दी से दाँत खट खट बजना। (२) कहा सुनी होना। सास बहू की खूब बतीसी बजती है।

बतोले न दे—चालाकी, टालमटूल, धोखा न कर (स्त्री)।

बदन चुराना—शरम से शरीर छिपाना, सकोड़ना (स्त्री)।

बदन टूटना—जोड़ जोड़ में दर्द होना।

बदन फल जाना—फोड़े फुंसी होना।

बदन बिगड़ना—कोढ़ होना।

बदन में खाज पैदा होना—अपने हाथों खराब होना।

बदला देना—बुरे का बुरा भले का भला करना।

बदला लेना—बैर निकालना। खूब बदला लिया अब तुम्हारा बुरा न सोचेगा।

बदा होना—कहा, लिखा होना। जो भाग्य में बदा है वह मिलेगा ही।

बदी चेतना—बुराई चाहना। बदी चेतोगे बदी मिलेगी।

बदी पर आना—बुराई करने को तैयार होना।

बधिया बैठना—काम बिगड़ना। उन्होंने सहायता न दी तो बधिया बैठ गई नहीं तो गाड़ी अभी तो चलती ही।

बन आना—(१) मौक़ा मिलना, भाग्य खुलना। मेरी बन आई तो मै भी झपट ही लूँगा। (२) इच्छा पूरी होना।

बन कर खेल बिगड़ना—काम होते होते बिगड़ जाना।

बन के बैठना—तैयार, ताक में बैठना। बन के बैठे हैं वार करेंगे।

बन पड़ना—(१) हो सकना। जो मुझसे बन पड़ा मैंने किया। (२) सुधरना।

बना बनाया—तैयार, पूरा, ठीक। सब बना बनाया है तुम्हारी देर है।

बना रहना—(१) जीवित रहना। बुड्ढे बने रहें तो अच्छा है शादी देख लेंगे। (२) उपस्थित रहना। जब देखो द्वार पर ही बना रहता है। (३) स्थित होना। वहीं पर बने रहो हटो मत। (४) उन्नति होना।

बनियों का सा चलना—कजूसी और किफायत से करना।

बबूल के पेड़ बोना—काँटे बोना, बुरा करना। बोये पेड़ बबूल के आम कहाँ ते होय।

बमचख मचाना—हल्ला-गुल्ला गाली गलौज करना।

बम फूटना—कुएँ की तह मे से पानी उबलना।

बम बोलना—कंगाल, दिवालिया होना। अब क्या रखा है बम बोल गई।

बयान करना—वर्णन करना। जब मैने उससे बहुत आग्रह किया, तब उसने मुझसे अपना सारा हाल बयान कर दिया।

बरपा रहना—स्थिर रहना। धन पाकर गर्व क्यों करते हो लक्ष्मी किसी के पास बरपा नहीं रहती।

बरबाद करना—नष्ट करना। वह बचाकर कुछ नहीं रखता, जो कुछ भी कमाता है बरबाद कर देता है।

बरबाद होना—नष्ट होना। जब प्लेग फैलती है, तो शहर के शहर और गाँव के गाँव बरबाद हो जाते हैं।

बरस दिन का दिन—सालाना पर्व, त्यौहार। होली बरस दिन का दिन है आज परदेश जाते हो?

बरस पड़ना—फटकारना, क्रोध में बकना। तुमसे कुछ न कहा मुझ पर बरस पड़े।

बरसों झूलना—बहुत दिन फिराना, आशा मे फँसाना। सुनार ने बरसों झुला दिये तब चीज़ दी।

बराबर करना, होना—(१) पूरा कर देना। ले दे कर हिसाब बराबर करो। (२) नाश कर देना, मिटाना। बाप दादा तक का नाम बराबर कर दिया।

बराबरी करना—(१) सामने, मुकाबिले पडना। (२) नकल करना। तुम्हारी बराबरी वह करे जो टाँग उठा कर मूते।

बर्खास्त करना—नौकरी से निकाल देना। यदि भविष्य में इस प्रकार की कमी तुम्हारे अन्दर पाई गई तो बर्खास्त कर दिये जाओगे।

बर्खास्त होना—नौकरी से निकाला जाना। अभी इसी महीने में इसी मामले में आठ दस आदमी बर्खास्त हो चुके हैं।

बल खाना—ऐंठना, टेढा होना।

बात बात पर बल खाना कोई तुमसे सीख ले।

बल खोलना—सुलझाना।

बल निकालना—सीधी करना, ऐंठन दूर करना।

बल पड़ना—(१) विरोध पडना। (२) सिकुडन होना। सुनते ही माथे में बल पड़ गये।

बला करे—नहीं करता। मेरी जाय बला, मैं क्यों जाऊँ और मेरी पूछे बला मैं क्यों पूछूँ, नहीं पूछता।

बला का—कमाल का, बहुत बढ़ा चढ़ा। बला का बोलने वाला है।

बला पीछे लगना—(१) आफ़त में पडना। मेरे पीछे तो बला लग गयी चैन ही नहीं। (२) तग करने वाले आदमी, झंझटी का साथ होना।

बलाय लेना—(किसी का रोग दुख) मंगल कामना करते हुए अपने ऊपर लेना।

बलायें लेना—प्रेम से दूसरे की विपदायें अपने ऊपर लेना। जब मैं सुसराल जाता हूँ तब मेरी सास मेरी बलाये लेती हैं।

बला से—कुछ परवा, चिन्ता नहीं। मेरी बला से मरे चाहे जीये।

बलि जाना—न्योछावर होना।

बलिहारी जाना—कुरबान जाना, न्यौछावर होना।

बलिहारी लेना—प्रेम दिखाना दे० बलैया लेना।

बलिहारी है !—मैं तो मोहित हो गया। अति सुन्दरता, शील, योग्यता आदि को देख कर कहते हैं; विरोधी गुणों पर व्यंग्य में भी।

बलैया लेता हूँ—निछावर जाता हूँ, बलिहारी है !

बलैया लेना—दे० बलाय लेना।

बल्ली मारना—नाव खेना। इस प्रकार प्रसन्न होते हुये, और बल्ली मारते हुये हम बहुत दूर तक निकल गये।

बसंत फूलना—(१) सरसों फूलना। (२) जर्दी छाना। कमजोरी इतनी है कि उठते बैठते आँखों के सामने बसंत फूलता है।

बस चलना—हो सकना, अधिकार होना। मेरा बस चले तो मै आज बेच दूँ।

बस में करना, लाना—(१) मोहना। मोहन मोहि बस कर लीन्हों। (२) दाँव मे, काबू में लाना।

बसना (घर किसी का)—गृहस्थी बनना, स्त्री घर में आना। किसी का घर बसे तो अच्छा विधवा का जीवन क्यों व्यर्थ जाय।

बसना (घर में)—(१) सुख से गृहस्थी में रहना। (२) स्त्री बन

कर रहना। वह चमार के घर में बस गई है।

बसना (मन में)—स्मृति, ध्यान, दिल में रम जाना। बालम आय बसो मेरे मन में।

बसाना (घर)—किसी की स्त्री बन कर रह जाना।

बसाना (मन में)—दिल में रखना। मन में बसा ली है मूरत तुम्हारी।

बसेरा करना—(१) ठहरना, डेरा डालना, रहना। बस्ती में से दिया खदेरी जंगल किया बसेरा। (२) घर बनाना।

बसेरा देना—(१) ठहराना। (२) आश्रय देना। (३) बसाना।

बसेरा लेना—रहना, बसना।

बस्ता बाँधना—कागज़ पत्र बाँध कर उठने की तैयारी करना।

बहक चलना—दे० बढ़ चलना।

बहक कर बोलना—(१) जोश, अभिमान में कह डालना। सभा मे बहक कर बोल गये, मौके पर सिटपिटा गये। (२) मद में चूर होकर बोलना।

बहका ले जाना—धोखा देकर भगा ले जाना। बहू बेटी को बहका ले जाते हैं।

बहकी बहकी बातें करना—(१) नशे में चूर जैसी बाते करना। (२) बढ़ी चढी बातें करना।

बह चलना—(१) पानी सा पतला होना। दाल बह चली। (२) बातों में आकर साथ चल देना। आगये बहकाये में बह चले।

बहना हुआ जोड़ा—बहुत अंडे देने वाला (कबूतर का) जोड़ा।

बहती गंगा में हाथ धोना बहती नदी में पाँव पखारना—अच्छा मौका पाकर काम कर लेना। ऐसे चलते काम मे तुम लाभ उठा लो बहती गंगा में हाथ धोलो फिर पता नहीं मौका मिले या नहीं।

बहरा पत्थर बज्र बहरा—बिल्कुल कम सुनने वाला। खूब जोर से बोलो यह बज्र बहरा है।

बहा बहा फिरना—(१) कमीना बन जाना। बाप के मरते ही वह बहा बहा फिरने लगा। (२) द्रव पदार्थ बहुत होना। दूध बहा बहा फिरता था।

बहार पर आना—(१) जवानी पर आना। (२) फूल खिलना, देखो, आई है कैसी बहार, बहार लूटना। (१) सैर करना। चलो इस बार कश्मीर की बहार लूटें। (२) रौनक मिटाना। (३) ऐश करना। उसकी बहार तो लूटली अब खोखला जान छोड दी।

बहाल करना—ज्यों की त्यों करना। जुर्माना दाखिल न होने से जज़ ने फिर सज़ा बहाल कर दी है।

बहाली करना—उसी स्थान पर करना। बाबू ने निकाला बहू जी ने नौकर को बहाल कर दिया।

बही पर चढ़ना, टकना—हिसाब मे लिखा जाना।

बहुत अच्छा—(१) ऐसी ही होगा। (२) कोई परवाह, नहीं, देखेगे। बहुत अच्छा करो दावा देखे क्या कर लोगे ?

बहुत करके—(१) प्रायः, अक्सर। (२) सभव है, सोलह आना, बहुत करके जुर्माना होगा सज़ा नहीं।

बहुत खूब—(१) वाह वाह ! (२) बहुत अच्छा। बहुत खूब ! अच्छा हुआ ले आये जरूरत भी थी।

बहुत दूर की सूझना—(१) भविष्य की कहना। बहुत दूर की सूझी ऐसा ही होगा। (२) ऊँची कल्पना करना।

बहुत नन्हा तत्ता होना—नाराज होना। ऐसे क्यों बहुत नन्हें तत्ते होते हो फिर कभी ला दूँगा।

बहुत पाँव पीटना—अति प्रयत्न करना। चाहे बहुत पाँव पीटो दौलत तो तुम्हे मिलेगी नहीं।

बहुत पापड़ बेलना—बहुत ठोकरे खा चुकना, दुख उठा चुकना।

बहुत रूप भरना—नया नया रूप दिखाना।

बहुत है—(व्यंग) कुछ नहीं।

बाँका करना—ज़रा सी भी हानि कर सकना। मेरे यहाँ रहते हुये, मज़ाल है जो कोई तुम्हारा बाल भी बाँका कर सके।

बाँग देना-सुबह मुर्गे का चिल्लाना। बाँग देते ही मै उठ पडा और आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर गाँव की ओर चल दिया।

बाँट पड़ना—हिस्से आना।

बाँबाँ करना—व्यर्थ बकना। तुम कुछ ठीक बात भी कहते हो, या वैसे ही बाँबाँ किया करते हो।

बाँदी का बेटा या जना—(१) दोगला। (२) तुच्छ। (३) अति आज्ञाकारी। वह तो मेरी बाँदी का बेटा है। मुँह से निकलते ही कर देगा।

बायें हाथ का खेल होना—अति सरल। ये तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है यों ही कर डालूँगा।

बाँस पर चढ़ना, चढ़ाना—(१) बदनाम होना, दुनिया के सामने बाँस पर चढे, कुल डुबोया। (२) बहुत बढ़ावा देना। (३) मिजाज़ बढाना, घमंडी कर देना।

बाँसा फिर जाना—नाक टेढ़ी होना (मरने का समीपी चिन्ह)।

बाँसों उछलना—(१) बहुत खुश होना। लौट आते ही बाँसों उछलने लगा। (२) ऊँची लहरें आना समुद्र बाँसों उछल रहा था।

बाँह की छाँह लेना—शरण में आना। वीर की बाँह की छाँह में कैसे इज्जत बिगडेगी ?

बाँह चढ़ाना—(१) सम्हल कर तैयार होना। बाँह चढा लो लड़ने आ रहा है। (२) करने को तैयार होना।

बाँह टूटना—सहायक न रहना। छोटे भाई के मरने से मेरी बाँह टूट गई।

बाँह देना—सहायता देना। कीन्ह सखा सुग्रीव कहँ दीन बाँह रघुवीर।

बाँह पकड़ना—(१) सहारा देना। बडे न बूड़न देत हैं जाकी पकड़ें बाँह। (२) विवाह करना। (३) मौका। राह पड़े जाने या बाँह पकडे जाने (क०)।

बाँह बुलन्द होना—(१) बलवान, साहसी होना। (२) उदार, दानी हाथ होना। उनकी बाँह बुलन्द थी हाजारों लाखों दिये।

बाँह बोल—रक्षा, सहायता का वादा।

बाई का झोंक—(१) क्रोध, आवेग। कभी कभी बाई का झोंक आ जाता है, बक देते हैं। (२) वायुप्रकोप।

बाई चढ़ना—(१) वायु-प्रकोप होना (२) घमंड आदि में व्यर्थ बातें करना।

बाई पचना—(१) वायु का प्रकोप शांत होना। (२) घमंड टूटना।

बाई पचाना—शेखी मिटाना।

बाकी रहना—शेष रहना। अब तो परिश्रम करलो, वार्षिक परीक्षा का केवल एक महीना ही बाकी रह गया है।

बाकी निकालना—छोड़ देना। जितनी रस्सी तुम्हें चाहिये इसमें से ले लो और बाकी निकाल दो।

बाग ढीली करना—पर्वाह छोड़ देना, ढील देना। जवान है, बाग ढीली की और बिगड़ा।

बाग लेना—किसी काम का ज़िम्मे लेना। कुछ दिनों से इन्होंने ही इस संस्था की बाग अपने हाथ में ले ली है।

बाग बाग होना—बहुत खुश होना। मुझे देख कर बाग बाग हो जाती हैं।

बाग मोड़ना—किसी ओर घुमाना। महमूद गज़नवी ने सेना की बाग हिन्द की ओर मोड़ी।

बाग हाथ से छूटना—अधिकार न रहना। मुँहजोर होते ही बाग हाथ से छूट गई।

बाछें खिल जाना—खुश होना। तुम बड़े सुन्दर हो जो किसी कुरूप मनुष्य को देख कर तुम्हारी बाछें खिल जाती हैं।

बाज आना—(१) तोबा करना। (२) खोना। हम १० से बाज आये। (३) दूर होना। बुरी संगत से बाज आओ।

बाज़ रखना—रोकना, मना करना। देखिबे ते अँखियान को बाज कै लाजिकै भाजिकै भीतर आई।

बाज रहना—दूर रहना। बाज़ रहो बदमाशियों से।

बाजार करना—खरीदने बेचने जाना। इतवार को मुरसान का बाज़ार करते हैं मगल को यहाँ का।

बाजार गर्म होना—(१) जोरों पर होना। सन् ३० में गिरफ़्तारी का बाजार गर्म था। (२) व्यापार, काम, खरीद बिक्री खूब होना।

बाजार गिरना-मंदा होना। आज कल अनाज का बाज़ार गिर रहा है।

बाजार तेज होना—(१) माँग बहुत होना (२) मूल्य बढ़ना। (३) काम खूब चलना।

बाजार दिखाना—बेचने ले जाना, बाजार तो दिखाते कोई तो लेने वाला मिलता ही।

बाज़ार बंद होना—तुम्हें क्या दिखाई देगा एक तरफ़ का बाज़ार तो तुम्हारा बंद है।

बाजार भाव लेना, पीटना—(१) चलते दामों लेना। (२) खूब पीटना।

बाजार मंदा होना—(१) माँग कम होना। (२) दाम घटना। (३) काम कम चलना।

बाजार में डंका पीटना—खुल्लम-खुल्ला कहना।

बाजार लगना—(१) बिकने को चीज़ रखी जाना। (२) बाज़ार में दुकान खुलना। ११ बजे बाजार लगे तब जाना।

बाज़ार लगाना—चीजों को इधर उधर सजाना।

बाजी खाना—हारना।

बाज़ी देना—बहकाना। उसे क्यों बाज़ी दे रहे हो, वह अब तुम्हारी चालाकियों मे नहीं आ सकता।

बाजी पलटना—हालत ठीक करना। उन्होंने अपना दोष स्वीकार करके बाजी पलट दी।

बाज़ी पाना—विजयी होना। कर्त्तव्य, और प्रेम में युद्ध छिड़ गया, अन्त में कर्त्तव्य ने बाजी पाई।

बाजी बदना, लगाना—शर्त

करना। पाँच रुपये की बाजी बदी थी कि कौन जल्दी पहुँचे।

बाजी मारना—जीतना, दाँव जीतना। दौड़ में बाजी मार ली।

बाजी ले जाना—आगे बढ़ जाना। झूठ बोलने में पिता से भी बाजी ले गया।

बाजू देना—सहायता करना। तुम उसके भाई हो, तुम्हीं इस समय उसे बाजू न दोगे तो और कौन देगा।

बाट करना—रास्ता खोलना।

बाट देखना—इन्तजार करना। बहुतेरी बाट देखी नहीं आये तो अकेला चला गया।

बाट पड़ना—(१) हरण होना, डाका पड़ना। (२) रास्ते में आ तग करना।

बाट पारना, मारना—रास्ते में लूटना।

बाट रोकना—बाधा देना।

बाट लगाना—(१) मार्ग दिखाना। (२) काम का ढग बताना। (३) मूर्ख बनाना। ऐसे ऐसे चालाकों को तो बाट लगा दूँ।

बाटलो चापना—रस्सा खींच तम्बू तानना।

बाढ़ आना—नदियों में बहुत पानी आना।

बाढ़ उड़ाना—कतार बाँध कर बन्दूकों के फैर करना।

बाढ़ दग्ना—लगातार तोप छूटना।

बाढ पर चढ़ना—(१) धार तेज होना। (२) तैयार हो जाना। मेरे शिकायत करते ही वह बाढ़ पर आ गया और उसे निकाल दिया। (३) धोखे में फँसना।

बाढ़ पर होना—उन्नति, तरक्की करना।

बाढ़ बाँधना खेत के चारों ओर काँटे लगाना। यदि तुम बाढ बाँध दो, तो फिर चौपाये तुम्हारा कैसे नुकसान कर सकेंगे।

बाढ़ रखना—धार रखना। चक्कू पर बाढ़ रख दो।

बात अंचल में बांध रखना—हमेशा याद रखना।

बात आइना होना—साफ साफ ज़ाहिर होना, समझना। उनकी बात मेरे दिल पर आइना हो गई कि जरूर यही था।

बात आई गई होना—रफ़ा दफ़ा होना, भूल जाना।

बात आना-(१) दे॰ बात उठना। (२) दोष लगना। मुझ पर बात आई तो इन्कार कर दूँगा।

बात उठना—प्रसंग, चर्चा होना। तुम्हें सभापति बनाने की बात उठी उन्होंने उड़ा दी।

बात उठाना—(१) न मानना। (२) मानना, मान रखना। (३)

कड़वी बातें सहना। बरसों बातें उठाईं और फल यह मिला। (४) चर्चा छेड़ना।

बात उड़ना—चर्चा फैलना। बात उड़ गई तो बुरा होगा।

बात उलटना—(१) जवाब देना। बड़ों की बात मत उलटो। (२) कहकर पलट जाना। विश्वास क्या बात उलट जाता है।

बात कहते—क्षण भर में, कहते ही। बात कहते ही कर डालो।

बात कहे की लाज होना—कहे को निभाना।

बात काटना—(१) खंडन, कहे के विरुद्ध कहना। (२) बीच में बोल उठना। बुरी आदत है उसे कह लेने दो बात मत काटो।

बात का धनी या पूरा होना—सत्य-प्रतिज्ञ, कह कर करने वाला।

बात कान पड़ना—सुनना। बात कान पड़ते ही फैल जायगी।

बात का बतंगड़ करना मामूली बात को बढ़ा देना। झटपट कह डालो तुमने बात का बतगड़ कर दिया।

बात का बतंगड़ बन जाना, बनाना—थोड़ी से बहुत बढ़ा देना बढ़ जाना।

बात । सिर पैर न होना—बेठिकाना, बेमौज़ू बात करना।

बात की तह तक पहुँचना—असली बात या प्रारम्भ तक जान लेना। मैं बात की तह तक पहुँच गया हूँ तभी बेफिक्र हूँ।

बात का हेटा—बे एतबार।

बात की बात में—तुरत क्षण भर में। बात की बात में कवेटा ढेर हो गया।

बात को पीना—चुभती हुई बात को सह लेना। मैं बड़े बूढ़ों की वजह से बात को पी गया नहीं तो मुँह तोड़ जवाब देता।

बात खटाई में पड़ना—दे० खटाई में पड़ना, झगड़े मे पड़ना।

बात खाली जाना—कहना व्यर्थ होना। स्त्री की बात खाली न जायगी, करनी पड़ेगी।

बात खुलना—छिपी बात जाहिर होना। अब बात खुली कि इसलिये कहा था।

बात खोना—(१) साख बिगड़ना, विश्वास उठना। (२) इज्जत गंवाना। रुपये दे दो बात मत खोओ।

बात गई गुजरी होना—भूली बिसरी होना। थोडे दिनों में बात गई गुजरी हो जायगी, सब भूल जावेंगे।

बात गढ़ना—झूठ कारण, प्रसंग, बात बना लेना। पूछा कि क्यों नहीं गये? झट बात गढ़ ली और सुना दी।

बात गाँठ या आँचल में बाँधना—कहे को याद रखना, न भूलना। मेरी बात आँचल मे बाँध लो—कभी भूल न जाना।

बात गोल कर जाना—साफ साफ न करना।

बात घुलना—बात झंझट में पड़ना या बहुत दिन लगना।

बात घूंट जाना—दे० बात पी जाना।

बात चबा जाना—कहते कहते रुक या बदल जाना। आपस में कुछ कह रहे थे मेरे पहुँचते ही बात चबा गये।

बात चलना, चलाना—ज़िक्र आना, छेड़ना। तुम्हारी बात ही नहीं चलाई पूछते क्या ?

बात छेड़ना—चर्चा करना। मैंने बात छेड़ी उन्होंने काट दी।

बात जमना—दिल में बैठ जाना।

बात टल जाना—भूली बिसरी होना।

बात जाती रहना—साख, इज्जत, वायदे का इतबार जाता रहना।

बात टलना—कहा व्यर्थ जाना। मेरी बात टल नहीं सकती है, जो कहूँगा होकर रहेगा।

बात टालना—(१) कहे की परवा न करना। (२) पूछी बात का जवाब न देना।

बात ठहरना, ठहर जाना—(१) मामला तै हो जाना। (२) ब्याह स्थिर होना।

बात डुबो देना—इज्जत गवाँ देना, उसने सारे घर की बात डुबो दी।

बात दर्पण होना—हाल साफ साफ जाहिर होना।

बात दब जाना—स्थगित होना, भूली या छोड़ी जाना।

बात दुलखना—बात दिल में खटकना।

बात दुहराना—(१) पूछी हुई बात फिर कहना। (२) उलट कर जवाब देना। बड़ों की बात दुहराते हो ?

बात न आना—मुँह से शब्द न निकलना। बहुत सीधा है बिचारे से बात नहीं आती।

बात न करना—घमंड से न बोलना। बात भी नहीं करते ऐसे लाट साहब बन गये हैं।

बात न पूछना—इज्जत स्वागत न करना। बुरे बदनाम की कौन बात पूछे ?

बात निकालना—बात चलाना।

बात नीचे न डालना—अपनी बात का खंडन होने न देना। हजार खर्च कर दूँगा पर बात नीचे न डालूँगा।

बात पकड़ना—(१) तर्क, हुज्जत करना। (२) कहने वाले की बातों का उलटा अर्थ कहना।

बात पक्की करना—(१) मामला

पूरी तरह तै करना। (२) वायदा कराना, उन्होंने पक्की बात कर दी कल दे देंगे।

बात पचना—दिल में रख छोड़ना। तुम्हें बात नहीं पचती, कह देते हो।

बात पड़ना—(१) प्रसंग आना (२) मौक़ा पड़ना।

बात पर जाना—(१) कहने का विश्वास करना। उसकी बात पर जाओगे तो धोखा खाओगे। (२) कहने का ख्याल करना।

बात पर बात आना—एक सिलसिले में दूसरा जिक्र आना। बात पर बात आ गई अतः कह दी।

बात पलटना—(१) कह कर बदल, मुकर जाना। (२) प्रश्न के शब्दों में ही जवाब देना।

बात पल्ले में बांधना—खूब याद रखना। उस दिन से बात पल्ले में बाँध ली अब कभी न दूँगा।

बात पाना या लेना—(१) छिपी बात, गूढार्थ जान लेना। (२) असल समझना।

बात पी जाना—दे० सुनी अन सुनी करना। (२) बुरी बात सह जाना। उस वक्त तो बात पी गया फिर बदला लिया।

बात पूछना—(१) क़द्र करना। (२) सुख दुख का ध्यान, खबर रखना। मै बीमार पड़ा था तो तुमने बात पूछी थी? जो सेवा करूँ।

बात फूटना—(१) मुँह से निकलना। (२) छिपी बात का फैलना।

बात फेंकना—ताने मारना, व्यंग्य छोड़ना। तुम्हारे बहाने हम पर बात फेंकी।

बात फेरना—(१) समर्थन करके बड़ी करना। (२) प्रसग उडाकर दूसरी बात छेड़ना। उन्हें क्यों सुनाते? उनके आते ही बात फेर ली।

बात बड़ी करना, होना—बात की इज्जत करना।

बात बढ़ना, बढ़ती चली जाना—विवाद, झगड़े रूप में हो जाना। पहिले यों ही कहा सुनी हो रही थी धीरे धीरे बात बढ़ गई।

बात बढ़ाना—(१) विवाद झगड़ा करना। क्यों बात बढाते हो फैसला कर लो। (२) किसी का समर्थन करना।

बात बदलना—मुकरना, बदलना।

बात बनना—(१) इज्जत होना। (२) काम ठीक हो जाना। लोग हँसी उड़ाते, तुम्हारे आने से बात बन गई। (३) साख रहना।

बात बन पड़ना—(१) कह सकना। (२) इज्जत मिलना। (३) मामला तै हो जाना।

बात बनाना, सँवारना—(१)

काम बनाना। वह तो सारा काम बिगाड़ चुका था तुमने आकर बात बना दी। (२) इज़्ज़त बनाना। (३) झूठी या बढ़ाकर कहना।

बात बना लेना—यश, मान पा लेना।

बात बहना—चर्चा फैल जाना।

बात बात में—(१) हर बात में। बात बात में झूठ बोलता है। (२) बार बार। (३) हर काम में। बात बात में बिगड़ उठते हो।

बात बात में मोती पिरोना—सखुन साज़ी करना, लफ़्फ़ाजी दिखाना।

बात बिगड़ना—(१) काम न बनना। तुम्हारे जाने से बात बिगड़ गई वरना दस्तख़त हो जाते। (२) मामला चौपट हो जाना। (३) इज़्ज़त जाना (४) हैसियत जाना।

बात बिगाड़ना—(१) काम बिगाड़ना। (२) इज़्ज़त गँवाना। (२) बदनाम करना।

बात मात करना—चाल न चलने देना, चाल में न आना, न फँसना।

बात मारना—(१) ताने मारना (२) डींग हाँकना। (३) और और कहना असली दबा जाना।

बात मुँह पर लाना—कह बैठना, चर्चा कर बैठना। ऐसी बात कभी मुँह पर भी न लाना।

बात में पख निकालना—एतराज़ करना।

बात में बात निकालना—कहने में गलती पकड़ना।

बात में फूल झड़ना—दिलचस्प होना, आप पसंद होना।

बात रखना—(१) हठ करना। अपनी ही बात रखोगे या मेरी भी मानोगे? (२) इज़्ज़त रखना। (३) कहे अनुसार करना। कहा है तो खचेंगे बात जो रखनी है।

बात रखना—(१) किसी की कहना मानना। (२) मन की सी कर देना। (३) किसी पर दोष लगाना।

बात रख लेना—बिगड़ने न देना।

बात रह जाना—(१) मान रह जाना। (२) याद रह जाना। (३) प्रार्थना स्वीकार होना।

बात बनाना—(१) व्यर्थ की, झूठ मूठ की बातें करना। (२) बहाना करना। क्यों बातें बनाते हो वह तो वहीं था। (३) खुशामद करना। कितनी बातें बनाई तब खुश हुए। (४) डींग हाँकना।

बात मिलाना—(१) बातें बनाना। (२) हाँ में हाँ मिलाना, सुहाती बातें करना।

बात लगना—ब्याह आदि का प्रस्ताव होना।

बात लगाना—(१) निंदा, किसी के विरुद्ध कहना। उसने मालिक

से जाकर बात लगाई कि मैने तोड़ा । (२) ब्याह ठीक करना ।

बात लाना—विवाह का प्रस्ताव लाना । नाई बात लाया है, ब्याह करोगे ?

बात हलकी, हेटी होना—विश्वास, इज़्ज़त पसदगी न होना ।

बात हाँकना—बढ़ बढ़ कर बाते करना । मुझे अच्छी तरह मालूम है कि जितनी वह बात हाँकता है, उतना उसके पास रुपया नही है ।

बात हारना—वायदा कर देना । उनसे बात हार दी वरना तुम्हे दे देता ।

बात है—सच नहीं, कहने भर को है ।

बातें छाँटना, बातें बघारना—(१) शेखी जताना, शेखी मारना । क्यों बाते छाँटते हो क्या हम तुम्हारी हालत नही जानते ? (२) व्यर्थ बोलना ।

बातें सुनाना—ऊँच नीच, भली-बुरी, कड़वी बाते कहना ।

बातों आना—दे० बातों में आना ।

बातों का तार बाँधना—बके जाना, कहे जाना ।

बातों का धनी—कहने को खूब करने को कुछ नहीं ।

बातों की झड़ी बाँधना—लगातार, बात पर बात कहते जाना । कितने ही किस्से याद हैं, बातों की झड़ी बाँध देते हैं ।

बातों पर जाना-बातों बातो में-बात चीत करते हुए । बातों बातों मे वह सब कुछ कह गया ।

बातों में आना—धोके मे फँस जाना । और आती है ऐसी घातों में, मै न आऊँगी तेरी बातों में ।

बातो में उड़ाना—(१) हँसी में टालना । (२) टालमटूल देना ।

बातो में धर लेना—किसी की बातों से ही उसे फँसा लेना । अदालत में ज्यादा कहोगे तो वकील बातों मे धर लेगा ।

बातो में फुसलाना—सिर्फ बातों से संतुष्ट करना ।

बातों में लगाना—बात चीत में किसी का ध्यान लगाये रखना ।

बातो में बहलाना, फुसलाना—केवल बातों से सतुष्ट करना । लिख कर दो, बातों मे मत बहलाओ ।

बाद बढ़ाना—झगड़ा बढ़ाना ।

बाद मेलना—शर्त, बाजी, बदला, लगाना । बाद मेलि कै खेल पसारा ।

बादल उठना, चढ़ना—किसी दिशा से बादल आना । दक्षिण से बादल उठा है वर्षा होगी ।

बादल घिरना, छाना—घटा घिर आना । सारे आकाश में बादल छा गए हैं ।

[६७५८]

बादल गरजना—बादलों से कड़कड़ाहट, घनघोर निकलना। जो बादल गरजते हैं बरसते नहीं।

बादल छँटना, फटना—बादल टुकड़े टुकड़े होना।

बादलों से बातें करना—बहुत ऊँचे उठना। पतंग तो बादलों से बातें कर रही है।

बाधा डालना, देना—विघ्न, रुकावट खड़ी करना। बने बनाये काम में बाधा मत डालो।

बाधा पड़ना, पहुँचना—रोक, हानि होना। तुम्हारे मना कर देने से बड़ी बाधा पहुँची।

बाना (मुँह किसी वस्तु के लिये)—लेना चाहना। क्यों मुँह बाते हो तुम्हें न मिलेगा।

बाना निकलना—बात निकलना।

बानी बोलना—ताना मारना।

बानी मानना—(१) मनौती मानना। (२) प्रतिज्ञा करना।

बाप का—पुरखाओं का। तुम्हारे क्या बाप का माल है जो न बिगाड़ो कहते हो ?

बाप तक (पहुँच) जाना—बाप की गाली देना या अशक्यता दिखाना। तू क्या तेरा बाप नहीं कर सकता। अजी! बाप दादा तक क्यों पहुँचते हो ?

बाप दादा—पुरखा।

बाप बनाना—(१) आदर करना। (२) खुशामद करना। बड़ा मतलबी है वह गधे को बाप बना ले।

बाप दादा का नाम डुबोना—खान्दानी इज्ज़त को खोना।

बाप माँ—रक्षक। मेरे तो बाप माँ आप ही हैं।

बाप रे—दुख या आश्चर्य सूचक वाक्य। बाप रे! यह क्या हुआ।

बायँ देना—(१) बचा जाना। (२) ध्यान न देना। (३) फेरा देना। चौंसठ कूआ बायँ दिवावे, तो भी निन्दक नरकहि जावे।

बायन देना—छेड़ छाड़ करना। भले भवन अब बायन दीन्हा पावहुगे फल आपन कीन्हा।

बायाँ देना—(१) कतरा, बचा जाना। रास्ते में मिले तो बायाँ दे जाना। (२) जान कर छोडना। बायों दियो विभव कुरुपति को।

बायाँ पाँव पूजना—धाक, हार मानना। तुम्हारा बायाँ पाँव पूजे तुम जीते हम हारे।

बायें हाथ का काम, खेल—अति सरल काम यह तो मेरे बायें हाथ का खेल है यों ही कर डालूँगा

बायें होना—नाखुश या विरुद्ध होना। बुरे दिनों में सब बाये हो जाते हैं।

बार करना—जहाज़ से बोझ उतारना (जहाज़ी)।

बारनिश करना—रोगन, चमक चढ़ाना।

बारबार—फिर फिर, पुनः पुनः। बारबार बूझैं तुम कौन होजू!

बार लगाना—देर लगाना। बड़ी बार लगी कहाँ रह गये थे?

बारह पत्थर बाहर करना—सीमा से निकालना।

बारह पानी का—बारह बरस का सूअर

बारह बच्चे वाली—सूअरी।

बारह बाट करना, घालना—तितर बितर करना।

बारह बाट जाना, होना—(१) अलग अलग होना। फूट पडते ही सारा घर (घर के आदमी) बारह बाट हो गया। (२) नष्ट भ्रष्ट होना।

बारात उठना—बारात चल देना। नौ बजे बरात उठेगी।

बारीकी निकालना—सूक्ष्म, हर कोई न समझ या देख सके ऐसी बात खोजना।

बारी बाँधना—आगे पीछे वक्त नियत करना। बारी बाँध लो एक दिन मै एक दिन तू।

बारी बारी से—क्रम से, आगे पीछे। बारी से आओ एक साथ नहीं।

बारी रहो—किनारे चलो (पा० क०)।

बारूद गोली—(१) लड़ाई का सामान। (२) तैयारी, सामग्री। गोली बारूद तैयार कर लूँ फिर मुकदमा लड़ाऊँगा।

बारे तें—(१) बचपन से। (२) जलाने से।

बाल आना, होना—(१) बाल उगना। (२) बच्चा होना। (३) लकीर पड़ना, टूटने का असर होना।

बाल का कम्बल बनाना—छोटी सी बात को बड़ी करना। तुम से इसीलिये कोई बात नहीं कहता कि तुम बालका कम्बल बना देते हो।

बाल की खाल खींचना—सूक्ष्म भेद निकालना। तुम भी ऐसा तर्क करते हो कि बाल की खाल खींच लेते हो।

बाल खिचड़ी होना—बुढ़ापे का निशानी। उसके सिर और दाढ़ी के बाल खिचड़ी हो चुके थे।

बाल धूप मे सफेद होना—बूढ़ा होकर भी तजुरबेकार न होना। जाओ भी तुम्हारे बाल भी धूप में ही सफेद हुए, ये भी नहीं समझ सकते?

बाल न खिसना (नहाते)—कष्ट न होना। नित उठि यहै मनावत देवन न्हात खसै जनि बार।

बाल पकना—अनुभव प्राप्त होना। इसी महकमे मे रहते हुये बाल

पकाये तो क्या इतना भी न जानेगी।

बाल पकाना (किसी काम में)—बुड्ढा होना, खूब अनुभवी होना। वे इस काम की रग रग जानते हैं, उन्होंने इसी में बाल पकाये हैं।

बाल बनाना—बाल सँवारना। वेश्याएं रास्तागीरों को लुभाने के लिये तरह तरह के बाल बनाकर कोठों पर बैठती हैं।

बाल बराबर लंबी न रखना—कोई कोर कसर न करना।

बाल बराबर न समझना—तुच्छ, कुछ भी न परवा करना।

बाल बाँका न होना—कुछ न बिगड़ना। उससे मेरा बाल भी बाँका नहीं हो सकता।

बाल बाँधा निशाना उड़ाना—ठीक निशाना लगाना। बाल बाँधा निशाना था, वह बात ऐसी चुभती थी कि कहते ही उसने दे दिये।

बाल बाल बचना—थोड़ी कसर रहना। उन्होंने जो गोली मारी, मैं बाल बाल बचा।

बाल लेना—बाल नोचना सिर मूँडना।

बाला बाला—(१) बचा ही। (२) ऊपर ही ऊपर। तुमने हम से कहे बिना बाला बाला अर्जी भेज दी। (३) बाहर बाहर। तुम बाला ही बाला चले गये मेरे यहाँ न आये। (४) ऐसे कि किसी को पात न लगे।

बाला भोला—बहुत सीधा।

बालू की भीत—शीघ्र नष्ट होने वाली, बे भरोसे। ओछे जन की प्रीति अरु बालू की भीत बिनसत बार न ला गई।

बावन गज का—चालाक, बद-माश। लंका में सब बावन गज के, लो ये भी यही माँगते आये।

बावन तोले पाव रत्ती—बिल्कुल ठीक। आपकी हरेक बात बावन तोले ·।

बाय भड़कना—बकना, सौदाई हो जाना।

बाय रखना, सरना—याद आना।

बावन बीर—बहुत वीर या चतुर।

बासी कढ़ी में उबाल आना—(१) बुढापे में जवानी की उमंग। (२) असमर्थ में समर्थता। (३) समय जाने पर इच्छा।

बासी मुँह—(१ सवेरे सवेरे बिना खाये। बासी मुँह दवा पियो।

बाहर आना, होना — सामने आना, प्रकट होना।

बाहर करना—दूर करना, हटाना।

बाहर का—पराया बेगाना।

बाहर बाहर—अलग अलग, ऊपर ऊपर, बिना मिले। यहाँ आये पर बाहर बाहर चले गये।

बिकना (किसी के हाथ)—गुलाम होना। नौकरी की है बिके नहीं जो २४ घंटे करे।

बिखरना—हठ करना, नाराज होना। वह इतनी बात पर बिखरने लगीं!

बिगड़ बैठना—लड़ने लगना, रूठना।

बिगाड़ होना—नुकसान होना। तुम्हारा क्या बिगाड़ हुआ जो नाराज़ होते हो!

बिजना डुलाना—पंखा करना। नाई से कह दो कि बाहर बैठे अतिथियों पर बिजना डुलावे।

बिजली कड़कना—बिजली कड़के मेहा बरसे।

बिजली गिरना, पड़ना—कुटी में बिजली पड़ी वह मर गये।

बिध मिलाना—जमा खर्च या जन्मपत्री मिलाना। २) का फर्क है बिध नहीं मिलती।

बिदा लेना—जाने की आज्ञा लेना। अभिमन्यु अपनी माता से बिदा लेकर चक्रव्यूह तोड़ने के लिये चल दिया।

बिन दामों का गुलाम होना—आभारी होना। आपने जो मेरे साथ उपकार किया है, उसके लिये मैं आप का बिन दामों का गुलाम हूँ।

बिपद् का खुल खेलना—खूब विपत्ति आना।

बिरवाही करना—हदबन्दी करना, काँटे आदि से अन्वेष्टित करना तुमने जो नये पौधे लगाये हैं उन्हें बिरवाही कर दो नहीं तो कोई जानवर खा जायगा।

बिरादरी से खारिज, बाहर होना—जात बाहर होना। अछूत के घर खाओगे बिरादरी बाहर होगे।

बिलग मानना—अप्रसन्न होना। जिसमें तुम्हारे पिता जी बिलग मानते हैं, फिर ऐसा काम क्यों करते हो।

बिल ढूँढ़ते फिरना—बचने का मौक़ा ढूँढ़ना। अगर उससे लड़े तो थोड़ी देर में बिल…।

बिस्तर लगाना—रात काटने के लिये कहीं लेटना। आज यहीं बिस्तर लगा लो कल तो अपने घर पहुँच ही जायँगे।

बीच (बिचाव) करना—(१) झगड़ा मिटाना। (२) लड़ने से रोकना। गुत्थम गुत्था हो रही थी मैंने बीच किया।

बीच खेत—(१) सब के सामने खुले मैदान। (२) अवश्य ही।

बीच बीच में—कभी कभी, थोड़ी थोड़ी देर या दूरी पर।

बीच पड़ना—(१) मध्यस्थ होना।

[६८४५]

बुरे के बीच पड़े गालियें खाईं।
(२) बदलना। परै न प्रकृतिहि बीच कोटि जतन चाहे करे।

बीच पारना, डालना—(१) भेद करना। (२) बदलना।

बीच में कूदना, पड़ना—(१) पंच बनना। (२) जिम्मेदार बनना। बीच में कूदोगे तो घाटा भरना पड़ेगा।

बीच में देना, बीच देना—(१) मध्यस्थ बनाना (२) साक्षी बनाना।

बीच रखना—भेद, छिपाव करना। क्यों साहब! जिगरी दोस्तों से भी बीच रखते हो? नहीं बताओगे?

बीच में रख कर कहना—शपथ खाना। कुरान बीच में रख कर कहो।

बीछी चढ़ना—बीछू का जहर सा चढ़ना। राम गमन सुनि बीछी चढ़ गई।

बुझाना जहर में—शस्त्रों को जहरीला बनाना। तुम्हारी तो बातें भी जहर में बुझी हैं।

बीड़ा उठाना—दे० पान उठाना।

बीड़ा देना—दे० पान देना।

बीस बिस्वे— अधिक निश्चित, सम्भवत। बीस बिस्वे तो कल ही मिल लूँगा।

बुकटा भरना—नौचना (स्त्री) निगोड़ी ने ऐसा बुकटा भरा कि मेरी छाती में अबतक दर्द है।

बुखार निकालना—दे० जी का बुखार निकालना।

बुड्भस लगना—बुढ़ापे में मसखरी सूझना (स्त्री)।

बुद्धि—बुद्धि के मुहावरे 'अक्ल' में देखो।

बुरा फँसना—विपत्ति में पड़ना।

बुरा मानना—वैर रखना, खार खाना।

बुरा हाल होना — मरणासन्न होना। वह तो शायद ही बच सके, अब उसका बुरा हाल है।

बूँटा सा कद—ठिंगनी (स्त्री)।

बूड मरना—पानी में डूब कर मर जाना। इस नदी में हर साल कितने ही आदमी बूड़ मरते हैं।

बूँद भर—ज़रा सा।

बूँदें गिरना, पड़ना—थोड़ी वर्षा होना।

बूर का लड्डू—देखने में अच्छा, बड़ा पर बे काम।

बेंत की तरह काँपना—थर थर काँपना। लड़का आपको देखते ही बेंत की तरह काँप जाता है।

बेईमानी करना— धोखा देना। तुम उनसे व्यौहार मत करना, वे हर एक के साथ बेईमानी कर लेते हैं।

बेगार टालना—बिना मन लगाये

काम (ठीक न) करना। बनाया है या बेगार टाली है ?

बेच खाना—खो देना। शर्म तो बेच खाई है, बड़ा बेशर्म है।

बे चिराग करना—घर उजाड़ना। बेचिराग कर दूँगा बैर मत बाँधो।

बेटा बनाना—गोद लेना। मुझे अपना बेटा बनालो देखो कैसी सेवा करूँ।

बेटी रोटी करना—विवाह सबन्ध करना।

बेटे वाला—वर का पिता।

बेड़ा उठाना—कष्ट कर काम कन्धे लेना। सारे गाँव को रोटी देने का बेड़ा उठाया है।

बेड़ा डूबना—दुख में पड़ नाश होना। पापी का बेड़ा मझधार में डूबे।

बेड़ा पार करना, लगाना—संकट से छुड़ाना, सहायता कर के काम पूरा करना। प्रभुजी बेड़ा पार लगाओ।

बेड़ा पार होना—सकट, कष्ट से छूटना। यह काम हो जाय तो बेड़ा पार होगया समझो।

बेड़ा बाँधना—लोग इकट्ठे करना।

बेड़ी कटना—बन्धन मुक्त होना। यदि तुम कुछ रुपये दे दो तब तो तुम्हारी बेड़ी कट सकती है।

बेतुकी हाँकना—दे० बेसिर पैर की बात।

बे ते करना—अबे तबे बोलना।

बेनुक़त सुनाना—गाली देना, खरी खरी सुनाना। मैंने साले को बेनुक़त सुनाई।

बेदम होना—थक जाना। मै उस समय हाँपते हाँपते बेदम हो रहा था।

बेपर की उड़ाना—झूठी या बेढगी बाते फैलाना, कहना। बेपर की उड़ाते हो, ऐसा भी कही हो सकता है।

बे पेंदा का लोटा—बहकावे में आजाने वाला। उसमें गाँठ की अक्ल नहीं बे पेंदी के लोटा है चाहे जिधर लुढ़क जाता है।

बे भाव की पड़ना—बहुत फटकार या मार पड़ना। यहाँ से तो ऐंठते गये पर वहाँ बेभाव की पड़ी।

बेरुख होना—प्रेम न करना।

बेल बढ़ना—वश बढ़ना। एक से बेल बढ़ी आज उसी कुटुम्ब में बीस हैं।

बेल मँढे चढ़ना—अत ठीक ठीक होना।

बे लगाम होना—अनुचित भी कह देना। वे लगाम है सबके सामने भी कह देता है।

बे सिर पैर की बात करना—बेढगी। बेसिर पैर की कहते हो भला कहाँ दिल्ली कहाँ बम्बई।

बेहयाई का जामा, बुरका पहनना, ओढना—बेशर्म होना। [६८६२]

बैकुण्ठ वासी होना—मर जाना। अभी चिट्ठी मिली है कि गाँव में हमारे बाबा बैकुण्ठ वासी हो गये हैं।

बैठ रहना—(१) देर लगाना। बाजार जाकर ही बैठ रहे। (२) निराश होना। (३) नौकरी छोड़ना। दो दिन तो आये फिर बैठ रहे।

बैठते उठते—सदा, हर दम। बैठते उठते वही रट लगी रहे।

बैठना उठना—(१) संग में समय बिताना। (२) संग रहना, मेल होना। उसके यहाँ मेरा बैठना उठना है मै कह दूँगा।

बैठे बिठाये—(१) व्यर्थ अकारण। (२) अचानक, एकाएक। बैठे बिठाये इस आफत में पड़ गये।

बैठे बैठे—(१) बेकार, बेमतलब। (२) अचानक। बैठे बैठे क्या सूझी कि बम्बई चल दिये। (३) अकारण।

बैठे बैठे सूखना—सुख मिलते दुर्बल होना।

बैठे रहना—काम न करना।

बैठे रहो—(१) चुप रहो। बैठे रहो तुम्हें क्या मतलब। (२) अलग रहो।

बैर करना—ईर्ष्या रखना। ये दोनों खास भाई हैं, किन्तु आपस मे बड़ा बैर करते हैं।

बैर काढना, निकालना—बदला लेना।

बैर ठानना—शत्रुता करना। मेरे से बैर ठानोगे तो पिस मरोगे।

बैर डालना—दुश्मनी पैदा करना।

बैर पड़ना—दुख देना। मेरे बैर क्यों पड़े हो मैने क्या बिगाड़ा है?

बैर बढ़ाना—शत्रुता के काम करना। कई काम करके और बैर बढ़ा लिया है।

बैर बिसाहना, मोल लेना—बैरी पन पैदा करना। मेरी बुराई करके व्यर्थ बैर बिसाहा।

बैर मानना—दुश्मनी रखना।

बैर लेना—बदला लेना। लैहों बैर-पिता तेरे को जैहो कहाँ पराई।

बैल की तरह कमाना—कठिन परिश्रम से कमाना। मैने यह रुपया बैल की तरह कमाया है इसे पानी की तरह खर्च न करो।

बैस चढना—जवानी आना।

बोझ उठना, उठाना—भारी काम सिर पर लेना। मैने गृहस्थी का बोझ उठा रखा है।

बोझ उतरना—कठिन पूरा होना।

बोझ उतारना—(१) दे० बेगार टालना। (२) खटका मिटाना। सब रुपया जमा करके दावे का बोझ उतार दो। (३) कठिन काम से छुटकारा देना।

बोझ होना—(१) आफत होना।

(२) कठिन होना। लड़की के ब्याह का बोझ है।

बोटी बोटी काटना—टुकड़े टुकड़े करना।

बोटी बोटी फड़कना—अति चंचल तथा शरारती होना।

बोतल चढ़ाना — शराब पीना। दो बोतल चढ़ा गया पर नशा न हुआ।

बोतल पर बोतल चढ़ाना—बहुत मद्य पीना। बेहेश होते ही बोतल पर बोतल चढ़ाई!

बोरिया बधना उठाना— चल देना।

बोरी बाँधना—चल देना। महाराज यहाँ से बोरी बाँधो।

बोल उठना — एकाएक कहने लगना। बीच में क्यों बोल उठे?

बोल जाना—(१) हार मान लेना। इतनी दौड़ में बोल गये? (२) दिवाला होना। (३) सिटपिटा जाना। (४) पुराना होना। यह जूता चार महीने ही मे बोल गया। (५) बाकी न रहना। मिठाई बोल गई और मँगाओ। (६) मर जाना (अशिष्ट)।

बोलती मारी जाना—मुख से शब्द न निकलना।

बोल-बाला रहना, **बोल बाला होना** } (१) सम्मान और आदर होना। वह जब तक जिये उनका बोल बाल ही रहा। (२) प्रसिद्धि होना। (३) बात की साख होना। अभी तो बोल बाल है किसी से लाख मँगा लूँ।

बोल मारना—ताना देना। बुरे दिनों में तुम भी बोल मारो, हँसी उड़ाओ!

बोलि पठाना—बुला भेजना। भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी।

बोली कसना, छोड़ना, बोलना, मारना—ताना, व्यंग्य, उपहास कसने लगे!

बोहनी होना—पहले पहल बिक्री होना। आज तुम्हारे हाथ की बोहनी हुई है देखे दिन भर कैसी बिक्री होती है।

बोह लेना—गोता लगाना।

बौछार करना—खूब रुपया खर्च करना। घर के लखपती हैं, इसीसे तो बेटे के ब्याह में बौछार कर रहे हैं।

ब्याजू लेना—सूद के वायदे पर क़र्ज़ लेना। बड़ी खास जरूरत थी, रुपया कहीं उधार न मिला अन्त में ब्याजू लिया है।

ब्याह पीछे बरात—अवसर पीछे काम।

ब्याह रचना — विवाहोत्सव मनाना। वह कहते थे कि अबकी साल में अवश्य लड़की का ब्याह रचा जायगा।

ब्याह लाना—पति को घर लाना। जब राम सीता को ब्याह लाये तो अयोध्या में घर घर मंगल चार होने लगा।

ब्योंत खाना, फैलना—(१) पूरा हिसाब किताब बैठना। (२) ठीक ठीक व्यवस्था इन्तज़ाम बैठना।

ब्योंत बखानना—बहाना करना। लोगन बूझत ब्योंत बखानो।

ब्योंत बाँधना—आयोजन करना। १००) का तो ब्योंत बाँध लिया। ५०) की कसर है।

ब्रह्म लगना—ब्राह्मण प्रेत चढना।

ब्रह्मांड चटकना—(१) खोपड़ी फटना। (२) अधिक गरमी या ताप से सिर में पीड़ा होना।

ब्रह्मा बनना—बनाने वाला या आदि कर्ता बनना। हर काम के ब्रह्मा बन बैठते हो।

भ

भंग के भाड़े में जाना—व्यर्थ मे जाना। कूँडी सोटा भंग के भाड़े में गया।

भंग छानना—भाँग की पत्ती पीस पीना।

भँटा सा उड़ा देना—एक ही मार में दो टुकड़े कर देना। उसने ऐसा तलवार का हाथ मारा कि सर भँटा सा उड़ा दिया।

भंड होना—बरबाद होना। यदि अब की बार तुम्हारे घर की मरम्मत न हुई तो बरसात में भड हो जायगा।

भंडा फूटना—पोल, भेद खुलना।

भंडा फोड़ना—दे० पोल खोलना।

भँवर में पड़ना—(१) आपत्ति चक्कर में फँसना। (२) घबरा जाना। ऐसे भँवर में पड़े हैं कि बचने का रास्ता ही नहीं मिलता।

भगत बाज—(१) लौंडे नचाने वाला। (२) लौंडों का स्वाँग बनाने वाला।

भगल गाँठना, निकालना—षड्यत्र रचना।

भटका फिरना—खोज में मारे मारे फिरना।

भट्टी दहकना—खूब आय होना (व्यंग्य)।

भद्र होना—सिर मूँछ मुँड़ना।

भद्रा उतरना—हानि होना।

भद्रा लगाना—बाधा पैदा करना।

भनक पड़ना—हमारे कान मे भनक पड़ गई थी कि तुम जाओगे।

भब्भड़ पड़ना—भगदड़ मचना। राजा को मरते ही फौज़ में भब्भड़ पड़ गया और किला मुसलमानों के हाथ लगा।

भभकी देना—घुड़की देना, रौब दिखाना।

भभकी में आना—रौब मे डर कर [६६६२]

आना।। मैं तुम्हारी भभकी में आने वाला नहीं।

भभूका बनना, होना—क्रोधित होना। सुनते ही वह तो आग भभूका बन गये।

भभूके उठना—लपटें उठना।

भय खाना—डरना।

भरती करना—जोड़ना, मिलाना।

भरती का—रद्दी, स्थान पूरा करने को रखा जाय। लेख में एक शब्द भरती का न हो।

भर नज़र देखना—अच्छी तरह देखना।

भर नींद सोना—निश्चित होकर सोना। हम तो ऐसे झंझटों में फँसे हुये हैं कि भर नींद भी नहीं सोने पाते।

भर पाना—मिल जाना। मैंने सारे रुपये भर पाये की रसीद लिखदी।

भरम खुलना—भेद खुलना।

भरम खोना—विश्वास खोना। वह जानता है मैं लखपती हूँ और मैं उसका भरम नहीं खोना चाहता।

भरम गँवाना—भेद खोलना या विश्वास तोड़ना। घर का भरम तो सब के सामने नहीं गँवाया जाता।

भरम बिगाड़ना— दे० भंडा फोड़ना।

भरमार कर देना — अधिकता करना। जरूरत पर रुपयों की भरमार कर दी।

भरा पूरा—(१) सुखी, संपन्न। (२) त्रुटि रहित, पूर्ण।

भरे बैठे हैं—तैयार हैं।

भर्ती करना—इकट्ठा करना। ये मेरे चार मैले कपड़े हैं, इन्हें भी धोबी के कपड़ों में भर्त्ती कर दो।

भला करना—लाभ पहुँचाना।

भले ही—चाहे, ऐसा हुआ करे। भले ही वे जान से मार दें मैं न कहूँगा।

भस्म होना—जल जाना। अभी इस गाँव में आग लग गई थी, जिससे कई घर जल कर भस्म हो गये।

भाँग खा जाना, पी जाना—नशे, पागलपन, नासमझी की बातें करना।

भाँग न होना (घर में भूँजी)—अति दरिद्र होना।

भाँजी मारना—चुगली, शिकायत करना।

भांडा फूट जाना—भेद खुल जाना।

भाँड़े भरना—पछताना।

भाँड़े में जी होना—दिल लगा होना।

भाग खड़ा होना—दे० पाँव उखड़ जाना।

भाग्य के मुहावरों के लिये 'किस्मत' के मुहावरे देखो—

भाड़ झोंकना— फिजूल समय गँवाना, तुच्छ काम करना। बारह बरस दिल्ली में रहे बस भाड़ झोंका, अक़्ल न आयी।

भाड़ में जाय—न रहे, जाता रहे मुझे क्या।

भाड़ में झोंकना—(१) जलाना। (२) फेंकना। (३) त्यागना। भाड़ में झोंको हम क्या करेंगे इसका ?

भाड़े का टट्टू थोड़े दिन तक का। तुम भाड़े के टट्टू तो हो नहीं जो जल्दी जाने की सोची, स्वतंत्र हो।

भाड़े पड़ना—हवा की ओर नाव चलाना।

भाड़े फेरना—हवा के रुख नाव फेरना।

भाप भरना—चिड़िये बच्चों के मुँह में भाप भरती हैं।

भाप लेना— बफारा लेना पानी की गर्मी से अग सेकना। दो दिन भाप लोगे तो दर्द न रहेगा।

भार उठाना, उतरना, उतारना—दे० बोझ उठाना आदि।

भारी पैर होना—गर्भ होना।

भारी भरकम— बड़ा, भारी मूल्य वान। कोई भारी भरकम ही खरीदने वाला हो जब भारी भरकम चीज़ खरीदे।

भारी रहना—(१) नाव रोकना (मल्लाह)। (२) धीरे धीरे चलना (कहार)। (३) चुप रहना (दलाल)।

भारी होना—कठिन होना। बहुत भारी बात है समझ कर करना।

भारी (पेट, सिर, गला) होना—पेट में अपच, सिर में दर्द और गला भर्राया हुआ होना।

भाव उतरना, गिरना—दाम घटना।

भाव चढ़ना—तेज़ी होना।

भाव ताड़ना—(१) दिल की समझना। (२) भविष्य की तेजी मदी सोचना।

भाव देना—(१) मन के भाव प्रकट करना। (२) कविता की सामग्री देना। (३) तेजी मंदी लिख देना।

भाव बताना—काम न करके सिर्फ नखरा जाहिर करना।

भाव बहना—एकसा भाव होना, तेजी या मंदा होता चला आना।

भावें न होना—परवा न होना। यहाँ घर लुट रहा है उसके भावे नहीं है।

भावों को ताड़ना—मतलब समझना। मैं तो उसी समय भावों को ताड़ गया था जब उसने कमरे में पैर रक्खा।

भिड़ के छत्ते का छेड़ना—भयंकर से बैर बाँधना।

भिनकना मक्खियाँ—(१) अति गंदा होना। उसके घर मक्खियें भिनकती हैं। (२) अति असमर्थ हो जाना।

भीगी बिल्ली होना—दब जाना, चुप होना। मतलब निकलते वक्त तो बिलकुल भीगी बिल्ली बन जाता है।

भीड़ चीरना—भीड़ इधर उधर हटा कर मार्ग बनाना।

भीड़ छँटना—बहुत अधिक आदमी न रहना।

भीड़ पड़ना—(१) जल्दी होना। ऐसी क्या भीड़ पड़ी है कल कर लेना (२) आफत आना। ऐसी क्या भीड़ है जो अभी चले।

भीत के बिना चित्र बनाना—बे सिर पैर, अप्रमाण की बात।

भीत में दौड़ना—असंभव, सामर्थ से बाहर करना। 'नाह दिवाल की राह न धावो'।

भीतर का कूँवा—अच्छा, उपयोगी पर निरर्थक। सूरदास प्रभु बिन, जोबन घर भीतर को कूप।

भीतर बैठ कर देखना—असलियत पहचानना। सब तो रईस बताते हैं पर मैंने तो भीतर बैठ कर देखा है वह कितना रईस है।

भीतर ही भीतर—मन ही मन हृदय में। भीतर ही भीतर सब मुझसे कुढ़ते हैं।

भीम के हाथी—जाकर न लौटने वाले। अब मन भयो भीम के हाथी सुपने अगम अपार।

भुगत लेना—निपट लेना। आप दे दो उनसे तो मै भुगत लूँगा।

भुज में भरना—आलिंगन करना। पिय भुजभरि अब कंठ लगाऊँ।

भुजा उठाना—प्रतिज्ञा करना। मैं भुजा उठाकर कहता हूँ कि मरते दम तक साथ दूँगा।

भुट्टासा उड़ाना—किसी चीज़ को साफ़ काट डालना। उनकी तलवार ने सैकड़ों के सिर भुट्टे से उड़ा दिये।

भुन भुन करना—कुढ़ कर बुडबुडाना।

भुरकुस निकलना—(१) चूर चूर होना। (२) पिटने मे हड्डी हड्डी चूर चूर होना। (३) नष्ट होना।

भुरकुस निकालना—(१) चूर चूर करना। (२) नष्ट करना। (३) किसी काम का न छोड़ना।

भुरता कर देना—कुचल, दबा कर चूर चूर करना। मारते मारते भुरता कर दूँगा।

भुस भरवाना—अत्यन्त कठिन दण्ड देना। यदि तूने अब झूठ बोला, तो खाल काढ़ कर भुस भरवा दूँगा।

भुस के मोल मलीदा होना—बेकद्री होना।

भूख मरना—बिना खाये भूख न रहना। बारह बजे तक भी खाना न मिले तो मेरी भूख मर जाती है।

भूख लगना—खाने की इच्छा होना।

भूखा रहना—कुछ न खाना। भूखा रह कर काम करता रहा।

भूखे प्यासे—बिना खाये पिए। महिनों भूखे प्यासे बिताए आखिर मर गया।

भूखों मरना—दुख मे भोजन न मिलने का कष्ट उठाना।

भूत उतारना—ऐंठ, हठ (पीटकर) दूर कर देना। कहो तो अभी तुम्हारा भूत उतार दूँ?

भूत चढ़ना—(१) धन, हठ होना। तुम्हें तो भूत चढ़ता है फिर किसी की भी तो नही सुनते। (२) बहुत क्रोध आना।

भूत बनना—(१) काम मे डूबना, लगना। दिन भर भूत बना रहता हूँ रात को तो आनन्द करूँ? (२) नशे मे चूर होना। (२) क्रोध में आना। जब वह भूत बनते हैं तो सब चीज़ फेंक देते हैं।

भूत बनकर लगना—पीछा ही न छोड़ना। भूत बन कर पीछे लगा है एक पल चैन नहीं लेने देता।

भूत सिर पर सवार होना—दे० भूत चढ़ना।

भूनी भांग न होना—कुछ न होना। इन मियाँओं के घर में भूनी भाँग नहीं होती।

भूमि होना—पृथ्वी पर गिरना। वीर मूर्छि तब भूमि भयो जू।

भूर बाँटना—ग़रीबों को दान दक्षिणा देना। उस राना के यहाँ प्रति दिन सवेरे भूर बाँटा जाता था।

भूल के आना—गलती से आना। भूल के यहाँ आ गया मुझे तो वहाँ जाना था।

भूल के करना—भ्रम में कर बैठना। भूल कर तुम्हारे साथ आगया यह पता होता तो कभी न आता।

भूल के न करना—कभी भी, कैसे भी न करना। भूल कर भी तुम्हारे पास न आऊँगा।

भेजा खाना, भेजा पकना—दे० सिर खाना।

भेड़िया धसान—बिना फल सोचे दूसरों के पीछे चलना अपनी समझ से भी काम लो भेड़िया धसान में नुकसान ही होगा।

भेद देना—किसी गुप्त बात का पता देना। मुझे क्या पता था, मुझे तो मेरे पड़ोसी ने सारा भेद दिया है।

भेद लेना—गुप्त बात जानना। इसे अपने पास अधिक देर न बैठाया करो यह भेद लेने आता है।

भेष बदलना—अपनी सूरत छिपाना। वहाँ का राजा भेष बदल कर अपनी प्रजा की दशा देखा करता था।

भेउ काटना—गरमी, उपदंश होना (बाजारू)

भोग लगाना—देवताओं को नैवेद्य चढ़ाना। इनका तो हमेशा से यही हाल है कि भोग लगा कर खाते हैं।

भोग सुनाना—गालियाँ सुनाना। अब जो कोई मेरा झूठा नाम लेगी उसे सैकड़ों भोग सुनाऊँगी।

भोर होना—तबाह होना। इस मुकदमे मे तो इतना रुपया खर्च हुआ है कि मेरा भोर हो गया है।

भौंह चढ़ाना, तानना—नाखुश होना। मुझे देखते ही भौंह चढ़ाली, मै समझ गया क्रुध हैं।

भौं ताकना—रुख, मौका देखना। भौंह ताक कर अमीरों का काम करो, सफल होगे।

भौंह जोहना—खुश करने को इशारे पर चलना, खुशामद करना।

भौंह दिखाना—डर दिखाना। मुझे क्या भौंह दिखाते हो मै डरने वाला नहीं।

भौंचक रह जाना—हक्का बक्का, स्तम्भित हो जाना। मै तो यह देख कर भौंचक रह गया तिलकधारी के ये काम।

म

मँगनी करना—सगाई करना। अभी ब्याह का क्या ठिकाना है, अभी तो उन्होंने कहीं मँगनी भी नहीं की।

मँगनी देना—उधार देना। वह तो ऐसा बे मुरब्बत है कि किसी को एक पैसा मँगनी नहीं देता।

मँजिल कटना—बहुत दूर की यात्रा पूरी होना। यदि आप बैल गाड़ी से जायँगे तो कम से कम पन्द्रह दिन में मजिल कटेगी।

मंजिल मारना—(१) बड़ा काम करना। (२) बहुत दूर पैदल चलना। तुम ५० मील आये यह मंजल मारी मै कंजूस से रुपये लाया यह मजिल मारी।

मंझा देना—माँजना, लेस चढाना।

मंडल बाँधना—(१) गोलाई में चलना। मंडल बाँध कर नाची। (२) घेरना। बादल मडल बाँध कर बरसे। (३) चारो ओर अँधेरा छा जाना। (४) षड्यन्त्र रचना।

[ill]

मेरे खिलाफ दुश्मनों ने मण्डल बाँधा है।

मंडी लगना—बाज़ार, पैंठ खुलना।

मंत्र देना—(१) चेला बनाना। (२) सलाह देना।

मंत्र फूँकना—(१) मन्त्र का जादू करना। (२) सिखा, बहका देना। उन्होंने मंत्र फूँक दिया नहीं तो वह तो तैयार था।

मंदा पड़ना—घटना। लड़ाई थम जाने से अनाज का भाव अब कुछ मन्दा पड गया है।

मंदा बोलना—धीमी आवाज़ से बोलना। आज क्या कुछ तबियत खराब है जो मन्दा बोल रहा है।

मक़दूरी चलना—वश, काबू होना।

मक़दूर से बाहर पाँव रखना—शक्ति, योग्यता से बढ़ कर काम करना।

मक्खन मला जाना (कलेजे पर)—बैरी की हानि देख दिल खुश होना।

मक्खियाँ भिनकना—दे० भिनकना मक्खियाँ। जिस बालक पर मक्खी भिनकती है उसे कोई प्यार नहीं करता।

मक्खी की तरह निकाल फेंकना—बिल्कुल अलग कर देना।

मक्खी की मक्खी मारना—व्यर्थ का काम करना।

मक्खी चूस होना—बहुत कंजूस होना। एक पैसा नहीं खर्चता बड़ा मक्खी चूस है।

मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना—छोटे पापों से बचना बड़े करना। झूठ नहीं बोलते और डाका डालते हो यानी मक्खी छोड़ते हाथी निगलते हो ?

मक्खी जीती निगलना—(१) जान कर हानिकर काम करना। (२) पाप, दोष को ध्यान न देना। मरे पीछे कुछ भी नीचता करना जीते जी तो मुझसे जीती मक्खी •।

मक्खी नाक पर न बैठने देना—(१) मान-रक्षा के लिये न दबना। बेटा! मक्खी नाक पर न बैठने देना चाहे हानि हो जाय। (२) एहसान न लेना।

मक्खी मारना—कुछ न करना। बैठे बैठे मक्खी मारते हो कुछ काम धंधा करो न ?

मग़ज़ उड़ना, भिन्नाना—बदबू, शोर से दिमाग़ खराब होना। मेरा तो इस कमरे में मग़ज भिन्ना गया।

मग़ज उड़ाना—दे० सिर खाना।

मग़ज के कीडे उड़ाना—बहुत बकना।

मग़ज खाना—दे० सिर खाना।

मग़ज खाली करना—दे० मग़ज पचाना।

मग़ज खौलना—(१) क्रोध से (२)

 [७०६०]

बहुत काम होने से (३) गर्मी से, दिमाग ठीक न रहना। सवेरे एक मिनट की फ़ुर्सत नहीं मिली दिमाग खौल रहा है, अब मत पूछो।

मग़ज़ चलना—(१) बहुत घमंड होना। किसी की परवा नहीं बड़ा मग़ज चलने लगा है! (२) पागल होना।

मग़ज़ चाटना—दे० मगज खाना।

मग़ज़ पचाना—(१) दे० सिर खपाना। (२) समझाने के लिये बहुत बकना। इतना मग़ज किसी गधे से पचाता तो वह भी सीख जाता।

मग़ज़ पच्ची करना—दिमाग़ खाली करना। अब तुम्हीं बताओ कि इस काठ के उल्लू के साथ कौन मगज़ पच्ची करे।

मग देखना—प्रतीक्षा करना। कृष्ण के मथुरा चले जाने पर उनके विरह मे गोपियाँ मग देखा करती थीं

मगन होना—खुशी से फूल जाना। जैसे ही मैने बच्चे के हाथ मे मिठाई का दोना दिया कि वह मगन हो गया।

मगर अगर करना—आना कानी करना। मेरे से मगर अगर मत करो अभी दो कहीं से भी दो।

मज़मून बाँधना—नये विचार, कोई विषय, पद्य या गद्य में लिखना। क्या मजमून बाँधा है बसंत दूल्हा है! कमाल!

मज़मून मिलना, लड़ना—दो अलग अलग कवियों या लेखकों के भाव मिल जाना।

मजल मारना—दे० मंजिल मारना।

मज़ा आ जाना—(१) दिल्लगी का सामान मिलना। अगर आप यहाँ गिरें तो मज़ा आजाय।

मज़ा उड़ाना, लूटना—आनन्द, ऐश प्राप्त करना।

मज़ा किरकिरा होना—रंग में भंग पड़ना। तुमने बीच मे बोलकर गाने का मज़ा किरकिरा कर दिया।

मज़ा चखाना—अपराध का दंड, बैर का बदला देना। तुमने भी तो मुझे तंग किया था यह उसी का मज़ा चखो।

मज़ा पड़ना—चाट, चसका, आदत पड़ना। सिनेमे का मज़ा पड़ गया है उधार लेकर भी वहाँ जाता है।

मज़ा लेना, देखना—तमाशा, दिल्लगी देखना। आप बैठे मज़ा ले रहे हैं उनमे लड़ाई हो रही है।

मज़े का—अच्छा, उत्तम, बढ़िया।

मज़े पर आना—जोबन, अच्छी दशा में आना। क्यों मजे पर आ रहे हो न?

मज़े में, से—सुख, आनन्द से।

मज़ाक उड़ाना—दिल्लगी करना।

[७११०]

क्यों बेचारे का मज़ाक उड़ाते हो तुम भी तो फिसलते हो।

मझधार में छोड़ना—(१) ऐसी हालत में जब इधर का रहे न उधर का छोड़ना। (१) अधबीच मे छोड़ना।

मझधार में पड़ना—मुसीबत में फँसना। नैया मेरी मझधार पड़ी, भगवन पार लगाओ न !

मटकी देना—मटकाना। आँख की मटकी देकर चला गया।

मटिया मेट कर देना—सत्यानाश, तहस नहस करना।

मठ मारना—खराब करना। तुम तो मठ मार कर अलग हो गये, आफत सब हमे भुगतनी पड़ी।

मढ़ आना—घिर आना। दसहू दिसि मेघ महा मढ़ि आए।

मत में आना—समझ में आना। तुम्हारे मत में आवे तुम भी कर डालो।

मत मारी जाना—बुद्धि न रहना।

मतलब का यार—स्वार्थी।

मतलब की घात चलना—अपना स्वार्थ ही देखना। चाहे किसी की सैकड़ों की हानि हो जाय पर ये तो, अपने मतलब की घात चलते हैं।

मतलब गाँठना निकालना—स्वार्थ साधना।

मतलब हो जाना—(१) इच्छा पूरी होना। (२) बुरा हाल होना। (३) मर जाना। सब मतलब हो गया बेचारे का।

मतली सी होना—जी मचलाना। हारमोनियम सुनकर मुझे मतली होने लगती है।

मत्था टेकना— सिर झुकाना। महन्त जी के आगे राजा महाराजा मत्था टेकते हैं तू क्या चीज़ है !

मथानी, पड़ना, बहना—खलबली मचना। ग्वालियर मे बही मथानी औ कषार मथा भै पानी।

मत्था मारना—दे० सिर खपाना।

मत्थे डालना—इलजाम लगाना। उसने साढ़े चार सौ रुपये मेरे मत्थे डाल दिये।

मद पर आना—(१) उमग आना। (२) काम से गरमाना। (३) युवा होना।

मदद पहुँचना—कुमक, सहायता मिलना। तुम्हारे थोड़े से रुपयों से मुझे बहुत मदद पहुँची।

मदद बाँटना—मजदूरी बाँटना। आज मदद बटेगी पैसे ले जाना।

मन अटकना, उलझना—प्रेम होना। उनसे मन अटक गया अब उनके हो रहेंगे।

मन आना—(१) दिल आना, तबियत आना। (२) समझ पडना। मन आ जाय तो हजार ख़र्च दें क्या परवा है !

मन कच्चा करना—हिम्मत टूटना,

तोड़ना। मन क्यों कच्चा करते हो अब नहीं फिर सही कभी तो होगा परवा नहीं।

मन करना—इच्छा होना। मन करता है तुम्हें...।

मन का मारा—दुखी चित्त वाला।

मन का मैला—कपटी, घाती।

मन की मन में रहना—इच्छा अधूरी रह जाना, मेरे मन की मन में रह गई वे चले गये।

मन के लड्डू खाना—व्यर्थ आशा में खुश होना। मन मोदक नहिं भूख बुझाई।

मन खट्टा होना—घृणा हो जाना अच्छा न लगना। उसने एक बार धोखा दिया उससे मन खट्टा हो गया।

मन खराब होना—(१) दिल फिरना। (२) नाराज होना। (३) बीमार होना।

मन खोलना—छिपाव छोड़ना।

मन चलना—इच्छा होना। बीमारी मे बदपरहेजी पर मन चलता है।

मन टटोलना—थाह लेना दिली बात जानना। आओ बातों बातों में उसका मन टटोलें।

मन टूटना—दे० हिम्मत टूटना।

मन डोलना—(१) मन चचल होना। (२) लोभ आना।

मन ढलना—किसी की तरफ इच्छा होना। रईस है जिसकी तरफ मन ढल गया वही मालामाल हो जायगा।

मन देना—(१) जी लगाना। मन देकर सेवा करो। (२) ध्यान देना। मैं जानता था तुम मन देकर नहीं सुन रहे थे।

मन देना (किसी को)—आसक्त, मोहित होना।

मन धरना—दे० मन लगाना।

मन बढ़ना—साहस, उत्साह बढना, नित के बैर से बैरी का मन बढ़ा।

मन बढ़ाना—दे० हिम्मत बढ़ाना।

मन फट जाना—घृणा हो जाना।

मन फेरना—चित्त हटाना। हम से मन फेर लिया झाँकते नहीं।

मन बहलाना—दिल खुश करना।

मन बिगड़ना—(१) इच्छा हट जाना। (२) कै आना। (३) पागल होना।

मन बूझना—मन की थाह लेना। तुम्हारा मन बूझने को मैंने ऐसा कहा था।

मन मानना—शान्ति, संतोष होना, समझ तो यही लूँ पर मन नहीं मानता।

मन भर जाना—(१) तृप्ति हो जाना। (२) अधिक इच्छा न रहना। हमें बहुत रुपये की तृष्णा नहीं सौ में ही बस मन भर जायगा।

मन भरना—(१) तृप्ति, सतोष होना। पेट भर गया है पर मन

नहीं भरा। (२) विश्वास, प्रतीति होना। आपने वादा कर लिया मेरा मन भर गया अब मै दे दूँगा।

मन भाना—अच्छा लगना, पसंद आना। मेरे मन नहीं भाती तो क्यों लूँ ?

मन भारी करना—दुखी, उदास होना। क्यों रो रो कर मन भारी करती हो।

मन मानना — (१) तसल्ली, संतोष होना। मन माने तो न पूछूँ। (२) विश्वास, निश्चय हो। क़सम खाओ तो मेरा मन माने। (३) दे० मन भरना। (४) प्रेम, अनुराग होना। सखीरी! श्याम सो मन मान्यो।

मन माना—यथेच्छ, जो चाहे सो। मनमाना रुपया लो मना नहीं है।

मन मार कर बैठ जाना
मन मार कर रह जाना }
उत्कृष्ट इच्छा दबा जाना। इच्छा होती है कि इसे क़त्ल कर दूँ पर फाँसी के डर से मन मार कर रह जाता हूँ।

मन मारना—(१) उदास दुखी चित्त होना। दूसरों के महल देख कर मन मार बैठ रहते हैं। (२) इच्छा दबाना। मन को मारो तो विजय पावो।

मन मिलना—(१) मित्रता होना। (२) प्रेम होना। जब मन मिले हैं तो विवाह न रुक सकेगा। (३) एक सी प्रकृति, प्रवृत्ति होना। मन मिले तो मित्रता भी रहे।

मन में आना—(१) भाव, इच्छा पैदा होना। कितनी गालियें दी पर उनके मन एक न आई। (२) ध्यान में आना। मन मे आया कि छोड़ ही क्यों न दूँ। (३) भला लगना। मेरे मन में नही आई नहीं उसी से विवाह कर लेता।

मन में कहना—मन ही मन सोचना। मन में कहने लगा कि एक हम हैं किसान और एक यह शाही महल।

मन मे जमना. बैठना—(१) जँचना, ठीक प्रतीत होना। अपनी बात उनके मन में जमा दो वह रुपया दे ही देंगे। (२) ध्यान में आना।

मन मे ठानना—निश्चय, संकल्प कर लेना।

मन मे बसना—दे० बसना (मन में)।

मन मे भरना—दिल में जमाना, विश्वास जमाना। उसके मन मे भर दी बस वह चला गया।

मन में रखना—(१) छिपाये रखना, न कहना। मन में रखना कहना मत। (२) याद रखना।

आज की बात मन मे रखना इसका बदला लेकर छोड़ूंगा।

मन में लाना — सोचना, ध्यान देना। जरा तो मन में रहम लाओ।

मन मैला करना—खिन्न, असतुष्ट, दुखी, अप्रसन्न होना। जरा सी बात पर मन मत मैला करो, बैर मत ठानो।

मन मोटा होना (किसी का)—वैराग्य होना।

मन मोटा होना (किसी से)—अनबन, बैर होना। मन मोटा क्यों करते हो?

मन मोड़ना—विचार इधर से हटा कर उधर करना। मुझ से मन मोड़ के उनसे मिले।

मन मोहना—किसी को मोहित करना, प्रेमी बनाना। मेरा मन मोह लिया कहीं का न छोड़ा रे!

मन रखना—मन में आई बात पूरी करना। जेवर लाकर मेरा मन रख दो तो किसी दिन तुम्हारा भी मन रख दूँगी।

मन लगना — (१) मनोविनोद होना। चले जाते हैं उनकी खेल कूद में मन लग जाता है। (२) किसी काम में चित्त जमना।

मन लगाना—(१) किसी काम में ध्यान देना। (२) उदासी मिटाना। मन लगाने को यह खेल रचा है वरना शौक में क्या धरा है।

मन लेना—दिल की बात का पता लगाना। मैनें उसका मन लिया था हजार से ज्यादा न देगा।

मनसूबा बांधना—ढंग सोचना। मैने मनसूबा बाँधा कि वह गाली दे बैठे तो मै पीट डालूँ।

मन से उतारना—अच्छी न लगने लगना, दिल से घृणा होना।

मन से उतरना—(१) पहिला सा आदर न रहना। (२) याद न रहना। मन से न उतरी तो जरूर ला दूँगा।

मन हरना—मोहित करना, अपनी ओर खीच लेना। ऐसी बहू जो मन हरि लेई।

मन हाथ में लेना—वश मे करना। जैसे कहूँगी वैसे करेंगे जरा हाथ मे मन ले लूँ।

मन हरा होना—दिल खुश हो जाना।

मन ही मन—भीतर भीतर, अन्दर अन्दर, चुपचाप। मन ही मन क्यों गाली देंगे।

मन होना—इच्छा होना। मन होता तो मै ही जा कर लाता।

मनादी करना—घोषणा करना। इस बात की मनादी करदी गई है कि कोई आदमी आठ बजे बाद घर से न निकले।

[१०१६१]

मनुहार करना—विनती, खुशामद करना। सबै करति मनुहारि उधौ कहियो हो जैसे गोकुल आवे।

मन्नत उतारना, बढ़ाना—पूजा का संकल्प पूरा करना।

मन्नत मानना—प्रतिज्ञा करना कि फलां काम होने पर यह पूजा करेंगे।

मन्सूबे बांधना—इरादे करना। न मालूम क्या क्या मन्सूबे बाँध रहे थे, पिता जी की मृत्यु होने से सब नष्ट हो गये।

मयस्सर आना—मिलना। गाँव वालों को यह ऐश मयस्सर नहीं आते।

मर जाना—(१) प्रेमी हो जाना, मोहित होना। क्यों? बाज़ारू पर मर गये न? (२) नाश हो गया। सारे रुपये डूब गये हम तो मर गये न।

मरना (किसी के लिये)—हैरान होना, कष्ट सहना।

मरना (किसी पर)—लुब्ध, आसक्त होना।

मरना (किसी बात के लिये)—दुख सहना।

मरना जीना—दुख-सुख, शादी-गमी।

मरना (पानी)—(१) पानी दीवार की नीव में जाना। (२) कलंक, दोष का संदेह आना। पानी तुम्हारी तरफ मरता है सफ़ाई दो।

मरने की छुट्टी न होना—दिन-रात काम में फँसे रहना। मिलूँ कैसे मुझे मरने तक की तो छुट्टी नहीं।

मर पचना—बरबाद हो जाना। हम तुम्हारे लिये मर पचे तुम और बुराई देते हो।

मर मिटना—जान तक देना। किला लेंगे या मर मिटेंगे।

मरम्मत करना—(१) टूटी फूटी चीज़ बनाना। (२) पीटना। बकोगे तो मरम्मत कर दूँगा।

मरहठी घिस घिस होना—किसी काम में झंझट करना। इधर यह क्या मरहटी घिस घिस हो रही है, इन लड़कों को यहाँ से भगा दो।

मरहठी मचाना—लूट मार मचाना। आज कल सरहद पर कबीले वालों ने बड़ी मरहठी मचा रक्खी है।

मरहला डालना—झगड़ा खड़ा करना।

मरहला तय करना—कठिन काम पूरा करना। दो में से एक मरहला तो तय कर लिया, आधा जीते।

मरहला पड़ना, मचना—झमेला, कठिनता पड़ना।

मारा जाना—(१) व्याकुल होना। सूद देते देते किसान मरे जाते हैं। (२) उत्सुक होना उतावली करना। मिल जायगी मरा क्यों जाता है।

मरातिब तै करना—आने वाले सब झगड़े मिटाना।

मरी पड़ना—प्लेग फैलाना। जब मरी पड़ती है तो मनुष्य मक्खियों की तरह मरने लगते हैं।

मरूकरि कै, मरूकरि—बड़ी मुश्किल से अँसुआ ठहरात गरौ घहरात मरुकरि अधिक बात कही।

मरूरा देना—मरोड़ना, उमेठना।

मरे को मारना—दुखी को दुख, अशक्त को आफत में फँसाना। उस बेचारे को दंड देना मरे को मारना है।

मरोड़ करना (मन में)—कपट करना।

मरोड़ की बात—पेचदार बात।

मरोड़ खाना—(१) चक्कर खाना। (२) उलझन में पड़ना।

मरोड़ गहना—क्रोध करना।

मरोड़ा चलना—उदर शूल होना। आज कुछ बासी खाना खा लिया था जिससे पेट में मरोड़ा उठ रहा है।

मरोड़ा करना—खींचा तानी करना

मर्ज़ी में आना—इच्छा होना। आप ले तो जाइये, दाम जब आप की मर्ज़ी में आवे तब दे दीजिये।

मर्द आदमी—(१) वीर, बहादुर। मर्द आदमी है लेकर ही आयेगा। (२) सभ्य, भला। मर्द आदमी है कहेगा तो पूरा ही करेगा।

मर्यादा रहना—(१) इज्जत रहना। (२) बरात को तीसरे दिन भोजन कराना।

मलना (हाथ)—(१) पछताना। (२) क्रोध करना। लाल हो गये हाथ मलने लगे पर हाथ मल कर ही रह गये।

मलना दलना—(१) चूरा कर देना। सब राक्षस दलमल दिये। (२) मसल देना।

मलार गाना—गाना दे० मल्हार गाना।

मलाल निकालना—दबा हुआ दुख दूर करना। मौका मिला है पीट कर मलाल यों निकाल लूँ।

मलिया बाँधना—रस्सी मोड़ कर बाँधना (लश्करी)।

मलिया मेट करना—बरबाद करना।

मलोले आना—दुख, पछतावा होना। बड़े बड़े मलोले आते हैं कि मैंने क्यों भेजा (स्त्री)।

मलोले खाना—दुख उठाना। उन्होंने मलोले खाकर कहा (स्त्री)। [७२३६]

मलोले निकालना—दे० मलाल निकालना (स्त्री)।

मल्हार गाना—खुश होकर कुछ कहना। दिन भर मल्हार गाते हैं, चिन्ता है नही।

मवास करना—बसेरा करना। मधुपन कीन्हों आइ महत मवासो है।

मवासी तोड़ना—(१) किला तोड़ना। (२) जय करना।

मशवरा करना—सलाह करना। आप किसी दिन फुरसत मे आइये, हमें आपसे कुछ मशवरा करना है।

मशाल लेकर, जलाकर ढूँढना—खूब खोजना। मशाल लेकर ढूंढोगे तो भी ऐसा लडका न मिलेगा। मैने घर मे मशाल जला कर ढूंढ लिया है, कहीं उसका पता नही।

मशोखत बघारना—शेखी बघारना।

मष्ट करना
मष्ट धारना } चुप रहना, साधना।
मष्ट मारना

मसें भीजना—मूँछ, रेख निकलना। अभी मसे ही भीजी थीं नौजवान ही था।

मसविदा बाँधना—युक्ति, उपाय सोचना। मसविदा बाँधा कि प्यार से लावें और मार दें।

मसमसा जाना—अन्दर अन्दर क्रोधित होना।

मसान जगाना—मुरदा सिद्ध करना। कपट सयान न कहत कछु जागति मनहुँ मसान।

मसान पड़ना—सन्नाटा होना। सरदी फिर अँधेरी, सारे बाज़ार में मसान पड़ता है।

मसूकर के—बड़ी मुश्किल से। रसखानि तिहारी सों ऐरी जसोमति भागि मसूकरि छूटन पाई।

मसें भीगना—तरुणाई आना। अब उसका बाल्यकाल निकल गया है, अब तो मसे भीग रही हैं।

मसौदा करना—किसी लेख या रचना का ढाँचा बनाना। मैंने मसौदा तो कर लिया है अभी लेख अच्छी तरह नहीं लिखा है।

मसौदा गाँठना—दे० मसविदा बाँधना।

मस्ती झड़ना, झाड़ना—मतवालापन, ऐंठ दूर होना करना।

मस्ती निकालना—कामना निकालना।

महना मथ मचाना—झगड़ा करना। उसने मेरी पुस्तक के लिये बड़ा महना मथ मचाया।

महर बँधना—वर की ओर से वधू को धन नियत करना।

महसूल मारना—भाड़ा, कर न देना।

महावरा पड़ना — आदत हो जाना। अभी तुम्हें दूर मालूम पड़ता है, दो चार दिन जाओ आओगे तो महावरा पड़ जायगा।

महीन काम—आँख-सावधानी का काम। सुई का महीन काम है।

महीना चढ़ना—एक मास का गर्भ होना।

महीने से होना—रजवती होना।

महूरत करना—मङ्गल समय में कार्य शुरू करना। सामान तो दुकान का सब इकट्ठा कर लिया है अब दशहरे को महूरत करेंगे।

महेर डालना—(१) अड़चन डालना। (२) देर लगाना।

माँग उजड़ना—पति मरना (स्त्री)

माँग कोख से सुखी रहना—पतिवती संतानवती होना (स्त्री)।

माँग जलना, जली—राँड।

माँग ताँग कर काम चलाना—उधार लेकर काम चलाना। हमारे पास ऐसे कपड़े कहाँ हैं हम तो योहीं माँग ताँग कर काम चला लेते हैं।

माँग पट्टी करना—कघी करना, बाल सँवारना।

माँग पट्टी में लगा रहना—बनाव शृंगार में फँसा रहना। तुम कुछ घर का काम काज भी देखते हो या माग पट्टी में लगे रहते हो।

माँग पारना—माँग निकालना। अब तो स्त्रियें टेढी माँग पारती हैं।

माँग बाँधना—कंघी चोटी करना।

माँग भरना—माँग में मोती, सिंदूर भरना।

माँग से ठंडी रहना—पतिवती रहना।

माँगे देना—उधार देना। जब कोई एक बार बेईमानी कर लेता है तो फिर उसे कोई चीज़ माँगे भी नहीं देता।

माँझ पड़ना, होना—बीच, अंतर पड़ना।

माँ बहिन करना—(१) आदर से बोलना (स्त्री) (२) माँ बहिन की गाली देना।

माईन में थापना— पितरों सा आदर करना।

माई का लाल-(१) उदार व्यक्ति (२) शूर-वीर। है कोई माई का लाल जो जान हथेली पर ले!

माट का माट बिगड़ा है—सब की बुद्धि मारी गई है।

माट बिगड़ जाना — स्वभाव बिगड़ जाना।

मात करना—हराना। पत्थर की कारीगरी में तो ताजमहल ने सारी दुनियाँ की इमारतों को मात कर दिया।

मात खाना-हारना। कहिये खायी न मात! कहा था, न जीतोगे।

मात जाना—(१) न्योछावर होना (२) हार जाना।

माता ढलना—चेचक के दाने सूख जाना । । यदि माता ज़ोर से निकले तो लगभग एक महीने में ढल जाती है ।

माता निकलना—देह में चेचक के दाने निकलना । जब मै छोटा था तब मेरे शरीर मे बड़ी जोर की माता निकली थी ।

माथा कूटना—दे० माथा पीटना ।

माथा खपाना, खाली करना—मगज पच्ची करना, बहुत समझाना, सोचना ।

माथा घिसना—खुशामद करना । कई बार माथा घिसा तब प्रसन्न हुई ।

माथा टेकना—सिर झुकाकर प्रणाम करना ।

माथा ठनकना—हानि या कष्ट का पहिले ही जान, आशंका होना । मेरा माथा ठनका था कि कहीं गिर न पड़े, वही हुआ ।

माथा पीटना—सिर पर हाथ मार कर दुख शोक प्रकट करना । दुखद समाचार सुन माथा पीटते पीटते वे होश हो गई ।

माथा मारना—विशेष मेहनत करना । कितना ही माथा मारो मूर्ख नहीं समझता ।

माथा रगड़ना—दे० माथा घिसना ।

माथे चढ़ना, धरना—दे० सिर चढ़ना ।

माथे टीका होना—कोई विशेषता होना । क्या तुम्हारे ही माथे टीका है जो हर बात पर अधिकार जनाते हो ?

माथे पड़ना—जिम्मेदारी आना । वह तो चल दिये सारा काम मेरे माथे पड़ा ।

माथे पर बल आना, पड़ना—चेहरे से क्रोध दिखना । गाली दी सुनते ही माथे पर बल आ गये ।

माथे मढ़ना—दे० सिर मढना ।

माथे मानना — सादर स्वीकार करना । माथे मानि करब हम सोई ।

माथे मारना— घृणा या तुच्छ भाव से देखना । उस ओछे से क्यों तक़ाजा करवाते हो, उसकी चीज़ उसके माथे मारो ।

मान करना—रूठ जाना । आज नायक नायिका में खटपट हो गई, इसी से नायिका मान करके बैठ गई ।

मान मथना—शेखी, गर्व, मान भंग करना । बहुत ऐंठते थे सारा मान मथ डाला गया ।

मान मनाना—रूठे को मनाना । मानिनी को मान मना लाये ।

मान मोरना — मान, रूठना छोड़ना ।

मान रखना—इज्जत बचाना । न

बोले, मान रख लिया, नहीं तुम्हारा भी सामना करता।

माफ़ करना—क्षमा करना।

माफी चाहना—क्षमा माँगना। मै न आ सका माफी चाहता हूँ।

मामला करना—(१) बात पक्की करना। (२) फैसला करना। (३) मुकदमा चलाना। न दोगे तो अदालत मे मामला कर दूँगा।

मामला किरकिरा होना—तै हुआ किस्सा बिगड़ना।

मामला पक्का करना—बात तै करना। १००) में मामला पक्का किया।

मामला बनाना—(१) काम ठीक, बात पक्की करना। (२) काम साधना अपना मामला बना कर चलते बने। (३) सभोग करना।

मार्का पीना—अपना दोष न मानना मुकर जाना।

माया जोड़ना—धन इकट्ठा करना। तुम अकेले राम हो फिर किसके लिये माया जोड़ते हो।

मार्कडेय की आयु होना—बड़ी उम्र होना।

मारके की बात, काम—ख़ास, बड़ी बात या काम। ये मारके की बात है कह दोगे तो साफ छूटोगे।

मार खाना—नुकसान सहना, काट खाना। ५) की तो हमने भी मार खाई।

मारग मारना—पथिक लूटना।

मारग लगना, लेना—रास्ता लेना, चले जाना। जाओ, तुम्हें क्या मतलब अपने मारग लगो।

मारना (गाल)—बढ़ बढ कर बोलना।

मारना (गोली)—(१) बदूक की गोली से मारना। (२) जाने देना, ध्यान न देना। गोली मारो क्या तुच्छ बात है।

मारना (जादू)—जादू करना।

मारना (डींग)—अपनी बड़ाई बढ बढ़ कर बातें, बड़ी बड़ी असभव बाते करना। क्यों डींग मारते हो तुम्हारा बाप नही कर सकता।

मारना देना—(१) पटकना। (२) पछाड़ना। जमीन पर दे मारा, मर गया।

मार बैठना—पीटने लगना। जो बोले तो मार बैठूँगा।

मार मार करना—जल्दी मचाना। क्यों मार मार करते हो बहुत वक्त है पहुँच ही जायेंगे।

मार से भूत भागता है—पिटने के डर से सब ऐंठ, शरारत दूर हो जाती है।

मार लाना—अनुचित रूप से धन लेकर भाग आना! तुम्हारा क्या मार लाया था जो तुम यह कहते हो।

[७३२०]

मार लेना—कठिनता गई जीत ही सा लिया। मार लिया बस अब की पेशी पर मुकदमा ख़तम।

मारा जाना—(१) कत्ल हो जाना। (२) धन न मिलना। १००) हमारा भी मारा गया।

मारा मारा फिरना—व्यर्थ बुरे हाल इधर उधर घूमना। क्यों मारे मारे फिरते हो नौकरी नहीं मिलती तो मजूरी करो।

मारा वह—लो अब काम बना। वह मारा अब तो जीतने ही वाले हैं।

माल उगलवा लेना—धन ले ही लेना। मै तो अच्छे अच्छे बद-माशों से माल उगलवा लूँ।

माल उड़ाना—(१) बुरी तरह खर्चना। सारा माल शीघ्र उडा दिया। (२) माल हडप लेना, अनु-चित रूप से लेना। सेठ की बीमारी मे नौकरों ने खूब माल उडाया। (३) बढिया खाना। कहिये दावत मे क्या क्या माल उड़ाये ?

माल काटना—(१) किसी को बुरे कामों मे डाल कर, डरा कर या और बहाने से धन झपटना, लेना। लाला तो शराबी है यार लोग खूब माल काटते हैं। (२) रेल, माल गोदाम या जेब से चुराना।

माल चीरना—लालच या डर दिखाकर लेना। कोई झगडा पीछे लगा कर माल चीरो।

माल टाल—(१) बढिया भोजन। कटोरदान में क्या माल टाल है। (२) धन संपत्ति।

माल तोर करना—किसी बहाने माल कहीं अपनी जगह पहुँचा देना।

माल निगलना—किसी का धन न देना।

माल पचाना—रुपया हड़पना। तुम उसके हक का माल पचा गये मै तुम्हारा माल निगल गया, क्यों दे दूँ ?

माल मता—संपत्ति। मेरा मालमता लेकर चम्पत हुए।

माल मारना—दूसरे का माल दबा बैठना। हक़ था सो दे दिया और क्या किसी का माल मारोगे ?

माला फेरना—जप, भजन करना।

माला निकालना—कचूमर निका-लना, खूब पीटना।

माशा तोला होना—तोल मे बिलकुल पूरा।

मास नोचना, नोच २ कर खा जाना—तग कर कर के वसूल करना। तुमने तो हमे भूखा-नगा ही कर दिया मास तक नोच खाया।

माहुर का फल—देखने मे सुन्दर पर बुराई भरा।

माहुर की गाँठ—(१) अति विष भरी। (२) अति क्रूर, दुष्ट मनुष्य।

मिज़ाज आना—घमंड होना। सौत को मिजाज आ गया बोली भी नहीं।

मिजाज खराब, गर्म होना, बिगड़ना—नाख़ुश, अप्रशन्न होना। आज उनका मिज़ाज बिगड़ा हुआ है, मार बैठेंगे।

मिजाज न मिलना—घमंड मे बाते ही न करना। आज कल तो मिज़ाज ही नहीं मिलते ओहदा पाकर ऐंठ गये हैं।

मिजाज पाना—(१) स्वभाव जानना। (२) अनुकूल प्रसन्न देखना। मिजाज ही नही पाये जाते जब बोलो तभी घुड़क देते हैं।

मिजाज पूछना—(१) हाल पूछना। मैने मिजाज पूछे तो बोले बुरा हाल है। (२) खबर लेना, दंड देना। रोज रूठ जाती है किसी दिन इकट्ठे मिजाज पूछ लूँगा।

मिजाज बिगाड़ना—(१) क्रोध, अभिमान पैदा करना। रुपया भलों के भी मिजाज बिगाड़ देता है। (१) ऐंठ निकालना। किसी दिन सारे मिजाज बिगाड़ दूँगा, क्या ऐंठते हैं।

मिजाज में आना—(१) घमंड ऐंठ करना। ज़रा बड़ाई कर दी तो मिजाज में ही आ गये। (२) समझ में आना। आपके मिजाज में आवे तो आप भी चलिये।

मिजाज सीधा होना—(१) घमंड मिटना। (२) प्रसन्न होना।

मिट्टी अजीज होना—प्यारा, सुन्दर स्थान होना। जन्म भूमि की मिट्टी भी अजीज होती है आदमी तो क्या।

मिट्टी करना—नष्ट करना। तुमने सारा मज़ा मिट्टी कर दिया।

मिट्टी के मोल—दे० पानी के मोल। वह मोटर तो मिट्टी के मोल बिक रही है।

मिट्टी खराब करना—(१) बुरी हालत करना। (२) नष्ट करना।

मिट्टी खराब होना—(१) दुर्दशा होना। क्यों बुढापे मे घर से निकाल कर उसकी मिट्टी खराब करते हो। (२) इजत जाना।

मिट्टी खराबी—नाश, बरबादी।

मिट्टी छुए सोना होना—भाग्य प्रबल होना। जब अच्छे दिन आये तो मिट्टी छुए सोना होता है।

मिट्टी ठिकाने लगाना—लाश का गाड़ी या जलायी जाना।

मिट्टी डालना—(१) छोड देना। क्या करते हो? मिट्टी डालो इस काम पर। (२) दोषों पर परदा डालना, छिपाना।

मिट्टी ढह जाना—बुढ़ापे के चिन्ह होना।

मिट्टी पकड़ना—जमीन पर जम जाना। पहलवान ने मिट्टी पकड़ ली चित्त ही न हो सका।

मिट्टी पलीद करना—दुर्दशा करना। इस बुड्ढे को वहाँ ले जा कर क्यों मिट्टी पलीद करते हो?

मिट्टी में मिल जाना, मिलना—(१) मरना। इक दिन मिट्टी में मिल जाना क्या तू गर्व करे। (२) बरबाद होना।

मिट्टी में मिलाना—बरबाद करना। मुकदमे बाजी ने उसे मिट्टी में मिला दिया।

मिट्टी होना—(१) खराब होना। (२) गंदा, मैला होना।

मिट्ठू बनना (अपने मुँह से)—अपनी बड़ाई अपने आप करना।

मिट्ठू बनाना (मियाँ)—(१) बड़ाई कर कर के फुला देना। मियाँ मिट्ठू बना के तो कोई काम करा लो। (२) तोते सा पढाना।

मिती काटना—सूद काटना।

मिती चढ़ाना—तिथि लिखना।

मिती पूजना—हुन्डी भुगतान का अंतिम दिन आना। इस हुन्डी की मिती पूजे दो दिन हो गये, पर रुपया नहीं आया।

मिन मिन करना—अगर मगर करना। यदि देने मे मिन मिन करते हो तो फिर उधार क्यों ले लेते हो।

मिर्चें लगना, मिर्चें सी लगना—बुरी लगना, जलन होना। तुम्हें कोई गालियाँ देता है तो मिर्चें लग जाती हैं और मैं चुप रहूँ?

मिलाप रखना—सहमत होना। उन्होंने जो कौंसिल में प्रस्ताव रक्खा था, उससे कोई भी मेम्बर मिलाप नहीं रखता।

मिल्लत का—मिलनसार। बड़ी मिल्लत का आदमी है।

मिसरा लगाना—समस्या पूर्ति करना।

मिसरी की डली—बहुत मीठी। पढाई कोई मिसरी की डली नहीं है।

मिसिल उठाना—पुस्तक के फर्मों को क्रम से लगाना (दफ्तरी)।

मिस्लिली चोर—वह चोर जिसकी बदमाशी की मिसलें भरी हों।

मिस्सा काजल करना—बनाव सिंगार, काजल मिस्सी लगाना।

मीआद काटना—जेल भुगतना। महिने मे मिआद काट कर आया फिर सुलटूँगा।

मीआद बोलना—कैद सुनाना।

मीजा पटना, मिलना—स्वभाव मिलना। मीजा पटे तो मेल हो।

मीज़ान लगाना—अंकों को जोड़ना। मैंने जो कुछ तुम्हे अभी

बोला है, उसका मुझे जल्दी मीजान लगाकर बतलाओ।

मीठा होना—लाभ या आनन्द मिलना। हमें क्या मीठा है जो रोज घर पर हाजिर हों!

मीठा मुँह करना—दे० मुँह मीठा करना।

मीठी चुटकियाँ लेना—हँसी उड़ाना, किसी को दुखी देकर खुश होना।

मीठी छुरी—विश्वास घातक, कपटी। यह मीठी छुरी है तुम दोनों को लड़ा देगा।

मीठी नींद सोना—आनन्द से सोना। वह तो जो कुछ मिल जाता है खा लेता है, और मीठी नींद सोता है।

मीठी मार—भीतरी मार। अंदर बहुत चोट बाहर निशान तक नहीं ऐसी मीठी मार मारो।

मीन मेख निकालना—(१) दोष निकालना। (२) दे० मीनमेख करना। तुमसे भी तो बिगड़ता है उसी के काम म क्यों मीन मेख निकालते हो।

मीनाकारी छाँटना—व्यर्थ दोष निकालना। उसने मर खप कर इतना अच्छा काम किया तुम अपनी मीनाकारी छाँटते हो।

मुँडकरी मारना—घुटनों में सिर। दे० दुखी बैठना।

मुंडा का—हरामी (बाजारी गाली) विधवा व्यभिचार से पैदा पुत्र।

मुंतकिल करना—दूसरे को देना बड़े बेटे के बजाय छोटे को घर मुंतकिल कर दो।

मुह आना—(१) मुँह मे छाले पड़ना। (२) हुज्जत करना। क्यों इस बेशर्म के मुँह आते हो कहीं गाली न दे बैठे।

मुँह उजला होना—प्रतिष्ठा इज्जत रह जाना। उस कलंक से मुँह उजला हो तब बात।

मुँह उजाले उठे—बहुत सवेरे। मुँह उजाले उठ कर चल दिये।

मुँह उठा कर कहना—जो मुँह में आवे कह देना। यों ही मुँह उठा कर कह दिया बाप से भी पूछा!

मुँह उठाये चले जाना—बे धड़क चले जाना। मुँह उठाये चले जाओ कोई नहीं रोक सकता।

मुँह उतरना—(१) उदासी छाना। जेब टटोलते ही मुँह उतर गया, मैं समझा रुपये खो गये। (२) चेहरे पर रौनक न रहना।

मुँह करना—मुलाहजा लिहाज करना। गरीबों का कौन मुँह करता है, सब अमीरों की मानते हैं।

मुँह का कच्चा—(१) घोडा जो लगाम का झटका न सह सके। (२) झूठा। (३) कह देने वाला।

[७४१०]

गुप्त बात इससे न कहो यह मुँह का कच्चा है।

मुँह का कड़ा—(१) घोड़ा जो सवार के इच्छानुसार चले। (२) सख्त, तेज। (३) उद्दंडता से बातें करने वाला।

मुँह काला करना (अपना)—(१) अनुचित संभोग करना। (२) बदनामी करना। क्यों यह काम करके मुँह काला करते हो।

मुँह काला करना (दूसरे का)—दूर करना। चल हट मुँह काला कर यहाँ से।

मुँह की खाना—(१) मुँह सामने बुरा उत्तर सुनना, बातों में हारना। वक़ील ने मुँह की खाई जवाब न बना। (२) थप्पड़ खाना। (३) बेइज्जत होना। (४) शर्मिन्दा होना। (५) धोखा खाना। (६) बुरी तरह हारना।

मुँह की बात छीनना—दूसरा कहने वाला हो वही आप पहिले ही कह देना। मुँह की बात छीनना असभ्यता है।

मुँह की मक्खी न उड़ा सकना—बहुत कमजोर हो जाना। बीमारी में ऐसा हो गया है कि मुँह···।

मुँह के बल गिरना—(१) ठोकर खाना। (२) धोखा खाना। (३) बुरी तरह बेइज्जत होना। बड़ा चढा था अब मुँह के बल गिरा।

मुँह खराब करना—गंदी भद्दी बात कहना। क्यों गाली देके मुँह खराब करते हो।

मुँह खुलना—उद्दंडता से बोलने की आदत पड़ना। बहुत मुँह खुला है पिट जाओगे।

मुँह खुश्क हो जाना—दे० मुँह सूखना।

मुँह खोल कर रह जाना—कहते कहते शरमा जाना। मुँह खोल कर क्यों रह गई? कहो।

मुँह खोलना—(१) बोलना। (२) गाली, बुरी बातें कहना। मै मुँह खोलूँगी तो बाप दादा बखानूँगी। (३) घूँघट हटाना।

मुँह चढ़ाना—(१) उद्दंड बनाना। नौकर को मुँह चढ़ा रखा है यह बुरा है। (२) मुँह फुलाना।

मुँह चलना—(१) खाना। (२) व्यर्थ बातें बनाना।

मुँह चलाना—(१) भोजन करना। (२) बकना। क्यों मुँह चलाती है? चुप रह। (३) गाली देना। (४) दाँत से काटना।

मुँह चाटना—खुशामद करना। कुछ गर्ज होगी इस लिए मुँह चाटते हो।

मुँह चिढ़ाना—चिढाने के लिए टेढ़ा मुँह दिखाना।

मुँह चूम कर छोड़ देना—शर्मिन्दा करके छोड़ देना।

मुँह छूना, छुआना—(१) नाम मात्र को कहना। मुँह छूने को निमंत्रण दे गये थे। (२) दिखौआ बात करना।

मुँह जहर होना—मुँह कड़वा होना।

मुँह जुठारना—नाम मात्र को खाना, चखना। मुँह जुठार लो खाओ चाहे मत, दिल तो ख़ुश हो जायगा।

मुँह जोड़ना—पास पास मुँह कर के बात करना।

मुँह जोहना—आशा से मुँह की ओर देखना। मेरा क्या मुँह जोहते हो मै न दूँगा।

मुँह झटक जाना—चेहरा उतर जाना।

मुँह झुलसना—(१) मुँह में आग लगाना। (गाली, स्त्री) (२) दे ले कर दूर करना। कितनी देर से माँग रहा है इसका भी मुँह झुलस दो।

मुँह टेढ़ा करना—चेहरे से नाराजी दिखाना। मुँह टेढ़ा करते हुए 'हाँ' कहा।

मुँह डालना—(१) पशु का खाने को चीज़ में मुख डालना। (२) मुर्गी का लडना।

मुँह ढाँकना—मरने पर रोना। (मुसलमान)।

मुँह तक आना (१) कही जाना, जबान पर आना। मुँह तक आ कर रह गई, न कही। (२) लबालब भरना।

मुँह ताकना—(१) पाने की आशा से मुँह जोहना। एक टुकड़ा न दिया मुँह ताकता रह गया। (२) टकटकी से देखना। (३) लाचारी से देखना। (४) शर्मिन्दा होकर देखना। सब मुँह ताकते रहे उसने कप जीता। (५) कुछ न करना। हाथ लगाओ मुँह क्या ताकते हो।

मुँह तो देखो—योग्यता तो देखो।

मुँह तोड़ (कर) जवाब देना—ऐसा जवाब जो दूसरा बोल न सके। जब मैने मुँह तोड़ जवाब दिया तो चुप हो गये।

मुँह थकना, थकाना—कहते कहते थक जाना।

मुँह थुथरना—मुँह फुलाना क्रोध, नाराजी दिखाना। मुँह थुथा के बैठ गई या करती है?

मुँह दर मुँह कहना—सामने कहना। अब तो मुँह दर मुँह कह गये कि तुम्हें दी थी।

मुँह देखना—(१) खाट से उठते ही दर्शन होना। आज किसका मुँह देखा था जो बुरा दिन बीता? (२) सामने जाना। (३) आश्चर्य से देखना। (४) दर्पण में देखना।

मुँह देख कर बात करना, कहना—खुशामद करना। मुँह देखकर बात कहते हो, तुम्हें क्या गर्ज़ है।

मुँह धो रखना, लेना—आशा न रखना। मुँह धो रखो, अब रुपये न पटेंगे।

मुँह न देखना—(१) घृणा करना। मै मुए का मुँह न देखूँ। (२) न मिलना जुलना।

मुँह न फेरना—(१) सामने खडे रहना। (२) ना न करना। उसने फाँसी से भी मुँह न फेरा।

मुँह देखे का—दिली नहीं केवल दिखावटी मुँह देखे की बडाई है, पीछे सब बुरा कहते हैं।

मुँह निकल आना—रोग, दुर्बलता, शर्म से चेहरा उतर जाना।

मुँह पकड़ना—न बोलने देना। कहो न, कोई तुम्हारा मुँह पकडता है ?

मुँह पड़ना—साहस, हिम्मत होना। उनके सामने माँगने को मुँह नहीं पड़ता।

मुँह पर—सामने। मुँह पर गाली दो। मुँह पर झूठ बोलो।

मुँह पर जाना—(१) कहने का लिहाज करना। तुम्हारे मुँह पर जाता हूँ नहीं तो इसे अभी ठीक कर देता। (२) बात का विश्वास करना।

मुँह पर थूकना—बेइज्जत या शर्मिन्दा करना। बुरा करोगे तो दुनिया मुँह पर थूकेगी।

मुँह पर न रखना—स्वाद भी न लेना। तुम्हारे हाथ का खाना मुँह पर भी न रखा।

मुँह पर नाक न होना—शर्म न होना। कितना ही शर्मिन्दा करो उनके मुँह पर नाक तो है ही नहीं।

मुँह पर पानी फिर जाना—चेहरा खुश होना। जब लडका जेल से छूट आया तब मुँह पर पानी फिरा।

मुँह पर फेंकना, मारना—नाराज़ी से देना। रोज तक़ाजा सहते हो जो कुछ है मुँह पर मारो।

मुँह पर बरसना—चेहरे आकृति से दीखना। मुँह पर बरसता है वह अमीर है।

मुँह पर बसन्त फूलना, खिलना—चेहरा पीला, भयभीत, उदास होना। क्या आपत्ति है जो मुह पर बसन्त फूल रहा है ?

मुँह पर बात आना—(१) कहना चाहना। (२) कुछ कहना। यह बात मुँह पर भी न आने पावे।

मुँह पर मुरदनी छाना—(१) चेहरा पीला होना। (२) मौत के आसार होना। (३) डर शर्म, उदासी मुँह पर छाना। जेल का

नाम सुनते ही मुँह पर मुरदनी छा गई।

मुँह पर मोहर करना—दे० मुँह पकड़ना।

मुँह पर रखना—(१) सामने रखना (२) तमाचा मारना। ज्यों ही गाली दी मैं तो झट मुँह पर रख आया।

मुँह पर लाना—वर्णन करना। अपनी की हुई नेकी मुँह पर मत लाओ।

मुँह पर हवाई उड़ना—दे० मुँह फक होना।

मुँह पर हाथ रखना—कहने से रोकना। मैने मुँह पर न हाथ रखता तो तुम कह ही देते।

मुँह पसार कर दौड़ना—पाने के लालच में चाह से बढ़ना। ऐसे मुँह पसार कर दौड़े कि सब तुम्हें ही मिल जाय।

मुँह पसार कर रह जाना—(१) शरमा कर रह जाना। (२) चकित हो जाना। मेरे जादू के खेल देख मुँह पसार कर रह गये।

मुँह पाना—रुख, इच्छा देखना। उनका मुँह पाते ही मैंने कह दी।

मुँह पेट चलना—क़ै दस्त होना।

मुँह फक होना—शर्म या डर से मुँह पीला पड़ना। मुझे देखते ही उनका मुँह फक हो गया।

मुँह फटना—चूने आदि से मुँह में घाव होना।

मुँहफट होना—अनुचित, ओछी तथा कड़वी भी कह देने वाला। सभ्यता सीखो मुँहफट मत बनो।

मुँह फाड़ कर कहना—बेशर्मी से कहना। हमने मुँह फाड़ कर भी कहा पर वे न समझे।

मुँह फिरना, फिर जाना—(१) मुँह टेढ़ा, कुरूप हो जाना। ऐसा थप्पड़ दूँगा जो मुँह फिर जायगा। (२) लकवा मार जाना। (३) बराबरी, सामना करने लायक न रहना। घंटे भर की लड़ाई में ही शत्रु का मुँह फिर गया।

मुँह फुलाना, फुला कर बैठना—चेहरे से नाराजी दिखाना। घर मे जिसे न दो वही मुँह फुला कर बैठ जाती है।

मुँह फूकना—(१) मुँह झुलसना (स्त्री गाली)। ऐसे नौकर का तो मुँह फूक दे। (२) मुरदा जलाना (उपेक्षा)। (३) दे ले कर दूर करना।

मुँह फूलना—नाराज़गी होना। मै कुछ कहूँगा तो तुम्हारा मुँह फूल जायगा।

मुँह फेरना—(१) हराना। विवाद में वह तर्क किया कि विपक्षी का मुँह फेर दिया। (२) पीठ करना। मेरे मुँह फेरते ही फिर बकने लगा।

(३) उपेक्षा जताना । मन (४) हटाना । ऐसे कामों से मुँह फेरो ।

मुँह फैलाना-ज्यादा लेना, चाहना । मुँह मत फैलाओ औक़ात से ज्यादा न मिलेगा ।

मुँह फोड़ कर खाना—बेशरम होकर खाना (स्त्री) ।

मुँह बंद करना, कर लेना, होना—चुप करना, होना । शास्त्रार्थ में उनके सामने बड़े बडे पंडितों ने मुँह ।

मुँह बनना, बन जाना—ऐसा चेहरा जिससे नाराजी दिखे । थोड़ी चीज दो तो मुंह बना जाता है, फिर मनाओ ।

मुँह बनवाना—योग्यता, सुन्दरता प्राप्त करना । पहिले जैसा मुँह बनवाओ तब पृथ्वीराज जैसी हजामत करा लेना ।

मुँह बाँध कर बैठना- चुपचाप बैठना । पिटने के डर से मुँह बाँधे बैठा रहा ।

मुँह बाना—(१) मुँह खोलना । (२ जँभाई लेना । (३) बेहूदेपन से हँसना । (४) अपनी हीनता सिद्ध होने पर भी हँसना ।

मुँह बिगड़ना—(१) मुँह का स्वाद खराब होना । इसे खाने से तो मुँह बिगड़ गया । २) आकृति, चेहरा खराब होना ।

मुँह बिगाड़ना—(१) स्वाद खराब करना । (२) मारपीट कर चेहरा बिगाड़ना । मारते मारते मुँह बिगाड़ दूँगा । (३) असंतोष, अप्रसन्नता जताना । मुँह क्यों बिगाड़ते हो और दे दूँगा । (४) लड़ाई, कड़वी बातें । मुँह बिगाड़ मत करो फिर कभी ले लेंगे । (६) शर्मिन्दा करना, गर्व चूर्ण करना । रुपये नाक पर मार कर सेठ जी का मुँह बिगाड़ दिया ।

मुँह भर आना—(१) क़ै आना । (२ मुँह में पानी भर आना ।

मुँह भर के—(१) जी चाहे जितना । मुँह भर के माँगो, खूब मिलेगा । (२) लबालब । (३) पूरी तरह से ।

मुँह भरना—(१) रिश्वत देना । दरोगा जी का मुँह भरो तो काम बने । (२) खिलाना । (३) न बोलने देना ।

मुँह भर बोलना—अच्छी तरह । मुझ से मुँह भर बोलते भी नहीं ।

मुँह भराई देना—रिश्वत देना ।

मुँह बुरा बनाना—चेहरे से नाराजी दिखाना । मुँह क्यों बनाती हो अच्छा बनवा दूँगा ।

मुँह माँगी मुराद पाना—इच्छा पूरी होना । इस विचार को त्यागते ही मुँह माँगी मुराद पा जाओगे ।

मुँह मारना—(१) खाने की चीज़ में मुँह लगाना । (२) दाँत से काटना । (३) जल्दी जल्दी खाना ।

(४) चुप कराना। मेरा मुंह मार दिया कहने न दिया। (५) रिश्वत देना। (६) कान काटना। यह कपड़ा रेशम का भी मुँह मारता है।

मुँह मीठा करना—(१) देकर खुश करना। नौकरी मिलते ही मुंह मीठा करूँगा। (२) मिठाई खिलाना।

मुँह मीठा होना—(१) मिठाई मिलना। (२) सगाई होना। (३) लाभ होना। हमारा मुँह मीठा हो तो काम करा दें।

मुँह मुलाहिजे का—जान पहजान का। यह हमारे मुँह मुलाहिजे का आदमी है घर तो इसका पता नहीं।

मुँह में आना (बात)—कहना चाहना। जो मुँह मे आया कह दिया।

मुँह में कालिख लगना—बहुत बदनामी होना।

मुँह मे खून लगना—चस्का पडना। एक दिन रुपये मिल गये अब मुंह में खून ही लग गया।

मुँह में जबान न होना—बोलने की ताक़त न होना। राजा से कहने के लिये किसी के मुँह मे जबान नही।

मुँह में तिनका लेना—दीनता आधीनता प्रकट करना। मुँह मे तिनका लेकर कहो मै तुम्हारा गऊ हूँ।

मुँह में पड़ना (बात)—सुना कहा जाना! तुम्हारे मुँह बात पड़ी और फैली।

मुँह में पानी भर आना—(१) जी ललचाना। मिठाई देखते ही मुंह मे पानी भर आया। (२) ईर्ष्या होना।

मुँह में बोलना—धीरे बोलना। मुंह में ही बोला होगा मैने तो सुना नहीं।

मुह में लगाम देना—थोड़ा ठीक तरह, सोच समझ कर बोलना।

मुँह में लगाम न होना—बे समझे बक देना। उसके मुंह में लगाम नहीं बाप के सामने गाली देता है।

मुँह मोड़ना—(१) काम करने मे आगा पीछा करना। पहिले वादा किया अब मुँह मोड़ते हो? (२) विमुख, विरुद्ध होना। तुम ही मुख मोड़ लोगे तो हमारा सहारा ही कौन रहेगा।

मुँह रखना—लिहाज, ध्यान, इज्जत रखना। एक बार मुँह रख दिया दुबारा क्या मुँह लेकर कहूँ।

मुँह लगना—(१) सिर चढ़ना। मुँह लगा नौकर बुरा है। (२) सामने बोलना। नीच के मुँह मत लगो।

मुँह लगाना—(१) दे० मुँह चढ़ाना। (२) अधिक आदर

करना । उसे अधिक मुँह मत लगाओ, वह ओछा है। (३) सिर चढ़ाना।

मुँह लाल करना—(१) थप्पड़ मार कर मुँह लाल करना। (२) पान खिलाकर मुँह लाल करना।

मुँह लाल होना—गुस्से में मुँह लाल पड़ना।

मुँह सँभालना — बुरी बातों से रोकना। मुँह सँभाल कर बोलो, गाली क्यों देते हो।

मुँह सफेद होना—दे० मुँह फक होना।

मुँह सिकोड़ना—दे० मुँह टेढ़ा करना।

मुँह सीना बोलने से रुकना, रोकना।

मुँह सुजाना—(१) थप्पड मार कर लाल करना। (२) मुँह फुलाना। मुँह क्यों सुजाती हो तुम्हें भी ला दूँगा।

मुँह सूखना—(१) गला, जबान सूखना, काँटे पड़ना। (२) डर या शर्म से चेहरा फीका पड़ना।

मुँह से दूध की बू आना, दूध टपकना—अनजान बालक होना (हास)। तुम क्या जानो तुम्हारे मुँह से तो अभी दूध की बू आती है।

मुँह से निकालना—कहना। ऐसी बात मुँह से मत निकालो जिससे पकड़े जाओ।

मुँह से फूटना—बोलना, कहना। कुछ मुँह से भी फूटो कि यह चाहता हूँ।

मुँह से फूल झड़ना—प्यारी बातें निकलना। लखपती है पर गरीबों से बात करते हुए भी मुँह से फूल झड़ते हैं।

मुँह से बात छीनना—दे० मुँह की बात छीनना।

मुँह से भाप न निकलना—डर से सन्न होना।

मुँह से लार गिरना, टपकना—बहुत लालच होना। उस माल को देखते ही मुँह से लार टपकने लगी।

मुँह से लाल झड़ना — सुन्दर, शुद्ध, प्यारे प्यारे शब्द निकलना। बोलते क्या हैं मुँह से लाल झडते हैं।

मुँह लेकर रह जाना—काम न होने पर शर्मिन्दा होना। जब उन्होंने भी झिड़क दिया तो अपना सा मुँह लेकर रह गये।

मुँहा मुँही होना—(१) कहासुनी होना। फूट पड़ते ही मुँहा मुँही होने लगी। (२) आपस में चूमना।

मुअम्मा खुलना, हल होना—गुप्त भेद, रहस्य प्रकट होना।

मुकद्दमा लड़ना—मुकदमे के पक्ष में यत्न करना।

मुकद्दर आजमाना—दे० किस्मत आजमाना।

मुकद्दर चमकना—दे० किस्मत चमकना।

मुकर्रर सिकर्रर—कई बार। मुकर्रर सिकर्रर मत करो इस बार ही कर डालो।

मुकाबले पर आना, जमना—विरोध या लड़ने के लिये सामने आना। मुकाबिले पर तो जमता नहीं यों क्या मज़ा चखाऊँ ?

मुकाम देना—मातम पुरसी को जाना।

मुकाम बोलना—सरकारी अफसर का ठहरना। कलक्टर साहब कल यहाँ मुकाम बोलेगे।

मुक़ीम होना—निवास करना। लगभग एक महीना हो गया, वे अब पास के मुहल्ले ही में मुक़ीम हो गये हैं।

मुक्का चलाना, मारना—मुक्के से चोट पहुँचाना, आक्रमण करना।

मुक्का सा लगना—दिल को दुख पहुँचना। बुरी खबर का एक मुक्का सा लगा अभी तक दुख है।

मुखातिब होना—(१ किसी तरफ मुख करना। (२) किसी की ओर घूम कर बातें करना। इधर मुखातिब हों तो अर्ज करूँ।

मुख्तार होना—किसी का प्रतिनिधि बनना। अखिल भारतवर्षीय हिन्दू महासभा के आप ही मुख्तार हैं।

मुग्ध रहना—(१) चुप रहना। (किसी की बावत)। (२) भेद न खुलना।

मुजम्मा लगाना—(१) रोक या आड़ लगाना। तुम मुजम्मा न लगाते तो वह अभी कर देता।

मुजम्मा लेना—आडे हाथों, खबर लेना।

मुजरा लेना—कटौती लेना। यदि हमारे यहाँ से माल खरीदोगे तो दो पैसा रुपया मुजरा लिया जायगा।

मुटाई चढ़ना—(१) मोटा होना। (२) अधिक शेखी आना क्यों मुटाई चढ़ी है साले तेरी भी मुटाई झाड़ दूँगा।

मुटाई झड़ना—शेखी मिटना।

मुट्ठी गरम करना—रुपया, रिश्वत देना। पहिले मुट्ठी गरम करो तो काम बने।

मुट्ठी बंद होना—रहस्य, भेद ज्ञात न होना। घर मे फूट नहीं है इसी से मुट्ठी बंद है।

मुट्ठी में धरा, रखा होना—पास होना। क्या मेरी मुट्ठी मे रखा है जो बता दूँ।

मुट्ठी में—वश मे। अभी तो वे मेरी मुट्ठी में है काम करा दूँगा।

[७३५८]

मुठ भेड़ होना— मुलाक़ात होना। मैं कई दिन से उनकी तलाश में था. आज अचानक सड़क पर उनसे मुठ भेड़ हो गई।

मुड़कर न देखना—खयाल तक न करना। वह तो ऐसे नाराज़ होकर चल दिये कि मैंने बीसियों आवाजे दीं पर मुड़कर न देखा।

मुतास लगना—लघुशंका होना। मैं अभी आकर तुम्हें सब कुछ बतला दूँगा, ज़रा मूत आऊँ मुझे मुतास लगी हुई है।

मुद्दत काटना—(१) थोक माल की कीमत वक्त से पहिले देने पर बाकी दिनों की व्याज काटना। (२ वक्त बिताना।

मुफ्त की रोटियाँ तोड़ना—बेकार बैठे हुये किसी दूसरे का दिये भोजन खाना। तुम्हें क्या पता है कि रुपया कैसे पैदा होता है तुम तो मुफ़्त की रोटियाँ तोड़ते हो।

मुफ्त में—(१) व्यर्थ, बेफायदा। इस बेचारे की जान मुफ़्त में गई। (२) बेदाम। यह घड़ी मुफ़्त में मिलती है।

मुबारक बादी देना—बधाई देना। आज सेठ जी के लड़का हुआ है शहर के सैकड़ों मनुष्य मुबारक बादी देने आये हैं।

मुरंडा करना, होना—सुखाना, सूखना। चार दिन की मेहनत में मुरंडा हो गये।

मुरचंग झाड़ना— आनन्द-चैन करना (व्यंग्य)।

मुरदा उठना—(१) मर जाना (गाली) भगवान करे उसका मुरदा उठे (स्त्री)।

मुरदा करना—(१) पीटते पीटते मार देना। (२) किसी लायक न छोड़ना।

मुरदे का माल— लावारिस माल.

मुरदे की हड्डियाँ उखाड़ना—(१) पुरानी बातों, झगड़ों को फिर से कहना। वह बेचारा कैसा ही था अब क्यों मुरदे की हड्डी उखाड़ते हो व्यर्थ है करा सो भरा। (२) अपने पूर्वजों की निन्दा करना। यदि मुर्दों की हड्डियाँ उखाडोगे तो फिर ठीक ही कर दूँगा।

मुरदे से शर्त बाँध कर सोना— बहुत, घड़घप्प सोना।

मुरव्वत करना—प्रीति दिखाना। आज सेठ जी के लड़का हुआ है, किन्तु अपने मिलने वालों से बड़ी मुरव्वत करते हैं।

मुरव्वत तोड़ना—प्रीति के साथ वर्ताव न रखना। मैं इन्हें ऐसा न समझता था दो वर्ष की मुरव्वत तनिक देर में तोड़ दी।

मुराद पाना—इच्छा पूरी होना। लड़का हुआ मुराद पाई।

[७५७५]

मुराद माँगना—इच्छा पूरी होने की प्रार्थना करना। भगवान से मुराद माँगो वह पूरी करेगा।

मुराद मानना—दे० मन्नत मानना।

मुरादों के दिन—जवानी। मुरादों के दिन हैं हमें भी कुछ मिले।

मुर्दनी छाना (चेहरे पर)—(१) मौत के चिन्ह होना। (२) उदासी, निराशा होना। फेल का नाम सुनते ही चेहरे पर मुर्दनी छा गई।

मुर्दा करना—खूब मारना पीटना। पुलिस ने पीटते पीटते चोर को मुर्दा कर दिया पर उसने कुछ हाल चोरी का न बताया।

मुलतानी करना—मुलतानी रंग में रँगना।

मुलाक़ात कराना—परिचय कराना। किसी दिन मेरे साथ चले चलो तो डिप्टी साहब से तुम्हारी मुलाक़ात करा दूँ।

मुलाक़ात पैदा करना—परिचय प्राप्त करना। मुझे यहाँ रहते हुये चार पाँच बरस हो गये हैं शहर के बड़े बड़े आदमियों से मुलाक़ात पैदा करली है।

मुलाज़िमत अख़्तियार करना—नौकरी स्वीकार करना। हम तो जिसके यहाँ पहले थे, उसी की अब फिर मुलाज़िमत अख़्तियार करली है।

मुलाहिज़ा करना—निरीक्षण करना। आप स्वयं चल कर उसका मुलाहिज़ा कर लीजिये और जो कमी हो उसे बतला दीजिये।

मुलतवी करना—थोड़े दिन के लिये रोक रखना। अभी बर्सात के कारण हमने मकान बनवाने का इरादा मुल्तवी कर दिया है।

मुवाफ़िक़त करना—मिल जुल कर रहना। तुम लोग एक ही जगह के रहने वाले हो फिर भी मुवाफिकत नहीं करते हो।

मुश्किल आसान होना—विपत्ति, कठिनाई दूर होना।

मुश्कें कसना—हाथों को पीठ पीछे बाँध गठरी सा करना।

मुष्ठ मार कर बैठना—चुपचाप बैठना देख लो। सारा काम बिगाड़ कर अब कैसा मुष्ठ मार कर बैठा है।

मुहरा लेना—मुकाबिला करना, सामने होकर लड़ना। उनसे मुहरा लेना छाती वालों का काम है।

मुहर्रम की पैदाइश होना—सदा दुखी, चिन्तित रहना। भाई कभी सुख न मिला, मुहर्रम की पैदाइश रहे।

मुहर्रमी सूरत—रोनी सूरत। ऐसी मुहर्रमी सूरत है, देख लो तो रोटी न मिले।

मुहाविरा पड़ना — आदत हो जाना। घबराओ मत, चार छै दिन काम करोगे तो मुहाविरा पड़ जायगा।

मूँग दलना (छाती पर)—देखो छाती पर मूँग या कोदो दलना।

मूँग की दाल खाने वाला—निर्बल, डरपोक।

मूँछ उखाड़ना—कठिन दड देना, घमड चूर करना। बकोगे तो मूँछे उखाड़ लूँगा।

मूँछ ऐंठना - मूँछे घमड में आकर मरोडना। क्या मूँछ ऐंठते हो क्या कर सकोगे।

मूँछ नीची होना — शर्मिन्दा, बेइज्जत होना। बेटे के बुरे कामों से उनकी भी मूँछे नीची हो गई हैं।

मूँछों पर ताव देना, हाथ फेरना—वीरता की अकड़ दिखाना।

मूँड कर खाना— बेवकूफ बना कर रुपया ऐंठना। नाबालिग को मूँड़ कर खा गये।

मूँड़ चढ़ना—दे० सिर चढ़ना।

मूँड़ चढ़ाना—दे० सिर चढाना।

मूँड़ मारना—(१) सिर खपाना। (२) बहुत हैरान होना, यत्न करना। मूँड मार मर जावो तब भी न पावोगे।

मूँड़ मुड़ाना—सन्यासी होना।

मूँड़ी काटे—सिर काटे (गाली स्त्री)।

मूँड़ी मरोड़ना—(१) गला घोंट कर मारना। (२) धोखे से हानि पहुँचाना।

मूठ करना—तीतर, बटेर पक्षी को मुट्ठी मे लेना।

मूठ चलाना, मारना — जादू करना। भरि गुलाल की मूठ सों गई मूठि सी मारि।

मूठ मारना—(१) कबूतर मुट्ठी में पकडना। (२) हस्तक्रिया करना।

मूठ लगाना—जादू टोने का असर होना।

मूँढ़े पर बैठना—वेश्या बनना (पजाब में वेश्या मूँढे पर बैठती हैं)।

मूत की धार न सूझना—कुछ न दिखाना।

मूत की धार पर मारना - वस्तु लेने की इच्छा न करना।

मूत देना— डर से घबरा जाना।

मूत निकल पड़ना—डर से बुरी दशा होना।

मूली गाजर समझना— अति तुच्छ मानना।

मूसलाधार बरसना—खूब वर्षा होना। कल रात को पूर्व की ओर से घन घोर घटा उठी और मूसला धार पानी बरसा।

मूसलों ढोल बजाना—खूब प्रसिद्ध करना। क्यों बिचारे की बदनामी करने को मूसलों ढोल बजाते हो।

मेंढकी को जुकाम होना—अयोग्य को हौसला होना।

मेंहदी बांधना—मेंहदी की पत्ती पीस कर बांधना।

मेंहदी रचना—मेंहदी का रंग खिलना।

मेंहदी रचाना—मेंहदी लगाना।

मेंहदी लगाना—(१) मेंहदी को पानी में पीस कर लगाना। (२) उसका पत्ती पीस हथेली या तलवे में लगाना।

मेंहदी लगी है? क्या पैर काम में नहीं लाए जा सकते।

मेख ठोंकना—(१) हाथ पैर में कील ठोंकना। (२) दबाना। ऐसी मेख ठोकी है कि जन्म भर को ज़ेर कर लिया है। (३) तोप का मुँह बंद कर देना।

मेख मारना—(१) कील ठोंकना। (२) भाँजी मारना। ब्याह में मेख मार दी वह रुक गया। (३) काम में रुकावट डालना।

मेदा कड़ा होना—कब्ज-रोग होना।

मेदा साफ होना—मल साफ होना।

मेरे मुँह से—मेरे ही कारण। तुम्हें मेरे ही मुँह से रुपये मिल गये वर्ना वह तुम से बात भी न करता।

मेल करना—संधि, मित्रता करना।

मेल खाना, बैठना, मिलना—(१) पटरी बैठना, संगत साथ निभना। मेरा आपका मेल नहीं खा सकता। (२) दो वस्तुओं का परस्पर उपयुक्त होना। जम्पर का रंग साड़ी के रंग से मेल नहीं खाता।

मेल होना—संधि, सुलह होना।

मेला सा लगना—बड़ी भीड़ लगना। यह तो तीर्थ स्थान है, यहाँ तो हर समय मेला सा लगा रहता है।

मेष करना—मीन मेख करना, आगा पीछा, संकल्प विकल्प करना।

मेहनत उठाना—दुःख सहना। आज ये जो कुर्सी पर डटे बैठे हैं ये बड़ी मेहनत उठा कर पढ़े थे।

मेहमानी करना—खूब गत बनना, पीटना (व्यंग्य)। नंद महरि की कानि करति हों नतरु करत महमानी।

मैदान करना—(१) लड़ना, युद्ध करना। (२) खुली जगह छोड़ना। (३) ढा देना।

मैदान छोड़ना—लड़ाई से हटना।

उनसे लडना आसान नहीं। बड़े बड़े वीर मैदान छोड़ गये।

मैदान मारना—(१) खेल, बाजी, जीतना। (२) विजय करना।

मैदान मे आना—लड़ने को सामने आना। मैदान मे आओ जैसा कि वीर करते हैं फिर बोलो क्या बात है।

मैदान साफ़ होना—रास्ते में रोक न होना।

मैदान हाथ आना, पाना—युद्ध में विजय होना। मैदान सिक्खों के हाथ आया।

मैदान होना—युद्ध होना।

मैल रखना (मन में)—द्वेष, जलन होना।

मैल होना हाथ की—तुच्छ वस्तु। रुपया हाथ का मैल है।

मैला करना—गदा करना। तुम बड़े बुरे लड़के हो एक ही दिन में साफ कपड़ो को मैला कर लेते हो।

मैले सिर से होना—रजस्वला होना।

मोटा आसामी—धनवान। इसने तो मोटा आसामी फांसा है, लाख पर हाथ मारेगी।

मोटाई उतरना—पाजीपन छूटना, शेखी टूटना।

मोटाई चढ़ना—पाजी, बदमाश, घंमडी होना।

मोटाई झड़ना—(१) बदमाशी छूटना। (२) ऐंठ निकलना।

मोटा झोटा—घटिया, साधारण। गाँव में मोटा झोटा खाना, मोटा झोटा पहनना बस यही है।

मोटा दिखाई देना—कम दिखना, सिर्फ मोटी चीज़ दिखना।

मोटा पेट होना—भारी भरकम होना, धनवान होना।

मोटा भाग्य—भला भाग्य। सहज संतोषहि पाइये दादू मोटे भाग।

मोटा शिकार मोटा चिड़िया—दे० मोटा आसामी।

मोटी चुनाई—बे डौल पत्थरो की जोड़ाई।

मोटी बात—मामूली बात। मोटी बात है हर कोई जानता है कि झूठ बुरा है।

मोटी भूल—भद्दी, भारी भूल। ऐसी मोटी भूल तुमसे नहीं होनी चाहिये।

मोटे तौर पर—साधारणतया।

मोटे हिसाब से—अंदाज या अट-कल से।

मोतियों से मुँह भरना—खुश हो कर बहुत धन देना।

मोती की सी आब उतरना—बदनाम हो जाना। तुम उस नीच स्त्री से प्रेम न करो तुम्हारी मोती की सी आब उतर जायगी।

मोती गरजना—मोती चटकना, कड़कना या उसमें बाल पड़ना।

मोती ढलकना—रोना (व्यंग्य)। रोती हो या गालों पर मोती ढलक रहे हैं।

मोती पिरोना—(१) रोना (व्यंग्य)। (२) सुन्दर साफ लिखना। (३) प्रिय बोलना (४) बहुत बारीक काम करना।

मोती बींधना—(१) मोती में छेद करना। (२) संबंध होना।

मोती रोलना—थोड़े परिश्रम से बहुत कमाना।

मोम करना—रहम दिलाना।

मोम का हो जाना—बहुत दया आ जाना।

मोम की नाक—(१) अस्थिर मति। (२) जिसका जरा देर मे मिजाज बदले।

मोम की मरियम—बड़ी नाज़ुक स्त्री।

मोम होना—दया आना, पिघलना। दुखी दशा देखते ही वह मोम हो गये और रोने लगे।

मोमियाई निकालना—(१) खूब मारना पीटना। (२) बड़ी मेहनत कराना।

मोरचा खाना—जंग जमना।

मोरचा जीतना—वैरी की रक्षक सेना जीतना।

मोरचा बंदी करना—सेना नियुक्त करना, रोक लगाना।

मोरचा बाँधना—दे० मोरचा बन्दी करना।

मोरचा लेना—युद्ध करना। राजपूतों से मोरचा लेना टेढ़ी खीर थी।

मोरी छूटना—दे० पेट चलना।

मोरी पर जाना—पेशाब करने जाना (स्त्री)।

मोल करना—(१) वस्तु का मूल्य तै करना। मोल करो क्या माँगता है। (२) उचित से अधिक मूल्य कहना।

मोल तोल चुकाना—दाम ठीक करना। मुझे ऐसी चीज़ों से कभी काम नहीं पड़ा है ज़रा आप चल कर मोल तोल चुका लीजिये।

मोल तोल होना—सौदा पटना। उसने एक पुस्तक पसन्द की और मोल तोल होने लगा।

मोल देना—कीमत देना। मै मुफ़्त ले जाना नही चाहता, यदि आप को देना ही है तो इनमे से एक मोल दे दीजिये।

मोल लेना—ख़रीदना। अभी मुझे बहुत देर लगेगी क्योंकि मुझे अभी बहुत सा सामान मोल लेना है।

मोहड़ा मारना—काम सब से पहिले कर डालना।

मोहड़ा लगाना—अन्न की बोरी का मुँह खोल कर रखना (अन्नव्यापारी)

मोहनी डालना—मोहित करना, जादू सा करना। उसने तो ऐसी मोहनी डाली है कि दिन भर वहीं रहते हैं।

मोहना लगना—जादू सा लगना, मोहित होना। मुख देखत मोहिनी लागत रूप न बरन्यो जाई।

मोहरा लेना—(१) सेना का सामना करना। (२) भिडना।

मोह लेना वशीभूत करना। उस की तिरछी चितवन ने मेरे मन को मोह लिया।

मौक़ा देखना, तकना—दाँव देखना, ठीक अवसर देखना।

मौक़ा देना—समय देना। दो दिन का मौक़ा दो तो मैं ला दूँ।

मौक़ा पड़ना — (१) दुख संकट पडना। मौक़ा पड़े पर काम न आई तो दोस्ती क्या। (२) आवश्यकता होना। मौक़ा पडेगा तो खरीद लेंगे।

मौक़ा पाना—(१) फ़ुरसत मिलना। मौक़ा पाऊँगा तो कर दूँगा। (२) उचित समय पाना।

मौक़ा मिलना—(१) समय मिलना। मौक़ा नहीं मिलता आऊँ कैसे। (२) घात पाना।

मौक़ा हाथ लगना—अवसर पाना। ऐसे में तुम भी चले जाओ फिर ऐसा मौक़ा हाथ न लगेगा।

मौके को हाथ से न जाने देना—अवसर न चूकना। देखो मै फिर कहता हूँ कि मौके को हाथ से न जाने दो, फिर ऐसा मौका हाथ न आयेगा।

मौज आना—उमग में भरना, धुन होना।

मौज उठना—उमग उठना।

मौज खाना—हिलोरे, लहरे आना (लश्करी)।

मौज पाना—मरजी इच्छा जानना। आपकी मौज पाऊँ तो एक माल लाऊँ।

मौज मारना—(१) लहराना। दरिया मौज़े मार रहा है। (२) आनन्द भोगना।

मौज में आना—स्वयं इच्छा उमग उठना। अपनी मौज में आती खरीद लाते, मैंने मँगाया तो नहीं लाये।

मौजूद रहना—(१) पास रहना। तुम भी मौजूद रहना, शायद काम पड़ जाय। (२) ठहरे रहना। आप मौजूद रहोगे तो मैं जल्दी लौट आऊँगा।

मौत आना—मरने को होना। दुख में मौत नहीं आती।

मौत का तमाचा मौत की याद दिलाने वाला काम, घटना।

मौत का पसीना आना—अभी मरने वाला, मरने के लक्षण होना।

मौत के दिन पूरे करना—अति कष्ट कर दिन जिनमें मृत्यु ही संभव हो बिताना।

मौत बुलाना—मरने लायक काम करना।

मौत सिर पर आना, खेलना—(१) मरने को होना। मौत सिर पर खेल रही है और तुम अला बला खा रहे हो। (२) कुएँ मे क्यों झाँकते हो क्या मौत सिर पर खेल रही है? (३) प्राणों का भय। (४) बुरे दिन आना।

मौत से लड कर आना मरते मरते बच जाना, बुरी हालत में जीना।

मौन खोलना—चुप्पी के बाद बोलना।

मौन गहना—चुप ही रहना। तुमने तो वहाँ जाकर मौन ही गह लिया, कुछ तो कह देते।

मौन तजना—बोलने लगना। तुम मौन तजो कुछ तो बोलो।

मौन धरना, धारण करना—चुप हो जाना।

मौन बाँधना—चुप होना। नाहिं तो मौन बाँध होइ गूँगा।

मौन लेना—चुप्पी धारना। जब देखा यहाँ कोई बात न सुनेगा तो मौन ले लिया।

मौन सम्हारना—मौन धारना, साधना।

मौर बँधना—व्याह के समय सिर पर मुकुट बँधना।

मौर बांधना—मँजरी निकलना।

मौसर आना—मिल सकना। मुझे जीवन में कभी यह चीज़ मौसर नहीं आई है।

म्याँऊ का मुँह—खतरे की जगह। मुख्य या कठिन काम। म्याऊँ का मुँह कौन पकड़े? इधर उधर को तो सब तैयार हैं।

म्याऊँ म्याऊँ करना—डर से धीरे धीरे बोलना, बोल बद करना।

म्यान से बाहर होना—आपे से बाहर होना। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो मुझ पर व्यर्थ ही म्यान से बाहर होते हो।

म्याँव म्याँव करना—डर मे बोला न जाना। जब मालिक ने फटकारा तो म्याँव म्याँव करने लगे।

य

यकीन करना—निश्चय करना। मैंने दिल में यकीन कर लिया कि अब उस स्थान पर भूल कर भी न जाऊँगा।

यकीन लाना—विश्वास करना। मैंने आपको हर तरह से समझा दिया है, फिर भी आप यकीन नहीं लाते।

यद्धा तद्धा—(१) जैसे तैसे। (२) कुछ न कुछ।

यमलोक भेजना—मार डालना।

यश कमाना, लूटना—नाम पैदा करना। दान देकर यश कमाया।

यश गाना—बड़ाई करना। टुकड़े खायेंगे यश गायेंगे।

यश मानना—बडप्पन मानना।

यह बात ही क्या है—मामूली है, कोई कठिन नहीं।

यह वह—टाल मटूल। तुम्हारी यह वह न चली।

यहाँ का बाबा आदम ही निराला है—यहाँ रग ढंग, नियम ही अजीब है जैसा और कहीं नहीं।

यहाँ का यहीं—(१) इसका इसी जगह (२) दुनिया का दुनिया ही में। सब धन यहाँ का यहीं रह जाता है।

यहाँ सब कान पकड़ते हैं—किसी की उस्तादी नहीं चलती।

यातायात करना, लगा रहना—(१) जन्म मरण होता रहना। जब तक मोक्ष न होगी जीव यातायात करेगा ही। (२) जाना आना लगा रहना।

याद करोगे—पीछे पछताओगे।

याद में न देखना—होश में न देखना। हमने तो अपनी याद में इन्हें जवान नही देखा।

यार बनना—(१) दोस्त बनना। (२) मुहब्बत में फँसना। (३) मतलबी होना। जब वही यार बना तो यह क्यों चूके।

यार मारी करना—यार बन कर धोखा देना।

यारी कुट करना—दोस्ती छोड़ना। हमारी तुम्हारी यारी कुट।

यारी गाँठना—दोस्त बनाना। मतलब के लिये सब से यारी गाँठो।

युग फोड़ना—मित्रों में फूट पैदा करना। इनमें वर्षों से गाढ़ी मित्रता थी, किन्तु इसने आकर युग फोड़ दिया।

युग धर्म—समय के नियम, रीति।

युग युग—बहुत दिनों तक। युग युग जिये युगल जोड़ी यह पिये प्रेम मकरन्द।

युग युगान्तर से—बहुत दिनों से।

युद्ध मांडना—लड़ना। संधि के बजाय युद्ध मांड दिया।

यों न यों—जैसे बने वैसे, जैसे हो तैसे।

यों ही देना—मुफ्त देना। इतनी तो मै योंही दे देता।

यों ही सही—इस तरह भी मंजूर।

यौवन उभरना—(१) जवानी आना। (२) सौन्दर्य झलकना। (३) रौनक पकड़ना।

यौवन ढलना—जवानी बीतना।

यौवन पर आना—दे० यौवन उभरना।

र

रंग आना, चढ़ना—(१) चेहरे पर रौनक आना। (२) रंगीन होना। कपड़ा आदि (३) मज़ा मिलना।

रंग उखड़ना—(१) रौब, धाक न रहना। पहिले रुपया बरसता था पर अब उनका रंग ही उखड़ गया है। (२) आनन्द नाश होना।

रंग उड़ना, उतरना—(१) रंग का फीका पड़ना। (२) नशा दूर होना। (३) बहकाने में न रहना। (४) डर या शर्म से चेहरे पर रौनक न रहना।

रंग कटना— आनन्द मनाया जाना। आज कल तो धन्धा अच्छा चल रहा है, घर मे खूब रंग कट रहा है।

रंग खेलना—रग डालना। खेलत रग परस्पर हिल मिलि।

रंग चढना—प्रभाव पड़ना। उनका रग चढ़ गया तो समझो हजार दो हजार का पानी होगा।

रंग जमना—(१) रंग चढ़ना। (२) ठीक जँचना। (३) बाहर आना। महफिल में रंग जमा हुआ था। (४) मस्ती होना। भंग का रंग जमा है। (५) धाक जमना। महफिल में मेरा रंग जम जाय तो रुपये हजार ले लो। (६) जीत की गोटी बैठना।

रंग जमाना—(१) रग चढ़ाना। (२) बुनियाद डालना। (३) रोब में लाना। कैसा रंग जमा कर काम निकालता हूँ। (४) असर डालना।

रंग चूना—(१) रंग झलकना। चेहरे से रंग चू रहा है। (२) यौवन उमड़ना।

रंग टपकना—दे० रग चूना।

रंग डालना फेंकना— होली खेलना, एक दूसरे पर रंग डालना।

रंग ढंग देखना — चाल ढाल परखना। लड़के के रंग-ढग तो देखो।

रंगत आना—आनन्द होना।

रंग दिखाना—संकट में फँसाना। अभी तो देखते जाओ, ये तुम्हारे सेक्रेटरी साहब क्या क्या रग दिखाते हैं।

रंग देखना—परिणाम सोचना। तुम किसी काम का रग भी देखते हो, या वैसे ही अंट शंट कर डालते हो।

रंग देना—फँसाने के लिये प्रेम जताना। रंडी अभी रंग दे रही है

[७७७४]

एक पैसा नहीं लेती फिर इकट्ठे वसूल करेगी।

रंग निकलना, निखरना—(१) रंग चटकीला होना। (२) चेहरे का रंग गोरा होना।

रंग पकड़ना, रंग पर आना—जवानी पर आना। रंग पर आवेगी तब तो परी सी जँचेगी।

रंग फक्क पड़ जाना—डर से घबड़ा जाना।

रंग फीका पड़ना, होना—(१) रंग हलका होना। (२) चेहरे की रौनक न रहना।

रंग फीका रहना—पूरा प्रभाव न पड़ना।

रंग बँधना—(१) रौब गाँठना।

रंग बदलना—(१) नाराज़ होना। अभी बड़े प्रसन्न थे जरा देर में रंग बदल गये। (२) हालत बदल जाना। अब रंग बदल गये हैं वह हाल नहीं है।

रंग बरसना—खूब शोभा होना। आज तो यहाँ रंग बरस रहा है, शोभा हो रही है।

रंग बांधना—(१) नाराज़ होना। (२) झूठा ढोंग रचना।

रंग बिगड़ना—(१) बुरा हाल होना। अनगढ सुघड़ समाज में आये बिगड़े रंग। (२) रंग खराब हो जाना। (३) रौन न रहना। (४) शेखी किरकिरी होना।

रंग बिरंगा—कई रंग का।

रंग मचाना—(१) खूब लड़ना, मारकाट करना। (२) धूम मचाना। असवारी में रंग मचावे, मन के संग तुरंग चलावे।

रंग मारना—अन्य रंग की गोटी मारना।

रंग में ढलना—विचार के अनुसार चलना। लड़का उस बदमाश के रंग में ढल गया है, सुधारो।

रंग में भंग करना—आनन्द, मज़ा बिगड़ना।

रंग में भंग पड़ना—भोग, आनन्द, हँसी में विघ्न पड़ना।

रंग रचाना—(१) विवाह या अन्य खुशी का सामान करना। (२) रंगीन करना।

रंग रलना—आमोद प्रमोद करना।

रंग रलियाँ मचाना, करना—भोग, आनन्द मे मस्त होना।

रंग लाना—(१) हालत करना। रंग लाती है जवानी रूप मिल जाने के बाद। (२) बुराई करना। (३) जाल फैलाना। (४) तंग करना।

रंग हटाना—असर दूर करना। इसके ऊपर गुंडों का रंग जम गया था, बड़ी कठिनाई से मैंने रंग हटाया है।

रंग है—वाह, शाबाश।

रंगा सियार होना—ढोंगी होना।

गेरुए कपड़ों पर मत भूलो यह रंगा सियार है।

रंजक उड़ाना—(१) तोप-बन्दूक छूटने के लिये बत्ती बारूद जलाना। (२) पादना (बाजारू)।

रंजक चाट जाना—बारूद जल कर रह जाना पर तोप-बन्दूक न छूटना।

रंजक देना—गाँजे चरस का दम लगाना।

रंजक पिलाना—तोप-बन्दूक की प्याली में जरा बारूद रखना।

रंजीदा करना—अप्रसन्न करना। तुम दो एक रुपया ज्यादा ले लो पर अपना मन रंजीदा मत करो।

रंडापा झेलना—वैधव्य भोगना। तुम्हें पता है कि बेचारी किस तरह दुख उठाकर रंडापा झेल रही है।

रकाब पर पैर रखना—जाने को तैयार होना। जब आते हैं रकाब पर पैर रखे ठहरते तो हैं ही नहीं।

रक्त के मुहावरे 'खून' में देखो

रक्त पात होना—खून बहना। दिल्ली के लिये बड़ा रक्तपात हुआ है।

(किसी पर) रख कर कहना—(१) अन्य के बहाने अन्य से कहना। उस पर रख कर वह मुझे गाली दे रहे थे। (२) पूरी बात न कहना।

रख रखाव—पालन पोषण। जब से इसके माता पिता मरे हैं तब से इसके रख रखाव का भार इसी पर रहा है।

रख छोड़ना—बचा रखना। मैंने तुम्हारे लिये दरियाँ एक महिने से रख छोड़ी थी, जब तुम न आये तो फिर बेच डाली।

रख लेना—न लौटाना, न देना दबा लेना। आपने मेरे लिये भेजी उन्होंने खुद ही रख ली।

रग उतरना—(१) क्रोध ठंडा होना, जिद उतरना। (२) हठ न रहना (३) आँत उतरना।

रग खड़ी होना—कोई रग फूलना।

रग चढ़ना—(१) जिद पड़ना। (२) क्रोध आना।

रग दबना—दबाव मानना। तुम्हारी रग उन्ही से दबती है, मेरा कहा तो मानते ही नहीं।

रग फड़कना—(१) रग फड़कने से बुरा-भविष्य दिखना।

रग रग फड़कना—चुल बुला होना। उसकी रग रग फड़कती है।

रगड़ पड़ना बहुत मेनहत पड़ना। दो सौ मील सफ़र! मोटर साइकिल पर!! रगड-पड़ी हो गया बीमार।

रगड़ान देना—रगड़ना, घिसना।

रग पट्ठे से परिचित, वाक़िफ़ होना—खूब आदत पहचानना।

[७८१८]

रग रग में—शरीर भर में व्याप्त। तुम्हारी रग रग में बदमाशी भरी है।

रग-रग में कूट कूट कर भरी होना—सम्पूर्ण रूप से होना। चालाकी तो इसकी रग रग में कूट कूट कर भरी हुई है।

रग रग में पैठना—शरीर में असर करना। जब तक उसका पता लगा तब तक ज़हर उसकी रग रग में पैठ चुका था।

रग रग से—पूरे तौर से। उसे तो मैंने रग-रग से राजी कर लिया है, परन्तु वह दूसरा किसी तरह पंजे में नहीं आता।

रग रेशे में—अंग अंग में। रग रेशे में बदमाशी भरी पड़ी है।

रग रेशे से वाकिफ होना—नस नस पहचानना।

रचि रचि—बना बना के।

रट लगना—बहुत इच्छा होना। तुमसे तो कोई बात कह दूँ, फिर तो तुम्हें उसकी रट लग जाती है।

रत्ता जागना—भाग्य खुलना। आज उनकी रत्ती खूब जागी है, व्यापार में कई हज़ार का नफा हुआ है।

रत्ती भर—जरा सा। रत्ती भर नमक दे दो काफी है।

रत्ती रत्ती—सारा, जरा जरा सा। मैं उसके घर का रत्ती रत्ती हाल जानता हूँ।

रपट्टा लगाना, मारना—(१) झपटना, दौड़ना। (२) फिसलना।

रफू करना—फटे कपड़े को सीना। मेरी धोती में एक छेद हो गया है, आज याद करके उसे रफू कर देना।

रफू चक्कर बनना, होना—भाग जाना। दरोगा को देखते ही सब रफू चक्कर हो गये।

रफ्ता रफ्ता—धीरे धीरे। अभी तो नया है, रफ्ता रफ्ता सब समझ जायगा।

रवदा पड़ना—खूब बरसना।

(रास) रमाना—रास जोड़ना। श्रीकृष्ण गोपियों को जोड़ रात भर नृत्य क्रीड़ा कर रास रमाते।

(भभूत) रमाना—देह में राख मलना, लगाना।

(मन) रमाना—मन बहलाना, दुख चिंता से हटा कर मन प्रसन्न करना।

रला डालना—उलट पुलट करना। तुम बड़े शैतान हो, बिना पूछे ही सारी पुस्तकों को रला डाला।

रवा भर—ज़रा सा, कण बराबर।

रवाज देना—रीति चलाना। उन्होंने वेश्या नचा ब्याहों में नाच कराने को रवाज दिया।

रवाज पकड़ना—प्रचार होना, जारी होना। अब तो यह रवाज पकड़ गया है कि...।

रवाना करना—भेजना। अभी अभी कलकत्ते का पत्र मिला है कि उन्होंने कल माल रवाना कर दिया है।

रवाना होना—चलना। घर से खा पीकर हम लोग दस बजे रवाना हुये, और बारह बजे तक वहाँ पहुँच गये।

रस भीजना, भीनना—(१) चीज़ के आनन्द का वक्त आना। (२) यौवन आना। ह्याँ उनके रस भीजत त्यों दृग ह्याँ उनके मसि भीजत आवै।

(हिस्सा) रसद—बँटने पर हिस्से अनुसार लाभ।

रसना खोलना—बोलना शुरू करना।

रसना तालू से लगना—चुप होना। रसना तालू सो नहिं लावत पीवै पीव पुकारे।

रस रस, रसे रसे—धीरे धीरे। रस रस सूख सरित सर पानी।

रस लेना—मज़ा लूटना।

रसातल में पहुँचना—बरबाद होना। इज्जत उनकी रसातल को पहुँच जायगी।

रसीद करना—(१) थप्पड़ जड़ना। मैंने उनके मुँह पर एक चपत रसीद किया। (२) भेजना। जहन्नुम रसीद करो साले को।

रसीद काटना—प्राप्ति पत्र देना।

रसोई चढना—खाना बनना।

रसोई तपना—भोजन बनना।

रस्सी का साँप बनाना—झूठी बात की भयंकर धूम मचाना।

रस्सी ढीली छोड़ना—लगाम ढीली करना, मुहलत, रियायत देना।

रह चलना, जाना—(१) जाने का ध्यान छोड़ना। (२) कारण वश न जा सकना।

(किसी) के रहते—होते हुए। मेरे रहते तुम्हे क्यों चिंता ?

रहने देना—(१) जाने देना, ध्यान न देना। (२) रद्दो बदल न करना।

रह जाना—(१) कुछ कार्रवाई न करना। तुम्हारा लिहाज़ करके रह गये वरना मज़ा चखा देते। (२) लाभ न उठा सकना। सब पा गए तुम रह गए (३) अंग को लकवा मारना या शिथिल पड़ना। लिखते लिखते हाथ रह गया। (४) पीछे छूटना। (५) बचना। सब लूट गया यही रह गया।

रह रह के—(१) घड़ी घड़ी, बार बार। (२) पछता पछता कर।

[७८६१]

रह रह के मुझे वही बात याद आती है।

रहस्य खुलना—भेद खुलना। उसे देखकर सारा रहस्य खुल गया।

रहा जाना—शान्ति, सतोष होना। मेरे से न रहा गया बोल पडा।

राई काई करना—टुकडे टुकड़े करना।

राई काई होना—टुकडे टुकड़े होना। पवन के झोंकों से बादल राई काई हो गये।

राई नोन (आंखों मे)—ईश्वर करे तेरी नजर मुझे न लगे। (स्त्री)।

राई नोन उतारना—नजर लगे बच्चे पर राई नोन को उतार करके आग में डालना, नजर दूर करना।

राई भर—रवा भर।

राई रत्ती—सब कुछ। राई-रत्ती भी हाल मुझ से छिपा नहीं है।

राई रत्ती करके—थोड़ा थोड़ा करके। राई रत्ती करके अधे का सब माल ले गये।

राई मे पर्वत करना, होना—थोड़ी बात बढ जाना। तुम तो राई से पवत कर देते हो, मैंने इतना नहीं कहा था।

राग अलापना—(१) अपनी ही बात कहते रहना। मेरी भी सुनते हो या अपना ही राग अलापे जाते हो!

राग गाना—राम कहानी कहना। बेचारी सब से अपना राग गाती फिरी किन्तु किसी ने उसके प्रति दया प्रकट न की।

राग पूरना—अपने सुख दुखों का बयान करना। उनके पास कोई ज़रा देर को भी जाओ तो बस वे अपना राग पूर देते हैं।

राग रग में रहना—भोग विलास करना। जिस समय मुगल बादशाह रागरङ्ग मे रहते थे उसी समय अग्रजों ने आकर इन्हें जीत लिया।

राग लाना—झगड़ा खड़ा करना। तुम्हारा भाई तो ऐसा बिगडा है, कि प्रति दिन कोई न कोई राग ले आता है।

राछ घुमाना—वर की पालकी को कुएँ या जलाशय की परिक्रमा कराना।

राज काज—राज का प्रबंध। राजा ने राज काज सँभाला।

राज देना—राजा बनाना। भाई को राज दे बन चल दिये।

राज पर बैठना—सिंहासन पर बैठना, राजा बनना। जब से राज पर बैठा, लडता ही रहा।

राज रजना—(१) राज्य करना। (२) राजाओं सा सुख भोगना।

राज रजाना—खूब सुख देना। तुम्हारी बेटी सेठ के घर राज रजायेगी।

राज़ी खुशी—सकुशल। आज मुझे खबर मिल गई कि वे सब लोग राजी खुशी गाँव पहुँच गये।

राज़ी होना—सन्तुष्ट होना। उसकी कुछ चिंता न करो, उसे तो जो कुछ दे दोगे उसी में राज़ी हो जायगा।

रात की रात—(१) रात भर। (२) एक ही रात। (३) आज की रात। रात की रात वहाँ रहे सवेरे चल दिये।

रात दिन—हर समय।

रात दिन का रोना—हमेशा की खटपट या तकलीफ़।

रात दिन बराबर होना—रात को भी आराम न मिलना।

रात भारी होना—दुख के मारे रात असह्य होना। आज मेरी आँखे दुखने आगई हैं, जिससे आज की रात बड़ी भारी है।

रान तले दबाना—वश में करना। उसने तो इसे ऐसा रान तले दबा लिया है, कि बिना उसके कोई काम ही नहीं करता।

राम कहानी—दुखदाई लम्बी कथा। जब मैंने उसे सान्त्वना दी तो वह इस प्रकार अपनी राम कहानी सुनाने लगी।

राम जाने—(१) मुझे नहीं मालूम (२) भगवान साक्षी है। राम जाने मैं सच कह रहा हूँ।

राम नाम सत्य है—मरने के बाद कहते हैं।

राम राम करके—बड़ी कठिनता से। राम राम करके उनसे इतना करवाया वरना बिल्कुल तैयार न थे।

राम राम करना—(१) राम नाम जपना। (२) नमस्कार करना।

राम राम होना—मिलना, भेंट होना। कभी कभी बाजार में राम राम होती है, घर तो आते नहीं।

राम राम हो जाना मर जाना।

राम शरण होना—(१) वैरागी होना। (२) मर जाना। राम राम कहि राम कहि राम शरण भए राउ।

राय कायम करना—निर्णय, निश्चित विचार करना।

राल गिरना, चूना, टपकना—बहुत इच्छा होना। किसी के पास कोई अच्छी चीज़ देखी और तुम्हारी राल टपकी।

राशि आना—पक्ष मे अनुकूल होना।

राशि बैठना—गोद बैठना।

राशि मिलना-(१) दो का एक राशि मे जन्मना। (२) मेल खाना।

रास कड़ी करना — लगाम खींचना।

रास बैठाना, लेना—(१) गोद लेना । (२) जन्म पत्री मिलना । दोनों की रास बैठ गई अब विवाह हो जायगा ।

रास में लाना—वश में करना । रास में लाओ नहीं मुँह जोर हो जायगा ।

रास्ता काटना—(१) रास्ते चलने में मनाही होना । (२) सामने इधर से उधर जाना । बिल्ली रास्ता काट गई, मैं न जाऊँगा । (३) एक छोड़ दूसरे रास्ते जाना ।

रास्ता देखना—इन्तज़ार, प्रतीक्षा करना ।

रास्ता नापना—(१) बार बार आना जाना । कुछ काम है तभी तो रास्ता नापता है (२) जाना । हटो अपना रास्ता नापो ।

रास्ता पकड़ना—(१) चले जाना । (२) किसी रास्ते से जाना । ऐसा रास्ता पकड़ो जो जल्दी ले हो जाय ।

रास्ता फूटना—एक में दूसरा रास्ता निकलना । दो रास्ते फूटते हैं, तुम सीधे हाथ जाना ।

रास्ता बताना—(१) तरीक़ा, तरकीब बताना । मैं रास्ता बता दूँगा उससे सब रुपये मिल जावेंगे । (२) धोखा देना ।

रास्ते पर आना—(१) ठीक हो जाना । (२ राय मानना । ठोकर खा कर भी तो मेरे कहे रास्ते पर आये । (३) नेक बन जाना । (४) वश में होना ।

रास्ते पर लाना—ठीक करना । लड़का बिगड़ा है रास्ते पर लाओ ।

राह ताकना, देखना—इंतजार करना । राह देखते फूटी आँखें ।

राह चलते का पल्ला पकड़ना—प्रत्येक मनुष्य से व्यर्थ झगड़ा करना । तुम बड़े ठीक हो राह चलतों का पल्ला पकड़ते हो ।

राह पर आना—वश में हो जाना । अभी यह बड़ा ऊधम मचाता है, जब मार पड़ेगी तो सब राह पर आ जायगा ।

राह पड़ना—(१) नियम हो जाना, रास्ता बन जाना । अब तो यह राह पड़ गई है कोई कुछ नहीं कहता । (२) डाका पड़ना ।

राह बाँधना—अन्दर न आने देना । उन्होंने तो खेल के तम्बू की राह बाँध दी है, किसी को जाने ही नहीं देते ।

राह मारना—अपनी उन्नति के मार्ग में बाधाएँ डालना । तुमने अपने मालिक से झगड़ा करके अपनी राह मार ली ।

राह रखना—व्यवहार कायम रखना । तुमने इन दो रुपयों को मार कर आगे के लिये राह नहीं रक्खी ।

राह लगना—(१) पीछे पीछे चलना। (२) रास्ता पकड़ना। (३) थका होना। राह लगी है इसी से सो गया है।

राह लेना—रवाना होना। जैसे ही काँव काँव करने से कौवे की चोंच से रोटी का टुकड़ा गिरा कि लोमड़ी ने उठा कर अपनी राह ली।

राह से चलना—अच्छा वर्ताव करना। यदि वे तुमसे अच्छी तरह बोलते हैं तो तुम भी उनके साथ राह से चलो।

राह से बे राह होना—कुमार्ग पर चलना। विश्वामित्र मुनि मेनका के सौन्दर्य पर मुग्ध हो कर राह से बे राह हो गये।

राही करना—पथिक बनाना, अनुगामी बनाना।

राही होना—चल देना। लेकर ज़रो वो माल जो था दरकार, राही हुआ छोड़ छाड़ घर बार।

राह बता जाना—तरकीब बताना। मै तुम्हें राहें बता गया था किन्तु तुम फिर भी न सम्हले।

रिजक मारना—जीविका, रोटी, निर्वाह, रोजी में विघ्न डालना।

रिवाज पकड़ना—प्रचलित होना। किसी समय यहाँ पर सती रिवाज पकड़ गई थी किन्तु अँग्रेजों ने आकर उसे बंद कर दिया।

रिश्वत खाना—रिश्वत लेना। यदि तुम अधिक रिश्वत खाओगे तो किसी दिन पकड़े जाओगे।

रिस मारना—(१) क्रोध रोकना। लाचार हूँ रिस मार कर बैठ रहती हूँ। (२) रिस मारे डालती है। इन कामों को देखकर तो जल जाती हूँ, बड़ी रिस मारे डालती है।

रीझ पचाना—अपनी खुशी को छिपाना। वह अपने प्रियतम के आने से बड़ी प्रसन्न है, किन्तु रीझ पचा रही है।

रीस करना—स्पर्धा करना। यदि तुम हर किसी से रीस करोगे तो किसी दिन धोखा खा जाओगे।

रुख देना—ध्यान देना।

रुख फेरना, बदलना—(१) नाराज़ होना। अब रुख बदल गया है मदद न करेंगे। (२) मुँह फेरना। (३) दूसरी तरफ ध्यान देना।

रुख बदलना—विमुख होना। पहले तो हर बात में सहायता करते थे किन्तु अभी कुछ दिनों से रुख बदल गया है।

रुख मिलाना—मुँह सामने करना।

रुपया उठाना—रुपया खर्च करना। बड़ा रुपया उठाया पर अच्छा न हुआ।

रुपया उड़ाना—रुपया व्यर्थ बहुत खर्चना। उन्होंने रुपया उठाया नहीं उड़ाया है, वरना इतने रुपये खर्च नहीं था।

रुपया जोड़ना—रुपया इकट्ठा करना। कितना ही रुपया जोड़ो, मरने पर सब व्यर्थ है।

रुपया ठीकरी करना—खूब खर्च करना। व्यर्थ में रुपया ठीकरी कर दिया एक लाख उठा।

रुपया तुड़ाना—रुपये को आने पाई आदि में बदलाना। मेरे पास इस समय पैसे नहीं है, अभी रुपया तुड़ाकर दे दूँगा।

रुपया पानी की तरह बहाना—अति व्यय करना। पहले तो रुपया पानी की तरह बहा दिया अब पीछे पछताते हैं।

रुपया पानी मे फेंकना—(१) व्यर्थ खर्च करना। (२) बहुत दाम दे देना। ये तो रुपया पानी मे फेका ये चीज़ दो दिन भी न चलेगी।

रुपया फूँकना—बुरे कार्य मे धन खर्च करना। जितना रुपया छोड मरा था सब रंडीबाजी में फूंक दिया।

रुस्तम का साला—बड़ा वीर (व्यंग्य)

रुस्तम (छिपा)—देखने मे सीधा, निर्बल, पर बड़ा वीर।

रूगटे खड़े होना—डर जाना। जगल में सामने से एक भालू को आता देखा मेरे रूँगटे खड़े हो गये।

रूइ का गाला—बहुत कोमल सफेद। खरगोश तो रूई का गाला है।

रूई की तरह तूम डालना—(१) उलट पलट डालना। (२) खूब खबर लेना। (३) एक एक दोष खोल दिखाना। जाने कब से दबाये बैठा था गुस्सा आया तो उसने रूई की तरह तूम डाला। (४) खूब नोचना। (५) गाली देना।

रूई की तरह धुनना—बहुत पीटना।

रूई सा—बहुत नरम, कोमल।

(अपनी) रूई या सूत में उलझना—काम काज में फॅसना।

रूखा पड़ना, होना—(१) मुरौवत तोड़ना। (२) क्रोधित, नाराज़ होना।

रूखा सूखा—बुरा-भला। रूखा सूखा खाय कर ठंडा पानी पी।

रूप भरना—(१) वेष बनाना। दिन में दस रूप भरती हैं। (२) स्वाँग रचना।

रूप लेना—देह, रूप धारण करना।

रूप हरना—लज्जित करना। अपने सरूप रति रूपहि हरति है। [७६५६]

रूमाल पर रूमाल भीगोना—बहुत आँसू बहाना।

रूह निकलना—मर जाना। जब तक रूह है तब तक सब कुछ है, रूह निकली फिर तो शरीर मिट्टी है।

रूह फड़कना—प्रसन्न होना। मित्र वह ख़बर सुना दे कि रूह फड़क उठे।

रू से—अनुसार। ईमान की रू से कहो क्या बात है, कानून की रू से दण्ड मिलना ही चाहिये।

रेख आना, भीजना, भीनना—मूँछे उगना। हमरे आई बड़ी बड़ी मुछवा तुमरे भींगत रेख।

रेख खींचना, खेंचना—(१) लकीर खेंचना। (२) पक्की तरह करना।

रेज़ा रेज़ा करना—टुकड़े टुकड़े करना। आज बन्दर मेरी कमीज़ उठा ले गया, और जब छोड़ी जब रेज़ा रेज़ा कर दी।

रेल पेल करना—ढेर लगाना, बहुत करना। खाने पीने की चीजों की रेल पेल कर दी।

रेल पेल होना, रेला होना—बहुत भीड़ होना।

रोंगटे खड़े होना—डर या दुख से शरीर के बाल खड़े हो जाना, जी दहलना।

रोआं काँपना—भय के कारण शरीर बहुत काँपना। शेर को अपने ऊपर झपटता देख मेरा रोआँ काँपने लगा।

रोआं रोआं—अंग प्रत्यग। जब मै वहाँ जाता हूँ, तो मुझे देख कर उसका रोआँ रोआँ खिल जाता है।

रोक टोक करना—किसी को आने जाने से रोकना। आप शौक से चले जाइये वहाँ कोई रोक टोक नहीं करता।

रोक करना—रखवाली करना। उस बाग में कोई रोक थाम करने वाला नहीं है, इसी से तुम लोग आम तोड लाते हो।

रोक टोक में रहना—निगरानी में रहना। जब तक वे पुलिस की रोक टोक में रहेंगे तब तक कहीं बाहर न जा सकेंगे।

रोकड़ मिलना—जमाखर्च ठीक बैठना।

रोग का घर—रोग की जड़। रोग का घर खाँसी, लड़ाई का घर हाँसी।

रोग पाल लेना—अपने पीछे बला लगा लेना। तुम से हम बार बार मने करते हैं, फिर भी तुम रोग पाल लेते हो।

रोज़गार चमकना—खूब व्यापार चलना। रोजगार चमक जाय तो

साल भर में ही जीवन भर की रोटियाँ निकलती हैं।

रोज़गार चलना—काम जारी रहना, काम में लाभ रहना।

रोज़गार छूटना—बेकार होना।

रोज़गार लगना—गुज़र का इन्त-जाम होना

रोज़गार लगाना—कोई काम, नौकरी दिलाना।

रोज़गार से होना—पैसे कमाना, काम में कमाता होना।

रोज़ा खोलना—दिन भर की भूख के बाद शाम को खाना।

रोज़ा टूटना—उपवास पूरा न रहना, खंडित होना।

रोज़ा तोड़ना—व्रत पूरा न करना।

रोज़ी चलना—खाने पहिनने को मिलना।

रोज़ी चलाना—खाने कपड़े का खर्च देना, प्रबन्ध करना।

रोटियाँ तोड़ना—बैठे बैठे, मुफ्त में रोटी खाना।

रोटियाँ निकलना—निर्वाह लायक आमदनी। अजी रोटियाँ निकल आती हैं बिक्री क्या है।

रोटियाँ लगना—इतराना। साहब के नौकर को रोटियाँ लग गई हैं, ऐंठ के बोलता है।

रोटियों का मारा—भूखा। अन्न बिना दुखी।

रोटियो के लाले पड़ना—रोटी रोटी को तरसना।

रोटी कपड़ा—खाना पहनना।

रोटी कमाना—जीविका, रोजी प्राप्त करना।

रोटी का पेट—रोटी का तवे की ओर का भाग।

रोटी की ख़ाक झाड़ना—खुशामद करना। क्या करें रोटी की ख़ाक तो झाड़नी पड़ती ही है नहीं खाँय कैसे।

रोटी की पीठ—पिछली बार सिकने वाला भाग।

रोटी को तरसना, रोना—भूखे मरना। नौकरी छूटी तो रोटी को तरसोगे।

रोटी दाल चलना—गुजर होना।

रोटी दाल से खुश—खाने कपड़े से निश्चिन्त।

रोटी पर रोटी रख कर खाना—सुख से निर्वाह करना।

रोटी पोना—(१) खाना बनाना। (२) रोटी वेलना।

रोड़ा अटकाना—बाधा डालना।

रोते आँचल भीगना—बहुत रोना। इतना दुख हुआ कि रोते आँचल भीग गया।

रो धो कर काम चलाना—जैसे तैसे, मुश्किल से निभाना।

रोना कलपना, धोना—(१) अफसोस करना। अब रोने धोने से

क्या बनता है। (२) कुहराम मचाना।

रोना गाना—गिड़गिड़ाना, दुख भरी प्रार्थना करना।

रोना पीटना—विलाप करना।

रोने का तार बाँधना—बराबर, ज़ार बेज़ार रोना। चुप ही नहीं होती रोने का तार ही बाँध दिया।

रोना रोना—दुखड़ा सुनाना। यहाँ तो आकर अमीर भी अपना रोना रोते हैं।

रोना पड़ना, रोना पीटना पड़ना—शोक छाना। घर घर रोना पीटना पड़ा है।

रोपना हाथ—माँगने को हाथ फैलाना।

रोब जमाना—बड़प्पन की धाक बैठाना।

रोब दिखाना—बड़प्पन के प्रभाव की चेष्टा करना।

रोब मिट्टी में मिलना—प्रभाव न रहना।

रोब में आना—(१) बड़प्पन से डरना, भय मानना। (२) बड़प्पन देख प्रभावित होना। उनके रोब में आ कर शिकायत कर दी पर उनकी शिकायत न चली।

रो बैठना—निराश होना। रुपयों को रो बैठो वह न देगा।

रोम रोम में—सारे शरीर मे।

रो रो कर—(१) बड़े दुख से, मुश्किल से। इतना भी रो रो कर किया है। (२) धीरे धीरे।

रो रो कर कुछ करना—मुसीबतें झेलकर कुछ करना। इनसे तो कोई काम कराया जाय रो रो कर करते हैं।

रो रो कर घर भरना—बहुत विलाप करना। खिलौना न लाये तो रो रो कर घर भर देगा।

रो रो कर दिन काटना—मुसीबत में गुज़ारा करना। उस दुखिया ने रो रो कर दिन काटे थे।

रोयाँ खड़ा होना—रोमाच होना। खुशी, रञ्ज व आश्चर्य मे रोये खड़े हो जाते हैं।

रोयाँ न उखड़ना—कुछ हानि न होना।

रोयाँ पसीजना—तरस, दया आना।

(किसी पर) रोशन होना—मालूम होना।

रोशनी डालना—प्रकाश डालना। गली में अंधेरा है, ज़रा आप टौर्च से रोशनी डाल दे तो मै अच्छी तरह निकल जाऊँ।

ल

लंका कांड होना—भीषण आग लगना। अभी अखबार में आया था कि देहली की ओर कई गाँवों में लङ्का कॉड हो गया है।

[८•२६]

लंगर जारी करना—सदावर्त्त देना। जब से उन्हें सब अधिकार मिल गये हैं; तभी से उन्होंने लंगर जारी कर दिया है।

लंगर करना—(१) उधम मचाना।

लंगर बाँधना—(१) पहलवानी करना। (२) ब्रह्मचारी रहना।

लंगर, लँगोट कसना, बाँधना—लड़ने को तैयार होना।

लंगोट का सच्चा होना—ब्रह्मचारी होना। आप उसे क्या समझते हैं, वह अभी तक लंगोट का सच्चा है।

लंगोट देना, आगे रखना—पहलवानी का शिष्य बनाना।

लंगोटिया यार—पक्का, बचपन का मित्र। लँगोटिया यार का प्रेम अनुपम होता है।

लंगोटी पर फाग खेलना—थोड़े साधन से बहुत आनन्द लूटना, धन खर्चना।

लंगोटी बँधवाना—बहुत दरिद्र कर देना। मुक़दमे ने लगोटी बँधवा दी।

लंगोटी बिकवाना—क़तई कगाल कर देना।

लंबर आना—बारी आना। अभी खड़े रहो-जब तुम्हारा लम्बर आवे तब अन्दर जाना।

लंबा करना—(१) भगा देना, चलता करना। दौड़ आती सुनते ही चोर लबा किया। (२) चित कर देना।

लबा बनना, होना—नौ दो ग्यारह होना।

लंबी तानना—निश्चिन्त हो सोना। मैंने तो लबी तानी पीछे कुछ हो।

लंबी साँस लेना—ठंडी, दुख भरी साँस खींचना।

लकड़ी चलना—लाठियों से मार पीट होना।

लकड़ी देना—दाह कर्म करना। उसका बड़ा लड़का मौजूद न था, इसलिये छोटे ने ही बाप को लकड़ी दी।

लकड़ी फेंकना—लाठी चलाना। उसने सैकड़ो आदमियों मे इस प्रकार लकड़ी फेंकी कि सब दङ्ग रह गये।

लकड़ी सा—अति दुबला।

लकड़ी होना—(१) सूख जाना। बीमारी में लकड़ी हो गया। (२) सूख कर कड़ा होना। रोटी लकड़ी हो गई।

लकवा मारना, मारा जाना—किसी अंग में जान न रहना।

लकीर का फकीर—पुरानी अशुद्ध रीति को भी मानने वाला।

लकीर पर चलना, पीटना—बे समझे किसी रीति को मानना।

लग चलना—संग या पीछे चलना। इन्हीं से लग चलो वहीं पहुँचोगे।

लगती कहना — चुभती बात कहना। अगर किसी को बुरा मालूम होता है तो फिर लगती बात क्यों कहते हो।

लगन लगना — मन लगना। हमारी तो जिस काम मे लगन लग जाती है, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं।

लगा कर कहना—अन्य पर डाल कर अन्य पर आक्षेप करना।

लगाना बुझाना—किन्हीं मे लड़ाई कराना।

लगाम चढ़ाना, देना—कहने, बोलने से रोकना।

लगाम लिए फिरना — ढूँढ़ते फिरना। बच्चे को सँभालो वरना लगाम लिए फिरोगे।

लगा रहना—काम मे मग्न रहना। आप उसे कोई काम बता दीजिये बस उसी में लगा रहे।

लगावट होना—प्रेम होना। उसकी इससे कुछ लगावट है, इसी से रोज़ घर आता है।

लगी को बुझाना—इच्छा पूरी करना।

लगी न रखना — पक्षपात न करना। चल कर पंडित जी से फैसला करालो वे किसी की लगी नहीं रखते।

लगी बुझना—अभिलाषा पूरी होना। मैं एक महीने तक बराबर वहाँ गया किन्तु मेरी लगी न बुझी।

लगी लपटी रखना—पक्षपात करना। यह मुसलमान दरोगा, मुसलमानों की बड़ी लगी लपटी रखता है।

लग्गा लगाना—किसी काम का शुरू करना। अगर सब सामान परस गया तो अब खाने का लग्गा लगाओ।

लग्गी से घास डालना—बे नियम काम करना। यदि तुम लग्गी से घास डालोगे तो फिर काम क्यों न बिगड़ेगा।

लच्छन झड़ना—बिगड़ जाना। पहले इसका चाल चलन कितना अच्छा था किन्तु अब गुंडों के साथ रहने से सब लच्छन झड़ गये हैं।

लच्छन सीखना — शिष्टाचार सीखना। अब तुम बच्चे नही हो, समझदार हो, यहाँ आकर तो थोड़ा बहुत लच्छन सीखो।

लज्जा करना—उच्चता का ध्यान, लिहाज करना। पद की लज्जा करो बुरे न बनो।

लटकती चाल—बलखाती चाल। भृकुटी मटकन पीत पट चटक लटकती चाल।

लट छिटकाना—बाल फैलाना।

लट जाना—दुर्बल हो जाना। क्या तुम्हारे चौके में भर पेट खाना नहीं मिला जो इतनी लट गई हो।

लट दबाना—वश में करना। मैंने एक बात से उसकी ऐसी लट दबाली है कि अब वह मेरे विरुद्ध कुछ नहीं कह सकता।

लट पड़ना—बाल उलझना, बाल लिपटना।

लटिया करना—सूत का लच्छा, ऑटी बनाना।

लटी मारना—गप्प मारना।

लट्टू होना—(१) मोहित होना। व्याह ही ते कान्ह भए हैं लट्टू तब ह्वै है कहा जब होइगो गौनो। (२) मिलने को भटकना।

लट्ठ लिए फिरना—उलटा करना। अक्ल के पीछे लट्ठ लिये मत फिरो, मेरी मानो।

(राह का) लड़का—अनाथ, बे सहारे।

लड़का लड़की—संतान, औलाद।

लड़कों का खेल—(१) दे० बच्चों का खेल। (२) व्यर्थ, बे महत्व का काम।

लड़खड़ाना (जीभ)—(१) रुक रुक कर बोलना। (२) टूटे टूटे, अस्पष्ट बोलना।

लड़ मिलाना—मित्रता करना।

लड़ में रहना—साथियों में रहना।

(हिसाब) लड़ाना—(१) लेखा उतारना। (२) सुभीता होना। हिसाब लड़ालें जो गाड़ी मिलती होगी तो पहुँचेगे। (३) युक्ति सोचना। हिसाब लड़ाओ कैसे सिफारिश पहुँचावे।

लड़ाई का मैदान—संघर्ष क्षेत्र। यह दुनिया लड़ाई का मैदान है।

लड़ाई ठानना—युद्ध करने का निश्चय करना। ऐसा सुनने में आया है कि यूरुप मे कुछ राष्ट्रों ने आपस मे लड़ाई ठान दी है।

लड़ाई पर जाना—लड़ने जाना।

लड़ाई मोल लेना—झगड़े में स्वय फँस जाना। तुम्हें कितनी बार समझाया है, किन्तु तुम फिर भी लड़ाई मोल ले लेते हो।

लड्डू खाना—खुशी मनाना, दावत खाना।

लड्डू खिलाना—दावत देना। काम बन गया तो लड्डू खिलायेंगे।

लड्डू फोड़ना—लड्डू खाना। सेठ मरेगा तो पंडित लड्डू फोड़ेगे अच्छा ही है।

लड्डू मिलना—लाभ होना। तुम्हें क्या लड्डू मिलेंगे जो बुरा चाहते हो।

लत पड़ना—आदत पड़ना। यदि किसी को हुक्का पीने की लत पड़ जाती है तो फिर इस का छूटना मुश्किल हो जाता है।

लत मर्दन करना— पैरों तले कुचलना। राजा ने कहा इस दुष्ट को जंगल में ले जाकर इसकी आँखें निकाल कर लाओ, जिनको मैं लत मर्दन करूँगा।

लत मर्दन में पड़ना—अपमान होना। मै आज कई साल के बाद वहाँ गया था किन्तु फिर भी लत मर्दन मे पड़ गया।

लत्ती करना— भाग जाना। शिकारी कुत्तों को अपनी ओर आते हुए देख लोमड़ी एक दम लत्ती कर गई।

लत्ते लेना—आड़े हाथों लेना। घर में घुसते ही श्री मती जी ने लत्ते ले डाले, आखिर उधार साड़ी ला कर दी।

लथाड़ खाना—(१) पिछड़ना। (२) फटकार खाना। (३) नष्ट किया जाना।

लथाड़ में पड़ना— हैरानी में पड़ना।

लपक कर—(१) तेज़ी से पहुँच कर (२) फौरन।

लपका पड़ना—बुरी आदत पड़ना। एक बन्दर को हमारे यहाँ से रोटी ले जाने का लपका पड़ गया था। आज मैंने ऐसा उड़ा दिया की अब कभी इधर न आवेगा।

लपकी भरना—सीना। जहाँ जहाँ यह धोती फट रही है, वहीं पर जल्दी से लपकी भर दो।

लप झप चाल—फुरती की, बेढंगी। चपलता की चाल।

लप लप करना—(१) लचकना। (२) चमचमाना।

लपलपाना—चखने की आतुरता। मिठाई के लिये जीभ लपलपाती है न!

लप से—तेज़ी से, झट से।

लपेट में आ जाना—जाल में फँसना। हम तो जुआ का तमाशा देख रहे थे, जब पुलिस ने पकड़ा तो हम भी लपेट में आ गये।

लबड धों धों चलना—बेईमानी गड़बड़।

लय देखना—ठीक स्वर तर्ज में गाना।

ललचाना (जी)—पाने की इच्छा होना।

ललाट में लिखा होना—भाग्य में होना। जो ललाट मे लिखा होगा तो सब कुछ मिलेगा।

लल्लो पत्तो करना— चिकनी चुपड़ी बातें करना। भूखी लोमड़ी ने कौवे से लल्लो पत्तो करके रोटी का टुकड़ा गिरवा लिया।

लव भर—नाम मात्र को। लव भर भी डर नहीं।

लहना चुकाना, साफ़ करना— कर्ज़ लौटाना।

लहर आना—आनन्द आना।

लहर उड़ाना—अच्छे स्वर से गाना। ज़रा इधर कान लगा कर सुनिये कोई कैसी लहर उड़ा रहा है।

लहर चढ़ना—विष चढ़ना। उन्होंने जाँघ पर कस कर बध लगा दिया था इसी से आगे सर्प की लहर नहीं चढ़ी।

लहर देना, मारना—रह रह कर पीड़ा होना।

लहर मारना—टेढ़े सीधे जाना। साँप लहर मारता चलता है।

लहर लेना—समुद्री लहरों मे नहाना।

लहर साँप काटे की—रह रह कर होश आना।

लहा लोट हो जाना—मोहित हो जाना। स्त्री क्या है, साक्षात् परी है, मैं तो उसकी सुन्दरता पर लहा लोट हो गया।

लहू कटना—पाखाने में खून का बहना। बहुतेरा इलाज कराया है किन्तु लहू कटना बन्द ही नहीं होता।

लहू का जोश होना—प्रेम का उमड़ना। लहू का जोश ऐसा होता है कि शत्रु का साथ देने वाले शक्तसिंह ने भी राणा की मदद की।

लहू का प्यासा होना—प्राणों का शत्रु बनना। इस सम्पति के कारण ही मनुष्य एक दूसरे का लहू का प्यासा हो जाता है।

लहू पसीना एक होना—कठिन परिश्रम करना। आप को तो मुफ़्त का पैसा जान पड़ता है, जब हम काम करते हैं तो लहू पसीना एक हो जाता है।

लहू पानी एक करना—दिन रात परिश्रम करना। इस वर्ष यदि तुम लहू पानी एक कर दोगे तब तो अच्छी तरह पास हो सकोगे वरना नहीं।

लहू पीना—बहुत तग करना। तू क्यों मेरा लहू पी रहा है, दो चार घटे के लिये कहीं टल क्यों नहीं जाता।

लहू पी पी कर रह जाना—क्रोध को मन ही मन में रखना। उन्होंने एक ऐसी बात कही कि मै बड़े बूढों की वजह से लहू पी कर रह गया नहीं तो आज उसे ठीक कर देता।

लहू सुखाना—कष्ट उठा कर कठिन काम करना। इसे इस प्रकार कैसे दे डालूँगा। इसके लिये तो साल भर से लहू सुखा रहा हूँ।

लहू सूखना—डर लगना। डाकुओं को देखते ही मेरा लहू सूख गया।

लहू लुहान होना—खून से लथ पथ। सारे हाथ लहू लुहान थे।

लाँग खुलना—भयभीत हो जाना। अभी यह बातें मार रहे हो, जब उसे देख लोगे तो लाँग खुल जायगी।

लाख का घर राख होना—धनवान घर बिगड़ना।

लाख टके की बात—अति उपयोगी, कीमती बात।

लाख जी से—दिलो जान से। अब तो वह साफ गई, लाख जी से कोशिश करो तब भी नहीं मिल सकती।

लाख लगाना—छिपा रखना। कलकत्ते से जो सामान आया है, उसे सामने लाओ उसमें क्यों लाख लगा रक्खी है।

लाख सिर का होना— वफादार और ईमानदार होना। अभी जो हमारा एक नौकर मर गया है, वह बड़ा लाख सिर का था।

लाख मे लीख होना— बहुत ज्यादा से बहुत कम होना। रहे जो लाख भये ते लीखा।

लाग रखना—द्वेष रखना। वह तुमसे बाहर से तो मीठी मीठी बाते करता है किन्तु मन मे लाग रखता है।

लाग लगना—प्रेम होना। अब तो ऐसी लाग लगी है कि दिन क्या, रात क्या, उसी के घर पड़े रहते हो।

लाग लपेट रखना — पक्षपात करना। मै ऐसे मनुष्य से फैसला नहीं करवाना चाहता जो तुम्हारी ओर लाग लपेट रखता है।

लागत बैठना—असली कीमत होना। आपको पाँच रुपये मे कैसे बेच दें छै रुपये तो हमारी लागत बैठी है।

लागू होना—सम्बन्ध रखना। आप जो कानून बतला रहे हैं, वह इस मामले में लागू नहीं होता।

लाज रखना—मान, लिहाज बचाना।

लाठी चलना—लाठी से मार पीट होना। गाँव मे खूब लाठी चली, कई तो जान से गये।

लाठी चलाना—लाठी से मारना। लड़के ने बड़ी अच्छी लाठी चलाई कई को बिछा दिया।

लाठी बाँधना—लाठी संग रखना।

लात खाना—(१) मार खाना। (२) ठोकरें खाना।

लात चलाना—पैरों से मारना।

लात जाना—दूध न देना। हमारी गाय तो लात गयी वरना दही की क्या कमी थी।

लात मारना—त्याग देना। नौकरी को लात मार दी और सन्यासी हो गया।

लात मार कर खड़ा होना—

[८२५५]

प्रसव या बड़ी बीमारी से अच्छा होना।

लाद निकलना—तोंद बढना।

लानत मलामत करना—भला बुरा कहना। जब सबने लानत मलामत की है, तब रुपये देने पर राज़ी हुआ है।

लाम बांधना—बहुत सामान या लोग इकट्ठे करना।

लार टपकना—दे० ललचाना जी।

लार लगाना—(१) पंक्ति की पंक्ति लगाना। गाड़ियों की लार लगादी, बरात क्या फौज थी (२) फँसाना।

लाल अँगारा—अत्यत क्रोध। यह सुनते ही लाल अँगारा हो गये।

लाल आँखें दिखाना, निकालना—डरावनी, क्रोध भरी आँखों से देखना।

लाल उगलना—मीठी, सुन्दर बाते कहना। बाते करने में तो लाल उगलते हैं।

लाल कर देना—सज़ा देना। यदि मेरी बात न मानोगे तो मारते मारते तुम्हें लाल कर दूँगा।

लाल पड़ना, होना
लाल पीले होना
लाल हो जाना } क्रोध से तमतमाना।

लाल होना—सुन्दर चेहरा, खुश, निहाल होना।

लालच देना—लोभ दिलाना, दिखाना।

लालाभय्या करना—प्रेम आदर से बोलना।

लाले पड़ना—मिलने को तरसना।

लाव उठाना—(१) गिरवीं रख उधार देना। (२) तकावी बाँटना।

लाव चलना—पुर या चरस से पानी खींचना, खेत सींचना।

लास करना—डाँड़ जमा कर नाव ठहराना।

लासन देना—मस्तूल से रस्सी लपेटना।

लासा लगाना—चिपक, लोभ से फँदे में फँसाना। उन्हें फँसाने के लिये लासा लगा रखा है।

लासे पर लगाना—धोके में लाना। दो चार पैसे देकर उसे ऐसा लासे पर लगाया है कि जो चाहते हो करा लेते हो।

लाहौल पढ़ना—(१) घृणा करना। (२) 'लाहौल' कह कर न करने का वादा करना।

लिखत पढ़त होना—कागज़ लिख कर बात पक्की करना।

लिखना (नाम)—उधार लिखना। यह रुपये मेरे नाम लिखो खर्च खाते नहीं।

लिखना-पढना—शिक्षा पाना।

लिखा-पढा—शिक्षित।

लिखाना-पढ़ाना—(१) लिखवा लेना। (२) शिक्षा देना।

लिखा पूरा करना—प्रारब्ध कर्म का फल भोगना। जैसा उस जन्म में बुरा कर्म कर आये हैं, अब वही लिखा पूरा कर रहे हैं।

लिफ़ाफा खुल जाना—भेद प्रकट हो जाना। कितना ही छिपाओ किसी दिन तो लिफ़ाफा खुल ही जायगा।

लिफ़ाफ़ा बदलना—चटकीला वेष बनाना।

लिफ़ाफ़ा बनाना—(१) बाहरी ठाठ रखना। (२) ढोंग ढकोसला रखना।

लिल्ली घोड़ी बनाना—बेढंगे तौर से सजाना। लिल्ली घोड़ी बना दिया।

लिवा लाना—आदमी को साथ लेकर आना।

लिहाज उठना, टूटना—पक्ष, मुलाहिज़ा, ध्यान न रखना।

लिहाज़ करना—ख्याल रखना। उसने मेरा लिहाज़ करके ही तुम्हें नौकर रख लिया है, नहीं तो वह बात भी नहीं करता।

लिहाज़ रखना—लज्जा रखना। आज मेरी बात बिगड़ रही थी किन्तु इन्होंने ही आज मेरा लिहाज रख लिया।

लिहाड़ी लेना—बुराई, हँसी उड़ाना।

लीक करके, खींच कर—पक्की तरह, प्रतिज्ञा पूर्वक।

लीक खिंचना—(१) पक्की होना। (२) नियम हो जाना। (३) विश्वास, मान होना।

लीक पड़ना—रास्ते की लकीर पर चलना।

लीक पीटना, लीक लीक चलना—परम्परा की रीति-नियम पालना।

लीद करना—घोड़े, गधे, हाथी, ऊँट आदि का मल त्याग करना।

लीप पोत कर बराबर करना—सत्यानाश करना। बड़ी कठिनता से तैयार की कुपुत्र ने लीप पोत कर बराबर कर दी।

लुक छिपकर—छिपाकर।

लुकमा करना—निगल जाना। जगली अजगर हरिण इत्यादि पशुओं को तो साँस से ही लुकमा कर जाता है।

लुटना (घर)—धन हरण होना।

लुटिया डुबोना—नाश करना, कलंक लगाना। बाप दादों की लुटिया डुबो दी।

लुढ़कना पुढ़कना — गिरना पड़ना।

लुत्फ़ उठाना—आनन्द लाभ पाना।

लूक लगाना
लूका लगाना
लूकी लगाना } आग छुआना, लगाना। मारि मूलूक में लूक लगायो।

लूट खाना—(१) बहुत ही धन हड़प जाना। (२) किसी न किसी तरह धन ले लेना।

लूट पड़ना—मुफ़्त मिलना। पैसे हों तो मोल ले जाओ, यहाँ क्या कोई लूट थोड़े ही पड़ रही है।

लूना, लूती लगाना—आग लगाना।

लू लगना, मारना—गर्म हवा से ज्वर आदि होना, सूख जाना।

लू लू बनाना—हँसी करना, बेवकूफ बनाना। लोगों ने खूब उसे लू लू बनाया।

ले—(१) तेरी इच्छा ऐसी है तो ले, (वही सही) मैं दे देता हूँ।

ले आना—साथ लाना।

ले उड़ना—(१) लेकर भाग जाना। (२) थोड़ी बात को बहुत बना लेना।

लेकचर झाड़ना—धूम धाम से व्याख्यान देना (व्यंग्य) जहाँ जाते हैं लेकूचर झाड़ना शुरू कर देते हैं।

लेखनी उठाना—लिखना शुरू करना।

लेखा जांचना—हिसाब देखना, लगाना।

लेखा डालना—हिसाब खोलना।

लेखा डेवढ़ करना—(१) लेन देन पूरा करना। (२) चौपट कर देना।

लेखा पूरा या साफ़ करना—हिसाब चुकाना।

लेखे (किसी के)—विचार से। हमारे लेखे तो तुम और वह एक से हो।

ले चलना—(१) उठाकर चलना। (२) साथी बनाना, साथ में लेना।

ले जाना—लेकर जाना। किताब ले जाओ, अब काम नहीं है।

लेट जाना (खेती)—बहुत पानी या हवा से फसल पृथ्वी पर पड़ना।

लेट जाना (गुड़)—अधिक आग से गुड चिपचिपा गीला होना।

ले डालना—(१) नाश करना। (२) हटाना। (३) पूरा करना।

ले डूबना—दूसरे का भी नाश करना। एक का दिवाला निकला सैकडों को और ले डूबा।

ले देकर—(१) कठिनता से प्राप्त। ले देकर यही एक लड़का था सो तुम ले चले (२) सब हिसाब करके, बाजार का सब ले देकर यह मकान बचा। (३) कुल मिलाकर। जेवर आदि सब ले देकर हजार का होगा।

लेन देन न होना—संबन्ध, प्रयोजन न होना। ऐसे लोगों से लेन देन ही नहीं है।

लेना देना—देने लेने का व्यवहार। हमारा उनसे लाखों का लेना देना चलता है।

लेना एक न देना दो—कोई मतलब नहीं। मैं क्यों बीच में पड़ूँ मुझे लेना एक न देना दो, लड़ने दो उन्हे।

ले निकलना—(१) ले ही लेना। भला आदमी रईस के घर से कुछ न कुछ ले ही निकलता है। (२) लेकर चल देना। वह उसकी लड़की को ही ले निकला।

कान में) लेना—सुनना मेरी बात ही कान मे नहीं लेते मै क्या करूँ।

ना (सिर, कंधे, ऊपर)—जेम्मेदार बनना।

ने के देने पड़ना—(१) बहुत ठिन समय आना, जान पर आ ड़ना। अगर वहाँ से न भागता । लेने के देने पड़ जाते। (२) ाभ की जगह हानि होना।

दे करना—हुज्जत, कोशिश ना। बहुत ले दे की तो एक या मिला।

–(१) तेरी इच्छा ऐसी है तो (वही सही) मैं दे देता हूँ।) ले (न हुआ न) और ले। (३) न मानेगा तो ले कुल ही न करूँगा।

ले पड़ना—(१) अपने संग गिरना।

ले पालना—गोद लेना। अनाथालय से एक बच्चा ही ले पालो तो अच्छा है।

ले बैठना—(१) संगी को भी नष्ट कर देना। एक का दिवाला कइयों को ले बैठा। (२) बीज लिये नाव डूबना। (३) सब नष्ट करना। यह व्यापार सारे काम ले बैठेगा। यह दीवार पड़ोस के मकान भी ले बैठी।

ले मांगना—(१) लेकर ही टलना। जाऊँगा तो कुछ न कुछ ले ही मरूँगा, बिना लिये थोड़े ही टलूँगा (२) दे॰ ले डूबना।

ले रखना—रख छोड़ना। यह घोड़ा मैंने तुम्हारे ही लिये ले रक्खा था, आज तुम्हें सौंपता हूँ।

लेप चढाना—मोटा होना (व्यग्य)

लोचन भर आना — आँसु आजाना।

लोट जाना—(१) बेहोश होना। (२) मर जाना। एक फायर में सात लोट गए।

लोट पोट करना—लेटना।

लोट होना, हो जाना—(१) दीवाना बनाना। (२) आशिक होना। उनको देखते ही लोट हो जाओगे, ऐमी हसीन हैं।

लोटा, लुटिया डुबाना—(१) सारा खराब कर देना (२) कलंक लगाना।

लोढा डालना—बराबर करना।

लोढ़ाढाल—बिल्कुल नष्ट।

लोथ गिरना—मरकर गिरना।

लोथ डालना—मार कर गिराना।

लोथ पर लोथ गिरना—घमासान युद्ध होना। जिस समय महाभारत में लडाई का बिगुल बजा कि लोथ पर लोथ गिरने लगीं।

लोथ पोथ—(१) सना हुआ, लथपथ (२) शिथिल।

लोथारी डालना—लंगर से थाह लेकर किनारे लगाना।

लोथारी तानना—लोथारी लंगर से थाह देख ठीक रास्ते नाव लेजाना।

लोन खाना—नमक खाना, दास होना।

लोन निकलना—नमक हरामी, होने का बुरा फल मिलना।

लोन न मानना—कृतघ्न, नमक हरामी होना।

(जले पर) लोन लगाना—जले को जलाना।

लोन सा लगना—बुरा लगना, चुभना।

लोरी देना—गीत आदि सुनाकर बच्चों को चुप कराना। देखो, माता कैसी लोरी देकर बच्चे को सुला रही है।

लोहा करना—इस्तरी करना। दर्जी ने कमीज़ सी तो ली है किन्तु अभी उस पर लोहा नहीं किया है।

लोहा गहना—लड़ना, लड़ने को हथियार उठाना।

लोहा बजना—घमासान लड़ाई होना।

लोहा बरसाना—तलवार चलाना।

लोहा मानना—(१) हारना। (२) बड़प्पन मानना।

लोहा लेना—युद्ध करना।

लोहू की घूंट पीना—गुस्सा मारना। आज मै उन के सामने लोहू की घूट पीकर रह गई।

लोहे की छाती कर लेना—दुख सहने को दिल कडा कर लेना। जब दुख पर दुख पड़ते हैं तो मनुष्य लोहे की छाती कर लेता है।

लोहे के घाट उतारना—मार डालना। राजपूतों ने युद्ध में सैकड़ों मुगल सिपाहियों को लोहे के घाट उतार दिया।

लोहे के चने—बहुत कठिन काम।

लोहे के चने चबाना—दुस्साध्य काम करना।

लौ लगना—धुन लगना। यह बड़ा परिश्रमी लड़का है, इसे हर समय पढ़ने की लौ लगी रहती है।

लौ लगाना—ध्यान मे मग्न रहना। अब तुम्हारा बुढ़ापा है, इन

सांसारिक झंझटों को छोड़ो ईश्वर से लौ लगाओ।

व

वकालत चमकना, चलना—वकीली के काम में खूब कमाना।

वकालत जमना—वकील को अपने काम में निश्चित रूप से कमाने लगना।

वक्त आ पहुँचना—मरने का समय समीप आना।

वक्त काटना—(१) दुख का जैसे तैसे समय बिताना। (२) दिल बहलाना। सिनेमा देख कर वक्त काटते हैं।

वक्त की चीज़—मौक़े की, काम की वस्तु। वक्त की चीज़ गई।

वक्त खोना–(१) अवसर चूकना। (२) समय बरबाद करना।

वक्त ताकना—(१) समय का ध्यान रखना। (२) मौका, दाँव देखना।

वक्त पर—जरूरत के समय।

वक्त हाथ से देना—अच्छा समय खो देना।

वजूद पकड़ना—जाहिर होना, अस्तित्व बनना।

वजूद में आना—उत्पन्न तथा प्रकट होना।

वजूद में लाना—उत्पन्न करना।

वज्र पड़े—नाश हो (स्त्री)।

वनवास देना—जंगल में रहने की आज्ञा देना।

वनवास लेना—जगल में रहने लगना।

(किसी का) वबाल पड़ना—दुख देने का फल मिलना, दुखी की आह पड़ना।

(किसी वस्तु की) वर्षा होना—(१) बहुत गिरना। (२) खूब मिलना।

वश कर—(१) आधीन। (२) जैसा चाहे या कहें वैसा।

वश चलना—हो सकना, शक्ति से कर सकना।

वश में होना (किसी के)—(१) आधीन होना। (२) दबाव, आज्ञा मानना।

वश होना (किसी पर)—अधिकार, प्रभाव होना।

वसीला पैदा करना—आमदनी, सफलता का रास्ता पाना।

वसीला रखना—सबन्ध रखना। मैं रुपयों का वसीला नहीं रखता।

वसूल पाना—जो लेना हो वह पा जाना।

वहशत उछलना—धुन, सनक होना।

वहशत बरसना—(१) उजड्डता जाहिर होना। (२) चेहरे पर दुख उदासी छाना।

वाक़ा होना—घटना, वृत्तान्त होना।

वाजिबी खर्च—जरूरी, उचित खर्च।

वाजिबी बात—उचित, सच्ची बात।

वाणी फुरना—वचन निकलना।

वादा आना—(१) नियत समय आना। (२) अंत समय आना।

वादा खिलाफी करना—वचन देकर न पालना।

वादा टालना—कह कर वैसे ही न करना।

वादा पूरा होना, वादा पूरा करना—इक़रार, प्रतिज्ञा पूरा करना, होना।

वादा रखना—इक़रार कराना।

वापस आना—लौट कर आना।

वापस करना—(१) फेरना, लौटाना। किसी काम की चीज़ नहीं वापस कर दो। (२) खरीद कर लौटाना। (३) लौटा लेना। (४) लेकर फिर दे देना।

वापस जाना—आकर चले जाना। वह आया था, तुम नहीं मिले वापस गया।

वापस होना—(१) उलटे फिर जाना। (२) खरीदी वस्तु को देकर मूल्य लेना। (३) दी वस्तु मिलना। दे तो दूँ यदि आपसे वापिस होने की आशा हो। (४) ली हुई वस्तु दे देना।

वार करना—आक्रमण करना। उसने तलवार से ऐसा वार किया कि सिर से धड़ अलग हो गया।

वार खाली जाना—(१) चोट न बैठना। (२) चाल में न फँसना।

वार न लेने देना—दम भरने की भी फ़ुर्सत न मिलने देना। ये तो नौकरों से इतना काम लेते हैं कि बेचारों को वार भी नहीं लेने देते।

वारने जाना—निछावर होना।

वार पार करना—(१) सारा फैलाव तै करना। (२) छेद दूसरी ओर तक करना।

वार पार होना—(१) सारा फैलाव तै हो जाना। (२) छेद दोनों ओर होना।

वार मिलना—मौका, समय मिलना।

वारा जाना, वारा होना—बलिहारी होना। तेरी सूरत पै हो वारी जाऊँ।

वारियाँ जाऊँ—निछावर होजाऊँ (स्त्री) तेरे प्यार पर मैं वारियाँ जाऊँ।

वास्ता पड़ना—काम पड़ना। मेरा उनसे कभी वास्ता ही नहीं पड़ा मै कैसे जानूँ वे कैसे हैं।

वास्ता पैदा करना—मेल, मिलने का ढंग निकालना। कोई वास्ता पैदा करो उसके नहाने मिलो।

वास्ता रखना — लगाव, मेल रखना। अब मैं तुमसे कोई वास्ता नहीं रखूँगा।

वाह वाह होना—खूब प्रशंसा होना। जैसे ही गामा ने जिविस्को को पछाड़ा कि चारों ओर से वाह वाह होने लगी।

वाह वाही लूटना, लेना—बड़ाई पाना। माल लुटा कर वाह वाही लूटी।

वाही तबाही फिरना—व्यर्थ फिरते रहना। क्या तुम्हारे घर कोई काम नहीं है, जो वाही तवाही फिरते रहते हो।

विचल-चल होना — द्विविधा, चञ्चलता होना। बड़ा उत्साह था पर विघ्नों ने चल-विचल कर दिया कैसे पूरा करे।

विधना के अच्छर—कर्म रेख, भाग्य।

विधि बैठना }
विधि मिलना } (१) दे० मेल खाना। (२) युक्ति चलना। विधि बैठी तो झपट ही लूँगा।

विपत्ति उठाना—दुख शोक सहना।

विपत्ति काटना—दुख के दिन बिताना।

विपत्ति झेलना—सकट सहना।

विपत्ति डालना—कष्ट पहुँचाना।

विपत्ति ढहना—आपत्ति आपड़ना।

विपत्ति भुगतना, भोगना—दुख-शोक सहना।

विपत्ति में डालना—झंझट दुख में फँसना।

विपत्ति में पड़ना—आफत मे फँसाना।

विपत्ति मोल लेना }
विपत्ति सिर पर लेना } झंझट में पड़ना, आफत में फँसना।

विश्वास जमाना—यकीन सचाई बैठाना। मैने विश्वास जमा लिया है तभी तो वह मुझे सब सौंप देता है।

विश्वास दिलाना—सचाई पैदा करना। कई संकट झेलकर यह विश्वास दिला दिया है कि मै उसका भला चाहता हूँ।

नोट—विष के लिए 'जहर' देखो—

विष की गांठ, पुड़िया—बुराई की जड़। विष की गाँठ यही है इसी ने लड़ाई कराई है।

विष बोना—बुराई करना। उसके लिये विष बोओगे तो वैर बँधेगा।

(किसी का) वेश धारण करना—सूरत तथा पहनाव वैसा ही बनाना। उसका वेश धारण करके मै उनसे भी रुपये ले आया, पहचाना नहीं गया।

वैर बाँधना—वैरी बनाना। उनसे वैर बाँधना मौत का मुँह देखना है।

वैर विसाहना—(१) वैर बाँधना (२) झगड़ा जिम्मे लेना। तुम्हारा एक बार साथ देकर वैर बिसाह लिया।

व्यवस्था देना—शास्त्र विधान बताना, नियम लगाना।

श

शंख बजना—(१) दिवाला निकलना। (२) जय होना।

शंख बजाना—आनन्द मनाना। द्रोण मरे सुनते ही पांडवों ने शंख बजाया।

शऊर पकड़ना—तहजीब, ढंग तथा अक्ल आना। अब तो पहिले नमस्ते करता है लड़का शऊर पकड़ने लगा है।

शक डालना—सन्देह उत्पन्न करना। यदि तुम इनमें से किसी पर शक डालते हो, तो बताओ, फिर मैं उससे जाकर तलाश करूँ।

शकल बनाना—चेहरा, रूप बनाना। चित्र की शकल अभी नहीं बनाई।

शकल बिगाड़ना—(१) सूरत खराब करना। (२) खूब पीटना। चुप रह, वरना शक्ल बिगाड़ दूँगा।

शकुन देखना, विचारना }—
शगुन विचारना, लेना }
शुरू करते वक्त की बुरी भली घटना या लक्षण सोचना। नाक से शकुन विचारा अच्छा था पर बिल्ली ने रास्ता काटा यह बुरा शगुन था।

शगूफा खिलना—बीच में अनोखी बात खुलना, होना।

शगूफा खिलाना—अनोखा काम कर बैठना।

शड़प्पा मारना—निगल जाना। उसके आगे तो कोई चीज रखदो, झट शड़प्पा मार जाता है।

शपथ—के लिये 'कसम' देखिये।

शपथ उठाना—प्रतिज्ञा करना। राणा ने शपथ उठाई कि अब तो चित्तौड़ विजय करके ही बर्तनों में खाऊँगा।

शफक़ फूलना—आकाश में लाली फैलना।

शरम खाना—(१) हया, व्रीड़ा में न कर सकना। (२) सकोच करना। आपके सामने आने में शरम खाती है।

शरम रखना, रहना—इज्ज़त बचाना, रहना। वह भी तो शर्म रखते हैं फिर कैसे गाली सुनेंगे?

शरम से गड़ना—लज्जा या गैरत से नीचे होना।

शरम से पानी पानी होना—बहुत शर्म आना। वह शर्म से पानी पानी हो गये और बोले माफ करदो।

शरमिंदगी उठाना—लज्जित होना। [८३७२]

तुम्हारी वजह से हमें भी शरमिंदगी उठानी पड़ी।

शरह करना—अर्थ बनाना। आप पंडित जी की बनाई हुई पुस्तक पढ़िये उन्होंने इसकी बड़ी अच्छी शरह की है।

शरीक करना—मिलाना। क्या कृपा करके आप इस सभा में मुझे भी शरीक कर लेंगे।

शरीक रहना—साथ रहना। तुम तो बड़े अच्छे लड़के थे, इन गुंडों में कब से शरीक रहने लगे हो।

शरीक होना—शामिल होना। कुछ भी हो, एक दिन के लिये तो बरात में आप को अवश्य शरीक होना पड़ेगा।

शर्त बांधना, लगाना—(१) बाजी लगाना। (१) जिम्मा लेना।

शर्बत का सा घूंट पीना—मज़े से कोई पानीय द्रव्य पीना। दवा क्या मीठी है जो शर्बत का सा घूंट पी रहे हो।

शर्म से पानी पानी हो जाना—अत्यन्त लज्जित होना। जब मैंने उसे जुआ खेलते पकड़ लिया तो वह शर्म से पानी पानी हो गया।

शहद की छुरी होना—प्रकट में मित्र तथा वास्तव मे शत्रु होना। इसके चक्करों को मै ही समझता हूँ, यह शहद की छुरी है।

शहद लगा कर अलग होना—चस्का, आग लगा कर दूर होना।

शहद लगा कर चाटना—व्यर्थ रखना। वह तो भाग गया अब प्रोनोट को शहद लगाकर चाटो।

शहीद होना—सत्य तथा धर्म के लिये मरने वाला होना। जालियाना वाला बाग़ में कितने ही भारतवासी शहीद हो गये।

शाख निकलना—(१) ऐब-दोष दिखाई देना। झगड़ा बखेड़ा निकालना।

शाख निकालना—(१) एक मे दूसरा काम निकालना। (२) विघ्न डालना। (३) ऐब अड़ङ्गा लगाना।

शाख लगना—घमंड होना।

शाख लगाना—(१) पेड़ होने को डाली गाड़ना। (२) सींगी लगाना। (३) पैर बढ़ाना, सम्मान करना।

शागिर्द करना चेला शिष्य बनाना।

शान घटना, जाना—इज्जत आबरू में फर्क आना। वहाँ जाने से क्या शान घटती है?

शान मारी जाना
शान में फर्क आना, बट्टा लगना
—बड़प्पन, इज्जत मे कमी आना। अगर चले चलोगे तो क्या शान में बट्टा लग जायगा?

शान में कहना (किसी की)—बाबत या सामने कहना। भले की शान मे बुरी बात मत कहो।

शाबासी देना—प्रोत्साहित करना। जब सबसे छोटा होते हुये वह दौड़ मे सब से आगे आया तो लोग उसे शाबासी देने लगे।

शामत आजाना—मुशीबत में पड़ना। इस दल के गाँव में पहुँचते ही गाँव वालों की शामत आजाती।

शामत का घेरा, मारा—आफ़त का मारा।

शामत सवार होना, सिर पर खेलना—बुरेदिन आना। तेरे सिर पर शामत खेल रही है।

शाम फूलना—सूरज छिपने की लाली छाना।

शामा लगाना—घोड़े के पाँव मे नाल लगाना। क्या अब की बार शामी नहीं लगाई है, जो इसके सुम घिस गये हैं।

शिकजे में खिँचवाना—कोल्हू में पिलवाना, तेल निकालना।

शिकंजे मे खींचना—बहुत दुख देना। तुमने मुझे बहुत सताया था अब मै भी तुम्हें शिकंजे में खींचूंगा।

शिकन डालना—तह करना। इसे शिकन डाल कर रखिये, तब तो सन्दूक में अच्छी तरह आ जायगा।

शिकस्त खाना—हारना।

शिकस्त देना—हराना।

शिकायत करना—चुपचाप निन्दा करना।

शिकायत रफा करना—दुख मिटाना। वैद्य जी ने सारी शिकायत रफ़ा कर दी।

शिकार आना—(१) मारने के लिये जीव मिलना (२) आसामी फँसना।

शिकार करना—(१) जानवर मारना। (२) स्वार्थ खूब साधना।

शिकार खेलना—अहेर करना।

शिकार हाथ लगना—आसामी मिलना। एक शिकार हाथ लगा इसी से काम बनेगा।

शिकार होना—(१) वश में आना। उनका शिकार होना और बीमारी का शिकार होना एकसा है, दुबला करके छोड़ते हैं। (२) प्रेम में फँसना। इस कटीली आँखों के शिकार हुए।

शिकारी ब्याह—गंधर्व विवाह।

शिगाफ़ देना, लगाना—१) चीरा लगाना। (२) कलम चीरना।

शिगूफा खिलना—चुटकुला, अनोखी मनोरंजन की बात होना।

शिगूफा खिलाना—मनोरंजन के लिये कोई नया झगड़ा उठाना।

शिगूफ़ा छोड़ना—(१) चुभती अनोखी बात कहना। (२) तमाशे के लिए मामला पैदा करना।

शिगूफ़ा फूलना—अनोखी बात, मामला तैयार हो जाना।

शिप्पा जमना— अटकल पच्चू करना। उन दिनों कहीं उसका शिप्पा न जमा।

शिष्टाचार करना-मारना पीटना। बहुत बढ़ कर बोल रहा है ज़रा शिष्टाचार कर दो।

शिस्त बाँधना—निशाना लगाना।

शीराज़ी खुलना, टूटना—(१) सिलाई उधड़ना, टूटना। (२) इत-जाम बिगड़ना।

शील तोड़ना-मनुष्यता न रखना, निर्दय, निठुर होना।

शील न होना (आँखों में)—संकोच, नम्रता न होना। बेहया की आँखों मे शील तो है ही नहीं।

शीश महल का कुत्ता—पागल, दीवाना।

शीशा बाशा-बड़ी कोमल, नाज़ुक।

शीशी सुंघाना—बेहोश करना।

शुक्रिया अदा करना—धन्यवाद देना। आपने जो समय पर मेरी मदद की है, उसकें लिये मै आप का शुक्रिया अदा करता हूँ।

शेखी किरकिरी होना—घमंड मिटना।

शुहरत पैदा करना-प्रसिद्ध होना। भारतवर्ष में इस दवा ने अच्छी शुहरत पैदा की है।

शेखी झड़ना, निकलना—नीचा देखना।

शेखी बघारना, मारना, हाँकना—डींग हाँकना, बड़ाई मारना।

शेर की आँख से देखना—शत्रुता की दृष्टि से देखना।

शेर करना (चिराग)—रोशनी बढ़ाना।

शेर के कान कतरना—बड़ा साहसी वीर होना। तुम रात को अकेले वहाँ चले जाते हो? तुम तो शेर के कान कतरते हो।

शेर मारना—वीरता का काम करना। आज तो ऐसी बातें मार रहे हैं जैसे कोई शेर मार कर आये हैं।

शेर होना—निर्भय, उद्दंड बनना।

शैतान उठाना— (१) तूफान उठाना, झगड़ा खड़ा करना। (२) ऐब लगाना (३) शोर मचाना।

शैतान का कान में फूँकना—बुरी भावना मे फँसना।

शैतान का धक्का—बुरी वृत्ति।

शैतान का बच्चा—नीच।

शैतान की आँत—बहुत बड़ी। पगड़ी है कि शैतान की आँत?

शैतान की खाला—लड़ाक स्त्री।

शैतान के कान काटना—शैतान से भी बड़ा धूर्त होना। जो मनुष्य

शैतान के भी कान काटता है, वह तुम्हारे पंजे में कैसे आ सकता है।

शैतान चढ़ना, लगना—भूत सवार होना। सर पै शैतान के एक और भी शैतान चढ़ा।

शोभा देना—अच्छा लगना।

शोर मचाना—बहुत चिल्लाना। प्रातः तथा सायं काल के समय पक्षी उपवनों में बड़ा शोर मचाते हैं।

शोरे की पुतली—बहुत गोरी स्त्री।

शौक करना—उपयोग, भोग करना।

शौक चर्राना, पैदा होना—इच्छा होना।

शौक पूरा करना, मिटाना—कामना मिटाना।

शौक फ़रमाना—चखना. उपभोग करना।

शौक से—आनन्द से, स्वेच्छा-नुसार।

श्रम पाना—करते करते थकना।

श्राद्ध करना—अंतिम यादगार करना।

श्री करना—(१) आरम्भ करना। (२) माथे पर रोली का टीका लगाना।

श्रुतिपथ में आना—सुनना।

श्वास खींचना, चढ़ाना—साँस रोकना।

श्वास छूटना—मरना।

श्वास रहते—जीते जी।

स

सँकरे में पड़ना—आफत में फँसना।

संकल्प करना—दान देना। विश्वामित्र के माँगने पर राजा हरिश्चन्द्र ने सारा राज्य संकल्प कर दिया।

संकल्प विकल्प में पड़ना—दुविधा में पड़ना।

संख बजाना—रोना। इसे किसने पीट दिया है, जो घंटे भर से बैठा बैठा संख बजा रहा है।

संग लगना—साथ हो चलना, लेना।

संग लगाना—साथ ले लेना, ले जाना।

संग लेना—साथ ले चलना।

संगत करना—(१) नर्तकियों के साथ तबला आदि बजाना। (२) साथ रहना। साधु संगत करो

संझा फूलना—सन्ध्या काल होना। संझा फूलने पर कृष्ण गायों के साथ घर को लौटते थे।

संझा बत्ती करना—दीया जलाना।

संसार की हवा खाना—दुनिया का रंग ढंग देखना, अनुभव प्राप्त करना।

संसार की हवा लगना—चालाक हो जाना, दुनियावी दिखावट, रंग ढंग आ जाना।

संसार त्यागना—(१) मरना। (२) वैरागी होना।

संसार से उठना—(१) मरना। (२) समाप्त होना। नियम न रहना। यह प्रथा अब संसार से उठ गई।

संसार से नाता तोड़ना, त्यागना—विरक्त होना।

संसारी होना—गृहस्थी बनना।

सकता पड़ना—छंदों में यतिभंग होना।

सखुन डालना—(१) पूछना, प्रश्न करना। (२) कुछ माँगना। सखुन उन्हीं पर डाले जो हँस हँस राखे मान।

सखुन देना—वादा करना।

सख्ती करना—बलात्कार करना। आज एक लड़की के साथ सख्ती करने के अपराध मे एक गुंडा गिरफ्तार हुआ है।

सगाई करना—किसी को अपनी लड़की ब्याहने का वादा करना। शहर के एक अच्छे वकील हैं उन्हीं के लडके को अपनी लड़की की सगाई कर दी है।

सचमुच—वास्तव में।

सटका या सपटा मारना—बहुत जल्दी (दौड़ कर) जाना।

सटपटाते फिरना — परेशान होकर इधर उधर फिरना। क्यों, क्या काम नहीं बना जो सट पटाते फिर रहे हो।

सटर पटर लगाना—(१) बखेड़ा फैलाना। (२) छोटे मोटे काम करना। (३) मेल बैठना।

सट्टा बट्टा लगाना—कार्य सिद्धि के साधन, आदमी जुटाना।

सट्टी मचाना—हल्ला करना। क्लास मे लड़कों ने सट्टी मचा रखी है।

सट्टी लगाना—चीज़ें फैलाना। किताबे इकट्ठी करके रखो क्या सट्टी लगाई है।

सड़क काटना, निकालना—(१) सड़क बनाना। (२) कोई प्रशस्त मार्ग प्रस्तुत करना।

सत पर चढना—पति की चिता पर जलना।

सत पर रहना—पतिव्रता रहना।

(बे) सतर करना—नंगा, वेइज्जत करना।

सती होना—(१) मरे पती के साथ चिता मे जलना। (२) मर मिटना।

सतीत्व बिगाड़ना—स्त्री की इज्जत बिगाड़ना।

सत (सत्य) छोड़ना—(१) साहस छोड़ना। (२) सत्य से

विचलित होना। सत मत छोड़े बावले सत छोड़े पत जाय।

सत्कार करना—मारना पीटना। जरा सत्कार कर दो तो सीधे हो जायेंगे।

सत्ता चलना, चलाना—अधिकार होना, जताना

सत्तू सीधा बाँध कर पीछे पड़ना—पूरी तैयारी से काम में लगना। तुम्हें फँसाने के लिये सत्तू बाँध कर पीछे पड़े हैं।

सत्य डिगना, डोलना—(१) धर्म जाना। (२) धैर्य न रहना। (३) ईमान बिगड़ना। लाख लोभ दिखाया गया पर उसका सत्य न डिगा।

सत्य पर रहना—ईमान, धर्म पर दृढ़ रहना।

सत्यानाश करना—खराब करना। अरे तुमने गीली कापी पर हाथ रख कर सत्यानाश कर दिया।

सदके जाऊँ—निछावर हो जाऊँ।

सदमा उठाना—विपत्ति मे पडना। मेरा इसमें कोई मतलब नही इन्हीं की खातिर सब कुछ सदमा उठाया है।

सदमा पहुँचाना—चोट पहुँचाना, दुःख पहुँचाना वह वैसे ही ग़रीब है, चोरी करा कर उसे क्यों सदमा पहुँचाते हो।

सदा देना, लगाना—भीख के लिए पुकारना।

सनक सवार होना—धुन सवार होना। यह भी अजीब आदमी है, रोजाना एक नई सनक सवार होती है।

सनसना जाना—भयभीत हो जाना। उस विशालकाय साक्षात् राक्षस को देखकर मैं सनसना गया।

सन से निकल जाना—सन आवाज के साथ निकल जाना। कान के पास से गोली सन से निकल गई। [जी] **सन हो जाना**—(१) ठक से रह जाना। (२) घबड़ा जाना। (३) चुप हो जाना।

सन से होना—आश्चर्य में डूब जाना। यह सुनकर कि उसे एक छोटे से पहलवान ने ही पछाड़ दिया सब लोग सन से हो गये।

सनीचर आना—बुरे दिन आना।

(सीन) की सनीचरी—सब को खराब समय।

सन्न मारना-सन्नाटा खींचना, मारना—एक बारगी चुप हो जाना। उनके लेक्चर देते वक्त सब सन्नाटा मार गये।

सन्नाटा बीतना—उदासी, मलीन मन समय बीताना।

सन्नाटे का—सन सन करते हुए,

लगाते हुए। सन्नाटे की हवा चल रही है।

सन्नाटे के साथ, से—बड़ी तेज़ी से। तीर सन्नाटे से निकल गया।

सन्नाटे में आजाना—हक्का बक्का हो जाना। उसकी बातें सुनते ही सन्नाटे में आ गया।

सपना होना—देखना भी दुर्लभ। बचपन की वह बातें सपना होगई हैं।

सपर जाना—मर जाना।

सपाटा भरना, लगाना, मारना—खूब दौड़ लगाना।

सफ़र करना—यात्रा करना। कई बार हमने रेल से बड़ा लम्बा सफर किया है।

सफ़ाई कर देना—(१) बरबाद कर देना। (२) खा डालना। (३) चुका देना। (४) मार डालना।

सफ़ाई देना—निर्दोषी प्रमाणित करना। कितनी भी सफाई दो, मैं तो जेल भेजूँगा।

सफ़ाया करना—बराबर, बर्बाद कर देना।

सफ़ेद रंग पड़ जाना—फीका, बेरौनक होना।

सफ़ेदी आना—बुढ़ापा आना।

सबक़ देना—शिक्षा देना, नसीहत देना। दिया है वह सबक़ तुमने कि अबतक याद करते हैं।

सबक़ पढ़ाना—दे० पट्टी पढाना।

सब को एक लाठी से हाँकना—सब के साथ एकसा व्यवहार करना।

सब मिलाकर—कुल।

सब्ज़ बाग़ दिखाना—(१) झूठी आशा दिलाना। (२) बढ़ावा देना। (३) धोखा देना।

सब्ज़ बाग़ नज़र आना—बड़ी आशाओं में होना।

सब्र कर बैठना—धैर्य से सहना।

सब्र पड़ जाना—आह का फल मिलना। गरीब का नाश किया उसका सब्र पड़ा है जो तुम्हारा मरा।

सब्र समेटना—शाप या आह लेना। लाचारों को दुख देकर उनका सब्र मत समेटो।

समझ पर पत्थर पड़ना—समझ में न आना। तुम्हारी समझ पर क्या पत्थर पड़ गये जो न सोचा।

समझाना बुझाना—अपनी राय में लाना।

(एक) समान—एक जैसे। दोनों एक समान हैं, अन्तर नहीं।

समाँ पाना—अवकाश पाना। यदि आप समाँ पावें तो मेरे लिये जो कुछ उचित समझें कह दें।

समाँ बँधना—संगीत आदि से महफिल का एकाग्र होना। जब वह गाने खड़ी हुई तो एक समाँ बँध गया।

समुद्र पार उतारना—काले पानी भेजना। उस पर बहुत बड़ा अपराध सिद्ध हुआ है, जिस पर सरकार ने उसे समुद्र पार उतार दिया है।

सरंजाम करना—पूरा करना। तुम बड़े लापरवाह हो, एक काम का तो सरंजाम नहीं किया तब तक दूसरा शुरू कर दिया।

सर करना—(१) फायर करना। (२) जीत लेना, काबू में करना। हमारी टीम ने सब को सर कर लिया।

सरकशी करना—हुक्म न मानना। जब मुगल बादशाह औरंगजेब के बाद अय्याशी मे फँस गये, तो चारों ओर नबाब आदि सरकशी करने लगे।

सरपट दौड़ना, फेंकना, डालना—घोड़े का तेज़ दौड़ना। मैने जो सरपट घोड़ा फेंका तो झट मोटर से आगे।

सरता बरता करना—मिल-जुल कर काम चला लेना। सफर मे सरता बरता कर थोड़े कपड़ों से काम चला लिया।

सरनाम करना—प्रसिद्ध बनाना। यदि यह तुम्हारी बनाई हुई पुस्तक इसी तरह बिकती रही तो तुम्हें सरनाम कर देगी।

सर नाम होना—प्रसिद्ध होना। अपनी सत्यता तथा दानीपने के कारण राजा हरिश्चन्द्र दुनियाँ में सरनाम हो गये।

सरफ़राज करना—धन्य करना (व्यग्य)।

सरसों फूलना—पीला पीला दिखना। मनमोहन ने छबि दिखलाई सरसों फूली आँखों में।

सराय का कुत्ता—मतलब का यार। सराय के कुत्ते हो मै दूँगा मेरे पैर दाबोगे नहीं किसी और के सही।

सराय की भटियारी—बेशर्म लड़ाकी स्त्री। सौत सराय की भटियारी है, उन्हें मै पसन्द हूँ, वे आते हैं।

सर्द खाना—जाड़े का असर होना।

सर्द होजाना—(१) मर जाना। (२) चुप होजाना। मेरी डपट सुनते ही वह सर्द हो गया।

सर्द होना—(१) ठडा पड़ना। (२) मंदा, धीमा होना। (३) चुप, उत्साह-रहित होना।

सर्दी चढना—जाड़े से बुखार आना।

सर्दी पड़ना—जाड़ा होना।

सर्राफ़ के से टके—बिना हानि का सौदा। हम तो ऐसा व्यवहार चाहते हैं कि सर्राफ के से टके चाहें जब भुनाले।

सलतनत बैठना—इन्तजाम ठीक होना।

सलाई फेरना—आँखे फोड़ना।

(दूर से) सलाम करना—पास न जाना। ऐसे लोगों को दूर से सलाम करो ये बुरे हैं। हमने उनकी मज़ाक उड़ाई।

सलाम कर के चलना—नाराज होकर जाना। वे झट सलाम करके चल दिये।

सलामती से — अच्छी तरह, भगवान की कृपा से बेटा सलामती से घर आये, यही दुआ है।

सलाम देना—(१) सलाम करना। (२) सलाम कह देना। मै मियाँ से मिला था उन्होंने आपको सलाम दी है।

सलाम फेरना—(१) नमाज पढना। नाराज़ होकर सलाम भी न मानना।

सलाम लेना—सलाम का जवाब देना।

सलामी उतारना—इजत के लिए तोपे बंदूके छोड़ना बाढ दागना।

सलाह ठहराना—निश्चय, राय होना। फिर सलाह ठहरी रिपोर्ट ही कर दे।

सवारी लेना—चढना, चढ़ने के काम में लाना।

सवाल जवाब करना—चखचख, हुज्जत करना।

(किसी पर) सवाल देना—दावा, नालिश करना।

सवाल हल करना — विपत्ति, कठिनाई दूर करना।

सस्ता लगना—कीमत, दाम कम होना।

सस्ते छूटना—आसानी से कठिन काम होना। सस्ते छूटे वरना हज़ार का खर्च था।

सहम चढना—डर या शर्म होना।

सहारा ढूँढना—आश्रय, वसीला खोजना।

सहारा देना—(१) सहायता, मदद करना। (२) टेक देना। (३) आसरा देना। (४) रोकना।

सहारा पाना—सहायता पाना।

सही पड़ना—ठीक बैठना, सच उतरना।

सही भरना—मान लेना।

साँचे में ढलना—अति सुन्दर बनना। लड़का ऐसा है साँचे में ढला हुआ, अति सुन्दर।

साँचे में ढला होना—बहुत सुन्दर आकार-रूप होना।

साँचे में ढालना—सुन्दर बनाना। मूर्ति तो ऐसी बनी है जैसे साँचे में ढाली हो।

साँठ गाँठ करना—किसी काम के लिये साज़िश सोचना। दल्लालों ने गाहक से साँठ गाँठ करके साहूकार का माल बिकवा दिया।

साँड की तरह घूमना—मस्त बेफिक्र घूमना।

साँड की तरह डकारना—जोर से चिल्लाना।

साँधा मारना—गाँठ से दो रस्सी जोड़ना (लश०)।

साँप की चाल चलना—टेढ़े मेढ़े चाल चलना।

साँप की तरह केंचुली झाड़ना—पुराना रूप छोड़ नया करना। वसत में आकर अपने भी गुदड़े छोड़ साँप की केंचुली झाड़ी है।

साँप की लहर—साँप के जहर का चढ़ना और उसका दुख होना।

साँप के मुँह में—खतरे में।

साँप खिलाना—(१) नीच, दुखदेय को पालना। (२) भयंकर वस्तु से खेल करना। उसे शामिल तो कर लिया है, पर समझ लो साँप को खिला रहे हो।

साँप छाती पर लोटना—दिल पर चोट लगना। तुमने ऐसी बात कही कि उनकी छाती पर साँप लोट गया।

साँप छछूँदर की दशा—दुविधा मे, दोनों ओर आफत। न करूँ तो पिटूँ करूँ तो जेल, क्या करूँ साँप छछूदर की सी हालत है।

साँप लोटना (कलेजे पर)—(बैर आदि से) अति ईर्ष्या जलन होना। उसकी उन्नति देख मेरे कलेजे पर साँप लोट गया।

साँप सूँघ जाना—निर्जीव सा हो जाना। ऐसे सोये मानो साँप सूँघ गया हो।

साँस उखड़ना—(१) दमे का दौरा होना। मरते समय ऊपर ऊपर बड़े कष्ट से साँस आना।

साँस उड़ना—(१) मरने के करीब होना। (२) रुककर साँस आना।

साँस उलटी लेना—शोक करना, पछताना।

साँस ऊपर नीचे होना—साँस रुकना।

साँस खींचना—(१) साँस लेना। (२) साँस, दम रोकना।

साँस चढ़ जाना—(१) हाँफने लगना। (२) जल्द थक जाना। (३) मरने के निकट होना।

साँस चढ़ना—चिन्ता होना। लड़की के ब्याह का अभी से साँस चढ़ा है।

साँस तक न लेना—कुछ न बोलना। उनके डर से कोई साँस तक नहीं लेता।

साँस रहते—जीते जी।

(गहरी) साँस भरना, लेना
साँस ठंडी, लम्बी लेना }
खूब साँस खींचकर बाहर निकालना (दुख में या दुख बीतने पर ऐसा होता है)।

साँस लेना—करते करते, चलते

चलते ज़रा ठहर जाना। साँस लेलूँ तो चलूँ।

साँसा पड़ना—खतरे का संदेह होना।

साई देना—काम के लिये कुछ पेशगी देना। जूते की साई देदी।

साई बजाना—पेशगी देने वाले के यहाँ बाजा बजाना।

साका चलाना—प्रभाव माना जाना।

साका बाँधना—धाक, रौब जमाना।

साखी पुकारना—साक्षी देना। आज कल तो लोग तेल की पूड़ियों पर साखी पुकारने को तैयार हो जाते हैं।

साग पात समझना—दे० खीरा ककड़ी समझना।

साज़ छेड़ना—बाजे बजाना शुरू करना।

सात घाट का पानी पीना—चालाक, धूर्त या दुनिया से अभिज्ञ होना।

सात तालों के अंदर रखना—बड़ी हिफ़ाज़त से रखना।

सात धार होकर निकलना—हज़म न होना, दस्त की राह निकलना।

सात परदे में रखना—बहुत संभाल कर रखना। चाहे सात परदों में रखो जान रह नहीं सकती।

सात पाँच—(१) कई एक, बहुत से। (२) चालाकी, छल कपट। इसे सात पाँच नहीं आता।

सात पाँच करना—(१) चालबाजी करना। सीधा आदमी है सात पाँच नहीं जानता। (२) हुज्जत, तकरार करना। (३) संदेह करना। सात पाँच मत करो तुम्हारा देना न डूबेगा (४) बहाना करना।

सातों भूल जाना—होश-हवाश चले जाना। शेर को देखोगे तो सातों भूल जाओगे।

साथ देना—सहायता देना, एक साथ चलना। तुमने मेरा आधा साथ दिया।

साथ सोकर मुँह छिपाना—अधिक घनिष्ठता होने पर भी शर्म या छिपाव करना।

सान देना, धरना—धार तेज़ करना।

सान पर चढ़ना—(१) निखरना। (२) तेज़ होना।

साफ़ उड़ जाना—हाथ न आना, भाग जाना।

साफ़ उड़ा जाना—बहाना कर देना, इन्कार कर देना।

साफ़ उड़ा लेना—चुपचाप ले आना।

साफ़ करना—(१) मार देना।

(२) बरबाद कर देना। (३) खा जाना।

साफ़ कान खोल देना—खूब जता देना, समझा देना। मैने तो साफ़ कान खोल दिये हैं, अब भी करो तो तुम्हारे सिर।

साफ़ छूट जाना—बेदाग़ बच जाना।

साफ़ जवाब देना—बिल्कुल 'ना' कर देना। जब मैने माँगा तो साफ़ जवाब दे दिया।

साफ़ बचना—बाल बाल, बिल्कुल बच जाना।

साफ़ साफ़ सुनाना—खरी खरी, सत्य-स्पष्ट (चाहे बुरी लगे) कहना।

साफ़ा देना—भूखा रखना।

साबिका पड़ना—(१) वास्ता, काम पड़ना। (२) मेल जोल, लेनदेन होना।

सामना करना—(१) धृष्टता करना, बराबरी करना। (२) लड़ना, मुठ भेड़ करना।

सामने करना—आगे हाजिर करना।

सामने का—(१) उपस्थित। (२) अपने देखने में हुआ हो।

सामने की बात—आँखों देखी बात।

सामने पड़ना—(१) आँखों आगे आना। (२) लड़ने-झगड़ने लगना।

सामने होना—परदा छोड़ कर आगे आना।

सामान बाँधना—सामान लेकर चलने को तैयार होना।

साया डालना—(१) असर डालना। (२) कृपा करना, आना।

साया पड़ना—(१) असर होना।

साया होना—(१) दया, रक्षा, कृपा होना। बड़ों का साया है डर कहाँ से हो। (२) भूत प्रेत का असर होना।

साये में आना—(१) भूत प्रेत चढ़ना। (२) रक्षा, शरण में आना।

साये में रहना—रक्षा, शरण में रहना।

साये से भागना—पास न आना।

साष्टांग प्रणाम करना—दे० हाथ जोड़ना।

सिक्का पड़ना—सिक्का ढलना।

सिक्का बैठना जमना प्रभाव, अधिकार होना। राजा पर सिक्का बैठ गया तो करा दूँगा।

सिक्का बैठाना—अधिकार, रौब जमाना। जहाँ जाता है अपना सिक्का बैठा लेता है।

सिट्टी पिट्टी गुम होना, **सिट्टी भूलना**—होश हवाश जाते रहना।

सिड़ सवार होना—सनक, धुन होना।

सितारा चमकना } भाग्योदय,
सितारा बलंद होना } अच्छे दिन होना। इस साल सितारा चमका और लखपती बने।

सितारा मिलना—(१) ग्रहों का मेल होना। (२) मन मिलना, प्रेम होना।

सिप्पा जमाना—उपाय, भूमिका बाँधना।

सिप्पा बैठना—कोशिश चलना।

सिप्पा भिड़ना, लड़ना—(१) उपाय से काम बन जाना। (२) तदबीर हो जाना।

सिप्पा भिड़ाना, लड़ाना—युक्ति, तदबीर करना। सिप्पा भिड़ाओ उनका कोई रिश्तेदार सिफारिश कर दे।

सिर आँखों पर बैठाना, रखना—बड़ी इज्ज़त आव भगत से बैठाना। मै उसकी क़द्र जानता हूँ, अतः सिर आँखों पर बिठाता हूँ।

सिर आँखो पर होना—मान्य होना। आपकी आज्ञा सिर आँखों पर है।

सिर आना—भूत प्रेत का प्रभाव होना, खेलना।

सिर उठाना—(१) विरोध, उपद्रव करना, बिगड़ खड़े होना। जो भी बाग़ी सिर उठाये सिर काट डालो। (२) घमंड करना। (३) बीमारी से मौका पाना। जब से बच्चा ज्वर में पड़ा है सिर नहीं उठाया। (४) इज्जत से खड़े होना। गुलाम भारत स्वतंत्र देशों के सामने सिर नहीं उठा सकता। (५) सामने देखना, लज्जित होना।

सिर उठाकर चलना—शान से ऐंठ कर चलना। जो एक भी डिग्री होगई तो बाज़ार में सिर उठाकर न चल सकोगे।

सिर उठाने की फुर्सत न होना—जरा भी फुर्सत न होना व्यस्त होना।

सिर उतरवाना—सिर कटवाना।

सिर उतारना—सिर काटना।

(किसी का) सिर ऊँचा करना—इज्जत देना। आपने उसका सिर ऊँचा कर दिया है।

(अपना) सिर ऊँचा करना—प्रतिष्ठा रखना। बिरादरी मे अपना सिर ऊँचा किए रहो चाहे भूखे मरो।

सिर ओखली में देना—आपत्ति में पड़ना, जान पर खेलना। ओखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर।

सिर औंधाकर पड़ना—फिक्र या रंज में नीचा सिर किए पड़ना।

सिर करना—(१) गले मढ़ना।

(२) जिम्मे करना । (३) सिर गूँथना ।

सिर काढ़ना—मशहूर होना ।

सिर का एक बाल न छोड़ना—सब कुछ ले लेना ।

सिर का न पांव का—आदि का न अंत का, बे ठिकाने ।

सिर का पसीना पैर तक आना—बहुत मेहनत पड़ना । धान कूटते कूटते सिर का पसीना एड़ी तक आजाता है तब दस पैसे मिलते हैं ।

सिर का बोझ टलना, टालना—झंझट दूर होना, बेफिक्र होना ।

सिर के बल चलना—आदर पूर्वक जाना । आप बुलावेंगे तो मैं सिर के बल आऊँगा ।

सिर खपाना—(१) बहुत समझाना । (२) बहुत सोचना विचारना । बहुत सिर खपाया पर समझ में ही न आया ।

सिर खाना—व्यर्थ बातों से तंग करना । मैं नहीं सुनता मेरा सिर मत खाओ ।

सिर खाली करना—(१) बहुत बोलना । (२) बहुत सोचना । (३) बहुत समझाना । व्यर्थ में सिर खाली कर डालो, वह न समझेगा ।

सिर खुजलाना—पिटना चाहना । क्यों सिर खुजला रहा है सीधा चला जा, पिटेगा क्या ?

सिर गंजा करना—(१) मार मार कर सिर के बाल उड़ाना । (२) कौड़ी न छोड़ना ।

सिर घुटनों में देना—(१) शर्मिन्दा होना । (२) सोच विचार में होना ।

सिर चढ़कर बोलना—छिपाये न छिपाना । पाप कर्म सिर चढ़कर बोलता है ।

सिर चढ़ना—गुस्ताख़ी करना । बे अदब बनना ।

सिर चढ़ा—दे० मुँह चढ़ा ।

सिर चढ़ाना—दे० मुँह लगाना ।

सिर चला जाना—मरना । सिर चला जाय पर आन न जाय ।

सिर चीरना—बे हद कोशिश करना ।

सिर जोड़ कर बैठना—एक दूसरे के समीप सहाय बनकर आपत्ति में बैठना ।

सिर जोड़ना—(१) जलसा करना । (२) एका कर के । सिर जोड़कर करोगे तो काम बन जायगा ।

सिर झुकाना, नीचा करना—(२) लज्जित होना । (२) हुक्म मानना । (३) प्रणाम करना । (४) हार मानना । (५) नम्र बनना ।

सिर टकराना—कोशिश करना । लाख सिर टकराओ पर काम न बनेगा ।

सिर टूटना—झगड़ा होना, सिर फटना।

सिर डालना (किसी के)—दे० सिर मढ़ना।

सिर थाम के बैठना—अधिक दुख में सिर पकड़ कर बैठना, बेहोशी सी होना।

सिर देना—जान दे देना। सिर दो गढ़ न दो।

सिर धरना—(१) मानना। आज्ञा सिर धरे चले तहाँ ते। (२) जिम्मेदार बनाना। मारा आपने सिर मेरे धरते हो।

सिर धुनना—सिर पीटना। सिर धुनि धुनि पछताहिं।

सिर नंगा करना }
सिर नवाना } —दीन बनना। सिर नवाकर ही काम निकाल लो।

सिर नीचा करना—(१) प्रतिष्ठा खोना। (२) लज्जित करना। भरी सभा में बेचारे का सिर नीचा कर दिया।

सिर नीचा होना—लज्जित होना।

सिर पचाना—(१) बहुत सोचना। (२) बहुत यत्न, श्रम करना।

सिर पटक के मरना—बहुत कोशिश करते करते थक जाना। सिर पटक के मर जाओ तब भी न दूँगा।

सिर पटकना—अफ़सोस करना। अब क्यों सिर पटकते हो तब भी तो तुम्हीं थे?

सिर पड़ना }
सिर पर आना } —(१) अपने ऊपर घटित होना। जब सिर पर आई तो ज्ञात हुआ कितना कठिन है। (२) जिम्मे होना। सिर पर आगई तो करनी पड़ी।

सिर पर आ जाना—थोड़े दिन रहना। लो ब्याह सिर पर आ गया कुल बीस दिन हैं।

सिर पर आरे चलना—(१) जान पर बीतना। (२) अन्याय, अत्याचार होना। रियासतों की प्रजा के सिर पर आरे चलते हैं परन्तु बेचारी आह भी नहीं कर सकती।

सिर पर उठा लेना—धूम मचाना। लड़कों ने स्कूल सिर पर उठा रखा है।

सिर पर कोई न होना—देखभाल करने वाला न होना। पिता जी के बाद सिर पर कोई न रहा।

सिर पर खड़ा रहना—सामने ही रहना। सिर पर खड़े रहोगे तो काम न कर सकूँगा।

सिर पर खून चढ़ना, सवार होना—जान लेने पर उतारू होना। सिर पर खून सवार था एक दिन क़त्ल कर ही डाला।

सिर पर खेलना—(१) जान जोखों में डालना। सिर पर खेल

कर ही विजय मिलेगी। (२) पास ही होना। मौत सिर पर खेल रही है। (३) भूत प्रेत आदि का सिर पर होना।

सिर पर चढ़ना, कर बोलना—स्वय प्रकट होना। जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले।

सिर पर छप्पर रखना—(१) दबाव डालना। जब कई लोगों ने सिर पर छप्पर ही रख दिया तो करना पड़ा। (२) बाल बढ़ना।

सिर पर जूँ न रेंगना—चेत, ख्याल, चिन्ता न होना।

सिर पर पड़ना—जिम्मे पड़ना। सारा नुकसान तुम्हारे सिर पड़ेगा। (२) अपने पर गुज़रना। सिर पर पडी तब जाना गृहस्थी चलाना कठिन है।

सिर पर पाँव रखना—(१) बहुत जल्दी भागना। मैं वहाँ से सिर पर पाँव रखकर भागा। (२) उद्दंड व्यवहार करना। बुरा भला कह लेते पर उसके सिर पर पाँव न रखते।

सिर पर पृथ्वी उठाना—शोर गुल मचाना।

सिर पर बीतना—दे० सिर पर पड़ना।

सिर पर मिट्टी डालना—(१) रंजीदा होना। (२) घृणा प्रकट करना। बुढापे में व्यभिचार छिनाल के सिर मिट्टी डाल।

सिर पर रखना—आदर करना। अपने मित्र होते तो मैं सिर पर रखता।

सिर पर लेना—(१) जिम्मे लेना। (२) सहना। (३) स्वयं को खतरे में डालना। सिर पर ले लिया तो मर ही मिटेगा।

सिर पर शैतान चढ़ना—गुस्सा आना। ऐसा शैतान सिर पर चढा कि दिन भर खाना ही न बनाया।

सिर पर सहना—स्वय सहना।

सिर पर सींग होना — कोई विशेषता होना। उनके क्या सिर पर सींग हैं जो उन्हें ज्यादा दूँ।

सिर पर सेहरा बंधना—बडाई, वाहवाही मिलना। विजय का सेहरा उसके सिर बँधा।

सिर परस्ती करना — रक्षा करना। ग़रीबों की तो सिवाय ईश्वर के कोई सिर परस्ती नहीं करता।

सिर पर हाथ धर कर रोना—भाग्य को रोना। रुपया खो गया तो सिर पर हाथ धर कर रोओगे।

सिर पर हाथ धरना—(१) रक्षा, सहायता होना। हैडमास्टर ने सिर पर हाथ धरा है, पास होगे। (२) सर की कसम खाना। सिर पर हाथ धर के कहा 'मैने नहीं ली।'

सिर पर हाथ फेरना—(१) पुचकारना। (२) धोखे में डाल

कर हड़पना। किसी अमीर के सिर पर हाथ फेरो जो कुछ हाथ लगे।

सिर पर होना—रक्षक, पालक तथा सहायक होना। मेरे सिर कोई होता तो मै पढ़ जाता।

सिर पीटते फिरना—पश्चाताप, अफसोस जताते रहना।

सिर पीटना—शोक मनाना। दुख मे सिर पीटोगे तो बेहोश हो जाओगे।

सिर पीट लेना—करम ठोककर बैठ जाना। सिर पीट लिया, दिलके गुब्बार निकाल लिये।

सिर फिरना—पागल होना।

सिर फेरना—(१) 'ना' करना। (२) बहका कर विरुद्ध कर देना।

सिर फोड़ना—(१) कपाल क्रिया करना। (२) झगड़ना। दो दो आने पर सर फोड़ते शर्म नहीं आती।

सिर बाँधना—बाल बाँधना।

सिर बेचना—फौज़ी बनना।

सिर भिन्नाना—सिर दर्द होना, चकराना।

सिर मढ़ना—जिम्मे करना। नुकसान तुमने किया जुर्माना मेरे सिर मढ़ा।

सिर माथे—दे० सिर आँखों...।

सिर मारना—(१) समझाना। (२) उत्तेजित हो देना। सड़ेगले फल उसी के सिर मार आओ। (३) जान लड़ाना। (४) बहुत खोजना। बहुत सिर मारा पर वही शब्द न मिला।

सिर मुड़ाते ओले पड़ना—प्रारम्भ में ही काम बिगड़ना।

सिर मुड़ाना—संन्यासी होना।

सिर मूड़ना—धोखे मे फाँस कर ले लेना।

सिर में बाल होना—सहन शक्ति होना। जब तक सिर पर बाल हैं मै लड़ूँगा।

सिर रँगना—सिर फोड़ना।

सिर रहना—कहते ही रहना। उनके सिर रहोगे तो नम्बर बता ही देगे।

सिर सफेद होना—बुढ़ापा आना, अनुभव होना।

सिर से कफ़न बाँधना—मरने को तैयार होना। क्यों सिर से कफ़न बाँधे बिना लड़ाई कैसी?

सिर से खेलना—(१) सिर पर भूत आना। (२) लड़ाना।

सिर से खेल जाना—जान दे देना।

सिर से चलना—सिर के बल चलना, बहुत आदर करना।

सिर से तिनका उतारना—प्रत्युपकार करना। तुम भी उनके साथ भला कर के सिर से तिनका उतारो।

सिर से पानी गुज़रना—सहने की हद होना। कहाँ तक गाली सुने

अब तो पानी सिर से भी गुजर गया।

सिर से पैर तक—सारे शरीर मे, पूर्णतया।

सिर से पैर तक आग लगना—बहुत क्रोध आना।

सिर से बला टालना—(१) झंझट दूर करना। (२) दे० बेगार टालना।

सिर से बोझ उतरना, उतारना—(१) एहसान का बदला देना। (२) भारी काम कर डालना। (३) बेगार सी टालना। (४) काम क्या किया सिर से बोझ उतारना है, इससे अच्छा तो मै ही कर लेता।

सिर पर सेहरा होना—(१) मुख्य होना। (२) वाह वाही मिलना।

सिर सहलाना—प्यार, खुशामद करना।

(किसी के) सिर होना—(१) पीछे पडना। (२) उलझ पडना। (३) तग करना, हठ करना।

(किसी बात के) सिर होना—(१) ताड़ जाना। (२) सतत प्रयत्न करना। (३) प्राप्ति करना।

(दोषादि किसी के) सिर होना—जिम्मे होना।

सिरवा मारना—मुख उड़ाने को कपड़े से हवा करना।

सिर सूँघना—आशीष देना।

(जमीन) सूँघना—औंधे मुँह गिरना।

सिर हिलाना—इन्कार करना। मैने तो उनसे चलने को कहा था किन्तु उन्होंने सिर हिला दिया।

सिरे का—पल्ले सिरे का, अत्यत।

सिरे का रंग—जेठा रंग (रग रेज)।

सिले में—बदले मे।

सिसकती भिनकती—गंदी, मैली-कुचैली सूरत (स्त्री)।

सिसकियाँ भरना—रुक रुक कर रोना। आज मास्टर साहब ने बड़ा पीटा है, बेचारा सिसकियाँ भर रहा है।

सींग काट कर बछड़ों में मिलना—बूढ़े होकर बच्चों में मिलना।

सींग दिखाना—दे० अँगूठा दिखाना।

सींग निकलना—(१) पशु जवान होना। (२) इतराना, पागलपन करना।

सींग पर मारना—जरा परवा न करना।

सींग समाना—ठिकाना होना।

[८७८६]

(किसी के सिर पर) सींग होना—विशेषता, औरों से बढ़ कर बात होना। (व्यंग्य)

सींगी तोड़ना, लगाना—(१) चुंबन करना (बाज़ारू)। (२) सींगी से खून खीचना।

सींव चरना या काँड़ना—जबरदस्ती करना, दबाना। हैं काके द्वै सीस ईस के जो हठि जन की सींव चरै।

(अपनी) सी—जहाँ तक अपने से हो सका। मै अपनी सी बहुत करी री।

सीटी देना—सीटी बजाना।

सीढ़ी सीढ़ी चढ़ना—क्रमश. उन्नति करना। सीढ़ी सीढी चढ़ेगा तो पढाई कच्ची न रहेगी।

सीध बाँधना—(१) सीधी रेखा डालना। (२) निशान लगाना।

सीधा आना—सामना करना, भिड़ना।

सीधा करना—(१) निशाना साधना। (२) रास्ते पर लाना, टेढ़ापन निकालना।

सीधा दिन—शुभ दिन। सीधा दिन देख कर यात्रा करो।

सीधा सादा—(१) भोला, निष्कपट। (२) बनावट या तड़क भड़क से परे। प्रेमचन्द्र जी सीधे सादे रहते थे।

सीधी अँगुली घी नहीं निकलता—भलमनसाहत से काम नहीं होता।

सीधी तरह—नम्रता, शिष्टता से। सीधी तरह न देगा तो पीट कर लूँगा।

सीधी राह—अच्छे रास्ते, आचरण। सीधी राह चलो जग मे बुरे न बनो।

सीधी सुनाना—साफ साफ कह देना।

सीधे मुँह बात न करना—प्रेम से नही, ऐठ कर बोलना। डिप्टी बन कर तो सीधे मुँह बात नही करता।

सीना उभार कर चलना—घमड से फूल जाना। आज कल तो जिसके पास चार पैसे हो जाते हैं. वही सीना उभार कर चलता है।

सीना जोरी करना—जबर्दस्ती करना।

सीने पर हाथ धरना—मन को संतुष्ट करना। अब जो होना था सो हो गया अब सीने पर हाथ रक्खो और सोचो।

सीने से लगाना—(१) गले लगाना। (२) प्रेम जताना। चिट्ठी सीने से लगाई।

सीमा से बाहर जाना—हद, मर्यादा या औचित्य से अधिक।

सीर खुलवाना—दे० फसद खुलवाना।

सीर में—मिल कर। सीर में खेती कर लो।

सुख की नींद सोना—आनन्द तथा सतोष से रहना।

सुख मानना—(१) अनुकूल ही रहना। यह पेड हर जमीन में सुख मानता है। (२) सतुष्ट रहना।

सुख लूटना—मौज मज़े उड़ाना।

सुध दिलाना—भूली बात याद कराना।

सुनना चाहना—बुरा भला सुनने की इच्छा होना।

सुन हो जाना—निश्चित हो जाना। आज बड़े ज़ोर की ठंड है, उँगलियाँ सुन हो गई हैं।

सुनी अनसुनी करना—सुन कर भी ध्यान न देना। क्या अब तुम्हें नौकरी नहीं करनी है, जो सुनी अनसुनी कर देते हो।

सुध बिसराना—(१) भूल जाना। कृष्ण ने गोपियों की सुध बिसराई। (२) बेहोश, मद होश होना। बासुरी ने मो सुध बुध बिसराई।

सुध बुध जाती रहना—होश हवास उड़ जाना। सिर पर लाठी लगते ही सब सुध बुध जाती रही।

सुध बुध मारी जाना—दीवाना। हो जाना।

सुध रखना—याद रखना।

सुध लेना—(१) याद करना। (२) रक्षा के लिये आना। भगवान हमारी भी सुध लेगा।

सुन पाना—सुन लेना। वह सुन पायेंगे तो घर से निकाल देंगे।

सुबह शाम करना—टाल मटोल करना। यदि देना है, तो दे दिला दो, सुबह शाम क्यों करते हो।

सुरग लगाना—भूमि के अन्दर खोद कर बारूद भरना। लड़ाई के दिनों में सैकड़ों मीलों तक सुरग लगा दी जाती है।

सुरखाब का पर लगना—दे० सिर पर सींग होना।

सुरत बिसारना—भूलना।

सुर पुर सिधारना—मरना।

सुर में सुर मिलाना—हाँ में हाँ मिलाना।

सुराग़ लगाना—पता लगाना। यदि कोई पक्का जासूस जाय तब भले ही कुछ सुराग लगा सकता है।

सुराग लेना—भेद लेना। होशियार रहा करो यहाँ बहुत से आदमी भेष बदल कर सुराग लेने आया करते हैं।

सुर्ख होना—(१) पक जाना। देखो! वह दो आम उस डाली पर झुके हुये कैसे सुर्ख हो गये

है। (२) गुस्सा होना। मेरी बात को सुनते ही सुर्ख हो गया।

सुर्खाब का पर होना—कोई विशेषता होना। जितना वह पढ़ा है, उतना ही मैं, फिर उसमें क्या सुर्खाब के पर लगे हैं, जो वही उस नौकरी को कर सकता है।

सुला लेना—मार डालना। राणा की मुट्ठीभर सेना ने हज़ारों मुगल सिपाहियों को सुला दिया।

सुलूक करना—बर्त्ताव करना। तुम्हारे साथ जैसा कोई सुलूक करे तो तुम्हें भी उसके साथ वैसा ही सुलूक करना चाहिये।

सुलूक से रहना—मेल से रहना। यदि तुम सब लोग सुलूक से रहोगे, तो दुश्मन तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

सुस्त होना—उदास होना। अब की बार चाँदी के सौदे में कई सौ की हानि हुई है, इसी से वह सुस्त है।

सुस्ती करना—विलम्ब करना। ज़रा काम में फुर्त्ती किया करो, यदि इतनी सुस्ती करोगे तो कैसे काम चलेगा।

सुहाग भरना—माँग भरना।

सुहाग मनाना—पति के जीवन, सौभाग्य की कामना करना। वह तो दिन रात बेचारी सुहाग मनाती रहती है और तुम इतने निठुर हो।

सूई का भाला बनाना—(१) तनिक सी चीज़ से बहुत दुख होना। (२) जरा सी बुराई का बहुत बढ़ जाना।

सूख कर काँटा होना—बहुत दुबला हो जाना।

सूखा जवाब देना—साफ इन्कार करना।

सूखा टरकाना, टालना—दिये बिना, इच्छा पूरी किये बिना लौटाना। अजी क्या लाये, सूखा टाला, कुछ न दिया।

सूखा लगना—(१) सूखते जाना, सूखा रोग होना। (२) अरुचिकर होना।

सूखे खेत लहलहाना—दुख में सुख मिलना। कल दाने दाने को तरसते थे पर भगवान की कृपा से सूखे खेत लहलहाने लगे।

सूखे धान पर पानी पड़ना—बुरी से भली हालत होना। बेचारे के सूखे धान पर पानी पड़ा जो बुढ़ापे में लड़का हुआ।

सूखे पर लगना—किनारे पहुँचना।

सूत धरना—सीध बाँध कर सूत से निशान करना। बढ़ई ने गीली सूतली से लकड़ी पर सूत धरा।

सूत बराबर—बहुत महीन, सूक्ष्म।

सूत सूत—जरा जरा, तनिक तनिक।

सूद दर सूद—ब्याज पर भी ब्याज लगाना।

सूद पर लगाना—रुपया ब्याज पर देना।

सूधी कहना—खरी खरी सुनाना।

सूधी सूधी सुनाना—खरी खरी सुनाना, गाली या चुभती बात कहना।

सूधे सूध—कोरा, साफ साफ। सूधे सूध जवाब न दीजै।

सूना लगना—आदमियों के बग़ैर जी न लगना।

सूप भर—बहुत सा (अन्न)।

सूरज को दीपक दिखाना—अति गुणवान को कुछ बताना।

सूरज पर थूकना }
सूरज पर धूल फेंकना } निर्दोष को दोष लगाना। भले को बुरा कहना सूरज पर थूकना है।

सूरत करना—(१) उपाय करना। (२) ख्याल करना।

सूरत दिखाना—सामने आना। आज कल तो जिसे रुपया उधार दे दो फिर वह सूरत भी नहीं दिखाता।

सूरत नजर न आना—उपाय न सूझना। काम बनने की कोई सूरत नज़र नहीं आती।

सूरत बनाना—(१) अरुचि दिखाना। जब हिस्सा थोड़ा मिला तो सूरत बनाने लगे। (२) पूरी पूरी नकल करना। आज तो इस बहरूपिये ने खूब राजा की सूरत बनाई।

सूली चढ़ाना—फाँसी देना। जब पूरे तौर से वह अपराधी सिद्ध हो गया तो राजा ने उसे सूली चढ़ाने का हुक्म देकर मुकदमे का फैसला किया।

सूली पर जान होना—दे॰ फाँसी खड़ी होना।

सेंक साँक करना—कुछ कुछ गरम करना। और तो कुछ खाने को घर मे है नहीं, इन बासी रोटियों को ही सेक साँक कर खालो।

सेंध लगाना—दीवार में छेद करके माल चुरा ले जाना। कल रात हमारे पड़ोस के मकान में चोरों ने पीछे से सेध लगाये और बहुत सा ज़ेवर तथा रुपया चुरा लेगये।

सेहत होना—स्वास्थ्य अच्छा होना। अभी उनकी चिट्ठी मिली है कि पहले से अब उन्हें कुछ सेहत है।

सेहरा बँधना—(१) विवाह होना। किसी दिन हमारा भी इसी तरह सेहरा बँधा था। (२) बड़ाई होना। आज इस काम का सेहरा तुम्हारे सिर बँधेगा।

सैकड़ों, सौ सौ घड़े पानी पड़ना—बहुत लज्जित होना।

सैन करना—संकेत करना। जब वह सैन करके कह गई है तब तो तुम्हें अवश्य उसके घर जाना चाहिये।

सैन मारना—आँख से इशारा करना। हमारी ओर तो उसने ध्यान भी न दिया, इन्हीं की ओर सैन मार कर चली गई।

सोच में रहना—चिन्तामग्न रहना। आज कल किस सोच में रहते हो, हमें बतलाओ तो हम दूर करने का उपाय करें।

सोने का घर मिट्टी होना—सब कुछ नष्ट होना। यदि रावण सीता जी को रामचन्द्र जी को लौटा देता तो उसके सोने के घर मिट्टी का न होता।

सोने की कटारी—सुन्दर पर नाशकारी।

सोने की चिड़िया—मालदार। उसने किसी सोने की चिड़िया को फाँसने का निश्चय किया।

सोने की चिड़िया हाथ में से निकल जाना— लाभदायक मनुष्य का अपने वश में न रहना।

सोने में सुगंध होना—असभव गुण भी होना। धनवान का विद्वान् होना सोने में सुगध है।

सोलह आने—दे० बीस विस्वे। यह सामने जो गद्दी पर बैठे हैं, वही इस फर्म के सोलहों आने मालिक हैं।

सोलह सोलह गंडे सुनाना—बहुत गालियाँ सुनाना। यदि तुम्हें उसने किसी दिन आम चुराते हुये देख लिया तो सोलह सोलह गडे सुनायगी।

सोहबत उठाना—सग मे रहकर शिक्षा पाना। इन्होंने बचपन से ही भले मनुष्य की सोहबत उठाई है, इसी से इनके विचार अच्छे हैं।

सौ कोस भागना—दूर रहना, लगाव न रखना। मै बुरे से सौ कोस भागता हूँ।

सौ बात की एक बात—साराश। सौ बात की एक बात यह है कि तुम रुपये दे दो।

सौ सौ घड़े पानी पड़ना—अत्यन्त लज्जित होना। जैसे ही लोगों ने तालियाँ पीटीं कि बेचारे पर सौ सौ घड़े पानी पड़ गया।

स्टीम भरना—जोश दिलाना। स्वामी जी ने ऐसी स्टीम भरी कि वह बराबर पढ़ता गया।

स्यापा पड़ना—(मृत्यु समय) रोना चिल्लाना मचना। जैसे ही अभिमन्यु की मृत्यु की खबर महल में पहुँची कि वहाँ पर स्यापा पड़ गया।

स्याह सफ़ेद करना—भला बुरा कुछ भी जो चाहना सो करना

[दददद]

स्याही गई—बुढ़ापा आना। अब तो तुम बनाव शृंगार भले ही कर लो, वैसे तुम्हारी स्याही तो अब गई।

स्वर्ग के पंथ पर पैर देना—जान जोखिम में डालना। इस समय तुम्हारा वहाँ अकेले जाना स्वर्ग के पंथ पर पैर देना है।

स्वाँग करना—अभिनय करना। कल तो उन नाटक वालों ने राजा हरिश्चन्द्र का स्वाँग किया था।

स्वाँग बनाना—हँसी उड़ाना। यदि कोई मनुष्य कुरूप है, तो तुम लोगों को उसका स्वाँग न बनाना चाहिये।

स्वाँग भरना—विविध रूप धारण करना। इन सब नाटक वालों में जो मालिक है, वह बड़े स्वाग भरता है।

स्वाहा करना—जला देना। हनूमान ने पूँछ से सारी लका में आग लगा कर उसे स्वाहा कर दिया।

स्वाहा होना—नष्ट, बरबाद होना। सारा धन स्वाहा हो गया।

ह

हंडा फोड़ना—भेद प्रकट करना। मैंने कल उससे ज़िकर कर दिया था, और आज ही उसने हंडा फोड़ दिया।

हँस कर उड़ाना—ध्यान न देना। काम की बात को तो हँस कर उड़ा देता है।

हँसते खेलते—खुशी खुशी। इतना दुख तो हँसते खेलते सहते हैं।

हँसते हँसते पेट में बल पड़ना, बुरा हाल होना, लोट पोट होना—खूब जोर से हँसना। उसके मज़ाक से तो हँसते हँसते...।

हँसी उड़ाना—(१) मूर्ख बनाना। (२) अपमानित होना। भरी सभा में हँसी उड़ाई।

हँसी खेल समझना—आसान, सरल समझना। लीडर बनना क्या हँसी खेल समझा है।

हँसी खेल (न) होना—सरल (न) होना। प्रेम पयोनिधि में धँसिके हँसिके काढ़बो हँसी खेल नहीं कछु।

हँसी में उड़ा देना—ध्यान न देना। उपदेश की बात हँसी में उड़ा दोगे तो पछताओगे।

हँसी में लेना—मज़ाक जानना।

हँसी होना—बदनामी होना।

हक़ अदा करना—कर्त्तव्य पालन करना। अगर तुम्हारे माता पिता तुमसे कुछ भी कहें किन्तु तुम्हें अपना हक़ अदा करना चाहिये।

हक़ पर होना—उचित बात का आग्रह करना इसमें उसकी कोई गलती नहीं है वह तो पहले से ही अपने हक़ पर है।

हक़ीर जानना—तुच्छ समझना।

माना कि वह ग़रीब है, किन्तु जैसा तुम हक़ीर जानते हो वैसा वह नहीं है।

हक्का बक्का रह जाना—(१) हैरत मे, भौचक्का होना। (२) कहते करते न बनना।

हचर मचर करना—आगा पीछा सोचना। यदि कोई काम हचर मचर करके करोगे तो पीछे पछताना न पड़ेगा।

हजम करना—लेकर न देना।

हजामत करना—लूटना, पीटना, उड़ाना। उसने सौ रुपये से तो मेरी हजामत की।

हजारो सुनाना—बुरा भला कहना। जब ये जाता है तभी वह हजारों सुनाती है, किन्तु यह जाना नहीं छोड़ता।

हजो करना—कटु वाक्य कहना। इसकी ज्यादा हजो करके लज्जित न करो।

हज़्म करना—खा जाना। तुम उससे व्यौहार भूल कर भी मत करना वह बीसियों का धन हज़्म कर चुका है।

हठ पकड़ना—हठ करना। राजा जनक ने हठ पकड़ ली थी कि जो इस धनुष को तोड़ेगा उसी को सीता को ब्याहूँगा।

हठ में पड़ना—हठ करना। रामचन्द्र जी ने सीता जी से कहा यदि तुम वन को साथ जाने की हठ में पड़ोगी तो पीछे पछताओगी।

हड़प कर जाना, लेना—बेईमानी से ले लेना। उसने दूसरे के सब रुपये हड़प कर गये।

हड्डियाँ निकल आना—बहुत दुर्बल हो जाना। अब की एक महिने इतना बीमार रहा है कि सारी हड्डियाँ निकल आई हैं।

हड्डियों की माला हो जाना—सूख कर काँटा हो जाना। जब बिल्ली को कितने ही दिनो तक खाना न मिला तो हड्डियों की माला हो गई।

हड्डी पसली दुरुस्त करना—खूब पीटना। आज हमको रास्ते में एक गुंडे ने छेड़ा हमने भी उस की सब हड्डी पसली दुरुस्त कर दी।

हड्डा हड्डी तोड़ना—खूब मारना पीटना। यदि अब मैंने तुम्हें कभी उधर जाते हुये देख लिया तो हड्डी हड्डी तोड़ दूँगा।

हतके इज्जत करना—बदनाम करना। इसके लिये कोई क्या करे कि तुम्हारे घर के आदमी ही तुम्हें हतके इज्जत करते हैं।

हत्थे पड़ना—पंजे मे फँसना, काबू मे आना।

हत्या टलना—झंझट, संकट मिटना। महीने भर पीछे यह भी हत्या टल जायगी, सुख से बैठेंगे।

हथियार डाल देना—(१) आधीन होना। (२) लड़ाई बंद कर देना, अस्त्र शस्त्र रख देना।

हथियार बाँधना—हथियार लेकर लड़ने चलना।

हथेली खुजलाना—रुपये पैसे प्राप्त होने का चिन्ह दिखाई देना। आज तनख्वाह मिलेगी इसी से हथेली खुजला रही है।

हथेली लगाना—सहायता करना। तुम कितनी ही हथेली लगा लो अब वह हमसे बच कर नहीं जा सकता।

हथेली पर जान लिए फिरना—मरने को तैयार रहना।

हथेली पर जान होना—प्राण जाने का भय होना। जो लोग सेना में काम करते हैं, उनकी तो हर समय हथेली पर जान है।

हथेली पर सरसों जमना—हद से जल्दी काम करने की इच्छा।

हथेली पर सिर रखना—जान की परवाह न करना। उनमें से एक स्काउट हथेली पर सिर रख कर जलते हुये मकान से लड़की को सुरक्षित निकाल लाया।

हथेली में आना—प्राप्त होना। अभी रुपया कहीं से आया नहीं है, हथेली में आते ही पहले तुम्हारा चुकाऊँगा।

हद करना—(१) आखिर को पहुँचाना। (२) कमाल कर देना।

हद से बढ़ना—किसी काम में अधिकता करना। किसी भी काम में यदि हद से बढ़ जाओगे तो हानि उठाओगे।

हप करना—हड़प कर जाना। मैंने दो तीन आदमियों को खाना रक्खा था वह अकेला ही हप कर गया।

हप झप खाना—जल्दी जल्दी निगल जाना। स्कूल के लिये देर हो रही है, इसी से खाना हप झप खा रहा हूँ।

हमल गिरना—गर्भ गिरना। मैंने सुना कि उसकी मैम का हमल गिर गया।

हमल से होना—गर्भवती होना। जिस समय हुमायूँ शेरशाह से हारकर राजपूताने की ओर भागा उस समय उसकी बेगम हमल से थी।

हमेशा रोते जन्म गुजरा—एक न एक दुख बना ही रहा।

हम्माम करना—स्नान करना। अकबर कभी कभी हम्माम करके हिन्दुओं की तरह तिलक आदि भी लगाता था।

हरकत करना—बुरा कार्य करना। मैं तुमसे कितनी बार मने कर

चुका हूँ किन्तु तुम फिर भी हरकत किये बिना नहीं मानते।

हरकत देना—जारी करना। रेलगाड़ी को सब से पहले जौन स्टीफेंसन ने ही हरकत दी।

हरफ़ आना—दोष लगना। बेफ़िक्र रहो तुम पर हरफ़ न आवेगा।

हराभरा रहना—धन धान्य से पूर्ण होना। यदि धनवान होते हुये ग़रीबों को दान दोगे तो हमेशा हरे भरे रहोगे।

हराम मुँह लगना—बुरी कमाई की आदत पड़ना। हराम मुँह लगा नहीं छूटता।

हरा हो जाना—(१) खुश हो जाना। (२) तरो ताज़ा होना। बाग में जाते ही थकान मिट गई हरा हो गया।

हरियाली सूझना—(१) आनन्द में मग्न। (२) सरल जानना। अभी तो हरियाली सूझी है पीछे पता लगेगा कितना कठिन है।

हलकम डालना — जल्दी मचाना।

हलक में उँगली डाल कर निकालना—छान बीन कड़ाई से पचाई वस्तु को प्राप्त करना। मैं उनके हलक में उँगली डाल कर निकाल लूँगा, मेरे रुपये वह नहीं पचा सकते।

हलका करना — अपमानित करना। दस आमियों में हलका मत करो।

हलका लोहू होना—खून देखते ही बेहोश हो जाना।

हलका होना—तुच्छ होना। एक ही बुरे काम से तुम दुनिया की आँखों में हलके हो गये।

हलके भारी होना—बोझ सा समझना। कल तक चले जायँगे क्यों हलके भारी होते हो।

हलचल होना—घबराहट होना। युरूप में लड़ाई छिड़ने से सारी दुनिया में हलचल हो रही है।

हलचल मचना—बेचैनी पैदा होना। तुम्हारे भाषण देते ही विधवाओं में हलचल मच जायगी।

हलवे माँडे से काम—अपने लाभ से काम। तुम्हें अपने हलवे माँडे से काम दूसरा हारे चाहे जीते।

हल्दी चढ़ना—ब्याह होना।

हल्दी लगा के बैठना—असमर्थता प्रकट करके काम से जी चुराना। यदि इनसे किसी काम को कहें तो हल्दी लगा कर बैठ जाते हैं।

हल्फ उठाना—कसम खाना। जब वह अदालत में हल्फ उठा गया तब तो तुम्हें रुपया ज़रूर देना पड़ेगा।

हल्ला करना—शोर मचाना। सब लोग चुपचाप खड़े रहो,

हल्ला करोगे तो एक को भी पुस्तक न मिलेगी।

हवाइयाँ छूटना—रंग उड़ जाना।

हवाई खबर—झूठी दे० उड़ती खबर।

हवा उखाड़ना, हवा उड़ना—रौब, प्रसिद्धि न रहना। एक शादी में ही उनकी हवा उखड़ गई।

हवा का रंग देखना—मौका समझना। हवा का रग देख कर काम करना ही बुद्धिमानी है।

हवा के घोड़े पर सवार होना—बड़ी जल्दी में होना। ठहरो कपड़े तो पहनूँ तुम तो हवा के...।

हवा के बबूले फोड़ना—मनोराज्य करना। इन्हें और तो कुछ काम नहीं बैठे बैठे हवा के बबूले फोड़ा करते हैं।

हवा को गिरह में बाँधना—असम्भव काम करने का प्रयत्न करना। क्या इतने बड़े पहलवान को पछाड़ कर हवा को गिरह में बाँधना चाहते हो।

हवाला करना—सुपुर्द कर देना। यहाँ के जज़ ने मुकदमा अब सेशन जज़ के हवाले कर दिया है।

हवा खाना—बिना प्राप्ति, असफल जाना। अब हवा खाओ तब आते तो दे देता।

हवा खिलाना—भेजना। अगर जेल की हवा न खिला दूँ तो नाम नहीं।

हवा चलना—रीति-रिवाज हो जाना।

हवा पर उड़ना—(१) इतराना। डिप्टी होकर हवा पर उड़ते हैं। (२) अंदाज पर चलना। हवा पर ही उड़ते हो या कुछ सही बात भी है।

हवा पर दिमाग़ होना—दे० आसमान पर चढ़ना।

हवा पलटना, फिरना, बदलना—हालत बदलना। सदा यह दुख नहीं कभी तो हवा फिरेगी ही।

हवा बताना—टाल देना। अपना काम निकाल कर तुम्हें हवा बता देगा।

हवा बाँधना—बढ़ बढ़कर बोलना। क्यों हवा बाँधते हो दस की जगह एक भी तो तुम्हारे पास नहीं।

हवा बिगड़ना—(१) हवा में खराबी होना। (२) समय बदल जाना। मंदे में अच्छे अच्छों की हवा बिगड़ गई।

हवा में गाँठ बाँधना—असंभव के पीछे कष्ट उठाना। तुम मूर्ख हो हवा में गाँठ बाँधना चाहते हो।

हवा लगना—(१) बुरी दशा होना। (२) संगत का प्रभाव पड़ना। दिल्ली की हवा लगी और बरबाद हुए। (३) इतराना।

[८६८२]

हवालात करना—कारागार में रखना। चोरी के अपराध में हाकिम ने उसे तीन महीने की हवालात कर दी है।

हवास गुम होना—भय आदि से स्तंभित होना। डाकुओं के झुंड को अपनी ओर आते देख मेरे हवास गुम हो गये।

हवास ठिकाने होना—होश में आना। जब मेरे हवास ठिकाने हुये तो मैंने अपने आप को अपने घर खाट पर पड़ा पाया।

हवा से झगड़ना, लड़ना—अकारण क्रोध करना। आह करने पे क्यों बिगड़ते हो, तुम तो साहब हवा से लड़ते हो।

हवा से बातें करना—(१) बहुत तेज दौड़ना। घोड़ दौड़ में हवा से बाते करने लगा था। (२) फुर्तीला (३ चालाक (४) जल्दबाज होना।

हवा हो जाना—न रहना, भाग जाना। बहुत आशा थी पर सारी बातें हवा हो गई।

हांक मारना—किसी को ज़ोर से पुकारना। मैंने बहुतेरी हांक मारी किन्तु किसी ने न सुनी।

हांडी में कालिख लगना—दाल रोटी से खुश होना। जिसे हमने लड़की दी है वह धनवान तो नहीं है हाँ हाँडी में कालिख लगती है।

हांजी हांजी करना—हाँ में हाँ मिलाना।

हाँ में हाँ मिलाना—हाँजी हाँजी करते रहना। खुशामदी लोग रईसों की हाँ में हाँ मिलाया करते हैं।

हाट चढ़ना—बाजार में बिकने के लिये आना। कल तो पहले पहल ही हमारे खरबूजे हाट चढेंगे।

हाथ आना—प्राप्त होना। यदि सौ रुपये भी हाथ आगये तभी एक दुकान खोल डालूँगा।

हाथ उठा कर देना—(१) राजी, प्रसन्नता से देना। जो कुछ हाथ उठाकर दोगे वही स्वीकार है। (२) भीख सी देना।

हाथ उठाना—(१) मारना। औरत पर हाथ उठाना ठीक नहीं। (२) प्रणाम करना। (३) आशीश देना (४) हाथ खींचना।

हाथ उठाकर कोसना—खूब कोसना।

हाथ ऊँचा रहना—(१) दानी होना। (२) भाग्यवान होना। जब तक वह जिये हाथ ऊँचा रहा।

हाथ ऊँचा होना—देने लायक, सम्पन्न। आज कल उसका हाथ ऊँचा है जो कुज देदे थोड़ा है।

[८६६६]

हाथ ओट लेना—दोनों हाथ पसार कर लेना। जब दान दिया गया, तो ब्राह्मणों ने हाथ ओट लिये।

हाथ कट जाना, काट लेना—लिख देना, लिखा लेना। मेरे हाथ कट गये हैं दावा नहीं कर सकता।

हाथ कमर पर रखना—बहुत दुर्बल होना। वह बीमारी से ऐसा हो गया है कि कमर पर हाथ रख कर चलता है।

हाथ का खिलौना—(१) प्रिय व्यक्ति। गुणों के कारण वह बड़ों के हाथ का खिलौना है।

हाथ कानो पर रखना—आश्चर्य चकित होना। उस मनुष्य के मुख से इस प्रकार की बातें सुन कर सब लोग हाथ कानों पर रखने लगे।

हाथ का मैल—तुच्छ, मामूली। रुपया पैसा हाथ का मैल है।

हाथ का सच्चा—(१) ईमानदार। (२) अचूक वार करने वाला। क्षत्रिय लड़ाई में बनिया देने में हाथ का सच्चा पहचाना जाता है।

हाथ के ऊपर हाथ धरे बैठना—व्यर्थ समय गँवाना। इनसे नौकरी तो होती नहीं हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं।

हाथ के तोते उड़ जाना—अक्ल गुम हो जाना।

हाथ को हाथ न सूझना—घोर अन्धकार होना। जिस समय मैं वहाँ से रवाना हुआ, अँधेरी रात थी, हाथ को हाथ नहीं सूझता था।

हाथ खाली जाना—(१) सफलता न मिलना। (२) वार ठीक न बैठना। हाथ खाली गया नहीं गर्दन कट गई होती।

हाथ खाली होना—(१) रुपया-पैसा न होना। आज कल हाथ खाली है फिर दे दूँगा। (२) काम न होना (३) हथियार न होना।

हाथ खींचना—काम से अलग होना। उन्होंने मदद करने से हाथ खींच लिया है।

हाथ खुजलाना—पीटने को जी चाहना। हाथ खुजला रहे हैं पीट जाओगे।

हाथ खोलना—ख़र्च करना। जुए में सैकड़ों रुपये हार जाते हो, कभी ग़रीबों के लिये भी हाथ खोल दिया करो।

हाथ घिसना—व्यर्थ कष्ट उठाना। क्यों हाथ घिसते हो, वहाँ पर एक पैसा मिलने की आशा नहीं।

हाथ चढ़ना—(१) प्राप्त होना। (२) वश में आना।

हाथ चलना—मारना। मेरा हाथ चलता है जबान नहीं।

हाथ चाटना—सब खा पीकर भी तृप्त न होना। ऐसा अच्छा साग था कि सभी हाथ चाटते रहे।

हाथ चालाक—फुर्ती से चीज़ उड़ाने वाला। यह नौकर हाथ चालाक है भीतर न आने दो।

हाथ चूमना—कारीगरी पर मुग्ध होकर हाथ चूमना। चित्र को देख कर जी चाहता है कि चित्रकार के हाथ चूम लूँ।

हाथ जोड़ना—संबन्ध न रखना। मैं ऐसे नीच को दूर से ही हाथ जोड़ता हूँ।

हाथ झाड़ कर खड़े होना - कह देना मेरे पास कुछ नहीं। तुम्हारा क्या है हाथ झाड़कर खड़े हो जाओगे, खर्च तो मेरे सिर पड़ेगा।

हाथ झूठा पड़ना—(१) निशाना न बैठना। (२) विश्वास न होना।

हाथ डालना—दखल या योग देना। मै इस मामले मे हाथ न डालूँगा।

हाथ तंग होना—दे० हाथ खाली होना।

हाथ तकना—दूसरे के आश्रित होना। क्यों किसी का हाथ तकते हो खुद कमाओ और खाओ।

हाथ तोड़ तोड़ कर खाना—स्वादिष्ट पदार्थ खा कर उँगली चाटना। जब मिठाई खाली तो हाथ धो डालो, हाथ तोड़ तोड़ कर क्यों खा रहे हो।

हाथ दिखाना —(१) नाड़ी दिखाना। (२) वीरता दिखाना।

हाथ धरना—(१) सहारा देना, रक्षा करना। आप हाथ धर दे तो कृतार्थ हो जाऊँ। (२) फाँस लेना।

हाथ धो के पीछे पड़ना—जी जान से लग जाना। हाथ धोकर पीछे पड़ा है सफल होगा।

हाथ धो बैठना, धोना—खो देना,। आखिर मकान से हाथ धो बैठे।

हाथ न धरने देना—जरा बातों मे न आना। लड़का चालाक है हाथ नहीं धरने देता समझाऊँ क्या?

हाथ पकड़ना—शरण में लेना, जिम्मेदार बनना। हाथ पकड़े की लाज रखो।

हाथ पड़ना—वार पड़ना।

हाथ पत्थर तले दबना—विवश होना। हाथ पत्थर तले दबा है वरना दुखी कर देता।

हाथ पर धरा होना—जबान पर होना।

हाथ पर सरसों जमाना—जल्दी करना चाहना।

हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना—निराश हो जाना। बस इतने प्रयत्न में ही हाथ .।

हाथ पर हाथ धर कर बैठना—खाली बैठे रहना। कुछ नहीं करते हाथ पर हाथ ...।

हाथ पर हाथ मारना—प्रतिज्ञा करना। उसने मुझसे हाथ पर हाथ मार कर कह दिया है कि मै उसे चोरी करते पकड़ा दूँगा।

हाथ पसारना—माँगना। जिसने गली मे तुझको पुकारा, सामने तेरे हाथ पसारा।

हाथ पसारे जाना—खाली हाथ जाना, मर जाना।

हाथ पाँव चलना—(१) काम की सामर्थ्य होना। जब तक हाथ पाँव चलते हैं हम न मागेंगे। (२) एक न एक चीज़ हाथ पाँव से छेड़ते रहना।

हाथ पाँव जोड़ना—विनती करना। जब मैंने बहुत हाथ पाँव जोड़े तब बड़ी मुश्किल से उन्होंने छोड़ा।

हाथ पाँव टूटना—शरीर में कुछ दर्द होना। आज रात भर जगना पड़ा है, जिससे हाथ पाँव टूट रहे हैं।

हाथ पाँव ठंडे पड़ना, होना—मरने का समय होना।

हाथ पाँव तोड़ना—(१) अपाहिज कर देना। (२) कठिन मेहनत करना।

हाथ पाँव निकालना—आपे से बाहर होना।

हाथ पाँव पकड़ना—प्रार्थना, खुशामद करना। नाराज होती हैं तो हाथ पाँव पकड़ कर मनाते हैं।

हाथ पाँव फूलना—डर के घबरा जाना। ऐसी लड़ाई देखते ही हाथ पाँव फूल गये।

हाथ पाँव फैलाना—काम अधिक करना। व्यापार में हाथ पाँव फैलाओगे तो सँभालेगा कौन!

हाथ पाँव बचाना—सचेत होकर काम करना। मशीन से हाथ पाँव बचाये रहना।

हाथ पाँव मारना, पीटना—बहुत कोशिश करना। बहुतेरे हाथ पाँव मारे पर पार न लगा।

हाथ पाँव हिलाना—(१) मेहनत करना। (२) काम धंधा करना। हाथ पाँव हिलाओ तो पेट भरेगा।

हाथ पूरा पड़ना—थप्पड़, हथियार जोर से लगना।

हाथ फेरना—ले लेना।

हाथ फैलाना—माँगने के लिये हाथ बढ़ाना। ईश्वर न करे किसी के सामने हाथ फैलाना पड़े।

हाथ बँटाना—योग मदद देना। बेटी काम में हाथ बँटाती है।

हाथ बंदी होना—ज़रा भी फुर्सत न होना। आज कल तो काम

इतना हो जाता है कि हाथ बंदी हो जाती है।

हाथ बाँधना—प्रार्थना करना। महाराज मेरी भी सुनिये, एक घंटे से हाथ बाँधे खड़ा हुआ हूँ।

हाथ बाँधे खड़ा रहना—सेवा में उपस्थित रहना। वह ऐसी रईस हैं कि चार चार नौकर हाथ बाँधे खड़े रहते हैं।

हाथ बढ़ाना—(१) दख़ल बढ़ाना। हाथ बढ़ाने से झगड़ा खड़ा हो जायगा। (२) अति लोभ करना।

हाथ बैठना, जमना—(१) अक्षर साफ साफ आना। (२) तलवार बैठना। (३) काम का अभ्यास होना।

हाथ बैठाना—(१) वार खाली न जाना। ऐसा हाथ बैठा कि बेहोश होगया। (२) अभ्यास करना। पट्टी पर हाथ बैठा लो फिर काग़ज़ पर लिखना।

हाथ भर का कलेजा हो जाना—उत्साह बढ़ जाना। इस मुक़दमे को जीतने से तो उनका हाथ भर का कलेजा हो गया है।

हाथ भरना—काम करते करते हाथ थक जाना। आज दिन भर ईंट ढोनी पड़ी है जिससे हाथ भर गये।

हाथ मँजना—अभ्यास होना। लिखते लिखते हाथ मँज गये हैं।

हाथ मलना—पछताना। हा[थ] मलते रह गये कुछ भी न क[र] सके।

हाथ मारना—उड़ाना, चट[कर] जाना। उसके सौ रुपये पर हाथ मारा।

हाथ मिलाना—दान देना। क्यों न मिल जायगा खुदा उनके हाथ से हाथ जो मिलाते हैं।

हाथ में ठीकरा या सोने का कटोरा होना—भीख माँगना।

हाथ में हाथ देना—किसी के साथ ब्याह देना। अब तो मैंने उसके हाथ में हाथ दे दिया है अब दुखी रहे चाहे सुखी रहे।

हाथ रंगना—रिश्वत लेना। इन्होंने बहुत हाथ रंगे थे, इसीलिये जल्दी निकाले गये हैं।

हाथ रोकना—(१) खर्च कम करना। हाथ रोको तो पूरा पड़े। (२) वार बचाना। हाथ रोको वरना चोट आयगी।

हाथ लगना—प्राप्त होना। यह पुस्तक कहाँ से हाथ लगी?

हाथ लगाना—दे० मज़ा चखाना।

हाथ लाल करना—कलंक सिर लेना।

हाथ समेटना—बन्द कर देना। तुम्हारी शैतानियाँ देख देख कर

ही उन्होंने पैसा देने से हाथ समेट लिया है।

हाथ साफ़ करना—माल उड़ाना, दुख देना। गरीबों पर क्या हाथ साफ़ करते हो !

हाथ सिर पर रखना—(१) प्यार करना। (२) सलाम करना। (३) सहायक बनना। (४) किसी के सिर की कसम खाना।

हाथ से जाने देना—खोना। मैंने ले जाने को तुमसे मना किया था किन्तु तुमने जान कर हाथ से जाने दिया।

हाथ से देना—खोना। आता हो तो हाथ से न दीजे, जाता हो तो ग़म न कीजे।

हाथ हिलाते आना—कुछ न लाना। कुछ सौग़ात भी लाये या योंही हाथ हिलाते आये हो !

हाथा पाई होना—लड़ाई झगड़ा होना।

हाथी के संग गांड़े खाना—बड़े की बराबरी करना।

हाथी पांव पाना—कहा दड। वातों हाथी पाइये बातों हाथी पाँव।

हाथी बांधना—(१) बहुत खर्च की चीज़ रखना। मोटर रखना भी हाथी बाँधना ही है। (२) अमीर होना। तुम्हीं बेईमानी से क्या हाथी बाँध लोगे।

हाथों में लेना—सम्हालना।

हाथों कलेजा उछलना—दे० बाँसों उछलना।

हाथों हाथ—बहुत शीघ्र। पुस्तक हाथों हाथ बिक गई।

हाथो हाथ लेना—बहुत आदर करना।

हामी भरना—हाँ कहना।

हाय पड़ना—कष्ट देने का फल मिलना। गरीब की हाय पड़ी नाश हो गया।

हाय हाय करना—काम में बहुत परिश्रम करना। क्यों हाय हाय करते हो काम कल शाम तक पूरा हो ही जायगा।

हाय हाय मचाना—शिकायत करना। ज़रासी बात के लिये आप इतनी हाय हाय मचा रहे हैं।

हार खाना—हारना। मैं कहता हूँ कि तुम उसका मुकाबिला मत करो नहीं तो हार खा जाओगे।

हार जीत करना—जुआ खेलना। वह तो दिवाली पर सैकड़ों रुपये की हार जीत कर डालते हैं।

हार मानना—पराजय स्वीकार करना। या तो हार मान जाओ, नहीं फिर शाम तक पीछा न छोड़ूँगा।

हार में रहना—नष्ट होता रहना। तुम्हारे ही कारण हम तो हर साल

सौ पचास रुपये की हार में रहते हैं।

हाल बेहाल होना—अच्छी से बुरी परिस्थिति हो जाना। दौलत हमेशा क़ायम नहीं रहती, जब बुरे दिन आते हैं तो हाल बेहाल हो जाते हैं।

हाल लगना—हिलना डुलना। इस घी के वर्त्तन को इस तरह ले जाना कि जिससे हाल न लगे।

हासिल करना—प्राप्त करना। जिसके साथ हमारी बहिन की सगाई हुई है, उस लड़के ने इसी साल बी० ए० की डिग्री हासिल की है।

हासिल होना—प्राप्त होना। तुम लाख कोशिश करो, किन्तु यहाँ से तुम्हें कुछ हासिल न होगा।

हा हा खाना—विनय प्रार्थना करना। जब उसने दो घंटे हाहा खाई तब उन्होंने बड़ी मुश्किल से सिफारिश की।

हा-हा-ही-ही करना—हँसी ठट्ठा करना। तुम बड़े बे-शऊर हो, बड़े बूढ़ों के सामने बैठ कर हाहा ही ही करते हो।

हिकमत करना—वैद्यक करना। वे वहाँ पर मास्टर हैं और साथ में हिकमत भी करते हैं।

हिचकिची बाँधना—दांत पीसना। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझ पर हिचकिची बाँध रहे हो।

हिचकी बँध जाना—रोते रोते साँस अटकने लगना। रोते रोते बेचारे की हिचकी बँधगई, किन्तु किसी ने उसे सान्त्वना न दी।

हिचकी लगना—मरने पर होना। शीत आते ही उसे दो हिचकी लगी और इस संसार से बिदा होगया।

हिचर पिचर करना—हिचकिचाना। यदि दान देना है तो दे दो, हिचर पिचर क्यों करते हो।

हिजो करना—ऐब निकालना।

हिजो निकालना—दोष ढूँढ निकालना। तुम स्वयं तो कुछ काम करते नहीं दूसरों की हिजो निकाला करते हो।

हिन्दी की चिन्दी निकालना—बात की खोज करना।

हिफ़्ज़ करना—कंठस्थ करना। कल जो पाठ गुरु जी ने याद करने को दिया था मैंने हिफ्ज कर लिया है।

हिम्मत हारना—साहस छोड़ना। अभी तो परीक्षा के दो महीने हैं, अभी से हिम्मत क्यों हारते हो, परिश्रम करो तो पास हो जाओगे।

हिये की फूटना—बुद्धि न होना। तेरे हिये की फूट गई कि यह सड़ी हुई है।

हियाव खुलना—भय दूर होना। जंगल में अकेले जाते हुये जब दो साथी मिल गये तब मेरा हियाव खुला।

हिलके पनी न पीना—बहुत आलसी होना। तुम अभी से हिलके पानी नहीं पीते तो नौकरी कैसे करोगे।

हिल मिल कर रहना—मेल से रहना। लड़कों को हमेशा अपने भाई बहनों से हिल मिल कर रहना चाहिये।

हिल मिल जाना—मेल मिलाप होना। अभी नया है, इसलिये मन नहीं लगता, जब हम लोगों में हिल मिल जायगा तो फिर वहाँ का नाम भी न लेगा।

हिसाब बैठना—सुभीता होना। यदि आपका हिसाब बैठ जाय तो मोटर से ही माल मंगा लीजिये।

हिसाब देना—खर्च का जिम्मेदार होना। यदि तुम यहाँ के मालिक बनोगे तो तुम्हें सब हिसाब देना पड़ेगा।

हिसाब साफ़ करना—हिसाब के अनुसार रुपया अदा करना। इस महीने का हमारा हिसाब साफ कर दीजिये फिर आगे का चलता रहेगा।

हींग हगना—पेचिस होना। क्या बात है दो दिन से क्यों हींग हगते हो।

हीरा खाना—विष खाकर जान देना। एक दिन इसी लजा के कारण उसने चोरी से हीरा खा लिया।

हीरे की कनी चाटना—हीरे का चूरा खाकर आत्म हत्या करना। जब राजकुमार को वह राज कुमारी न मिली तो उसने हीरे की कनी चाट ली।

हीला हवाला करना—बहाना करना। अब जल्दी रुपये चुका दो हीला हवाला न करो।

हुंडी पटना—हुंडी का रुपया वसूल होना। वैसे तो वह दिवा-लिया हो गया है, किन्तु यदि तुम जाओगे तो तुम्हारी हुंडी पट जायगी।

हुकूमत करना—शासन करना। किसी समय सारे हिन्दुस्तान पर मुगल बादशाह हुकूमत करते थे।

हुकुमत चलाना—प्रभुत्व से काम लेना। वह मुनीब तो सीधा है, किन्तु यह बड़ी हुकूमत चलाता है।

हुकूमत जताना—शासन की चमक दमक दिखाना। शेरशाह ने थोड़े ही दिन की बादशाहत में हुकूमत जता दी।

हुक्का पानी पिलाना—खूब आदर करना, आदर सत्कार करना। यदि कोई तुम्हारे दरवाज़े पर आवे तो कम से कम हुक्का पानी तो पिला दिया करो।

हुक्का पानी बंद करना—सबन्ध न रखना।

हुक्म उठाना—आज्ञा पालन करना। प्रत्येक विद्यार्थी को अपने माता, पिता तथा गुरु का हुक्म उठाना चाहिये।

हुज्जत करना—तर्क वितर्क करना। अब इस धोबी से कपड़े न धुलवायेंगे यह बड़ी हुज्जत करता है।

हुरमत करना—सम्मान करना। उनके घर कोई भी जाय, बड़ी हुरमत करते हैं।

हुरमत लेना—अपमान करना। यदि तुम किसी की हुरमत लोगे तो तुम्हारी भी हुरमत ली जायगी।

हुलिया लिखाना—पता लगाने के लिये रूप, रंग आदि पुलिस में लिखाना। यदि नहीं मिला तो हुलिया लिखा दो, पता लग ही जायगा।

हूँ करना—स्वीकार करना। मैने उनसे पूछा तो था किन्तु उन्होंने अभी हूँ नही की है।

हूँ हाँ करना—हीला हवाला करना। वह रुपये देता ही नहीं, जब माँगने जाता हूँ तो हूँ हाँ कर देता है।

हूक हूक कर रोना—फूट फूट कर रोना। लड़के की चमकती टोपी कुएँ में गिर गई थी जिससे हूक हूक कर रो रहा था।

हूठा देना—अशिष्टता से हाथ मटकाना। जैसे ही मेरी नज़र उस पर पड़ी, वह हूठा देकर और इठला कर चली गई।

हूल देना—आगे बढ़ाना। गाड़ी को ज़रा हूल दो जिससे सामान अच्छी तरह लद सके।

हृदय उछलना—मन में आनन्द होना।

हृदय का टुकड़ा—अत्यन्त प्यारा। यह बालक मेरे हृदय का टुकड़ा है।

हृदय की गाँठ—दिल का फर्क, कपट, कुटिलता।

हृदय फटना—बहुत दुख होना। जब से बेचारे का इकलौता पुत्र मरा है तब से तो उसका हृदय फट गया है।

हृदय में गुद गुदी उठना—मन मे आनन्द होना। जिस समय वह दृश्य सामने आता है तो हृदय में गुदगुदी उठने लगती है।

हृदय में छूरी छिपाना—बुरी भावना रखना। यह दिखाने के लिये मीठी मीठी बाते करता

है वैसे हृदय में छूरी छिपाये हुये है।

हृदय से लगाना—प्यार करना। पीछे से सक्त सिंह को आते देख राणा ने उसे हृदय से लगा लिया।

हेकड़ी करना—अकड़ना। एक तो किताब चुरा ली है और ऊपर से हेकड़ी करते हो।

हेकड़ी किरकिरी होना—शान जाती रहना।

हेकड़ी दिखाना—डाट बताना। तुम आये थे, काम बनाने या हेकड़ी दिखाने।

हेला मारना—ढकेलना। जरा दोनों आदमी गाड़ी में हेला मार दो जिससे गड्ढे में से निकल जाय।

हैरान करना—तंग करना। यह दुधारू तो है किन्तु दूध देने में बड़ा हैरान करती है।

हैसियत रखना—जायदाद रखना। उन्हें किसी सेठ से कम न समझिये, वह दो हज़ार रुपये की हैसियत रखते हैं।

हैं हैं करना—गिड़गिड़ाना।

होंठ चबाना—पछताना। जब अलाउद्दीन ने महल में पद्मिनी की जली हुई भस्म देखी तो होंठ चबाने लगा।

होंठ चाटना—और खाने का लालच करना।

हो आना—भेट करने के लिये जाना। आप शौक से उनके पास हो आइये किन्तु उनसे मेरी एक भी बात न कहना।

होड़ बाँधना—बाजी लगाना। अबकी बार तो हम तुम होड़ बाँध कर दौड़ेंगे देखें कौन आगे आता है।

हो पड़ना—लड़ाई होना। अभी तो दोनों बातें कर रहे थे और बातों ही बातों में हो पड़ी।

हो बैठना—(१) मासिक धर्म से होना। वह आज रोटी नहीं बनाती क्यों आज हो बैठी है। (२) मालिक हो जाना। आज वह रियासत का मालिक हो बैठा है।

होने के दिन—रजोदर्शन के दिन।

होम कर देना, होम देना—भस्म कर देना। हजारों रुपये और जान तक होम दी।

होली का भड़वा—बेढंगा हास्यास्पद। नीला मुँह कर के होली का भड़वा बना दिया।

होश उड़ना—ताज्जुब करना। इन लोगों की कलई खुलते ही मेरे होश उड़ गये।

होश उड़ जाना—सुध बुध जाना। शेर देखते ही [illegible] गये।

होश की [illegible]

बूझ कर बोलना। होश की दवा करो नहीं पछताओगे।

होश ठिकाने होना—चित्त स्वस्थ होना, घमंड मिटना। पिटकर होश ठिकाने हो जायँगे।

होश दंग होना—चकित चित्त होना। उसकी रहस्य भरी बातों से सब के होश दंग हो गये।

होश सँभालना—सयाना होना। जब होश सँभाला तो गरीबी थी।

हौल दिल होना—धड़कन, घबराहट होना।

हौल बैठ जाना—डर समा जाना। भारतवर्ष की माताओं की कृपा से बच्चों के दिल में हौआ का हौल बैठ गया है।

हौल हौली करना—घबरा देना।

हौस बुझना, बुझाना—इच्छा पूरी होना, करना। आज को पुस्तक समाप्त कर हौस बुझी।

हौसला अफ़ज़ाई करना, बढ़ाना—हिम्मत बढ़ाना। अब देखें कितने विद्वान हमारा हौसला बढ़ाते हैं।

हौसिला निकालना—अभिलाषा पूरी करना। उसने कहा तुम में से जो कोई अपने को वीर समझता हो, वह आज मुझ से लड़ कर अपना हौसिला निकाल ले।